अग्रगामी० गु० आगे चलनेहारा, पेशवा।

अग्रज० गु० जो पहिले प्रकट हुआ होते, बड़ा।

अग्रता० } ना० स्त्री० पु० अगुआपन, ना०
अग्रत्व० } पु० पेशवाई।

अग्रशोची० ना० पु० गु० पहिले शोचनेवाला, प्रथमही समझनेहारा, दूरन्देश।

अग्रसर० गु० वा० पु० मुखिया, प्रधान, पेशवा, आगे चलनेहारा, सरदार।

अग्रहायण० ना० पु० अगहन।

अघ० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह, अघासुर दैत्य।

अघटित० गु० अयोग्य, जो पूरा न परे।

अघाई० गु० पूरी, भरी।

अघाना० अ० क्रि० अफरना, आसूदह होना गु० सन्तुष्ट, धनवान्।

अघारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

अघासुर० ना० पु० दैत्यविशेष, जिसको श्रीकृष्णचन्द्रने वध किया था।

अघी० गु० पापी, दोषी।

अघोर० ना० पु० भयानक, अचूक, शिवकृत मंत्र, धर्मविशेष, श्रीमहादेवजी।

अघोरपन्थ० ना० पु० धर्मविशेष।

अघोरपन्थी० } ना० पु० जो अघोरपन्थका
अघोरी० } सेवन करे, मद्यादिसंयुक्त, सर्वभक्षी।

अघ्न० गु० मारनेहारा, ना० पु० मारना, हनन।

अंक० ना० पु० अक्षर, गोदी, कनिया, चिह्न, संख्या, गिन्ती के नव अक्षर, निशानी।

अंकदुन० ना० पु० दुःख, पीड़ा, नाममाला, (बिधुरकंदै ने धरु श्रंकदुन गहन वृजिन अघनाउ)।

अङ्कना० अ० क्रि० मोल ठहरना, परीक्षित होना।

अङ्काना० स० क्रि० मोल ठहराना, सौंपना।

अङ्कित० गु० चिह्न किया गया, लिखित, परीक्षित।

अंकुर० ना० पु० बीज बोने से जो अंखुवा पहिले निकलता है।

अंकुश० ना० पु० आंकुड़ी जिस से महावत हाथी को मारता है।

अङ्कोल० ना० पु० औषधप्रसिद्ध।

अङ्ग० ना० पु० अवयव, शरीर, देह।

अंगद० ना० पु० बालिका पुत्र, भूषण, बाजूबंद।

अंगदा० ना० स्त्री० नाम चन्द्रमा की एक कला का, वा शरीर की दाता।

अंगन० ना० पु० आंगन, सहन।

अंगना० ना० स्त्री० पत्नी, जोरू, स्त्री, आंगन।

अंगवना० अ० क्रि० सहना, गँवारा करना।

अंगराग० ना० पु० उबटन, केसर चंदनादि का शरीर विषे मर्दन।

अंगारक० ना० पु० मंगल, भंगरा, पौदा।

अंगाङ्गिभाव० ना० पु० शरीर के अवयवों का सम्बन्ध।

अंगिरा० ना० पु० मुनिविशेष, बृहस्पति जी के पिता।

अंगीकार० ना० पु० स्वीकार, कबूल, मंजूर।

अंगुल० ना० पु० आंगुल।

अंगुली० ना० स्त्री० हाथ का अवयव।

अंगुष्ठ० }
अंगुष्ठा० } ना० पु० अंगूठा।

अंगूठा० ना० पु० अंगुष्ठ।

अंगूठी० ना० स्त्री० अंगुष्ठी, मुन्दरी।

अंगेठी० ना० स्त्री० अंगीठी।

अचगरी० ना० स्त्री० अनुचित, अकर्म, अजविलास, यथा—सुनो मंदरि निज सुतकी करनी। करत अचगरी जात न बरनी॥

अचम्भा० }
अचम्भव० } ना० पु० आश्चर्य, तअज्जब।
अचरज० }

अचल॰ गु॰ जो चल नहीं सक्ता ना॰ पु॰ पर्वतादि।

अचला॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।

अचानक॰ अव्य॰ अकस्मात्, एकाएक ना॰ पु॰ कलकत्ता के निकट नगरविशेष।

अचानचक॰ अव्य॰ अकस्मात्, नागहान।

अचाना॰ स॰ क्रि॰ भोजन करके मुखधोना।

अचार॰ ना॰ पु॰ आम इत्यादि का जो बनता है, और आचार।

अचिन्त॰ गु॰ चिन्तारहित, निधड़क।

अचूक॰ गु॰ जो न चूके, ठीक।

अचेत॰ गु॰ संज्ञारहित, बेहोश, मूर्च्छित।

अच्छत॰ ना॰ पु॰ अक्षत, घावरहित।

अच्छा॰ गु॰ भला, सुडौल, सुन्दर।

अच्युत॰ गु॰ स्थिर, अचलविशेष, ईश्वर।

अच्युताग्रज॰ ना॰ पु॰ श्रीबलदेवजी।

अछेह॰ गु॰ बहुत, बिहारीलालसप्तशतिकायां धरे रूप गुणको गरव फिरै अछेह उछाह। अज॰ अव्य॰ आज, अब, ना॰ पु॰ ब्रह्मा, बकरा, ईश्वर, शिव, यौवन, और आभरण, गु॰ जो पैदा न होवे वा उपजा किसीसे न हो।

अजगर॰ ना॰ पु॰ बड़ा सांप, अजदहा सांप।

अजगुत॰ गु॰ अद्भुत, अजायब।

अजगन्धा॰ ना॰ स्त्री॰ बबरीपौधा।

अजन्म॰ गु॰ जिसका जन्म न होवे।

अजय॰ गु॰ जयरहित, जो जीता न जावे, ना॰ स्त्री॰ वीरभूमि जिले की नदीविशेष।

अजया॰ ना॰ स्त्री॰ अंजा।

अजर॰ गु॰ जरारहित अर्थात् जो बूढ़ा न हो, ना॰ पु॰ देवता।

अजलोक॰ ना॰ पु॰ अयोध्याजी, ब्रह्मलोक।

अजवीथी॰ ना॰ स्त्री॰ सफ़ेदी जो छोटे २ घने तारागणों की आकाशमें दीखपड़ती है।

अजहूं॰ अव्य॰ अबभी, अभी।

अजा॰ ना॰ स्त्री॰ बकरी, माया।

अजात॰ गु॰ जन्मरहित, जो न उपजे।

अजातअरि॰ / **अजातरिपु॰** } ना॰ पु॰ राजा युधिष्ठिर।

अजान॰ गु॰ अज्ञान, मूर्ख, नादान।

अजामिल॰ / **अजामील॰** } ना॰ पु॰ नाम एक मनुष्य पापिष्ठका जो नारायण कहके मरा और मुक्ति पाई।

अजित॰ / **अजीत॰** } गु॰ जो जीता न जासके, ईश्वर।

अजिन॰ ना॰ पु॰ सिंहइत्यादि का चर्म जो ब्रह्मचारीलोग बिछाते हैं।

अजिर॰ ना॰ पु॰ आंगन, सहन।

अजीर्ण॰ ना॰ पु॰ कुपच, बाई, नवीन।

अजौं॰ अव्य॰ अबतक, अभी।

अज्झल॰ ना॰ पु॰ अच् और हल् अर्थात् स्वर और व्यंजन।

अंचल॰ ना॰ पु॰ आंचल, अंचला, वस्त्रका अन्त।

अंजन॰ ना॰ पु॰ काजल, सुरमा।

अंजलि॰ / **अंजली॰** } ना॰ स्त्री॰ दोनों हाथका संपुट।

अंजि॰ क्रि॰ अंजन लगाकर।

अंजित॰ गु॰ अंजन अर्थात् सुरमा लगाये।

अटक॰ ना॰ स्त्री॰ रोक, प्रतिबन्ध, सिन्धुनदी।

अटकना॰ अ॰ क्रि॰ रुकना, लगना।

अटकल॰ ना॰ स्त्री॰ अनुमान, प्रमाण, अन्दाज़।

अटकलना॰ स॰ क्रि॰ ताड़ना, बूझना, जांचना।

अटका॰ ना॰ पु॰ श्रीजगन्नाथ जीमें प्रसाद पकाने का पात्र वा प्रसाद।

अटकाना॰ स॰ क्रि॰ रोकना, ठहराना।

अटकाव॰ ना॰ पु॰ रोक, प्रतिबन्ध।

अटखेल॰ गु॰ खिलाड़, चंचल।

अटखेली॰ ना॰ स्त्री॰ खिलाड़पन, चंचलाई।

मङ्गलकोष ॥

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दों का तात्पर्यप्रकाशक

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जनमण्डलीमण्डन कालिन् ब्रौनिंग साहब
एम० ए० पूर्व डैरेक्टर वीरेशके समय में

मुंशी मङ्गलीलाल साहब मुख्य पाठक पैंतेपुर प्रदेश
सीतापुर ने अतिपरिश्रम से रचना किया

श्रीयुत विद्यागुणग्राहक, गुणिजनसुखदायक जान० सी० न्यस्फील्ड साहब अवध के
पाठशालाध्यक्ष वीरेश ने पौरजानपदीयपाठशालान्तर्गत विद्यार्थियों के
उपकारार्थ अङ्गीकार किया ॥

पांचवीं बार

ल ख न ऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापागया
सन् १९०६ ई० ॥

अटन० अ० क्रि० फिरना, घूमना, ना० पु० ऊपर की कोठरी।
अटना० अ० क्रि० समाना, भरजाना, फिरना।
अटपट० गु० उलट, पुलट० गोल बात।
अटपटी० गु० अशोच, अनरीति।
अटल० गु० पूरा, दृढ़, अचल, जो न टरै।
अटवी० ना० पु० वन, जंगल।
अटा० } ना० स्त्री० ऊपरकी कोठरी,
अटारी० } कोठा।
अटाला० ना० पु० ढेर, सामग्री।
अटूट० गु० जो टूट न सके।
अटेक० गु० जो टेकरहित हो, सहाराविना।
अटेरन० ना० पु० फेंटी, चरखी, घोड़े को चक्कर देनेका स्थान।
अटेरना० स० क्रि० फेंटी बनाना, घोड़े को चक्कर देना।
अटेरि० ना० पु० नगरविशेष।
अटोक० गु० टोक बिन, अबेड़।
अट्टहास० ना० पु० ठट्ठा मार के हँसना।
अट्टालिका० ना० स्त्री० अटारी।
अठतालीस० गु० चालीस और आठ ४८।
अठतीस० गु० तीस और आठ ३८।
अठवारा० ना० पु० आठवाँ दिन, सप्ताह।
अठसठ० गु० साठि और आठ ६८।
अठहत्तर० गु० सत्तर और आठ ७८।
अठाईस० गु० बीस और आठ २८।
अठानवे० गु० नब्बे और आठ ९८।
अठारह० गु० दश और आठ १८।
अठासी० गु० अस्सी और आठ ८८।
अठेल० गु० जो ठेला न जावे।
अड० ना० स्त्री० झगड़ा, विरोध, हठ।
अडंग० ना० पु० मंडी अर्थात् दिसावरकी वस्तु का उतार, गु० झगड़ालू, टर्रा।
अड़ना० अ० क्रि० रुकना, हठकरना।
अडूसा० ना० पु० बांसा अर्थात् औषधवि०।
अडोल० गु० जो न हुले, अटल।
अणि० ना० स्त्री० मोनी, अनी, नोक।
अणिमा० ना० स्त्री० अन्तर्द्धान होने की शक्ति सिद्धिविशेष।
अणु० ना० अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु।
अण्ड० ना० पु० अंडा, आंडा।
अण्डकोष० ना० पु० अण्डकटाह।
अण्डज० ना० पु० गु० जो अण्ड से उपजे।
अण्डा० ना० पु० अण्ड० रण्ड।
अण्डाकार० } गु० अण्डे के डौल।
अण्डाकृति० }
अतनु० ना० पु० कामदेव, शरीररहित।
अतर्क० गु० जो तर्करहित है, बेदलील।
अतर्क्य० गु० जो लखा न जावे, बेदलील।
अतल० ना० पु० सात पातालों में से एक।
अतलस्पर्श० गु० अथाह, अगाध।
अतसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।
अति० अव्य० जिस शब्द के प्रथम इसका मेल होताहै उसका अर्थ अधिक लिया जाता है, यथा अतिसुन्दर अर्थात् अधिकसुन्दर।
अतिकण्टक० ना० पु० जवासा।
अतिकाल० ना० पु० अबेर।
अतिकाय० ना० पु० रावणका पुत्र।
अतिकुञ्चै० अ० क्रि० सिमिटे, सकुचे, भूलै, रामचन्द्रिकायां, यथा कपै वर बाणी डगै उर दीठि लचा तिकुञ्चै सकुचै मतिबेली।
अतिगुहा० ना० स्त्री० शालपर्णी औषध।
अतिचंचुल० ना० पु० लाल अरण्ड।
अतिजिह्वा० ना० स्त्री० कलिहारी।
अतिथ० } ना० पु० यात्री, पाहुन, संन्यासी।
अतिथि० }
अतिपराक्रम० ना० पु० बड़ा प्रताप।
अतिपान० ना० पु० अधिक मदिराका पीना।
अतिपार्श्व० गु० बहुत निकट।

अनगढ़ी॰ ना॰ स्त्री॰ अनगढ़।
अनगणित॰ गु॰ जो गिना नहीं वा गिना न जासके या हिसाब में न आवे।
अनघ॰ गु॰ निष्पाप, निर्दोष, बेगुनाह।
अनंग॰ ना॰ पु॰ कामदेव, राजाजनक, गु॰ देहरहित जो तन में न होवे।
अनजाना॰ गु॰ विना पहिचाना।
अनट॰ ना॰ स्त्री॰ गांठि।
अनत॰ अव्य॰ अन्यत्र, और स्थान में।
अनधन॰ ना॰ पु॰ सम्पत्ति वा लक्ष्मी अर्थात् धनधनामा लक्ष्मी।
अनंत॰ गु॰ जिसका अन्त नहीं वा भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को जो सूत्र में १४ ग्रन्थि देकर पूजते हैं और बाहुपर बांधते हैं बहुत॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा, आकाश, विष्णु जी, शेष जी, लक्ष्मण जी।
अनंतकाल॰ गु॰ बहुत दिन।
अनंतर॰ ना॰ पु॰ अत्यन्त, समीप, पीछे, दूसरा, अव्यवहित।
अनन्ता॰ ना॰ स्त्री॰ धरती, जवासा।
अनन्य॰ गु॰ एक भाव, एक भरोसे।
अनपढ़ा॰ गु॰ मूर्ख, कुपढ़ा, अज्ञानी।
अनपायन॰ गु॰ अचल, दृढ़।
अनबुझ॰ गु॰ जो समझा न जावे।
अनमन॰ } **अनमना॰** } गु॰ घावरा, उदास, बेदिल।
अनमिल॰ गु॰ मेलरहित, नादुरुस्त।
अनमिष॰ गु॰ समय, विना मिस, बेउज़र।
अनमेल॰ गु॰ अनमिल।
अनमैल॰ गु॰ मैलरहित, उज्ज्वल, साफ़।
अनमोल॰ गु॰ जिसका मोल नहीं अर्थात् जो बहुत अपूर्व है।
अनायास॰ गु॰ विना परिश्रम, बेमिहनत।
अनरस॰ ना॰ पु॰ रसरहित, झगड़ा, फीका, मित्रों में अनमनाव।
अनरीति॰ ना॰ स्त्री॰ कुचालि, असम्मान, अनादर।
अनर्गल॰ गु॰ निर्बाध, स्वेच्छक।
अनर्घ॰ गु॰ अपूज्य, अमूल।
अनर्थ॰ गु॰ अर्थहीन, अनुचित, बेमतलब।
अनर्थक॰ गु॰ निष्प्रयोजन, निष्कारण, झूठा।
अनल॰ ना॰ पु॰ पावक, अग्नि, आग।
अनलपक्ष॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष जो सर्वदा काल आकाश में उड़ा करता है और जब ईश्वरेच्छा से उस के गर्भ होता है तो अण्डे को आकाश से छोड़ देता है और यह अण्डा पृथ्वी पर पहुँचने के पहिलेही मार्ग में पाक फूटकर बच्चा बन जाता है और उड़ने लगता है और अपने माता पिता का स्मरण कर ऊपर लौट जाता है, (यथा विचार मालायाम्) अनल पक्ष को चेटुवा गिरे धरणि अररांय। बहु अलीन यह लीन है मि स्यों तासु को धाय।
अनवकाश॰ ना॰ पु॰ अवकाशरहित।
अनवट॰ ना॰ पु॰ भूषणविशेष जो स्त्रियां पांव के अंगूठे में पहनती हैं।
अनवस्थित॰ गु॰ बेठिकाने, रंग रंग की।
अनशन॰ ना॰ पु॰ उपवास, लंघन।
अनश्वर॰ गु॰ जिसका नाश न हो, जो न मिटे।
अनसीखा॰ गु॰ अनपढ़ा, अज्ञानी।
अनसुनीकरना॰ स॰ क्रि॰ आनाकानी करना।
अनसूया॰ ना॰ स्त्री॰ अत्रिमुनि की पत्नी।
अनहित॰ गु॰ स्नेहरहित, शत्रु, बैर, बुराई।
अनहोना॰ गु॰ असम्भव, जो होनहार नहीं।
अनाकुर॰ ना॰ पु॰ वृक्ष, पेड़।
अनाचार॰ ना॰ पु॰ कुचाल, आचाररहित।
अनाज॰ ना॰ पु॰ अन्न, गल्ला।
अनाजक॰ ना॰ पु॰ कालाअगरु।
अनाड़ी॰ गु॰ भदेसल, निर्गुणी, नवसिखा।
अनाथ॰ गु॰ दुःखी, जिसका कोई रक्षक न हो, यथा विधवा, पिताहीन पुत्र।

मङ्गलकोष की भूमिका ॥

दो० बन्दि प्रथम परमात्मा कारण करता जोय । ग्रन्थकारके अर्थमधि करै अनुग्रह सोय ॥ १ ॥
सिधिदाता गुणगण विमल सुमति बढ़ावनहार । करता हरता पालका तासुचरण आधार ॥ २ ॥
गुरुज्ञाता वाणी विशद सुमति समृद्धि सदाहि । करिप्रणामतनमनवचनकरोंकोषचितचाहि॥३॥
ईशासन विधु मुनि गगन धरा फरवरीमास । संवतविक्रमदीपचषनममहितपसविलास॥४॥
आनंद महल सदद्मन पैतेपुर चटशाल । कोषरच्योलखिग्रन्थबहुनामनशब्दजंजाल॥५॥

जानना चाहिये कि यह आधीन मतिमन्द मङ्गलीलाल कायस्थ श्रीवास्तव सरहीग्राम जिलअ शाहजहांपुर का निवासी १५ मई सन् १८५४ ई० सरिश्तहतालीम में कि २२ वर्षके अनुमान हुये नौकर है और अब मुख्य पाठक अर्थात् अफ़्सर मुदर्रिस मदर्सह पैंतेपुर प्रदेश सीतापुर का है कुछकालसे हिन्दीभाषा के कोष के खोज में यत्न करताथा और बहुधा कोष फ़ारसीभाषा आदि मिलित दृष्टिआये जिनसे कुछ प्रयोजन हिन्दीभाषा के विद्यार्थियों का नहीं निकलसक्ता कोई ग्रन्थ हिन्दीभाषा का ऐसा दृष्टिगोचर न हुआ जिसकी सहायता से हिन्दी भाषानुरागी विद्यार्थी रामायण आदि ग्रन्थों में संस्कृत भाषादि शब्दों का अर्थ शिक्षककी कृपा विना विचार करलेते, यद्यपि बहुतेरे ग्रन्थ नाममाला आदि भाषापद्य में पायेगये तथापि वे सब निरनुप्रास अर्थात् बेरदीफ़ हैं उनमें भी शब्दार्थ शीघ्रता से नहीं मिलता है जबतक समस्त पुस्तक मुखाग्र न हो, इसलिये आधीन ने निम्न लिखित पुस्तकों और बहुत अन्य भाषाग्रन्थों के शब्द जो देखे और स्मृत थे इकट्ठा करना आरम्भकिया कि जिसमें सामान्य भाषा विद्यार्थियों को लाभ हो और जब बहुत से शब्द सार्थ इकट्ठा

अनादर० ना० पु० अपमान, निरस्कार।
अनादि० गु० जिसकी आदि न हो, यथा ईश्वर।
अनामय० गु० रोगरहित, निर्दोष।
अनामिका० ना० स्त्री० तीसरी अंगुली।
अनायास० ना० पु० यत्नबिना, निरुपाय।
अनावृष्टि० ना० स्त्री० सूखा, पानी न बरसे।
अनाश्रम० गु० बिनमकान, बिना ठिकाने और चारों आश्रमरहित।
अनाहत० गु० वह शब्द जो ब्रह्माण्ड में अखण्ड होता है, ना० पु० चक्रविशेष।
अनिरुद्ध० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पोता।
अनिर्वचनीय० } गु० जो कहने के योग्य
अनिर्वाच्य० } नहीं है।
अनिल० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
अनिश्चित० पु० जो निश्चय नहीं कियागया।
अनिश्चितता० ना० स्त्री० जिसका निश्चय नहीं है उसकी स्थिति।
अनिष्ट० गु० अप्रिय, अरुचि।
अनी० ना० स्त्री० सेन, बरछी और बाण आदि की नोक।
अनीक० ना० पु० मत्था, ना०स्त्री० सेन, समूह।
अनीकिनी० ना० स्त्री० सेना, फ़ौज।
अनीति० ना० स्त्री० कुचाल, अन्याय।
अनीश० ना० पु० ईशरहित, जीव।
अनीह० गु० चेष्टारहित, तृष्णारहित।
अनु० अव्य० यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ, कभी पुनः,कभी सादृश्य, कभी निषेध, कभी संग, कभी पीछे, कभी समीप का होता है।
अनुकम्पा० ना० स्त्री० कृपा, दया, रहम, मेहरबानी।
अनुकरण० ना० पु० किसी के पीछे काम करना, किसीकी प्रति वा नक़ल करना।
अनुक्त० गु० जो उक्त नहीं, ना० पु० दृष्टान्त।
अनुक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी, रीति।
अनुक्रोश० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम।

अनुकारी० ना० पु० नौकर, सेवक।
अनुकूल० गु० प्रसन्न, सहायक, व्याधिहीन।
अनुख० ना० पु० आलस, बुराई।
अनुखाल० ना० पु० किसी नदी का एक भाग किसी देश में प्रविष्ट हो थोड़ी दूर और भेद न करै उसका नाम अर्थात् छोटाखाल।
अनुग० गु० सेवक वा सेवकिन, पीछे चलैया।
अनुगत० ना० पु० आश्रित।
अनुग्रह० ना० पु० कृपा, दया, मेहरबानी।
अनुगामी० गु० सेवक, पीछे चलनेहारा।
अनुचर० ना० पु० साथी, सहचर, दास, सेवक।
अनुचरी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
अनुचित० गु० अयोग्य, जो वाजिब न हो।
अनुज० ना० पु० छोटाभाई।
अनुजा० ना० स्त्री० छोटीबहिन।
अनुत्तर० गु० उत्तरहीन, महज्जन, श्रेष्ठ।
अनुताप० ना० पु० पश्चात्ताप, शोच।
अनुतारा० ना० पु० तारे के पीछेका तारा
अनुदिन० ना० पु० प्रतिदिन, नितप्रति।
अनुनासिक० ना० पु० जो नासिकासे निकले।
अनुपल० ना० पु० पलका साठिवां अंश।
अनुपस्थित० गु० जो उपस्थित न होवे।
अनुपान० ना० पु० औषध आदि के साथ और जो कुछ मिलाय के पीते हैं।
अनुप्रास० ना० पु० समान जाति के वर्णों से रचितपद, समूह, रदीफ़।
अनुभव० ना० पु० मानसज्ञान, अटकल, विचार, ध्यान।
अनुभूति० ना० व्याकरण के आचार्य का नाम है जिन्होंने सारस्वत बनाई और अपने चित्त के स्थिर निश्चय को भी कहते हैं, जिसका पर्याय अनुभव है।
अनुभाव० ना० पु० महिमा, बड़ाई।
अनुभूत० गु० बीता, जो मनसे जानागया है।
अनुमति० ना० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति, सलाह।

होगये तब श्रीमन्निखिलसुखसमाज विराजमान विमल धार्मिकानेकसुरसमाज समान सामन्तोपहारीकृत कनकमय गजाश्व शब्दायित द्वारदेश प्रोद्दण्ड प्रचण्डाखण्ड विपक्षबल प्रोद्भटभटसमूहसंकर्त्तन निर्द्दयातिशय तीक्ष्णधार सहायीकृत खड्ग दिग्विजयी विनोदानान्दित महाभूताधिप शिव श्रीयुत कालिन् ब्रौनिंग साहब एम,ए, अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेशकी आज्ञानुकूल वर्णमाला के अक्षरानुहारि निज शिष्य सीताराम और हरदेवबख़्श की सहायता पाकर सानुप्रास करके मंगलकोप नाम रख—उक्त साहब वीरेश साहसी की प्रतिष्ठित भेंट में निवेदन किया, तब साहब सुजान गुणखानने दृष्टिगोचरकर आज्ञादी कि यह पुस्तक और अधिक कीजावे और सहायता के निमित्त हिन्दीकोप कृपा किया और एक ग्रन्थ तसलीमुल्लुग़ात द्वितीयभाग जिसमें भाषा शब्दोंकी फ़ारसीभाषा लिखी है हस्तामलक हुआ फिर सन् १८७२ ईसवी में यह कोष और अधिक कियागया परन्तु इसी अवसर में उक्त पाठशालाध्यक्ष वीरेश की नागपुर प्रदेश यात्रा से ग्रन्थकार के मनोरथ हृदय के हृदयमेंही रहगये थे कि दैवयोग से हमलोगों के आनन्ददायी स्वस्ति श्रीमदुद्दाम गुणगणग्राम विस्फुरत्कमल मुख भरत विशदीकृतानेक संगीत प्रकारास्मदीय विद्याप्रचाराग्रणीय गुणिजनजेगीयमान यशोदानन्दकन्दकर्म्म पराक्रम श्रवण रसास्वादानन्दार्थि मनोभिलषित विविध पदार्थ दानसंसक्त मानस श्रीयुत जान, सी, न्यसफ़ील्ड साहब एम, ए, पूर्व्वोक्त नागपुरगामी के स्थानपर अवधदेशीय पाठशालाओं के डेरेक्टर पब्लिक इन्स्ट्रक्शन् वीरेश नियत होय ब्रह्मलोक से सुशोभित हुये और ग्रन्थ को कृपाकटाक्ष से अवलोकन करतेही आधीन के

अनुमरण० ना० पु० एक चिता में विधिपूर्वक शरीर का दहन, सती होना।
अनुमान० ना० पु० अटकल, युक्ति से जो निश्चय होवे।
अनुमति० गु० विचारा गया।
अनुमोदन० ना० पु० प्रशंसा वा बड़ाई करना।
अनुयायी० गु० पीछे जानेवाला, सेवक।
अनुरक्त० गु० मग्न, रत, मस्त।
अनुराग० ना० पु० स्नेह, प्रीति, थोड़ी लड़ाई।
अनुरागी० गु० प्रियतम, दोस्त।
अनुराधा० ना० स्त्री० सत्रहवां नक्षत्र।
अनुरूप० गु० सदृश, समान, तुल्य।
अनुरूपक० गु० समान करनेवाला, प्रतिमा।
अनुरोध० गु० अपेक्षा, उपकार, रोक, मुवाफिक, अनुरूप होना।
अनुरोधी० गु० विरोधी।
अनुलाप० ना० पु० दुःखित वार्त्ता।
अनुग्रह० ना० पु० सुखअपवन।
अनुवाद० ना० पु० पुनः कथन, बातका पक्ष करना, हठ करना।
अनुशयना० ना० स्त्री० नायिकाविशेष।
अनुशाखा० ना० स्त्री० पीछेकी डाली, प्रमाण।
अनुशासन० ना० पु० आज्ञा, हुक्म।
अनुसंधान० ना० पु० कामना, पीछे लगाना।
अनुसरना० प० क्रि० पीछे चलना वा आना।
अनुसार० ना० पु० सदृश, तुल्य, अनुरूप होना अथवा अनुरूप, मुवाफिक।
अनुस्वार० ना० पु० बिन्दु जो अक्षर के मस्तक पर देते हैं।
अनुहर० ना० पु० तुल्य, अनुहार।
अनुहरण० ना० पु० चुराना, उठालेना।
अनुहार } अनुहारि० } गु० तुल्य, सदृश, समान, योग्य।
अनुपम० } अनुपमा० } अनूप० } गु० उपमारहित अर्थात् सब से भला, एकता, बेनजीर।

अनूठा० गु० अपूर्व, निराला, नया, अजायब।
अन्यून० गु० सब, बिलकुल।
अनृत० ना० पु० झूठ, मिथ्या।
अनेक० गु० बहुत, एक से अधिक।
अनेकवर्णात्मक० गु० जिस शब्द में एकसे अधिक वर्ण हों।
अनैसी० ना० स्त्री० अनुचित, कुदृष्टि।
अनैसे० गु० कुदृष्टि, क्रोधदृष्टि, रामायणे यथा (अनहुँ अनुज तव चितव अनैसे)।
अनौषधि० गु० जिसकी औषधि नहीं, साध्य।
अन्त० ना० पु० समाप्ति, शेषभाग, सीमा, दूसरी जगह, अव्य० निदान।
अन्तक० ना० पु० काल, यमराज।
अन्तकाल० ना० पु० मरने का समय।
अन्तःकरण० ना० पु० मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार।
अन्तःकोण० ना० पु० भीतर का कोना।
अन्तःपाती० गु० अन्तर्गत, भीतर।
अन्तःपुर० ना० पु० घर जिसमें रानी आदि स्त्रियां रहती हैं।
अन्तःसम्पात० ना० पु० भीतर छूना।
अन्तड़ी० ना० स्त्री० आंत।
अन्तर० अव्य० बीच, फर्क, ना० पु० भीतर, समय, भेद, हृदय।
अन्तरंग० ना० पु० आत्मीय, अपना।
अन्तर्हित० गु० छुपजाना, गायब होना।
अन्तरा० ना० पु० गीत के पहिले पदको छोड़के जो पद हैं अन्य, मध्य, बाहिर।
अन्तरापत्ति० ना० पु० गर्भ।
अन्तरित० गु० छुपना, गायब होना।
अन्तरिया० ना० पु० तिजारी, ज्वरविशेष।
अन्तरीप० ना० स्त्री० रास, धरती की नोक जो समुद्र में चलीगई हो।
अन्तर्वेद० ना० पु० देश जो गंगा यमुना के मध्य में है।
अन्तस्थ० गु० बीच में, दूरवाला, अन्तका।

परिश्रम सफल करनेके हेतु सकलकलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर वर्म्म के मुद्रालय में सीसाक्षरों से मुद्रित होने के लिये आज्ञादी अब यह ग्रन्थ अतिसावधानता से छपकर श्रीमहाशय की अनुमति से तय्यार हुआ इस कारण सम्पूर्ण विद्वानों की उत्तम सेवा में निवेदन है कि जिस शब्दकी लिपि वा अर्थ आदि में रंचक विभेद वा अशुद्धता पावें उसको कृपादृष्टि से शुद्ध करलेवें मेरी मूर्खतापर ध्यान न देवें क्योंकि इस अज्ञानमूर्त्तिने पूर्व्वोक्त साहब वीरेश पराक्रमी की अभिज्ञता देख अपनी मूढ़ता विदित की॥

यथा सोरठा॥

साहब पाय अधीन सबै जनावन विज्ञता। पदवी कर्माधीन सब पावत संसार महँ॥ १॥
जाकर गुणगण चक्र लखि भागन भवमूढ़ता। यथादेखि शशिचक्र तम नहिं आवत निकटही॥ २॥

दोहा॥

अतिप्रवीण गाहक चतुर नितप्रति करत समोद। श्रीबुधिवर विज्ञानमय सुयश छयो चहुँकोद॥ ३॥

सवैया छन्द॥

कीरति सोहत देश विदेश प्रसिद्ध महागुण ज्ञान बड़ाई।
साहब कालिन मौनिंगधौ रवि देखिगई कुबिरैनि पराई॥
मूढ़खगाभि अभृक्ष निशाकर-मन्द-रहे सब ठाम छिपाई।
ज्ञान गुणादि सरोज प्रफुल्लित यश सरोवर देत दिखाई॥ ४॥

दोहा॥

विद्यमान कीरति विमल यति पण्डित मनुहारि। धन्यवाद भाषत सबै आदरदानि बिचारि॥ ५॥
सुनि अभिज्ञता स्वामिकी चितउछाह अधिकान। रच्योकोषमंगलसुगन्धि निजभललसितसन्मान॥ ६॥
श्रीकालिन्मौनिंग जू गमन गनपुरहि कीन। कोष छपनकी आस तब मनसों मैं तजिदीन॥ ७॥
ग्रन्थ रचत जो श्रम किहों जान्यिहु भा बेकाज। दैवयोग मे तुरतही सजी तासु पुनि साज॥ ८॥
करुणालय ताही समय विद्याचय गुणराशि। नैसर्फील्डसाहब यहां आये सुयशप्रकाशि॥ ९॥
भे डैरेक्टर अवध के विद्याकेरि प्रचारि। पौनबीचजनु उदधिसों सबकहँ लीन उबारि॥ १०॥
गुणगाहक धनदायकहि लिकै मैं निज कोश। जायदिखायहुँनिजप्रभुहि तासुशरणकरिपेश॥ ११॥

अंतावली० ना० स्त्री० आंत।
अंतिम० गु० अन्तका।
अंतेवासी० ना० पु० पीछे रहनेवाला, दूररहने वाला शिष्य।
अन्त्य० गु० अन्तका, पिछला।
अन्त्यज० ना० पु० धोबी, चमार, नट, बरट, किरात, मेद, भिल्ल, पीछे उपजा, नीचजाति।
अंत्याक्षर० ना० पु० अन्तका अक्षर।
अंध० गु० अन्धा।
अंधक० ना० पु० दैत्यविशेष जो सदाशिव से लड़ा था और मारागया।
अंधकबन्ध० ना० पु० दैत्यविशेष।
अंधकरिपु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अंधकार० ना० पु० अंधेरा।
अंधकारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अंधला० गु० अन्धा।
अंधसुत० ना० पु० दुर्योधनादि सौ १००।
अंधा० गु० नेत्रहीन।
अन्न० ना० पु० पक्व ओदनादि, अनाज।
अन्नकूट० } ना० पु० अन्नका ढेर लगाना।
अन्नपर्वत० } हिन्दुधर्ममें त्योहार दीवालीके दूसरे दिन होता है।
अन्नप्राशन० ना० पु० बालक को पांचवें वा छटेमास खीर चटाना, माड़ चाटना।
अन्ना० } ना० स्त्री० दाया, दाई, धाय।
अन्नी० }
अन्य० गु० दूसरा, भिन्न, कोई और।
अन्यच्च० गु० अन्य भी, और भी।
अन्यथा० अव्य० और प्रकार, प्रकारान्तर, अशुद्ध, झूठ।
अन्यथाचरण० ना० पु० उलटाव्यवहार।
अन्यथासिद्धि० ना० स्त्री० और प्रकार से ठहराना।
अन्यदेश० ना० पु० और देश, गैरमुल्क।
अन्यदेशीय० गु० परदेशी, विदेशी।
अन्यपुरुष० गु० जो परोक्ष में है, गायनर।

अन्यरक्त० ना० पु० लालऊंगा।
यथा, (अन्यरक्तःवृत्तफलावसिरःकांपपिप्पली) इति निघंटे।
अन्याय० ना० पु० अनीति, उपद्रव।
अन्याय० } गु० अयोग्य, अधर्मी, ज़ालिम।
अन्यायी० }
अन्यत्र० अव्य० और कहीं।
अन्योन्य० गु० परस्पर।
अन्वय० ना० पु० एकका एकके साथ सम्बन्ध, कुल।
अन्वहं० गु० निरन्तर, सत्यकर।
अन्वित० गु० संयुक्त, मिलित।
अन्वेषण० ना० पु० अनुसन्धान, खोज।
अन्वेषिणी० ना० स्त्री० खोजनेवाली, ढूंढ़ने वाली।
अप० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ, कु० निषिद्धता, विरुद्धता, भिन्नता, यथार्थता इत्यादि होताहै सर्व० आप।
अपकर्म० ना० पु० कुकर्म, बुराकाम।
अपकार० ना० पु० अनिष्ट, बिगाड़, द्वेष, अधर्म।
अपकारी० गु० द्वेषी, कुकर्मी।
अपकृष्ट० गु० अधम, न्यून, छोटा।
अपक्व० गु० जो पका न होवे।
अपघात० ना० पु० निज करसों आप को मारना।
अपचय० ना० पु० टोटा, घाटा, हानि।
अपजस० ना० पु० कलंक, अपमान, अपयश।
अपटु० गु० जो काम करने में प्रवीण नहीं, निर्बुद्धि।
अपडर० ना० पु० झूठडर, निजओर से डर।
अपत० गु० पापी, बेइज्जत।
अपति० ना० स्त्री० अनादर, अपमान।
अपत्य० ना० पु० सन्तान, औलाद।
अपथ० ना० पु० कुमार्ग, मार्गरहित।

ताशु छपनको शीघ्रही आज्ञा साहब दीन। अन्वित सो अब यह भयो जामें निमित कौन॥ १२॥
निजस्वामी सों विनय यह करत अहो मनलाइ। करहिं प्रकट यहि कोष को देशदेश चलिजाइ॥ १३॥
कौन परिश्रम में बहुत करत ताहि निर्माण। लहहुँ पारितोषिक अधिक यहही आश प्रमाण॥ १४॥
गुणी जानिहैं श्रम अधिक चतुर जाचिहैं मूल। दोषअदोष दुहून को कविके हृदय न शूल॥ १५॥

ग्रन्थनामानि।

(१) श्रीरामायण भाषा तुलसीदासकृत ॥
(२) रामचन्द्रिका केशवदासकृत ॥
(३) ब्रजविलास ब्रजवासीदासकृत ॥
(४) नाममाला नन्ददासकृत ॥
(५) अनेकार्थ नन्ददासकृत ॥
(६) तत्त्वसंज्ञा चन्दनकविकृत ॥
(७) सप्तशतिका बिहारीलालकृत ॥
(८) वैद्यनिघंटु मदनसिंहकृत ॥
(९) अध्यात्मप्रकाश सुखदेवकृत ॥
(१०) हिन्दीकोष पादरीआदमकृत ॥
(११) अन्य भाषा बहुग्रन्थ ॥

चिह्न ॥

नाम पुंलिंग=ना० पु०। नाम स्त्रीलिंग=ना० स्त्री०। गुणवाचक=गु०। सकर्मक क्रिया=स० क्रि०। अकर्मक क्रिया=अ० क्रि०। अव्यय=अव्य०। सर्वनाम=सर्व॥

प्रकट होवे कि बहुत से शब्द अप्रचलित इस ग्रंथ में लिखेगये उनके उदाहरण अमरकोषादि संस्कृत और भाषा ग्रन्थों में से दिये हैं और जहां २ उचित होवें वहां २ कविलोग और उदाहरण देदेवें॥

इस पुस्तक से विद्यानुरागियों का बहुत लाभ हुआ और उनकी गुणग्राहकता से शीघ्रतर बिक्री होगई अबकी पँचवारा छपता है आशा है इसको गुणग्राहक अंगीकार करें॥

अपथ्य० गु० जिसके खानेसे रोग अधिक होवे। अर्थात् जठरानल जिसे न पचा सके।
अपना० सर्व० निजका, स्वकीय।
अपनाहत० ना० स्त्री० घराना, कुटुम्ब, सम्बन्ध।
अपवस० गु० स्वाधीन, अपनेवश में।
अपभय० ना० पु० भूठडर, अपडर।
अपभाषा० ना० स्त्री० गँवारीबोली, वा यवनादिकों की बोली, फारसीयादि।
अपभ्रंश० ना० पु० अपशब्द, अशुद्धशब्द।
अपमान० ना० पु० अनादर, इज्जत घटाना।
अपमानी० गु० जो अपमान के योग्य है।
अपमृत्यु० ना० स्त्री० अनमौत, रोगहीन, मरना, अकालमृत्यु।
अपर० ना० पु० तगर औषध, गु० दूसरा, अन्य, विरुद्ध।
अपरम्पार० गु० जिसका पार नहीं है, अनन्त।
अपरा० ना० स्त्री० जुड़ी।
अपराजय० ना० पु० पराभव, हारता, हारि।
अपराजित० गु० जो जीता न जावे ना० पु० श्रीसदाशिवजी, श्रीविष्णुनारायण।
अपराजिता० ना० स्त्री देवीविशेष, पुष्पविशेष, जिसको विष्णुकान्ता वा कौआगोड़ी कहते हैं।
अपराध० ना० पु० दोष, पाप, घात, अधर्म।
अपराधी० गु० पापी, दोषी, अधर्मी।
अपराह्ण० ना० पु० तीसरापहर।
अपरिचित० गु० जातिवाचकशब्द, जिससे परिचय न हो, जिससे पहिचान न हो।
अपरिमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।
अपर्णा० ना० स्त्री० पार्वती।
अपलक्षण० ना० पु० अपशकुन, बुरे चिह्न।
अपलोक० ना० पु० अपयश, बदनामी।
अपवर्ग० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, निजात।
अपवाद० ना० पु० निन्दा, अपयश, उलहना, बुरीबातें आनको कहना, अनियमशब्द।
अपवादी० गु० अर्थी, जो अपवाद करे।

अपवित्र० गु० अशुद्ध, छुतहरा, नापाक।
अपवित्रता० ना० स्त्री० अशुद्धता, छूत, नापाकी।
अपशकुन० ना० पु० बुरासगुन।
अपशब्द ना पु० शब्द जो अशुद्ध है।
अपश्य० गु० जो देखा न जावे।
अपसव्य० गु० दाहिना भाग अंगका वा दाहिना हाथ या कांधा वा जलदान में अंगोछे दाहिने कांधेपर रखना, विरुद्ध।
अपस्मार० ना० पु० रोगविशेष, जिसको मिरगी कहते हैं।
अप्सरा० ना० स्त्री० स्वर्वेश्या, परी।
अपहरण० ना० पु० हरलेना, लूटलेना, लूटना।
अपहर्त्ता० }
अपहरता० } गु० चोर, डाकू, लुटेरा।
अपहारी० }
अपह्नव० ना० पु० छिपाव, नकार।
अपक्ष० गु० पक्षरहित।
अपाक० गु० जो पका नहीं है।
अपांग० ना० पु० नेत्रका अंत भाग, कटाक्ष।
अपादान० ना० पु० पांचवांकारक।
अपान० ना० पु० गुदा, नीचेकी वायु, पाद प्राणविशेष, सर्व० अपना।
अपाप० गु० पापरहित।
अपामार्ग० ना० पु० ऊंगा।
अपार० गु० जिसका पारावार नहीं है, अनन्त।
अपावन० गु० अशुद्ध, नापाक।
अपूत० गु० निर्वंश, कुपुत्र, कपूत।
अपूर्ण० गु० जो अभी पूरा नहीं भया है।
अपूर्णभूत० गु० अभी व्यतीत नहीं भया।
अपूरब० } गु० जो पहिले कभी नहीं देखा
अपूर्व० } अनूठा।
अपि० अव्य० निश्चय, ठीक, भी।
अपिधान० ना० पु० पोशाक, वस्त्र।
अपीड़० ना० पु० शिखा, भूषण।

अ॰ अव्य॰ देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर जिस शब्द के प्रथम में इसका सम्बन्ध होता है उसका अर्थ उलटा होजाता है यथा अकारण अर्थात् कारणरहित और स्वरादि शब्द के पहिले जब आवे तब अन् होजाता है यथा अनंत अर्थात् अअन्त।

अंकवार॰ ना॰ स्त्री॰ गोदी, कौरा।

अंगरखा॰ ना॰ पु॰ पहिरने का वस्त्रविशेष।

अंगिया॰ ना॰ स्त्री॰ चोली, वस्त्रविशेष।

अंगीठी॰ ना॰ स्त्री॰ पात्र, जिसमें आग रखते हैं।

अंगूठी॰ ना॰ स्त्री॰ जो आभूषण अंगुली में पहिनते हैं।

अंगोछा॰ ना॰ पु॰ देह पोंछनेका वस्त्र, रूमाल।

अंत॰ ना॰ पु॰ अंत, समाप्ति, पूरा।

अंतर॰ अव्य॰ अन्तर, फरक।

अंतर्गति॰ ना॰ स्त्री॰ भीतरी चाल।

अंतरिक्ष॰, **अंतरीक्ष॰** } ना॰ पु॰ छत। ऊपर की जगह।

अंतर्यामी॰ गु॰ अंतर्जामी, जो दिलमें रहे, यह शब्द ईश्वरके लिये है।

अन्तर्ध्यान॰ गु॰ अंतर्द्धान, छिपजाना, गुमहोना।

अंतःपट॰ ना॰ पु॰ भीतर का वस्त्र।

अंधाकुँआ॰, **अंधकूप॰** } ना॰ पु॰ कुआं, जो कूड़ाआदि से भरगयाहो।

अन्धेर॰ ना॰ पु॰ अन्याय, उपद्रव।

अन्धकार॰ गु॰ अंधेरा।

अम्ब॰ ना॰ पु॰ आम।

अम्बर॰ ना॰ पु॰ आकाश, कपड़ा।

अंबारी॰ ना॰ स्त्री॰ हौदा जो हाथीपर रखते हैं।

अंश॰ ना॰ पु॰ भाग, हिस्सः दर्जा जो ६९ १/२ मील का होता है।

अंशी॰ गु॰ भागी अर्थात् हिस्सेदार।

अंशु॰ ना॰ पु॰ किरण।

अंशुमती॰ ना॰ स्त्री॰ शालपर्णी।

अंशुमान्॰ ना॰ पु॰ सूर्य, सूर्यवंशी राजा वि॰।

अंशुमाली॰ ना॰ पु॰ सूर्य, चंद्रमा।

अंस॰ ना॰ पु॰ कंधा।

अऊत॰ ना॰ पु॰ निर्वंशी, बिन व्याहा।

अनृण॰ गु॰ उद्धार, बेबाक।

अकच्छ॰ गु॰ नंगा, मेहरा, वस्त्ररहित।

अकण्टक॰ गु॰ बेखटके, बेधड़क।

अकथ॰, **अकथनीय॰**, **अकथ्य॰** } गु॰ जो कहनेके योग्य न हो जो वर्णनरहित होवे।

अकनि॰ अ॰ क्रि॰ सुनिके, रामायणे यथ (तुरंग नचावहिं कुँअर वर अकनि मृदंग निशान)।

अकम्पन॰ ना॰ पु॰ राक्षसविशेष, कम्पहीन।

अकर्कश॰ गु॰ कोमल, नरम।

अकर्म॰ ना॰ पु॰ अपराध, कुकर्म।

अकर्मक॰ गु॰ कर्मरहित धातु ना॰ क्रिया अर्थात् जो कर्त्ता की शक्ति में होवे।

अकर्मण्य॰ गु॰ निकम्मा, बेकाम।

अकलंक॰, **अकलंकित॰** } गु॰ निर्दोष, बेदाग।

अकल्याण॰ गु॰ कल्याणरहित, अमंगल।

अकवार॰ ना॰ स्त्री॰ अंकवार।

अकस॰ ना॰ स्त्री॰ बैर, अदावत।

अकस्मात्॰ अव्य॰ अचानक, निमित्तहीन।

अकाज॰ ना॰ पु॰ कामका विनाश, खराबी।

अकाम॰ ना॰ पु॰ व्यर्थ, निष्फल, कामहीन।

अकारण॰ ना॰ पु॰ निमित्तहीन, बेमतलब, बेसबब।

अकारथ॰ गु॰ व्यर्थ, निष्फल।

अकारान्त॰ गु॰ जिस शब्दके अन्तमें अकार होवे।

अकाल॰ ना॰ पु॰ दुर्भिक्ष, कुसमय, कहत।

अकालफल॰ ना॰ पु॰ कुसमय के फल, बे मौसिम की वस्तु, दुर्भिक्ष की वस्तु वा फल।

अकालमृत्यु॰ ना॰ पु॰ कुसमय में मरना, धोखे में मरना, बे मौत मरना।

अपेय० गु० जो पीने के योग्य नहीं है।
अपेल० गु० अचल, जो टल न सके।
अपेक्षक० गु० अपेक्षा करनेहारा, निसवतकरनेहारा, अनुरोधक।
अपेक्षा० ना० स्त्री० अनुरोध, आशा, भरोसा, रिश्तह, निसवत।
अपेक्षित० गु० आश्रित, अपेक्षा कियागया।
अपौरुष० गु० जिसके सामर्थ्य नहीं है, नाताकत।
अप्रकाश० ना० पु० अंधेरा, जो प्रकट नहीं है।
अप्रतिहत० गु० जिसकी रोक नहीं है।
अप्रतीत० गु० प्रतीतिरहित अर्थात् जो विश्वास के योग्य नहीं है।
अप्रत्यय० ना० पु० अविश्वास।
अप्रत्यक्ष० गु० जो देखा न जावे।
अप्रधान० गु० मुख्यनहीं है, जो सरदार नहीं है।
अप्रबन्ध० ना० पु० बेबन्दोबस्त, प्रबन्धहीन।
अप्रमाण० गु० बहुत, प्रमाणरहित, असत्य।
अप्रसन्न० गु० जो प्रसन्न नहीं है, गंदला, नाखुश।
अप्रसिद्ध० गु० जिसको कोई नहीं जानता है, गुप्त।
अप्राकृत० गु० जो प्राकृत नहीं है।
अप्राप्तयौवन० ना० पु० लड़का, नाबालिग।
अप्रिय० गु० अहित, जो प्रिय नहीं है।
अफरना० अ० क्रि० अधिकभोजन से पेट फूलना, अधिक धनवान् होना।
अफराना० स० क्रि० अधिक भोजन कराना।
अफल० गु० निष्फल, व्यर्थ, बेफायदह।
अब० अव्य० इससमय, इदानीं; ना० पु० पानी।
अबतक० } अव्य० अभीतक, इससमयतक।
अबतलक० }
अब्भरण० ना० पु० पानीभरना।
अबल० गु० निर्बल, पौरुषरहित।
अबला० ना० स्त्री० नारी, स्त्री; गु० बलहीना।
अबस० गु० निर्बल, बलरहित।
अबार० ना० स्त्री० विलम्ब, देर, कुसमय।
अबुध० गु० मूर्ख, मूढ़, अहमक, देग।
अबूझ० गु० नासमझ, नादान।
अबूझा० गु० बिना समझा, अनजाना।
अबूझित० गु० जो बूझा नहीं गया।
अबेर० ना० स्त्री० अबार।
अबै० अव्य० अभी० गु० अनिश्चित।
अब्ज० ना० पु० कमल, अर्ब, चन्द्रमा, देववैद्य, शंख, वृक्षविशेष।
अब्द० ना० पु० वर्ष, साल, संवत्।
अब्धि० ना० स्त्री० मंडूकी, सीपी, समुद्र।
अभक्त० गु० जो भक्त नहीं, भक्तिहीन, जो हिस्सह नहीं हुआ है।
अभंग० गु० जिसका नाश न हो।
अभय० गु० निर्भय, निडर।
अभया० ना० स्त्री० हर्रे।
अभरण० ना० पु० गहना, आभूषण, जेवर।
अभरम० गु० पतिहीन, निडर।
अभाग० } ना० पु० दुर्गति, विपत्ति।
अभाग्य० }
अभागा० ना० पु० } गु० भाग्यहीन, निगर।
अभागी० ना० स्त्री० }
अभाय० ना० पु० अनहोना।
अभार० गु० हलका।
अभाव० ना० पु० अविद्यमान, नाश, मृत्यु, अनहोना।
अभास० ना० पु० आभा, प्रतिबिम्ब।
अभि० अव्य० सब दिशितें, यह जिस शब्दके प्रथममें संयुक्त होताहै उसका अर्थ यथा, आगे, प्रत्येक इत्यादि होताहै।
अभिगम्य० अ० क्रि० आपुजाकर।
अभिचार० ना० पु० मन्त्र जिससे वधकिया जाता है।
अभिजित्० ना० पु० मुहूर्त विशेष, इक्कीसवां नक्षत्र।

अकाश॰ ना॰ पु॰ आकाश, प्रकाशहीन ।
अकिञ्चन॰ गु॰ कंगाल, कुछ पास नहीं, केवल भगवान् भरोसे ।
अक्रिय॰ गु॰ कुछ नहीं करता, करनेके योग्य न होवे ।
अकुण्ठ॰ गु॰ तीक्ष्ण, तेज, विनाशरहित ।
अकुताना॰ अ॰ क्रि॰ ऊबना, घबड़ाना ।
अकुताही॰ गु॰ ऊबै, घबरावे ।
अकुल॰ गु॰ कुछ जाति नहीं, नीचघराना, ना॰ पु॰ विशेष ईश्वर ।
अकुलाना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुल होना, घबड़ाना ।
अकुलीन॰ } गु॰ धाकर, कुलहीन, नीच ।
अकुलीना॰ }
अकेला॰ } गु॰ दुःखी, एकही ।
अकेली॰ }
अक्रूर॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी के चचा, गु॰ जिसका अन्तःकरण कोमल हो ।
अखण्ड॰ गु॰ समस्त, सम्पूर्ण, खंडहीन ।
अखर्व॰ गु॰ समस्त, बहुत ।
अखल॰ गु॰ अखिल, ना॰ पु॰ देवता, सुर ।
अखाड़ा॰ } ना॰ पु॰ जहां मल्लयुद्ध होता है, अंगनाई ।
अखारा॰ }
अखिल॰ गु॰ समस्त, सम्पूर्ण, बिल्कुल ।
अखेट॰ ना॰ स्त्री॰ मृगया, शिकार ।
अखयवट॰ } ना॰ पु॰ अक्षयवृक्ष ।
अखयवृक्ष }
अख्याति॰ ना॰ स्त्री॰ अपयश, अयश, बदनामी ।
अग॰ ना॰ पु॰ पर्वत, अगम्य, जहां जा न सके ।
अगम॰ } गु॰ जहां जाय न सके, जो बूझने के योग्य नहीं ।
अगम्य॰ }
अगर॰ ना॰ पु॰ सुगन्धिप्रसिद्ध ।
अगस्त॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष ।
अगस्ति॰ } ना॰ पु॰ मुनिविशेष जिन्होंने समुद्र को सुखा दिया था ।
अगस्त्य॰ }
अगणित॰ गु॰ बहुत, जो गिना न जावे, बेहिसाब ।

अगवानी॰ ना॰ स्त्री॰ आगे जाकर लेना, पेशवाई ।
अगहन॰ ना॰ पु॰ नवमें महीना का नाम ।
अगाऊ॰ अव्य॰ पहिले से, आगे ।
अगाध॰ गु॰ अथाह, अत्यन्त गम्भीर ।
अगार॰ ना॰ पु॰ घर, आगे ।
अगास॰ ना॰ पु॰ अपराध, दोष, नाममालायाँ, अघ अगास हेलन अहित औगुण जो कछु पीय ।
अगुवा॰ ना॰ पु॰ मार्ग दिखानेवाला, संदेशी, आगे चलनेहारा, प्रधान, चौधरी ।
अगुण॰ गु॰ अवगुण, गुणहीन, ना॰ पु॰ ईश्वर ।
अगुरु॰ ना॰ पु॰ जिसका गुरु नहीं, नीच, ह्रस्व ।
अगूढ़॰ गु॰ सुगम, जो गूढ़ नहीं ।
अगूढ़गन्धा॰ ना॰ स्त्री॰ हींग ।
अगोचर॰ गु॰ अदृश्य, अलख, अव्यय ।
अगोटना॰ } स॰ क्रि॰ चौकीदेना, रखाना ।
अगोरना॰ }
अगौनी॰ ना॰ स्त्री॰ अगवानी ।
अग्नि॰ ना॰ पु॰ आगि, अगुआ ।
अग्निका॰ ना॰ स्त्री॰ कलिहारी ।
अग्निजिह्वा॰ ना॰ पु॰ देवता ।
अग्निपाली॰ ना॰ स्त्री॰ चीता, बूटी ।
अग्निमन्थ॰ ना॰ पु॰ अरणी ।
अग्निमुखी॰ } ना॰ पु॰ भिलवां वृक्ष ।
अग्निवक्त्रक॰ }
अग्निवल्लभ॰ ना॰ पु॰ राल, रार ।
अग्निशिखा॰ ना॰ स्त्री॰ केशर, जाफरान ।
अग्निसंस्कार॰ ना॰ पु॰ दाह देना, मृतक को जलाना वा उसके हेतु क्रियाविशेष ।
अग्निहोत्री॰ ना॰ पु॰ अग्नि पूजनेहारा, ब्राह्मण जातिविशेष ।
अग्र॰ ना॰ पु॰ मुख्य, आगे, प्रथमभाग ।
अग्रगण्य॰ गु॰ जो पहिले होवे, वा गिनाजावे ।

अभिधान० ना० पु० नाम, कोष।
अभिनव० गु० नया, नूतन, नवीन।
अभिनन्दन० ना० पु० सराहे, मन्नाते, सलाह।
अभिप्राय० ना० पु० मतलब, सारार्थ, अर्थ, आशय, कारण।
अभिभूत० गु० पराजित, बलहीन।
अभिमत० गु० वाञ्छित, इच्छानुसार, सम्मत।
अभिमान० ना० पु० अहंकार, घमण्ड, गरूर।
अभिमानी० } गु० अहंकारी, मगरूर।
अभिमान्य० }
अभिमुख० गु० सन्मुख, सामने, वर्तमान।
अभिरत० गु० संयुक्त, मिलित।
अभिराम० गु० सुन्दर, सुखद, रमण।
अभिरामी० गु० रमनेवाला।
अभिलाष० } ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ,
अभिलाषा० } तमन्ना।
अभिवन्दन० ना० पु० नमस्कार करना।
अभिवाद० ना० पु० दुर्वचन, कुवचन और बुरा बतकहाव।
अभिवादन० ना० पु० चरण ग्रहणपूर्वक नमस्कार।
अभिषिक्त० गु० जिसका अभिषेक भयाहो।
अभिषेक० ना० पु० जल छिरकना, शान्ति स्नान, पदवी प्राप्ति के लिये पहिली क्रिया, सिंहासन राज्यतिलक।
अभिसार० ना० पु० नायक, रति।
अभिसारिका० ना० स्त्री० नायिका, भेदपर्व।
अभिसारिणी० ना० स्त्री० नायिका।
अभिज्ञ० गु० प्रवीण, कदरदान, गुणग्राहक।
अभी० अव्य० इसीसमय।
अभीत० गु० निडर, अभय।
अभीप्सित० गु० अभिवाञ्छित,मनमानित।
अभीशु० ना० पु० जीर, आग।
अभीष्ट० गु० अभिवाञ्छित, मनमानित।
अभूत० गु० जो उत्पन्न नहीं भया, अभाव।
अभूतरिपु० गु० शत्रुरहित।

अभेद० } गु० ऐक्य, परस्पर सम्बन्ध, प्रकट।
अभेव० }
अभ्यन्तर० ना० पु० भीतरी, भीतरका।
अभ्यास० ना० पु० साधन, चिन्तन, कर्तव्य।
अभ्र० ना० पु० आकाश, मेघ।
अभ्रक० ना० पु० अबरक, धातुविशेष।
अमंगल० गु० मंगलरहित, अशोभा।
अमत्त० गु० सीधा, सावधान, होशमें।
अमर० गु० जो न मरे, ना० पु० देवता, निरंकार, अविनाशी।
अमरपुर० ना० पु० मद्रदेशका नगरविशेष, इन्द्र, विष्णु, शिव, लोक, स्वर्ग।
अमरस० ना० स्त्री० आमका रस।
अमरावती० ना० स्त्री० इन्द्रपुरी।
अमरोहत० ना० पु० कचनार वृक्ष।
अमर्याद० } ना० स्त्री० अनीति, अनशा,
अमर्यादा० } असम्मान।
अमल० गु० निर्मल, उजला, मादकवस्तु, राज्य।
अमलतास० ना० पु० बन्दर, लाठी, औषध विशेष।
अमात्य० ना० पु० मन्त्री, दीवान।
अमान० गु० सोधेरमार, मानरहित।
अमाना० अ० क्रि० समाना, भरना, तपना।
अमान्य० गु० जो मानने के योग्य नहीं है।
अमानुष० गु० मनुष्यतारहित, बिना मनुष्य।
अमावस० }
अमावस्या० } ना० स्त्री० कृष्णपक्षकी समाप्ति की तिथि बदी १५।
अमावास्या० }
अमर्ष० } गु० ईर्षारहित, अक्रोध।
अमार्ष० }
अमिट० गु० जो मिट न जावे या मेटा न जासके।
अमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।
अमिय० ना० पु० अमृत, आबहयात।
अमियमूरि० ना० स्त्री० सञ्जीवन बूटी।
अमिल० गु० सदा, जो न मिले।

अमी० ना० पु० अमृत।
अमुक० सर्व० कोई, वह, अमुका, फलाना।
अमूल० गु० जिसकी जड़ नहीं है।
अमृत० ना० पु० पीयूष, सुधा, विष, पानी, देवता, गु० जो न मरे।
अमृतफल० ना० पु० आंवला।
अमृतवल्लरी० ना० स्त्री० गुरच, गिलोय।
अमृता० ना० स्त्री० हर्र, गुरच, फटकरी, नाम चन्द्रमा की एक कला का।
अमृताङ्ग० ना० पु० स्वरभूता, यथा (अमृताङ्गी दशाङ्गुली) इति निघंटः।
अमृताशी० ना० पु० देवता, इन्द्र।
अमेध्य० ना० पु० विष्ठा, मल।
अमेय० गु० अप्रमाण, यथा श्रीभगवान् जिसका प्रमाण कोई न जानसके।
अमोघ० गु० जो व्यर्थ नहीं, सफल, अचूक, फलदाता, ना० स्त्री० नदीविशेष।
अमोघा० ना० स्त्री० हर्र।
अमोल० गु० मोलरहित, अपूर्ववस्तु, बेअन्दाज।
अम्यत० गु० खट्टा।
अम्बक० ना० पु० नेत्र, आंख, यथा त्र्यम्बक, अर्थात् शिव।
अम्बर० ना० पु० आदर, आकाश, वस्त्र।
अम्बरमणि० ना० पु० सूर्य्य।
अम्बरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
अम्बरीष० ना० पु० राजाविशेष।
अम्बष्टकी० ना० स्त्री० माई औषध।
अम्बा० ना० स्त्री० माता, महतारी।
अम्बारी० ना० स्त्री० हाथी पर का आसन विशेष।
अम्बिका० ना० स्त्री० माई औषध, माता, देवी, पार्वती।
अम्बिष्ठा० ना० स्त्री० रायलता।
अम्बु० ना० पु० जल, पानी।
अम्बुज० ना० पु० कमल।
अम्बुद० ना० पु० मेघ।
अम्बुधि० ना० पु० समुद्र।
अम्बुपति० ना० पु० वरुणदेव।
अम्बुवल्लरी० ना० स्त्री० जलपिप्पल।
अम्बुवह० ना० पु० मेघ।
अम्बुवासिनी० ना० स्त्री० मछली, कुम्भी।
अम्बुभृत्० ना० पु० मेघ।
अम्भ्य० ना० पु० कमल।
अम्भफल० ना० पु० आबसिव, यथा (अम्भ फलः पापः) इति निघंटः।
अम्भोज० { **अम्भोरुह०** } ना० पु० कमल।
अम्मा० ना० स्त्री० माता, मा, चची, यह शब्द अरबी का है।
अम्र० ना० पु० अम्ब, आम।
अम्ल० गु० खट्टा, खटाई।
अम्लान० गु० निर्मल।
अम्लिका० ना० स्त्री० इमिलीवृक्ष।
अम्लवेतस० ना० पु० अमलबेत।
अय० ना० पु० लोहा, रामायणे यथा (अयमय खण्डन ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ)।
अयं० अव्य० सर्व, यह।
अयन० ना० पु० वर्षका आधा अर्थात् उत्तरायण वा दक्षिणायन, मार्ग, घर।
अयथार्थ० ना० पु० अन्याय, अन्धेर।
अयमात्मा० ना० पु० यह जीव।
अयान० { **अयाना०** } गु० भोला, नादान, मूर्ख।
अयुक्त० गु० अनुचित, बिनामेल।
अयुत० ना० पु० दश सहस्र १००००।
अयोग्य० गु० अनुचित, असमर्थ, बेजा।
अयोध्या० ना० स्त्री० अवध की प्राचीनराजधानी जहां श्रीरामावतार भया था।
अयोनि० ना० पु० ब्रह्मा।
अरगट० ना० पु० खुपान, घूंघट।
अरगा० गु० अलग, भिन्न।

ारना० स० क्रि० मढ़ियाना, चिपकाना, लेई लगाना; जमाना।
ारी० गु० खानेवाला, छोंटीहुई लकड़ी, कोई वस्तु जो मढ़ियाई गई ना० स्त्री० कोयल पक्षी।
दि० ना० पु० सांप, रुधिर, दैत्यविशेष।
हिंसक० गु० भोला, साधु जो हिंसा न करे।
हित० ना० पु० शत्रु, बैर, शत्रुता।
हिफेन० ना० स्त्री० अफ़्यून, अफ़ीम।
हिमाली० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
हिर० ना० पु० मोरपक्षी, जातिविशेष।
हिवल्लरी० ना० स्त्री० नागबेलि, पानआदि।
हिवात० ना० पु० सुहागस्त्रीका।
हिवेलि० ना० स्त्री० नागबेलि, पानआदि।
ीर० ना० पु० ग्वाला, आभीर।
ीरणी० ना० स्त्री० ग्वालिन।
ीला० गु० साहसी, निडर, बहादुर।
ीश० ना० पु० शेषादि, सर्पादि।
० अव्य० सम्बोधन, थे।
र० ना० स्त्री० आखेट, शिकार।

रिया०
हेरी० } गु० आखेटकी, शिकारी।

ो० अव्य० सम्बोधन वा आश्चर्य वा हर्ष में बोला जाता है, यथा अहोभाग्य।
ोहात्र० ना० पु० दिनराति।
ो० अव्य० अहो।
० ना० पु० नेत्र, बहेरावृक्ष, पांसा।
त० ना० पु० चावल, जव पूजाआदिके
ु० घावरहित, फोड़ारहित।
र० ना० पु० ककारादि वर्ण, गु० सूक्ष्म, अविनाशी।
विद्या० ना० स्त्री० रमल।
विद्वान्० गु० रम्माल, पांसावाला।
ांस० ना० पु० रेखा, भूमिके उत्तर वा दक्षिण केन्द्रतक नब्बे, ९० अंश।
ि० ना० पु० नेत्र, आंखि।

अक्षिसंकेत० ना० पु० आंखिसे इशारह करना कटाक्ष, हावभाव।
अक्षुब्ध० गु० स्थिर, शान्त।
अक्षौहिणी० ना० स्त्री० सैन प्रमाण, इसका कथन कई प्रकार का है। यथा (नवनागसहस्राणि नागे नागे शतं रथाः, रथे रथे शतंचाश्वा अश्वेअश्वे शतधराः) अथवा दश वाहनी अथवा १०९३५० पैदल, ६५६१० सवार, २१८०० रथ, २१८७० हाथी।
अत्र० अव्य० यहां, इस जगह।
अत्रि० ना० पु० चन्दमा के पिता, मुनिविशेष।
अत्रिज० ना० पु० चन्द्रमा, दुर्वासा, दत्तात्रेय
अज्ञ० गु० मूर्ख० अजान, नादान।
अज्ञता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।
अज्ञात० गु० अनजान, नामालूम।
अज्ञाता० गु० मूर्ख, भोला, नादान।
अज्ञान० गु० मूर्ख, मूर्खता।
अज्ञानता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।

(आ)

आ० अव्य० जिस० शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ न्यून वा उलटा होजाता है और कभी क्रिया० के अवधि का ज्ञापक होताहै।
आं० अव्य० खेदोक्तिका सूचक शब्द।
आंक० ना० पु० अंक, चिह्न, मदार।
आंकना० स० क्रि० लखना, अंकाना।
आंख० ना० स्त्री० चक्षु, नेत्र।
आंग० ना० पु० अंग।

आंगन०
आंगना० } ना० पु० अंगना, सहन।

आंच० स्त्री० अग्निकी ताप।

आंचर०
आंचल० } ना० पु० अंचला।

आंसू० ना० पु० आंसू।
आंट० ना० स्त्री० गांठि, विरुद्धता, ताक।
आंटना० अ० क्रि० समाना, पहुँचना।

अरगाना स० क्रि० अलगाना, अ० क्रि० अलग होना, ना० पु० चुपलगाना।
अरगानी० ना० स्त्री० चुप, चुपकी।
अररो० अ० क्रि० हठ किया।
अरझना० अ० क्रि० उलझना, फँसना।
अरणता० ना० पु० देशविशेष।
अरणी० ना० स्त्री० अग्निप्रचारक काष्ठविशेष।
अरण्ड० ना० पु० रेंडी का वृक्ष, अण्डवृक्ष।
अरण्य० ना० पु० जंगल, वन।
अरना० ना० पु० जंगली भैंसा।
अरनी० ना० स्त्री० जंगली भैंस।
अरबराना० अ० क्रि० घबराना, हरबराना।
अरराना० अ० क्रि० बिनारोक गिरनेका शब्द।
अरराय० गु० बिनारोक, बिनासहारा।
अरलू० ना० पु० स्योनावृक्ष।
अरविन्द० ना० पु० कमल।
अराजक० गु० राजा बिना देश।
अरि० ना० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।
अरिल० ना० पु० छन्दविशेष।
अरिष्ट० ना० पु० अशुभ, मृत्युदायक, रोग, निम्बवृक्ष।
अरिष्टक० ना० पु० रीठा।
अरिहा० ना० पु० शत्रुनाशक, शत्रुघ्न।
अरी० अव्य० स्त्रीका सम्बोधन।
अरु० अव्य० और, पुनः ना० पु० कुरहर।
अरुचि० ना० स्त्री० मतलई, अनिच्छा।
अरुण० ना० पु० लालरंग, सूर्य, लालअरण्ड, सूर्य का सारथी।
अरुणचूड़० } ना० पु० मुर्गा।
अरुणशिखा० }
अरुणा० ना० स्त्री० जपापुष्प, गुड़हलका फूल।
अरुणाई० ना० स्त्री० लाली।
अरुणारे० गु० लाल।
अरुणोदय० ना० पु० सूर्योदय के पहिले दो मुहूर्त, सूर्योदय।
अरुष्क० ना० पु० भिलावाँ।
अरे० अव्य० नीच नर को सम्बोधन, गु० ऐंठा, हटा।
अरेच० ना० पु० अपराध।
अरोग० गु० भलाचंगा, रोगरहित।
अरोग्यशिवी० ना० स्त्री० किरवाली।
अर्क० ना० पु० सूर्य, मंदारवृक्ष, स्फटिक।
अर्कपुष्पी० ना० स्त्री० ऊंधाहोली।
अर्कविशदा० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
अर्गजा० ना० पु० सुगन्धि, द्रव्यविशेष।
अर्गजी० गु० जो अर्गजे से रंगा गया।
अर्घ० ना० पु० पूजा करने की एकरीति, आठ वस्तु को मिलायके ईश्वर हेतु अर्पण, सूर्य की पूजा करके जल देना, मोल।
अर्घा० ना० पु० पात्रविशेष जिसमें देवता को स्नान कराते हैं या जल देते हैं।
अर्चक० गु० पुजारी।
अर्चन० } स० क्रि० आराधना, पूजाकरना।
अर्चना० }
अर्चा० ना० स्त्री० पूजा।
अर्चि० ना० पु० आंच, टेम ज्योति चमक।
अर्चित० गु० पूजित।
अर्जन० ना० पु० उपार्जन, कमाई, प्राप्ति।
अर्जना० स० क्रि० कमाना, उपार्जन करना।
अर्जुन० ना० पु० वृक्षविशेष, सफेद, सुवर्ण, सहस्रबाहु, पांडवका तीसरा पुत्र, कुकुभवृक्ष धवल।
अर्णव० ना० पु० सागर, समुद्र।
अर्थ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तात्पर्य, धन, दौलत, माने, मतलब।
अर्थशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने का शास्त्र, नीतिशास्त्र।
अर्थसाधन० ना० पु० रीता, अर्थ का ठीक करना।
अर्थात् अव्य० जानो, अर्थ, यह, यानी।

आंटी० ना० स्त्री० फंटी, अंटिया।
आंड० ना० पु० वृषण, अण्ड।
आंत० ना० स्त्री० आंतड़ी।
आंधी० ना० स्त्री० झकड़, झंझावायु।
आंव० ना० पु० आम्र।
आम० } ना० पु० पेट में रोग विशेष, आम,
आंव० } आमाशय।
आंवला० ना० पु० वृक्ष वा फल विशेष।
आंसू० ना० पु० आंखोंका पानी।
आक० ना० पु० अर्क, मदार।
आकर० ना० स्त्री० खानि अर्थात् धातु वा रत्नादि के उत्पन्न होनेका स्थान।
आकरीय० गु० जो खान से उत्पन्नहो।
आकर्षण० ना० पु० बल से खींचना।
आकर्षित० गु० जो खींचागया।
आकांक्षा० ना० स्त्री० वांछा, इच्छा, चाह।
आकांक्षित० गु० वांछित, चाहिता।
आकांक्षी० गु० इच्छाकरनेवाला, चाहक।
आकार० ना० पु० स्वरूप, डौल, सेन, सूरति।
आकारान्त० गु० जिसके अन्त में आकारहोवे।
आकाश० ना० पु० गगन, आसमान, अम्बर।
आकाशपवन० ना० पु० लताविशेष, आकाशवेलि या आकाशका पवन।
आकाशवाणी० ना० स्त्री० वाणी जो आकाश से होती है।
आकाशविलासी० ना० पु० देवता, नक्षत्र, गु० जो आकाशमें विलासकरे, यथा पक्षी।
आकाशवेलि० ना० स्त्री० अमरवेलि।
आकाशी० गु० आकाशका, स्वर्गीय।
आकुल० गु० व्याकुल, कातर।
आकृति० ना० स्त्री० रूप, आकार, मूरति, डौल।
आकृष्ट० गु० खींचाहुआ।
आक्रम० ना० पु० बलके प्रकाश करके काम में दूसरे से अधिक होना, चढ़ाव।
आखण्डल० ना० पु० इन्द्र।
आखण्डलपुर० ना० पु० इन्द्रलोक, स्वर्ग।
आखत० ना० पु० अक्षत।
आखा० ना० पु० बोरा, गठिया, चलनी।
आखात० ना० पु० खलीज।
आखु० } ना० पु० मूसा, चूहा।
आखुक० }
आखेट० ना० पु० अहेर, शिकार, मृगया।
आखेटकी० गु० शिकारी, अहेरी।
आख्या० ना० स्त्री० संज्ञा, नाम।
आग० ना० पु० अग्नि।
आगत० गु० उपस्थित।
आगम० ना० पु० वेद व शिवोक्तशास्त्र विशेष भविष्यत् वा ऽ आवाई।
आगमन० ना० पु० अवाई, आन।
आगमवक्ता० ना० पु० शिव, गु० जो आगमकी बात बदे वा आगम का पाठकहोवे।
आगमविद्या० ना० स्त्री० आगम कहने की विद्या।
आगमज्ञानी० ना० पु० तान्त्रिक जो आगमको जानता होवे।
आगर० ना० पु० अधिक, बाबर।
आगरा० ना० पु० नगर विशेष।
आगरी० ना० स्त्री० कोठरी।
आगलान्त० अव्य० गलेलग।
आगा० ना० पु० सामना, अगवाड़ा।
आगामी० गु० आनेहारा, अवैया।
आगार० ना० पु० घर, मकान।
आगिल० गु० पहिला।
आगू० } अव्य० सामने, आदिके, अग्र।
आगे० }
आगोट० ना० स्त्री० चौकसी, क़ैद।
आग्रह० ना० पु० उपकार, जिहालत, ग्रहण।
आघात० ना० पु० चोट मारपीट।

अर्थानुरोध० ना० पु० नाम के अनुरूप होना, अर्थ के अनुरूप।
अर्थान्तर० ना० पु० दूसराअर्थ।
अर्थी० गु० धनी, वादी, अर्थवक्ता, प्रयोजनयुक्त, ना० पु० याचक, अर्थी, ना० स्त्री० लारी, ताबूत, टिकटी।
अर्दावा० ना० पु० मीठापिसान।
अर्द्ध० गु० आधा।
अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधाचन्द्रमा।
अर्द्धचन्द्रिका० गु० कालानिसोत, आधीचांदनी।
अर्द्धजल० गु० आधापानी, मरणकाल।
अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधीराति।
अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधाशरीर, सीतांग।
अर्द्धांगी० गु० शीतांगी ना० स्त्री० पत्नी।
अर्पण० ना० पु० दान, देवता को भेंटदेना।
अर्पना० स० क्रि० अर्पणकरना।
अर्ब० ना० पु० सौ किरोड़ १०००००००००।
अर्बुद० ना० पु० दशकिरोड़, पर्वतविशेष।
अर्भक० ना० पु० पुत्र, शिशुगर्भ।
अर्यमा० ना० पु० सूर्य।
अर्वाक्० गु० नीच, अव्य० पहिली।
अर्शापर्श० ना० पु० शुद्ध करने के लिये जल छिड़कना, छूना।
अर्हन्त० ना० पु० जैनी।
अल० अव्य० अलंकृ, समर्थ, पूरण, ना० पु० आभरण, आलस, बहुतायत।
अलक० ना० स्त्री० बालों की लट, घूंघर।
अलक्त० ना० पु० कुङ्कुम, महावरयुत।
अलकावली० ना० स्त्री० एकओर के बालों की लटें।
अलख० गु० अगोचर, अनदेखा, जो न पहिचाना जावे, यथा ईश्वर।
अलग० गु० भिन्न, जुदा, लगाव नहीं।
अलगनी० ना० स्त्री० रस्सी जिसपर कपड़े धरते हैं।

अलगर्द० ना० पु० पनिहांसांप, यथा-अलगर्दो जलव्यालः इत्यमरः।
अलगा० गु० भिन्न, निर्बन्ध।
अलगाना० स० क्रि० जुदाकरना, अ० क्रि० जुदा होना, अलग होना।
अलंकृत० गु० अलङ्कारयुत, आभूषित।
अलङ्कार० ना० पु० भूषण, गहना और शास्त्र विशेष।
अलंग० ना० स्त्री० ओर, पार।
अलभ्य० गु० जो मिलने के योग्य न हो।
अलम्० अव्य० बहुत, देर।
अलम्बुषा० ना० स्त्री० इसामा जो मुख से निकलती है, ज्ञानसारावल्ल्यां यथा-(मुखमपि अचलम्बुषा त्रिशामिव, कुङ्कुमित, के...देश विरामित)।
अलबाई० गु० थोड़ेदिनकी ब्यानी, रासचन्द्रिका यां यथा-(ज्यों सुनके सुरभी अलबाई)।
अलवेश० गु० बहुलायत, अतिशायार हेशः इत्यभिधानः।
अलश० ना० पु० आलस्य।
अलसाना० अ० क्रि० औंघाना।
अलसी० ना० स्त्री० तीसी, अतसी।
अलक्षण० ना० पु० दुश्चिह्न।
अलात० ना० स्त्री० बनैटी।
अलान० ना० स्त्री० हाथीबांधने की जंजीर जिसको आंदू कहते हैं।
अलाप० ना० पु० आलाप, उच्चारण।
अलापना० स० क्रि० आलापना।
अलाव० ना० पु० धूनी, पूरा।
अलि० ना० पु० बिच्छू, भ्रमर, वृश्चिक लग्न, स्त्री० सखी।
अलिक० ना० पु० माथा, झूठ।
अलिन० ना० पु० भ्रमर, ना० स्त्री० छिपा।
अलिनी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी।
अली० ना० स्त्री० सखी, दूती, भ्री।
अलीक० ना० पु० झूठ, मिथ्या।

आघार० ना० पु० घृत, घी, छिड़काव।
आघु० ना० पु० मोल, मर्य्याद, यथा बिहारीलाल सतसतिकायां। दोहा (जन्म जलधि पानिप विमल भोजग आघु अपार, रहै गुणी है गरपर भलौ न मुक्ताहार)।
आंगिरस० ना० पु० बृहस्पति।
आचमन० ना० पु० आचमन अर्थात् भोजन वा पूजा करने के पहिले थोड़ाजल हथेली में रखके पीना या कुल्लीकरना।
आचरण० ना० पु० कानून, चालि, व्यवहार, आचार, शास्त्रोक्त क्रिया।
आचार० ना० पु० विचारकरना, पासरड, परहेज खटाई, फारसी।
आचारी० गु० जो मनुष्य शास्त्रोक्त क्रियायें समेत करे।
आचार्य्य० ना० पु० वेदका उपदेशक, गुरु।
आच्छादन० ना० पु० वस्त्र, ढकना, पोथी, पोशाक।
आच्छादित० गु० वस्त्रयुत, ढकाभया।
आछे० गु० अच्छेका बहुवाक्य।
आज० अव्य० अद्य, इमरोज।
आजनेय० ना० पु० घोड़ा यथा (आजनेयाःकुलीनाःस्युर्विनीताःसाधुवाहिनः इत्यमरः)।
आजा० ना० पु० दादा, पिताका पिता।
आजाना० अ० क्रि० अचानकआना, पड़ना।
आजि० ना० पु० युद्ध, समर, लड़ाई।
आजीव० ना० पु० } जीविकानिर्वाह, मआश।
आजीविका० स्त्री० }
आटना० स० क्रि० भरना।
आटा० ना० पु० चौरस, सूजी, पिसान।
आठकी० ना० पु० तिल जिनमें से तेल निकलता है।
आड़० ना० स्त्री० ओट, परदा।
आड़ना० स० क्रि० ओटकरना, आड़देना।
आडम्बर० ना० पु० उद्योग, अभिमान, हर्ष।
आड़ा० गु० तिरछा, टेढ़ा।
आड़ी० ना० पु० रक्षक, ना० स्त्री० गाने में स्वर विशेष, टेढ़ी, तिरछी, बेंड़ी।
आड़ेआना० अ० क्रि० रक्षा करना, बचावहोना।
आढ्य० गु० धनाढ्य, धनी, स्वामी।
आतङ्क० ना० पु० भयभीत, दुःख डाट डर, प्रताप इज्जत।
आततायी गु० डकैत, हत्यारा, परस्त्रीहारक।
आतप० ना० पु० घाम, धूप।
आतपत्र० ना० पु० छत्र।
आतपी० गु० धूप से विकल।
आता० ना० पु० सीताफल।
आतिथेय० } गु० अतिथिका सत्कार करना, अतिथिपालन, मेजबानी।
आतिथ्य० }
आतुर० गु० दुःखी, रोगी, व्याकुल, घबरा।
आतृ० ना० स्त्री० गुरुवाणिन।
आत्मघात० ना० पु० अपनीहत्या, निजघात।
आत्मघाती० गु० निज जीवहन्ता, अधर्मी, जीव को दुःखदाता।
आत्मज० ना० पु० पुत्र, लड़का।
आत्मनामी० गु० जो आपसे प्रसिद्ध है।
आत्मपालक० गु० आपस्वार्थी, आपकाजी।
आत्मभू० ना० पु० ब्रह्मा।
आत्ममात्र० ना० पु० समस्तजीव, जीवभर।
आत्मरक्षा० ना० स्त्री० निजजीवकी रक्षा, इन्द्रवार्णी औषधि।
आत्मरक्षक० गु० निजजीवपालक।
आत्मश्लाघा० ना० स्त्री० निज मुख से अपनी बड़ाई।
आत्महा० गु० निजजीवघाती, धर्मरहित।
आत्मा० ना० पु० स्त्री० जीव, मन, बुद्धि, देह, स्वभाव, धन, अन्तर, अहङ्कार, आप।
आत्मिक० गु० मनका, अपना।
आत्मिकता० ना० स्त्री० अपनाहित।
आत्मीय० गु० आत्मिक, अपना।
आदर० ना० पु० सत्कार, सन्मान, प्रेमसे लेना।
आदरार्थ० गु० जिसमें आदर पायाजाता है।

अरगाना स० क्रि० अलगाना, अ० क्रि० अलग होना, ना० पु० चुपलगाना।
अरगानी० ना० स्त्री० चुप, चुपकी।
अरगो० अ० क्रि० हट क्रिया।
अरझना० अ० क्रि० उलझना, फंसना।
अरणता० ना० पु० देशविशेष।
अरणी० ना० स्त्री० अग्निप्रचारक काष्ठविशेष।
अरण्ड० ना० पु० रेंड़ी का वृक्ष, अरण्डवृक्ष।
अरण्य० ना० पु० जंगल, वन।
अरना० ना० पु० जंगली भैंसा।
अरनी० ना० स्त्री० जंगली भैंस।
अरबराना० अ० क्रि० घबराना, हरबराना।
अरराना० अ० क्रि० बिनारोक गिरनेका शब्द।
अरराय० गु० बिनारोक, बिनासहारा।
अरलू० ना० पु० स्योनावृक्ष।
अरविन्द० ना० पु० कमल।
अराजक० गु० राजा बिना देश।
अरि० ना० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।
अरिल्ल० ना० पु० छन्दविशेष।
अरिष्ट० ना० पु० अशुभ, मृत्युदायक, रोग, नीमवृक्ष।
अरिष्टक० ना० पु० रीठा।
अरिहा० ना० पु० शत्रुनाशक, शत्रुघ्न।
अरी० अव्य० स्त्रीका सम्बोधन।
अरु० अव्य० और, पुनः ना० पु० कुकुरा।
अरुचि० ना० स्त्री० मतभेद, अनिच्छा।
अरुण० ना० पु० लालरंग, सूर्य, लालसफरद, सूर्य का सारथी।
अरुणचूड़० } ना० पु० मुर्गा।
अरुणशिखा० }
अरुणा० ना० स्त्री० जपापुष्प, गुञ्जलता फूल।
अरुणाई० ना० स्त्री० लाली।
अरुणारे० गु० लाल।
अरुणोदय० ना० पु० सूर्योदय के पहिले दो मुहूर्त, सूर्योदय।
अरुष्क० ना० पु० भिलावाँ।
अरे० अव्य० नीच नर का सम्बोधन, गु० अड़ा, हठा।
अरेव० ना० पु० अपराध।
अरोग० गु० भलाचंगा, रोगरहित।
अरोग्यशिवी० ना० स्त्री० किरवाली।
अर्क० ना० पु० सूर्य, मदारवृक्ष, स्फटिक।
अर्कपुष्पी० ना० स्त्री० ऊंधाहोली।
अर्कविशदा० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
अर्गजा० ना० पु० सुगन्धि, द्रव्यविशेष।
अर्गजी० गु० जो अर्गजे से रंगा गया।
अर्घ० ना० पु० पूजा करने की एकरीति, आठ वस्तु को मिलायके ईश्वर हेतु अर्पण, सूर्य की पूजा करके जल देना, मोल।
अर्घा० ना० पु० पात्रविशेष जिसमें देवता को स्नान कराते हैं या जल देते हैं।
अर्चक० गु० पुजारी।
अर्चन० } स० क्रि० आराधना, पूजाकरना।
अर्चना० }
अर्चा० ना० स्त्री० पूजा।
अर्चि० ना० पु० आंच, टेम ज्योति चमक।
अर्चित० गु० पूजित।
अर्जन० ना० पु० उपार्जन, कमाई, प्राप्ति।
अर्जना० स० क्रि० कमाना, उपार्जन करना।
अर्जुन० ना० पु० वृक्षविशेष, सफेद, सुवर्ण, सहस्रबाहु, पांडवों का तीसरा पुत्र, कुकुभवृक्ष, धवल।
अर्णव० ना० पु० सागर, समुद्र।
अर्थ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तात्पर्य, धन, दौलत, माने, मतलब।
अर्थशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने का शास्त्र, नीतिशास्त्र।
अर्थसाधन० ना० पु० रीति, अर्थ का ठीक करना।
अर्थात्० अव्य० जानो, अर्थ, यह, यानी।

आरोपित० गु० कल्पना कियागया, बनाया गया, सौंपागया।

आरोप० ना० पु० कल्पना, बनावट।

आरोह० ना० स्त्री० } ऊपर चढ़ना, सीढ़ी,
आरोहण० ना० पु० } जीना।

आर्त्त० }
आरत० } गु० पीड़ित, दुःखित, व्याकुल।

आर्द्र० गु० गीला, सीला।

आर्द्रा० ना० स्त्री० छठानक्षत्र।

आर्य्य० गु० उत्तमकुलोत्पन्न, कुलीन, उत्तम, श्रेष्ठ।

आर्य्यावर्त्त० ना० पु० वह पवित्रदेश जो पूर्व समुद्रतट से पश्चिम सिन्धुतट तक और हिमालय से विन्ध्याचल तक है।

आर्सी० ना० स्त्री० भूषणविशेष जो स्त्रियां अंगूठे में पहिनती हैं, दर्पण।

आल० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, पीला, हरताल।

आलम्ब० ना० पु० सहारा, मदद।

आलम्बन० ना० पु० आश्रय, अवलम्ब।

आलय० ना० पु० घर, मकान।

आलवाल० ना० पु० थाला, थांवला।

आलस० ना० पु० ढील, सुस्ती, सिथिलता।

आलसी० गु० ढीला, सुस्त, शिथिल।

आलस्य० ना० पु० आलस।

आला० ना० गु० आरा, ताक, तारा जिसमें चिराग आदि रखते हैं।

आलान० ना० पु० खूंटा जिसमें हाथी बांधा जाता है, बेड़ी, जंजीर।

आलाप० ना० पु० बातचीत करना, स्वरमिलाप।

आलि० ना० स्त्री० सखी, पंक्ति।

आलिंगन० ना० पु० परस्पर गलेलगाना।

आलिंगित० गु० प्रसंगित, भोगीहुई।

आली० ना० स्त्री० सखी।

आलु० }
आलू० } ना० पु० विलायती कन्दविशेष।

आलोक० ना० पु० ज्योति, दृष्टि, चापलोसी।

आलोकन० ना० पु० दृष्टि देकर देखना।

आवझ० ना० पु० बाजाविशेष।

आवरण० ना० पु० ढाल, आच्छादन, विरूप, भँवर, घेरा।

आवर्त्त० ना० पु० भँवर जो पानीमें होता है।

आवर्दा० ना० स्त्री० आयुर्दाय, उमर।

आवनो० अ० क्रि० आना।

आवभक्ति० }
आवभगत० } ना० स्त्री० मान, सन्मान, आदर।
आवभगति० }

आवलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति।

आवश्यक० गु० निश्चय कर्तव्य, जरूरीकाम।

आवश्यकता० ना० स्त्री० जरूरत।

आवा० ना० पु० ब्रह्मा देशकी राजधानी। कुम्हार जिसमें बर्त्तन पकाताहै, अ० क्रि० आया।

आवाई० ना० स्त्री० चर्चा, समाचार।

आवागमन० }
आवागवन० } ना० पु० आनाजाना।

आवाजाई० ना० स्त्री० पांवपड़ना, आना जाना।

आवाती० ना० स्त्री० अवाई।

आवाधा० ना० स्त्री० भूमिखण्ड।

आवास० ना० पु० घर।

आवाहन० ना० पु० सादर बुलाना, बुलाना।

आविर्भाव० ना० पु० प्रकटहोना।

आविर्भूत० गु० प्रकटवस्तु।

आविष्ट० गु० जो भूतादिक करके ग्रस्त है।

आवृत० गु० घिराहुआ, वेष्टित।

आवृत्तिक० ना० स्त्री० उद्धरिणी, पढ़ाहुआ, दुहराना, दफ़।

आसक्त० गु० मोहित, गप्पड़, लीन और अतिरत।

अर्थानुरोध० ना० पु० नाम के अनुरूप होना, अर्थ के अनुरूप।
अर्थान्तर० ना० पु० दूसराअर्थ।
अर्थी० गु० धनी, वादी, अर्थवक्ता, प्रयोजनयुक्त, ना० पु० याचक, अर्थी, ना० स्त्री० लाश, तावूत, टिकठी।
अर्दावा० ना० पु० मैदाविशेष।
अर्द्ध० गु० आधा।
अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधाचन्द्रमा।
अर्द्धचन्द्रिका० गु० कालानिसोत, आधीचांदनी।
अर्द्धजल० गु० आधापानी, मरणकाल।
अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधीराति।
अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधाशरीर, शीतांग।
अर्द्धांगी० गु० शीतांगी ना० स्त्री० पत्नी।
अर्पण० ना० पु० दान, देवता को भेंटदेना।
अर्पना० स० क्रि० अर्पणकरना।
अर्ब० ना० पु० सौ किरोड़ १०००००००००।
अर्बुद० ना० पु० दशकिरोड़, पर्वतविशेष।
अर्भक० ना० पु० पुत्र, शिशुगर्भ।
अर्यमा० ना० पु० सूर्य।
अर्वाक्० गु० नीच, अव्य० पहिली।
अर्शपर्श० ना० पु० शुद्ध करने के लिये जल छिड़कना, छूना।
अर्हन्त० ना० पु० जैनी।
अल० अव्य० अलंबे, समर्थ, पूर्ण, ना० पु० आभरण, आलस, बहुतायत।
अलक० ना० स्त्री० बालों की लट, घूंघर।
अलक्त० ना० पु० कुसुम्भ, महावरयुत।
अलकावली० ना० स्त्री० एकआर के बालों की लटें।
अलख० गु० अगोचर, अनदेखा, जो न पहिचाना जावे, यथा ईश्वर।
अलग० गु० भिन्न, जुदा, लगाव नहीं।
अलगनी० ना० स्त्री० रस्सी जिसपर कपड़े धरते हैं।
अलगर्द० ना० पु० पनिहासांप, यथा-अलगर्दो जलव्यालः इत्यमरः।
अलगा० गु० भिन्न, निर्गन्ध।
अलगाना० स० क्रि० जुदाकरना, अ० क्रि० जुदा होना, अलग होना।
अलंकृत० गु० अलङ्कारयुत, आभूषित।
अलङ्कार० ना० पु० भूषण, गहना और शास्त्र विशेष।
अलंग० ना० स्त्री० ओर, तरफ।
अलभ्य० गु० जो मिलने के योग्य न हो।
अलम्० अव्य० बहुत, ढेर।
अलम्बुषा० ना० स्त्री० शाखा जो मूल से निकलती है, ज्ञानसारावल्ल्यां यथा-(मुखमपि अवलम्बुषा शिखामिव, कुङ्कुमिव, के ; देश विरामित)।
अलवाई० गु० थोड़ेदिनकी ब्यानी, रानवन्द्रिका यां यथा-(ज्यों सुनको सुरभी अलवाई)।
अलवेश० गु० बहुतायत, अतिशयार्थेशः स्वरभिधानः।
अलश० ना० पु० आलस्य।
अलसाना० अ० क्रि० औंघाना।
अलसी० ना० स्त्री० तीसी, अतसी।
अलस्तग० ना० पु० दुष्टचिह्न।
अलात० ना० स्त्री० बनेठी।
अलान० ना० स्त्री० हांथीबांधने की जंजीर जिसको आंदू कहते हैं।
अलाप० ना० पु० आलाप, उच्चारण।
अलापना० स० क्रि० आलापना।
अलाव० ना० पु० धूनी, पूरा।
अलि० ना० पु० विच्छू, भ्रमर, वृश्चिकराशि, स्त्री० सखी।
अलिक० ना० पु० माथा, भौंह।
अलिन० ना० पु० भ्रमर, ना० स्त्री० सखियां।
अलिनी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी।
अली० ना० स्त्री० सखी, दूती, स्त्री।
अलीक० ना० पु० झूठ, मिथ्या।

आशक्ति० ना० पु० चाह, प्यार।
आशंका० ना० स्त्री० भय, डर, सन्देह, शक।
आशय० ना० पु० अभिप्राय, आश्रय, मतलब, मजमून।
आशर० ना० पु० निशाचर, दैत्य।
आशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा।
आशावन्त० गु० आसरिका, उम्मेदवार।
आशावसन० गु० नंगा, तृष्णा रहित।
आशावान् गु० आशावन्त।
आशिष० ना० पु०, आशिषा० स्त्री०, आशीर्वाद० पु० } दुआ, भला मनाना, अच्छा चाहना।
आश्चर्य्य० गु० अद्भुत, ना० पु० अचम्भा, विस्मय।
आश्चर्य्यवन्त० गु० तअज्जुब में, अचम्भित।
आश्रक० ना० पु० रुधिर, लोहू, खून।
आश्रम० ना० पु० हिन्दू लोगों में चारि आश्रम अर्थात् ब्रह्मचारी १ गृहस्थ २ वानप्रस्थ ३ संन्यासी ४ और ऋषियोंके रहनेका स्थान, घर।
आश्रमी० गु० आश्रम धरनेवाला।
आश्रय० ना० पु० आसरा, समीपता, गु० अधीन, शरण, बल।
आश्रित० गु० आधीन, काबू परवश।
आश्वास० ना० पु० भरोसा, समाप्ति, अध्याय।
आश्विन० ना० पु० कुवार सातवांमास।
आषत० ना० पु० अक्षत चावलादि।
आषर० ना० पु० अक्षर वर्ण।
आषाढ़० ना० पु० आषाढ़ चौथामहीना।
आस० ना० स्त्री० आशा, भरोसा।
आशंसार्थ० गु० जिससे इच्छा का बोध होता है।
आसक्त० गु० आशक, फरेफतह।
आसक्ति० ना० स्त्री० आशक्ति, प्रीति प्रेम।
आसन० ना० पु० बिस्तर, सेज, योगासन, बैठने के लिये कुशा वा काथवा उनकी वस्तु बैठक, जांग के भीतरी ओर।
आसनगत० गु० बैठाहुआ।
आसनी० ना० स्त्री० ऊन वस्त्रादि बिछौना।
आसन्न० गु० निकट, पास।
आसन्नकोण० ना० पु० पास का कोना।
आसन्नभूत० ना० पु० निकटही व्यतीतभया।
आसपास० गु० लगभग।
आसमुद्र० ना० पु० समुद्रपर्यन्त।
आसय० ना० पु० आशय।
आसर० ना० पु० आशर, दैत्य।
आसव० ना० स्त्री० मदिरा विशेष, शराब।
आसा० ना० स्त्री० आशा।
आसाम० ना० पु० देशविशेष।
आसावरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, कपोत विशेष, कपड़ा विशेष।
आसिख० ना० स्त्री० आशिष।
आसीन० गु० बैठाहुआ।
आसीविष० ना० पु० सांप।
आसीस० ना० स्त्री० आशीर्वाद।
आसु० गु० शीघ्र, शिताबी।
आसुग० गु० बाण, वायु, सूर्य्य।
आसुतोष० गु० शीघ्र प्रसन्न होनेवाला।
आसुर० ना० पु० असुर या कोई असुर।
आसुरी० ना० स्त्री० राक्षसीमाया, निशाचरी।
आस्कत० ना० स्त्री० आलस्य।
आस्कती० गु० आलसी।
आस्ति० ना० पु० वेदधर्मोकाफल, साधुता, धर्मशक्ति, हस्ती।
आस्तिक० ना० पु० वेद के धर्मों के फलके विश्वासी, साधू।
आस्था० ना० स्त्री० टेक, सभा, परिश्रम।
आस्पद० ना० पु० स्थान, पद, खिताब।
आस्फोत० ना० पु० कचनारवृक्ष।
आस्रप० ना० पु० असुर, दैत्य।
आस्वाद० ना० पु० रसका अनुभव।
आह० ना० स्त्री० साहस, धीरता, धीरज।
आहट० ना० पु० पैर, शब्द, आवाज।

अलीन० गु० अयोग्य, अनुचित, बेमेल।
अलीह० गु० अयोग्य, झूठ।
अलेख० गु० अत्यन्त, अगणित, बहुत।
अलैयावलैया० ना० स्त्री० निछावर और दीवाली में पूला जलायके नचाना।
अलोन० } गु० लोनरहित, फीका।
अलोना० }
अलोप० गु० छुपा, बिगाड़ा, नष्ट, प्रकट।
अलोपना० स० क्रि० छुपाना, गुप्तकरना।
अलोल० गु० अटल, थिर, ना० स्त्री० खलकूद।
अलौकिक० गु० जो लौकिक नहीं है अर्थात् परलोक का लोकातीत।
अल्प० गु० थोड़ा, किंचित्।
अल्पतर० गु० बहुतथोड़ा।
अल्पधी० गु० लघुबुद्धी, नासमझ।
अल्पनिद्रा० गु० स्त्री० थोड़ासोना।
अल्पज्ञ० गु० कमसमझ, थोड़ाजानकार।
अल्लुक० ना० पु० आलूतरकारी।
अव० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी भिन्नता, कभी फैलाव का होता है कभी नास्ति, कभी अनादर।
अवकाश० ना० पु० औसर, सावकाश।
अवकेशी० गु० बांझ।
अवगति० ना० स्त्री० ज्ञान, वा बुरीदशा।
अवगाह० ना० पु० अथाह।
अवगाहन० ना० पु० स्नान, तरना, थाह लगाना।
अवगाहि० अ० क्रि० थाहलगाके।
अवगीत० गु० निन्दित, दुष्ट, ना० पु० निन्दा, दोष।
अवगुण० ना० पु० खोट, दोष।
अवघट० गु० कुघाट।
अवचट० गु० एकदृष्टि, एकाएक।
अवडेरि० अ० क्रि० बहकाय, धोखा देकर, रामायणे यथा (पंच कहैं शिव सती बिवाही पुनि अवडेरि मराइनि ताही।)
अवतंस० ना० पु० पताका, शिरोमणि।
अवतरना० अ० क्रि० उतरना, प्रकट होना।
अवतार० ना० पु० ईश्वर का मनुष्यादि के रूपसे पृथ्वीतलपर प्रकाशित होना, जन्म।
अवतारिक० } गु० परमात्मा, ईश्वरअवतार,
अवतारी० } लेनेहारा, यथा राम, कृष्ण।
अवदात० गु० उज्ज्वल, उत्तम, सुन्दर।
अवदीच० ना० पु० गुजराती ब्राह्मणोंकी जाति।
अवध० } ना० स्त्री० वचन, मर्याद, सीमा,
अवधि० } समय, वा श्रीअयोध्याजी वा उसके और पासका देश प्रसिद्ध।
अवधान० गु० चौकस, सावधान, ना० पु० चौकसाई, वचन।
अवध्य० गु० जो वधकरने के योग्य नहीं है।
अवधूत० ना० पु० योगी, शिवपूजक।
अवधूतनी० ना० स्त्री० योगिन।
अवनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन।
अवनीश० ना० पु० राजा, बादशाह।
अवन्तिका० } ना० स्त्री० उज्जैननगरी,
अवन्ती० } नदीविशेष।
अवम्० ना० पु० तिथिक्षय, गु० नीच।
अवयव० ना० पु० अंग वा शरीर का भाग।
अवराधक० गु० सेवक, ध्यानी।
अवराधित० गु० सेवित, ध्यान किये गये।
अवराधना० स० क्रि० सेवाकरना।
अवरुद्ध० बँधाहुआ।
अवरेखना० स० क्रि० लिखना, लकीरकरना।
अवरेखी० स० क्रि० लिखी, लकीर की।
अवरोध० ना० पु० बन्ध, रोक, अटक।
अवलम्ब० ना० पु० आश्रय, आसरा, सहारा।
अवि० ना० पु० पर्वत, शेष, सूर्य, रक्षक।
अविलम्बित० } गु० आश्रित, लकटता,
अविलम्बी० } पथी।
अविरलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति, कतार।

आहा॰ अव्य॰ खेदका सूचक शब्द।

आहार॰ ना॰ पु॰ भोजन, खाना।

आहारी॰ गु॰ भोजन करनेवाला, भोजन के योग्य।

आहि॰ अव्य॰ है।

आहुत॰ } ना॰ स्त्री॰ देवताओं के लिये होमने
आहुति॰ } के लिये जो वस्तु घृतादि।

आहवनीय॰ ना॰ पु॰ अग्निविशेष।

आहुक॰ ना॰ पु॰ उग्रसेन राजाका पिता।

आहुतदान॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणको बुलाकर घर पर दानदेना इसको मध्यम दान कहते हैं।

आह्निक॰ ना॰ पु॰ प्रतिदिन धर्मका कार्य।

आह्निकगति॰ ना॰ स्त्री॰ एक दिनकी चाल, प्रतिएकग्रह का नित्यभचक्र।

आह्वा॰ ना॰ पु॰ जलार्णव।

आह्लाद॰ ना॰ पु॰ हर्ष, आनन्द।

आह्लादित॰ गु॰ हर्षित, आनन्दित।

आह्वान॰ ना॰ पु॰ आवाहन, पुकारना।

आक्षेप॰ ना॰ पु॰ दुर्वचन, निन्दा।

आखोटन॰ ना॰ पु॰ आखेट।

आत्रेय॰ ना॰ पु॰ अत्रिका पुत्र।

आत्रेयी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो बंगालेमें है।

आज्ञा॰ ना॰ स्त्री॰ आदेश, हुक्म।

आज्ञाकार॰ } गु॰ जो आज्ञापर चले, सेवक,
आज्ञाकारी॰ } तावेदार।

आज्ञाद॰ ना॰ पु॰ जो आज्ञा देवे, हाकिम।

आज्ञानुयायी॰ गु॰ आज्ञावत् वर्तनेहारा।

आज्ञानुसार॰ ना॰ पु॰ हुक्म के बमूजिब।

आज्ञानुवर्ति॰ गु॰ तावेदार, सेवक।

आज्ञाभिलाषी॰ गु॰ आज्ञाचाहनेवाला।

आज्ञार्थ॰ गु॰ आज्ञा का बोध जिससे होता है।

आज्ञालंघन॰ ना॰ पु॰ उदूलहुक्मी, हुक्म न मानना।

(इ)

इक॰ गु॰ एक १।

इकटक॰ ना॰ पु॰ एक ताक से देखना।

इकट्ठा॰ }
इकट्ठो॰ } गु॰ जो एक जगह में जमाहोवे।
इकठौरा॰ }
इकठौरी॰ }

इकसार॰ गु॰ सरीखा, सदृश, समान।

इकारान्त॰ गु॰ जिस शब्दके अन्तमें इकार है।

इका॰ गु॰ अकेला, अद्वितीय, एका।

इंगलण्ड॰ ना॰ पु॰ देशविदेश, जिसमें लण्डन नगर प्रसिद्ध है।

इंगलण्डीय॰ गु॰ जो इंगलण्डका है।

इंगितज्ञ॰ पु॰ इच्छा, समान, चलनेवाला।

इंगित॰ ना॰ पु॰ सैन, संकेत, अलमन, खोज।

इच्छा॰ ना॰ स्त्री॰ मनोरथ, चाह।

इच्छाचारी गु॰ मनोवत्गामी, बन्धरहित।

इच्छित॰ गु॰ इच्छा समाना, चाहा हुआ।

इच्छितफल॰ ना॰ पु॰ चाहाहुआ फल या अर्थ।

इच्छानुसार॰ ना॰ पु॰ इच्छावत्, चाहना।

इछन॰ ना॰ पु॰ नेत्र, दृष्टि।

इडा॰ ना॰ स्त्री॰ भरती, देवी, बाईं स्वास।

इत॰ }
इतै॰ } अव्य॰ यहां, इधर।

इतना॰ गु॰ यह शब्द परिमाण वा अवधि का ज्ञापक है।

इतनी॰ ना॰ स्त्री॰ सैन्य, गु॰ इस प्रमाण।

इतर॰ गु॰ अन्य, रहित नीच।

इतरलोग॰ ना॰ पु॰ छोटीजाति, लोकान्तर।

इति॰ अव्य॰ समाप्तिका बोधक है, अधिक, इसप्रकार।

इत्याल॰ ना॰ पु॰ मिलान, सामाना, मुकाबिलह।

इत्यादि॰ ना॰ पु॰ आदिक, वगैरह।

इतिहास॰ ना॰ स्त्री॰ वृत्तांत, प्राचीन कथा, पुराणादिकी वार्ता, तारीख।

अवलोकन० ना० पु० दर्शन, दृष्टि, देखाव।
अवलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना।
अवश० गु० पराधीन, असमर्थ।
अवशिष्ट० गु० शेष, उच्छिष्ट, बाकी।
अवशेष० ना० पु० शेषबचा, बाकीरहा।
अवशेषित० गु० जो बाकी रहगया।
अवश्य० अव्य० चाहिये, निश्चय, कर्तव्य, जरूरी।
अवसर० ना० पु० सावकाश, घात, समय, मौक़ा, इत्तिफ़ाक़।
अवसान० ना० पु० अन्त, समाप्ति, आख़िर।
अवसेरि० ना० स्त्री० देर, राहदेखना, बाट हेरना।
अवस्था० ना० स्त्री० दशा, उमर, हालत और दुर्दशा।
अवज्ञा० ना० स्त्री० अपमान, निन्दा, अनादर, तुच्छकरना, आबरू उतारना।
अवाई० ना० स्त्री० नगिचाई, आमद।
अवाक० ना० पु० गूंगा, मूक, मौनी।
अवाच्य० गु० अकथ्य, मौनी, निरर्थ, कुवच।
अवाधी० गु० स्त्री० सुतरूरी, बाधारहित।
अवाध्य० गु० विना बाध, अतर्क्य।
अवाध्योपकर्म० गु० बाधारहितकर्म, अतर्क-कर्म।
अवारी० ना० स्त्री० दुकान, पंक्ति, रामायणे यथा-(चारु बजार विचित्र अवारी, मणिमय विधि जनु स्वकर सँवारी) अम्बारा।
अवास० ना० पु० घर, मकान।
अविकल० } गु० निश्चिन्त, आनन्द।
अविकलित० }
अविकार० ना० पु० विकाररहित।
अविकारी० गु० जन्मादिविकाररहित।
अविगत० गु० व्यापक।
अविगति० ना० स्त्री० ज्ञान।
अविचल० गु० अचल, थिर, क़ायम।
अविचार० ना० पु० भूल, अन्याय, नादानी।
अविचारी० गु० विचाररहित, अन्यायी।
अविदूरि० गु० पास, निकट।
अविद्या० ना० स्त्री० भूल, अज्ञानता, माया विद्याहीन।
अविनय० गु० ढिठाई, चपलाहट, गुस्ताख़ी।
अविनाश० ना० पु० नाशरहित, कुशल।
अविनाशी० गु० कुशल, जिसका नाश न होवे।
अविनीति० गु० चपल, ढीठ।
अविन्दु० गु० विन्दुरहित।
अविरल० गु० निरन्तर, अभेद।
अविरोध० ना० पु० चैन, सुख आनन्द, गु० विरोधरहित।
अविरोधनी० ना० स्त्री० } गु० सुखी, बेख-
अविरोधी० ना० पु० } टके।
अविलम्ब० ना० पु० शीघ्रता, जल्दी, यत्न।
अविलम्बित० गु० शीघ्र, जल्द।
अविवादी० गु० जो विवाद न करे, शान्त।
अविवेक० ना० पु० अविचार, अज्ञानता, गु० जो विवेकरहित हो।
अविवेकी० गु० विचारहीन, अज्ञानी।
अविशेष० समान, जो विशेष नहीं।
अविश्वास० गु० ना० पु० अप्रतीत, बेएतबार।
अविश्वासी० गु० जिसकी प्रतीति नहीं या जो किसीकी प्रतीति न माने।
अविक्षीण० गु० निरन्तर, अखण्ड, पूरा।
अवेगी० ना० पु० विधारायौषधि, गु० जो वेगता रहितहो।
अवेर० ना० स्त्री० ढील, विलम्ब, कुसमय।
अवेला० ना० स्त्री० कुसमय, बेवक्त।
अव्यक्त० गु० जो व्यक्त नहीं अर्थात् मालूम नहीं।
अव्यय० ना० पु० स्वर्ग, अक्षर, गु० जो व्यय न हो, जिस शब्दका कारफेर न हो, कृपण।
अव्यवस्था० ना० स्त्री० जो शास्त्र से संमत नहीं है।
अव्यवस्थित० गु० जो ठीक नहीं है।

इतो० } गु० इतना।
इतौ० }
इदम्० सर्व० यह।
इदानीम्० अव्य० यहां,इसजगह।
इधर० अव्य० यहां, इसठौर।
इन्दारा० ना० स्त्री० मंडापका कूआं।
इन्दिरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी।
इन्दीवर० ना० पु० नील कमल, पौधा विशेष।
इन्दु० ना० पु० चन्द्रमा।
इन्दुर० ना० पु० उंदुर, चूहा।
इन्दौर० ना० पु० नगरविशेष।
इन्द्र० ना० पु० देवताओं का राजा, प्रधान।
इन्द्रगोप० ना० पु० बीरबहूटी।
इन्द्रजित्० ना० पु० मेघनाद, गु० जो इन्द्रको जीते।
इन्द्रपुरी० ना० स्त्री इन्द्रका नगर।
इन्द्रप्रस्थ० ना० पु० दिल्लीनगर।
इन्द्रवधू० } ना० स्त्री० बीरबहूटी कीड़ा,
इन्द्रवधूटी० } लाल रङ्गका वर्षा में होताहै, इन्द्र की पत्नी।
इन्द्रयव० ना० पु० कुटज का फल, इन्द्र-जौ, औषधि विशेष।
इन्द्रवारु० ना० पु० }
इन्द्रवारुणी० स्त्री० } औषधिविशेष।
इन्द्रविषादिनी० }
इन्द्राणी० } ना० स्त्री० शची, इन्द्रकी पत्नी
इन्द्रायणी० }
इन्द्रायन० ना० पु० वृक्षविशेष या उसकाफल जो अतिसुन्दर और कड़वा होताहै।
इन्द्रासन० ना० पु० इन्द्रका सिंहासन।
इन्द्रिय० } ना० स्त्री० जिनसे रूप रसादिका
इन्द्री० } ज्ञान होताहै वह दोप्रकार की दश हैं पांच कर्मेन्द्रिय अर्थात् हाथ, पांव, गुदा लिंग, मुख और पांच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।
इन्धन० ना० पु० जलानेकी लकड़ी आदि ईंधन।
इभ० ना० पु० हाथी।
इभपालक० गु० महावत पीलवान।
इभ्य० ना० पु० स्वामी।
इमम्० सर्व० यह गु० ऐसा, इसप्रकार।
इमि० गु० इसप्रकार।
इला० ना० स्त्री० धरती, नारी, भवानी, देवी, बुद्धि, सरस्वती।
इलायची० ना० स्त्री० फलविशेष, एला।
इलावृत० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डों में से एक।
इल्ला० ना० पु० मसा।
इव० अव्य० तरह, प्रकार, जैसे।
इष्ट० गु० पूजित, प्यारा, वांछित ना० पु० देवता, मनुष्य, चहीता, वस्तुचहीती।
इष्टदेव० ना० पु० पूजित देवता, जिस देवकी सेवाकरे या ध्यावे।
इष्टा० ना० स्त्री० प्रिय, प्यारी।
इष्टित० गु० विचारित, जो मानागया।
इष्वासन० ना० पु० धनुष, कमठा, कमान।
इषु० ना० पु० बाण, तीर; आश्विनमास, और गणित में ५।
इषुधी० ना० स्त्री० पु० धनुष, कमान, कमठा।
इषुधीपति० ना० पु० धनुर्द्धर अर्जुनादि।
इस्त्री० ना० पु० लोहे का यंत्र जिससे धोबी कपड़े सँभालता है।
इस्पात० ना० पु० पकालोहा।
इह० सर्व० यह।
इहलोक० ना० पु० मनुष्यलोक, यह लोक।
इक्षु० ना० ऊख, गांडा, गन्ना।
इक्षुगंधा० } ना० स्त्री० विदारीकन्द।
इक्षुवल्ली० }
इक्षुसार० ना० पु० रस, मिठाई, गुड़।
इक्ष्वाकु० ना० पु० सूर्यवंशियों में प्रथमराजा।

[ई]

ईंट० ना० स्त्री० माटी की वस्तु जिससे भीति उठाते हैं।

अव्यवहारित० गु० त्यागित, छोड़ाहुआ।
अव्यवहित० गु० मिला, व्यवधान रहित।
अव्याप्ति० ना० स्त्री० लक्ष्य में लक्षणका जो नहीं जाना, प्रकट में प्रकटतारहित।
अव्याहत० गु० बिनरोक, मायाजित, रामायणे यथा–(अव्याहत गति शम्भु प्रसादा)।
अशकुन० ना० पु० अपशकुन, बुराशकुन।
अशकुनी० गु० अपशकुनी, बुरे लक्षणयुत।
अशक्त० गु० निर्बल, लाचार, असमर्थ।
अशक्ति० गु० निर्बल, असमर्थता, शक्तिरहित देव।
अशक्य० गु० असाध्य, शक्यतारहित।
अशंक०
अशंका० } गु० निर्भय, निडर, बेख़ौफ़।
अशन० ना० पु० भोजन, खाना।
अशनि० ना० पु० वज्र।
अशरण० गु० रक्षारहित, पनाहनहीं।
अशास्त्र० गु० जो शास्त्र से बाहर है।
अशास्त्रीय० गु० जो शास्त्र में उक्तनहीं है।
अशिव० गु० मंगल रहित, अशुभ।
अशिष्ट० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है।
अशुक० गु० अशोक, अदुःख।
अशुचि० गु० अपवित्र, अशुद्ध, नापाक।
अशुद्ध० गु० अपवित्र, जो ठीक नहीं है, ग़लती।
अशुद्धता० ना० स्त्री० अपवित्रता, चूक, भूल।
अशुभ० गु० अमंगल, जो अच्छा न हो, ना० पु० पाप, दोष।
अशेष० गु० सम्पूर्ण, सारा, समस्त, सब।
अशोक० ना० पु० वृक्षविशेष, सुख, चैन।
अशोभा० गु० बनगद, कुरूप, ना० स्त्री० सुन्दरतारहित, शोभाहीन।
अशौच० गु० नापाक, अशुद्ध।
अश्म० ना० पु० पत्थर।
अश्मरी० ना० स्त्री० पथरी वा मूत्रकृच्छ्ररोग।
अश्मभेद० ना० पु० पाषाणभेद।
अश्रद्धा० ना० स्त्री० घिन, चिढ़, अविश्वास।
अश्रु० ना० पु० आंसू।
अश्रुपात० ना० पु० आंसुओं का गिरना।
अश्लेषा० ना० स्त्री० श्लेषा, नवाँनक्षत्र।
अश्व० ना० पु० घोड़ा।
अश्वगन्धा० ना० स्त्री० असगन्ध औषधि।
अश्वतर० ना० पु० खच्चर।
अश्वत्थ० ना० पु० पीपलवृक्ष।
अश्वपति० ना० पु० वह राजा जिसके पास बहुत घोड़े वा घुड़चढ़े हों।
अश्वमेध० ना० पु० यज्ञविशेष यह यज्ञ राजाधिराज करसका है, जो जगत् जीतहो।
अश्वयुज० ना० पु० कुंवारमास।
अश्वरक्षक० ना० पु० साईस।
अश्ववार० ना० पु० असवार, सवार, घुड़चढ़ा।
अश्वशाला० ना० स्त्री० तबेला, घोड़साल।
अश्वहा० ना० स्त्री० कनेरवृक्ष।
अश्वा० ना० स्त्री० असगन्ध।
अश्वारूढ़० ना० पु० असवार, सवार, घुड़चढ़ा।
अश्विनी० ना० स्त्री० प्रथमनक्षत्र।
अषय० गु० जिसका क्षय नहीं, अमिट।
अषयवट० ना० पु० वह बरगद जो प्रयाग में है।
अषाढ़० ना० पु० चतुर्थमास, अषाढ़, असाढ़।
अष्ट० ना० पु० आठ ८।
अष्टकुलीसर्प० ना० पु० आठकुली सांपों की अर्थात् अनन्त १ वासुकि २ तक्षक ३ कर्कोटक ४ शंख ५ कुलिक ६ पद्मक ७ महापद्मक ८।
अष्टकोण० ना० पु० आठकोने।
अष्टचत्वारिंशत० गु० अड़तालीस ४८।
अष्टदिशाग्रह० ना० पु० आठों दिशाके ग्रह अर्थात् सूर्य, शुक्र, मङ्गल, राहु, शनैश्चर चन्द्रमा, बुध, गुरु।
अष्टधातु० ना० पु० आठधातु अर्थात् सोना।

ईडुवा० ना० पु० शिरपर बोझ रखने का टेकन जो कपड़ा या सन मूंजआदिक होता है।
ईकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें ईकार है।
ईख० ना० स्त्री० ऊख, उखारी, इक्षु।
ईठ० गु० इष्ट, प्रिय, मित्र, ना० पु० गणेन, देवता।
ईठि० ना० स्त्री० दोस्ती, प्रीति, सखी।
ईढि० ना० स्त्री० अपनेको अधिकजानना, हठ।
ईति० ना० स्त्री० बाधा, दुःख।
ईद० ना० स्त्री० मुसल्मानों और यहूदियों में एक पर्व्वहोता है रमजान के पीछे, अरबी शब्द है।
ईदृश० गु० ऐसा।
ईर्षा० ना० स्त्री० हिसक, द्वेष, डाह, हसद।
ईश० ना०पु० ईश्वर, प्रभु, स्वामीविशेष, शिवजू, विष्णु, नारायण।
ईशता० ना० स्त्री० प्रधानता, महत्त्व, माया, सिद्धिविशेष।
ईश्वर० ना० पु० प्रभु, स्वामीविशेष, परमात्मा, शिवजी, विष्णु, नारायण।
ईश्वरता० ना० स्त्री०, ईश्वरत्व० ना० पु० } मायायोगमाया, कुदरत।
ईश्वराराधन० ना० पु० परमेश्वरका भजन।
ईशान० ना० पु० सदाशिव, ईशानकोण।
ईशानकोण० ना० पु० पूर्व उत्तर का कोना।
ईषत्०, ईषद्० } गु० थोड़ा २, अल्प।
ईस० ना० पु० ईश, मालिक।
ईह०, ईहा० } ना० स्त्री० चेष्टा, इच्छा, उद्यम।
ईक्षण० ना० पु० चक्षु, आंखि, दृष्टि।

(उ)

उचाई० ना० स्त्री०, उचान० ना० पु०, उचांव० ना० पु०, उचाहट० स्त्री० } उचापा, उचाति, नसंदी।
उचाना० स० क्रि० ऊँचाकरना, उठाना।
उडेलना० स० क्रि० धक्कादेकर गिराना, डालना।
उकठा० गु० सूखाकाष्ठ वा वृक्ष।
उकत० ना० स्त्री० उक्ति, कहन।
उकताना० अ० क्रि० घबराना, थकना, कुढ़ना।
उकतारू० ना० पु० उपजाऊ पद्दी।
उकतारना० स० क्रि० सँभालना, पक्षकरना।
उकसना० अ० क्रि० उठना, ऊपरको चढ़ना, वा बढ़ना।
उकसाना०, उकासना० } स० क्रि० उठाना, चढ़ाना।
उक्त० गु० कथित, कहाहुआ।
उक्ति० ना० स्त्री० कथन, भाषा, चतुराई, कहना।
उखड़ाना० अ० क्रि० उजड़ना, निजस्थान से छूटना।
उखड़हा० गु० उखड़ामया।
उखड़ना०, उखाड़ना० } स० क्रि० उजाड़ना, निजस्थान से हिलाना।
उगना० अ० क्रि० उत्पन्नहोना, जमना, बढ़ना।
उगलना० स० क्रि० मुख में कोई वस्तु डाल कर फिर निकालना।
उगाल० ना० पु० जो चबाय के मुख में से फेंका।
उगाहना० स० क्रि० जमाकरना, तहसीलना।
उगाही० ना० स्त्री० ब्याजलेना वा यह रुपया जो महाजन आठके, नव या नव के दश वा दशके ग्यारह, प्रतिमास एक २ रुपया करके लेता है।
उग्र० गु० क्रोधी, कठोर, भयंकर, तेज, ना० पु० श्रीशङ्करजी।

रूपा, तांबा, पीतल, रांगा, कांसा, सीसा, लोहा।
अष्टपञ्चाशत्॰ गु॰ अट्ठावन ५८।
अष्टप्रहर॰ गु॰ आठपहर, दिनराति।
अष्टभैरव॰ ना॰ पु॰ आठ भैरव अर्थात् असितांग रुरु, चण्ड, उन्मत्त, क्रोध, कपाली, भीषण, काल।
अष्टम॰ गु॰ आठवां।
अष्टमांश॰ ना॰ पु॰ अठवांभाग ⅛।
अष्टमी॰ ना॰ स्त्री॰ आठवीं तिथि, आठैं।
अष्टवसु॰ ना॰ पु॰ आठवसु अर्थात् आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास।
अष्टविंशकुलक्षण॰ ना॰ पु॰ अट्ठाईसकुलक्षण अर्थात् काम १ क्रोध २ क्रियाहत ३ दुर्वाद ४ लोभ ५ लम्पटता ६ अलज्जा ७ अविद्या ८ अशौच ९ आलस्य १० अतिनिद्रा ११ दुष्टता १२ अदया १३ कृपणता १४ दरिद्रता १५ रोग १६ मलिनता १७ कुवाक्यदान १८ अनृतकथा १९ भोग्यता २० अल्पाहार २१ अहङ्कार २२ अदक्षता २३ कुदान २४ दुर्भावना २५ अप्रतीति २६ मोह २७ अंग्यवाक्यता २८।
अष्टविंशति॰ गु॰ अट्ठाईस २८।
अष्टसिद्धि॰ ना॰ स्त्री॰ आठसिद्धि अर्थात् अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ वशीकरण ७ ईशता ८।
अष्टांगप्रणाम॰ / अष्टांगदण्डवत्॰ ना॰ पु॰ स्त्री आठ अङ्ग सेती प्रणाम अर्थात् उर, शिर, दृष्टि, मन, वचन, पद, कर, जानुसे नमस्कार करना।
अष्टांगयोग॰ ना॰ पु॰ योगके आठअंग अर्थात् यम १ संयम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८।
अष्टादश॰ ना॰ पु॰ अठारह १८।
अष्टादशपुराण॰ ना॰ पु॰ अठारह पुराण अर्थात् भागवत १ भविष्य २ मार्कण्डेय ३ मत्स्य ४ ब्रह्मांड ५ ब्रह्म ६ ब्रह्मवैवर्त्त ७ विष्णु ८ वायु ९ वामन १० वराह ११ अग्नि १२ नारद १३ पद्म १४ कूर्म १५ स्कन्द १६ लिंग १७ गरुड़ १८।
अष्टादशस्मृति॰ ना॰ स्त्री॰ अठारह स्मृति अर्थात् मनु १ अत्रि २ विष्णु ३ याज्ञवल्क्य ४ हारीत ५ उशना ६ अंगिरा ७ आपस्तम्ब ८ संवर्त्त ९ यम १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२ पाराशर १३ व्यास १४ शंखलिखित १५ गौतम १६ वशिष्ठ १७ दक्ष १८।
अष्टापद॰ ना॰ पु॰ कंचन, सुवर्ण, पशु।
अष्टाशीति॰ गु॰ अस्सी ८८।
असंख्य॰ / असंख्यात॰ गु॰ अगणित, बेशुमार, बहुत।
असंशय॰ ना॰ पु॰ निश्चय, निस्सन्देह।
असक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ आलस्य।
असक्ती॰ गु॰ आलसी।
असगन्ध॰ ना॰ पु॰ औषधविशेष।
असंगत॰ गु॰ मिथ्या, अनुचित, अनर्थ।
असज्जन॰ गु॰ कुपात्र, नीच, दुष्ट।
असत्॰ गु॰ असाधु, अधर्मी।
असन॰ ना॰ पु॰ भोजन, खाना, वृक्षविशेष।
असनि॰ ना॰ पु॰ वज्र।
असन्तान॰ गु॰ पुत्रहीन, निर्वंश।
असन्तुष्ट॰ गु॰ अप्रसन्न, धीरजरहित।
असन्तोष॰ गु॰ अधीरजता।
असभ्य॰ गु॰ जो सभाके योग्य नहीं, दुष्ट, गँवार,
असभ्यता॰ ना॰ स्त्री॰ दुष्टता, सज्जनता गँवारपन, बहरात।
असम॰ गु॰ जो बराबर न हो, विषम।
असमंजस॰ ना॰ पु॰ दुबिधा, सन्देह, भिन्न, लगाव।
असमय॰ गु॰ अकाल, विपत्तिकाल।
असमर्थ॰ गु॰ जो समर्थ न हो, निर्बल।
असमशर॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
असम्पूर्ण॰ गु॰ जो पूरा न हो।
असम्बन्ध॰ गु॰ बेमेल, अनर्थ।
असम्भव॰ गु॰ अनहोना, जो न होसके।

उग्रगन्धा० ना० स्त्री० अजवायन, बच और लहसुन० गु० जिसकी गन्ध कठिन है।
उग्रसेन० ना० पु० राजा कंस का पिता।
उघटना० स० क्रि० किसी पर उपकार करके कहना या बात मारना, ताना देना।
उघड़ना० अ० क्रि० नंगा होना, खुलना।
उघरे० गु० खुले, प्रगटे।
उघाड़ना० } स० क्रि० नंगाकरना, खोलना।
उघारना०
उघारी० गु० नंगी, खुली।
उचकना० अ० क्रि० कूदिके उठाना, उछलना।
उचकाना० स० क्रि० ऊपर को उठाना वा चढ़ाना।
उचक्का० गु० चोर, उठाईगीर।
उचटना० अ० क्रि० अलग२ होना, बिछुड़ना, न लगना, उखड़ना, फिसलना।
उचरङ्ग० ना० पु० पतंगा।
उचरना० अ० क्रि० बात निकलना, उखड़ना।
उचाट० गु० उदासी, जी न लगना।
उचाटना० स० क्रि० उदासकरना, उखाड़ना।
उचारना० स० क्रि० उच्चारणकरना, निकलना।
उचित० गु० योग्य, ठीक, मुनासिब।
उचिलना० अ० क्रि० फटना, छुटिजाना।
उचेलना० स० क्रि० मिलीहुई वस्तु को अलग२ करना, उधेड़ना।
उच्च० गु० ऊंचा।
उच्चाटन० ना० पु० जी भड़कना, जी का न लगना।
उच्चार० ना० पु० पुरीष, मल, पाखाना।
उच्चारण० ना० पु० शब्दकहना या निकलना।
उच्चारना० स० क्रि० उचारना, बात कहना।
उच्चैःश्रवा० ना० पु० सूर्य का घोड़ा।
उच्छिन्न० गु० निर्मूल, उखड़ा, खराब।
उच्छलित० गु० उछलता भया।
उच्छिष्ट० ना० पु० जूठनि या जूठा, भोजन अवशेष।
उच्छ्वास० ना० पु० श्वास, आशा।
उछंग० ना० स्त्री० गोद, कनियां।
उछरना० } अ० क्रि० कूदना, उठाना।
उछलना०
उछालना० स० क्रि० कुदाना, ऊपर को फेंकना।
उछाह० ना० स्त्री० आनन्द, खुशी।
उजड़ना० अ० क्रि० नाश होना, मिटना, भगना, वैरान होना।
उजला० गु० उज्ज्वल, सफेद, निर्मल।
उजागर० गु० यशवन्त, चटकीला, सुन्दर।
उजाड़० गु० सूना, वनखण्ड, वैरान।
उजड़ना० स० क्रि० सूनाकरना, नाशकरना, वैरान करना।
उजालना० स० क्रि० उजाला करना।
उजाला० ना० पु० ज्योति, तेज, प्रकाश।
उजाली० ना० स्त्री० चांदनी।
उजास० ना० पु० उजेला।
उज्जल० } गु० निर्मल, चोखा, चमकीला, साफ, सुन्दर।
उज्ज्वल०
उझंकति० गु० झांकति, ताकत।
उझकना० अ० क्रि० देखना, स० क्रि० निभाना।
उटंगन० ना० स्त्री० पौधा विशेष, और नदी जो ग्वालियर के पास है।
उठंगन० ना० पु० टेकन।
उठना० अ० क्रि० खड़ाहोना।
उठबैठ० ना० स्त्री० घबराहट, साधन विशेष।
उठवैया० ना० पु० उठानेवाला।
उठान० ना० पु० उत्थान, दिखाई।
उठाना० स० क्रि० खड़ाकरना, ऊपर लेजाना।
उड़ना० अ० क्रि० भागना।
उड़ान० ना० स्त्री० उड़ने की चाल।
उड़ाना० स० क्रि० उड़ादेना, भगादेना।
उड़ाऊ० ना० पु० लुटेरा, बहुत खर्च करवैया।
उडु० ना० पु० पक्षी, नक्षत्र, मेघ, मद।

असम्मत० गु० विरुद्ध, बेसलाह।

असह०
असह्य० } गु० जो सहा न जावे, कठिन।

असमाधि० गु० जो दूर न होसके रामायणे यथा-(देखी व्याधि असाधि वड़ि)।

असाधु० गु० अधर्मी, दुष्टमति, कर्मना।

असाध्य० गु० जो कामसिद्धि न होसके, रोगी जो जीये नहीं।

असामर्थ० } ना० पु० कुछ सामर्थ्य नहीं, लाचार
असामर्थ्य० } गु० कुछ सामार्थ्य नहीं रखता।

असार गु० छूछा, पोला, सूखा, कच्चा-काठ, निनापौरुष, निर्बल।

असि० ना० स्त्री० तलवार, अव्य० है, ऐसे।

असिद्ध० गु० अनपचा, अनपका, जो सिद्ध नहीं।

असिधेनुक० ना० स्त्री० छुरी।

असिनि० ना० स्त्री० तलवारें।

असिपत्री० ना० स्त्री० सेंहुड़।

असिपुत्री० ना० स्त्री० छुरी, कटारी।

असिदंष्ट्रक० ना० पु० मगर, मच्छ।

असीम० गु० सीमारहित अर्थात् अनन्त।

अशीश० गु० शिररहित।

असीस० ना० पु० आशीर्वाद, दुआ।

असु० ना० पु० पंचप्राण, जीव, शोच।

असुग० ना० पु० किरण, बाण।

असुर० ना० पु० दैत्य, राक्षस।

असुरविनायक० ना० पु० बाणासुर।

असुरारि० ना० पु० देवता, श्रीरामकृष्णादि।

असुहर० गु० प्राणहर, मारनेवाला।

असूक्ष्म० गु० अदृश्य, निरूप।

असूया० ना० स्त्री० कलह, दोष।

असो० अव्य० यह वर्ष, इस वर्ष।

असोक० ना० पु० अशोक।

असोची० गु० ...चेत, जो चिंता या विचार से न होसके, जो पछिताने के योग्य नहीं।

असोचा० गु० निर्मोही, प्रमादी।

असोस० ना० स्त्री० सूखी नदी।

असौ० अव्य० ...

असौंध० ना० स्त्री० कुबास, बदबू।

अस्त० ना० पु० छिपाव, छुपना।

अस्तव्यस्त० गु० भिन्न भिन्न, उलटा पुलटा, बेमेल।

अस्ताचल० ना० पु० वह पर्वत विशेष जहां सूर्यनारायण अस्त होते हैं।

अस्तित्व० ना० पु० मौजूदगी।

अस्थि० ना० पु० हाड़, हड्डी।

अस्थिमात्र० गु० हड्डीभर।

अस्थिर० गु० चंचल, चलायमान।

अस्थिरता० ना० स्त्री० चंचलाई, स्थिरताहीन।

अस्थिशृङ्खला० }
अस्थिसंहार० } ना० स्त्री० हरसिंगार।

अस्थूल० ना० पु० सूक्ष्म, न्यून।

अस्थूलभद्रा० ना० स्त्री० बड़ीकटाई।

अस्मसार० ना० पु० लोहा।

अस्वछन्द० } गु० अधीन, अपराधीन जो अपने
अस्वतन्त्र० } वश में नहीं है।

अस्वत्थामा० ना० पु० द्रोणाचार्य्य का पुत्र।

अस्वीकार० ना० पु० नामंजूर, अङ्गीकार नहीं।

अस्सी० गु० अशी ८०।

अस्त्र० ना० पु० जिसको फेंकके मारते हैं यथा बाण आदि।

अह० ना० पु० दिन, अहंकार, कष्ट।

अहं० सर्व, मैं, हम, निजका बोधक।

अहङ्कार० ना० पु० गर्व, मद, घमण्ड।

अहङ्कारी०
अहंकृत० } गु० अभिमानी, दम्भी, मगरूर।

अहमित० गु० अहङ्कारयुक्त, मगरूर।

अहरेणुका० ना० स्त्री० रेणुका,

अह... पु० रातदिन,

... ...प्रेम,

अहं... ...

... शब्द

उडुगण० ना० पु० तारागण।
उडुप० ना० पु० घरनई, बेड़ा।
उड़िया० ना० स्त्री० उड़ेसादेश की भाषा।
उड्डी० ना० स्त्री० नाव।
उड़ैसा० ना० पु० देशविशेष जहां श्रीजगन्नाथ पुरुषोत्तम विराजमान हैं।
उड्डान० ना० स्त्री० उड़ान, संस्कृत में नपुंसक।
उढ़ना० स० क्रि० ओढ़ना, ना० पु० ओढ़ने का वस्त्र।
उढ़ाना० स० क्रि० ओढ़ना, ढापना।
उत० अव्य० ऊपर, उधर, जिस शब्द के प्रथम में यह युक्त हो उसका अर्थ अधिक लिया जाता है।
उतंग० } गु० ऊंचा, रामायणे यथा (अति उत्तुंग० } उतंग जलनिधि चहुंपासा)।
उतरना० अ० क्रि० नीचेआना।
उतला० गु० उतावल।
उताना० गु० उलटा, ऊपर को मांव किये।
उतार० ना० पु० नीचेआना, नीचला।
उतारना० स० क्रि० नीचेलाना, दूरि करना।
उतारा० ना० पु० ढालू, अपमान, छुड़ौती, पारजाना।
उतावल० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।
उतावला० गु० वेगी, शीघ्र, फुर्तीला।
उतावली० ना० स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती, गु० फुर्तीली।
उताहिल० गु० शीघ्र, जल्द।
उत्कट० गु० बरजस्त, उसी समय, तेजअधिक।
उत्कण्ठा० ना० स्त्री० अभिलाषा, चाहना।
उत्कर्ष० ना० स्त्री० बढ़ाई।
उत्कल० ना० पु० उड़ैसा देश, उड़ैसा के वासी।
उत्क्रम० ना० पु० ऊपर चढ़ना।
उत्कृष्ट० गु० अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।
उत्तमगन्धा० ना० स्त्री० मालती।
उत्तमांग० ना० पु० शिर, शीश।
उत्तमाशा० ना० स्त्री० अफ्रिका के दक्षिण की अन्तरीप, केपगुडहोप।
उत्तर० ना० पु० प्रश्न का बोधक, जवाब दक्षिण के सन्मुख की दिशा, राजाविराट् का पुत्र।
उत्तरकेन्द्र० ना० पु० जिस को भास्कराचार्य शास्त्री ने निज प्रश्नोत्तर में सुमेरु लिखा है, यह स्थान अत्यन्त शीत के कारण अगम्य है।
उत्तरकोशल० } ना० पु० अवधदेश।
उत्तरकोशला० }
उत्तरखण्ड० ना० पु० उत्तर का देश।
उत्तरा० ना० स्त्री० राजाविराट् की कन्या जो अभिमन्यु को विवाही थी।
उत्तराधिकारी० ना० पु० मरने के पीछे जो धनाधिकारी।
उत्तराफाल्गुनी० ना० स्त्री० बारहवांनक्षत्र।
उत्तराभाद्रपद० ना० पु० छब्बीसवां नक्षत्र।
उत्तरायण० ना० पु० माघादि छः मास।
उत्तरार्द्ध० गु० पिछिला आधा।
उत्तराषाढ़० ना० स्त्री० इक्कीसवां नक्षत्र।
उत्तराहा० गु० जो उत्तर दिशा का है।
उत्तरी० गु० उत्तर का।
उत्तरीय० ना० स्त्री० ओढ़नी, रामचन्द्रिकायां यथा (पदपद्म की शुभ घूंघरी, मणि नीलहाटक सो जरी, युत उत्तरीय विचारिके, भुवं डारि दी पग टारिके) गु० उत्तर देश का पदार्थ वा मनुष्यादि।
उत्तरोत्तर० अव्य० आगे आगे।
उत्तानपत्र० ना० पु० दोनों अरण्ड।
उत्तानपाद० ना० पु० राजा विशेष, ध्रुव का पिता।
उत्ताल० गु० शीघ्र, जल्दी, वेग।
उत्तीर्ण० गु० पार पहुँचा, निर्मुक्त।
उत्तू० ना० पु० उन्नति, धुनाई वस्त्रादिकी।
उत्थान० ना० पु० उठान, उद्योग।

उत्थापन॰ ना॰ पु॰ उठावना, न थपना।
उत्थित॰ गु॰ उठा हुआ।
उत्पत्ति॰ ना॰ स्त्री॰ जन्म, पैदायश।
उत्पन्न॰ गु॰ जन्मा, प्रकटा।
उत्पल॰ ना॰ पु॰ कमल, कोई।
उत्पाटन॰ ना॰ पु॰ जड़समेत उखाड़ना।
उत्पात॰ ना॰ पु॰ अशुभ का सूचक, उपद्रव।
उत्पादन॰ ना॰ पु॰ जन्मावना, पैदाकरना।
उत्प्रेक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ दील, सदृशता।
उत्सर्ग॰ ना॰ पु॰ देवतादि के लिये द्रव्य का त्याग, वितरण, किसी प्रकार की आज्ञा।
उत्सव॰ ना॰ पु॰ आनन्द, यज्ञ, अधीरज।
उत्साह॰ ना॰ पु॰ उद्योग, आनन्द।
उथपन॰ ना॰ पु॰ उखाड़ना, उठाना।
उथपना॰ स॰ क्रि॰ उठादेना, उखाड़ डालना।
उथपित॰ गु॰ उठाया गया।
उथलना॰ अ॰ क्रि॰ उलटना।
उथलपुथल॰ गु॰ उलट पुलट।
उथला॰ गु॰ छिछला, थोड़ा गहिरा।
उदक॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।
उदघाटी॰ ना॰ स्त्री॰ उदयता, उदयाचलकी घाटी।
उदधि॰ ना॰ पु॰ समुद्र।
उदधिनन्द॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।
उदनपान्य॰ ना॰ पु॰ पियाऊ, पौंसा।
उदन्वान्॰ ना॰ पु॰ समुद्र, सागर।
उदमाते॰ गु॰ मत्त, मस्त, मतमूर।
उदय॰ ना॰ पु॰ प्रकटना, रोशन, ज्योति।
उदयगिरि॰ } ना॰ पु॰ पर्वत विशेष जहां
उदयाचल॰ } सूर्योदय होता है।
उदयास्त॰ ना॰ पु॰ सूर्योदय से सूर्यास्तवक; उदयाचलसे अस्ताचलतक।
उदर॰ ना॰ पु॰ पेट।
उदरनि॰ ना॰ पु॰ उदरका बहुवचन भाषा में।
उदरवृद्धि॰ ना॰ पु॰ जलन्धर रोग विशेष।
उदरे॰ गु॰ फटे।
उदात्त॰ ना॰ पु॰ ऊंचा स्वर।
उदान॰ ना॰ पु॰ पंच प्राणमेंसे एक।
उदार॰ गु॰ पु॰ दाता, सखी।
उदारता॰ ना॰ स्त्री॰ दातापन, दातव्यता।
उदास॰ ना॰ पु॰ एकान्त, गु॰ निराला, निर्मोह, दुःखसुखसमानज्ञाता, मनमलिन।
उदासी॰ ना॰ पु॰ एकान्ती, ना॰ स्त्री॰ मलिनता, गु॰ मनमलिन, एक प्रकार के सन्तों का धर्म यथा नानकपंथी, जो मनुष्य शत्रुमित्र रहित संसार में विचरै।
उदासीन॰ गु॰ जिसका कुल शील नहीं जाना अर्थात् पाहुन, समानवर्ती, गृहस्थाश्रमरहित।
उदाहरण॰ ना॰ पु॰ दृष्टान्त, मिसाल।
उदित॰ आविर्भूत, प्रकाशित, रोशन।
उदीची॰ ना॰ स्त्री॰ उत्तर दिशा।
उदीच्या॰ ना॰ पु॰ ऐरावती नदी के उत्तर और पश्चिम का देश।
उदुम्बर॰ ना॰ पु॰ गूलरवृक्ष, तांबाधातु।
उदूखल॰ ना॰ पु॰ गूगल।
उद्गार॰ ना॰ पु॰ डकार, वमन, छर्दि।
उद्गारवाच्य॰ गु॰ हर्ष दुःखादि भाव बतानेहारा।
उद्घाटन॰ ना॰ पु॰ कूप से पानी निकालने के लिये डोल रस्सी, चरसा खुलैया।
उद्दाल॰ ना॰ पु॰ कचनार।
उद्दालक॰ ना॰ पु॰ एकमुनिका नाम है।
उद्दिप्तलोहित॰ ना॰ पु॰ लालचंदन।
उद्दीप्त॰ गु॰ प्रज्वलित, अतिप्रकाशित।
उद्देश॰ } ना॰ पु॰ अन्वेषण, प्रीतिकी कामना
उद्देश्य॰ } निमित्त, व्याकरण में जिसका समाचार कहाजावे।
उद्धत॰ गु॰ कुचाल, अभिमानी, ना॰ पु॰ राजाका मल्ल।
उद्धार॰ ना॰ पु॰ ऋण, त्राण, रक्षा, छुट्टी।

कमल० ना० पु० पद्म ।
कमलज० } ना० पु० ब्रह्मा ।
कमलभव० }
कमलवायु० ना० पु० कांवर, रोगविशेष जिसमें देह और आंखें पीली होजाती हैं ।
कमला० ना० स्त्री० लक्ष्मी, श्री ।
कमलाकर० ना० पु० तालाब ।
कमलासन० ना० पु० ब्रह्मा ।
कमलासिनी० ना० स्त्री० सरस्वती ।
कमलाक्ष० ना० पु० कमलनयन ।
कमलिनी० ना० स्त्री० पद्मिनी ।
कमाई० ना० स्त्री० उपार्जन, प्राप्ति, पैदायश ।
कमाऊ० गु० उद्यमी, यत्नी, देशविशेष पु० ।
कमाना० स० क्रि० उपार्जन करना, पैदा करना ।
कमेरा० गु० परिश्रमी, मेहनती ।
कमोदिनी० ना० स्त्री० कमलविशेष जो रातको खिलता है अर्थात् कूल ।
कमोरी० ना० स्त्री० मटकी, हंडी, इत्यादि ।
कम्प० ना० पु० कपकपी, थरथराहट ।
कम्पना० अ० क्रि० कांपना, थरथराना ।
कम्पवायु० ना० पु० रोगविशेष जिसमें सारा शरीर कम्पा करता है ।
कम्पाहा० गु० थरथराहा ।
कम्पित० गु० कांपता भया ।
कम्पनी० ना० स्त्री० साहिब लोगों के बहुतों का मेल या साझा, अंगरेजी शब्द ।
कम्बल० ना० पु० ऊनका वस्त्र ।
कम्बु० ना० पु० शंख, हाथी, कम्बासुर ।
कम्बुज० ना० स्त्री० हरसिंगार ।
कम्बुमालिनी० ना० स्त्री० शंखहोली ।
कम्बोज० ना० पु० घोड़ा, राजाविशेष ।
कम्मारी० ना० स्त्री० औषधि विशेष ।
कम्बल० ना० पु० रोम वस्त्र, कम्बल ।
कर० ना० पु० हाथ, राजधन, महसूल, किरण, पुष्कर, विपया ।
करक० ना० स्त्री० पीड़ा, दर्द ।
करकस० गु० कर्कश, लड़ाकू ।
करका० ना० पु० ओला, हिमोपल ।
कर्कशा० ना० स्त्री० लड़ाकी ।
करज० ना० स्त्री० अंगुली, नख ।
करट० ना० पु० कौवा ।
करटी० ना० पु० हाथी, ना० स्त्री० काकपक्षी ।
करण० ना० पु० साधन, कारकविशेष ।
करणी० ना० स्त्री० कर्म, क्रिया, थवई का एक हथियार करण सम्बन्धी ।
करणीय० गु० अवश्य कर्त्तव्य ।
करतल० ना० पु० हथेली ।
करतलगत० गु० हाथमें ।
करताल० } ना० स्त्री० बाजा विशेष काठका
करताली० } हथेलीकी ताल ।
करतूति० ना० स्त्री० कर्त्तव्य, चाल, करणी ।
करतोया० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बंगाले में है ।
करना० स० क्रि० बनाना, रचना ।
करनी० ना० स्त्री० करणी, कर्त्तव्य ।
करपल्लव० ना० पु० अंगुली या उसका छोर ।
करपृष्ठ० ना० स्त्री० हाथकी पीठ ।
करबी० ना० स्त्री० ज्वारका पौधा ।
करभ० ना० पु० हाथी ।
करभप्रिय० ना० पु० पीलुवृक्ष ।
करभूषण० ना० पु० कंकणादि आभरण ।
करम० ना० पु० कर्म ।
करमर्द० ना० पु० बड़ाकरौंदा ।
करमूल० ना० पु० कन्धा ।
करवार० गु० अल्पघातादि विघ्न भ्रमनिवासे यथा, नन्द यशोमति माग मड़ेरी, सुनकी करवर द्यो फेरी ।
करवाल० ना० पु० तलवार ।
करवीर० ना० पु० कनैलवृक्ष विशेष ।
करवीरक० ना० पु० कनैलवृक्ष ।
कररुह० ना० पु० नख, नाखून ।

उपाधी० गु० अधर्मी, उपद्रवी, अन्यायी।
उपाध्या० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष।
उपाध्याय० ना० पु० अध्यापक, पढ़ानेहारा।
उपाना० स० क्रि० सिरजना, उत्पन्न करना, उपार्जन करना।
उपानत्० ना० पु० जूता।
उपान्त्य० ना० पु० अन्त्य अक्षर का पूर्ववर्णादि।
उपाय० ना० पु० उद्योग, यत्न, रीति तदबीर।
उपायी० गु० उद्योगी, यत्नी।
उपार्जन० ना० पु० विद्या वा धनादिका संग्रह, कमाई, प्राप्त।
उपार्जित० गु० जो प्राप्त भया, कमाया।
उपालम्भ० ना० पु० उलाहना।
उपास० ना० पु० व्रत, उपवास।
उपासक०, उपासा० } गु० जो उपासना करे, सेवक।
उपासना० ना० स्त्री० सेवा, टहल, अनुवृत्ति देवादि विषय भावना विशेष।
उपास्य० गु० उपासना के योग्य, आराध्य।
उपेक्षा० ना० स्त्री० धोखा, त्याग।
उफना०, उफलाना० } अ० क्रि० उबलना, जोशखाना।
उफाल० ना० पु० कूर्दन, कूदनि, कूदना।
उबकना० अ० क्रि० वमन होना, जीमिचलाना।
उबकाई० ना० स्त्री० वमन जीकी मलक।
उबकाई० अ० क्रि० वमन, करना, उछालकरना।
उबटन० ना० पु० वस्तु आटा वा बेसन वा सरसों जिससे देहका मैल छुड़ाते हैं।
उबटना० स० क्रि० उबटन लगाना।
उबरना० अ० क्रि० बचना।
उबरा० गु० बचा।
उबलना० अ० क्रि० खलबलाना, खौलना।
उबाल० ना० पु० खलबलाहट के पीछे उफनाना।
उबसना० अ० क्रि० सड़ना, कुगन्धि करना।
उबसाना० स० क्रि० सड़ना।
उबारना० स० क्रि० बचाना, छुड़ाना।
उबारु० ना० पु० बचाव, छुटकारा।
उबलाना० स० क्रि० पकाना, उसीजना।
उभक० ना० पु० रीछ, भालू।
उभय० सर्व० गु० दो।
उभरना० अ० क्रि० उठना, निकला, उमड़ना।
उभार० ना० पु० उठान, फुलावट, गुमड़ा।
उभारना० स० क्रि० फूलना० उठाना।
उभौ० ना० पु० दोनों।
उमगा० गु० फूला, उठा।
उमगाना० स० क्रि० फुलाना, उठाना, मन बढ़ाना।
उमंग० ना० स्त्री० मग्नता, धुन, तृष्णा, चाह।
उमंगना० अ० क्रि० उमंगसे आगेजाना।
उमंगी० गु० धुनी, अभिलाषी।
उमएडना०, उमड़ना० } अ० क्रि० उभरना, घिरना।
उमरी० ना० स्त्री० गूलरवृक्ष।
उमहाना० अ० क्रि० उमड़ना।
उमा० ना० स्त्री० पार्वती, भवानी।
उमानाथ० ना० पु० श्रीमहादेव जी।
उर० ना० पु० छाती, गोदी, हृदय।
उरग० ना० पु० साँप, सर्प।
उरगना० स० क्रि० सहना, जोगवना, रामचंद्रिकायां यथा (आइ भरथ कहा धौं करै जिय भाय गुनौ जो दुख देय तौ लै उरगौ बातसुनौ)।
उरभ्र० ना० स्त्री० भेड़ी।
उरगाद०, उरगारि० } ना० पु० गरुड़, मयूर और न्योला।
उरझना० अ० क्रि० अटकना, लगना।
उरला० गु० इधरका।
उरु० ना० स्त्री० जंघका ऊपरीभाग, गु० बहुत।
उर्णा० ना० स्त्री० भेड़ी।

करसम्पुट० ना० पु० हाथजोड़न ।
करहाट० ना० पु० सिफाकन्द, मैनफल ।
करहाटक० ना० पु० सिफाकन्द ।
करान्त० ना० पु० आरा ।
करान्ती० गु० आरेसे चीरनेहारे ।
कराना० स० क्रि० बनाना, रचना ।
करायल० ना० पु० भोजनविशेष जूस ।
करार० ना० पु० किनारा, गु० भयङ्कर, कराल ।
करारा० ना० कड़ारा, किनारा ।
कराल० गु० भयङ्कर, टेढ़ा, ना० स्त्री० विडंग औषधि ।
कराली० ना० स्त्री० भयङ्कर, कठिन ।
करावलि० ना० स्त्री० किरणोंका समूह ।
कराहना० अ० क्रि० सांसभरना, दुःखकरना ।
करिया० ना० पु० केवट, मल्लाह ।
करिल० ना० पु० मदार जिसका शिर टूटाहो, बांसका नया पौधा ।
करी० ना० पु० हाथी ।
करीर० } ना० पु० वृक्ष विशेष जो कांटोंवाला होता है ।
करीरक० }
करील० }
करीष० ना० पु० गोबर की माँदि या सूखेकण्डे और कोई २ कोयला बताते हैं ।
करुणा० ना० स्त्री० दया, कोमलता ।
करुणाकर० गु० दयाकर, दयाकी राशि, कोमलता की खानि ।
करुणाकरना० स० क्रि० गुण कहिकर रोना, दया करना ।
करेरा० गु० दृढ़, कड़ा, बलवान् ।
करेरी० ना० स्त्री० दृढ़, कड़ी ।
करेला० ना० पु० तरकारी विशेष ।
करैत० ना० पु० सांप विशेष ।
करोड़० गु० सौलाख १०००००००।
करोड़ा० ना० पु० उगाहनेवाला, प्रधान ।
करौंदा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष ।

कर्क० } ना० पु० चांगीरादि विशेष केकड़ा, गेंगटा ।
कर्कट० }
कर्कटशृङ्गिका० ना० स्त्री० ककरासिंगी ।
कर्कटा० ना० पु० बेरफलविशेष ।
कर्कटाख्या० ना० स्त्री० ककरासिंगी ।
कर्कटी० ना० स्त्री० ककड़ी, पिंडलज़र ।
कर्कन्धु० ना० पु० बेरका वृक्ष वा फल ।
कर्कल० ना० पु० अजमोद, सूक्ष्मवास्तु ।
कर्कश० गु० कड़ा, कठोर, लड़ाका, असह्य ।
कर्कशच्छदा० ना० स्त्री० केतकी ।
कर्कार० ना० पु० कुम्हड़ा, रामड़ा ।
कर्कोल० ना० पु० घोड़ा ।
कर्कोटक० ना० पु० मुख्य सर्प ।
कर्कोटिका० ना० स्त्री० ककोड़ी औषधि ।
कर्चूर० ना० पु० कचूर ।
कर्चूरिका० ना० स्त्री० हाथकी चूड़ी, कचूरी ।
कर्छा० ना० पु० कफगीर, चमचा ।
कर्छी० ना० स्त्री० छोटी कर्छी ।
कर्ण० ना० पु० कान, पतवार, सूर्यसुत, कैमान का रोद, वतर ।
कर्णधार० ना० पु० मांझी, पदनदार ।
कर्णफूल० ना० पु० कानका भूषणविशेष ।
कर्णवेधन० ना० पु० कानका छेदना, कनछेदन ।
कर्णवेष्टन० ना० पु० कुंडल जो कानमें पहिनते हैं ।
कर्णाट० } ना० पु० दक्षिण भरतखण्डका एक देश विख्यात ।
कर्णाटक० }
कर्णालम्बित० गु० कानतक खींचना ।
कर्णिकार० ना० पु० किंदवारी औषधि ।
करणी० ना० स्त्री० क्रिया, कर्म, करण, जात ।
कर्त्तव्य० ना० पु० करतूति, करने के योग्य ।
कर्त्तव्यता० गु० स्त्री० चाले, करतूति ।
कर्त्ता० } ना० पु० क्रिया में प्रधान होता है, करनेवाला, सिरजनहार, प्रभु, भर्त्ता विशेष ब्रह्मा ।
कर्त्तार० }
कर्तृकर्मभाव० ना० पु० कर्त्ता और कर्म का सम्बन्ध ।

उर्मि० ना० स्त्री० लहरी, बीची।
उर्द० ना० पु० माष, अन्नविशेष।
उर्वरा० ना० स्त्री० उपजाऊ धरती, खेती के योग्य।
उर्विज० ना० पु० जो धरतीमें उपजाहै, मंगल।
उर्विजा० ना० स्त्री० श्रीजानकीजी।
उर्वशी० ना० स्त्री० मुख्यअप्सरा, मनवसी, धुकधुकी, आभरण।
उर्वी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
उरमण्डन० ना० पु० कुच, स्तन, चूंची।
उरहन० ना० पु० गिला, शिकायत।
उरोज० ना० पु० कुच, स्तन।
उलझनि० ना० स्त्री० फँसाव, अटकाव।
उलझना० अ० क्रि० फँसना, लपटना, स० क्रि० झगड़ना।
उलझाना० स० क्रि० फँसाना, अटकाना, भिड़ाना, लपटाना।
उलझेड़ा० ना० पु० उलझन, फँसाव।
उलटना० स० क्रि० पलटना, फेरना, अ० क्रि० औंधा होना, उलटिजाना।
उलटा० गु० औंधा, पलटा।
उलटाना० स० क्रि० औंधाना, पलटना।
उलटापुलटा० गु० गटपट, नीचेऊपर।
उलथना० अ० क्रि० लहराना।
उलथा० ना० पु० उल्था, तर्जुमा, रागिनी विशेष, नृत्यभेद।
उलहना० ना० पु० दोष, निन्दा, गिला, अ० क्रि० उगना, लहलहाना।
उलाहना० ना० पु० गिला, शिकायत।
उलूक० ना० पु० उल्लू, दिवान्ध, घूघूपक्षी।
उलूखल० ना० पु० ओखरी।
उलूपी० ना० स्त्री० मछली, बभ्रुवाहनकी माता।
उल्का० ना० पु० लूका, अग्नि या तारा जो आकाश से गिरता है वा दीपक का फूल।
उल्कापात० ना० पु० ताराछूटना, लूकागिरना, उपद्रवीय कारण होना, आश्चर्य।
उल्था० ना० पु० उलथा, तर्जुमा, नृत्यविशेष।
उल्मुक० ना० पु० लूका, कोयल, जलीलकड़ी।
उल्लंघन० ना० पु० अन्यथा, वा भंग करना वा न मानना, लांघिजाना।
उल्लाला० ना० पु० छन्दविशेष।
उल्लास० ना० पु० मेल, लेश।
उल्लू० ना० पु० पक्षीविशेष, मूर्ख, अहमक।
उल्लूपन० ना० पु० मूर्खता, अहमकी।
उशीर० ना० पु० तृणविशेष की जड़ जिस में गन्धि होती है खस।
उशना० ना० पु० शुक्राचार्य्य, स्मृतिविशेष।
उष्ट्र० ना० पु० ऊंट।
उष्ण० ना० पु० गर्म, तप, तपन, गरमी।
उष्णकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का मध्यस्थान अर्थात् मध्यरेखा के उत्तर २३½ अंश और दक्षिण २३½ अंशतक।
उष्णज० ना० पु० वनस्पति जो पृथ्वी पर उगते हैं।
उष्णीष० ना० पु० पगड़ी, मुकुट।
उसनना० अ० क्रि० उबलना, पकना
उसरना० अ० क्रि० टलना, पीठदेना।
उसाना० स० क्रि० उंवालना, भुरकाना।
उसारा० ना० पु० ओसारा, देवढ़ी।
उसास० ना० पु० श्वास, दम।
उसासी० ना० स्त्री० फुरसत, कल।
उसाहि० गु० कुसमय, बेमौसम।
उसीजना० स० क्रि० उबलना।
उसीसा० ना० पु० सिरहाना, तकिया।
उस्सर० गु० रेत विनमोल।
उहरना० क्रि० बैठना, दबना।

(ऊ)

ऊंघ० ना० स्त्री० सोवना, झपकी, नींद।
ऊंघना० अ० क्रि० नींदआना, झपकी आना।
ऊंघाई० ना० स्त्री० ऊंघ।
ऊंचा० गु० उच्च, बलंद।
ऊंद० ना० पु० पशुविशेष।

कर्तृत्व० ना० पु० कर्त्ताका धर्म।
कर्तृप्रधान० ना० पु० गुण जिस पदमें कर्त्ता प्रधान है।
कर्तृवाच्यक० गु० जिस पदमें कर्त्ता प्रायाजावे।
कर्दम० ना० पु० कीचड़, कांदो, लेप और ऋषि विशेष।
कर्दमक० ना० पु० कीचड़।
कर्षनी० ना० पु० कटिबन्धन, सूत जो कमरमें बांधते हैं।
कपर्दी० ना० स्त्री० कौड़ी, यथा कपर्दीच मैरा टिकः इति निघण्टः।
कर्पास० ना० स्त्री० कपास, कपासका वृक्ष।
कर्पूर० ना० पु० कपूर, काफूर।
कर्म० ना० पु० द्वितीयकारक, काम, भाग, प्रारब्ध शास्त्रविहित जप यज्ञादि।
कर्मकर० गु० सेवक, नौकर।
कर्मकाण्ड० ना० पु० जप यज्ञादि।
कर्मकारक० ना० पु० कारक विशेष।
कर्मच्युत० गु० काम से भ्रष्ट, क्रियाभ्रष्ट।
कर्मनाशा० ना० स्त्री० नदीविशेष, जो काशी और गया के मध्य में है।
कर्मप्रधान० गु० कर्म मुख्य, विशिष्टकर्ता।
कर्मभोग० ना० पु० प्रारब्ध का भोग और तपस्या, पक्षी विशेष।
कर्मरङ्ग० ना० पु० कमरख।
कर्मकाव्य० गु० जिस क्रिया पदका कर्म उद्देश्य रहै।
कर्मवाचक० गु० कर्मसूचक।
कर्मविपाक० ना० पु० कर्मों का फल, ग्रन्थ विशेष।
कर्मसाक्षी० ना० पु० सूरज।
कर्माधर्मी० गु० जपतपिया, भाग्यवान्, दैवागत।
कर्मार० ना० पु० बांस।
कर्मिणी० ना० स्त्री० कांसजा, जंघा।
कर्मी० गु० कर्मोंका करनेवाला।
कर्मेन्द्रिय० ना० स्त्री० इन्द्रियां जिनसे कर्म करते हैं, वह पांच हैं अर्थात् गुदा, लिंग, हाथ, पांव, मुख।
कराना० अ० क्रि० कहरना।
कर्बुक०
कर्व्याद० } ना० पु० निशाचर, कव्याद।
कर्बुर० ना० पु० सुवर्ण, राक्षस।
कर्ष० ना० पु० प्रमाण, की, बैर।
कर्षण० ना० पु० खेंच।
कर्षफल० ना० पु० बहेड़ा।
कर्षा० ना० स्त्री० ईर्षा, उत्साह।
कर्षित० गु० खींचागया।
कल० ना० स्त्री० चैन, सुख, यन्त्र गु० अव्यक्त, सुन्दर, मीठा, मधुरशब्द, आनेका पहिला वा पिछला दिन।
कलकण्ठ० ना० स्त्री० कोयल पक्षी।
कलकत्ता० ना० पु० नगर विशेष।
कलकल० ना० पु० कोलाहल, शोर, झगड़ा।
कलकांची० ना० स्त्री० नगर विशेष।
कलंक० ना० पु० अपवाद, चिह्न, दोष।
कलंकी० गु० दोषी, पापी।
कलंकिनी० ना० स्त्री० दूषिता, अपवादिनी, जिसको कलंक लगा।
कलधौत० ना० पु० सोना, चांदी।
कलप० ना० पु० रंग, जिससे बाल रंगजाते हैं वसमा, माड़ी।
कलपना० अ० क्रि० कुढ़ना, दुःखितहोना, कलपकरना, माड़ी लगाना।
कलपाना० स० क्रि० कुढ़ाना, दुःखीकरना, कलपकराना, माड़ीलगवाना।
कलभ० ना० पु० हाथी, कलुष, उत्तालवा सांप।
कलम० ना० स्त्री० लेखनी यह अरबी शब्द है।
कलमलाना० अ० क्रि० कुलबुलाना।
कलरव० ना० पु० कबूतर, कोकिला।
कलबल० ना० पु० कलकेवल, तोतरी बात।
कलविंक० ना० पु० गौरैया पक्षी।

ऊटकटारा० ना० पु० भरभांड़।
ऊटकटीला० ना० पु० पौधा विशेष।
ऊकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में ऊकार है।
ऊख० ना० स्त्री० गन्ना या गन्नोंका खेत।
ऊखल० ना० पु० बड़ी ऊखली।
ऊखाड़ी० ना० पु० गन्नों का खेत।
ऊत० ना० पु० मनुष्य जो संतानहीन मरे, विरोध, अविवाहित, अतिदुष्ट या मूर्ख।
ऊतर० ना० पु० उत्तर, जवाब।
ऊत्क्रम० गु० विपरीत क्रम, विना मिलान, बेसिलसिलः।
ऊदबिलाव० ना० पु० जलजंतु विशेष।
ऊदा० गु० भूरा।
ऊदाई० } ना० स्त्री० कपिल भूरापन।
ऊदाहट० }
ऊधौ० ना० पु० श्रीकृष्ण का एक सखा।
ऊन० ना० स्त्री० भेड़ी आदि के बाल; थोड़ा, न्यून।
ऊनविंश० } ना० पु० उन्नीस।
ऊनविंशति० }
ऊना० ना० पु० खड्गविशेष, धीप।
ऊनी० गु० जो ऊनसे बना है।
ऊपर० ना० पु० उपरि।
ऊपरिस्थ० गु० ऊपर ठहरा भया।
ऊबट० गु० औवट, अगम्य, कुमार्ग।
ऊमरि० ना० स्त्री० गूलरिका वृक्ष।
ऊर्ज्ज० ना० पु० कार्त्तिकमास।
ऊर्ण० ना० पु० मेषादि के लोम, ऊन।
ऊर्णनाभि० ना० स्त्री० मकड़ी।
ऊर्णायु० ना० स्त्री० भेड़ी।
ऊर्ध्व० गु० ऊपर।
ऊर्ध्वकण्डा० ना० स्त्री० बड़ी सतावरि।
ऊर्ध्वतिक्त० ना० पु० चिरायता।
ऊर्ध्वपुण्ड० ना० पु० वैष्णवीतिलक।
ऊर्ध्वरेता० ना० पु० संन्यासी, ऋषि और जितेन्द्रिय, जिसका स्त्रीप्रसंग में काम पतन न हो।
ऊर्ध्वश्वास० } ना० पु० ऊपरकी श्वास।
ऊर्ध्वसास० }
ऊर्ध्व० अव्य० ऊपर।
ऊर्मिला० ना० स्त्री० संज्ञा विशेष।
ऊलूआ० ना० पु० तृण विशेष।
ऊषण० ना० पु० कालीमिरच और पीपरामूल।
ऊष्मा० ना० स्त्री० गर्मी, क्रोध, रोष।
ऊषर० ना० पु० ऊसर।
ऊषरपा० ना० पु० खरीलोन।
ऊषा० ना० स्त्री० वाणासुर की कन्या।
ऊषाकाल० ना० पु० प्रातःकाल, तड़का।
ऊसर० ना० पु० वह धरती जिसमें अन्न आदि उत्पन्न नहीं होता है।
ऊह० ना० पु० तर्क।

(ऋ)

ऋक्० } ना० पु० प्रथम वेद।
ऋग्० }
ऋकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में ऋकार हो।
ऋचा० ना० स्त्री० वेदके मंत्र।
ऋजु० गु० सरल, सीधा।
ऋजुभुज० गु० सीधीरेखा या भुजा मेंड़।
ऋजुभुजक्षेत्र० ना० पु० वह क्षेत्र जो कई सूधी रेखाओं से घिराहो।
ऋण० ना० पु० उधार, कर्ज़।
ऋणक० गु० कर्ज़दार।
ऋणिया० गु० धरता, करजी।
ऋणी० पु० करजदार।
ऋतु० ना० स्त्री० वसंतादि छः, अर्थात् वसंत १, ग्रीष्म २, वर्षा ३, शरद ४, हेमन्त ५, शिशिर ६, और रज; समय, मौसम।
ऋतुमती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपड़ों से।
ऋतुराज० ना० पु० वसंत बहार।

कलश० ना० पु० घट जो विवाह आदिमें स्थापित करते हैं, घड़ा, गगरा।
कलस० ना० पु० शृङ्ग, कलश।
कलसी० ना० पु० छोटाकलश, गगरी।
कलह० ना० पु० विरोध, लड़ाई, झगड़ा।
कलहंस० ना० पु० राजहंस, मेलाहंस।
कलहा० } गु० लड़का, झगड़ालू।
कलहारा० }
कलही० ना० स्त्री० कर्कशा, लड़ाकी।
कलत्र० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री विवाहिता।
कला० ना० स्त्री० सोलहवां अंश, ठाट।
कलाई० ना० स्त्री० पहुंचा, रेगासूत।
कलावंत० ना० पु० गवैया, गायक।
कलाद० ना० पु० सुनार जाति, यथा नाडींधमः। स्वर्णकारः कलादोरुक्मकारकः इत्यमरः।
कलाधर० ना० पु० चन्द्रमा, नृत्यक, बहुरूपी।
कलाना० स० क्रि० भुनाना।
कलानिधि० ना० पु० चन्द्रमा।
कलाप० ना० पु० समूह, व्याकरण विशेष गुण० तर्कश, आभरण, चन्द्रमा, दुःख, हरिहर भजन, भौंरों का समूह, ग्राम विशेष।
कलापी० ना० पु० मयूर, मोर।
कलापशाक० ना० पु० मटरका साग।
कलार० } ना० पु० कलवार, सुंडी।
कलाल० }
कलि० ना० पु० चौथायुगजो ४३२००० वर्ष का होता है वेदोक्त समय का नाशक, समय कलियुग, युद्ध, पाप, क्लेश, शूरो, तर्कश।
कलिकवि० ना० पु० कालिदासादि।
कलिका० ना० स्त्री० सरफोंका, कली, बिना फूलाफूल।
कलिकारी० ना० स्त्री० कलिहारी।
कलिंग० ना० पु० इन्द्रयव, तरबूज, कटकरंजका पौधा, देश विशेष, राजा विशेष।
कलित० गु० प्रदत्ताभया, सुन्दर।
कलिद्रुम० ना० पु० बहेरा।
कलिन्द० ना० पु० तरबूज पर्वत विशेष।
कलिमल० ना० पु० पाप, दोष।
कलिमलसरि० ना० स्त्री० कर्मनाशानदी।
कलियाना० अ० क्रि० कली निकलना, फूलना
कलिल० ना० पु० क्लेश, संकट, दुःख।
कली० ना० स्त्री० कलिका, बरी।
कलुष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
कलेऊ० ना० पु० बासी रसोई, प्रातःकाल में थोड़ाभोजन।
कलेजा० ना० पु० अंग विशेष, पुरुषार्थ, हृदय।
कलेवर० ना० पु० देह, तन।
कलेवा० ना० पु० कलेऊ यह जो विवाह में दूलह को खिलाते हैं।
कलेश० ना० पु० क्लेश।
कलोर० ना० पु० औसर, लैंदे गाय।
कलोल० ना० स्त्री० खेल, मगनता।
कल्की० ना० पु० दसवां अवतार, म्लेच्छान्त जो कलि के अन्त में सम्भल में होगा।
कल्प० ना० पु० ब्रह्माका दिन रात, प्रलय, कल्पवृक्ष, सामर्थ्य, विचार, रचना, बदला, शास्त्र विशेष।
कल्पतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष।
कल्पना० अ० क्रि० खेदित होना, मान लेना, फर्ज करना, तर्क, लालसा, कष्ट।
कल्पान्त० ना० पु० कल्पका अन्त, प्रलय।
कल्पित० गु० रचित, विचारित, मानाहुआ।
कल्याण० ना० पु० कुशल, मंगल, बढ़ती।
कल्लर० गु० ऊसर।
कल्लाना० अ० क्रि० जलनि पड़ना, पिराना।
कल्लोलिनी० ना० स्त्री० तरंगयुत।
कवच० ना० पु० झिलम, बख्तर, रक्षक, अंग विशेष।
कव्य० ना० पु० अन्न विशेष।
कवर्ग० ना० पु० ककारादि पंच अक्षर।
कवरी० ना० स्त्री० केशपाश, वेणी, चोटी।

ऋद्धि० } ना० स्त्री० पार्वतीजी, औषधि, औ-
ऋधि० } धा विशेष, धन, सम्पदा।
ऋषि० ना० पु० वेदज्ञ, मुनि और तपस्वी।
ऋषिपति० ना० पु० ऋषियों में जो प्रधान, बहु विद्यानिधान, भागवतधर्मी।
ऋषिमित्र० ना० पु० शान्तप्रिय, फकीरों का दोस्त, रामचन्द्रिका में विश्वामित्र बोधक।
ऋषिराज० }
ऋषीश० } ना० पु० ऋषिपति।
ऋषीश्वर० }
ऋषभ० ना० पु० राग, स्वर, विशेष, श्रेष्ठ।
ऋक्ष० ना० पु० भालू, रीछ, तारा।
ऋक्षपति० }
ऋक्षराज० } ना० पु० जाम्बवन्त और चन्द्रमा।
ऋक्षेश० }

[ए]

ए० अव्य० ग्यारहवां अक्षर, सम्बोधनका सूचक।
एक० गु० गिनती का प्रथम अंक, अद्वितीय १।
एककाल० गु० समान समय, और एकसमय।
एककालीन० गु० समानकाल में उत्पन्न भया, हम उमर।
एकटक० ना० पु० एक ताकसे देखना।
एकट्ठा० गु० जो एक स्थान में जमाकियो या भया है।
एकतराज्वर० ना० पु० अन्तरिया, तिजरा या तिजारी।
एकतर्ही० ना० पु० एक जगह, ना० स्त्री० मिरजाई।
एकता० ना० स्त्री० एकाई, मेल, समानता।
एकतान० गु० एकमति, दुविधारहित।
एकदा० अव्य० एकसमय।
एकरस० गु० षट्भाव विकाररहित।
एकरूप० ना० समभाव।
एकलौटा० } गु० जो लड़का अपने मातापिता
एकलोता० } का अकेलाहोवे।
एकवचन० गु० बात एक मुख्य नर।
एकवर्णात्मक० गु० जिस शब्दमें एक अक्षरहै।
एकसर० गु० एकमति, दुविधारहित।
एकसा० गु० समान, बराबर।
एकसार० समान, एकरस।
एकछत्र० ना० पु० बिनाखटके, एकहीराज्य।
एकत्र० अव्य० एकठौर, एकस्थान।
एकत्रता० ना० स्त्री० एकठौर होना।
एकाई० ना० स्त्री० एकता।
एकाएकी० अव्य० अचानक, एकबार में।
एकाकार० गु० समान रूप, कलिधर्म, एकजाति, एकाचार, ब्राह्मणादि का विशेष वर्ण धर्मको त्यागिके परस्पर समान रहना।
एकाकी० गु० अकेला।
एकाग्र० गु० एकमन, एकमति, दुविधारहित।
एकांक० गु० निश्चयकरि, सत्य।
एकादशी० ना० स्त्री० पक्षकी ग्यारहवींतिथि।
एकाधिपति० ना० पु० अनेकदेशोंका एकराजा।
एकान्त० गु० निराला, निपट, निर्जनस्थान।
एकान्तर० ना० पु० एकओर।
एकान्तरकोण० ना० पु० एकओरका कोना।
एकायन० गु० एकमति, एकमार्ग।
एकारान्त० गु० जिस शब्दके अंतमें एकारहो।
एकाक्ष० ना० पु० काक, काना।
एकैआंक० अव्य० निश्चयकरि, सत्य।
एकैक० गु० प्रत्येक, हरएक।
एड़० ना० स्त्री० घोडेको दौड़ाने वा चलाने के निमित्त पांवके पिछले भागकी ठोकरमारना।
एड़ी० ना० स्त्री० पांवका पिछलाभाग।
एण० ना० पु० पाप, हानि, मृग, हरिण, छल कपट।
एणी० ना० स्त्री० हरिणी।
एणीन० ना० स्त्री० एणीका बहुवाचक।
एणमद० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
एतदर्थ० अव्य० इसलिये।
एतना० गु० इतना, इसकदर।
एतान० गु० इतने, इसक़दर, इसप्रकार।

कवल० नाः पु० ग्रास लुकमा।
कवि० ना० पु० भाट, श्लोककर्ता छन्दकर्त्ता, शायर।
कवित० ना० पु० छन्द, पद्य।
कविता० } ना० स्त्री० पद्य, श्लोक, छन्द।
कवितार्ई०
कविमाता० ना० स्त्री० शुक्राचार्यकी माता।
कविपुंगव० ना० पु० बड़ा कवि, अग्रकवि।
कविराज० } ना० पु० बड़ाकवि, उत्तमकवि।
कवीश्वर०
कशर० ना० पु० कचनार।
कशेरू० } ना० पु० कसेरू।
कशेरुक०
कश्मीर० ना० पु० काश्मीर।
कश्यप० ना० पु० मुनि, मरीचि, प्रजापति का पुत्र।
कश्यपी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन जो कश्यपसे सम्बन्ध रखते।
कषाय० गु० कसैला रस।
कष्ट० ना० पु० दुःख, पीड़ा, दर्द।
कष्टनाश० ना० पु० नीलकण्ठ पंछी जिस को कष्टनाश कहते हैं।
कष्टित० } गु० दुःखित, पीड़ित, रंजीदः।
कष्टी०
कस० अव्य० कैसा, किसप्रकार।
कसक० ना० पु० पीड़ा, दुःख।
कसकना० अ० क्रि० दुःखभोगना, दुःखहोना।
कसकसा० गु० बारू मिलाहुआ पदार्थ।
कसन० ना० पु० दृढ़ी, यन्त्रणा।
कसना० स० क्रि० खेंचना, जांचना, कोमेपूरना, तलना, थाममुदाकरना।
कसा० गु० खेंचाहुआ।
कसाई० ना० स्त्री० खिंचावट।
कसाना० स० क्रि० खिचाना, जंचाना, घी में डुबवाना, तलना।
कसान० ना० पु० वह पदार्थ जिससे कसीजावे।
कसुमिक्र० ना० पु० नींबवृत।
कसेरू० ना० पु० जलका कन्द विशेष।
कसेरुक० ना० पु० कसेरू।
कसेरुका० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।
कसेरा० ना० पु० कांसकारक, कासगर, जाति विशेष, वर्त्तन बनानेवाला।
कसैला० } गु० कषाय, कसैला।
कसेला०
कसैया० गु० कसनेवाला।
कसौटी० ना० स्त्री० स्वर्णादिपरीक्षकपाषाण।
कस्तूरी० ना० स्त्री० मृगमद, मुश्क।
कस्मल० ना० पु० पाप, मूर्च्छा।
कस्मर्या० ना० स्त्री० कम्भार।
कस्मिन्० सर्व० कौन।
कस्य० सर्व० किसको।
कस्यप० ना० पु० कश्यपमुनि विशेष।
कहनूति० ना० स्त्री० कहावत, मसल।
कहना० स० क्रि० बोलना, बताना, आज्ञा करना, वर्णन करना।
कक्ष० ना० स्त्री० कांख, बगल।
कक्षा० ना० स्त्री० ग्रहों की चालका मंडलाकार पन्थ।
कहलाना० स० क्रि० बुलवाना, जतलाना, भुनाना।
कहा० सर्व० क्या, ना० पु० आज्ञा।
कहानी० ना० स्त्री० कथा, क़िस्सा, वृत्तान्त।
कहार० ना० पु० जातिविशेष धीमर।
कहावत० ना० स्त्री० बात, दृष्टान्त, मसल।
का० सर्व० किसी, क्या, सम्बन्धार्थी।
कांकर० ना० पु० कंकर।
कांख० ना० स्त्री० कख, बगल, कराह।
कांखना० अ० क्रि० कराहना, धुरनाना, स० क्रि० इदना, दबाना।
कांगनी० ना० स्त्री० पांधा विशेष, चीन उसवा।

एतादृश० गु० ऐसे, इसप्रकार।
एतावता० अव्य० इसकरके, इसकारण।
एतावन्मात्र० गु० इतनाही, यही केवल।
एरण्ड० ना० पु० अरण्ड, रेंड़।
एलवा०
एलवालुक०
एलवालु० } ना० पु० औषधि विशेष अर्थात् मुसब्बर।
एला० ना० स्त्री० इलायची।
एलोई० ना० पु० हे हमारे ईश्वर।
एव०
एवं०
एवम्० } अव्य० इसप्रकार, और।
एवमस्तु० अव्य० ऐसाही हो।

[ऐ]

ऐंच० ना० पु० संकोच, खिंच।
ऐंचना० स० क्रि० खैंचना।
ऐंठ० ना० स्त्री० बल, मड़ोड़।
ऐंठना० स० क्रि० मरोड़ना, बलदेना, अ० क्रि० बलखाना, मरोड़िजाना।
ऐकाधिपत्य० ना० पु० अद्वितीय देशाधिपत्य, पदवी।
ऐकाहिक० ना० पु० अन्तरिया।
ऐक्य० ना० पु० एकता, समानता।
ऐगुन० गु० औगुण।
ऐनमैन० गु० ज्योंकात्यों।
ऐन्द्रजालिक० ना० पु० नटवर, दिठबंध।
ऐरावत० ना० पु० इन्द्रका हाथी।
ऐरावती० ना० स्त्री० नदी विशेष।
ऐचक्रा० ना० स्त्री० ककरासिंगी।
ऐश्वर्य्य० ना० पु० विभव, माहात्य, संपत्ति, प्रताप, महत्ती।
ऐश्वर्यवान्०
ऐश्वर्यशाली० } गु० सम्पत्ति करके शुशोभित।
ऐसा० गु० इसप्रकार, इसके समान।
ऐहिक० गु० इसलोक के भोग, जो इहां ही पै।

[ओ]

ओ० अव्य० सम्बोधन, करुणा, स्मृति।
ओंठ० ना० पु० ओष्ठ, होंट।
ओंडा० गु० गम्भीर।
ओंधा० गु० औंधा, रस्सी जो छप्पर में बांधते हैं।
ओक० ना० पु० नर, आश्रय, ठिकाना, ना० स्त्री० उबकाई।
ओकना० अ० क्रि० वमन करना, उछाल करना।
ओकारान्त० गु० जिसके अन्तमें ओकार है।
ओखली० ना० स्त्री० गाली, उलूखल।
ओघ० ना० पु० समूह, बहुतायत।
ओछा० गु० छिछोरा, हलका, छोटा।
ओज० ना० पु० प्रताप, बल, तेज।
ओझ० ना० पु० पचौनी, झोंझ, पेट।
ओझड़० ना० स्त्री० झोंक, धक्का।
ओझड़ी० ना० स्त्री० पचौनी, आंत।
ओझल० ना० स्त्री० ओट, छुपाव, गु० जो छुपा है।
ओझा० ना० पु० ओझस, टोनहा, मंत्री या शाक्तधर्मी।
ओट० ना० स्त्री० आड़, पर्द।
ओटना० स० क्रि० आड़ करनी, बचाना, रेतना, रुईसे बिनौला निकालना, रोकना।
ओटा० ना० पु० आड़, बैठन।
ओड़न० ना० स्त्री० ढाल, फरी।
ओड़ना० स० क्रि० सहना रोकना।
ओड़ा० ना० पु० खांचा, बड़ा टोकरा।
ओढ़ना० स० क्रि० पहिरना, ना० पु० रजाई, पट्टू, लोई आदि।
ओढ़नी० ना० स्त्री० स्त्रियों का ओढ़ना।
ओत० ना० स्त्री० बढ़ोतरी, बचती, हीनता।
ओतप्रोत० ना० पु० तानावाना, चौड़ाई, लम्बाई में ग्रंथित, पलटे पर विवाह।
ओदन० ना० पु० भात, चावल पके।

कांच० गु० कच्चा, ना० पु० गुदा में सेरा विशेष ना० स्त्री० शीशा।

कांजी० ना० पु० जल विशेष, भात कोऽसड़ाय के बनता है।

कांटा० ना० पु० कंटक, स्वर्णादिक तौलनेकी यन्त्र तुला, जलमें गिरीहुई वस्तु निकालने को यन्त्र।

कांठा० गु० किनारा, अन्त, ओर, समीप।

कांड० ना० पु० खण्ड, तीर विशेष।

कांडी० ना० स्त्री० कड़ी, धरन।

कांदू० ना० पु० चीनी पकानेका कड़ाह, भूंजेजाति विशेष, भुजों।

कांदो० ना० स्त्री० कीच, कीचड़, कांदो।

कांधना० अ० क्रि० मानना, स्त्रीकारकरना।

कांधा० ना० पु० कंधा।

कांपना० अ० क्रि० दलदलाना, थरथराना।

कांस० ना० पु० तृण विशेष।

कांसा० } ना० पु० धातुविशेष।
कांस्य० }

कांक्षा० ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ।

काई० ना० स्त्री० हरी वस्तु जो तालादि में लगती है।

काऊ० सर्व० जिसको, किसी को।

काक० ना० पु० कौआ, पक्षी विशेष।

काकजंघा० ना० स्त्री० पौधा विशेष।

काकटम्बपुष्पी० ना० स्त्री० महासुवडी।

काकतिक्ता० } ना० स्त्री० कागजंघा।
काकपदी० }

काकपक्ष० ना० पु० जुल्फ, बावरी, काकुल, कौआ के पंख।

काकभुशुण्डि० ना० पु० प्रसिद्ध पक्षी श्रीरामायण वक्ता।

काकर० सर्व० किसका।

काका० ना० पु० पिताका भाई, चचा।

काकिणी० ना० स्त्री० २० कौड़ी को कहते हैं, लीलावत्यां यथा वराटिकानांदशकद्वयं यत्साका किणीताश्चपणश्चतस्रः; तेषोडशद्रम्मइहाभिनेम्यो द्रम्मैस्तथाषोडशभिश्चनिष्कः।

काकी० ना० स्त्री० काका की पत्नी, चाची।

काकू० ना० पु० व्यंग्यवचन, कड़ीबात।

काकोदर० ना० पु० सर्प, कौवाका पेट।

काकोल० ना० पु० विष, हलाहल।

काख० ना० स्त्री० कांख, कक्ष।

काखअलाई० ना० स्त्री० कखौरी।

काग० ना० पु० काक, कौआ।

कागासुर० ना० पु० काकरूपी दैत्य जिसकी जीभ श्रीकृष्णचन्द्रजीने तोड़दीथी।

काच० ना० पु० कांच, गु० कच्चा।

काचक० ना० पु० बांस।

काचा० गु० कच्चा, अज्ञानी।

काछ० ना० स्त्री० धोतीकी दूसरा सिरा जो पीछे को खोंचते हैं, कमर, जंघाका ऊपरभाग।

काछना० स० क्रि० काछमारना, चढ़ाना, पीछना, बटोरना।

काछनी० ना० स्त्री० काछ विशेष।

काछी० ना० पु० सुराऊ जाति विशेष।

काज० ना० पु० कार्य्य, काम।

काजल० ना० पु० कज्जल, अंजन, सुरमा।

काजी० गु० कार्य्य कर्त्ता, कामी।

कांचन० ना० पु० सुवर्ण, सोनाधातु।

कांचनपुष्पिका० ना० स्त्री० मूसली।

कांचनार० ना० पु० कचनार वृक्ष।

कांचनी० ना० स्त्री० हल्दी, सोनेकी पुतली पर्वती वेश्या।

कांची० ना० स्त्री० पुरीविशेष, जिसके दो भाग हैं एक विष्णुकांची दूसरी शिवकांची।

काट० ना० स्त्री० चीरा, मेल, तीक्ष्णता, तेजी

काटना० स० क्रि० कतरना, टुकड़े करना, कोटवाना, लवना, अर्थात् लौनी, आराकरना, रहना, बिताना, रोकना, लज्जित होना, छीलना, लज्जितकरना।

ओदा० गु० गीला, भीगा।
ओधे० गु० अधिकारी, लागे।
ओप० ना० स्त्री० सुन्दरता, चमचमाहट, घिस्ट।
ओपना० स० क्रि० घोटना, साफकरना।
ओपनी० ना० स्त्री० वह किसान जिस पर जिला करते हैं।
ओपी० अव्य० उधर, किं, गु० साफ की।
ओर० ना० स्त्री० कंगर, मांग, चलंगा।
ओरी० गु० पत्र, पंधी, मदद, ना० स्त्री० ओलती।
ओल० ना० पु० सूरण, जिमींकन्द, मनौती, बदले।
ओलती० ना० स्त्री० ओरौनी, ओरी।
ओला० ना० पु० जलमय पत्थर और चीनी शक्कर का जो बनता है।
ओषधि० ना० स्त्री० जो पौधा फल पकजाने के पीछे फिर से उत्पन्नहो।
ओष्ठ० ना० पु० दांतों का ढकना, होंठ।
ओस० ना० स्त्री० जो रात्रि समय छोटी २ बूंद होकर पड़ती है, शीत।
ओसर० ना० स्त्री० कलोर भैंस।
ओसरा० ना० पु० } पारी, बारी, पंती
ओसरी० ना० स्त्री० }
ओसीसा० ना० पु० उसीसा, सिरहाना।
ओहो० अव्य० वाहवाह, आहा।

[औ]

औ० अव्य० और।
औंगी० ना० स्त्री० चुप्पी, अगुनापन, चपकीहुई गाड़ी।
औंघाना० अ० क्रि० झपकी आना।
औंड० ना० पु० बेलदार।
औंडा० गु० गम्भीर।
औंधना० अ० क्रि० उलटना, उमण्डना।
औंधा० गु० उलटा।
औंधाना० स० क्रि० उलटाना।
औकारान्त० गु० जिसके अन्तमें औकारहै।
औघट० गु० अगम्य, जहां जाय न सके।
औचक० } अव्य० अचानक, नागहान।
औचट० }
औछ० ना० पु० जड़विशेष।
औटन० ना० पु० जलाव।
औटना० स० क्रि० जलाना, सुखाना।
औत्तानपादि० ना० पु० ध्रुव, भक्त-प्रसिद्ध।
औत्कर्ष्य० ना० पु० श्रेष्ठता, उत्तमता।
औत्सुक्य० ना० पु० चिन्ता, व्याकुलता, पछितावा।
औथरा० गु० उथला, कम गहरा।
औदात० गु० अवदात, श्वेत।
औदार्य० ना० पु० दातापन, उदारता।
औदासीन्य० ना० पु० विषयों में वैराग्य।
और० अव्य० पुनः, फिर, गु० अधिक, दूसरा।
औरस० ना० पु० व्याहिताका पुत्र।
और्ध्वदैहिक० ना० पु० मृतककी क्रिया।
औषध० } ना० स्त्री० रोगनाशक द्रव्य, दवा,
औषधि० } इलाज।
औषधिपति० } ना० पु० चन्द्रमा।
औषधीश० }

[क]

क० अव्य० ना० पु० जल, सुख, अग्नि, शिर, काम, सुवर्ण।
ककड़ी० ना० स्त्री० फल या तरकारी विशेष।
ककरहा० } ना० पु० बारहखड़ी, वर्ण।
ककहरा० }
ककार० ना० पु० क।
ककुभा० ना० स्त्री० दिशा और छन्दविशेष।
ककुद्य० ना० पु० नीलवृक्ष।
ककुस्त० ना० पु० धनियां मसाला, कसनी।
ककोरना० स० क्रि० खोदना, खरोचना।
कखरी० ना० स्त्री० कांख, बगल।
कखवारी० } ना० स्त्री० कांखका फोड़ा।
कखौरी० }

काटमाण्डु० ना० पु० नेपालदेशकीराजधानी।
काठ० ना० पु० काष्ठ, सूखीलकड़ी।
काठिन्य० ना० पु० कठिनता, कठोरपन।
काठियावाड़० ना० पु० देशविशेष।
काठी० ना० स्त्री० घोड़े के ऊपरका काष्ठ का आसन, मियान जिसमें तलवार रखते हैं, तन, देह, डील, लकड़ी।
काढ़ना० स० क्रि० निकालना, चमड़ा उधेड़ना, कपड़े में फूल बूटा बनाना, चालसिलाना।
काढ़ा० ना० पु० क्वाथ।
काण० } गु० एकाक्ष, एकनयन।
काणा० }
काणी० ना० स्त्री० एक आंखिवाली।
काण्ड० ना० पु० खण्ड, प्रकरण।
काण्डरुहा० ना० स्त्री० कुटकी।
कातना० स० क्रि० सूत रुई से बनाना, टूँड़ा के भरा।
कातर० गु० डरपोकना, व्याकुल, ना० पु० जंगल, दुर्भिक्ष, कोल्हू की पाटि।
कातिक० ना० पु० आठवां महीना।
कातिकी० ना० स्त्री० कातिक की वस्तुआदि, कातिककी पूर्णमासी।
काती० ना० स्त्री० छोटी तलवार, कत्ती।
कात्यायन० ना० पु० मुनिविशेष, स्मृतिविशेष।
कात्यायनी० ना० स्त्री० देवीविशेष, स्मृतिविशेष, कात्यायनवंशी।
कादम्बिनी० ना० स्त्री० मेघमाला।
कादर० गु० डरपोकना, व्याकुल।
कादरता० } ना० स्त्री० भय, डर, डरपोकना
कादराई० } पन।
काधना० स० क्रि० कांधना, कांधे धरना।
कान० ना० पु० कर्ण, श्रवण, स्वान, अदब
कानन० ना० पु० वन, जंगल, महाकोड़ित

कानि० ना० स्त्री० मर्याद, संकोच, अदब, लाज।
काना० ना० पु० अक्षर की खड़ी लकीर, काणा, कड़ाही आदि का गहना।
कानी० ना० स्त्री० जो एक आंख की होवे।
कानीन० गु० नीच, क्षुद्र, स्त्री० लड़की, रामचन्द्रिकायां अद्यापि आनी नरे वन्दिकानीन।
कान्त० ना० पु० पति, स्वामी, सुन्दर।
कान्ता० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी।
कान्ताह्वा० ना० स्त्री० प्रियंगु औषधि।
कान्ति० ना० स्त्री० शोभा, चमक और नाम चन्द्रमा की एक कला का।
कान्तिपाषाण० ना० पु० चुम्बक।
कान्दा० ना० पु० जलका कन्द, कलकंदरा।
कान्यकुब्ज० ना० पु० देश विशेष, ब्राह्मण
कान्ह० } ना० पु० श्रीकृष्ण जी का एकनाम।
कान्हर० }
कापट्य० गु० शठता, कपट।
कापथ० ना० पु० अतिमार्ग, कठिनमार्ग।
कापुरुष० गु० कुत्सित, मनुष्य, बुरा आदमी, कुमन, कुकर्मी, नर।
काम० ना० पु० भोगकार्य्य, अभिलाष, कामदेव, लाग, विषय, बधावा, सुन्दर।
कामक० ना० पु० मेघ।
कामकेलि० ना० स्त्री० दुलार, प्यार, संगम, प्रसंग।
कामचञ्चुका० ना० स्त्री० चुंघची।
कामतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष।
कामद० गु० कामना दाता।
कामदगो० ना० स्त्री० इन्द्रकी गाय।
कामदूती० ना० स्त्री० वसन्तऋतु, कुटनी।
कामदेव० ना० पु० मदन, मन्मथ।
कामधेनु० ना० स्त्री० इन्द्रकी गौ, देवगौ।
कामना० ना० स्त्री० इच्छा, कामाभिलाष, मदना

कड्खा० ना० पु० युद्धमें बढ़ावा देनेकी बात कहना।
कड्खैत० गु० भाट जो बढ़ाव देता है।
कडुआ० गु० तीता, तीक्ष्ण, निठुर, योद्धा।
कडुवाहट० ना० स्त्री० तीक्ष्णता।
कड़ा० गु० कठोर, दृढ़, मगरा, ठीठ, निठुर, ना० पु० लोहेका या चांदीआदि का भूषण जो हाथमें पहिनते हैं।
कड़ाड़० ना० पु० नदीका ऊंचा किनारा।
कड़ाह० ना० पु० दुग्धादि औटने के लिये लोहे का पात्र, गुरुनानक का भोग।
कड़ाही० ना० स्त्री० छोटा कड़ाह।
कड़ी० ना० स्त्री० कांड़ी, धरनी, धंधी।
कडु० ना० स्त्री० खुसली, खारिश्त।
कढ़ाना० अ० क्रि० निकलना, उठना, चितना।
कठिल्लक० ना० पु० लालपुनर्नवा।
कढ़ी० ना० स्त्री० भोजन विशेष जो बेसन औ दही से बनता है।
कढुआ० ना० पु० उधार, कर्ज।
कण० ना० पु० धान्य, अनाज, रान्यमात्र्यंश्य, जरे:।
कणा० ना० स्त्री० पीपरी।
कणामूल० ना० पु० पीपरामूल।
कणासुफल० ना० पु० अकोल औषधि।
कणिका० ना० स्त्री० सोनजुही, अणु, लेश, टुकड़ा, जरे:।
कणी० ना० स्त्री० छिटक, टुकड़ा, जरे:।
कण्टक० ना० पु० कांटा, गोखुरू, शत्रु, कृपण, पित्तपापड़ा।
कण्टकलता० ना० स्त्री० खीरा फलविशेष।
कण्टकारि० } ना० स्त्री० छोटीकटाई सुफेद
कण्टकिनी० } धौंकुवारि
कण्टकिफल० ना० पु० कटहल
कण्टकी० ना० पु० बिल्व, बेलु।
कण्टफल० ना० पु० गोखुरू
कण्टार० गु० कटीला।
कण्टारिका० ना० स्त्री० छोटी सफेद कटाई।
कण्टिया० ना० स्त्री० अांकड़ी।
कण्ठ० ना० पु० गला, घाटी, उपस्थित, मुखाग्र।
कण्ठगत० गु० गले में जान वा लेव।
कण्ठमाल० } ना० स्त्री० गलेकीमाला, मुख्य
कण्ठमाला० } रोग जिसमें गला सड़जाता है।
कण्ठला० ना० पु० माला जो लड़कों के लिये बहुयन्त्र युत बनाते हैं।
कण्ठस्थ० ना० पु० मुखाग्र।
कण्ठा० ना० पु० बड़ी गुरियों की माला।
कण्ठाग्र० गु० मुखाग्र, जबानी।
कण्ठाभरण० ना० पु० गलेका भूषण।
कण्ठी० ना० स्त्री० छोटीमाला तुलसीआदि की।
कण्ठीरव० ना० पु० सिंह, व्याघ्र, शेर।
कण्ठ्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण कंठ से होवे।
कण्डा० ना० पु० उपला।
कण्डी० ना० स्त्री० छोटाउपला।
कण्डुपुष्पी० ना० स्त्री० शंखाहुली।
कण्डू० ना० पु० रोगविशेष, स्त्री० जमुहाई।
कण्डूघ्न० ना० स्त्री० पवांर, औषधि।
कण्डेरा० ना० पु० धुनियां, जाति विशेष जो तीर बनाते हैं, कमानगर।
कण्व० ना० पु० मुनिविशेष।
कत० अव्य० कहां, क्योंकर, किसलिये।
कतना० अ० क्रि० काताजाना।
कतरन० } ना० पु० काटना।
कतरा० }
कतरना० स० क्रि० काटना।
कतरनी० ना० स्त्री० कटनी, कैंची।
कतराना० स० क्रि० कटवाना।
कतहु० अव्य० कभी
कताई० ना० स्त्री० कातने का काम, कातने का पैसा।
कतीरा० ना० पु० गोंदविशेष
कत्त० अव्य० कहां क्योंकर

कामपाल० ना० पु० बलदेवजी।

कामवन० ना० पु० जिस वनमें श्री सदाशिव ने कामदेव को जलाया था।

कामरी० ना० स्त्री० कम्मल।

कामरूप० ना० पु० इच्छाचारी, सुन्दर, देश विशेष।

कामरूपी० गु० बहुरूपिया, सुन्दर, कामरूप वासी।

कामसखा० ना० पु० इन्द्र, वसन्तऋतु।

कामांग० ना० पु० आम्रवृक्ष।

कामातुर० } गु० मदनमत्त, कामी, शूल-
कामार्त्त० } हारा।

कामिनी० ना० स्त्री० उत्तम, सुन्दरी, ना० पुष्प वृक्ष विशेष, कामातुर स्त्री।

कामी० गु० कामातुर, बहुधन्धी, मुतुल्ली माधवी वृक्ष।

कामुक० ना० पु० स्त्री के सुख में आसक्त, कामातुर।

कामोद० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

काम्बोज० ना० पु० देश जो बंगाले के दक्षिण पूर्व है।

काम्य० गु० सुन्दर, अच्छा।

काम्यकर्म० ना० पु० स्वर्गादि फलों के लिये जो कर्म करना।

काय० ना० स्त्री० देह, तन।

कायक० गु० देही।

कायफल० ना० पु० औषध विशेष।

कायर० गु० भयमान, डरपोक, हेटा।

कायस्थ० ना० पु० जातिविशेष, गु० जो निज काया में स्थितहो अर्थात् सन्तुष्ट।

कायस्था० ना० स्त्री० हर्रे, काकोली।

काया० ना० स्त्री० देह, तन।

कायाकल्प० ना० पु० देहका बदलना।

कारक० ना० पु० क्रियाका साक्षात् निमित्त।

कारज० ना० पु० कार्य, काम।

कारण० ना० पु० निमित्त, लिये, सबब, प्रकृति।

कारणी० गु० कारख, कर्त्ता।

कारवल्ली० } ना० पु० करेला, तरकारी।
कारवेल्ल० }

कारवी० ना० स्त्री० अजमोद, कलौंजी।

कारागार० } ना० पु० बन्दीघर, जेहलखाना।
कारागृह० }

कारु० } ना० पु० शिल्पकार, थवई।
कारुकर० }

कारुणिक० गु० दयालु, कृपालु।

कार्त्तस्वर० ना० पु० सुवर्ण, कांचन।

कार्त्तिक० ना० पु० कातिक।

कार्त्तिकेय० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

कार्पण्य० ना० पु० दरिद्रता, दीनता।

कार्पास० ना० स्त्री० कपास।

कार्मुक० ना० पु० धनुष, महानीम वृक्ष।

कार्य्य० ना० पु० प्रयोजन, काम।

कार्षापण० ना० पु० कौड़ी के सोलहपण के माप अथवा तोल।

काल० ना० पु० मृत्यु, दुर्भिक्ष, समय, कल काला, धर्मराज, सर्प, सुन्दर, यमराज इ०।

कालक० ना० पु० कृष्णता, बीजगणित में प्रमाण का बोधक।

कालकूट० ना० पु० विष, हलाहल।

कालपीलुक० ना० पु० तेंदुआवृक्ष।

कालपर्णी० ना० स्त्री० कालानिसोत।

कालमेषिका० ना० स्त्री० मजीठ, बाकुची।

कालमेषी० ना० स्त्री० कालानिसोत।

कालयमन० ना० पु० नाम एक म्लेच्छ का जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने भस्म किया था।

कालराति० } ना० स्त्री० प्रलयकाल की राति,
कालरात्रि० } अंधेरीराति, देवी विशेष।

कालवाहन० ना० पु० भैंसा।

कालवृत्तिका० ना० स्त्री० कुम्भी जो पानी में होती है।

कालशाक० ना० पु० सरफोंका।

कालसार० ना० पु० तेंदुआ वृक्ष।

कत्था० ना० पु० खदिर, खैर ।
कत्सायल० ना० पु० कालादरिय ।
कथक० गु० पौराणिक, पवारिया, कथिक ।
कथन० ना० पु० कहना, वाक्य का प्रयोग कहना ।
कथना० अ० क्रि० कहना ।
कथनीय० गु० कहने के योग्य ।
कथा० ना० स्त्री० कहानी, वृत्तान्त, पवारा ।
कथित० गु० कहा हुआ ।
कथोपकथन० ना० पु० आलाप, परस्पर बात चीत ।
कथ्य० ना० स्त्री० हरे, गु० कहने योग्य ।
कद० अव्य० कब ।
कदध्वा० ना० स्त्री० अतिमार्ग, कठिनमार्ग ।
कदन० ना० पु० मारक, वधिक ।
कदम्ब० ना० पु० समूह, वृक्षविशेष, कदम ।
कदम्बक० ना० पु० समूह, सिरोह ।
कदर्य० गु० लोभी, कंजूस ।
कदली० ना० पु० केला वृक्ष ।
कदक्षर० ना० पु० कुत्सित वर्ण ।
कदा० अव्य० कब ।
कदाचार० गु० शास्त्र से विपरीत व्यवहार ।
कदाचित्० } अव्य० जो कभी होता हो
कदापि० } शायद ।
कदेन० ना० पु० दुःख देना ।
कद्रू० ना० स्त्री० कालीनाग की माता, कश्यपजी की स्त्री ।
कधू० अव्य० कभी ।
कन० ना० पु० कण, अणु ।
कनक० ना० पु० सोना, धतूरा ।
कनकटा० गु० बूचा ।
कनकाचल० ना० पु० सुमेरुपर्वत जो मनुष्य को अगम्य है ।
कनखजूरा० ना० पु० गोजर, कीट प्रसिद्ध ।
कनल० ना० पु० भिलावाँ ।
कनवाई० ना० स्त्री० कान छेदना ।

कनागत० ना० पु० आश्विनकृष्णपक्ष में पितरों का श्राद्ध ।
कनिक० ना० पु० चून, पिसान, आटा ।
कनियाना० स० क्रि० संकोच से कतरायजाना, आंख छुपाना ।
कनियाहट० ना० स्त्री० खाँच, संकोच ।
कनिष्ठ० गु० छोटा ।
कनिष्ठा० ना० स्त्री० पांचवीं अंगुली, नीचली ।
कनिष्ठिका० ना० स्त्री० पांचवीं अंगुली ।
कनिहा० गु० घुना ।
कने० अव्य० पास, साथ ।
कनेर० } ना० पु० करवीरवृक्ष जिसका फूल
कनेल० } देवतों को चढता है ।
कनैया० ना० पु० कर्णवेधन, ना० स्त्री० बाली ।
कनौज० ना० पु० प्राचीन नगर, विहारप्रदेश ।
कनौजिया० गु० कनौज देश का वासी ।
कन्त० ना० पु० स्वामी, भर्तार, प्रियतम, मालिक ।
कन्था० ना० स्त्री० कथड़ी, गुदड़ी, नीति यथा (शनैःकन्था शनैःपन्था शनैःपर्वतलंघनम्, शनैर्विद्या शनैर्वित्तमेते पञ्चशनैःशनैः)
कन्द० ना० पु० जड़ विशेष वा जो जड़ में फलता है यथा, सूरण, घुंइयाँ, आलू और मेघ धूलि ।
कन्दरा० ना० स्त्री० खोह, गुफा ।
कन्दराल० ना० पु० अखरोट ।
कन्दर्प० ना० पु० कामदेव ।
कन्दलकन्द० ना० पु० जिमीकन्द ।
कन्दला० ना० पु० कौंचबीज ।
कन्दासी० ना० स्त्री० पियावासा ।
कन्दुक० ना० पु० कैथावृक्ष वा उसका फल, गेंद
कन्ध० ना० पु० कांधा ।
कन्धर० ना० पु० गला, मेघ ।
कन्धा० ना० पु० कांधा ।
कन्धियाना० स० क्रि० कोई वस्तु कांधे पर रखना ।

कालसूत्र० ना० पु० नरक भेद ।
कालस्कन्ध० ना० पु० तमालवृक्ष ।
कालक्षेप० ना० पु० समय काढना, दुःख भोग करना, गुजरान करना ।
कालज्ञ० गु० ज्योतिषी, पण्डित, योगीश्वर, ज्ञाता, मुर्गापक्षी, शृगाल ।
काला० गु० कृष्णवर्ण, श्यामरंग ।
कालिका० ना० स्त्री० भनियां, मसाला, कालाजीरा, देवीविशेष ।
कालिख्यात० ना० स्त्री० किन्दवाली ।
कालिन्दी० } ना० स्त्री० यमुनानदी विशेष ।
कालिन्द्री० }
कालियक० ना० पु० मलय, चन्दन ।
कालिया० ना० पु० कालीनाग, गु० काला ।
काली० ना० स्त्री० मसी, देवीविशेष, मिसर देशकी नदी ना० पु० कालीनाग जो यमुना में रहा करता था ।
कालीदह० ना० पु० यमुनाजी में विशेषस्थान ।
काल्पनिक० गु० आरोपित, कल्पना कियागया, ना० स्त्री० नदी विशेष जो दक्षिण में है ।
कावेरी० ना० स्त्री० नदी विशेष ।
काव्य० ना० पु० पद, श्लोक, छन्द, पुस्तक, जिसमें कविताई हो, शुक्र ।
कास० ना० पु० खांसी, खोखी ।
कासघ्नी० ना० स्त्री० भारंगी औषधि ।
काश्मर्द० ना० पु० कलौंजी का साग ।
काश्मीर० ना० पु० देश विशेष जो पंजाब के उत्तर है, पुष्करमूल ।
काश्मीरी० ना० स्त्री० केसर, कम्भारी, काश्मीरदेशवासी ।
काश्यप० ना० पु० कश्यपकी सन्तान ।
काश्यपी० गु० सूरज का रथवान ।
काशी० ना० पु० नगर विशेष ।
काष्ठ० ना० पु० काठ, लकड़ी ।
काष्ठकेवा० ना० पु० बर्र ।
काष्ठपाटला० ना० स्त्री० कुम्भी ।
काष्ठान्तर० ना० पु० काठके भीतर ।
काष्ठी० ना० स्त्री० फटकरी ।
कासार० ना० पु० तालाव, भैंसा ।
कासु० सर्व० किसको ।
काहन० ना० पु० कार्षापन ।
काहे० सर्व० क्यों ।
काक्षी० ना० स्त्री० फटकरी ।
कि० अव्य० प्रथमवाक्य का द्वितीयवाक्य से सम्बन्धकारक ।
किंशुक० ना० पु० पलाश, ढाख, टेसू ।
किंकर० ना० पु० टहलुआ ।
किंकरी० ना० स्त्री० दासी, टहलुइन ।
किंकिणी० ना० स्त्री० कटिबन्ध घंटी समेत, काकवृक्ष ।
किम्पान० ना० पु० घोड़ा ।
किचकिचाना० अ० क्रि० दांतपीसना ।
किचड़ाना० अ० क्रि० आंखों में कीचड़आना ।
किचपिचाना० अ० क्रि० गरुवड़ाना ।
किंचित्० अव्य० थोड़ा, अल्प, कुछ ।
किंचिन्मात्र० गु० कुछ, अतिअल्प ।
किंचुक० ना० पु० संज्ञाविशेष ।
किंचुकी० ना० स्त्री० चोली, अंगिया ।
किंजल्क० ना० पु० सिफाकन्द ।
किटि० ना० पु० सुअर, सूकर, यथा, वराहःशूकरो घृष्टिःकालपोत्री किरिकिटिः हलमरः ।
किड़किड़ाना० अ० क्रि० क्रोधसे दांतपीसना ।
किड़हा० ना० पु० ऊंगा, गु० घुना ।
कित० अव्य० कहां, किधर ।
कितना० }
कितनी० } गु० प्रमाणका प्रश्नकारक ।
किती० }
कितेक० गु० बहुत ।
किते० अव्य० किधर ।
कित्ति० ना० स्त्री० कीर्ति, यश, रामचन्द्रिकाया यथा, अखण्ड कीर्ति लेय भूमि देयमान खेलिये ।

कन्धेली॰ ना॰ स्त्री॰ खोगीर, जो घोड़ोंको उढ़ाते हैं।
कन्यका॰ ना॰ स्त्री॰ कुमारी, कन्या।
कन्या॰ ना॰ स्त्री॰ बेटी, छटी राशि, दश वर्षतक की लड़की।
कंस॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णका मामू।
कन्हाई॰ } ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजीका एक
कन्हैया॰ } नाम।
कपना॰ अ॰ क्रि॰ थरथराना।
कपकपी॰ ना॰ स्त्री॰ थरथराहट, फुरफुरी।
कपट॰ ना॰ पु॰ छल, फरेब, खोटाई, और भगल।
कपटभू॰ ना॰ स्त्री॰ मायाभूमि, तिलसमाती जमीन।
कपटी॰ गु॰ छली, खोटा, बहुरूपिया।
कपड़ा॰ ना॰ पु॰ वस्त्र।
कपड़ोंसेहोना॰ अ॰ क्रि॰ रजोधर्म होना, ऋतुमती होना।
कपर्दी॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी, बरगद।
कपाट॰ ना॰ पु॰ किवाड़, पट।
कपार॰ } ना॰ पु॰ माथा, ललाट, भाग्य।
कपाल॰ }
कपालभृत्॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।
कपाली॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी और श्री-भैरवजी।
कपास॰ ना॰ स्त्री॰ रुईका वृक्ष, कर्पास।
कपि॰ ना॰ पु॰ वानर, बन्दर।
कपिकुञ्जर॰ ना॰ पु॰ श्रेष्ठ वानर।
कपितन॰ ना॰ पु॰ पारस, पीपल।
कपित्थ॰ ना॰ पु॰ कैथाका वृक्ष।
कपिध्वज॰ ना॰ पु॰ अर्जुन, पाण्डुपुत्र।
कपिन्द्र॰ } ना॰ पु॰ मुख्य वानर और श्रेष्ठ
कपीन्द्र॰ } वानर।
कपिपति॰ ना॰ पु॰ सुग्रीव, गु॰ जो वानरों का राजा होवे।
कपिपिप्पली॰ ना॰ स्त्री॰ लालऊंगा।
कपिभूत॰ ना॰ पु॰ पारस, पीपल।
कपिल॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष, सांख्यशास्त्र के वक्ता, पीतलधातु।
कपिला॰ ना॰ स्त्री॰ पिंगलवर्णकीगाय, रेणुका।
कपिलदेव॰ ना॰ पु॰ आदिम्अवतार।
कपिलय॰ ना॰ स्त्री॰ कपाला श्रौषधि।
कपीश॰ ना॰ पु॰ सुग्रीव वानरोंका राजा।
कपूर॰ ना॰ पु॰ सुगन्धि विशेष, कापूर।
कपोत॰ ना॰ पु॰ कबूतर परेवा।
कपोतवर्णा॰ ना॰ स्त्री॰ छोटीइलायची।
कपोताक्ष॰ ना॰ पु॰ नद विशेष।
कपोतिका॰ ना॰ स्त्री॰ मूली तरकारी।
कपोल॰ ना॰ पु॰ गाल।
कफ॰ ना॰ पु॰ खखार, श्लेष्मा, बलगम।
कफोब्धिज॰ ना॰ पु॰ समुद्रफेन।
कब॰ अव्य॰ कहां, कदा।
कबड्डी॰ ना॰ स्त्री॰ गबड्डी खेल विशेष।
कबन्ध॰ ना॰ पु॰ बिनामस्तक की देह और पानी, मेघ, राहु, (उभेपूर्वापरेसंध्ये नित्ये पश्यामिभारत, उदयास्तमयेसूर्ये कबन्धैःपरि वारित) इतिमहाभारते।
कबरा॰ गु॰ कबुर, चितला, अबलक।
कबारु॰ ना॰ पु॰ काम, उद्यम, तरकारी।
कभी॰ } ना॰ पु॰ अव्य॰ कभी, कदापि,
कभू॰ } कधी।
कमठ॰ ना॰ पु॰ कछुआ।
कमठा॰ ना॰ पु॰ धनुष, कमान।
कमठी॰ ना॰ स्त्री॰ कछुई, धनुही।
कमण्डलु॰ ना॰ पु॰ दण्डियों का जलपात्र, करवा।
कमनीय॰ गु॰ सुन्दर, मनोवत्।
कमन्दर॰ ना॰ स्त्री॰ सीपी यथा (मुक्ता-स्फोटाब्धि मंडूकी शुक्ति मौक्तिक मन्दरः) इति निघंटे।
कमरख॰ ना॰ पु॰ फल विशेष और वस्त्र विशेष।

किधर० अव्य० कहां।
किनारा० ना० पु० तट, कूल।
किनारी० ना० स्त्री० गोटा, मगजी।
किन्० ना० पु० घाव, अव्य० क्योंनहीं।
किन्तघ० ना० पु० धतूरा।
किन्तु० अव्य० परन्तु, तिसपरभी।
किन्नर० ना० पु० यत्तदेवता।
किन्नरी० ना० स्त्री० सारंगी, यक्षिणी।
किपलता० ना० पु० केथा का वृक्ष।
किम्० सर्व० क्यों, किसप्रकार।
किमपि० सर्व० क्योंभी, किसप्रकार।
किमर्थ० सर्व० किसलिये।
किमाञ्च० ना० पु० सजुहा, कोंच।
किमि० सर्व० क्यों, किसप्रकार।
किम्पुरुष० ना० पु० नवखण्ड धरातल में से एक, नामर्द, कुछेक पौरुषी।
किंवा० अव्य० अथवा।
किरकिटी० ना० स्त्री० छोटी लकड़ी।
किरकिरा० गु० रेतीला, बालुआ।
किरकिराना० अ० क्रि० [illegible], [illegible] जाना।
किरण० ना० स्त्री० रश्मि, शुआ।
किरात० ना० पु० भील, जातिविशेष, चिरायता।
किरातक० ना० पु० चिरायता।
किराना० स० क्रि० साफ करना, ना० पु० मसाला, औषधि वगैरह।
किरि० ना० पु० किटि, शूकर।
किरिच० ना० स्त्री० तलवार टुकड़ा।
किरिया० ना० स्त्री० शपथ, सौगन्द, सौंह, क्रिया।
किरीट० ना० पु० मुकुट, ताज।
किरीटी० ना० पु० अर्जुन ना० स्त्री० शाली तूली औषधि, गु० मुकुटधारी।
किल० अव्य निश्चित।
किलनी० ना० स्त्री० कीटविशेष।
किलकिल० ना० पु० बानरों का शब्द।
किलिम० ना० स्त्री० देवदारु।
किलकारी० ना० स्त्री प्रसन्नता से हँसना।
किलकारीमारना० अ० क्रि० प्रसन्नहोके जय जयकार करना, खूब हँसना।
किलकिलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ाहोना।
किल्ली० ना० स्त्री० कुंजी, ताली।
किल्विष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
किसलय० ना० पु० नवीनपत्ता।
किशोर० ना० पु० तरुणअवस्था अर्थात् १६ वर्षतक का लड़का।
किसनई० ना० स्त्री० खेतीका काम।
किसान० ना० पु० जोतार, खेत करनेहारा, जाति विशेष।
कीचड़० ना० पु० बबूल।
कीच०
कीचड़० } ना० पु० कांदो, चहला।
कीट० ना० पु० कीड़ा।
कीटनारी०
कीटसारी० } ना० स्त्री० हंसपादी पौधा।
[illegible] ना० पु० कीट, कृमि, किरम।
[illegible] ना० पु० मुलहठी।
कीना० स० क्रि० करना।
कीर० ना० पु० तोतापक्षी, यथा कीरशुकौ समौ इत्यमरः।
कीरत०
कीरति० } ना० स्त्री० कीर्त्ति, बड़ाई, तारीफ।
कीर्त्तन० ना० पु० गाना, कीर्त्तन, कहना।
कीर्त्ति० ना० स्त्री० यश, स्तुति, नेकनामी।
कील० ना० स्त्री० लोहेका कांटा।
कीलना० स० क्रि० मन्त्र फूककर रोकना।
कीला० ना० पु० लोहेका कांटा।
कीलाल० ना० पु० जल, पानी।
कीश० ना० पु० बानर, बन्दर।
कु० अव्य० यह अक्षर जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी बुरा, कभी निन्दित, कभी न्यून होताहै, पृथ्वी, धरती।

कुंवर० } नाο पुο कुमार।
कुंवारा० }
कुंवारी० नाο स्त्री० कुमारी।
कुआरा० नाο पुο विनाव्याहा लड़का।
कुआरी० नाο स्त्री० कन्या विना विवाही।
कुकन्या० नाο स्त्री० पृथ्वीकी कन्या विशेष श्री सीताजू, गुο दुष्ट कन्या।
कुकर्म० नाο पुο बुराकाम।
कुकर्मी० गुο कुकर्म करनेहारा।
कुक्कुट० नाο पुο मुरगा।
कुक्कुटाण्ड० नाο पुο सफेदभांटा, मुरगकुटको अण्डा।
कुक्कुटी० नाο स्त्री० मुरगियां, मुरगी।
कुक्कुरन्द्र० नाο पुο जंगली करौंदा।
कुक्रिया० नाο स्त्री० निन्दिताचरण, तुच्छकर्म।
कुगृह० नाο पुο खराघर, बुराघर।
कुघाट० नाο पुο बेडौल, बदसूरत, कुत्सितघाट, जहां घाट न हो।
कुघात०नाο स्त्री० कुसमय मारना, बुरीवात।
कुंकुम० नाο पुο केसर, जाफरान।
कुंकुमा० नाο पुο गुलाल भरने के लिये जो लाखका बनता है।
कुच० नाο पुο स्तन, चूंची, उरोज।
कुचन्दन० नाο पुο पतंग जिससे कपड़ा रँगतेहैं।
कुचलना० सο क्रिο चूरकरना, मसलना।
कुचला० नाο पुο औषधि विशेष।
कुचिया० नाο स्त्री० लोलकी,कानका अधोभाग।
कुचैला० गुο मैला।
कुचैना० गुο दुःख, अप्रसन्नता।
कुछ० सर्ब० थोड़ा, रंचक।
कुज० नाο पुο मंगल, वृक्षादि, भौमासुर।
कुजाति० गुο नीचजाति, वा नीच।
कुञ्चित० गुο छल्लेदारवाल, गभुवारेवाल।
कुञ्चिका० नाο स्त्री० कुंजी,ताली।
कुंची० नाο स्त्री० कलौंजी।
कुंज० नाο पुο वृक्ष लतादि रचित रमणीय स्थान, तंगगली, पक्षीविशेष।
कुंजर० नाο पुο हाथी, मुख्यप्रधान, रामायणे यथा, कपि कुंजरहि बोलिलैआये।
कुंजिका० } नाο स्त्री० ताली, चाबी।
कुंजी० }
कुटकी० नाο स्त्री० औषधि विशेष, कीटविशेष।
कुटज० नाο पुο इन्द्रयव।
कुटना० नाο पुο भडुआ, अο क्रिο पिटना
कुटनाना० सο क्रिο फुसलाना।
कुटनी० नाο स्त्री० दूती, नायिका।
कुटाना० सο क्रिο पिटवाना।
कुटिल० गुο टेढ़ा, क्रूर।
कुटिलता० } नाο स्त्री० टेढ़ापन, क्रूरता।
कुटिलाई० }
कुटी० } नाο स्त्री० मढ़ी, झोपड़ी, एकान्त स्थान, गुमिया।
कुटीर० }
कुटीरा० }
कुटुम० नाο पुο कुटुम्ब।
कुटुमी० नाο कुटुम्बी।
कुटुम्ब० नाο पुο कुनबा, घराना।
कुटुम्बी० नाο पुο गृहस्थ, घरवाला।
कुटेव० नाο स्त्री० कुभाव, कुचालि, बुरी लौ।
कुट्टनी० नाο स्त्री० कुटनी।
कुठार० नाο पुο फरसा, कुल्हारा, तबर।
कुठारी० नाο स्त्री० कुल्हाड़ी, टांकी।
कुठाहर० नाο पुο कुसमय, वे मौका।
कुड़कना० } अο क्रिο क्रोधयुक्त होकर कहना, रिसाय के बोलना।
कुड़कुड़ाना० }
कुढ़ना० अο क्रिο विलापकरना, कलपना, डाहकरना,हसद्करना।
कुढ़ाना० सο क्रिο सताना, छेड़ना।
कुणटन० नाο पुο स्योनावृक्ष।
कुण्ठित० गुο लज्जित, गठला, अताब।

खटीक० ना० पु० जाति विशेष।
खट्टा० गु० अम्ल, अम्बत्।
खटिक० ना० पु० खटीक, व्याधेटकी।
खट्टु० ना० पु० मनिहार।
खट्वा० ना० स्त्री० खाट।
खड्क० ना० स्त्री० गोशाला।
खड्कना० अ० क्रि० झनझनाना।
खड्खड़ाना० स० क्रि० ठकठकाना, खरोंछ, मारना, झनझनाना।
खड्यराहट० ना० पु० शब्द होना, आहट।
खड्सान० ना० स्त्री० फिसान जिसपर, धादि बनाते हैं।
खड़ा० गु० उठा, सीधा, चढ़ा, ऊंचा, ठाढ़ा।
खड़ाऊँ० ना० पु० पादुका, कठनई।
खड़िया० ना० स्त्री० छुहीमिट्टी, दूधिया मिट्टी।
खड्ग० ना० पु० तलवार, गैंड़ा, अमरे यथा। गण्डके खड्गखड्गिनौ।
खण्ड० ना० पु० टुकड़ा, खांड़, अध्याय, दिशा।
खण्डन० ना० पु० दूषण, मिटाना, काटना।
खण्डना० स० क्रि० दूषणदेना, तोड़ना, काटना।
खण्डनार्थ० गु० काटने के लिये।
खण्डिनी० ना० स्त्री० काटनेवाली।
खण्डपरशु० ना० पु० श्रीमहादेव।
खण्डर० ना० पु० ऊजड़, वीराना।
खण्डरना० स० क्रि० काटना, टुकड़े करना।
खण्डहल० ना० पु० ऊजड़ मकान, वीराना।
खण्डित० गु० काटागया, कमी, अपूर्ण।
खण्डितकरना० स० क्रि० बातकाटना, खण्डना।
खतिल० ना० पु० पोस्त या उसका विरवा।
खत्ता० ना० पु०
खत्ती० ना० स्त्री० } गड्ढा जिसमेंधन भरते हैं।
खदिर० ना० पु० खैर, कत्था।
खदेड़० ना० स्त्री० रगेद, खदेर।
खदेड़ना० स० क्रि० रगेदना, भगाना।
खद्योत० ना० पु० सूर्य, तारागण और जुगनू। कीट विशेष।

खन० ना० पु० खण्ड।
खनक० ना० पु० मूसा, चूहा।
खनकना० अ० क्रि० बजना, शब्दहोना।
खनन० ना० पु० खोदना।
खनना० स० क्रि० खोदना।
खपत० गु० जो बिकगया, स्त्री० बिकाव।
खपना० अ० क्रि० बिकना, खूलना, टहरना पैठना, समाना।
खपरा० ना० पु० घरछावने के लिये जो मिट्टी के बनते हैं।
खपरी० ना० स्त्री० शिरका ऊपरी भाग।
खपरैल० ना० स्त्री० घर जो खपरों से छायाहो।
खपाच० ना० स्त्री० काठका टुकड़ा।
खपाना० स० क्रि० बिकवाना, पैठाना, भराना।
खपित० गु० जो बिकगया, स्त्री० बिकाव।
खपुर० ना० पु० स्वर्ग, आकाश।
खप्पर० ना० पु० खोपड़ी, माटी का पात्र जिसमें योगी जलादि पीते हैं, अंगेठी।
खब्बा० ना० पु० बायां हाथ।
खभारू० ना० पु० पेटमें आगि पड़ना, घबराहट
खम्बा०
खम्भ० } ना० पु० स्तम्भ, थूनी,
खम्भा० ना० पु० स्तम्भ, थूनी।
खर० ना० पु० खरासुर, गधा, घास, कुत्ता अच्छा, तीक्ष्ण।
खरक० ना० पु० खड़क, गोशाला।
खरखरा० ना० पु० खरहरा।
खरपत्र० ना० पु० मरुवा, सुगन्धित पौधा।
खरबर०
खरभर० } ना० स्त्री० घोड़े के दौड़नेका शब्द खलबली, शोरगुल, हुल्लड़, धूम।
खरमञ्जरी० ना० स्त्री० ऊंगा।
खरयष्टिका० ना० स्त्री० खिरहटी।
खरल० ना० पु० औषध घिसने का पात्र।
खरहरा० ना० पु० घोड़ाआदि मलनेकी वस्तु विशेष।
खरहारा० ना० स० क्रि० झारना, बुहारना।

कुण्ड० ना० पु० आगिरखनेके लिये कृत्रिमकुण्ड, जलका विशेष स्थान, पति विद्यमान होते जार-ज पुत्र, गड्हा, तालाब।

कुण्डल०ना० पु० कर्णभूषण, घेरा, मंडला मोती।

कुण्डलिया० ना० स्त्री० गोलाई, छन्दविशेष।

कुण्डलित० गु० गोलाकार, कुंडलयुत।

कुण्डली० ना० पु० कचनार, गुरच।

कुण्डी० ना० स्त्री० कोंढ़ी।

कुतुप० ना० पु० दिनका आठवां मुहूर्त्त।

कुतर्क० ना० स्त्री० नीचविचार, बुरीदलील।

कुतर्की० गु० कुतर्क करनेहारा।

कुतर्ना० स० क्रि०दांतों से काटना।

कुत्तल० ना० पु० धरातल, रूयजमीन।

कुतिया० ना० स्त्री० कुत्ताकी स्त्री गु० कूतनेहारा।

कुतुक० ना० पु० कौतुक।

कुतूहल० ना० पु० कौतुक, चोप, उतावली, खेल, हँसी।

कुत्ता० ना० पु०कुक्कुर।

कुत्सा० ना० स्त्री० निन्दा, अवज्ञा।

कुत्सित० गु० निन्दित, नीच, बुरा, खराब, निषेधित।

कुदकना० अ० क्रि० उछलना, कूदना।

कुदरा० ना० पु० अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ी चीरते हैं।

कुदराना० अ० क्रि० उछलना, कूदना।

कुदाना० स० क्रि० उछलाना, फँदाना।

कुदारि० } ना० स्त्री० मिट्टी खोदने का अस्त्र
कुदला० } विशेष।

कुदृष्टि० ना० स्त्री० पापदृष्टि, बदनजर।

कुद्दाल० ना० पु० कचनार।

कुधातु० ना० पु० लोहा रामायणे यथा, पारस परस कुधातु सोहाई।

कुधि० } गु० निर्बुद्धि, बुरीगति, बेतमीज।
कुधी० }

कुनटी० ना० पु० मनसिल।

कुनबा० ना० पु० कुणबा, घराना, खानदान।

कुनीति० ना० स्त्री० कुचाल, कुरीति, अन्याय।

कुन्त० ना० पु० पानी, पवन, कमल, भाला, कराल, राजा विशेष।

कुन्तल० ना० पु० बाल, केश, सूत्रधार, बर्छी, हल, खेतजोतने का, राजा विशेष, वानर विशेष, कपटी।

कुन्तली०ना० पु० चिरपोटा।

कुन्तिज० ना० पु० युधिष्ठिरादि पांडव।

कुन्ती० ना० स्त्री० पांडवोंकी माता।

कुन्द० ना० पु० श्वेतवर्ण, पुष्प विशेष, उज्ज्वल।

कुन्दन० ना० पु० उत्तमस्वर्ण, अच्छासोना।

कुपति० गु० दुष्टपति, दुष्टस्वामी, बुरामालिक।

कुपथ० ना० पु० कुमार्ग, कुराह, बुरीराह।

कुपथ्य० गु० जो पदार्थ पाचक न हो या रोगी को उपकारी न होवे, बदहजम।

कुपरामर्श० ना० पु० कुमन्त्रण।

कुपात्र० गु० अयोग्य, नालायक।

कुपुरुष० गु० पुरुषार्थ रहित, बुरा।

कुपूत० ना० पु० कपूत, नालायक लड़का।

कुप्य० ना० पु० चांदी, रूपा।

कुप्पा० ना० पु० चर्मका, बड़ापात्र चमड़े का जिसमें घी आदि रखते हैं।

कुप्पी० ना० स्त्री० छोटाकुप्पा।

कुब० ना० पु० कुबड़ा।

कुबजा० ना० पु० कुब्ज।

कुबड़० ना० पु० टेढ़ा।

कुबड़ा० गु० कुब्जा।

कुब्ज० गु० कुबड़ा, वक्रपृष्ठ।

कुब्जा० ना० स्त्री० कुबड़ी, टेढ़ी,कूबरी प्रसिद्ध।

कुबत० ना० स्त्री० निकृष्टवार्ता, बुरीबात।

कुमंडल० ना० पु० धरामंडल, राज्य।

कुमति० ना० स्त्री० मूर्खता, अहमकी गु० उन्मत्त, मूर्ख।

खरा० गु० चोखा, श्रेष्ठ, अच्छा।
खराई० ना० स्त्री० सचाई, उत्तमता, सूरत।
खरारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
खरिक० ना० स्त्री० सड़क, गोशाला।
खरी० ना० स्त्री० सरसोंका पीना, गधी, अच्छी, खड़ी।
खरे० गु० खड़े, ठाढ़े, अच्छे।
खरोट० ना० स्त्री० खकोट, खसोट।
खरोचना० | खरोटना० | स० क्रि० नोचना, खसोटना।
खर्ज० ना० पु० रागोच्चारणका विशेष स्थान।
खर्जर० ना० स्त्री० चांदी खजूरवृक्ष।
खर्जूरिका० ना० स्त्री० पिण्ड, खजूर।
खर्जूरी० ना० स्त्री० मुसली।
खर्पर० ना० पु० पीठ, शिर।
खर्व० ना० पु० तुच्छ, छोटा, वामनभाषा में सौ अर्बको कहते हैं १०००००००००००
खर्रा० ना० पु० मसौदा, टट्टर, खरखरी, चिट्ठा, खसरा।
खर्राटा० ना० पु० सोते में घुर्राना।
खल० गु० दुष्ट, नीच, तुच्छ।
खलता० ना० स्त्री० दुष्टता।
खलबल० ना० स्त्री० हलचल।
खलबलाना० अ० क्रि० उबलना।
खलबली० ना० स्त्री० खलभर, दुखेड़
खला० ना० स्त्री० पनुरिया, दुष्टिनि।
खलान० गु० खलका बहुवचन।
खलारि० ना० पु० श्रीनारायण।
खलारू० ना० पु० निचान, पस्ती।
खलियान० ना० पु० खलिहान, खसा।
खलियाना० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना।
खलिहान० ना० पु० अनाज मींड़ने वा खूंदने का स्थान विशेष पैरू।
खली० ना० स्त्री० तिलादि की खूद।
खलीता० ना० पु० जेब, फारसी शब्द है।
खवा० ना० पु० कन्धा।

खस० ना० पु० जातिविशेष।
खसकना० अ० क्रि० गिरपड़ना, अलग हटना।
खसकाना० स० क्रि० सरकाना, हटाना।
खसखस० ना० स्त्री० सुगन्धित तृणविशेष
खसना० अ० क्रि० खसना, गिरपड़ना, गिर पड़ना।
खसरा० ना० पु० बही, खर्रा, खुजली।
खसाना० स० क्रि० गिराना, बिगाड़ना।
खसीमाल० ना० पु० पत्थर विशेष, गिरि
खांचा० ना० पु० टोकड़ा, पिंजरा विशेष।
खांड़० ना० स्त्री० शर्करा, शक्कर।
खांड़ना० अ० क्रि० छांटना, कूटना।
खांड़ा० ना० पु० खड्गविशेष।
खांसना० अ० क्रि० खौंखना, ठोंठों करना।
खांसी० ना० स्त्री० खखी।
खाग० ना० पु० गैंड़का सींग।
खाज० ना० स्त्री० खुजली।
खाजा० ना० पु० मिठाई विशेष।
खाट० ना० स्त्री० चारपाई।
खात० ना० पु० गर्त्त, गड्ढा, घूरा, गोबर।
खात० ना० पु० रोजनामा, लेखबही, ररानेका खत्ता।
खाती० ना० पु० बढ़ई, खरादी।
खाद० ना० पु० गोबरादि, घूरा।
खाद्य० गु० खाने के योग्य जो वस्तु।
खाना० स० क्रि० भोजन करना, घा० समाना, उपार्जन वा भोगकरना, ना० भोजन।
खानि० ना० स्त्री० आकर, अर्थात्, उत्पत्ति स्थान।
खानिक० गु० खानों की जो वस्तु।
खारक० ना० पु० छुहारा।
खारा० गु० लोना।
खारी० गु० कड़वा नमक, लोनीला।
खाल० ना० स्त्री० चमड़ा, धौंकनी।

कुमद० ना० पु० कुमुद।
कुमदिन ना० पु० फफूल।
कुमार० ना० पु० बालक, राजपुत्र, स्वामिकार्त्तिक, कामरहित।
कुमारिका० } ना० स्त्री० कन्या, जिसको रजोधर्म नहीं भया, साधारण सुता, घीकुंवारिपौधा।
कुमारी०
कुमार्ग० ना० पु० कुपथ, बुरीराह।
कुमुद० ना० पु० फफूल जो राति को खिलता है और दिनको सम्पुटित होताहै उसको श्वेत कमलभी कहते हैं और रामदल में वानर विशेष था, चांदनी, मुदरहित।
कुमुदबन्धु० ना० पु० चन्द्रमा।
कुमुदिनी० ना० स्त्री० कमलिनी।
कुम्भ० ना० पु० घड़ा, कलश, कलशा।
कुम्भक० ना० पु० कुम्हार, योगक्रियामें पवन पेट वा ब्रह्माण्डमें रोकनेको कहते हैं।
कुम्भकर्ण० ना० पु० रावणका छोटाभाई।
कुम्भकार० ना० पु० कुम्हार, कुलाल।
कुम्भज० } ना० पु० अगस्त्यमुनि।
कुम्भजात०
कुम्भयोनिका० ना० स्त्री० गोमापौधा।
कुम्भवीर्य्य० ना० पु० रीठा।
कुम्भा० ना० पु० छोटाकुम्भ।
कुम्भिका० ना० स्त्री० कुम्भी।
कुम्भिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी।
कुम्भी० ना० स्त्री० पौधा जो तालाबों में पानी पर जमताहै, ना० पु० हाथी, कायफल, अगस्त्यमुनि।
कुम्भीनस० ना० पु० सांप।
कुम्भीपाक० ना० पु० नरकविशेष।
कुम्भीर० ना० पु० मगरमच्छ।
कुम्भोरुणा० ना० स्त्री० निसोत।
कुम्हलाना० अ० क्रि० मुरझाना, सूखना।
कुम्हार० ना० पु० जो मिट्टी के बर्त्तन बनाताहै।
कुम्हारी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष जो अपना घर माटीसे बनाता है।
कुयोग० ना० पु० दुर्योग, दुःखदायक ग्रह पड़ जाना, बुरासंयोग, बुराउपाय।
कुयोगी० गु० विषय भोगी रामायणे यथा पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारी, मोहविटप नहिं सकत उतारी।
कुरङ्ग० ना० पु० हरिण, मृग।
कुरण्टक० } ना० पु० पियाबांसा।
कुरवक०
कुरमा० ना० पु० कुनबा, घराना।
कुरारि० ना० स्त्री० सारसपक्षी।
कुरी० ना० स्त्री० समूह, घराना।
कुरीति० ना० स्त्री० कुचालि।
कुटीर० ना० स्त्री० कुटी, मढ़ी।
कुरु० ना० पु० राजा विशेष जिसकी सन्तान में कौरव और पाण्डव थे, नवखण्ड पृथ्वी में से एक।
कुरुकेतु० ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर, राजा परीक्षित।
कुरुचि० ना० स्त्री० नीचवासना, बदहजमी।
कुरुपति० } ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर, परीक्षित।
कुरुराय०
कुरुवक० ना० पु० फूलविशेष।
कुरुवंश० ना० पु० राजाकुरुकी सन्तान।
कुरुक्षेत्र० ना० पु० पुण्यक्षेत्र जहांभारतभयाथा।
कुरूप० गु० भोंड़ा, बदसूरत।
कुर्कुटी० ना० पु० सेमर वृक्ष।
कुर्व्वो० ना० पु० कुब्ज।
कुर्याल० ना० स्त्री० पक्षी जब आनन्द में आकर पंख झाड़ताहै।
कुल० ना० पु० वंश, वर्ण, घराना।
कुलटा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, जो स्त्री परपति रमण करे अर्थात् पतिव्रता नहो।
कुलद्या० ना० पु० वह सम्पदा जो कोई घरवालों से आयके इकट्ठाकरे, पूंजी, धन।

…चड़ी० ना० स्त्री० दाल चावल मिश्रित।
…चना० अ० क्रि० तनना, खिंचा रहना।
…चाव० ना० पु० तनाव, बिगाड़।
…झलाना० स० क्रि० } सताना, चिढ़ाना,
…खिझाना० अ० क्रि० } क्रोधित होना।
…झ० ना० स्त्री० खिसियाहट।
…झना० } अ० क्रि० खिजलाना।
…झलाना० }
…ड़की० ना० स्त्री० झरोखा।
…खिलाना० अ० क्रि० हँसना।
…जाना० } अ० क्रि० फूलना, हर्षित
…खिलना० } होना।
…लाड़ू० पु० चंचल, खेलनेवाला, चालाक।
…लाना० स० क्रि० भोजन कराना, भोगकर-
…वाना, खेलकराना।
…लौना० ना० पु० खेलनेकी वस्तु।
…ली० ना० स्त्री० हँसी, मजाक।
…लना० अ० क्रि० फिसलना, हटना।
…लाहट० ना० स्त्री० फिसलाहट।
…सियाना० अ० क्रि० खीस-निकालना, शर-
…माना, लजाना, अ० चिढ़चिढ़ा।
…सियाहट० ना० स्त्री० खिसियानपन।
…च० ना० पु० अप्रसन्नता, चिड़चिड़।
…झ० ना० स्त्री० क्रोध, खिसियाहट।
…झना० अ० क्रि० क्रोधितहोना, दुःखपाना।
…रा० ना० पु० फलविशेष।
…र० ना० स्त्री० चावल जो दूध और खांड में
पकाये जाते हैं।
…री० ना० पु० बिरमा मेवा, नगरविशेष।
…ठ० } ना० पु० आनो के जाया।
…ला० }
…स० ना० पु० टोटा, खराब, दांतका दिखला-
…हट, पीयूष।
…सना० अ० क्रि० दांत काढ़ना।
…सा० ना० पु० खलीता, जेब, थैली।

खुजलना० } अ० क्रि० खुजली करना।
खुजलाना० }
खुजलाहट० ना० स्त्री० खुजलापन, खुल।
खुजली० ना० स्त्री० खाज।
खुजाना० स० क्रि० खुजलाना।
खुटकना० स० क्रि० चखना, कुतरना, सन्देह
करना।
खुटका० ना० पु० सन्देह, शङ्का, खटक।
खुरडला० ना० पु० वृक्षकालिद्र, खोरि।
खुदवाना० स० क्रि० गढ़ाना, माटी निकलाना,
चिह्नित कराना, अंकित कराना।
खुनस० ना० स्त्री० रिस, डाह।
खुनसाना० अ० क्रि० रिसाना, डाहखाना।
खुनसी० गु० क्रोधी।
खुन्दलना० स० क्रि० पांव से दबाना।
खुमी० ना० स्त्री० कानका भूषण, वीरे।
खुर० ना० पु० पशुओं के पदका नख।
खुरचन० ना० स्त्री० छीलन।
खुरचना० स० क्रि० छीलना।
खुरण्ड० ना० पु० खूंटी, देवली।
खुर्पा० ना० पु० } घास छीलने का अस्त्र।
खुर्पी० ना० स्त्री० }
खुलना० अ० क्रि० प्रकटहोना, बिथरना।
खूच० ना० पु० नाड़ी विशेष।
खूंट० ना० पु० कोना, कानका मैल।
खूंटना० ना० स्त्री० औषध विशेष।
खूंटा० ना० पु० काठ का ठेकना, मेख।
खूंटी० ना० स्त्री० छोटा खूंटा।
खूंदना० स० क्रि० पांव से खोदना, टापमारना।
खूंटी० ना० स्त्री० देवली, खुरण्ड।
खूद० ना० पु० खली, तरछुट गु० घोड़ेका
नाचना।
खेकसा० ना० पु० चिड़ विशेष।
खेचर० } ना० पु० पक्षी, ग्रह, तारागण दे-
खेचारी० } वता, विद्याधरादि।

कुलतारण० ना० पु० पुत्र जो कुलकी लाज रक्खे या सुकृत करके पुरुषों को तारे।
कुलतिय० ना० स्त्री० पतिव्रता, सती, यथा विहारीलाल सप्तशतिकायां, दोहा, कहत न देवर की कुवत कुलतिय कुलहि डराय, पिं नर टिग में जारगोति सुकली मूलाते जाय।
कुलद्रोही० गु० जो मनुष्य कुकर्म करके वंश को लज्जितकरे या जो निजकुलको वैरीहोवे।
कुलधर्म० ना० पु० वंशव्यवहार, कुलकाधर्म।
कुलपूज० } ना० पु० कुलका देवता वा मान्य
कुलपूज्य० } वा पुरोहित।
कुलवधू० ना० स्त्री० कुलवन्ती, सुतिय।
कुलबुलाना० अ० क्रि० कलमलाना, चुलबुलाना, खुजलाना।
कुलवती० ना० स्त्री० कुलीनस्त्री, पतिव्रता।
कुलवन्त० } गु० जो अच्छेवंशमें उत्पन्नभया।
कुलवान्० }
कुलक्षण० ना० पु० बुरे चिह्न, बुरास्वभाव।
कुलक्षणा० स्त्री० } जिसके लक्षण बुरेहों वा है।
कुलक्षणी० गु० }
कुला० ना० स्त्री० मनसिल।
कुलांच० ना० स्त्री० कूद, फांदनि, जस्त।
कुलांगना० ना०स्त्री०कुलवान् स्त्री अथवाकुलटा।
कुलाचार० ना० पु० वंशका धर्म, अपने घराने की रीति।
कुलाल० ना० पु० कुम्हार।
कुलाहल० ना० पु० कोलाहल।
कुलिश० ना० पु० वज्र, हीरा।
कुली० ना० स्त्री० बड़ीकटाई।
कुलीन० ना० पु० अच्छेघर वा वंश में जो उत्पन्नभया।
कुलीनता० } ना० स्त्री० भलेवंशका आचार
कुलीनाई० } या बड़प्पन वा उत्पत्ति, धर्म।
कुलीरशृंगी ना० स्त्री० ककराशिंही।
कुल्ला० ना० पु० } मुख में जलको फिराय के
कुल्ली० ना० स्त्री० } फेंकना।
कुल्हाड़ी० ना० स्त्री० कुठारी जिससे लकड़ी आदि काटते हैं।
कुल्हिया० ना० स्त्री० माटी का छोटा पात्र, मुरकी।
कुवलय० ना० पु० कमल।
कुवादी० गु० दुष्ट, कुवचनवक्ता
कुविन्दु० ना० पु० नीचवीर्य, बदजुतफा।
कुविहंग० ना० पु० जुर्रा, श्येन, बाज
कुबेर० ना० पु० यक्षराज, कुसमय।
कुश० ना० पु० तृणविशेष जो अति पवित्र गिना जाताहै सीताजी का पुत्र, दैत्यविशेष, पानी, पृथ्वी के सात द्वीपों में से एक।
कुशमुद्रिका० ना० स्त्री० कुशाकी मुन्दरी अर्थात् पैंती जो यज्ञादि में पहिनते हैं।
कुशल० ना० पु० भलाई, कल्याण, चतुर।
कुशलता० ना० स्त्री० भलाई।
कुशलत्व० पु० कल्याण।
कुशलक्षेम० स्त्री० } खैरआफियत।
कुशलात० }
कुशली० गु० सुखी, प्रसन्न, निपुण।
कुशासन० ना० पु० कुशाका आसन।
कुशील० गु० शील रहित, बेमुरव्वत।
कुशेशय० ना० पु० कमल।
कुष्ठ० ना० पु० कोढ़ रोग।
कुष्ठकृन्तन० ना० पु० पँवार, बूटी।
कुपेय० ना० पु० खड्ग, तलवार।
कुष्ठसूदन० ना० पु० किरवाली।
कुष्ठी० कोढ़ी।
कुसङ्ग० ना० पु० बुरे लोगों का साथ।
कुसमय० ना० पु० कठिन समय, बुरे दिन, आफत।
कुसरात० ना० स्त्री० कुशलात।
कुसीद० ना० पु० लाभके लिये अर्थ देना।
कुसुदा० ना० पु० कायफल।
कुसुम० ना० पु० कुसुम फूल, कुसुम्भ।
कुसुमशर० ना० पु० कामदेव।

खेटक० ना० पु० अहेर, शिकार और अस्त्रविशेष।
खेटिक० ना० पु० वधिक, शिकारी।
खेत० ना० पु० क्षेत्र, समरभूमि, पुण्यक्षेत्र, वह भूमि जहां अन्नादि उपजता है।
खेतल० ना० पु० आकाशमण्डल।
खेती० ना० स्त्री० किसनई, गु० जोताऊ।
खेद० ना० पु० शोक, दुःख, पश्चात्ताप।
खेदना० स० क्रि० खदेड़ना, सताना और पीड़ा करना।
खेदित० गु० दुःखित, पीड़ित, सतायागया।
खेरा० ना० पु० ऊजड़पुर, डीह।
खेरी० ना० स्त्री० लोहाविशेष, हल।
खेल० ना० पु० क्रीड़ा, जीवहलाव।
खेलना० स० क्रि० क्रीड़ाकरना, जीबहलाना
खेवक० } ना० पु० नाविक, डांडी और मल्लाह।
खेवट० }
खेवना० स० क्रि० डाड़मारना, नावचलाना।
खेवा० ना० पु० उतराई, भाड़ा, पाढ़ीदेना, उतारा।
खेह० ना० स्त्री० राख, धूलि, खाक।
खैंच० ना० स्त्री० उखाड़।
खैंचना० स० क्रि० ऐंचना, कसना, तानना।
खैंचाखैंच० } ना० स्त्री० ऐंचा ऐंची, खैंचा खैंची।
खैंचाखैंची० }
खैर० ना० पु० कत्था।
खैला० ना० पु० दोहान, नयाबैल वा बछड़ा।
खोआ० ना० पु० लेट, खुरखी, दूध जो उबालके गाढ़ा कियाजाता है।
खोंखना० अ० क्रि० खांसना।
खोंखी० ना० स्त्री० खांसी।
खोंच० ना० स्त्री० चीर।
खोंचना० स० क्रि० घुसेड़ना।
खोंचा० ना० पु० भराव, फांक।
खोंड़कल० ना० पु० गड़हा।
खोंता० ना० पु० घोंसला।
खोंसना० स० क्रि० ठासना, घुसेड़ना।
खोखला० गु० चांगला, खाली।
खोखली० ना० स्त्री० ऊपरका मढ़ाव, जो ठास नहीं है।
खोज० ना० पु० ढूंढ़, यत्न, चिह्न, पहिंचान।
खोजना० स० क्रि० ढूंढ़ना।
खोट० ना० स्त्री० दोष, अवगुण।
खोटा० गु० भगली, दोषी, झूठा, अधर्मी।
खोटाई० ना० स्त्री० भगलपन दोष।
खोदना० स० क्रि० गोड़ना, करकोलना।
खोना० स० क्रि० गँवाना, उड़ाना।
खोपड़ा० ना० पु० ललाट के ऊपर का अंग नारियल की गूदी।
खोपड़ी० ना० स्त्री० मस्तकके ऊपरका भाग छिलका।
खोपर० ना० पु० शिर।
खोपरा० ना० पु० खोपड़ा।
खोपरी० ना० स्त्री० खोपड़ी।
खोपा० ना० पु० नारियल का गोला, जूड़ा।
खोरि० ना० स्त्री० दोष, ग्लानि।
खोरी० ना० स्त्री० गली, मार्ग, दोष, ग्लानि।
खोल० ना० स्त्री० कोठी, ढकना, दोहर, गंदा।
खोलना० स० क्रि० प्रकट करना, बिथाना, उधेड़ना, लंगर उठाना।
खोह० ना० पु० गुफा, गड़हा, कन्दरा।
खौड़० } ना० स्त्री० तिलक।
खौरि० }
खौलना० अ० क्रि० उबलना।
ख्यात० गु० प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, मशहूर।
ख्याति० ना० स्त्री० यश, धाक, शुहरत।
ख्यात्यापन्न० गु० कीर्तिमान्, नामी।
ख्याल० ना० पु० क्रीड़ा खेल।

(ग)

गँवाना० स० क्रि० खोना, उड़ाना, बहाना।
गंवार० ना० पु० गांवकावासी, कुपढ़ा।
गगन० ना० पु० आकाश, आसमान।

कुसुमाकर० ना० पु० बसन्त ऋतु।
कुसुमित० गु० फूलेहुये प्रफुल्लित।
कुसुम्भ० ना० पु० पुष्पविशेष जिसका बहुतलाल रंग कपड़ेपर आता है।
कुहर० } ना० पु० कुहासा, कुहर।
कुहरा० }
कुहराम० ना० पु० विलाप।
कुहुक० ना० स्री० कोकिला का शब्द वा स्वर।
कुहुकना० अ० क्रि० कोकिलाकी रीति से बोलना।
कुहू० ना० स्री० पूर्ववी अमावस।
कूता० } ना० स्री० कीर्ति।
कूति० }
कूआं० ना० पु० कूप, चाह।
कूआंर० ना० पु० आश्विन, सातवां महीना।
कूक० ना० स्री० आवाज, शब्द, शोर।
कूकना० अ० क्रि० थाह मारना, विलाप करना, स० क्रि० घड़ी को कुंजी से फेरना।
कूकर० ना० पु० कुत्ता।
कूकू० ना० पु० कपोतका शब्द।
कूचना० स० क्रि० छेदना, घुसड़ना, खूंदना, कुचिलना।
कूची० ना० स्री० तृणविशेषकी वस्तु जिससे भीतमें चूना फेरते हैं वा बालों की या और किसी वस्तुकी।
कूजना० अ० क्रि० बोलना।
कूट० ना० पु० कपट, पर्वत, गोप, काग़ज, जिसको गाता बनता है, जो निज अर्थसे पूरणहोवे यथा, निहाई, ना० स्री० भांडती गु० मिथ्या, विरुद्ध।
कूटना० स० क्रि० कुचलना, पीसना, पीटना, दबाना।
कूटस्वाहिनी० ना० स्री० निसोत।
कूटार्थ० ना० पु० विरुद्धार्थ।
कूटि० गु० व्यङ्गवचन।
कूटी० गु० दूती, कुटनी, पीटीहुई।
कूड़ा० ना० पु० झाड़न, करकट।
कूढ़० गु० मूर्ख, उन्मत्त।
कूत० ना० पु० अटकल, अन्दाज।
कूतना० स० क्रि० मोल ठहराना, अटकलना, अन्दाजना, ठीक करना।
कूदना० अ० क्रि० फांदना, उछलना।
कूपार० ना० पु० समुद्र।
कूबरी० ना० स्री० कंसकी दासी जिसको कृष्णचन्द्रने शुद्धतन किया था या काठकी टेकनी जो साधुओं के पास होती है गु० टेढ़ी।
कूर० गु० कपटी, कठोर टेढ़ा।
कूर्दन० ना० पु० कूदना, रेलना।
कूल० ना० पु० तीर किनारा, तट।
कूलद्रुम० ना० पु० किनारेका वृक्ष विशेषार्थ, मृत्यु, सान्निध्य।
कूला० ना० पु० एक ओरका चूतड़।
कूली० ना० स्री० एक ओरका पुट्ठा।
कूष्माण्ड० ना० पु० कुम्हड़ा, लौका।
कूष्माण्डकी० ना० स्री० कुम्हड़ा, सबद्दा।
कूष्माण्डा० ना० स्री० देवी विशेष।
कृकवाकु० ना० पु० मुर्गा।
कृच्छ्रोपवास० ना० पु० चान्द्रायणादि व्रत।
कृत० गु० कियागया, बना, करतूति ना० पु० यज्ञ, भाग्य, उपकार।
कृतघ्न० गु० जो मनुष्य उपकार को नहीं माने, गुण न माने, यज्ञध्वंसी, पातकी।
कृतघ्नता० } ना० स्री० हित करने से उलटा करे।
कृतघ्नताई० }
कृतघ्नी० गु० कृतघ्न, किये को मेटे।
कृतनिन्दक० गु० कृतघ्न।
कृतयुग० ना० पु० प्रथम युग सत्ययुग जो १७२८००० वर्षका होताहै।
कृतवर्मा० ना० पु० यादवविशेष।
कृतज्ञ० गु० जो उपकार मानताहै, गुणवादी ना० पु० कुत्ता।

गगनचर० ना० पु० पक्षी, देवता, ग्रहादि।
गगरी० ना० स्त्री० कलशी, घड़ा।
गंगा० ना० स्त्री० भागीरथी नदी प्रसिद्ध।
गंगायमुनी० ना० स्त्री० कर्णभूषण विशेष।
गंगाद्वार० ना० पु० गंगोत्तरी, हरद्वार।
गंगाधर० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
गंगासागर० ना० पु० गंगा और समुद्र का संगम जहां कपिलदेव का स्थान है।
गंगेरुकी० ना० स्त्री० गंगेरुआ।
गंगोत्तरी० ना० स्त्री० गंगाजी के प्रकाश का स्थान जो बद्रीनाथ के आसन्न है।
गंगोदक० ना० पु० गंगाजल।
गच० ना० स्त्री० चूना, लेट।
गचपच० ना० स्त्री० उलट पलट।
गच्छ० ना० पु० मुकाम, चाल।
गज० ना० पु० हाथी, दो हाथ की माप।
गजकेसर० ना० स्त्री० नागकेसर।
गजकृष्णा० ना० स्त्री० गजपीपरि।
गजगामिनी० गु० जिसकी हाथीकीसी चालहो।
गजगाह० ना० पु० भव्वेसहित हाथीका भूषण।
गजगौनी० गु० गजगमनी।
गजचिर्भटी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
गजझही० अ० क्रि० गरजता है।
गजदन्त० ना० पु० हाथी का दांत।
गजपति० ना० पु० हाथियों का स्वामी अर्थात् राजा वा जिसके हाथी हों।
गजपाटल० ना० पु० कज्जल।
गजपाल० ना० पु० महावत, फीलवान्।
गजपिप्पली० ना० स्त्री० गजपीपरि।
गजभिषक्० ना० पु० सोंठि।
गजमुख० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुँह।
गजमोती० ना० पु० मोती जो हाथी के मस्तक में होता है।
गजरा० ना० पु० गाजरकापत्ता, फूलोंकी माला।
गजवदन० ना० पु० गणेशजी।
गजबुसा० ना० पु० केलावृक्ष।
गजानन० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुख।
गजाशन० ना० पु० पीपल, पीपरि।
गञ्ज० ना० पु० रोगविशेष जो शिरमें होता है।
गञ्जा० गु० जिसके शिरमें गंज रोग होवे, ना० पु० गांजा, भांग, रोगविशेष।
गञ्जित० गु० नशायागया।
गटपट० ना० स्त्री० उलट, पुलट, मिलित।
गटी० ना० स्त्री० समूह, रामचन्द्रिकायां यथा सब जात फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी, निघटी रुचि मीच घटीहू घटी जगजीव यतीन की छूटी तटी, अघ ओघ कि बेरी कटी विकटी निकटी प्रकटी गुरु ज्ञान गटी, चहुँ ओर न नाचत मुक्ति नटी गुण धूर जटी जटि पंचवटी।
गट्टा० ना० पु० कलाई, मिठाई प्रसिद्ध।
गट्ठा० ना० पु० बड़ीगठरी।
गठना० अ० क्रि० जुड़ना, मिलना।
गठरी० ना० स्त्री० मोठ, मोटरी, झुण्ड।
गठाना० स० क्रि० सिलवाना, पैबन्दलगवाना।
गठिया० ना० पु० गौन, गु० गाँठोंवाला।
गठीला०, गठिहा० } गु० गांठोंवाला, गठाहुआ।
गड़क०, गड़का० } ना० स्त्री० मछली वा मछली विशेष।
गड़गड़ाना० स० क्रि० गरजना।
गडरिया० ना० पु० जाति विशेष जो भेड़ें पालते हैं।
गड़न० ना० स्त्री० धसन, दलदल।
गड़ना० अ० क्रि० धसना, पैठना, छिदना।
गड़बड़० ना० पु० गटपट, उलट पलट, हल चल।
गड़बड़ा० ना० पु० खलबली, मरोड़ा, गु० लड़बड़ा, घबराया भया।
गड़बड़ाना० अ० क्रि० घबराना, खलबलाना।
गड़बड़ाहट० ना० स्त्री० हड़बड़ाहट, भय।

कृतज्ञता० ना० स्त्री० गुणवाद, उपकार मानना, अहसान मानना।
कृतान्त० ना० पु० यमराज, सिद्धान्त।
कृतार्थ० गु० कृतकार्य, निहाल, अंशधारी, मुक्त।
कृति० ना० स्त्री० काम करना।
कृत्तिका० ना० स्त्री० तीसरा नक्षत्र।
कृतिमरक्त० ना० पु० कांच।
कृतिमताल० ना० पु० रसौत।
कृतिवास० } ना० पु० श्रीमहादेवजी।
कृत्तिवास० }
कृत्या० ना० स्त्री० देवी, विशेष राक्षसी।
कृत्स्न० गु० अशेष।
कृदन्त० ना० पु० जो शब्द धातु से बना है।
कृपण० गु० सूम, कंजूस, अदाता।
कृपणता० ना० स्त्री० सूमी, कंजूसी, अदातृत्व।
कृपा० ना० स्त्री० दया, मेहरबानी, रहम।
कृपाण० ना० पु० खड्ग, तलवार।
कृपालु० गु० दया शील, दयावन्त, रहीम।
कृमि० ना० पु० कीड़ा।
कृमिघ्न० ना० पु० विडङ्ग औषधि।
कृमिजग्धा० ना० पु० काला अगुरु।
कृश० गु० दुर्बल, क्षीण, लटा।
कृशता० ना० स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता।
कृशाङ्गी० गु० जिसके अंग खिचेहुये हैं।
कृशानु० ना० पु० अग्नि, आगि।
कृषाण० } ना० पु० किसान खेतीवाला।
कृषिक० }
कृषिकर्म० ना० पु० हलजोतना, खेती करना।
कृषी० ना० स्त्री० खेती, किसनई।
कृषीवल० ना० पु० किसान, कृषाण।
कृष्ण० ना० पु० श्रीकृष्ण, श्यामसुन्दरजी, काला, जीरा, कालातीतर, कालाहरिण, गु० श्याम, कालारंग।
कृष्णगन्धा० ना० पु० सहिंजन वृक्ष।
कृष्णता० ना० स्त्री० घुंघुची, श्यामता।
कृष्णपक्ष० ना० पु० बदी, अंधेरा पाख।
कृष्णफला० ना० स्त्री० बाकुची, बेड़ाकरौंदा।
कृष्णभद्रा० ना० स्त्री० कुटकी।
कृष्णवीर्य्य० ना० पु० तरबूज।
कृष्णवृन्तिका० ना० स्त्री० कम्भारी।
कृष्णसार० ना० पु० कालाहरिण।
कृष्णा० ना० स्त्री० नदी विशेष, जो दक्षिण भरतखण्ड में है, पीपरी, यमुनाजी।
कृष्णाग्रज० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
कृष्णागरु० ना० पु० काला अगुरु।
कृष्णाफल० ना० पु० स्याहमिर्चे।
कृष्णार्पण० गु० भगवान्हेत।
कृष्णोपकुल्या० ना० स्त्री० पीपरी।
कृस्मरी० ना० स्त्री० कम्भारी।
कृत्रिम० गु० बनायाहुआ, रचित।
के० अव्य० संबन्धबोधक।
केकयी० ना० स्त्री० भरतजी की माता।
केकड़ा० ना० पु० कर्कट, गेंगटा।
केकय० ना० पु० राजा या देश विशेष।
केकरा० ना० पु० केकड़ा।
केका० ना० स्त्री० मोरध्वनि, मोरोंका शब्द।
केकी० ना० पु० मोर, मयूर।
केतकी० ना० स्त्री० केवड़ा वृक्ष या पुष्प विशेष।
केतिक० गु० थोड़े, दोचार, कितना।
केतु० ना० पु० नवमग्रह, पुच्छलतारा, पताका झण्डा या झण्डी।
केतुकि० ना० पु० आकाश, पुष्पविशेष, सूर्य, चन्द्रमा, कामदेव, छन्द।
केतुमाल० ना० पु० पृथ्वी नवखण्डों में से एक का नाम।
केन्द्र० ना० पु० मरकज, गोलाकार या वृत्त-क्षेत्रका वह मध्यस्थान जहां से परिधि तक जितनी रेखा खींची जावें वह सब परस्पर तुल्यहों।
केयूर० ना० पु० आभूषण बेवर।
केरि० ना० पु० केला वृक्ष, ना० स्त्री० केलि।

गड़हा० ना० पु० गर्त्त, गड्ढा, ताल ।
गड़िया० ना० स्त्री० सलार, खालीखेत, गांड़ ।
गड़ुआ० ना० पु० टोंटीवाला लोटा ।
गड़ोना० स० क्रि० छेदना, खोंसना ।
गढ़० ना० पु० कोट, किलश्च ।
गढ़ना० स० क्रि० ठोंकना, बनाना ।
गढ़नि० ना० स्त्री० बनावट ।
गढ़दार० गु० मोटा, गाढ़ा, जटवाल ।
गढ़पाल० गु० किलेदार, गढ़का रक्षक ।
गढ़ा० ना० पु० गड़हा, खार ।
गढ़ाई० ना० स्त्री० गहने आदि की बनवाई वा बनवाने का काम ।
गढ़ी० ना० स्त्री० छोटा गढ़ ।
गढ़ेला० ना० पु० पृथ्वी में खोदाभया गड़हा ।
गढ़ैया० ना० स्त्री० छोटा पोखरा, गु० गढ़नेहारा ।
गण० ना० पु० समूह महादेव के गणोंका झुण्ड ।
गणक० ना० पु० दैवज्ञ, ज्योतिषी, हिसाबी ।
गणना० ना० स्त्री० पक्षपात, गिनती, शुमार ।
गणनाथ० ना० पु० गणनायक ।

गणनायक०
गणपति०
गणराउ० } ना० पु० गणेशजी, यूथनाथ ।
गणराज०
गणाधिप०

गणिका० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया, जुही ।
गणित० ना० पु० अंकविद्या, हिसाब ।
गणितकार० ना० पु० गणक ।
गणेश० ना० पु० पार्वती के पुत्र आदि देवता ।
गण्ड० ना० पु० नैनोंके नीचे का भाग, गाल ।
गण्डक० ना० पु० गैंड़ा पशु, नदविशेष ।
गण्डदूर्वा० ना० स्त्री० गण्ड, दूब ।
गण्डमाला० ना० पु० कान के नीचे फोड़ा का रोग विशेष ।
गण्डा० ना० पु० घेरा, चारिकौड़ी वा पैसा वा रुपया, बालकादि के गले में बांधने के लिये अभिमन्त्रित सूत ।
गण्डासा० ना० पु० अस्त्रविशेष ।
गण्डासी० ना० स्त्री० छोटा गण्डासा ।
गण्डिका० ना० स्त्री० नदी विशेष ।
गण्डी० ना० स्त्री० मेरा जिसमें श्रीरामचन्द्रजी सीताजी को बैठाल गये थे ।
गण्डीर० ना० पु० सेंहुड़ वृक्ष ।
गण्डीर० ना० पु० ऊख, गन्ना, यथा वृष राजो मधुतृणोगण्डीरो मधुपत्रक इति निघंटुः ।
गण्डुख० गु० प्रफुला ।
गण्डूष० ना० स्त्री० पानी का कुल्ला ।
गण्य० गु० जो गिनाजाय ।
गत० गु० प्राप्त, अतीत, व्यतीत, निकृष्ट ।
गतागत० ना० पु० उलटफेर ।
गतार्थ० गु० एकके जानने से अन्यको जानना ।
गति० ना० स्त्री० चाल, मुक्ति दशा, ज्ञान, गमन, दिशा, क्रिया, कर्म ।
गते० अव्य० हौले धीमे ।
गत्ते० अव्य० गाते ।
गत्यर्थ० गु० जिसका अर्थ गति है या जिससे गतिका अर्थ पाया जावे ।
गथ० ना० पु० माल, दाम ।
गद० ना० पु० रोग, आरजा ।
गदका० ना० पु० पटा, दंडविशेष ।
गदकारी० ना० स्त्री० गुदगुदी, रोगकारकवस्तु ।
गदला० ना० पु० हवेरा, मैला ।
गदलाई० ना० स्त्री० मैलापन ।
गदशत्रु० ना० पु० वैद्य हकीम ।
गदा० ना० स्त्री० सोंटा, लाठी, गुर्ज ।
गदाधर० गु० लाठीवाला, गदा बांधनेहारा, ना० पु० विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजी का नाम ।
गदायुद्ध० ना० पु० लाठीकी लड़ाई, गदाकी लड़ाई ।
गदारि० ना० पु० वैद्य, तबीब ।

केलि० } नाः स्त्री० क्रीड़ा, विहार, ऐश-
केली० } आराम।
केवट० ना० पु० मलाह, खेवक।
केवड़ा० ना० पु० पुष्प वा वृक्षविशेष।
केवल० अव्य० मात्र, फक़त गु० एकही।
केवली० ना० स्त्री० जन्मपत्री।
केषा० सर्व्व० कोई।
केश० ना० स्त्री० बाल।
केशफला० ना० स्त्री० बेरी वृक्ष वा उसका फल यथा स्निग्धच्छदा केशफला सौवीरिका, इति निघण्टः।
केशर० ना० पु० केसर, नागकेसर।
केशरंजन० ना० पु० भंगरा पौधा।
केशरी० ना० पु० हनुमान्‌जी के पिता, सिंह।
केशव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम।
केशवेणी० ना० स्त्री० बालोंकी लट।
केशाकेशी० ना० पु० परस्पर बालों को पकड़ के लड़ना वा लड़ाना।
केशी० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने वध कियाथा गु० बालोंवाला।
केशरिया० गु० केशरसे रंगाभया, पीला।
केहरि० } ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र।
केहरी० }
कै० सर्व्व० कितना, अनेक।
कैंचली० ना० स्त्री० सांपका खोल।
कैटभ० ना० पु० दैत्यविशेष।
कैत० ना० पु० कैथाका वृक्ष।
कैतव० ना० पु० चिरायता, छल।
कैथ० } ना० पु० वृक्षविशेष।
कैथा० }
कैथी० ना० स्त्री० नागरीका एक प्रकारका लेख जो कायथों ने कल्पना किया है।
कैरव० ना० पु० कफूल, श्वेतकमल।
कैल० ना० स्त्री० अंकुर, गामा।
कैलाश० } ना० पु० पर्व्वतविशेष, जहां शिवजी
कैलास० } और कुबेरादि यक्षगण रहते हैं।
कैव० ना० पु० कदम वृक्ष।
कैवर्त्त० ना० मल्लाह, कहार, धीमर, केवट।
कैवल्य० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति।
कैशिक० ना० स्त्री० बालों की लट।
कैसा० सर्व्व० किस प्रकार।
कैहौं० भवि० क्रि० करूंगा वा कहूंगा।
को० अव्य० कर्मविभक्तिसूचक द्वितीयाका, सर्व्व कौन।
को० सर्व्व० अनिश्चय, एक, ना० पु० कमल विशेष।
कोऊ० सर्व्व० कोई जोहो।
कोचना०स० क्रि० छेदना, चुभाना।
कोपल० ना० पु० नयेपत्ते, गुच्छा।
कोक० ना० पु० ग्रन्थ विशेष जिस में स्त्री प्रसंग की प्रतिपादकता का वर्णन है, कफूल।
कोकनद० ना० पु० लाल कमल।
कोकर्ण० ना० पु० असगन्ध।
कोका० ना० पु० चकई चकवा, दूधगाई, कफूल पिण्डलजुर।
कोकिल० } ना० स्त्री० पक्षीविशेष कोयल।
कोकिला० }
कोकी० ना० स्त्री० मकई।
कोख० } ना० स्त्री० कुक्षि।
कोखा० }
कोखबन्ध० गु० बांझ, बन्ध्या।
कोख० ना० स्त्री० कोख, कुक्षि।
कोछा० } ना० स्त्री० गोदी, ओदने की झोली।
कोछी० }
कोट० ना० पु० गढ़, क़िलअ, नगर।
कोटर० ना० पु० वृक्षकी खोह।
कोटवी० गु० नंगी स्त्री०, ना० स्त्री० बाणासुरकी महतारी।
कोटा० ना० पु० राजपूताने का नगर विशेष।
कोटि० ना० स्त्री० एक ओरकी भुज, पहिल पक्ष, किरोड़, सौ लाख।
कोठरी० ना० स्त्री० छोटा कोठा।
कोठा० ना० पु० पटाहुआ एक बड़ा घर।

गदेला० ना० पु० मोटा विछौना वा जिसमें बहुत रुई भरकर पहिनते हैं।
गद्गद० गु० हर्षवान्, शोक वा आनन्दमें मग्न।
गद्दर० गु० अधपका।
गद्दी० ना० स्त्री० तकिया वा बिछौना वा आसन या राजा का सिंहासन, जातिविशेष।
गद्य० ना० पु० छन्दविना काव्य, वार्तिक।
गधा० ना० पु० गदहा।
गन० ना० पु० गण।
गनना० स० क्रि० गिनना, शुमारकरना।
गन्ध० ना० पु० कदमवृक्ष, स्त्री० बास, बूय।
गन्धक० ना० पु० औषधविशेष।
गन्धगर्भ० ना० पु० बेलवृक्ष।
गन्धमादन० ना० पु० पर्वतविशेष।
गन्धमूलक० ना० पु० कचूर।
गन्धमूलिनी० ना० स्त्री० कचूरभेद।
गन्धमूली० ना० स्त्री० रासना।
गन्धराज० ना० पु० चन्दन सुगन्धित, विशिष्ट पुष्प।
गन्धर्व० ना० पु० देवता, स्वर्ग के गायक।
गन्धर्वनगर० ना० पु० सामान्य गन्धर्वलोक विशेष मुख्य आकाशमें जो चित्र विचित्र की मूर्ते दृष्टि आती हैं जब देरतक देखने से आंख तिरमिरा जाती है।
गन्धर्वहस्तक० ना० पु० बेलवृक्ष।
गन्धवह० ना० पु० वायु, पवन, हवा।
गन्धसार० ना० पु० चन्दन।
गन्धा० ना० पु० नागदौन, कदमवृक्ष।
गन्धात० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
गन्धाशूमा० ना० पु० गन्धक।
गन्धार० ना० पु० रागका स्वरविशेष।
गन्धारी० ना० स्त्री० दुर्योधनकी माता, श्वास जो यामार में प्रकाशित होती है ज्ञानतरंगे यथा, गन्धारी यामाक्ष निवासी, हस्त जिह्वा दक्षिण दिग्वासी।
गन्धि० ना० स्त्री० बास, बूय, गन्धक।
गन्धिका० ना० स्त्री० आहूबेर।
गन्धकारिणी० ना० स्त्री० लजारू।
गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालच में हो।
गन्धी० ना० पु० अत्तार, सुगन्धित तेल बेचने हारा।
गन्ना० ना० पु० ऊख, गांडा, पौंड।
गप०
गपशप० } ना० स्त्री० बक, बकबक।
गप्पी० गु० बकवादी।
गभस्ति० ना० स्त्री० किरण, ज्योति।
गभीर० गु० गम्भीर।
गभुआरे० गु० छल्लेदार बाल, पैदायशीबाल।
गमन० ना० पु० चलन।
गमनागमन० ना० पु० जाना आना।
गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली।
गमनीय० गु० चलने के योग्य, चलनेवाला।
गम्भीर० गु० गहिरा, अवगाह।
गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई।
गम्य० गु० जानेके योग्य, मिलनहार।
गय०
गयन्द० } ना० पु० हाथी।
गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थविशेष जहां हिन्दूलोग पुरुषों को पिण्ड देते हैं।
गयावाल० ना० पु० गयावाल, गयाके ब्राह्मण।
ग्यारस० ना० स्त्री० एकादशी।
ग्यारह० गु० दश और एक ११।
गर० ना० पु० रोग, विष, गला।
गरगराना० अ० क्रि० कुल्लीकरना, गरजना।
गरजना० अ० क्रि० धड़धड़ाना, शब्दकरना।
गरल० ना० पु० विष, हलाहल।
गरह० ना० पु० गठियावायु।
गरागरी० ना० स्त्री० देवदाली।
गरारी० ना० स्त्री० रस्सी वा सूत वटनेकायन्त्र, कूपसे जल निकालनेकी गोल काठकी वस्तु।
गरिमा० ना० स्त्री० गुरुता, गरुवई, अहङ्कार आठ सिद्धिमें से एकका नाम।

कोडि० ना० स्त्री० कोस।
कोठी० ना० स्त्री० महाजनों वा राजाओं या ठाकुरों की बैठक का स्थान।
कोढ़ना० स० क्रि० खोदना।
कोड़ा० ना० पु० चाबुक।
कोढ़० ना० पु० कुष्ठ, रोगविशेष।
कोढ़ना० अ० क्रि० दुःखीहोना।
कोढ़ी० ना० पु० कुष्ठी।
कोण० ना० पु० कोना, दिन, पृथ्वी।
कोद० ना० स्त्री० ओर, पक्ष, तरफ।
कोदण्ड० ना० पु० शिवजी का धनुष, धनुष।
कोद्रव० ना० पु० कोदो, अन्न विशेष।
कोना० ना० पु० जो दो सूधी रेखाओं के मिलान से बनता है परन्तु वे रेखा एक सूध में न हों।
कोप० ना० पु० क्रोध, गुस्सह।
कोपना० अ० क्रि० कोपित होना, गुस्सहकरना, ना० स्त्री० स्त्री।
कोपर० } ना० पु० पत्र विशेष।
कोपल० }
कोपान्वित० गु० क्रोधयुत, गुस्से से भरा।
कोपी० गु० कोपान्वित, कोही।
कोपीन० ना० स्त्री० लंगोट, लंगोटी।
कोमल० गु० नम्र, नया, भोला, नरम।
कोमलता० ना० स्त्री० नरमी, भोलापन।
कोयल० ना० स्त्री० पक्षी, विशेष, पुष्प विशेष।
कोयला० ना० पु० अंगारे बुझाभया।
कोर० ना० स्त्री० कगर, छोर धार।
कोरक० ना० पु० कली।
कोरण्डी० ना० स्त्री० छोटी इलायची।
कोरा० गु० विनाधोया कपड़ा, बिना लिखा कागज, मिट्टी का नया पात्र जो काम में न आया हो।
कोार० ना० स्त्री० कोटि, किरोड़।
कोरी० ना० स्त्री० नई, ना० पु० जातिविशेष।

कोर्थ० सर्व० किस हेतु, किस लिये।
कोल० ना० पु० शूकर, नीचजाति विशेष, खात गली जो लम्बी संकेतहो।
कोलवल्लिका० ना० स्त्री० कैथा का वृक्ष।
कोला० ना० स्त्री० पीपरि।
कोलाफल० ना० पु० महुआ वृक्ष।
कोलाहल० ना० पु० कलकल, रोला, शोर।
कोलिका० ना० स्त्री० कालीमिरच।
कोलियाना० स० क्रि० गोदी में लेना।
कोल्हू० ना० पु० जिससे तेल निकालते हैं वा ऊख पेरते हैं।
कोविद० गु० पण्डित, गुणी।
कोश० ना० पु० कमल, मध्यभाग।
कोशल० ना० पु० कुशल, देशविशेष।
कोशलपति० ना० पु० दशरथ, श्रीरामचन्द्र, अवध भूप।
कोशलपुर० ना० पु० } श्री, अयोध्याजी।
कोशलपुरी० ना० स्त्री० }
कोशलाधीश० } ना० पु० कोशलपति श्री-
कोशलेश० } रामचन्द्रजी।
कोष० ना० पु० अभिधान, भण्डार, अण्ड, तलवारादि की म्यानि, सुवर्णका खजाना, खजाना।
कोष्ठ० ना० पु० खात, कोठा, कोश।
कोष्ठक० ना० पु० तख्ता।
कोस० ना० पु० २ मीलका वा २००० दंडका।
कोसना० स० क्रि० शापदेना, बुरामानना।
कोह० ना० पु० क्रोध, दुःख दाह, पेटमें आग लगना, दिलजलना।
कोहनी० ना० स्त्री० बाहु के बीचकी गांठि।
कोहाब० ना० पु० डाढ़खाना।
कोही० गु० क्रोधी, रामायणे यथा, कर कुठार मैं अकरुण कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही॥
कौ० अव्य० का।
कौं० अव्य० को।
कौआ० ना० पु० काग।
कौंध० ना० पु० प्रकाश, प्रताप।

गढ़हा० ना० पु० गर्त्त, गड्ढा, ताल।
गड़िया० ना० स्त्री० खलार, खालीखेत, गांड़।
गडुआ० ना० पु० टोंटीवाला लोटा।
गड़ोना० स० क्रि० छेदना, खोंसना।
गढ़० ना० पु० कोट, किलअ।
गढ़ना० स० क्रि० ठोंकना, बनाना।
गढ़नि० ना० स्त्री० बनावट।
गढ़वार० गु० मोटा, गाढ़ा, गढ़वाल।
गढ़वाल० गु० किलेदार, गढ़का रक्षक।
गढ़ा० ना० पु० गड़हा, गार।
गढ़ाई० ना० स्त्री० गहने आदि की बनवाई वा बनवाने का काम।
गढ़ी० ना० स्त्री० छोटा गढ़।
गढ़ेला० ना० पु० पृथ्वी में खोदाभया गड़हा।
गढ़ैया० ना० स्त्री० छोटा पोखरा, गु० गढ़नेहारा।
गण० ना० पु० समूह महादेव के गणोंका झुण्ड।
गणक० ना० पु० दैवज्ञ, ज्योतिषी, हिसाबी।
गणना० ना० स्त्री० पक्षपात, गिनती, शुमार।
गणनाथ० ना० पु० गणनायक।
गणनायक०, गणपति०, गणराउ०, गणराज०, गणाधिप० ना० पु० गणेशजी, भूतनाथ।
गणिका० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया, जूही।
गणित० ना० पु० अंकविद्या, हिसाब।
गणितकार० ना० पु० गणक।
गणेश० ना० पु० पार्वती के पुत्र आदि देवता।
गण्ड० ना० पु० नेत्रोंके नीचे का भाग, गाल।
गण्डक० ना० पु० गैंडा पशु, नदविशेष।
गण्डदूर्वा० ना० स्त्री० गण्ड, दूब।
गण्डमाला० ना० पु० कान के नीचे फोड़ा का रोग विशेष।
गण्डा० ना० पु० घेरा, चारिकौड़ी वा पैसा वा रुपया, बालकादि के गले में बांधने के लिये अभिमन्त्रित सूत।
गण्डासा० ना० पु० अस्त्रविशेष।
गण्डासी० ना० स्त्री० छोटा गण्डासा।
गण्डिका० ना० स्त्री० नदी विशेष।
गण्डी० ना० स्त्री० घेरा जिसमें श्रीरामचन्द्रजी सीताजी को बैठाल गये थे।
गण्डीर० ना० पु० सेंहुड़ वृक्ष।
गण्डीर० ना० पु० ऊख, गन्ना, यथा तृण राजो मधुतृणोगण्डीरो मधुपत्रक इति निघंटः।
गण्डुख० गु० प्रफुल।
गण्डूष० ना० स्त्री० पानी का कुल्ला।
गण्य० गु० जो गिनाजाय।
गत० गु० प्राप्त, अतीत, व्यतीत, निकृष्ट।
गतागत० ना० पु० उलटफेर।
गतार्थ० गु० एकके जानने से अन्यको जानना।
गति० ना० स्त्री० चाल, मुक्ति दशा, ज्ञान, गमन, दिशा, क्रिया, कर्म।
गते० अव्य० हौले धीमे।
गत्ते० अव्य० गाते।
गत्यर्थ० गु० जिसका अर्थ गीत है या जिससे गतिका अर्थ पाया जावे।
गथ० ना० पु० माल, दाम।
गद० ना० पु० रोग, आरज़।
गदका० ना० पु० पटा, दंडविशेष।
गदकारी० ना० स्त्री० गुदगुदी, रोगकारकवस्तु।
गदला० ना० पु० ढवरा, मैला।
गदलाई० ना० स्त्री० मैलापन।
गदशत्रु० ना० पु० वैद्य हकीम।
गदा० ना० स्त्री० सोंटा, लाठी, गुर्ज।
गदाधर० गु० लाठीवाला, गदा बांधनेहारा, ना० पु० विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजी का नाम।
गदायुद्ध० ना० पु० लाठीकी लड़ाई, गदा की लड़ाई।
गदारि० ना० पु० वैद्य, तबीब।

कौंधना० अ० क्रि० प्रकाशहोना, चमकना।
कौंधा० ना० पु० बिजली।
कौड़ियाला० ना० पु० सर्पविशेष, धनी, नदी विशेष जिसको सरयू कहतेहैं।
कौड़ी० ना० स्त्री० छोटा शंख, धन कमाई।
कौणप० ना० पु० दैत्यराक्षस।
कौतुक० ना० पु० कौतूहल, परिहास, तमाशा।
कौतुकिया० } कौतुकी० } गु० परिहासी, तमाशबीन।
कौतूहल० ना० पु० कुतूहल।
कौन० सर्व० प्रश्नबोधक।
कौन्ता० ना० स्त्री० कुन्ती।
कौन्ती० ना० स्त्री० रेणुका औषध।
कौन्तेय० ना० स्त्री० पाण्डव विशेष।
कौपीन० ना० पु० कौपीन, लंगोटी।
कौमारी० ना० स्त्री० देवीविशेष।
कौमुदी० ना० स्त्री० चन्द्रिका, ज्योति, पुस्तक विशेष।
कौर० ना० पु० कवल, लुकमा।
कौरवपाण्डु० ना० पु० कौरव और पाण्डव।
कौरव० ना० पु० कुरुराज की सन्तान।
कौरव्य० ना० पु० मुनिविशेष।
कौल० ना० पु० लुकमा, ग्रास, नेवाला, धर्म विशेष, गु० कुलीन।
कौला० ना० पु० कोठरी आदिके पासका कोना, अंकवारा।
कौली० ना० स्त्री० गोदी।
कौलेय० ना० पु० कुत्ता, यथा, कौलेयकसारमेयश्च कुक्कुरो मृगदंशकः इत्यमरः।
कौलेली० ना० पु० गन्धक।
कौवेर० ना० पु० कुटज।
कौवेर्य० गु० जो कुबेर सम्बन्धी हो।
कौशल्या० ना० स्त्री० क्षेम कुशल, श्रीरामचन्द्रजीकी माता।
कौशिक० ना० पु० विश्वामित्रमुनि, इन्द्र, गुग्गुल, उलूक, पक्षी, दण्ड।

कौशिकी० ना० स्त्री० नदीविशेष।
कौशेय० गु० पाटी वस्त्र।
कौसीस० ना० पु० कसीस।
कौस्तुभमणि० ना० स्त्री० मणिविशेष जिसको विष्णुजीने उरपर धारण किया है।
क्या० सर्व० प्रश्नबोधक।
क्यारी० ना० स्त्री० बागों या खेतों में बनतीहैं।
क्यों० } क्योंकर० } क्योंकि० } अव्य० किसलिये, किसप्रकार।
क्रकच० ना० पु० करील वृक्ष।
क्रतुध्वंसी० ना० पु० महादेवजी।
क्रतुभुग० } क्रतुभुज० } ना० पु० देवता जो यज्ञ में खाते हैं।
क्रतिमालक० ना० पु० किरवाला।
क्रम० ना० पु० परिपाटी, रीति, सिलसिला, मिलान, धीरे।
क्रमक्रम० ना० पु० धीरे धीरे, दर्जे दर्जे।
क्रमुक० ना० स्त्री० सुपारी।
क्रमिकुंभ० ना० स्त्री० इन्द्रगोवधां।
क्रमेलक० ना० पु० ऊंट यथा उष्ट्रक्रमेलकमयमहांगः करभः शिशुः इत्यमरः।
क्रव्याद्० } क्रव्यात्० } ना० पु० राक्षस, कच्चामांसभक्षी।
क्रान्ति० ना० स्त्री० चमक, शोभा, दीप्ति, प्रकाश।
क्रिया० ना० स्त्री० व्यवहार, काम, धातु, नित्यकर्म, यज्ञ, उपाय, मरनेके पीछे शास्त्रोक्त कर्म।
क्रियाद्योत० गु० कर्त्ताकी दशाकी सूचक।
क्रियान्वयित्व० ना० पु० क्रिया पदकी ओर सम्बन्ध रखना।
क्रीड़ा० ना० स्त्री० केलि, लीला।
क्रीत० गु० मोललिया।
क्रीयमान० गु० किये हुये या अवश्य किये।
क्रुद्ध० गु० रिसभरा, क्रोधित, खफा।

गदेला० ना० पु० मोटा बिछौना वा जिसमें बहुत रुई भरकर पहिनते हैं।
गद्गद० गु० हर्षवान्, शोक वा आनन्दमें मग्न।
गद्दर० गु० अधपका।
गद्दी० ना० स्त्री० तकिया वा बिछौना वा आसन वा राजा का सिंहासन, जातिविशेष।
गद्य० ना० पु० छन्दविना काव्य, वार्तिक।
गधा० ना० पु० गदहा।
गन० ना० पु० गण।
गनना० स० क्रि० गिनना, शुमारकरना।
गन्ध० ना० पु० कदमवृक्ष, स्त्री० बास, बूय।
गन्धक० ना० पु० औषधविशेष।
गन्धगर्भ० ना० पु० बेलवृक्ष।
गन्धमादन० ना० पु० पर्वतविशेष।
गन्धमूलक० ना० पु० कचूर।
गन्धमूलिनी० ना० स्त्री० कचूरभेद।
गन्धमूली० ना० स्त्री० रासना।
गन्धराज० ना० पु० चन्दन सुगन्धित, विशिष्ट पुष्प।
गन्धर्व० ना० पु० देवता, स्वर्ग के गायक।
गन्धर्वनगर० ना० पु० सामान्य गन्धर्वलोक विशेष मुख्य आकाशमें जो चित्र विचित्र की मूर्ति दृष्टि आती हैं जब देरतक देखने से आंख तिरमिरा जाती है।
गन्धर्वहस्तक० ना० पु० बेलवृक्ष।
गन्धवह० ना० पु० वायु, पवन, हवा।
गन्धसार० ना० पु० चन्दन।
गन्धा० ना० पु० नागदौन, कदमवृक्ष।
गन्धान० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
गन्धाश्मा० ना० पु० गन्धक।
गन्धार० ना० पु० रागका स्वरविशेष।
गन्धारी० ना० स्त्री० दुर्योधनकी माता, स्वास जो बामाव में प्रकाशित होती है ज्ञानतरंगे यथा, गन्धारी बामाक्ष निवासी, हस्त जिह्वा दक्षिण दिखासी।
गन्धि० ना० स्त्री० बास, बूय, गन्धक।
गन्धिका० ना० स्त्री० आट्टेर।
गन्धकारिणी० ना० स्त्री० लजारू।
गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालच में हो।
गन्धी० ना० पु० अत्तार, सुगन्धित तेल बेचने हारा।
गन्ना० ना० पु० ऊख, गांडा, खंड।
गप० } ना० स्त्री० बक, बकबक।
गपशप० }
गप्पी० गु० बकवादी।
गभस्ति० ना० स्त्री० किरण, ज्योति।
गभीर० गु० गम्भीर।
गभुआरे० गु० छलेदार बाल, पैदायशीबाल।
गमन० ना० पु० चलन।
गमनागमन० ना० पु० जाना आना।
गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली।
गमनीय० गु० चलने के योग्य, चलनेवाला।
गम्भीर० गु० गहिरा, अथगाह।
गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई।
गम्य० गु० जानेके योग्य, मिलनेहार।
गय० } ना० पु० हाथी।
गयन्द० }
गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थविशेष जहां हिन्दूलोग पुरुषों को पिण्ड देते हैं।
गयाली० ना० पु० गयावाल, गयाके ब्राह्मण।
ग्यारस० ना० स्त्री० एकादशी।
ग्यारह० गु० दश और एक ११।
गर० ना० पु० रोग, विष, गला।
गरजराना० अ० क्रि० कुल्लीकरना, गरजना।
गरजना० अ० क्रि० धड़धड़ाना, शब्दकरना।
गरल० ना० पु० विष, हलाहल।
गरह० ना० पु० गठियावायु।
गरागरी० ना० स्त्री० देवदाली।
गरारी० ना० स्त्री० रस्सी वा सूत चलनेका यन्त्र, कूपसे जल निकालनेकी गोल काठकी वस्तु।
गरिमा० ना० स्त्री० गुरुता, गर्व, अहङ्कार आठ सिद्धि में से एकका नाम।

क्रूर० गु० कठोर, निठुर, कपटी, टेढ़ा।
क्रूरकर्मा० ना० स्त्री० ऊंचाहोली।
क्रूरवार० ना० पु० शनैश्चर, मंगल, आदित्यवार।
क्रोध० ना० पु० कोप, गुस्सह, भैरवविशेष।
क्रोधातुर०, क्रोधान्ध० } गु० कोपी, क्रोधमें अन्ध, क्रोधमें मस्त।
क्रोधा० गु० कोपी, गुस्सा भराभया।
क्रोश० ना० पु० कोस, दोमील, दो हजार दण्डकी माप।
क्रोष्टा० ना० पु० गीदड़, शृगाल।
क्लिशित०, क्लिष्ट० } गु० दुःखित, पीड़ित, रंजीदः।
क्लीव० ना० पु० नपुंसक, हिजड़ा।
क्लेद० ना० पु० गीलापन।
क्लेदित० गु० भीगाभया, तर।
क्लेश० ना० पु० दुःख, पीड़ा, रंज।
क्लेशित० गु० दुःखित, पीड़ित।
क्वचित्० अव्य० कहीं।
क्वटि० ना० स्त्री० पिण्डखजूर।
क्वाण० ना० पु० कौआ।
क्वाथ० ना० पु० काढ़ाजोरोगीकोपिलायाजाता है।

[ख]

खं०, ख० } ना० पु० आकाश, स्वर्ग, घर, शून्य, रन्ध्र इन्द्रिय॥
खंखारना० अ० क्रि० खांसना।
खंगना० अ० क्रि० कमहोना, घटना।
खंगालना०, खंघारना० } स० क्रि० धोना, अनवासना।
खग० ना० पु० पक्षी, ग्रह, सूर्यादि, मेघ, पवन, देवता और तारागण।
खगकेतु०, खगनाथ०, खगनायक०, खगनाह, खगपति० } ना० पु० सूर्य, चंद्रमा, गरुड़।
खगमाला० ना० पु० पक्षियों का समूह, गण।
खगहा० ना० पु० गैंडा, बाज, जुर्रा।
खगेन्द्र०, खगेश० } ना० पु० गरुड़, चन्द्रमा।
खगोल० ना० पु० आकाशमण्डल।
खग्ग० ना० पु० वीर, बहादुर।
खचना० अ० क्रि० रेखा करना, जड़ना।
खचर० ना० पु० खच्चर, पशुविशेष, ग्रहादि।
खचा०, खचित० } गु० जड़ाऊ, खिंचाहुआ।
खजुरिया०, खजूर०, खजूरि० } ना० स्त्री० वृक्षविशेष।
खञ्ज० गु० लंगड़ा, ना० पु० खंजन।
खञ्जन० ना० पु० पक्षीविशेष जिसे या खिरखिन्दा भी कहते हैं।
खञ्जनक० ना० पु० ममोला, खंजन।
खञ्जरिट०, खञ्जरीट० } ना० पु० खंजन।
खट० ना० स्त्री० खाट।
खटक० ना० पु० खटका।
खटकना० अ० क्रि० शब्द होना, लगना, शंकाकरना।
खटका० ना० पु० सन्देह, शंका, पांवकी
खटकाना० स० क्रि० आहटदेना, शब्दक
खटखटाना० अ० क्रि० ठकठकाना।
खटछपर० ना० पु० छप्परखट।
खटपट० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई।
खटमल० ना० पु० खाटमेंका कीड़ा।
खटाई० ना० स्त्री० अम्ल, खट्टापन,
खटाका० ना० पु० शब्द, चटाका।
खटास० ना० पु० खट्टापन, जन्तु विशेष
खटिका० ना० स्त्री० सेलखड़ी।
खटिया० ना० स्त्री० छोटी खाट।

गरी० ना० स्त्री० नारियलका गूदा, गुठली।
गरु० ना० पु० गला।
गरुड़० ना० पु० पक्षी जो श्रीविष्णुका वाहन है।
गरुड़ाग्रज० ना० पु० सूर्य का रथवान।
गरुता० ना० स्त्री० गुरुता, बड़प्पन।
गरुत्मान्० ना० पु० गरुड़, सफेद हंस।
गरुव० गु० भारी, बोझिल।
गर्ग० ना० पु० मुनिविशेष जो यदुवंशियों के पुरोहित थे।
गर्गज० ना० पु० टीला, बढ़।
गर्ज० } ना० पु० उत्कट शब्द, गड़गड़ा-
गर्जन० } हट।
गर्त्त० ना० पु० गढ़ा।
गर्दभ० ना० पु० गदहा।
गर्भ० ना० पु० पेट, आधान, हमल।
गर्भकण्टक० ना० पु० कटहल।
गर्भकर० ना० पु० पुत्रजीवा यथा पुत्रजीवः गर्भकरः इति निघण्टुः गु० गर्भकारक।
गर्भदास० ना० पु० मोलकी दासी का बेटा।
गर्भपात० गु० पेटका गिरना, हमलगिरना।
गर्भपाता० ना० पु० रीठा।
गर्भव्रती० ना० स्त्री० पेटसे गर्भिणी, गाभिन।
गर्भस्राव० ना० पु० गर्भपात।
गार्भिल० गु० गर्भ अर्थात् पेट में रहनेवाला।
गर्व० ना० पु० अहङ्कार, दम्भ, ग़रूर।
गर्ववती० गु० स्त्री० अहङ्कारिन।
गर्वित० गु० अहङ्कारी, मग़रूरी।
गर्हित० गु० निन्दित।
गल० ना० पु० गला, फांसी।
गलकना० अ० क्रि० गलना।
गलका० ना० स्त्री० फोड़ा विशेष, सवारीविशेष।
गलगण्ड० ना० पु० गण्डमाला।
गलगल० ना० पु० चकोतरा, पक्षीविशेष।
गलना० अ० क्रि० पिघलना, घुलना।
गलफटाकी० ना० स्त्री० बड़ाई, घमण्ड।
गलफड़० } ना० पु० गाल वा गालोंकामांस।
गलफड़ा० }
गलबाहु० ना० स्त्री० गोदी।
गलसुई० ना० स्त्री० तकिया, सिरहना।
गलस्तनी० ना० स्त्री० बकरी।
गला० ना० पु० कंठ, शब्द।
गलाघोटना० स० क्रि० नटी दबाना, कंठ तोड़ना।
गलाना० स० क्रि० पिघलाना।
गलाव० ना० पु० पिघलाव।
गलित० गु० पतित, द्रवीभूत, मग्न।
गलियाना० स० क्रि० बुराकहना, गालीदेना, बरबस भोजन कराना वा औषध धूसना।
गली० ना० स्त्री० छोटामार्ग।
गंव० ना० स्त्री० दांव, घात, मौका, लाभ।
गवन० ना० पु० गमन।
गवरि० } ना० स्त्री० पार्वती।
गवरी० }
गवलद० ना० पु० भैंसा।
गवादिनी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
गवाश० ना० पु० क़साई, म्लेच्छ।
गवाक्ष० ना० पु० झरोखा, मुख्य वानर।
गवेधुका० ना० स्त्री० गंगेरुआ।
गवैया० ना० पु० गायक, गानेवाला।
गव्य० गु० जो गाय से सम्बन्ध रखता हो यथा दुग्ध आदि।
गसना० अ० क्रि० बन्धना, गिरना, रुकना।
गहगह० गु० घना, जोरसे।
गहन० ना० पु० भारी, ग्रहण, पकड़ना, दुःख, निष्फल, वन।
गहना० स० क्रि० पकड़ना, ग्रहणकरना, ना० पु० जेवर, गिरवां, भूषण।
गहनी० ना० स्त्री० सनपरास कालीपत्ती।
गहरा० ना० पु० गम्भीर।
गहरु० ना० पु० ढील, देर।

गह्वर० } गु० घनेरा, रोंवासा, घना, कठिन।
गह्वर० }
गा० अव्य० गया।
गांजा० } ना० पु० वृक्षविशेष की पत्ती वा रस
गांझा० } आदि।
गांठना० स० क्रि० बांधना, वशमें लाना, सीयना।
गांठि० ना० स्त्री० ग्रन्थि, गिरह।
गांड़० ना० स्त्री० गुदा, मूल, पुट्ठी मिट्टी की जो कूप में लगाते हैं।
गांडर० ना० स्त्री० तृणविशेष।
गांडा० ना० पु० इक्षु, गन्ना, ऊख।
गांडू० ना० पु० भवेसिया, लतिया, सुस्ती।
गांव० ना० पु० ग्राम, पुर।
गांवना० स० क्रि० गाना।
गांसना० स० क्रि० पिरमाना, घेरना, बरमाना, पिरोना।
गांसी० ना० पु० तीरका फल, लोहा जो तीर में लगाते हैं।
गागर० ना० स्त्री० गगरी, कलशी, घड़ा।
गांगेय० ना० पु० भीष्म, सुवर्ण।
गाछ० ना० पु० वृक्ष।
गाज० ना० स्त्री० झाग, फेना, बिजली, वज्र।
गाजना० अ० क्रि० हर्षितहोना, गरजना।
गाजर० ना० स्त्री० मूल, विशेष।
गाजाबाजा० ना० पु० नानाप्रकार से बाजा का शब्द।
गाड़० ना० पु० गड़हा, गड्ढा, गर्त।
गाड़ना० स० क्रि० तोपना, समाधि देना, मिट्टी देना, लगाना।
गाड़ा० ना० पु० घात, गड़हा, गाड़ी।
गाड़ी० ना० स्त्री० छकड़ा, लढ़ी, रथ।
गाढ़० ना० स्त्री० जंजाल, विपत्ति।
गाढ़ा० गु० मोटा, चतुर, कठिन, ना० पु० कपड़ा विशेष।

गाण्डीव० ना० पु० नाम उसधनुषका है जो अग्निदेव ने अर्जुनको दियाहै।
गाण्डीवधर० ना० पु० अर्जुन, पाण्डुपुत्र।
गात० ना० पु० शरीर, तनु, देह।
गाता० ना० पु० कागज जिस से पुस्तककी जिल्द बनाते हैं।
गाती० ना० स्त्री० एकप्रकार की चादरका बांधना, पट्ट, ऊर्णवस्त्र।
गात्र० ना० पु० शरीर, देह।
गाथक० ना० पु० गायक।
गाथना० स० क्रि० गूंथना, गाना।
गाथा० ना० स्त्री० कथा, समाचार।
गाद० ना० स्त्री० तरछट, गोंद।
गादी० ना० स्त्री० गद्दी।
गाधि० ना० पु० विश्वामित्र के पिता।
गाधिनन्द० ना० पु० विश्वामित्रमुनि।
गाधिसुत० } ना० पु० विश्वामित्र मुनि।
गाधेय० }
गान० ना० पु० गीत, राग, भजन।
गाना० स० क्रि० अलापना, तानभरना।
गान्धार० ना० पु० राजाविशेष, रागका स्वर विशेष।
गाभ० ना० पु० गर्भ।
गाभा० ना० पु० केले के वृक्षका नयापत्र, नया, पत्ता।
गाभिन० ना० स्त्री० गर्भिणी।
गाम० ना० पु० गांव।
गामी० गु० चलनेवाला, रमनेवाला।
गाम्भीर्य्य० ना० पु० गम्भीरता।
गाय० ना० स्त्री० गौ।
गायक० ना० पु० गवैया, गानेवाला।
गायत्री० ना० स्त्री० मन्त्र विशेष, छन्द, कथा, महासिद्धि।
गायन० ना० पु० गवैया, गानेवाला।
गारु० ना० स्त्री० गाली।
गारना० स० क्रि० निचोड़ना, धोना।

घुटाना० स० क्रि० घुटाना, चिकना करना।
घुड़० ना० पु० घोड़ा।
घुड़कना० स० क्रि० दबकाना, धमकाना, झिड़कना।
घुड़की० ना० स्त्री० धमकी, झिड़की।
घुड़चढ़ा० ना० पु० अश्ववार, सवार।
घुड़बहल० ना० स्त्री० चौपहिया गाड़ी जिस में घोड़े मचते हैं।
घुन० ना० पु० कीट विशेष, ढोला।
घुना० गु० जिस में घुन लग गया।
घुनाक्षर० ना० पु० घुन कृत अक्षर।
घुनिया० गु० घना, कपटी।
घुमरी० ना० स्त्री० तिमिरी।
घुमाना० स० क्रि० फिराना, फेरना, बहकाना।
घुरकना० स० क्रि० घुड़कना।
घुरूका० ना० पु० भीमसेन का पुत्र जो हिडम्बी से उत्पन्न था जिस को घटोत्कच भी कहते हैं।
घुलना० अ० क्रि० गलना, पिघलना, नम्र हो जाना, दुर्बल होना।
घुलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।
घुलावट० ना० स्त्री० पिघलावट।
घुसना० अ० क्रि० पैठना।
घुसपैठ० ना० स्त्री० पहुँच।
घुसाना० स० क्रि० पिलाना, पैठाना।
घुसेड़ना० स० क्रि० ठोंसना, खोंसना।
घूंगनी० ना० स्त्री० उसना, चना, गेहूं।
घूंगर० ना० पु० लहराये हुये बाल।
घूंगी० ना० स्त्री० घोंघी, छोटा घोंघा।
घूंघट० ना० पु० ओढ़ना, नकाब।
घूंघर० ना० पु० घूंगर।
घूंघरू० ना० पु० नूपुर।
घूंटना० स० क्रि० निगलना, लीलना।
घूंस० ना० स्त्री० बड़ा चूहा।
घूंसा० ना० पु० घूसा, धप्पड़, मूका।
घूघू० ना० पु० पक्षीविशेष, पारङ्क।
घूट० ना० पु० पानी की लिलावट।
घूटना० स० क्रि० घूंटना।
घून० ना० पु० द्वेष, कपट, द्रोह, लाग।
घूना० गु० कपटी, द्रोही।
घूमना० अ० क्रि० फिरना, चक्करदेना, लौटना।
घूर० ना० पु० खाद, कूड़ा, ताक।
घूरखी० ना० स्त्री० उलझेड़ा।
घूरना० स० क्रि० ताकना, क्रोध से देखना।
घूस० ना० स्त्री० घूंस, अंकोर, रिशवत।
घूसत० ना० पु० उल्लू का बच्चा।
घूसा० ना० पु० थप्पड़, मुक्का, मुक्की।
घृणा० ना० स्त्री० घिन, ग्लानि।
घृणि० ना० स्त्री० किरण।
घृत० ना० पु० घी।
घृताची० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा।
घृताक्त० गु० चिकना।
घृष्टि० ना० पु० शूकर, वाराह।
घेंटा० ना० पु०, घेंटी० स्त्री० } शूकर का बच्चा।
घेगा०, घेघा० } ना० पु० गले में रोगविशेष।
घेतला० ना० पु० जूती विशेष।
घेर० गु० रूंधा, घूमघुमाव, गोलाकार, ना० पु० फेर।
घेरना० स० क्रि० रूंधना, गांसना।
घेरा० गु० जो रोंका गया, ना० पु० कुंडल, मंडल, दावा।
घेवर० ना० पु० मिठाई विशेष।
घोंगा० ना० पु० शंख वा घोंघा जन्तु वि० जन्तु का घर विशेष।
घोंसला० ना० पु० पक्षी का घर, खोंता।
घोकना०, घोखना० } स० क्रि० रटना, याद करना।
घोघी० ना० स्त्री० वस्त्र विशेष जो कम्मल आदि से बनाते हैं।

गार्हपत्य० ना० पु० अग्निभेद।
गारा० ना० पु० भीति बनाने के लिये बनाई हुई मिट्टी।
गारी० ना० स्त्री० गाली।
गारुड़ि० सांप, सांपका विष, झारनेवाला, सूर काव्ये यथा, हाय भाय गारुडी पुकारत आवत लहरि न जात कहीरी।
गारुत्मत० ना० पु० पन्ना।
गाल० ना० पु० कपोल, रुखसार, बात।
गालव० ना० पु० मुनि विशेष।
गाला० ना० पु० रुई की फली, धुनी हुई रुई का गोला।
गाली० ना० स्त्री० अपमान का बोधक वाक्य, उखली।
गाह० ना० पु० ग्राह।
गाहक० ना० पु० खरीदार।
गाहना० स० क्रि० ढूंढना, दावना, थाह लगाना, मांड़ना।
गाहा० गु० गाथा, अवगाह, कथा ना० पु० छन्दविशेष।
गाहिगाहि० गु० ढूंढि ढूंढके।
गाही० ना० स्त्री० पांच, माड़ी, थाही हुई।
गिंजाई० ना० स्त्री० कीटविशेष।
गिच्चिपिच्चिया० ना० पु० कचपिचिया।
गिड़गिड़ाना० स० क्रि० विघिआना, खुशामद करना।
गिद्ध० ना० पु० पक्षी विशेष, किरगिस।
गिनती० } ना० स्त्री० गणित,
गिन्ती० } गिन्ती, शुमार।
गिन्दुक० ना० पु० गेंद।
गिन्ना० स० क्रि० गणन, गिन्तीकरना।
गिरगिट० ना० पु० सरट, कृकलास।
गिरना० अ० क्रि० पड़ना।
गिरपड़ना० अ० क्रि० कूदपड़ना, झुककर पड़ना।
गिरा० ना० स्त्री० सरस्वती, वाग्देवता, वाणी।
गिराना० स० क्रि० औंधाना, पटकना, ढलकाना।

गिरि० ना० पु० अद्रि, पर्वत, पहाड़।
गिरिकद्रक० ना० पु० महा नींव।
गिरिज० ना० पु० शिलाजित।
गिरिजा० ना० स्त्री० पार्वती।
गिरिजानन्द० ना० पु० गणेशजी।
गिरिधर० } गु० पर्वत उठानेवाला ना० पु०
गिरिधारी० } श्रीकृष्णचन्द्रजी, श्रीहनुमान्।
गिरिनाथ० ना० पु० श्रीशिवजी, सुमेरु, हिमाचल, हिमालय।
गिरिर० ना० पु० लड़का।
गिरिराज० ना० पु० श्रीशिवजी, हिमालय, गोवर्द्धन, सुमेरु, श्रीकृष्णजी।
गिरिवर० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
गिरिसृष्ट० ना० स्त्री० गेरू।
गिरिसाह्वय० ना० पु० शिलाजीत।
गिरीश० ना० पु० श्रीसदाशिव, सुमेरु, हिमालय।
गिलट० ना० स्त्री० नसों की गांठ।
गिलहरी० ना० स्त्री० जीव विशेष जो वृक्षोंपर, रहता है।
गिलोय० ना० स्त्री० गुरुच।
गीजना० स० क्रि० मलना।
गीत० ना० पु० राग, गान।
गीता० ना० पु० कथा, अध्यात्मज्ञान, वा जिस पुस्तक में अध्यात्मज्ञान होवे, यथा भगवद्गीता, रामगीता।
गीदड़० ना० पु० शृगाल, सियार।
गीर्वाण० ना० पु० अमर, देवता।
गीला० गु० ओदा।
गीष्पति० ना० पु० बृहस्पति।
गुग्गुल० ना० पु० गूगुल।
गुंगा० }
गुंगा० } गु० गूंगा, बावला।
गुच्छा० ना० पु० पौर, घौंचा, बाल, पोर।
गुजरात० ना० पु० देशविशेष।

घोणा० ना० स्त्री० नाक, नासिका, यथा (क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका) इत्यमरः।
घोट० ना० स्त्री० चिकनाहट, ओप।
घोटक० ना० पु० घोड़ा, यथा (घोटके वीति तुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः) इत्यमरः।
घोटना० स० क्रि० मलके चिकना करना, मुण्डना ना० पु० पाषाणआदिकी वस्तु जिससे चिकनाते हैं।
घोटा० ना० पु० काष्ठादिकी वस्तु जिससे घोटते हैं ना० स्त्री० सुपारी।
घोड़ा० ना० पु० अश्व, तुरंग।
घोर० ना० पु० शब्द, भय धड़का गु० भयानक, कठिन, कड़ा।
घोरनिद्रा० ना० स्त्री० सुखनींद, बड़ीनींद।
घोरफटा० ना० स्त्री० गोह।
घोल० ना० पु० मट्ठा, छाछ।
घोलना० स० क्रि० मिलाना।
घोष० ना० पु० अहीरों का गांव, गोप, ग्वाल।
घोषणा० स० क्रि० अभ्यास करना, याद करना, प्रसिद्ध रूप से जनाना।
घोषा० ना० स्त्री० सौंफ, विडंग।
घोस० ना० पु० घोष।
घोसी० ना० पु० ग्वाल, अहीर।
घौंड़ि०, घौरि० } ना० स्त्री० गुच्छा, घवरि।
घ्राण० ना० पु० नाक, गन्धिका ग्रहण।
घ्राणेन्द्रिय० ना० स्त्री० नासिका, नाक।

[च]

चँवर० ना० पु० चमर।
चक० ना० पु० चकवा पक्षी, जिस भूमि पर अपना अधिकार हो।
चकचका० गु० स्वच्छ, निर्मल, तेजोमय।
चकड़या० ना० पु० चकल्लस, आनन्द।
चकता० ना० पु० चिह्न, निशान।
चकत्ती० ना० स्त्री० फाक, थेगली, पैवन्द।
चकनाचूर० ना० पु० कतरन, छीलन, चूर, चूर्ण।
चकल्लस० ना० स्त्री० चकड़या, मग्नता, तमाशा।
चकल्लसी० गु० चकड़यावाला, मग्न।
चकला० ना० पु० वेश्या का घर, वस्त्रविशेष जो पाट और सूत से बनता है, देश का खण्ड जिसमें कई परगना होते हैं, गु० चौड़ा।
चकलाई० ना० स्त्री० चौड़ाई।
चकवा० ना० पु० राजहंस जाति के पक्षी विशेष।
चकवी० ना० स्त्री० चकवा की स्त्री।
चका० ना० पु० पहिया, चक्र, कुलाल जिसपर बर्तन बनाता है।
चकाचौंध० ना० स्त्री० दृष्टिका तिरमिराना।
चकाबू०, चकाव्यूह० } ना० पु० चक्रव्यूह।
चकित०, चकृत० } गु० अचम्भित, भूलाभग्गा, तअज्जुबमें।
चकोतरा० ना० पु० गलगल, फलविशेष।
चकोर० ना० पु० पक्षी विशेष।
चक्कवै० ना० पु० राजा चक्रवर्त्ती।
चक्का० ना० पु० दही, गाड़ी का पहिया।
चक्कान० गु० गाढ़ा, जमाहुआ।
चक्कास० ना० पु० मुर्गियों का घर।
चक्की० ना० स्त्री० दलैती, जिससे आटा पीसते हैं।
चक्कू० ना० पु० छुरी चाकू।
चक्र० ना० पु० अस्त्रविशेष, पहिया, गोल भ्रमण, सुदर्शन, कुम्हार का चाक।
चक्रहू० ना० पु० तगर औषध।
चक्रधर०, चक्रपाणि० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी, गु० जो चक्र बांधता हो।
चक्रवर्त्ती० ना० पु० भारोमण्डल का राजा, सार्वभौमराजा।
चक्रवाक० ना० पु० चकवा।

गुह्य० गु० छिपा, पोशीदः।
गुह्यक० ना० पु० यक्ष, कुबेर के दूत।
गुह्यकपति० ना० पु० कुबेर।
गुह्यस्थल० ना० पु० एकान्तस्थान वा छिपा अंग, यथा, भग।
गुंज० ना० स्त्री० गुंजा, घुंघुची।
गुंजरना० अ० क्रि० दहाड़ना, गूंजना।
गुंजान० गु० गाढ़ा, मोटा, घना, फारसी का शब्द है।
गुंजार० ना० पु० शब्द, दहाड़, गूंज।
गुंजारना० अ० क्रि० हूंकना, गूंजना, शब्द करना।
गुटकना० अ० क्रि० कूं कूं करना, कपोत का बोलना, निगलना।
गुटका० ना० पु० पुस्तक विशेष, वस्तुविशेष जिसको योगी मुख में रखकर लोप होजाते हैं मिठाईविशेष, चांदी की वस्तुविशेष जो मृतक की क्रिया में लगताहै, छोटी पोथी।
गुटकाना० स० क्रि० कपोतको बुलाना।
गुटकी० ना० स्त्री० हाथ पांव समेटना।
गुटिका० ना० स्त्री० गोली।
गुठली० ना० स्त्री० फलका बीज।
गुड़० ना० पु० ईखका जमाहुआ रस, मिष्टान्न।
गुड़गुड़ाना० अ० क्रि० गड़गड़ाना।
गुड़गुड़ी० ना० स्त्री० छोटा हुक्का।
गुड़पुत्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना।
गुड़पुष्प० } ना० पु० महुआ।
गुड़फूल० }
गुड़ा० ना० पु० अंगूर, दाख।
गुडाकेश० ना० पु० अर्जुन, सदाशिवजी।
गुड़ाना० स० क्रि० खुदाना, खुदवाना।
गुड़िया० ना० स्त्री० खिलौना, कपड़ोंकी पुतली।
गुडूची० ना० स्त्री० गुरच।
गुड्डी० ना० स्त्री० कनकौआ।
गुढ़ी० ना० पु० छिपनेका स्थान।
गुण० ना० स्त्री० विशेषण, स्वभाव, प्रवीणता, विद्या, डौल, कृपा, रस्सी, धनुषकी पंचचत्रि यहसान।
गुणक० ना० पु० जिस अंक से गुणन करें।
गुणद० गु० गुणदाता, लाभकारी।
गुणन० ना० पु० गुणाकरना, जरब।
गुणना० स० क्रि० विचारना, गुणन करना।
गुणवता० ग० माला० गुणवान्।
गुणवाचक० गु० गुण बतानेवाला।
गुणवान्० गु० प्रवीण, पुण्यवान्।
गुणज्ञ० गु० गुणी, ज्ञाता, चतुर।
गुणी० गु० प्रवीण, पुण्यवान्, विद्वान्, विचारी ना० पु० संपेरा।
गुण्य० ना० पु० जिस अंक को गुणा करें।
गुथना० अ० क्रि० पिरोना।
गुथवां० गुथाहुआ।
गुद० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड़, गुदा।
गुदगुदाना० स० क्रि० सहलाना, गुदगुदाना।
गुदगुदाई० }
गुदगुदाहट० } ना० स्त्री० सहलाहट सुरसरी।
गुदगुदी० }
गुदड़ी० ना० स्त्री० तागाहुआ वस्त्र, गुजरी, चौक, बाजार।
गुदा० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड़।
गुदाभंजन० } ना० पु० गांड़ मारना, इग-
गुदमर्दन० } लाम।
गुन० ना० पु० गुण।
गुनगाहक० ना० पु० गुनका चाहने या जानने वाला, विद्याका प्रतिपालक।
गुनगुनाना० अ० क्रि० थोड़ा गरमहोना और नाकसे बोलना।
गुनवन्त० } गु० गुणवान्।
गुनवान्० }
गुनह० ना० पु० दोष, पाप, कसूर, रामायणे यथा, गुनह लषणकर हमपर रोषू, कतहुँ सुधाई ते बड़ दोषू।

चक्रमर्दन० ना० पु० पवांर, कौच, बीज।
चक्रव्यूह० ना० पु० चक्राकार सैन्यका गढ़ बनाकर समर करना।
चक्रलक्षणा० ना० स्त्री० गुरुच।
चक्रा० ना० स्त्री० समूह, गिरोह, टोली।
चक्राकार० गु० पहिया के डौल।
चक्रित० गु० चकित, भ्रमित।
चक्री० ना० स्त्री० चरखा, गायकों की मंडली ना० पु० सांप, कुम्हार।
चक्षु० ना० पु० चक्षु, नेत्र।
चखना० स० क्रि० जांचना, स्वादलेना, खाना।
चखाचखी० ना० स्त्री० बिगाड़, लड़ाई, फूट।
चंग० ना० स्त्री० डफ़ली, बाजा, पतंग।
चंगा० गु० भला, अच्छा, सुखी।
चंगेर० ना० स्त्री० फूल रखने का पात्र, कठरी।
चंगेरा० ना० पु० } खांचा, खांची, कठरा,
चंगेरी० ना० स्त्री० } कठरी।
चचा० ना० पु० पिता का भाई, चाचा।
चची० ना० स्त्री० चचाकी स्त्री।
चचुलाई० ना० पु० सपेदा, तरकारी।
चचोरना० स० क्रि० सूखी वस्तुका चूसना।
चंचनाना० स० क्रि० टीसना, क्रोधित होना, झुंझलाना।
चंचनाहट० ना० स्त्री० टीस, झुंझलाहट।
चंचरीक० ना० पु० भौंरा।
चंचल० गु० अस्थिर, चपल, कम्पाहा, खिलाक, नाशी।
चंचलता० ना० स्त्री० अस्थिरता, चपलता।
चंचला० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा, लक्ष्मी।
चंचलाई० ना० स्त्री० ढिठाई।
चंचलाहट० ना० स्त्री० अस्थिरता, ढिठाई।
चंचु० ना० पु० चोंच, शुकपक्षी।
चट० अव्य० तुरन्त, उसी समय।
चटक० ना० स्त्री० चमक, भड़का, चिड़ा, गु० बुद्धिमान्, चालाक, वेगी।

चटकना० ना० पु० धप्पा, अ० क्रि० फटना, धड़कना, तड़कना।
चटका० ना० पु० भौंरा, गरगैथा पक्षी, पक्षी-टोया, चटी, दरका।
चटकाना० स० क्रि० चुटकी बजाना, फटकारना, फोड़ना, चीरना।
चटकारना० स० क्रि० पशुआदि के चलाने में मुखसे टिक टिक करना।
चटकाहट० ना० स्त्री० चमक, भड़क, ना० पु० चिड़ियों का शब्द।
चटकीला० ना० पु० } चमकीला, भड़कीला,
चटकीली० ना० स्त्री० } नमकीन।
चटगांव० ना० पु० नगर जो बंगाले के पूर्व है।
चटनी० ना० स्त्री० खाने के लिये खट्टी बनाई हुई वस्तु, चाटने की वस्तु।
चटपट० अव्य० तुरन्त, उसी समय।
चटपटाना० अ० क्रि० व्याकुलहोना, फड़फड़ाना, किसी वस्तु के लिये जी चलाना।
चटपटाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता।
चटपटिया० गु० फुर्तीला, चालाक।
चटपटी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
चटयाना० स० क्रि० चटाके खिलाना।
चटसार० } ना० स्त्री० पाठशाला, मदर्सा।
चटसाल० }
चटाई० ना० स्त्री० बिछौना विशेष।
चटाक० ना० पु० धड़ाक, भड़ाका, एकाएक।
चटाका० ना० पु० धड़ाका, चूमा लेनेका शब्द।
चटाचट० गु० छोहराय विहराय के जो शब्द।
चटाना० स० क्रि० चटवाना।
चटिया० ना० पु० शिष्य, चेला, गु० चाटने वाला।
चटी० ना० स्त्री० ध्यान, स्थिरता, गताड़ी, रामचन्द्रिकायां यथा (सब जात फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी। निघटी रुचि मीचु घटीहु घटी जग जीव यतीन कि छूटी चटी)।

गुनानि० ना० स्त्री० मनमें कल्पना करना।
गुनी० गु० गुणी।
गुन्थनि० ना० स्त्री० गूंथनी, पोहावट।
गुप्त० गु० लुका, छिपा।
गुप्तार० ना० पु० छिपना, लुकना, लुकाव।
गुप्तारघाट० ना० पु० अयोध्याजी में स्थान विशेष।
गुप्ती० ना० स्त्री० खड्गविशेष जो सोंटे में रखते हैं।
गुफा० ना० स्त्री० खोह, कन्दरा।
गुभाना० स० क्रि० चुभाना, गाड़ना।
गुमटी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, कलशी।
गुराई० ना० स्त्री० बड़प्पन, गोरापन।
गुरु० ना० पु० आचार्य्य, शिक्षक, बृहस्पति, पुरोहित, द्विमात्रिक अक्षर, गु० भारी, बड़ागरुआ।
गुरुतर० गु० अत्यन्तभारी, अत्यन्तमान्य।
गुरुता० ना० स्त्री० बड़प्पन, आचार्य्यता।
गुरुपाक० ना० पु० जो वस्तु बहुत देर में पचे।
गुरुमुख० ना० पु० जिसने गुरु कियाहो, शिष्य वा इष्टदेवका मन्त्र गुरुसे लिया, चेला।
गुरुमुखहोना० अ० क्रि० चेलाहोना, गुरु से इष्टदेवता का मन्त्र पाना।
गुरुबाइन० ना० स्त्री० गुरुकी पत्नी।
गुरुवार० ना० पु० बृहस्पतिवार जुमेरात।
गुर्जर० ना० पु० गुजराती वा गुजरातदेश विशेष।
गुर्वादित्य० ना० पु० जब सूर्य और बृहस्पति एक राशि के होजाते हैं वह समय।
गुर्विणी० ना० स्त्री० गर्भवती, हामिलः।
गुल० बुझाना, दीपकका ठंढाहोजाना।
गुलगुला० ना० पु० पकवान विशेष।
गुलाई० ना० स्त्री० गोलता, गोलाई।
गुलाब० ना० पु० वृक्ष या उसके फूलोंका रस, तत्त्व।
गुलाल० ना० पु० अबीर बुका जो प्रियतमके ऊपर डालते हैं।
गुलिक० ना० पु० मोती।
गुलिया० ना० स्त्री० शिरके पीछे का गढ़ा।
गुलेल० ना० स्त्री० धनुष जिसमें गुल्ला चलाते हैं।
गुल्याल० ना० पु० गुलेल।
गुल्फ० ना० स्त्री० फीली, एड़ीके ऊपरका भाग।
गुल्म० ना० पु० रोग विशेष, गुलाब, झाड़।
गुल्ला० ना० पु० गुलेला, माटीका छोटागोला।
गुल्लाला० ना० पु० फूलविशेष यह शब्द फारसी काहै।
गुवाक० ना० पु० सुपारी का वृक्ष।
गुवालियर० ना० पु० देश वा नगरविशेष।
गुष्टि० ना० स्त्री० सम्मति, सलाह, मित्रता।
गुह० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक, निषाद, मल।
गुहना० स० क्रि० गूथना।
गुहा० ना० स्त्री० गुफा, कन्दरा।
गुहाना० स० क्रि० गुथवाना।
गुहारि० ना० पु० ताड़कासुर, ना० स्त्री० सहायता, सहाय, मदद।
गू० ना० पु० गुह, विष्ठा।
गूंगा० गु० मूक, जो बात न करसके, ना० पु० तृणादि या डाट, मिठाई विशेष।
गूंज० ना० स्त्री० शब्द, भिनभिनाहट।
गूंजना० अ० क्रि० गूंजरहना, भिनभिनाना।
गूंथना० } स० क्रि० पिरोना, लड़ियाना।
गूंदना० }
गूंदनी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष का फल जो पश्चिम में ग्रीष्मकाल में होताहै।
गूंधना० स० क्रि० सानना, गूंधनो, बिनना।
गूजर० ना० पु० नीचजाति विशेष।
गूजरी० ना० स्त्री० गूजरकी स्त्री, गहना विशेष जो पांव में पहिनाजाता है।
गूढ़० गु० सूक्ष्म, कठिन, गुप्त, भीतर।
गूढ़गिरा० ना० स्त्री० गुप्तवाणी, गोलबात, कठिन वचन।
गूढ़ता० ना० स्त्री० सूक्ष्मता, कठिनता, छिपाव।

चटोरा० गु० रसिया, पेटू, अजीरज।
चट्टा० ना० पु० चटसाली बालक।
चट्टान० ना० पु० पत्थरका छोटाभाग वा टुकड़ा।
चट्टावट्टा० ना० पु० खिलौना विशेष।
चड़० ना० पु० वृक्षकी डाली तोड़ने का शब्द।
चड़बड़० गु० चटाचट, खिन्नी।
चड़चड़ाना० अ० क्रि० फटना, तड़कना।
चड़घड़िया० ना० पु० बकी।
चड़ई० ना० स्त्री० पश्चिम में तैयारी को कहते हैं और अवध में कूप गहिराने को।
चढ़ता० ना० पु० लाभ, बढ़ती।
चढ़ताहोना० अ० क्रि० निकलता होना, सरस होना।
चढ़ना० स० क्रि० आरोहण करना, मिलँगना, उठना, धावा करना, सवारहोना।
चढ़वैया० गु० चढ़नेवाला, यथा घुड़चढ़ा।
चढ़ाई० ना० स्त्री० चढ़ाव, धावा।
चढ़ाना० स० क्रि० आरोहण करना, बलिदान करना, उठाना, ढोल वा धनुष् का तानना वा कसना।
चढ़ाव० ना० पु० चढ़ाई, भाटा।
चढ़ैत० } ना० पु० चढ़वैया।
चढ़ैता० }
चढ़ौवा० ना० पु०, जूता जो एंड़ी से चढ़ा रहता है।
चणक० } ना० पु० चना, अन्नविशेष।
चणा० }
चण्ड० गु० प्रबल, प्रचण्ड, भैरव विशेष।
चण्डांशु० ना० पु० सूर्य्य।
चण्डागुत० ना० स्त्री० कोंच बीज।
चण्डाल० ना० पु० चांडाल, अतिनीच, कुकर्मी।
चण्डालिन० } ना० स्त्री० चांडालकी स्त्री।
चण्डाली० }
चण्डिका० } ना० स्त्री० दुर्गादेवी।
चण्डी० }
चण्डोल० ना० पु० पालकीविशेष, पक्षीविशेष, खिलौना विशेष।
चतु० गु० चारि।
चतुर० गु० निपुण, सुनारी, प्रवीण, स्याना, धूर्त, ना० पु० कौआ।
चतुरई० } ना० स्त्री० बुद्धिमानी, स्यानपन, धूर्तता।
चतुरता० }
चतुरंग० ना० पु० चारिअंग की।
चतुरंगसैन्य० ना० स्त्री० चारिप्रकारकी फ़ौज अर्थात् हाथी १ घोड़ा २ रथ ३ पदाति ४।
चतुरंगुल० गु० चारिअंगुल, स्त्री० किरवाली।
चतुरस्र० गु० चौखूट।
चतुरा० गु० चतुर।
चतुराई० ना० स्त्री० चतुरता।
चतुरानन० ना० पु० ब्रह्मा।
चतुरवस्था० ना० स्त्री० चारिअवस्था, अर्थात् जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अथवा बाल्या, प्रौढ़, युवा, वृद्ध।
चतुराश्रम० ना० पु० चारि आश्रम, अर्थात् ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी।
चतुरास० ना० स्त्री० चारों ओर।
चतुरासी गु० अस्सी और चार ८४।
चतुरासीयोनि० गु० चौरासी योनि अर्थात् (दोहा) नव ९ जलचर दश १० व्योमचर कृमि ग्यारह ११ वनबीस २०, ये चौरासी ८४ जानिले मनुज चारि ४ पशु तीस ३०)।
चतुरुपवेद० ना० पु० चारि उपवेद, अर्थात् धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद और धर्मशास्त्र।
चतुर्थ० गु० चौथा।
चतुर्थावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा, मृत्युकाल।
चतुर्थी० ना० स्त्री० चौथ, चौथी तिथि।
चतुर्दश० गु० चौदह १४।
चतुर्दशविद्या० ना० स्त्री० चौदहविद्या, अर्थात् ब्रह्मज्ञान १ रसायन, २ वैद्यक ३ ज्योतिष ४ व्याकरण ५, धनुर्विद्या ६ कोक ७, जलतरण ८

गूढ़पत्र० ना० पु० करील, नागफली ।

गूढ़पाद० } ना० पु० सांप, यथा, कुंडलीगूढ़पा
गूढ़पात्‌० } चचुःश्रवाः काकोदरः फणी इत्यमरः

गूढ़ार्थ० गु० गुप्तअर्थ, कठिनअर्थ ।

गूदड़० ना० पु० पुराना कपड़ा ।

गूदा० ना० पु० भेजा,फलका सारांश ।

गूप० गु० गुप्त, छिपा ।

गूमड़ी० ना० स्त्री० } गांठि ।
गूमड़ा० ना० पु० }

गृंजन० ना० पु० प्याज, लहसुन, गांजा, गाजर वा गाजरका साग यथा, लशुनंगृंजनारिष्टमहाकन्दरसोनकः इत्यमरः पलांडुविड्वराहंचछत्राकं ग्रामकुक्कुटंलशुनंगृंजनंचैवभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत्, इति सरोजसुन्दरे ।

गृध्र० ना० पु० गिद्ध ।

गृष्टि० ना० स्त्री० वाराहीकन्द ।

गृह० ना० पु० घर ।

गृहकन्या० ना० स्त्री० घीकुवारि ।

गृहगोधिका० ना० स्त्री० बिस्तुइया, छिपकली ।

गृहस्थ० ना० पु० दूसरा आश्रम, घरवाला ।

गृहस्थाश्रम० ना० पु० गृहस्थका व्यवहार ।

गृहस्थी० ना० स्त्री० गृहस्थ का धर्म्म ।

गृहिणी० ना० स्त्री० घरणी, भार्या,जोरू,चौखट ।

गृही० ना० पु० गृहस्थ ।

गृह्य० गु० जो ग्रहणकरने के योग्य है ।

गेंदक० ना० पु० गेंदा ।

गेंद० ना० स्त्री० खेलनेके लिये कपड़े वा सूत आदि का गोला ।

गेंगटा० ना० पु० केकड़ा, सरतान ।

गेगली० ना० स्त्री० चौंदली ।

गेंडुआ० ना० पु०, तकिया, सिरहाना, और ऍंटी-दारलोटा ।

गेरू० ना० स्त्री० गैरिक, लाल मिट्टी ।

गेरुआ० गु० गेरूका रंगामया ।

गेरुई० ना० स्त्री० जो गेहुओं में सरदीके कारण गेरूरंग का रोग होजाता है गु० गेरूका रंग ।

गेह० ना० पु० घर, तलाश, चाह ।

गेहूं० ना० पु० अन्नविशेष ।

गेहुंआ० गु० गेहूंके रंग,ना० पु० घास विशेष ।

गैंड़ा० ना० पु० जन्तु विशेष जिसकी हड्डी अति पवित्र होती है उसकी अंगूठी, छल्ले,और तर्पण करने के पवित्र अर्घ का पात्र बनता है ।

गया० ना० स्त्री० गाय ।

गैरिक० ना० स्त्री० गेरू, पर्वतकी लालमिट्टी ।

गैरेय० ना० पु० शिलाजीत ।

गैल० ना० स्त्री० मार्ग, मार्ग ।

गो० ना० पु० पद, कूप, जल, वज्र, स्वर्ग, खग, छन्द, ना० स्त्री० गाय, किरण, इन्द्रियां दश ।

गोंडली० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष ।

गोंद० ना० पु० लासा, चेप ।

गोंदली० ना० स्त्री० तरकट विशेष ।

गोंदा० ना० पु० मिट्टी का गिलावा, चिड़ियां के बुलानेके लिये लोई वा पेड़ा ।

गोई० स० क्रि० भू, छिपाई, छिपी, ना० स्त्री० दो बैलादि के जोड़ को कहते हैं ।

गोकरडी० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष वा फल ।

गोकर्ण० ना० पु० बितस्ति, मृगविशेष, खच्चर, गौ का कान, सांप और शिवजीका स्थान प्रसिद्ध ।

गोकर्णनाथ० ना० पु० श्रीशिवजीका तीर्थ-विशेष ।

गोकुल० ना० पु० नगरीविशेष, गौकाकुल ।

गोकुलेश० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।

गोखुरु० ना० पु० गोक्षुर, भूषण विशेष ।

गोचना० स० क्रि० पकड़लेना, गेहूं चना ।

गोचर० ना० पु० समक्ष, इन्द्रियज्ञान, गु० समर्था ।

नाड़ीज्ञान ९ वाहन फेरन १० नटनृत्य ११ जुए १२ तस्करी १३ स्वरज्ञान १४।

चतुर्दशरत्न॰ ना॰ पु॰ चौदहरत्न, अर्थात् अमृत १ चन्द्रमा २ लक्ष्मी ३ धनुष् ४ धन्वन्तरि ५ ऐरावत ६ कौस्तुभमणि ७ उच्चैःश्रवा ८ शङ्ख ९ अप्सरा १० कामधेनु ११ कल्पद्रुम १२ मदिरा १३ विष १४।

चतुर्दशमनु॰ ना॰ पु॰ चौदहमनु, अर्थात् स्वायम्भुव १ स्वारोचिष २ उत्तम ३ तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इन्द्रसावर्णि १४।

चतुर्दशलोक॰ ना॰ पु॰ चौदह लोक, अर्थात् सप्तस्वर्ग और सप्त पाताल, भूः १ भुवः २ स्वः ३ महः ४ जन ५ तप ६ सत्य ७ अतल ८ वितल ९ सुतल १० रसातल ११ तलातल १२ महातल १३ पाताल १४।

चतुर्दशी॰ ना॰ स्त्री॰ चौदहवीं तिथि, चौदस।

चतुर्भुज॰ ना॰ पु॰ विष्णु, नारायण, गु॰ चारि भुजावाला, या चारिमेड़ों का खेत।

चतुर्भुजक्षेत्र॰ ना॰ पु॰ चौमेड़ा खेत।

चतुर्भुजी॰ ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष।

चतुर्भोजन॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकारका भोजन, अर्थात् भोज्य १ भक्ष्य २ लेह्य ३ चोष्य ४।

चतुर्मुख॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

चतुर्मुक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ चारिमुक्ति, अर्थात् सालोक्य १ सामीप्य २ सारूप्य ३ सायुज्य ४।

चतुर्योनि॰ ना॰ स्त्री॰ चारियोनि, अर्थात् स्वेदज १ अण्डज २ उद्भिज ३ जरायुज ४।

चतुर्वेद॰ ना॰ पु॰ चारिवेद, अर्थात् ऋक् १ यजुः २ साम ३ अथर्वण ४।

चतुर्वेदी॰ ना॰ पु॰ चौबे, चारिवेदवक्ता।

चतुर्वर्ग॰ ना॰ पु॰ चारिवर्ग अर्थात् चारिफल।

चतुर्वर्ण॰ ना॰ पु॰ चारिवर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चतुर्वाद्य॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकार को बाजा, अर्थात् तत १ वितत २ घन ३ शिखर ४।

चतुर्बाहु॰ ना॰ पु॰ चतुर्भुज।

चतुर्विंश॰ गु॰ चौबीसवां।

चतुर्विंशति॰ गु॰ चौबीस २४।

चतुर्विवाह॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकार के विवाह, अर्थात् प्राजापत्य १ आर्ष २ गान्धर्व ३ राक्षसी ४।

चतुष्कोण॰ गु॰ चौकोन, चौकोना।

चतुष्पद्धर्म॰ ना॰ पु॰ चारिपद धर्म के, अर्थात् विद्या १ सत्य २ तपस्या ३ दान ४।

चतुष्फल॰ ना॰ पु॰ चारिफल, अर्थात् अर्थ १ धर्म २ काम ३ मोक्ष ४।

चतुष्पाद॰ ना॰ पु॰ पशु, चारिपदवाला।

चतुस्सहस्र॰ गु॰ चारिहजार ४०००।

चतुस्संहिता॰ ना॰ स्त्री॰ चारिसंहिता, अर्थात् ब्राह्मी १ भागवती २ वैष्णवी ३ सौरि ४।

चना॰ ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

चन्द॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।

चन्दन॰ ना॰ पु॰ गन्धसार, गन्धराज, सन्दल।

चन्दवा॰ ना॰ पु॰ मेघडम्बर।

चन्दा॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा मनविलासे यथा (देखति रहौ खिलौना चन्दा, आरि न कीजिय बालगोविन्दा)।

चन्दिया॰ ना॰ स्त्री॰ टटरी, चांदि, छोटी रस्सी।

चन्द्र॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, चांद।

चन्द्रक॰ ना॰ पु॰ कपूर, मयूर, नथ में लगी वस्तु।

चन्द्रकला॰ ना॰ स्त्री॰ चन्द्रमा का सोलहवां भाग, स्त्रियों की धोती विशेष।

चन्द्रकान्त॰ ना॰ स्त्री॰ मणिविशेष।

चन्द्रग्रहण॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा का गहन।

चन्द्रघण्टा॰ ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष।

चन्द्रचूड़॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

गोचरी० ना० स्त्री० दर्शा, प्रकट।
गोजर० ना० पु० कनखजूरा।
गोजिका०
गोजिह्वा० } ना० स्त्री० गोभी।
गोठ० ना० स्त्री० चौपड़आदि खेलनेकी गुटिका अमलपत्ती, किनारी।
गोटा० ना० पु० किनारी।
गोटी० ना० स्त्री० शीतला, माता चेचक।
गोड़० ना० पु० पांव पिंडली, गु० खुदाव।
गोड़ना० स० क्रि० खोदना, खुरचना।
गोड़िया० ना० पु० कहार, जाति विशेष।
गोड़ी० ना० स्त्री० चोरी।
गोण० ना० पु० लोधा, आला, बोरा।
गोत०
गोता० } ना० पु० गोत्र।
गोती० ना० पु० गोबर, गोमल, गु० गोत्रवाला।
गोद० ना० स्त्री० कनियां, गोदी, राशि।
गोदना० स० क्रि० चोंकना, चिह्नदेना।
गोदा० ना० पु० निशान, चिह्न, दबका।
गोदावरी० ना० स्त्री० नदीविशेष जो दक्षिण में है।
गोदी० ना० स्त्री० अकवार, कौला, कनियां।
गोदोहनी० ना० स्त्री० दोहनी।
गोधन० ना० पु० गोबर, गायका धन, गोमल की प्रतिमा जो दिवाली को बनाते हैं।
गोधूम० ना० पु० गेहूं, गोहूं।
गोधूलि०
गोधीरा० } ना० स्त्री० सायङ्काल, सन्ध्या।
गोन०
गोनी० } ना० स्त्री० गोण।
गोप० ना० पु० ग्वाल, कण्ठका भूषण, छिपा।
गोपग्वाल० ना० पु० अहीर।
गोपद० ना० पु० गायका खुर।
गोपन० ना० पु० छिपाव, लुकाव।
गोपनीय०
गोप्य० } गु० छिपाने के योग्य।
गोपाचल० ना० पु० ग्वालियर।
गोपाल० ना० पु० ग्वाल, अहीर, श्रीकृष्णचन्द्र।
गोपालपुर० ना० पु० मथुराजी वा जहां गंगा जी और गोमती का संगम भया है।
गोपिका०
गोपी० } ना० स्त्री० ग्वालों की स्त्रियां।
गोपीनाथ० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
गोबर० ना० पु० गायकी विष्ठा, गोमल।
गोबरगनेश० गु० मोटा, भद्दा, भोंडा।
गोबरी० ना० स्त्री० मिट्टी और गोबर मिला हुआ लीपने के लिये बनाते हैं।
गोभी० ना० पु० कली, नईशाखा।
गोभी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, तरकारी विशेष।
गोमका० ना० पु० कुम्हड़ा, यथा, पुष्पफला महाफला गोमका राजकर्कटी इति निघण्टे।
गोमती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
गोमय०
गोमल० } ना० पु० गोबर।
गोरटी० ना० स्त्री० गोरीस्त्री, सुन्दरी।
गोरसदायन० ना० पु० इन्द्रधनुष जो वर्षा में निकला करता है और सूर्य के सन्मुख होता है, रामचन्द्रिकायाम्, धनु है यह गोरसदायन नाहीं। शरधार बहै जलधार वृथाहीं।
गोरस० ना० पु० इन्द्रियोंका स्वाद, दूध, दही, मट्ठा, छाछआदि।
गोरसदायन० ना० पु० गोरसदायन।
गोरसी० ना० स्त्री० दोहनी।
गोरङ्ग० ना० पु० नारंगी।
गोरा० गु० गौर, उज्ज्वल।
गोरी० ना० स्त्री० उत्तम स्त्री, सुन्दरी।
गोरू० ना० पु० गाय बैल।
गोरोचन० ना० पु० गाय के मूत्र से उत्पन्न पीत वस्तु, गाय के शिर में से उत्पन्न औषध विशेष।
गोल० गु० गोल, चकरीला, ना० पु० मटका।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिनाव नदी जो पंजाव में है।
चन्द्रभाल० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी।
चन्द्रमल्लिका० ना० स्त्री० इलायची।
चन्द्रमा० ना० पु० चांद, मुनिविशेष।
चन्द्रमुखी० गु० जिसका मुख चन्द्रमा सरीखा है अर्थात् अतिसुन्दरी।
चन्द्रमौलि० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी।
चन्द्रवधू० } ना० स्त्री० बीरबहूटी कीड़ा जो
चन्द्रवधूटी० } लालमकरीसा होता है, रोहिणी।
चन्द्रवंशी० गु० जो चन्द्रमा से उत्पन्न भये क्षत्रियकी जातिविशेष अर्थात् सोमवंशी।
चन्द्रबाला० ना० स्त्री० छोटी कटाई, बड़ी इलायची।
चन्द्रसिता० ना० स्त्री० कपूर।
चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत।
चन्द्रहार० ना० पु० गलेका गहना विशेष।
चन्द्रहास० ना० पु० खड्ग, तलवार, राजाविशेष।
चन्द्रहासा० ना० स्त्री० गुरच।
चन्द्रहासी० ना० स्त्री० छोटी कटाई।
चन्द्रा० गु० मुण्डला, गुंजा, बुद्धिमान्।
चन्द्रातप० ना० पु० चांदनी, चन्द्रिका।
चन्द्राना० अ० क्रि० सूखना, मुरझाना।
चन्द्रायण० ना० पु० व्रत चान्द्रायण जो एक महीने १ एक ग्रास भोजन में शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष में बढ़ाने घटाने की रीति से होता है।
चन्द्रिका० ना० स्त्री० चांदनी, बाकुची औषध, पुस्तकविशेष, चकोर।
चन्द्रोदय० ना० पु० चन्द्रमा का उदय, औषध विशेष।
चपकन० ना० स्त्री० अंगरखा विशेष, फारसी शब्द।
चपकना० अ० क्रि० मिलजाना, बैठिजाना, सटना, चिपटजाना, लसिजाना।
चपकाना० स० क्रि० मिलाना, बैठाना, चिपटाना।
चपटना० अ० क्रि० चपटा होना, लपटना।
चपटा० गु० बैठवां, लपटा।
चपटाना० स० क्रि० बैठाना, मिलाना।
चपटी० ना० स्त्री० दो स्त्रियां परस्पर प्रसंगित, मिलीहुई वस्तु।
चपचपड़० ना० पु० खाते समय मुख में का शब्द।
चपड़ा० ना० पु० लाखविशेष।
चपड़ाऊ० गु० निर्लज्ज, ढीठ, ना० पु० जो पीछे दबे।
चपड़ान० स० क्रि० खोटा करना, ढीठकरना।
चपना० अ० क्रि० लज्जित होना, आधीन होना, मसलजाना, दबजाना।
चपनी० ना० स्त्री० ढकना, ढपना, छोटा।
चपरास० ना० स्त्री० पैदल के लिये स्वामीका चिह्न।
चपरासी० ना० पु० चपरास बांधनेहारा, दूत।
चपल० गु० चंचल, उज्ज्वल, सुन्दर, ना० पु० पारा।
चपला० ना० स्त्री० कौंधा, बिजली।
चपाती० ना० स्त्री० फुलका, यह शब्द फारसी है।
चपाना० अ० क्रि० झेंपना, लज्जित करना।
चपेट० ना० स्त्री० } धप्पा, थप्पड़, झोलेसे जो
चपेटा० ना० पु० } विपत्ति आजावे।
चप्पा० गु० चारि अंगुली का प्रमाण।
चप्पी० ना० स्त्री० देहका दाबना या मलना।
चबाई० ना० स्त्री० कुचलाई, चर्वण, गु० निन्दक, दूषक, द्वेषिक, नकली।
चबाउ० ना० पु० बतकहाउ, कहासुनी।
चबाना० स० क्रि० कुचिलना, चाबना।
चबायिन० ना० स्त्री० निन्दायुत, निन्दक।
चाविक० ना० स्त्री० चाब औषध।

गोलक० ना० पु० पति के मरने के उपरान्त जारजात, पुत्र, आंखका घुर।
गोलकुण्डा० ना० पु० नगर विशेष दक्षिण में है।
गोलता० ना० स्त्री० गोलाई।
गोलरूप० गु० गोलाकार।
गोला० ना० पु० गोल वस्तु, खाता, धरन, लोहे का पिण्डा, जंगली कबूतर और नारियलका गूदा।
गोलाई० ना० स्त्री० परिधि, घेरा, गोलापन।
गोलाकार० गु० गोलरूप।
गोलाध्याय० ना० पु० सिद्धान्तशिरोमणि का एक प्रकरण।
गोलिका० ना० स्त्री० पति के मरने के उपरान्त जारजात कन्यका, गोली।
गोली० ना० स्त्री० छोटागोला।
गोलोक० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका विशेष स्थान।
गोलोमा० ना० स्त्री० वन ओषध।
गोवना० स० क्रि० छिपाना, भूत, क्रिया, गोई।
गोवर्द्धन० ना० पु० पर्वत विशेष जो ब्रज में है।
गोविन्द० ना० पु० कृष्णचन्द्र, वेदलभ्य।
गोविन्दचन्द्रिका० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष।
गोशाला० ना० स्त्री० गाय बैल रहनेका घर।
गोष्ठ० } ना० स्त्री० बांधनू, मेल, सम्मत, सलाह।
गोष्ठी० }
गोष्पद० ना० पु० गायका खुर।
गोसाईं० ना० पु० ईश्वर, तपी, सन्तोंका मार्ग।
गोसैयां० ना० पु० ईश्वर, परमात्मा।
गोस्तनी० ना० स्त्री० दाख, अंगूर।
गोह० ना० स्त्री० विसखपरा के डौलका जंतु।
गोहरा० ना० पु० उपला।
गोहार० ना० स्त्री० हुल्लड़, रौला, सहायता, मदद।
गोहूं० ना० पु० गेहूं, गोधूम, अन्न विशेष।
गोहूअन० ना० पु० सर्प विशेष।
गोक्षुर० ना० पु० गोखुरू, पौधा विशेष।
गोत्र० ना० पु० वंश, घराना संज्ञा, पर्वत।
गोत्रघात० } ना० पु० निजकुल का मनुष्य मारना।
गोत्रवध० }
गोत्रज० ना० पु० गोत्री, सम्बन्धी, अपने घराने का।
गोत्रा० ना० स्त्री० धरती।
गोत्री० ना० स्त्री० गोत्रज।
गौ० ना० स्त्री० गाय।
गौं० ना० स्त्री० दाव, घात, औसर, लाभ।
गौंगीर० गु० घाती, दाव खेलनेहारा।
गौगोड़० ना० पु० जब गाय ब्यानी दूध नहीं देती है तब ग्वाल उसकी योनि में हाथ डालकर खड़ी करते हैं।
गौड़० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण विशेष, कायस्थ जाति विशेष।
गौड़िया० ना० पु० गौड़देशवासी, चैतन्य का शिष्य।
गौड़ी० ना० स्त्री० गुड़की मदिरा, जहां गायें खड़ी होती हों।
गौण० गु० जो मुख्य नहीं, अर्थात् अप्रधान।
गौतम० ना० पु० मुनि विशेष, पर्वत विशेष।
गौथन० ना० पु० गायका स्तन।
गौदन्ती० ना० पु० हरताल वा औषध विशेष।
गौदान० ना० पु० गायका दान।
गौना० ना० पु० विवाह करके पीछे दिनों में स्त्री० को अपने घर लाना।
गौनहा० } ना० पु० गौने में दूल्ह के साथी।
गौनहार० }
गौमलो० ना० पु० गोरोचन।
गौर० ना० पु० धवबृक्ष, जाति विशेष, चिह्न, शुक्लवर्ण।
गौरक० ना० पु० तीतरपक्षी, गेरू।
गौरण्ड० ना० पु० गोरा।
गौर्य्या० ना० स्त्री० भवानी, पार्वती।

चबेना० ना० पु० } भूनाहुआ अन्न।
चबेनी० ना० स्त्री० }

चव्य० } ना० स्त्री० चाब, औषध।
चव्यन० }

चमक० ना० पु० डंक।

चमक० ना० स्त्री० चटक, झलक, भड़क।

चमकता० गु० उजागर, उजला।

चमकना० अ० क्रि० झलकना, लौकना, भाग्य उदयहोना, क्रोधितहोना।

चमकाना० स० क्रि० झलकाना, लुकाना, घुमाना, नचाना, फैलाना।

चमकाव० ना० पु० } चमक, भड़क।
चमकाहट० ना० स्त्री० }

चमकीला० गु० चमकने हारा, चमकदार।

चमकौना० ना० पु० चमकाने वाला।

चमगादड़० ना० पु० }
चमगीदर० ना० पु० }
चमगुदड़ी० ना० स्त्री० } राति का उड़नेवाला पक्षी विशेष जो वृक्षों में उलटा टँगता है।
चमगुदरी० ना० स्त्री० }
चमगोदड़० ना० पु० }
चमगोदरी० ना० स्त्री० }

चमचमात० ना० पु० चमकित।

चमचमाना० अ० क्रि० चमकना, झुनझुनाना।

चमचमाहट० ना० स्त्री० चमकाहट।

चमड़ा० ना० पु० चर्म, खाल।

चमत्कार० ना० पु० अचम्भा, भड़क, बढ़ती, ऐश्वर्य।

चमत्कारी० गु० भड़कीला, भाग्यशाली।

चमर० ना० पु० चँवर, सुरभि गायकी पूंछ।

चमरई० ना० स्त्री० चमारपन, चमार का काम।

चमरी० ना० स्त्री० सुरभि।

चमार० ना० पु० चर्मकार, नीचजाति विशेष।

चमारिन्० } ना० स्त्री० चमार की स्त्री।
चमारी० }

चमू० ना० स्त्री० सैन्य, फौज।

चमूप० }
चमूपति० } ना० पु० सेनापति, सिपहदार।
चमूपाल० }

चमेटा० ना० पु० चपेटा।

चमोटा० ना० पु० } चमड़ा जिसपर नाई छुरा फिराते हैं।
चमोटी० ना० स्त्री० }

चम्पई० गु० नारंजी रंग।

चम्पक० ना० पु० वृक्षविशेष जिसका फूल पीला सुगन्धित होता है।

चम्पत० ना० पु० भागना।

चम्पतहोना० अ० क्रि० भागजाना, छुपना।

चम्पा० ना० पु० चम्पक।

चम्पाकली० ना० स्त्री० चम्पाकी कली के समान गहना विशेष गले में पहिनते हैं।

चम्मू० ना० पु० जलपात्र विशेष जिससे देवता को जल चढ़ाते हैं।

चम्बेली० ना० स्त्री० वृक्ष या उसका फूल।

चय० ना० पु० समूह, ढेर, अंश।

चयन० ना० पु० आनन्द, कुशल, क्षेम।

चर० ना० पु० चारा, धाह, दूत, गु० जिस को चलने की शक्ति हो, या जो चलने व उठने के योग्य हो यथा नर नारि पशु पक्षी आदि, चारा।

चरक० ना० पु० वैद्य विद्या का ग्रन्थ विशेष, कोढ़।

चरकटा० ना० पु० चारा काटनेवाला।

चरका० ना० पु० श्वेतकुष्ठ विशेष, सफेद कोढ़।

चरकी० गु० कोढ़ी।

चरचना० स० क्रि० देह में चन्दन लगाना, चर्चना।

चरचर० ना० पु० गप, बक।

चरचराना० अ० क्रि० चटकना, मरमराना।

चरचेला० गु० बकी, बकवादी।

चरण० ना० पु० पांव, श्लोक आदिका एकपद

गौरव० ना० पु० बड़प्पन, गुरुताई।
गौरा० ना० पु० चटक, चिड़ा, स्त्री० पार्वती।
गौरिया० ना० स्त्री० चिड़िया।
गौरिला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
गौरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, हल्दी, रात, पार्वती, तुलसी, गौरोचन।
गौशाला० ना० स्त्री० गाइयों का स्थान।
ग्रथित० गु० बंधाहुआ, पिरोयाहुआ।
ग्रन्थ० ना० पु० पुस्तक, पोथी, शास्त्र।
ग्रन्थकार० ना० पु० ग्रन्थकर्त्ता, कवि।
ग्रन्थनि० ना० पु० महापुरुडी, केलावृक्ष।
ग्रन्थि० ना० स्त्री० गांठि।
ग्रन्थिक० ना० पु० पीपरामूल।
ग्रन्थिमान्० ना० पु० हरछिंवाड़।
ग्रन्थिल० ना० पु० कांकरवृक्ष, करील।
ग्रस्त० गु० शब्द जो चबाय के कहा गया, खाया गया, घिराहुआ।
ग्रह० ना० पु० सूर्यादि नवग्रह, घर।
ग्रहण० ना० पु० हाथ में लेना, अंगीकार, चन्द्रमा, सूर्य का गहन।
ग्रहस्थापन० ना० पु० नवग्रहों को बैठाय के उनको आवाहन करना।
ग्रहीता० गु० ग्रहण करनेहारा।
ग्राम० ना० पु० गांव, पुर, स्त्रीबात, समूह, रामचन्द्रिकायां, गिरिग्राम लै लै हरिग्राम मारि, मनोपभिनी पग्रदन्ती विदारि।
ग्रामनर० ना० पु० गँवार गांववासी।
ग्राम्य० गु० गांव में जो उत्पन्नभया।
ग्रामीण० ना० पु० गांव में बसनेहारा, गँवार।
ग्राव० ना० पु० पत्थर, पर्वत।
ग्रास० ना० पु० कौर, लुकमा।
ग्रासक० गु० घेरनेवाला, रोकनेहार।
ग्रासना० स० क्रि० घेरना, रोकना।
ग्रासित० गु० घेरागया, नाशित।
ग्राह० ना० पु० मगर।
ग्राहक० गु० ग्रहणकरनेहार, अंगीकारकर्त्ता।
ग्राही० गु० ग्राहक, लेनेवाला, स्त्री० नाकिन।
ग्राह्य० गु० जो ग्रहण करने के योग्य है।
ग्रीवा० ना० स्त्री० गला, गर्दन, गलेका पृष्ठभाग।
ग्रीष्म० ना० स्त्री० तपन, गरमी।
ग्रैवेय० ना० पु० गलेका गहना, हसली, माला आदि।
ग्लानि० ना० स्त्री० घृणा, लाज, थकाई।
ग्वाल०, ग्वाला० ना० पु० पशुपालक, अहीर।
ग्वालिनि० ना० स्त्री० अहीरिनि।
ग्वैंड़० अव्य० समीप, पास।
ग्वैंड़ा० ना० पु० नगर व गांवका आसपास।

(घ)

घंघोरना०, घंघोलना० स० क्रि० मथना, मिलाना, धोना।
घंघरी० ना० स्त्री० लहंगा।
घट० ना० पु० देह, मन।
घटक० ना० पु० मध्यस्थ, बिचवैया, संदेशी।
घटज० ना० पु० अगस्त्यमुनि।
घटना० अ० क्रि० मन्दाहोना, कमहोना, योग्यहोना।
घटनीय० गु० जो घटने के योग्य है।
घटयोनि० ना० पु० अगस्त्य मुनि।
घटा० ना० स्त्री० मेघोंका उमड़ना, मेघ, भीड़, ठट्ठ, मधुककड़ी।
घटाटोप० ना० पु० पालकी वा रथका आच्छादन, गिलाफ, चारों ओर से घिरना।
घटाना० स० क्रि० कम करना।
घटाव० ना० पु० कमती।
घटावना० स० क्रि० घटाना।
घटिका० ना० स्त्री० घड़ी, मुहूर्त, एँड़ी के ऊपर का भाग।
घटित० गु० योग्य, गम्य।
घटिया० गु० थोड़े मोलका, सस्ता, घाटिदेनेहारा, धोखा देनेहारा, कपटी।
घटी० ना० स्त्री० क्षति, हानि, कमी, घड़ी।

चरणपीठ० ना० पु० खड़ाऊं।

चरणामृत०
चरणोदक० } ना० पु० जल जिसमें देवता वा गुरु वा ब्राह्मणादि के पांव धोयेगये हों।

चरती० गु० जो व्रत नहीं करता, व्रती नहीं।

चरन० ना० पु० चरण।

चरना० अ० क्रि० चुगना, फिरना।

चरनी० ना० स्त्री० थान या कठरा, जिस में बैल भूसा खाते हैं।

चरम्मा० ना० स्त्री० चौखमी।

चरपरा० गु० तीता, कडुआ, तीक्ष्ण, फुर्तीला।

चरपराना० अ० क्रि० परपराना।

चरपराहट० ना० स्त्री० परपराहट।

चरपरिया० गु० मनचला, सुघड़।

चमर० गु० पिछला।

चरवाई० ना० स्त्री० चराई।

चरवाहा० ना० स्त्री० रखवारा, चरानेहारा।

चरस० ना० पु० मादक वस्तु, मोट, पुरवट।

चरसा० ना० पु० अधोड़ी, खाल।

चराई० ना० स्त्री० चराने के दाम, चराने का काम।

चराक० गु० चरनेहारा, पशु।

चराचर० ना० पु० चल अचल सजीव निर्जीव जन्तु।

चरान० ना० पु० तराई।

चराना० स० क्रि० चुगाना।

चराव० ना० पु० खेत या धरती जो चरने के योग्य।

चरावना० स० क्रि० चराना।

चरित० ना० पु० चरित्र।

चरितार्थ० ना० पु० कृतार्थ।

चरित्र० ना० पु० स्वभाव, शील, वृत्तांत।

चरुआ० ना० पु० भांड़ा।

चर्चक० गु० चर्चा करनेहारा, वादी।

चर्चना० स० क्रि० विचारना, समझना, पूजना, पहिचानना।

चर्चरी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, कर्ता, विक्र।

चर्चा० ना० स्त्री० प्रस्ताव, बतकहाव।

चर्चित० गु० लगाया हुआ, कहा हुआ।

चर्म० ना० पु० चमड़ा।

चर्मकार० ना० पु० चमार।

चर्मपात्र० ना० पु० चमड़ा का डोल, मशक

चर्मवस्त्र० ना० पु० चमड़ा का वस्त्र अर्था ओढ़न।

चर्य्या० ना० स्त्री० तपस्या करने में मुनि अथवा रहनि।

चर्वण० ना० पु० दांतों से पीसना, चबेना।

चर्स० ना० पु० चरसा।

चल० गु० जो स्थिर न हो।

चलत० गु० चलति।

चलदल० ना० पु० पीपल।

चलन० ना० पु० चालि, व्यवहार।

चलनता० ना० स्त्री० बिक्रनहार, खपती।

चलना० अ० क्रि० जाना, बिदाहोना, बहना

चलनी० ना० स्त्री० हांगी, गु० चलती।

चलविचल० ना० पु० चूक, भूल, भ्रम।

चलविधरा० गु० अड़ियल, मचला।

चलयौवन० ना० पु० चलायमान यौवन।

चलसुगन्धा० ना० स्त्री० शोचर लोन।

चलाचल० ना० पु०
चलाचली० ना० स्त्री० } दौड़ धूप।

चलान० ना० स्त्री० भेजाव।

चलाना० स० क्रि० दौड़ाना, भगाना, छोड़ना, बढ़ाना, अभ्यास डालना, सिखलाना।

चलायमान० गु० जो स्थिर न हो, लोल।

चलाव० ना० पु० चलन।

चलित० गु० जो चलता है।

चलिश्री० गु० खिलाड़ी, चपल।

चलू० ना० पु० आचमन।

चप० ना० पु० नेत्र, आंखि

चषक० ना० पु० पियाला, जिसमें जलादि पीते हैं।

घट्यादि० ना० स्त्री० घड़ी आदि।
घड़घड़ाना० अ० क्रि० गरजना।
घड़ा० ना० पु० कुम्भ, घट, कलश मिट्टीका।
घड़िया० ना० स्त्री० कुल्हिया, मधुमक्खी का छत्ता, कोल, पियाली।
घड़ियाल० ना० पु० मगर, ग्राह, घण्टा।
घड़ियाली० गु० घण्टा बजानेहारा।
घड़ी० ना० स्त्री० साठिपल, समय मापने का यन्त्रविशेष।

घड़ौंच० ना० पु० } तिकठी, तिपाई, पानी
घड़ौंची० स्त्री० } का घड़ा रखने के लिये काष्ठ रचित वस्तु।

घणा० गु० घना।
घण्टा० ना० स्त्री० बाजा विशेष, अढ़ाईदण्ड।
घण्टालिका० ना० स्त्री० मधुकर्कटी घण्टी।
घण्टाली० ना० स्त्री० छोटा घण्टा।
घन० ना० पु० घटा, मेघ, गु० घना, दृढ़, विस्तार, मूर्ति ना० पु० लोहार का बड़ा हथौड़ा।
घनक० ना० पु० सँभालू पौधा।
घनगरज० ना० पु० गर्जन, गु० ऊंचा शब्द।
घनघनाना० अ० क्रि० झनझनाना, फहराना।
घनघोर० ना० पु० घटा, घेरा, घन गरजना।
घनतनवर्ण० गु० जिसका वर्ण मेघ के समान हो, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
घनरस० ना० पु० जल, पानी।
घनश्याम० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, गु० काली घटा।
घनस० ना० पु० पक्षी विशेष।
घनसार० ना० पु० कपूर, जल, चन्दन।
घना० गु० पिचपिच, बहुत।
घनासन० ना० पु० भैंसा।
घनाह्व० ना० पु० नागरमोथा।
घनेरा० गु० बहुत, अधिक।
घबराना० अ० क्रि० व्याकुल होना, हड़बड़ाना।
घबराहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, हड़बड़ी।
घमण्ड० ना० पु० गर्व्व, अहंकार, गरूर।
घमण्डी० गु० अहंकारी, मगरूर।
घमरौल० ना० स्त्री० रौला भीड़।
घमसान० ना० पु० युद्ध, लड़ाई।
घमाघम० गु० कचाकच।
घमाना० स० क्रि० धूप दिखाना, धूप में खड़ा होना।
घमासान० ना० पु० घमसान।
घमोई० ना० पु० तृणविशेष।
घर० ना० पु० गृह, मकान।
घरनई० ना० स्त्री० चौपड़ा, बेड़ा।
घरना० स० क्रि० गढ़ना।
घरनी० ना० स्त्री० स्त्री।
घरबार० ना० पु० घराना।
घरबारी० ना० स्त्री० गृहस्थ।
घराना० ना० पु० कुटुम्ब, घर के लोग।
घरामी० ना० पु० छवैया।
घरी० ना० स्त्री० लपेटे हुये कपड़ों की गठरी, तह लगे हुये कपड़े, घड़ी।
घरेलू० गु० घर का पालतू।

घरौंदा० } ना० पु० छोटा घर जो लड़के
घरौर० } खेलने के लिये बनाते हैं वा जिस
घरौआरा० } में खिलौना रखते हैं।

घर्घर० ना० पु० चक्की आदि का शब्द।
घर्घरा० ना० स्त्री० घाघरा।
घर्म० ना० पु० प्रस्वेद, जलन, धूप, घाम, काल।
घर्षण० ना० पु० घिसना, रगड़ना।
घलूआ० ना० पु० रूंक वा घाता जो तोल से अधिक लिया जाता है।
घवरि० ना० स्त्री० गुच्छ, गुंचा।
घसन० ना० पु० घर्षण।
घसना० स० क्रि० घिसना, रगड़ना।
घसियारा० ना० पु० घास काटनेहारा।
घसियारिन० ना० स्त्री० घसियारे की भार्य्या।

सक० ना० स्त्री० पीड़ा, टीस।
सकना० अ० क्रि० टीसना, गड़ना।
सका० ना० पु० लालसा, प्रेम, चाट।
सना० अ० क्रि० मसकना, कसकना, गड़ना।
हकना० अ० क्रि० चहचहाना।
हकार० ना० स्त्री० चहचहाहट।
हकारना० अ० क्रि० चहचहाना।
हचहाना० अ० क्रि० पक्षियों का बोलना।
हचहाहट० ना० स्त्री० पक्षियों का शब्द।
टी० ना० स्त्री० दो नखों से दबाना अर्थात् चुटकी काटना।
ला० ना० पु० कीचड़।
हिये० अव्य० चाहिये।
० गु० चारि, ४ अव्य० चाहो।
घा० ना० पु० चारोंओर।
चक० } गु० चारोंओर, सब भग।
दिश० }
युग० ना० पु० चारोंयुग।
ु० ना० पु० नेत्र, आंखि।
ःश्रवा० ना० पु० सांप, नाग।
प० ना० पु० भैरवविशेष।
० ना० स्त्री० पौधाविशेष।
ड० ना० पु० आनन्द, मंगल, खुशी।
क० गु० आनन्द में लाभयुत।
ड० ना० स्त्री० टेक, थम्भ।
द० ना० पु० चन्द्रमा।
दनी० ना० पु० उजाला, ज्योति।
दना० ना० स्त्री० चांदकी ज्योति, सफेद बिछौना।
दनीचौक० ना० पु० चौड़ा मार्ग
दा० ना० पु० चिड़री, पन्नी, चन्दा
दी० ना० स्त्री० रूपा, रजत।
० ना० स्त्री० बन्दूक की कल, काठ
ना० स० क्रि० ठांसना, जोड़ना।
क० } ना० पु० चक्र जिसपर कुम्हार बासन
का० } बनाता है, पहिया।

चाकी० ना० स्त्री० चक्की।
चाखना० स० क्रि० स्वादलेना, मजालेना।
चाचा० ना० पु० पिताकाभाई, चाचा।
चाची० ना० स्त्री० चाचा की स्त्री।
चाञ्चल्य० ना० पु० अस्थिरता।
चाट० ना० स्त्री० चसका, लालच, पदार्थ।
चाटक० ना० पु० मगर, त्रिया, तिलस्म, इन्द्रजाल।
चाटकी० गु० चाटक जाननेहारा।
चाटना० स० क्रि० जीभसे रसलीलना, चभड़ चभड़ करना।
चाटी० ना० स्त्री० मथनियां।
चाणक० ना० पु० करारा, भयदाय, क्रोधकारक वार्त्ता।
चाणक्य० ना० पु० राजाविशेष का मंत्री नीतिग्रन्थ।
चाणूड० } ना० पु० राजाकंसका मल्ल।
चाणूर० }
चाण्डाल० गु० निर्दयी, अतिनीचजाति।
चाण्डूल० } ना० पु० पक्षी विशेष।
चाण्डोल० }
चातक० ना० पु० पपीहा पक्षी।
चातर० ना० पु० महाजाल।
चातुर० गु० चतुर, चारि, बुद्धिमान्।
चातुरी० ना० स्त्री० धूर्त्तता, चालाकी, बुद्धिमानी।
चातुर्य्य० ना० पु० चतुराई।
चातुर्वर्ण्यदेश० ना० पु० देश, जहां चारोंवर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र रहते हैं।
चातृक० ना० पु० पपीहा।
चान्द्रमास० ना० पु० कृष्णपक्ष प्रतिपदा से पूर्णिमापर्य्यन्त।
चान्द्रायण० ना० पु० व्रत जिसमें भोजन प्रतिदिन एकग्रास घटाते हैं यथा चन्द्रमा प्रतिदिन घटता है।
चाप० ना० धनुष्, कमान, धार्वासेव।

घसीटना० स० क्रि० खींचना, कढ़ेलना।
घसीटा० स० क्रि० जो कढ़ेला गया।
घसीला० गु० तृणस्थान, जहां घास हो।
घहराना० अ० क्रि० गरजना।
घाई० ना० स्त्री० घात, अंगुली का मध्यस्थान, सठ वा खड्ग का चीरा।
घाई० ना० स्त्री० ओर, पक्ष।
घाघ० ना० पु० प्राचीन, चतुर, गु० बाजीगर, इन्द्रजालिक।
घाघरा० ना० पु० लहँगा, पौधाविशेष, नद विशेष।
घाट० ना० पु० नदी वा तालाब में उतरने या स्नान करनेका स्थान, कर्णाटकदेशका पर्व्वत, डौल, घटी, गु० न्यून।
घाटा० ना० पु० चढ़ाव, घटी।
घटिया० ना० पु० घाट परका ब्राह्मण, जो स्नान करनेवाले के कपड़े बचाते हैं।
घाटी० ना० स्त्री० पर्व्वतों में संकेत मार्ग।
घात० ना० स्त्री० दवा, मार, दाव, हत्या, चोट।
घातक० गु० हत्यारा, शत्रु, मारनेवाला।
घाता० ना० पु० रूंग, मोल वा तौल से अधिक लेना।
घातिनी० ना० स्त्री० हत्यारिन, मारनेवाली।
घाती० गु० दांव लेनेवाली, मारनेवाला।
घातुक० गु० अपकारी, निठुर, हत्यारा।
घान० ना० पु० उखली वा चक्की आदि में जितना एक बार डालते हैं, विवाह में कर्म विशेष।
घानी० ना० स्त्री० तिल आदि, कोल्हू, चक्की।
घाबड़ा० } गु० व्याकुल, हैरान।
घाबरा० }
घाम० ना० पु० धूप।
घामड़० गु० भोला, उल्लू, अहमक।
घायल० गु० हथियार लगने से जिस के घाव भया।
घाल० ना० स्त्री० बुराई, बिगाड़।
घालक० गु० नाशिक, हन्तक, मारनेवाला।
घालन० ना० पु० हनन, वधन, मारण।
घालना० स० क्रि० बिगाड़ना, उजाड़ना, घुसेड़ना, मारना, पटकना।
घालित० गु० माराहुआ, उजाड़ाहुआ।
घाव० ना० पु० चीरा, जख्म।
घास० ना० स्त्री० तृण, खर।
घासी० } गु० घासवाला।
घासू० }
घिघिआना० अ० क्रि० आधीनी करना, खड़खड़ाना, जिगजिगी करना।
घिचपिच० गु० घना, आसपास।
घिन० ना० स्त्री० घृणा, अराह, तबरुकुन।
घिनाना० अ० क्रि० कुढ़ना, असह, देख के कुढ़ना।
घिनौना० गु० जिस को देखकर घिन आवे।
घिया० ना० स्त्री० तुरई, तरकारी विशेष।
घिरना० अ० क्रि० घेरे में पड़ना, उमण्डना।
घिरनी० } ना० स्त्री० गरारी, गिर्री, कपोत विशेष, चरखी।
घिरणी० }
घिराना० स० क्रि० घेरा करवाना।
घिसना० स० क्रि० रगड़ना, खियाना, स० क्रि० मलना।
घिसाना० स० क्रि० रगड़ना, मलाना।
घिसाव० ना० पु० } रगड़, रगड़ाहट।
घिसावट० स्त्री० }
घिसियान० स० क्रि० घसीटना।
घीकुवार० ना० स्त्री० औषध पौधा विशेष।
घुंघुची० ना० स्त्री० बेलिविशेषकाफल वा बीज।
घुंघुरू० ना० पु० चौरासी, पौटा।
घुटुआ० ना० पु० जानु गांठि पांव की।
घुण्डी० ना० स्त्री० वस्त्र आदि की गोल वस्तु यथा अँगरखे में होती है।
घुटना० ना० पु० टेवना, जानु, अ० क्रि० घिसना, सांस रुकजाना।

चापकर्ण॰ ना॰ पु॰ रोदा, पनच कमान की।

चापन॰ ना॰ पु॰ दाबन, रामायणे यथा—(मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई, लगे चरण चापन दोउ भाई)।

चापक्षेत्र॰ ना॰ पु॰ धनुषाकार क्षेत्र।

चाप्य॰ ना॰ पु॰ कूट।

चाबना॰ स॰ क्रि॰ दांतसे कुचलना, कुचलना।

चाबी॰ ना॰ स्त्री॰ कुंजी।

चाम॰ ना॰ पु॰ चर्म।

चामर॰ ना॰ पु॰ चमर, छन्दविशेष।

चामीकर॰ ना॰ पु॰ सुवर्ण, सोना।

चामुण्डा॰ ना॰ स्त्री॰ योगिनीभेद, देवी विशेष।

चाम्पेय॰ ना॰ पु॰ चम्पवृक्ष।

चाय॰ ना॰ पु॰ चोप, हर्ष, स्वाद।

चार॰ गु॰ गिन्ती ४ ना॰ पु॰ दूत, पदाति.।

चारिखानि॰ ना॰ स्त्री॰ स्वेदजादि।

चारण॰ / **चारन॰** } ना॰ पु॰ नचवैया, भांड़, भाट, प्रेष्य।

चारा॰ ना॰ पु॰ वनस्पति, पशुभोजन, फ़ारसी शब्द है।

चारी॰ गु॰ चलनेवाला, ना॰ स्त्री॰ चुगली, चराई, चारि।

चारु॰ गु॰ सुन्दर, अच्छा, ना॰ पु॰ पद्माक।

चारुपर्णी॰ ना॰ स्त्री॰ गन्धपसारन।

चारुफल॰ ना॰ पु॰ अंगूर, दाख।

चार्वाक॰ गु॰ वेदबाह्य, नास्तिक विशेष।

चाल॰ ना॰ स्त्री॰ गति, चलन, रीति।

चालना॰ स॰ क्रि॰ झाड़ना, चाला करना।

चालनी॰ ना॰ स्त्री॰ आटा छानने का पात्र।

चाला॰ ना॰ पु॰ गौना, सफ़र, सायत।

चाली॰ ना॰ पु॰ मिसकारी, हीलाबाज़।

चाव॰ ना॰ पु॰ चाय, चारिअंगुल की माप, बांस विशेष।

चावल॰ ना॰ पु॰ तण्डुल, बिरंज।

चाष॰ ना॰ पु॰ नीलकण्ठ पक्षी, लहटोरवा, यथा (लोहपृष्ठस्तु कंकः स्यादथ चाषः किकीदिविः इत्यमरः) रामायणे (चारा चाष बाम दिशि लेई, मनौ सकल मंगल कहि देई)।

चास॰ ना॰ स्त्री॰ हलचलाना।

चासना॰ स॰ क्रि॰ हलचलाना।

चासा॰ ना॰ स्त्री॰ हलवाहा।

चाह॰ ना॰ स्त्री॰ इच्छा, प्रेम, रीझ, छोह।

चाहक॰ ना॰ पु॰ स्त्री॰ छोही, हितकारी।

चाहत॰ ना॰ स्त्री॰ चाह।

चाहना॰ स॰ क्रि॰ प्रेम करना, इच्छा करना, प्रार्थना करना, मांगना।

चाहिये॰ अव्य॰ अवश्य।

चाहिता॰ गु॰ प्यारा, मन भावित।

चाहिती॰ ना॰ स्त्री॰ प्यारी।

चाहो॰ अव्य॰ अथवा।

चिक॰ ना॰ स्त्री॰ पीड़ाविशेष, परदह।

चिकटा॰ ना॰ पु॰ टसर का कपड़ा विशेष।

चिकठा॰ गु॰ चिकट।

चिकना॰ ना॰ पु॰ तेल वा घृत गु॰ उजला, सुन्दर, तिलहा, अजितेन्द्रिय, चंचला, और चिकनियां।

चिकनाई॰ ना॰ स्त्री॰ चर्बी, भा॰ वा॰ चंचलाहट, ओप, झलक।

चिकनाना॰ स॰ क्रि॰ उज्ज्वल करना, ओपना।

चिकनाहट॰ ना॰ स्त्री॰ उज्ज्वलता, ओप सुन्दरता।

चिकवा॰ ना॰ पु॰ जाति विशेष जो मांस बेचता है।

चिकार॰ ना॰ पु॰ शोर, चिलाहट, चेंचें।

चिकारना॰ अ॰ क्रि॰ चेंचें करना, नाकदिना, शोर करना, चिल्लाना।

चिकारा॰ ना॰ पु॰ मृग विशेष, छोटी सारंगी।

चिकित्सक॰ ना॰ पु॰ वैद्य, तबीब।

चिकित्सा॰ ना॰ स्त्री॰ वैदई, तिबाबत।

चिकुर॰ ना॰ पु॰ बाल, केश।

चिकोरना॰ स॰ क्रि॰ चिल्होरना, चोंथियाना।

चिकोरा० गु० तरल, चंचल।
चिक० ना० स्त्री० बकरी, अजा, काव्ये यथा (पाही खेती चिक धन यह विधियन नद्दवारि, येते पर जो नहिं नशै जाइ करै अधवारि)।
चिकट० गु० चिकटा, मलिन।
चिकण० गु० चिकना।
चिकहा० ना० पु० चिकवा, बुजकस्साब।
चिकार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट।
चिगड़ा० ना० पु० } झींगा।
चिगड़ी० ना० स्त्री० }
चिगनी० ना० स्त्री० } मुरगी का बच्चा।
चिगा० ना० पु० }
चिघाड़० ना० स्त्री० किलकार, कूक।
चिंघाड़ना० अ० क्रि० किलकारना।
चिंघाड़ा० ना० पु० चिंघाड़।
चिचड़ी० ना० स्त्री० किलनी।
चिचिआना० अ० क्रि० चिल्लाना, मिमियाना।
चिञ्चा० ना० स्त्री० अमिलीवृक्ष।
चिट० ना० स्त्री० चीर, धज्जी।
चिटकारा० ना० पु० छींटा, चिह्न।
चिट्टा० गु० गोरा, सफेद, ना० पु० एक रुपया।
चिट्ठा० ना० पु० दिन दिनका लेखा या कमाई या रोजनामा।
चिट्ठी० ना० स्त्री० पत्र, पाती।
चिड़० ना० स्त्री० ग्लानि, खिजावट।
चिड़चिड़ा० गु० खुन्साहा, भनभना, ना० पु० पौधाविशेष।
चिड़ना० अ० क्रि० झुँझलाना, खिजना, खिसियाना।
चिड़पड़ा० गु० चरपरा, तीता, तीक्ष्ण, कड़ुआ।
चिड़ा० ना० पु० कलक।
चिड़ाना० स० क्रि० खिजाना, सताना, छेड़ना।
चिड़िया० ना० स्त्री० गौरिया, पक्षी।
चिड़ीमार० ना० पु० बहेलिया, बधिक।

चिरिंड० ना० स्त्री० नृत्य विशेष।
चित० ना० पु० चित्त, चैतन्य, गु० सुधालेटना।
चितकबरा० गु० चितला, कबरा, अबलक।
चितना० अ० क्रि० रँगा जाना।
चितला० गु० कबरा, चितकबरा।
चितवन० ना० स्त्री० दृष्टि, दीठि।
चितवना० अ० क्रि० देखना।
चितहट० ना० स्त्री० खींच, चित्त हट जाना।
चिता० } ना० स्त्री० सरा, मृतक के दाह
चिताखा० } देने का स्थान।
चिताना० स० क्रि० जताना, सुचेत करना।
चिताभस्म० ना० स्त्री० चिता की राख।
चितावना० स० क्रि० जताना, सचेत करना।
चितावनी० ना० स्त्री० जतावनी, चिह्न।
चितेरा० ना० पु० चित्रकार, मुसव्विर।
चितौना० स० क्रि० देखना, विलोकना।
चित्त० ना० पु० मन, हृदय, सुधि।
चित्ता० ना० पु० औषध, पौधाविशेष।
चित्ती० ना० स्त्री० चिह्न, लहसुन, सर्पविशेष, कौड़ी जो रगड़ के चिकनी होगई।
चित्र० ना० पु० मूर्ति, रूप, अग्नि, मित्र, दोनों अरण्ड, गुरु, बटेर पक्षी।
चित्रक० ना० पु० चीता, पशु, चित्रसारी।
चित्रकन्दक० ना० पु० सिमींकन्द।
चित्रकार० ना० पु० मुसव्विर, चितेरा।
चित्रकारी० ना० स्त्री० चित्रकार का काम, मुसव्विरी।
चित्रकाय० ना० पु० बाघ, शेर, गुलबघा।
चित्रकूट० ना० पु० पर्व्वत विशेष।
चित्रकेतु० ना० पु० राजा विशेष।
चित्रगुप्त० ना० पु० यमराज भेद, यम के यहां बुरे भलेका लेखक।
चित्रदेवी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
चित्रपक्ष० ना० पु० तीतर पक्षी।
चित्रभानु० ना० पु० सूर्य्य, अग्नि
चित्रभेषज० ना० पु० कठूमरि।

छापना० स० क्रि० छापाकरना, चिह्नदेना।
छापा० ना० पु० वैष्णवोंका तिलक, मुद्रा।
छापाविद्या० ना० स्त्री० जिसके द्वारा अनेक पुस्तक छापी जाती हैं, सब वस्तु जानी जाती हैं।
छाम० गु० दुबला, हलका।
छाया० ना० स्त्री० परछाईं, छांह, पिशाच, भूत।
छायानट० ना० पु० रागिनीविशेष।
छायाधर० ना० पु० वृक्षादि।
छायापाद० ना० पु० छाया के परिमाण से समयका स्थिरकरना।
छार० ना० स्त्री० खार, ढेला जो बड़ा है।
छारछबीला० ना० पु० सुगन्धिवस्तु विशेष।
छारी० ना० पु० खारी, श्रीमहादेवजी।
छारू० ना० पु० निनावां।
छाल० ना० स्त्री० बकला, छिलका।
छाला० ना० पु० फफोला, चमड़ा, खाल, फुका।
छालियां० ना० स्त्री० सुपारीविशेष।
छावना० स० क्रि० छाना।
छावनी० ना० स्त्री० पलटनके रहनेका स्थान, लेन छानेका काम।
छाह० ना० स्त्री० छांह।
छिकुनी० ना० स्त्री० छड़ी, कमची।
छिक्का० ना० स्त्री० छींक।
छिक्किका० ना० स्त्री० नकछिकनी, पौधा।
छिगुनी० } ना० स्त्री० कनिष्ठिका, कनगुरिया।
छिगुली० }
छिचड़ा० ना० पु० घावका नया चमड़ा।
छिचड़ैला० ना० पु० दुबला, चमचिचड़।
छिछड़ा० ना० पु० खलड़ी, छेमर।
छिछला० गु० उथला।
छिछलाई० ना० स्त्री० उथलाई।
छिछली० ना० स्त्री० खेलविशेष, थोड़ीगहरी।
छिछोड़ा० गु० थोड़ा, हलका, नीच।
छिटकना० अ० क्रि० फैलाना, बिथरना।
छिटकनी० ना० स्त्री० बिल्ली जो किवांड़ों में लगती है।
छिटकाना० स० क्रि० फैलाना, बिथराना।
छिटकी० ना० स्त्री० झर्री, छींट।
छिड़कना० स० क्रि० छींटना, बिथराना।
छिड़काना० स० क्रि० छिंटवाना, सिंचाना।
छिड़काव० ना० पु० सींच, सिंचाव।
छिड़ना० अ० क्रि० चिढ़ना, दुःखी होना।
छिड़ाना० स० क्रि० चिढ़ाना, चिढ़वाना, दुखाना।
छितनिया० } ना० स्त्री० डलिया।
छितनी० }
छितरना० अ० क्रि० बिथरना, फैलना।
छितराना० स० क्रि० बिथराना, फैलाना।
छिति० } ना० स्त्री० क्षिति, धरती, जमीन।
छिती० }
छिदना० अ० क्रि० बिधना, गड़ना, स० क्रि० रोकना, रोकने का काम करना।
छिदनी० ना० स्त्री० छेदने की वस्तु।
छिदाना० स० क्रि० छेदकराना, रोकाना।
छिद्र० ना० पु० छेद।
छिन० ना० पु० क्षण, लहमा।
छिनकना० स० क्रि० नाक स्वच्छकरना।
छिनला० ना० पु० व्यभिचारी, परस्त्रीगामी।
छिनवाना० स० क्रि० और किसी से खिंचवाना।
छिनाल० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।
छिनाला० ना० पु० व्यभिचार, कुलटापन।
छिनेक० ना० पु० क्षणेक।
छिन्न० गु० खण्डित, क्षीण, दुर्बल।
छिन्नभिन्न० गु० अलग २, तितर बितर।
छिन्ना० ना० स्त्री० गुरच, महापुरंडी।
छिपकली० ना० स्त्री० गृहगोधिका, टिकटिकी।
छिपका० ना० पु० छिड़काव।
छिपना० अ० क्रि० लुकना, गुप्तहोना।
छिपा० गु० लुका, गुप्त, अप्रकट।
छिपाना० स० क्रि० गुप्तकरना, लुकाना।

चित्रविचित्र० गु० अनेक रंग का है।

चित्रशाला०
चित्रसारी० } ना० स्त्री० जिस स्थान में बहुत चित्र होवें, नगाड़खाना, नक्कारखाना।

चित्रा० ना० स्त्री० चौदहवां नक्षत्र, इन्द्रवारुणी।

चित्रांगद० ना० पु० राजा विशेष।

चित्राफल० ना० पु० इन्द्रवारुणी।

चित्रित० गु० चित्रयुक्त, चित्र कियागया।

चित्रिणी० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, भगवती का नाम है।

चित्री० ना० स्त्री० चित्रसारी ना० पु० चीतापशु।

चिथड़ा० ना० पु० गुदड़ा, लत्ता।

चिथड़िया० गु० गुदड़िया।

चिथाड़० ना० पु० फाड़ चीर, लथाड़।

चिथाड़ना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना, लथाड़ना।

चिदाकाश० ना० पु० परमात्मा चैतन्य आकाश में।

चिनग० ना० स्त्री० मूतने में जलन पड़ना।

चिनगाना० अ० क्रि० टीसना, चिल्लाना।

चिनगारी०
चिनगी० } ना० स्त्री० लूका, आग का छोटा सा फूल।

चिनचिनाना० अ० क्रि० चिढ़ाना, शोरकरना।

चिन्त० ना० स्त्री० चिन्ता।

चिन्तन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तवन।

चिन्तना० अ० क्रि० अभ्यास करना।

चिन्ता० ना० स्त्री० शोच, डर, जोखिम, सन्देह, भावना।

चिन्ताना० स० क्रि० अभ्यास कराना।

चिन्तामणि० ना० स्त्री० मणि विशेष।

चिन्तित० गु० सोचा, भावित, विचारित।

चिह्न० ना० पु० लक्षण, पहिचान।

चिन्हार० ना० पु०
चिन्हारी० ना० स्त्री० } चीन्हा, पहिचान।

चिह्नित० गु० जो पहिचाने गया, चिह्नयुक्त।

चिपकना० अ० क्रि० लगना, सटना।

चिपकाना० स० क्रि० लगाना, सटाना, चिपटाना।

चिपचिपा० गु० लसलसा, लिजलिजा।

चिपचिपाना० अ० क्रि० लसलसाना।

चिपटना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।

चिपटा० गु० लगाहुआ, चिपचिपा।

चिपटाना० स० क्रि० चपटाना, चिप्पी लगाना, लपटाना।

चिपड़ी० ना० स्त्री० गोहरी।

चिप्पक० गु० चिपकाना, ना० पु० पक्षीविशेष।

चिप्पा० ना० पु० चीप।

चिप्पी० ना० स्त्री० जहां कागज आदि फटा होता है वहां लगाई जाती है, छोटी चीप।

चिबुक० ना० स्त्री० ठोढ़ी।

चिमटना० अ० क्रि० चिपकना, लपटना।

चिमटा० ना० पु० सूंठा, लोहे की वस्तु जो सुनार और लोहार आदि रखते हैं।

चिमटाना० स० क्रि० लिपटाना।

चिमठा०
चिमड़ा० } गु० लचीला, कड़ा।

चिमड़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, ऐंठ।

चिमड़ाना० स० क्रि० कड़ा करना, अ० क्रि० कड़ा होना, ऐंठिजाना।

चिमड़ाहट० ना० स्त्री० चिमड़ाई, ऐंठाई।

चिमड़ी० ना० स्त्री० चिमड़ा।

चिमसा० ना० पु० सरेस पानी का।

चिर० अव्य० बहुत, बहुत काल।

चिरंजी०
चिरंजीव० } ना० पु० आशीर्वाद विशेष, अर्थात् बहुत जीवन होवे।

चिरंजीवी० गु० बहुतदिनी, ना० पु० कौआ।

चिरकाल० अव्य० नित्य, सदा।

चिरकुट० ना० पु० चिट।

चिरकुटिया० गु० गुदड़िया।

चिरचिरा० ना० पु० औषध व पौधाविशेष।

चिरचिराना० अ० क्रि० चरचराना।

चिरचिराहट० ना० स्त्री० झनझनाहट।

छिपाव० ना० पु० लुकावट, लुकाव, गोपन।
छिप्र० ना० स्त्री० शीघ्र, शिताबी।
छिप्रोद्भवा० ना० स्त्री० गुरच।
छिमा० ना० स्त्री० क्षमा।
छिमाजोग० गु० क्षमायोग्य।
छियालीस० गु० चालीस और छः ४६।
छियासठ० गु० साठ और छः ६६।
छियासी० गु० अस्सी और छः ८६।
छिलका० ना० पु० बकला, फलादिके ऊपरकी त्वचाविशेष।
छिलना० अ० क्रि० रगड़जाना, उधड़जाना।
छिलाना० स० क्रि० कटवाना, रगड़ाना।
छिलैया० ना० पु० छीलनेहारा।
छिलौरी० ना० स्त्री० अंगुलीकी कोरपर फुड़िया घिनही।
छी० अव्य० तुच्छकरने का वाक्य।
छींक० ना० स्त्री० सिनक, प्रसिद्ध, श्वतसः।
छींकना० अ० क्रि० ब्रह्माण्डसे पवन उतरना।
छींका० ना पु० रस्सी का जाल जिसमें वस्तु रखके लटका देते हैं।
छीछड़ा० ना० पु० चमड़े के समान अभक्ष्य मांस।
छीजना० अ० क्रि० घटना, गिरना।
छीट० ना० स्त्री० छिटकी, छींट।
छीटना० स० क्रि० बिथराना, पानी छिड़कना।
छीनना० स० क्रि० झटकलेना, खींचना।
छीप० ना० स्त्री० छाईं, लहसुन, जिस लकड़ी में बड़िशका सूत बांधते हैं, सींग से टकेलना।
छीपना० स० क्रि० पानी छिड़क देना, छीप निकालना, वस्त्र छापना।
छीपी० ना० पु० वस्त्र छापनेहारा।
छीमी० ना० स्त्री० फली, छिलका।
छीलन० ना० पु० काटना, कतरना।
छीलना० स० क्रि० काटना, कतरना, छिलका उतारना, छीलना।
छुगलिया० ना० स्त्री० ग्रमुनी।
छुछकारना० स० क्रि० तुच्छ करके निकालना, हुलकारना।
छुछवाना० स० क्रि० गाड़ना, फूकना।
छुटकारा० ना० पु० छुड़ाव, उद्धार।
छुटखेलना० अ० क्रि० लुच्चापन करना।
छुटखेला० गु० लुच्चा, बदमाश।
छुटना० अ० क्रि० उद्धारहोना, निकलना।
छुटान० } ना० स्त्री० सुबीता, छुट्टी।
छुटानी० }
छुटापा० ना० पु० छुटाई, छोटापन।
छुट्टी० ना० स्त्री० छुटकारा, उद्धार, रुखसत।
छुड़वाना० स० क्रि० छुटकारा कराना।
छुतहरा० गु० जो अपवित्र होगया, नापाक।
छुद्र० गु० क्षुद्र, नीच, हलका, नकछिकनी।
छुद्रघण्टिका० } ना० स्त्री० क्षुद्रघंटिका, तागड़ी करधनी।
छुद्रमेखला० }
छुद्रा० ना० स्त्री० पतुरिया, छोहारा, अंगूर, कटाई पौधा, नीच स्त्री, नदी।
छुधा० ना० स्त्री० भूख।
छुपना० अ० क्रि० लुकना, गुप्तहोना।
छुपाना० स० क्रि० लुकाना, छिपाना।
छुपा० गु० लुका, गुप्त, छिपा, अप्रकट।
छुरा० ना० पु० बड़ीछुरी, बालमूंड़नेका अस्त्र।
छुरिका० ना० स्त्री० पालक का साग, छुरी।
छुरी० ना० स्त्री० चाकू, लंबा चाकू।
छुलकना० } अ० क्रि० थोड़ा थोड़ा मूतना।
छुलछुलाना० }
छुलाना० स० क्रि० छुवाना, छिलाना।
छुहाना० स० क्रि० उजलाना।
छुहारा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष।
छुहावट० ना० स्त्री० लगावट।
छुवाना० स० क्रि० स्पर्शकराना, छुलाना।
छूई० ना० स्त्री० दूधिया मट्टी, खड़ियामट्टी।
छूकी० ना० स्त्री० मच्छड़।
छूछला० गु० बोदला, बावला।
छूछा० गु० शून्य, खोखला, खाली।

चिरना० अ० क्रि० फटना।
चिरन्तन० गु० पुराना, प्राचीन।
चिरवाना० स० क्रि० फड़वाना, चिराना।
चिरांद० ना० स्त्री० जलतहुये चमड़े की कुवासना।
चिराना० स० क्रि० फड़वाना।
चिरायु० गु० बहुत जीवन।
चिरु० गु० बहुत।
चिरुकाल० गु० बहुत दिन, चिरकाल।
चिरुकालीन० गु० बहुतदिनी।
चिरौंजी० ना० स्त्री० शुष्कफल विशेष।
चिरौरी० ना० स्त्री० बिनती, खुशामद।
चिलक० ना० स्त्री० चमक, भड़क, दर्द।
चिलकना० अ० क्रि० चमकना, झलकना और फोड़ा आदिका पिराना।
चिलचिम० ना० पु० मछली।
चिलचिलाना० अ० क्रि० चीलना, चिल्लाना।
चिलम० ना० स्त्री० तमाकू आगि भरने का पात्र।
चिलमची० ना० स्त्री० पात्र विशेष जिस में मुँह हाथ धोने का पानी रहता है, चिलम के नीचे रखनेकी वस्तु।
चिलघन० ना० स्त्री० चिक, झंझरी।
चिलबल० ना० पु० वृक्षविशेष।
चिल्हड़० ना० पु० चीलड़, चिलुआ।
चिल्लाना० अ० क्रि० पुकारना, चिंघाड़ना।
चिल्लाहट० ना० स्त्री० पुकार, चिंघार।
चिल्ली० ना० स्त्री० भोजनविशेष जो अण्डे से बनाते हैं, उल्लू।
चिहुटना० अ० क्रि० चिपटना, लगना।
चिहुर० ना० पु० बाल, केश।
चींटी० ना० स्त्री० चांवटी, कीटविशेष।
चीक० ना० स्त्री० कीच।
चीखुर० ना० पु० गिलहरी।
चीतना० स० क्रि० चाहना।
चीतल० ना० पु० जंगली जन्तुविशेष, गु० चितला।
चीता० ना० पु० तेंदुआ, व्याघ्र, चाह, बुद्धि।
चीथना० स० क्रि० चियाड़ना, फाड़ना।
चीन० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर पूर्व में है।
चीनी० ना० स्त्री० खांडविशेष गु० चीनदेशी।
चीनीय० गु० चीनके मनुष्यादि।
चीन्ह० ना० स्त्री० पहिचान, चिह्न।
चीन्हना० स० क्रि० पहिचानना।
चीन्हा० ना० पु० पहिचान, चिन्हार।
चीर० ना० स्त्री० वल्कल, टुकड़ा सारी, लांग, ओढ़नी।
चीरना० स० क्रि० फाड़ना।
चीरम० ना० स्त्री० चिरौंजी।
चीरा० ना० पु० फाड़, घाव, पुष्पापन, पगड़ी।
चीरी० ना० स्त्री० झींगुर।
चील० ना० स्त्री० चील्ह, पक्षी जिसका मकान पर बैठके चिल्लाना अशुभ है।
चीलड़० / चीलर० / चील्हर० ना० पु० ढील, यूकाजूआं, चील्ह।
चुआन० ना० स्त्री० जल के निकलनेकी भूमि।
चुआना० स० क्रि० टपकाना, कूप में जल निकालना।
चुकती० ना० स्त्री० निपटारा।
चुकना० अ० क्रि० समाप्तहोना, निपटना, ठहरना।
चुकाई० ना० स्त्री० चुकौता।
चुकाना० स० क्रि० निपटाना, ठहराना।
चुकौता० ना० पु० निपटारा, ठहराव।
चुक्रिका० ना० स्त्री० अमिलोनृक्ष।
चुगना० अ० क्रि० चूगना, लगना।
चुगी० ना० स्त्री० अन्नकाकर, महसूल।
चुचकारना० स० क्रि० चोंचलाकरना और चुमकारना।
चुचकारी० ना० स्त्री० चुमकारी।

छूछी० ना० स्त्री० कुत्सित, अपमानी, नीच, खाली।
छूट० ना० स्त्री० बट्टा, छुड़ाव, भूषणकी चमक।
छूटना० अ० क्रि० छुटना, निकलना।
छूत० ना० स्त्री० अपवित्रता, नापाकी।
छूना० स० क्रि० स्पर्श करना।
छेंक० ना० स्त्री० रोक।
छेंकना० स० क्रि० रोकना।
छेंकवैया० ना० पु० रोकवैया।
छेंकाव० ना० पु० रुकाव।
छेड़० ना० स्त्री० खिजावट, दुलाव।
छेड़ना० स० क्रि० खिजाना, दुलाना।
छेद० ना० पु० छिद्र, मुख, सूराख।
छेदक० ना० पु० छेदकर्ता, बेधक।
छेदन० ना० पु० छेद, बेधन।
छेदना० स० क्रि० बेधना, बरमाना।
छेना० ना० पु० सिरसा, छेवना।
छेनी० ना० स्त्री० छेपनी, छेदनी।
छेम० ना० स्त्री० क्षेम, कुशल।
छेमङ्करी० ना० स्त्री० क्षेमङ्करी, भला चाहने वाली।
छेरी० ना० स्त्री० बकरी।
छेल०
छेलक० } ना० पु० बकरा।
छेव० ना० पु० घाव, फसाद, चिराव।
छेवना० स० क्रि० छटना, काटना, फाड़ना।
छेवनी० ना० स्त्री० काटनी, टांकी।
छेवा० ना० पु० पुस्तकोंमें ठहरावके स्थानका चिह्न।
छेत्र० ना० पु० क्षेत्र, खेत।
छेत्रफल० ना० पु० क्षेत्रफल।
छैयां० ना० पु० छोकरा।
छैल०
छैलचिकनियां०
छैला० } गु० बांका, चिकनियां, अकड़ैत।
छोआ० ना० पु० जूसी।
छोकड़ा०
छोकरा० } ना० पु० लड़का।
छोछो० ना० स्त्री० अग्नी, गंदी।
छोटा० गु० कनिष्ठ, लघु, अल्प।
छोटाई० ना० स्त्री० थोड़ाई, छोटापा।
छोड़ना० स० क्रि० त्यागना, क्षमाकरना।
छोड़ा०
छोड़ाव०
छोड़ावा० } ना० पु० छुटकारा, छुट्टी, उद्धार।
छोड़ावना० स० क्रि० छुटकारा कराना, उद्धार कराना।
छोड़ौती० ना० स्त्री० छुट्टी, छूट।
छोनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, क्षोणि।
छोप० ना० पु० एकबार, रंगभरन, भिरन।
छोपन० स० क्रि० भरदेना, रंगदेना।
छोर० ना० पु० किनारा, कगर, सिरा।
छोरना० स० क्रि० छोड़ना।
छोरा० ना० पु० लड़का।
छोराछोरी० ना० पु० लड़का, लड़की।
छोरी० ना० स्त्री० लड़की, पुत्री।
छोलना० स० क्रि० छीलना।
छोलनी० ना० स्त्री० छोलनेका अस्त्र, खुर्पी।
छोह० ना० पु० स्नेह, प्रेम, दया।
छोहरा० ना० पु० लड़का।
छोहा० गु० स्नेही, प्रेमी, चाहक।
छौंकन० ना० पु० बघार।
छौंकना० स० क्रि० बघारना।
छौकन० ना० पु० झपटा झपटी करनेहारा।
छौकना० स० क्रि० झपटा झपटी करना।
छौना० ना० पु० जन्तुका बच्चा, बच्चा।
छौनी० ना० स्त्री० छावनी, छप्परबन्दी करना।
छौर० ना० पु० मुण्डन।
छौरक० ना० पु० नाई, नाऊ।
छौरकर्म० ना० पु० मुण्डना, बालमुण्डाना, हजामत बनवाना।

(ज)

ज० अव्य० शब्द के अन्तमें संयुत होकर उत्पत्ति का बोधक होताहै।

चुश्च० ना० पु० मुनिविशेष।
चुश्चक० ना० स्त्री० भेड़ी, चुंचक, ऊर्णायु इतितिपंट्ः।
चुश्चड़० ना० पु० चूंचा, बड़ी चूंची।
चुटकी० ना० स्त्री० नोच, चुमटी, मुट्ठीभर अथ, पांवकी अंगुलीका गहना।
चुटकुला० ना० पु० ठठोली, मज़ाक।
चुटला० ना० स्त्री० चोटी।
चुटाना०, चुटालना०, चुटावना० } स० क्रि० घावकरना, दूध पिलाना गाय इत्यादिका।
चुडुआ० ना० पु० चूड़ा जो धान कूटके बनाते हैं।
चुड़ैल०, चुड़ैलिया० } ना० स्त्री० प्रेतिनी, फूहड़।
चुनत०, चुनन० } ना० स्त्री० परत, तह, तोड़।
चुनना० स० क्रि० कपड़ोंका तोड़ना वा इकट्ठा करना, छांटना, टूंगना, बीनना।
चुनरी० ना० स्त्री० लालरंगीहुई ओढ़नी।
चुनवाना०, चुनाना० } स० क्रि० टूंगाना, बिनवाना, छंटवाना, कपड़ेकी तह लगवाना।
चुनावट० ना० स्त्री० चुनत।
चुनी० ना० स्त्री० चूनी।
चुनौटा० ना० पु०, चुनौटी० ना० स्त्री० } पात्र जिसमें पान तम्बाकू खानेके लिये चूनारखते हैं, युद्धमें सैन्यको धावदेना, फौजमें से बलवानों को धावा के लिये छांटना, जेठसुदी एकादशी को पैरके पारजाना जो काशीजीमें प्रचलितरीति है।
चुनौटिया० गु० पश्चिम में बैंगनीरंग को कहते हैं।
चुनौती ना० स्त्री० तलाक़, शर्त, बदनेकी बात, निशानी, चिन्हारी, स्मारकवस्तु।
चुन्धला० गु० चौंधा, नयनरोगी।
चुन्धलाना० अ० क्रि० चौंधाहोना।
चुन्धा० गु० चौंधा, चिमधा।
चुन्ना० स० क्रि० चुनना।
चुन्नी० ना० स्त्री० छोटामाणिक।

चुप०, चुपका०, चुपचाप० } गु० मौनी, अबोल।
चुपचुपाना० अ० क्रि० चुपचाप रहना।
चुपड़ना० स० क्रि० चिकनाना, मलना।
चुपड़ी० गु० चिकनी, चिकना।
चुप्प० ना० पु०, चुप्पी० ना० स्त्री० } मौनता, खामोशी।
चुप्पा० गु० मौन, चुपका, अबोल।
चुभकी० ना० स्त्री० डुबकी, गोतामारना।
चुभना० अ० क्रि० गड़ना, हसना, बिंधना, छिदना, पैठना।
चुभाना० स० क्रि० घुसेड़ना, छेदना, पैठाना।
चुमाना० स० क्रि० चूमादेना वा दिलवाना।
चुम्कार० ना० पु०, चुम्कारी० ना० स्त्री० } चुमकारी।
चुम्कारना० स० क्रि० चुचकारना।
चुम्बक० ना० पु० लोहे का आकर्षक पत्थर।
चुम्बन० ना० पु० चूमा स्नेहवश होकर अंग में ओष्ठ स्पर्श करना।
चुरकुट० ना० पु० बुकनी, चूर्ण।
चुरगना० अ० क्रि० चें चें करना।
चुराना० स० क्रि० चोरी करना।
चुरुगना० अ० क्रि० बकना, बड़बड़ाना।
चुल० ना० स्त्री० खुजलाने की इच्छा।
चुलचुल० ना० पु० चंचलाहट।
चुलचुलाना० स० क्रि० खुजलाना, गुदगुदाना।
चुलचुली० ना० स्त्री० चंचलाहट।
चुलबुला० गु० चंचल, रँगीला।
चुलबुलाना० अ० क्रि० चंचल होना।
चुलबुलाहट० ना० स्त्री० चुलबुलापन।
चुलबुलिया० गु० चुलबुला।
चुलहाई० ना० स्त्री० कामातुरी।
चुलहारा० ना० पु० कामातुर।
चुल्लू० ना० पु० एकहाथ का सम्पुट, मुट्ठीभर।
चुसकर० ना० पु० पियक्कड़।
चुसनी० ना० स्त्री० चूचनी।

जकड़ना० स० क्रि० कसना, बांधना।
जकड़बन्द० ना० पु० थकड़वाई।
जग० ना० पु० जगत्, संसार, यज्ञ, और जहां जासके।
जगच्चक्षु० ना० पु० सूर्य।
जगजगा० ना० पु० पीतलकी पत्री।
जगजगाहट० ना० स्त्री० चमचमाहट।
जगजीवन० ना० पु० पानी, ईश्वर।
जगण० ना० पु० गणविशेष।
जगत्० ना० पु० संसार, दुनियां, टेक।
जगता० गु० जा सोता नहीं, अनींदा।
जगती० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, लोग।
जगत्प्राण० ना० पु० पवन, ईश्वर।
जगदम्बा० ना० स्त्री० आदिशक्ति, देवी, भवानी, जगत्की माता।
जगदादि० ना० पु० पृथ्वीका आरम्भ।
जगदाधार० ना० पु० शेष, दिग्गज, गौआदि, ईश्वर।
जगदीश० ना० पु० परमात्मा, विष्णु, शिव राजाधिराज।
जगधर० ना० पु० शेषजी।
जगना० अ० क्रि० नींदसे उठना, चेतना।
जगन्नाथ० ना० पु० पुरुषोत्तम, उड़ेसा देश में श्रीकृष्णचन्द्रजी।
जगन्मित्र० गु० सबका दोस्त, सबका मित्र।
जगन्मित्रता० ना० स्त्री० सबकी मित्रतारखना।
जगमगा० गु० चमकीला।
जगमगाना० अ० क्रि० चमकना, झमकना।
जगयोनि० ना० पु० ब्रह्मा।
जगवल्लभा० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।
जगह० ना० स्त्री० ठौर, धरती, समाई, गुंजायश।
जगाजोति० ना० स्त्री० चटक, मड़क।
जगाना० स० क्रि० सोतेसे उठाना।
जगेसर० ना० पु० जगदीश्वर।
जघन० ना० पु० उरस्थल।
जघन्य० गु० नीच।
जङ्गम० ना० पु० चलनेवाला, वेषधारी, गु० जो चलने की सामर्थ्य रखता है, वैरागी।
जंगल० ना० पु० वन, अरण्य।
जंगला० ना० पु० रागिनीविशेष।
जंगली० ना० पु० बघेला, वनवासी।
जंघ० ना० पु० जांघ, रान।
जंघा० ना० स्त्री० जांघ, जानु।
जचना० अ० क्रि० अटकलाजाना, परीक्षाहोना।
जचाना० स० क्रि० अटकलकराना, कसवाना, परीक्षा कराना।
जचावट० ना० स्त्री० परीक्षा, जांच।
जंजाल० ना० पु० उलझेड़ा, दुःख, क्लेश।
जंजाली० गु० क्लेशी, दुःखदाता।
जट० ना० स्त्री० जटा।
जटना० स० क्रि० चिपटजाना, मूंड़ना।
जटा० ना० स्त्री० बिगड़ेहुये बाल, भूरीरा।
जटाधारी० गु० जटा रखनेवाला।
जटामांसी० ना० स्त्री० छड़चौषधि।
जटायु० ना० पु० गृध्रविशेष।
जटित० गु० जड़ाहुआ, जड़ाऊ।
जटिल० गु० पुराना, जटाधारी।
जटी० ना० पु० बरगद वृक्ष, शिवजी।
जठर० ना० पु० पेट, उदर।
जठरानल० ना० पु० पेटकी अग्नि।
जेठरा० गु० बड़ा, जेठा।
जठेरी० ना० स्त्री० बड़ी, बूढ़ी।
जड़० ना० स्त्री० मूल, गु० मूर्ख, स्थावर, निर्जीव, दुष्ट, निशाचर।
जड़न० ना० स्त्री० जड़ने का काम।
जड़ना० स० क्रि० लगाना, जोड़ना।
जड़पेड़० ना० स्त्री० समूचापेड़, अर्थात् सब।
जड़वट० ना० स्त्री० स्तम्भ।
जड़हन० ना० पु० धान जो कातिक अगहन में काटा जाता है।
जड़ाई० ना० स्त्री० जड़ने का काम या जड़ने का पैसा।
जड़ाऊ० मणिमुक्तादि से जड़ाभया, जड़ाहुआ।

चुहचुहा० गु० जो गहिरा रँगागया।
चुहचुहाना० अ० क्रि० गहिरा रँगाजाना, पक्षियों का शब्द जो प्रातःकाल होता है।
चुहल० ना० स्त्री० चर्चा, चहलपहल।
चुहला० गु० ठठोल, हँसोड़ा।
चूँगी० ना० स्त्री० चूंगी।
चूँची० ना० स्त्री० कुच, भिटनी, थन।
चूँटा० ना० पु० पृथ्वीमें रहनेहारा जन्तु विशेष।
चूँटी० ना० स्त्री० छोटा चूटा वा उसकी स्त्री।
चूक० ना० स्त्री० भूल, भ्रम, पौधा विशेष गु० खट्टाविशेष ना० पु० औषध विशेष।
चूकना० अ० क्रि० भूलना, धोखा देना।
चूका० ना० पु० खट्टा साग।
चूची० ना० स्त्री० चूंची।
चूड़० ना० स्त्री० सोने वा चांदी की वस्तु जो विधवा पहिनती हैं, ना० पु० कड़ा विशेष जो हाथी के दांतों में पहिनाते हैं, खाट की पट्टी का सिरा वा नोक।
चूड़ा० ना० पु० संस्कार की रीति से प्रथम मुण्डन, लाख की चूड़ी, ललाट के ऊपर बँधेहुये केश, चर्वण विशेष।
चूड़ाकरण० } ना० पु० मुण्डन।
चूड़ाकर्म० }
चूड़ामणि० ना० स्त्री० कंकण की मणि।
चूड़ी० ना० स्त्री० स्त्रियोंके हाथमें पहिननेके लिये जो चांदी वा लाख वा कांचकी बनती हैं।
चूत० ना० स्त्री० योनि, आम्र।
चूतड़०ना०पु०नितम्ब,जंघाका उपरिभाग, पुट्ठा।
चूतिया० ना० पु० उल्लू, अहमक।
चून० ना० पु० आटा, पिसान।
चूना० ना० पु० चूर्ण, वा जो पान में लगाते हैं, मिट्टी वा पत्थर वा कंकर वा सीप जली हुई अ० क्रि० टपकना, रसियाना, छनना।
चूनी० ना० स्त्री० दलाहुआ उड़दआदि, खुदी।
चूमकपत्थर० ना० पु० चुंबक।
चूमना० स० क्रि० चूमालेना, मच्छी लेना।
चूमा० ना० पु० मीठी, मच्छी।
चूर० ना० स्त्री० बुकनी, चूर्ण।
चूरन० ना० पु० चूर्ण।
चूरना० स० क्रि० चूर्ण करना।
चूरा० ना० पु० रेतन, बूरा, चूड़ा।
चूरी० ना० स्त्री० बहुत घी पड़ीहुई रोटी, चूड़ी।
चूर्ण० ना० पु० रेणु, बुकनी।
चूल० ना० स्त्री० एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी लकड़ीमें डालते हैं, किवाड़केखूंट नीचे ऊपरके।
चूल्हा०ना० पु० } आग रखने वा रोटी पकाने
चूल्ही०ना० स्त्री० } की वस्तु।
चूसना० स० क्रि० पीलेना, सुड़कना।
चूहड़ा० पु० ना० मेहतर, भंगी।
चूहड़ी० ना० स्त्री० भंगिनि।
चूहा० ना० पु० मूसा, मूषक।
चूही० ना० स्त्री० छोटा मूसा, उसकी स्त्री।
चेंची० ना० स्त्री० वस्तु जिसमें सुई रखते हैं।
चेंचकरना० अ० क्रि० चुड़कना।
चेंड़ा० ना० पु० यौवन, छोटा।
चेंप० ना० पु० वृक्षका फल वा लासा।
चेटक० ना० पु० सेवक, नौकर, भगरविद्या।
चेटकी० ना० पु० इन्द्रजाल, ख्याल दिखानेहारा, ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
चेटी० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
चेत० ना० पु० स्मरण, होश, याद, सुधि।
चेतक० गु० चेत करनेहारा, चेत में हो।
चेतका० ना० स्त्री० सरा, चिता, रामचन्द्रिकायां, मनो चेतका में सती सत्त धारी।
चेतकी० ना० स्त्री० हर्र।
चेतना० स० क्रि० स्मरण करना, ध्यानलगाना, विचारना, सुधि में आना ना० स्त्री० बुद्धि।
चेता० गु० चेत करनेहारा।
चेरा० ना० पु० चेला, चाकर, सेवक।
चेराई० ना० स्त्री० दासत्व, सेवकाई।
चेरी० ना० स्त्री० चेली, दासी।
चेरे० ना० पु० चेराका बहुवाक्य।

जड़ाना० स० क्रि० जड़वाना, जाड़ा खाना।
जड़ाव० ना० पु० जड़नेका काम।
जड़ावर० ना० स्त्री० जाड़े के कपड़े।
जड़ित० गु० जटित, जड़ाहुआ।
जड़िनी० गु० स्त्री० जड़ स्त्री, दुष्टिनी।
जड़िया० ना० पु० जड़नेवाला, जौहरी, सुनार।
जड़ी० ना० स्त्री० औषधि, पौधेकी जड़।
जत० ना० स्त्री० रीति, डौल।
जतन० ना० स्त्री० यत्न, तदबीर।
जतनी० ना० स्त्री० यती, तदबीर करनेवाला।
जताना० स० क्रि० सुझाना, चिताना, बताना।
जतारा० ना० पु० वंश, घराना, पीढ़ी।
जती० ना० गु० यती, सन्यासी, शान्त।
जतु० ना० स्त्री० लाख।
जतुआ० ना० पु० लढ़ीका खूंटा।
जथा० अव्य० यथा, ना० पु० समूह।
जथार्थ० अव्य० यथार्थ, सच ठीक।
जद० अव्य० यदा, जब।
जदु० ना० पु० यदु।
जदुनाथ०, जदुनायक०, जदुपति० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
जदुबंशी० गु० यदुबंशी।
जद्यपि० अव्य० यद्यपि।
जन० ना० पु० मनुष्यलोग, नौकर।
जनक० ना० पु० पिता, श्रीसीताजी के पिता।
जनकपुर० ना० पु० पिताका गांव वा नगर, तिरहुत नगर।
जनता० ना० स्त्री० लोग वा लोगों का समूह, मनुष्यता, आदमियत।
जनन० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति।
जनना० अ० क्रि० जन्महोना।
जननी० ना० स्त्री० माता, महतारी।
जनरव० ना० पु० लोगोंका शब्द।
जनलोक० ना० पु० लोक विशेष, जिसमें साधु लोग मरने के पीछे बास करते हैं।
जनयित्री० ना० स्त्री० माता, जननी।
जनवासा० ना० पु० जहां बरात ठहरती है।
जनश्रुति० ना० स्त्री० सन्देशा, समाचार।
जनहाई०, जनहार० } अव्य० मनुष्य, मनुष्यसहित, प्रत्येक, हरएक।
जना० ना० पु० लोग, मनुष्य, गु० पुत्र उत्पन्न हुआ, भया।
जनाई० ना० स्त्री० जो स्त्री लड़का जन्माती है, दिखाई।
जनाजात० अव्य० जनहाई।
जनाती० गु० कन्याके ओरके बराती, बराती लोग।
जनाना० स० क्रि० उत्पन्न कराना, जनाना, चिताना, दिखाना।
जनार्दन० ना० पु० श्रीकृष्णजी।
जनाव० ना० पु० जताव, लखाव।
जनिका० ना० पु० इकर्थ जिसका दोप्रकार अर्थ होवे।
जनित० गु० उत्पन्न भया, उपजा।
जनी० ना० स्त्री० दासी, बहू, ब्यानी।
जनु० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति, अव्य० मानो।
जनक० अव्य० जानो।
जनेऊ० ना० पु० यज्ञोपवीत।
जनेत० ना० पु० बरात।
जनेवा० ना० स्त्री० तृणविशेष, कांधासोटी।
जनेश० ना० पु० राजा।
जनो० ना० पु० जनेऊ।
जन्ता० ना० पु० तारखींचने का यन्त्र।
जन्ताना० स० क्रि० दबाना, निचोड़ना।
जन्तार० ना० पु० यन्त्र।
जन्तु० ना० पु० जीवधारी, क्षुद्रजीव।
जन्तुक० ना० पु० हींग।
जन्तुहनन० ना० पु० विड़ंग औषधि।
जन्म० ना० पु० उत्पत्ति, पैदायश।
जन्मदाता० ना० पु० पिता।
जन्मदिन० ना० पु० वर्षबन्धन, वर्षगांठ।
जन्मना० अ० क्रि० उपजना, पैदाहोना।
जन्मपत्री० ना० स्त्री० जन्मकुण्डली, लग्नकुण्डली, जायचह।

चेला० ना० पु० लौंडा, दास, शिष्य।
चेली० ना० स्त्री० लौंडी, दासी, शिष्य।
चेवली० ना० स्त्री० रेशमी वस्त्र विशेष।
चेष्टा० ना० स्त्री० शरीरका व्यापार, उद्योग, अभ्यास।
चैत० ना० पु० चैत्रमास।
चैतन्य० गु० चौकस, सुचेत, प्राणी, जीवित ना० पु० आत्मा, परमात्मा।
चैतन्यता० ना० स्त्री० चौकसी, सुचेतता, ईश्वरता।
चैन० ना० पु० सुख, कल, जोतना बोना।
चैनी० गु० जोती बोई धरती, सुख करनेहारा।
चैला० ना० पु० ईंधन के लिये चीरीलकड़ीकाटुकड़ा।
चैत्र० ना० पु० प्रथम मास, चैत।
चौंकना० स० क्रि० सुभाना, गड़ाना।
चौंगा० ना० पु० नली, नलूआ, उल्लू, निधन।
चौंच० ना० स्त्री० ठोंट, चंचु।
चौंचला० ना० पु० चोचला।
चौंटला० ना० पु० जिससे चोटी गूंधते हैं, चोटी।
चौंथना० स० क्रि० चकोटना, नोचना।
चौंप० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, हुलास।
चोत्रा० ना० पु० सुगन्धिद्रव्यविशेष, कली, टपका।
चोत्राड़० ना० पु० पहाड़िया, जातिविशेष।
चोकर० ना० पु० आटेकी भूसी, रई, रवा।
चोखा० गु० खरा, शुद्ध, सच्चा, तीक्ष्ण, सूक्ष्म।
चोखाई० ना० स्त्री० खराई, शुद्धता, सचाई।
चोखी० ना० स्त्री० खरी, गानेबजानेमें शुद्धस्वर।
चोगा० ना० पु० खाना जो छोटी चिड़ियाकोखिलातेहैं।
चोचला० ना० पु० चुचकारी, गांवली, फुसलाहट।
चोट० ना० स्त्री० घाव, चपेट, पछाड़, पटकना, दाह, धोखा।
चोटा० ना० पु० बटा, जूसी।
चोटियाना० स० क्रि० घुटालना, झगड़ाकरना।
चोटी० ना० स्त्री० शिखा, शिखर, झोंटी।
चोट्टा० ना० पु० चोर।
चाट्टी० ना० स्त्री० चोर स्त्री, नौकरी स्त्री।
चोथ० ना० पु० छोंथ, गोबर।
चोथना० स० क्रि० फाड़ना, नोचना।
चोन्धला० गु० चुन्धला।
चोन्धलाना० अ० क्रि० चुन्धलाना।
चोन्धी० ना० स्त्री० चुन्ध, धुन्धलाई।
चोप० ना० स्त्री० चांप, मगनता, चाह।
चोपना० अ० क्रि० चाहना, इच्छाकरना।
चोभा० ना० पु० कील, कीला।
चोभी० ना० स्त्री० छोटा चोभा।
चोया० ना० पु० छिलका, देवली, सुगन्धवस्तुविशेष।
चोर० ना० पु० चोट्टा, ठग, तस्कर, डाकू।
चोरटी० ना० स्त्री० चोरनारि।
चोरमहीचिनि० ना० स्त्री० आंखमुंदौना खेल, लुकालुकौरी।
चोराना० स० क्रि० चोरीकरना।
चोरी० ना० स्त्री० ठगई, डकैती।
चोल० ना० पु० मजीठ।
चोलना० ना० पु० बड़ा कुर्ता, अंगरखा।
चोला० ना० पु० शरीर, जामा, अंगरखा, वस्त्रविशेष।
चोली० ना० स्त्री० अंगिया।
चोवा० ना० पु० चोआ।
चोष्य० गु० चूसने के योग्य वस्तु, आम्रादि।
चौ० ना० पु० पिछले दांत, लोहा जो नोगल के मुनियर लगारहता है, गु० चार।
चौअन्नी० ना० स्त्री० रुपयेका चौथाभाग।
चौक० ना० स्त्री० झिझक, भड़क, और एकाएक जानना।
चौंकना० अ० क्रि० झिझकना, जागना।
चौंकेल० ना० पु० झिझकारा, बनैला।
चौंगा० ना० पु० फुसलाहट, छल।
चौंगी० ना० स्त्री० फुसलाहट।
चौंतरा० ना० पु० चौतरा, चबूतरा।
चौंतीस० गु० तीस और चार, ३४।
चौंध० ना० स्त्री० आंख तिरमिराना।
चौंधियाना० अ० क्रि० घबराना, व्याकुलहोना।
चौंरी० ना० स्त्री० चमर, लाल घोड़ीई।

जन्मभूमि० ना० स्त्री० } उत्पत्तिका घर वा
जन्मस्थान० ना० पु० } स्थान।

जन्माना० स० क्रि० उपजाना, पैदाकराना।

जन्मान्तर० ना० पु० और जन्म।

जन्मान्तरीय० गु० अगले जन्मका उपार्जित।

जन्मान्ध० गु० जन्मका अन्धा।

जन्मोत्सव० ना० पु० जन्महोने का आनन्द, कृष्णजन्मोत्सव।

जन्यजनकभाव० ना० पु० उत्पन्न कियाहुआ और उत्पन्न कीहुई वस्तु इनका सम्बन्ध।

जप० ना० पु० पाठ मन्त्रादिका उच्चारण।

जपन० ना० पु० मन्त्रउच्चारण पाठ।

जपना० स० क्रि० मन्त्रादिका उच्चारण।

जपन्ता० गु० जापक।

जपमाला० ना० स्त्री० जपनेकी माला।

जपा० ना० पु० हुड़हुड़ का फूल।

जपी० गु० जापक।

जपीतपी० ना० पु० अर्चक, भजनीक।

जब० अव्य० यदा।

जबड़ा० ना० पु० जभा।

जबहा० गु० अकड़ा, अनाड़ी।

जबड़िया० गु० कुरूप।

जभा० ना० पु० जबड़ा।

जम० ना० पु० यम, मृत्युगण।

जमअनुजा० ना० स्त्री० यमुनाजी।

जमक० ना० पु० यमक, पहिला शब्द छन्दका।

जमकना० अ० क्रि० बनना, निभना, ठहरना।

जमकाना० स० क्रि० बनाना, ठहराना, बैठाना।

जमघट० ना० पु० मण्डली, भीड़।

जमजम० अव्य० निरन्तर, सदा।

जमदग्नि० ना० पु० परशुराम के पिता।

जमदूत० ना० पु० यमदूत।

जमधर० ना० पु० कटार।

जमना० अ० क्रि० उगना, ठहरना, जमजाना।

जमराज० ना० पु० यमराज।

जल० गु० दो, २।

जमहाई० ना० स्त्री० आलस्यवश होकर मुंह का पसारना।

जमहाना० अ० क्रि० जमहाई लेना।

जमाई० ना० स्त्री० जामाता, दामाद।

जमाना० स० क्रि० उगाना, बांधना, इकट्ठा करना, बटोरना, बैठाना।

जमालगोटा० ना० पु० औषधि विशेष।

जमाव० ना० पु० भीड़, बहुतात।

जमावट० ना० स्त्री० बँधावट।

जमी० ना० स्त्री० रात, यमी, यमुनाजी।

जमोगना० स० क्रि० सहजाना।

जमोघ० } ना० पु० जमविशेष जो लड़कों को
जमोघा० } लगता है।

जमना० अ० क्रि० बढ़ना, पनपना।

जम्बाल० ना० पु० सियाल, बालू।

जम्बीर० } ना० पु० नींबू।
जम्बीरक० }

जम्बु० ना० पु० गीदड़, शृगाल, यमुनातृत।

जम्बुक० ना० पु० गीदड़, शृगाल।

जम्बुमाली० ना० पु० प्रहस्तका पुत्र, राक्षसविशेष।

जम्बूद्वीप० ना० पु० पृथ्वी के सात द्वीपों में से एकका नाम।

जम्भभेदी० ना० गु० इन्द्र।

जम्भल० } ना० पु० जम्भीरी नींबू।
जम्भार० }

जय० ना० स्त्री० पराभव करना, उन्नति, गु० जिता, जयति, आशिष।

जयजयकार० ना० पु० पराभव होना, शत्रुका बड़ाई का वा जीतिका बोधक।

जयजयवन्ती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

जयढाक० ना० पु० ढोलविशेष।

जयत० ना० पु० वृक्षविशेष।

जयति० क्रि० जीतिहो।

जयनगर० ना० पु० राजपूताने की राजधानी।

जयन्त० ना० पु० इन्द्रका पुत्र।

जयन्ती० ना० स्त्री० दुर्गादेवी, वृक्षविशेष।

चौक० ना० पु० गुदड़ीका, बाजार, हाट, कटरा, आंगन, चारिको समूह, वेदी पूरना।

चौकड़ा० ना० पु० दो मोती का बाला, चारिका समूह।

चौकड़ी० ना० स्त्री० कूद, उछाल, मोती का बाला जो पुरुष पहिनते हैं।

चौकन्ना० गु० चौकस, चैतन्य।

चौकभरना० स० क्रि० चौक पूरना।

चौकल० ना० पु० चारिकला, चारिडकश।

चौकला० ना० पु० मियाना, पालकी।

चौकस० गु० सावधान, सुचेत, सुर्ता, निपुण, पूरानाल।

चौकसाई० ना० स्त्री० सुचेती, सुर्त।

चौकसी० ना० स्त्री० धुन, रक्षा।

चौका० ना० पु० सीपाहुआ स्थान, चारिकोने का स्थान, आगे के चारि दांत चारि पूरीआदि का एक चौका।

चौकी० ना० स्त्री० काष्ठका चौकोना आसन, कुर्सी, पहरा, पहराका स्थान, फ़ारसी शब्द है।

चौकोना० } गु० चौखूंटा।
चौकोर० }

चौखट० ना० पु० द्वारके चारों ओर का काठ।

चौखूंटा० गु० जिसके चारों ओर समान हैं।

चौगड़ा० ना० पु० लम्बा, खरगोश, शशा।

चौगान० ना० पु० जनहीन, निर्जन स्थान, खेल विशेष फ़ारसी शब्द में।

चौगानी० ना० स्त्री० हुक्के की सीधी नली।

चौगुण० } गु० चारि बेरका।
चौगुना० }

चौघड़ा० ना० पु० चारिघड़ेका पात्र।

चौचा० ना० पु० चारोओर, चारों तरफ़।

चौंच० ना० पु० चोंच, टोंट।

चौड़ा० गु० चकला।

चौड़ाई० ना० स्त्री० } पाट, चकलाई, बड़ाई।
चौड़ान० ना० पु० }

चौड़ाना० स० क्रि० चकलाना, फैलाना।

चौडोला० ना० पु० पालकी विशेष।

चौतरा० ना० पु० चबूतरा, फ़ारसी शब्द है।

चौतारा० ना० पु० चारितारका बाजाविशेष।

चौताल० ना० पु० रागिनी विशेष, बाजाविशेष, तालविशेष।

चौतुक० ना० पु० चौबोला छन्द।

चौथ० ना० स्त्री० चतुर्थांश, चौथियाई।

चौथा० गु० चतुर्थ।

चौथाई० ना० स्त्री० चौथाभाग, चतुर्थांश।

चौथि० ना० स्त्री० ४ तिथि।

चौथिया० ना० पु० चौथ लेनहारा।

चौथियाई० ना० स्त्री० चौथाई।

चौथी० ना० स्त्री० चतुर्थी।

चौदन्त० गु० बलवन्त, चारिदांतका।

चौदन्ती० ना० स्त्री० बहादुरी, शूरमापन।

चौदस० ना० स्त्री० चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी।

चौदह० गु० चतुर्दश १४।

चौदानियां० ना० पु० } चारि मोती का
चौदानी० ना० स्त्री० } बाला।

चौधर० गु० बलवन्त।

चौधराई० ना० स्त्री० चौधरी का काम।

चौधरी० ना० पु० जाति का प्रधान, मुखिया, प्रधान, बाजारका मुखिया।

चौपट० गु० उजाड़, सरपट।

चौपड़० ना० स्त्री० खेल जो पांसेसे खेलाजाताहै।

चौपतिया० } ना० स्त्री० छोटी पोथी, पोथी
चौपत्ती० } विशेष।

चौपहला० ना० पु० चारिपटका।

चौपाई० ना० स्त्री० चारिपदका छन्द।

चौपाड़० } ना० पु० बैठक, घरविशेष।
चौपार० }

चौपाला० ना० स्त्री० पालकी विशेष।

चौपाय० ना० पु० चौवा।

चौवार० ना० पु० चौपाड़।

चौवारा० ना० पु० उसारा, आंगन।

चौबीस० गु० बीस और चार २४।

जयन्तीपुर० ना० पु० शिलहट से दश कोसपर का देश जिसको जयन्ता कहते हैं।
जयबेर० गु० जितने बार।
जयमान०
जयवन्त० } गु० जयकरनेहारा, जीतनेवाला।
जयवान्०
जयवती० ना० स्त्री अग्नि की जिह्वाविशेष गु० जीतनेहारी।
जया० ना० स्त्री० हर्र, विष्णुकान्ता, भांग, देवीविशेष।
जयी० गु० जय करनेहारा।
जर० ना० पु० जड़ ज्वर विशेष।
जरण० ना पु० जीरा सुफेद, जलन।
जरन० अ० क्रि० जलन।
जरना० अ० क्रि० जलना।
जरा० ना० स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
जरांस० ना० पु० ज्वरांश।
जराना० स० क्रि० जलाना।
जरावजरी० गु० स्त्री० जड़ाऊ।
जरायु० ना० स्त्री० कोष, पेट, कुक्षि।
जरायुज० ना० पु० जो कोष से उत्पन्नहो, जो झिल्ली से उत्पन्नहो अर्थात् मनुष्यादि।
जरासन्ध० ना० पु० मगधका राजा जरानाम राक्षसी से जोड़ागया।
जर्जर० गु० निर्बल, जांजर, जीर्ण।
जर्जरी० ना० पु० लहसुन।
जल० ना० पु० पानी।
जलअलि० ना० पु० पानीका भँवर।
जलकन्द० ना० पु० सिंघाड़ा।
जलकामा० ना० स्त्री० ऊंधाहोली।
जलक्रीड़ा० ना० स्त्री० पानी में का खेल।
जलकुक्कुट० } ना० पु० पनडुब्बी, मुर्गाबी।
जलकुक्कुट०
जलखानि० ना० पु० मेघ, समुद्र, नदी।
जलगोजक० ना० पु० चिलगोजा।
जलचर० गु० जलजन्तु, पनिहा, जल के चरनेहारे जन्तु।
जलचरेश० ना० पु० मगर, मच्छ, ग्राह।
जलज० ना० पु० कमल, गु० जो कुछजलमेंउपजे
जलजन्तु० ना० पु० जल में रहनेहारे जीव।
जलजन्त्र० ना० पु० नम्बा, फव्वारह, जलयन्त्र।
जलजला० गु० महाक्रोधी।
जलजलाना० अ० क्रि० आग हो जाना, झुंझलाना।
जलजलाहट०ना०स्त्री० कोप, क्रोध, झुंझलाहट।
जलजात० ना० पु०कमलादि।
जलजान० ना० पु० नाव, जहाज।
जलमधु० ना० स्त्री० मुलहठी।
जलतरंग ना० पु० बाजाविशेष जलकीलहरि।
जलतरंगी० ना० स्त्री० बाजाविशेषबजानेवाला।
जलतरण० ना० पु० तैरना, नाव वा जहाज चलाने की विद्या।
जलथल० ना० पु० जल और स्थल।
जलद० ना० पु० मेघ।
जलधर० ना० पु० मेघ, समुद्र।
जलधार० } ना० स्त्री० पानी की धारा।
जलधारा०
जलधि० ना० पु० समुद्र।
जलन० ना० पु० ज्वलन, तप, क्रोध।
जलना० अ० क्रि० बरना, दहकना।
जलनिधि० ना० पु० समुद्र।
जलनीम० ना० पु० औषधि विशेष।
जलन्धर० ना० पु० रोगविशेष जिसमें रोगी पानी बहुत पीता है, राजा विशेष।
जलपाई० ना० स्त्री० वृक्षविशेष।
जलपान० ना० पु० पानी पीना, कलेवा।
जलपुट० ना० पु० पानी का बर्त्तन।
जलबल०गु० जो जलने से नाशहोगया ना० पु० पान, केवल।
जलमय० ना० पु० जलार्णव, प्रलय।
जलमानुष० ना० पु० मनुष्यरूपी जलजन्तु।
जलमार० ना० पु० विष, जहर।
जलमाल० ना० स्त्री० नदी।
जलराशि० ना० पु० समुद्र।

चौबे० ना० पु० चतुर्वेदी, जातिविशेष, मथुरा-तीर्थ के पुरोहित।
चौमासा० ना० पु० बरसात, परहिल।
चौमुख० ना० पु० ब्रह्मा, चौमुखी दीवट, चारोंओर।
चौमुखा० ना० पु० पटविशेष, चारमुखकी दीवट।
चौमुखी० ना० स्त्री० रुद्राक्ष का फल।
चौर० ना० पु० चोर।
चौरकर्म० ना० पु० चोरी।
चौरंग० ना० पु० दांवविशेष, बैलआदि के चारों पांव एक चपेट में काटना।
चौरभय० ना० पु० चोरोंका डर।
चौरस० गु० समान, एकसां।
चौरसाना० स० क्रि० समान करना।
चौरसाई० ना० स्त्री० साधाई, समानता।
चौरा० ना० पु० चबूतरा, चौतरा।
चौरानबे गु० नब्बे और चार ९४।
चौरासी० गु० अस्सी और चार ८४।
चौराहा० ना० पु० मार्ग चारों ओर जानेका।
चौरी० ना० पु० चौधार धोईहुई लाखें।
चौलड़ा० ना० पु० } चारि लड़की माला या
चौलड़ी० ना० स्त्री० } कोई वस्तु।
चौला० ना० पु० अन्नविशेष।
चौलाई० ना० स्त्री० रागविशेष।
चौवा ना० पु० पशु, चतुष्पाद।
चौवाई० ना० स्त्री० आंधी, झकड़।
चौसठ० गु० साठि और चार ६४।
चौसर० ना० पु० चार लड़काहार, चौपड़।
चौहट० } ना० पु० चौराहा, चौसरका बा-
चौहट्टा० } जार।
चौहत्तर० गु० सत्तर और चार ७४।
चौहान० ना० पु० रजपूत जातिविशेष।
च्युत० गु० पतित, भ्रष्टित, गदला।
च्युतता० ना० स्त्री० पवन, बदल।
च्युति० ना० स्त्री० योनि, गुदा।

(छ)

छः गु० षट् ६।
छकड़ा० ना० पु० गाड़ी, शकट।
छकड़ाना० स० क्रि० चौंधियाना, चकराना।
छकना० अ० क्रि० सन्तुष्ट होना, भरना तृप्तहोना, दुःखित, व्याकुल।
छकाई० ना० स्त्री० तृप्ति, सन्तुष्टता।
छकाना० स० क्रि० सन्तुष्ट करना, तृप्तकरना, पेटभर भोजन कराना।
छक्काड़० ना० स्त्री० अण्डड़, गु० छःदांत का पशु आदि।
छक्क० ना० पु० छः का समूह, खेल विशेष, जाल सहित पिंजरा।
छगरी० ना० स्त्री० बकरी।
छगल० ना० पु० बकरी।
छँगुली० ना० स्त्री० कनिष्ठिका, पांचवीं अंगुली।
छछुन्दर० } ना० स्त्री० मूसा जो रातिको निक-
छछूंदर० } लताहै और कुवासित होताहै।
छज० गु० झाड़खण्ड।
छज्जा० ना० पु० बरामदह।
छज्जी० ना० स्त्री० सज्जी।
छज्जन० ना० पु० दादुविशेष।
छञ्छनाना० अ० क्रि० सनसनाना, सरोटादेना, चरपराना।
छटना० ना० पु० चलनाविशेष, अ० क्रि० घटना, बिछुड़ना, भिन्नभिन्न होना।
छटा० ना० स्त्री० उजाला, चमचमाहट, बिजली, कौंधा गु० चुनाहुआ, छटाहुआ।
छटांक० ना० स्त्री० सेरका सोलहवांभाग।
छटाना० स० क्रि० चुनवाना।
छटे० ना० पु० उजेले का बहुवाक्य गु० चुनेहुये, चुनेहुये अलगभये।
छट्ठ० ना० स्त्री० षष्ठी, छठ।
छट्ठी० ना० स्त्री० छठवीं, षष्ठी, जन्मने के पीछे छठे दिनका व्यवहार।
छठ० ना० स्त्री० षष्ठी, छट्ठी।
छठी० ना० स्त्री० छट्ठी।
छड़० ना० पु० भालेकी लकड़ी, डंडा, डांठी और

जलरुह० ना० पु० कमल।
जलवैया० ना० पु० जलानेहारा।
जलशायी० ना० पु० विष्णु, नारायण।
जलशयनी० ना० स्त्री० जल में सोना, जल में रहना, तपस्याविशेष मत्स्य।
जलसूत० ना० पु० नहरुआ।
जला० ना० स्त्री० झील।
जलाकार० ना० पु० जलका आकार।
जलाना० स० क्रि० बालना, दाहना।
जलबला० } गु० विचिड़ा, क्रोधी।
जलाभुना० }
जलार्णव० ना० जल प्रलय, जलका समुद्र।
जलावन० ना० पु० ईंधन।
जलाशय० } ना० पु० तालाब, पोखर।
जलाश्रम० }
जलाश्रय० ना० पु० जल के भरोसे।
जलिया० ना० पु० कहार, धमिर, मछुआ।
जलेबी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष।
जलेश० ना० पु० वरुणदेव, समुद्र।
जलोद० ना० पु० क्षीरोद, मेघ।
जलोदर० ना० पु० जलंधर।
जलौका० ना० स्त्री० जोंक।
जल्पना० अ० क्रि० बकना, निज बड़ाई करना। असत्यार्थ बात कहना।
जल्पाक० गु० बकवादी, निजबड़ाई करनेहारा।
जव० ना० पु० यव, जौ, जल्दी।
जवन० ना० पु० यवन, घोड़ा।
जवस्था० ना० स्त्री० हर्र।
जवनष्ट० ना० पु० लहसुन।
जवा० ना० पु० अंगुली की गांठि में चिह्न पुष्प विशेष।
जवाह्वा० ना० स्त्री० अजवाइन्।
जवाद० ना० स्त्री० केसर।
जवाश्विक० ना० पु० घोड़ा।
जवानी० ना० स्त्री० अजवाइन्, खुरासानी।
जवानिक० } ना० पु० अजवाइन्।
जवासाह्वा० }
जवाखारु० ना० पु० औषधि, तृणविशेष।
जवासा० ना० पु० कांटालाविशेष।
जस० ना० पु० यश।
जसत० } ना० पु० धातु विशेष।
जसता० }
जसयत० }
जसयक्ति० }
जसवन्त० } गु० कीर्त्तिमान्, प्रतिष्ठित, यशी, यशस्वी।
जसस्वी० }
जसी० }
जसुमति० }
जसोदा० } ना० स्त्री० नन्दरानी, यशोदा।
जसोमति० }
जहर्पमी० ना० स्त्री० कौंच बीज।
जत्र० अव्य० जहां, यत्र।
जहु० ना० पु० मुनि विशेष।
जहुसुता० ना० स्त्री० गंगाजी।
जहां० अव्य० अत्र, यत्र, जिसस्थान में, जिधर।
जहीं० अव्य० जिसकी जगह।
जा० सर्व० जिस।
जाई० गु० जनी, ना० स्त्री० बेटी।
जांगर० ना० पु० पिण्डली समेत जांघ, घुटना।
जांघ० ना० स्त्री० जंघा, जानु।
जांघिया० ना० पु० कछना।
जांच ना० स्त्री० अटकल, परख, कस।
जांचना० स० क्रि० कसना, परखना, देखना, टुहराना, ठीककरना, परीक्षाकरना।
जांता० ना० पु० पाषाणका यन्त्र जिसमें गेहूं पीसते हैं, चक्की।
जाकड़० ना० पु० जाकड़, बन्धक, राहना।
जाकर० ना० पु० जिसहाथ में सर्व जिसका।
जाग० ना० पु० निद्राका त्याग, यज्ञ।
जागत० ना० स्त्री० चौकसाई।
जागतीज्योति० गु० अद्‌भुत पराक्रमी।
जागना० स० क्रि० नींदसे उठना, चेतना।

घर, आंत में सफ़ेद दाग।
छड़ना० स० क्रि० चावलों का छांटना।
छड़ा० गु० अकेला ना० पु० कान वा पांव में पहिरने का भूषण।
छड़ाना० स० क्रि० चावल साफ़करना।
छड़िया० ना० पु० जोड़ीवाल, आसावरदार ना० स्त्री० छोटीगली, कोलिया।
छड़ियाना० स० क्रि० छड़ीसे मारना।
छड़ी० ना० स्त्री० बेंत, बांसकी सूखी लकड़ी, छिकुनी।
छड़ीला० ना० स्त्री० जटामांसी।
छण० ना० पु० क्षण।
छणदना० अ० क्रि० दुर्बलहोना, घटना, निकलना।
छणटवाना० स० क्रि० छिलका उतरवाना।
छणटाई० ना० स्त्री० छांटने का काम।
छणटाव० ना० पु० कहीं, धानोंका कूटना।
छणडना० स० क्रि० छोड़ना, तजना, चलाना।
छणडना० स० क्रि० छुड़ाना,
छणिडत० गु० छोड़ागया।
छणडुआ० ना० पु० छूट छोड़।
छणडौती० ना० स्त्री० छुट्टी, छोड़ना।
छत० ना० स्त्री० घरके ऊपरकी गच या पाटन।
छतकुम्भक० ना० स्त्री० कनेर, कन्देल, यथा करवीरा श्वेतपुष्पा, अश्वहा छतकुम्भकः इति निघण्टुः।
छतना० ना० पु० छत्ता।
छति० ना० स्त्री० हानि, घटा, क्षता।
छत्तर० ना० पु० छत्र।
छत्ता० ना० पु० मधुमाखीकाघर, बर्रोका घर।
छत्तीस० गु० तीस और छः ३६।
छत्तीसी० ना० स्त्री० छिनाल, घूघटी, चालाकी।
छद० ना० पु० पत्ता, पुनर्नवा औषधि।
छदन० ना० पु० पत्ता।
छदाम० ना० स्त्री० टुकड़ा, पैसे की चौथाई।
छद्म० ना० पु० कपट, छल, फरेब।
छद्मिका० ना० स्त्री० मजीठ, गु० छलिन।

छनना० अ० क्रि० टपकना, निथुरना, साफ़होना।
छनाक० ना० पु० छन, माटीका भांडा टूटने का शब्द।
छनाका० ना० पु० तुरन्त जलजाना पानी का आगमें।
छनिक० ना० पु० क्षणिक।
छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गायत्र्यादि।
छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल।
छन्दना० अ० क्रि० गठना, बन्धना।
छन्दबन्द० ना० पु० छलबल, छल।
छन्दी० गु० छली, कपटी,
छन्ना० ना० पु० कपड़ा दूध आदि छाननेका।
छन्नी० ना० स्त्री० छोटा छन्ना, भूषणविशेष।
छन्नू० गु० छाननेहारा।
छप० ना० पु० जलमें कुछवस्तु गिरनेका शब्द।
छपई० ना० स्त्री० छः पदका छन्द।
छपकली० ना० स्त्री० जन्तुविशेष।
छपकाना० स० क्रि० पानी डालना।
छपकी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष।
छपना० अ० क्रि० छापाहोना, लुकना।
छपरा० ना० पु० छप्पर।
छपरिया० ना० स्त्री० छोटा छप्पर।
छपरी० ना० स्त्री० छवरा।
छपाई० ना० स्त्री० छापने का काम वा पैसा।
छपाका० ना० पु० जल में मारने से जो शब्द।
छपाना० स० क्रि० छपवाना, छिपाना।
छप्पन० गु० पचास और छः ५६।
छप्पर० ना० पु० तृणका छत।
छप्परखट० ना० पु० बड़ापलँग जिसके ऊपर कपड़ाकी पोशिश होती है।
छपड़ा० ना० पु० टोकराविशेष।
छबीला० गु० रूपवान्, सुन्दर।
छबीस० } गु० बीस और छः २६।
छब्बीस० }
छम० गु० समर्थ।
छमकट० गु० कपटी, छिनला और व्यभिचारी।

जागरण० ना० पु० नींदकात्याग, रातिको व्रतादि में जागना।
जागल० ना० पु० श्याम, अगर।
जागा० ना० पु० जातिविशेष।
जागू० ना० पु० जागनेहारा।
जाग्रत० ना० स्त्री० स्वप्न और सुषुप्ति से भिन्न अवस्था।
जांगली० ना० पु० विधारा।
जाचक० ना० पु० याचक, मांगनेहारा।
जाचना० स० क्रि० मांगना, चाहना।
जाचा० गु० मांगा, चाहा।
जाच्यमान० गु० मांगा वा चाहागया, अधमदान।
जाजक० ना० पु० झांझ वा ढोलकबजानेहारा।
जाजा० ना० स्त्री० कलौंजी।
जाजामन्ती० ना० स्त्री० जयजयवन्ती।
जाट० ना० पु० राजपूतों में जातिविशेष।
जाठ० ना० स्त्री० कोल्हूकी धुरी।
जाड़० ना० स्त्री० मसूढ़ा।
जाड़ा० ना० पु० शीत, ठंढ, शीतकाल।
जाड़ी० ना० स्त्री० दांतों की पांति।
जाड्य० ना० पु० जड़ता, शीतलता, मूढ़ता।
जात० ना० स्त्री० जाति, यात्रा, मेला, गु० जना।
जातक० गु० पुत्र, बच्चा।
जातकर्म० ना० पु० जन्म संस्कारविशेष यथा छठी आदि।
जातना० ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दण्ड, वेदना।
जातपांत० ना० स्त्री० पीढ़ी, वंशावली।
जातरूप० ना० पु० सुवर्ण, कांचन।
जातवेद० ना० पु० अग्निदेव।
जाति० ना० स्त्री० वर्ण, कौम, एक रूप से बहुत से पिण्डों में समानधर्म्म, यथा पशुत्व, मनुष्यत्व, उत्पन्न।
जातिकोप० ना० स्त्री० जावित्री।
जातिपत्री० ना० स्त्री० जावित्री बिरादरी की चिट्ठी।
जातिभ्रष्ट० गु० पापादि के कारण जो जाति से निकालागया वा निकलगया।
जातिवाचक० गु० जिस संज्ञा से जातिमात्रका बोधहोवे यथा पशु, पक्षी।
जातिसुज० ना० पु० जायफल।
जाती० ना० स्त्री० मालती, जावित्री, पुष्पविशेष।
जात्यायत० गु० जिस क्षेत्रकी आमनेसामने की भुजा तुल्य और चारों कोण सम हैं।
जात्यत्रिभुज० ना० पु० त्रिकोण जिसका एक कोण समकोणहो।
जात्रा० ना० स्त्री० यात्रा, चलना।
जात्री० ना० पु० यात्री, जानेवाला।
जान० ना० पु० विमान, सवारी, वाहनादि, ढीठ, युन्द, ज्ञान, स० गु० ज्ञानी।
जानकी० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
जानपहिचान० ना० पु० चिन्हार, मुलाकात।
जाना० अ० क्रि० चलना।
जानु० ना० पु० घुटना, गांठि।
जानो० अव्य० समझो, अ० क्रि० जानो।
जानना० स० क्रि० पहिचानना, समझना।
जाप० ना० पु० जप, पाठ।
जापक० }
जापी० } गु० जप करनेहारा।
जाब० ना० पु० दाढ़ी।
जाबी० ना० स्त्री० छोटी दाढ़ी।
जाम० ना० पु० पहर।
जामदग्न्य० ना० पु० परशुराम, जमदग्निकेपुत्र।
जामन० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, जाड़न, जमावन।
जामवन्त० ना० पु० ऋक्षोंका प्रधानविशेष।
जामवन्ती० ना० स्त्री० कृष्णचन्द्रकी स्त्री।
जामा० ना० पु० एड़ीतक पहिरनेकावस्त्र विशेष।
जामाता० }
जामातृ० } ना० पु० बेटी का पति।
जामिनी० ना० स्त्री० रात्रि, यामिनी, जमन देशकी भाषा वा वस्तु।

छमछमाना० अ० क्रि० चमकना, झलकना, बजना।
छय० ना० पु० क्षय।
छयरोग० ना० पु० क्षयरोग।
छर० ना० स्त्री० जटामांसी, फड, दण्ड, जल्दी, शिताबी।
छरछोबी० ना० स्त्री० झाड़े फिरने का स्थान।
छरस० ना० पु० षटरस।
छरी० ना० स्त्री० छड़ी।
छर्दायन० ना० पु० खीरा।
छर्दि० ना० स्त्री० वमन, थोकना।
छर्रा० ना० पु० लोहेंयादिकी छोटी छोटी गोली।
छल० ना० पु० कपट, ठगाई, धोखा, अंचल, मिष।
छलकना० अ० क्रि० निकलजाना, हलकना।
छलकाना० स० क्रि० गिरादेना।
छलकारी० गु० कपटी, ठग दगाबाज।
छलांगना० अ० क्रि० कूदफना।
छलछिद्र० ना० पु० कपट, छल।
छलछिद्री० गु० कपटी, छली।
छलना० स० क्रि० छलकरना, ठगना, अटकाना।
छलनी० ना० स्त्री० चलनी।
छलांग० ना० स्त्री० कुदका, फलांग।
छलावा० ना० पु० लूका, आग, शैतानी।
छलिया० } गु० कपटी, ठग, प्रपंची।
छली० }
छल्ला० ना० पु० अंगुली में पहिरने का गहना।
छवा० ना० स्त्री० एँड़ी पांवकी।
छवि० ना० स्त्री० शोभा, चमक, सुन्दरता।
छविसीर० ना० पु० कान।
छवीला० गु० सुन्दर, शोभायमान।
छवैया० ना० पु० छानेहारा।
छांई० ना० स्त्री० छीप।
छां० ना० स्त्री० छाया।
छांट० ना० स्त्री० खुद, साठी छीलन।
छांटन० ना० स्त्री० टुकड़ी, धज्जी।
छांटना० स० क्रि० वमन करना, कतरना, अलग करना।
छांड़० ना० स्त्री० किनारा, नदी का कटाव, नदी का सोता।
छांड़ना० स० क्रि० छोड़ देना।
छांद० ना० स्त्री० पगहा, पैकड़ा।
छांदना० स० क्रि० बांधना।
छांदा० ना० पु० भाग, अंश, हिस्सा।
छांव० } ना० स्त्री० छाया, परछाईं।
छांह० }
छांहारा० गु० छायावान्।
छाक० ना० स्त्री० कलेवा।
छाकना० स० क्रि० कृषक जल पहुंचाना, पेटभर भोजन वा कोई वस्तु खाना।
छाग० ना० स्त्री० बकरा।
छागल० ना० पु० कुप्पी, बकरी या बकरीकीखाल।
छागी० ना० स्त्री० बकरी।
छागलांगी० ना० स्त्री० विधारा।
छाछ० } ना० पु० मट्ठा, मथा दही।
छाछी० }
छाज० ना० पु० सूप।
छाजना० अ० क्रि० छाना, फबना, सजना।
छाजित० गु० शोभित, शोभकारी।
छात० ना० स्त्री० छत।
छाता० ना० पु० छत्र, छतुरी।
छाती० ना० स्त्री० छोटाछाता, उर, चूंची।
छात्र० ना० पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला।
छादन० ना० पु० कपास।
छान० ना० स्त्री० ठठरी, ठाठ, छप्पर, विचार।
छानना० स० क्रि० निबेरना, स्वच्छ करना, ढूंढना, विचारना।
छानबीन० ना० स्त्री० विचार, जांच।
छानवे० गु० नब्बे और छः ९६।
छानस० ना० पु० चोकर, भूसी, बूरा।
छाना० स० क्रि० छाजना, छायाकरना, पाटना, छप्पर बनाना, ठहराना।
छानी० ना० स्त्री० छप्पर।
छाप० ना० स्त्री० मुद्रा, मुहर, अपना चिह्न

जायपत्री० ना० स्त्री० जावित्री।
जायफल० ना० पु० फलविशेष।
जाया० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, भार्या, गु० जनी।
जार० ना० पु० उपपति, यार, दूसरापति।
जारज० } ना० पु० विजन्मा, संकरवर्णी,
जारजात० } उपपतिजात, यारकाजन्माया।
जारन० ना० पु० जलावन।
जारना० स० क्रि० जलाना, फूंकना, दाहना।
जारल० ना० पु० काष्ठविशेष।
जाल० ना० पु० जिससे मछलीआदि पकड़ते हैं झंझरी, माया, पाखण्ड, भँवर, फांसी।
जालगि० अव्य० जिस लिये, सर्व० जिसके लिये।
जालरन्ध्र० ना० पु० झरोखा, जाली का।
जाला० ना० पु० जिसको मकड़ी बनाती है, घड़ा, मोतियाबिन्दु।
जालिका० ना० स्त्री० झंझरी।
जालिनी ना० स्त्री० मुरहरी, देवदाली।
जालिया० ना० पु० छलिया, जालवाला।
जाली० ना० स्त्री० बहुत छिद्रों की खिड़की और कपड़ा आदि।
जालौन० ना० पु० बुन्देलखण्डका नगरविशेष।
जावक० ना० पु० आलता, महावर, सेंदुर।
जावका० ना० पु० स्त्री० लौंग।
जावनी० ना० स्त्री० अजवायन।
जावा० ना० पु० उपद्वीपविशेष।
जावाँ० ना० पु० दोपुत्र जो एकहीसाथ उत्पन्नहों।
जावालि० ना० पु० मुनिविशेष।
जावित्री० ना० स्त्री० वृक्षविशेष की छाल।
जासु० सर्व० जिससे, जिसको।
जाह्नवी० ना० स्त्री० गंगाजी।
जाहि० सर्व० जिसको।
जाही० ना० स्त्री० जूही, जाती।
जिगजिगिया० गु० चापलूसी करनेवाला।
जिगजिगी० ना० स्त्री० लपट, सपट, चापलूसी।
जिगना० ना० पु० वृक्षविशेष।
जिगीषा० ना० स्त्री० हिंसका, जयकी इच्छा।
जिगणी० ना० पु० जिगना।
जिजिया० ना० स्त्री० बड़ीबहन, चूची।
जिठनिया० } ना० स्त्री० जेठकी स्त्री।
जिठानी० }
जितना० ना० पु० } परिमाण वा अवधि या
जितनी० स्त्री० } संख्या का बोधक।
जितयोनि० ना० पु० हरिण।
जिता० } गु० परिमाण या अवधि वा संख्या
जितक० } बोधक।
जितेन्द्रिय० } ना० पु० जिसने इन्द्रियों को
जितेन्द्री० } वश किया है।
जिधर० अव्य० यत्र, जहाँ।
जिन० ना० पु० ऋषिविशेष।
जिभारा० गु० गप्पी, जो कठोर बात कहता है।
जिम० अव्य० जिमि, यथा, जैसे।
जिमाना० स० क्रि० खिलाना।
जिमि० अव्य० यथा, जैसे।
जिय० } ना० पु० आत्मा, प्राण, जान।
जियरा० }
जियाना० स० क्रि० जिलाना, प्राणदान देना।
जियावना० स० क्रि० जियाना।
जियोट० गु० स्त्री० शूरता, शूर, योद्धा।
जिलाना० स० क्रि० प्राणदान देना, जीता करना।
जिवाना० स० क्रि० जिमाना, जिलाना।
जिष्णु० ना० पु० अर्जुन, इन्द्र।
जिस० सर्व० सम्बन्ध में आता है।
जिहि० सर्व० जिस।
जिह्म० ना० पु० कपट, मूढ़ता।
जिह्मकर० गु० कपटी, छली।
जिह्मग० ना० पु० बाण, तीर।
जिह्वग० ना० पु० सर्प, साँप।
जिह्वता० ना० स्त्री० अधिक वार्त्ता की शक्ति।

जिह्वा० ना० स्त्री० रसना, जीभ।
जिह्वाग्र० ना० पु० मुखाग्र, ज़बानी।
जिज्ञासा० ना० स्त्री० जानने की इच्छा।
जिज्ञासी० } गु० अभिलाषी, जानने की इच्छा
जिज्ञासु० } रखनेहारा।
जिज्ञास्य० गु० जानने के योग्य है।
जी० ना० पु० जीव, प्राण, मर्यादा का सूचक।
जीका० ना० स्त्री० जीविका।
जीगुराना० स० क्रि० सिकोड़ना।
जीत० ना० स्त्री० जय, फ़तह।
जीतना० स० क्रि० जय करना, हराना।
जीतव० ना० पु० आत्मा, हिया, जिन्दगी।
जीतवन्त० } ना० पु० जिसकी जय हुई,
जीतवैया० } जयमान।
जीता० गु० प्राणधारी अर्थात् मरानहीं।
जीति० ना० स्त्री० जय, जीत।
जीतिया० ना० स्त्री० लड़कों के जीने के लिये स्त्रियों का व्रतविशेष।
जीतू० ना० पु० जयवन्त, जीतवैया।
जीना० अ० क्रि० जीता रहना।
जीभ० ना० स्त्री० जिह्वा, रसना, ज़बान।
जीभारा० गु० गप्पी, बकी।
जीभी० ना० स्त्री० जीभ का मल उतारने की वस्तु।
जीमना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।
जीमार० गु० जो हनने के योग्य है, निज इच्छा मारनेहारा।
जीमूत० ना० पु० मेघ, देवदाली।
जीरक० ना० पु० ज़ीरा सफेद।
जीरन० गु० जीर्ण, पुराना।
जीरा० ना० पु० औषधि विशेष का बीज।
जीर्ण० गु० बुड्ढा, पुराना, सड़ा, जाजर।
जील० ना० स्त्री० गाने में अति तीक्ष्णस्वर।
जीव० ना० पु० प्राण, शरीरादि का धारक, बृहस्पति, चन्द्रमा महाजिवी।

जीवस्थानि० ना० पु० ईश्वर, अनादि पुरुष।
जीवगर० } गु० सूमा, पोढ़ा,
जीवट० } दृढ़ता।
जीवड़ा० ना० पु० प्राण, प्रियतम।
जीवत० गु० जीते।
जीवदान० ना० पु० रक्षाकरना, प्राण बचाना।
जीवधारी० ना० पु० प्राणी, हैवान्।
जीवन० ना० पु० जीविका, जन्म से मृत्युतक का काल, जल।
जीवनमूल० ना० स्त्री० जीविका मूल, हयात की जड़।
जीवना० अ० क्रि० जीतारहना।
जीवनि० ना० स्त्री० } सजी-
जीवनिया० ना० स्त्री० } वनबूटी।
जीवन्त० गु० जीता।
जीवन्ती० ना० स्त्री० सजीवनबूटी, गुरुच।
जीवमञ्जा० } ना० स्त्री० सजीवन
जीववर्द्धिनी० } बूटी।
जीवा० ना० स्त्री० जीवन्ती, जो चापके एकांशसे द्वितीयांशतक।
जीविका० ना० स्त्री० वृत्ति, निर्वाह का उपाय
जीह० ना० स्त्री० जीभ, रसना।
जीहारना० अ० क्रि० निराश होना, डर से दब रहना।
जुआ० ना० पु० छलकर्म, कीटविशेष, माची।
जुआरि० ना० स्त्री० अन्न विशेष।
जुआरी० ना० पु० द्यूतकर्मी, छलकारी, दुष्ट।
जुग० ना० पु० युग।
जुगति० ना० स्त्री० युक्ति, श्लेषद्व्यर्थ।
जुगती० गु० छली, चतुर, ठठोल, द्व्यार्थ बोलनेहारा, उपायी।
जुगनी० ना० स्त्री० } मक्खी जो रातको चमकती है, गलेका भूषण विशेष।
जुगनू० ना० पु० }
जुगवना० स० क्रि० रक्षाकरना, बचाना।
जुगवैया० ना० पु० जुगवनेहारा।

टापा० ना० पु० खांचा।
टापू० ना० पु० द्वीप, जज़ीरह।
टाबर० ना० पु० छोटी झोल।
टारना० स० क्रि० टालना।
टाल० ना० स्त्री० टालमटोल, छलकरके काल काटना, अथवा लकड़ी आदिका ढेर, टाल, मल्लयुद्ध करने में छल।
टालटोल० ना० पु० टालमटोल।
टालना० स० क्रि० छल करके बात फेरना या बदलना या उड़ाना, हटाना।
टालमटोल० ना० स्त्री० चकरमकर, हीलाबाजी।
टाला० ना० पु० टाल।
टिकटिकी० ना० स्त्री० चिपकली।
टिकठी० ना० स्त्री० काठकी तिपाई या चौपाई, अरथी।
टिकना० अ० क्रि० रहना, ठहरना।
टिकली० } ना० स्त्री० बिन्दी जिसको स्त्रियां
टिकुली० } माथेपर लगाती हैं।
टिकाऊ० गु० ठहराऊ, चलाऊ।
टिकाना० स० क्रि० रखना, ठहराना, अटकाना।
टिकाव० ना० पु० ठहराव, अटकाव।
टिकासर० ना० पु० टिकनेकी जगह, टिकाव।
टिकासा० गु० टिकनेहारा, ठहरनेवाला।
टिकिया० ना० स्त्री० पाटी, अंगाकड़ी, छोटीरोटी, किसी वस्तुकी पाटके गोलाकार चपटी वस्तु बनाना।
टिकोर० ना० पु० लोथड़ा, सेंकाई।
टिकड़० } ना० पु० अंगाकड़ा, कड़ी गोलरोटी
टिक्कर० } विशेष।
टिकली० ना० स्त्री० टिकली।
टिक्की० ना० स्त्री० टिकिया।
टिघलना० अ० क्रि० पिघलना, गलना।
टिघलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।
टिटकारना० स० क्रि० टिकटिक करके पशुको चलाना या हांकना।
टिटकारी० ना० स्त्री० टिकटिक करना।
टिटीहरी० } ना० स्त्री० पक्षीविशेष।
टिट्टिभ० }
टिड्डा० ना० पु० } उड़ता कीड़ा।
टिड्डी० स्त्री० }
टिपका० ना० पु० रंगका चिह्न जो अंगुली से लगा है।
टिप्पर० ना० पु० टीका विवर्ण।
टिप्पस० ना० स्त्री० अभिमान, दाव।
टिमाना० स० क्रि० प्रतिदिन थोड़ीसी जीविका देना।
टिमाव० ना० पु० प्रतिदिन थोड़ीसी जीविका।
टिमटिम० ना० पु० सरोंच, शब्द।
टिमटिमाना० अ० क्रि० झलझलाना, जगमगाना।
टिहरा० ना० पु० छोटागांव, पुरवा।
टिहरी० ना० स्त्री० छोटीसी बस्ती।
टींट० ना० स्त्री० करील का फल।
टीक० ना० स्त्री० शिर या गलेका गहना।
टीका० ना० पु० तिलक, टिप्पन, माथेका गहना विशेष, अर्थ कहना या लिखना, ब्याह में कन्या की ओरसे लग्नबन्धन के लिये प्रथम जो कुछ जाता है, राज्याभिषेक।
टीटली० ना० स्त्री० औषधिविशेष।
टीड़ी० ना० स्त्री० टिड्डी।
टीप० ना० स्त्री० ऋणपत्र, तमस्सुक, तास कोखिचना, स्वर उड़ाना, दबाहट।
टीपटाप० ना० स्त्री० बनावट, सजावट।
टीपना० स० क्रि० दाबना, टटोलना, निचोड़ना, बिन्दी लगाना, लिखना।
टीला० ना० पु० ढाल, पहाड़ी।
टीस० ना० स्त्री० पीड़ा, टपक, धड़क।
टीसना० अ० क्रि० टीसमारना, धमकना, धड़कना।

जुगाना० स० क्रि० यत्न करना, किसी के उपकार हेतु उपकार करना।

जुगालना० स० क्रि० पागुराना, पागुरकरना।

जुगाली० ना० स्त्री० पागुर।

जुगुप्सा० ना० स्त्री० निन्दा, कुत्सा।

जुगुप्सित० गु० निन्दित, कुत्सित।

जुझावट० ना० पु० युद्ध वा समरभाव।

जुझावना० स० क्रि० युद्धमें मरवाडालना।

जुटना० अ० क्रि० भिड़ना, मिलना, सटना।

जुटाना० स० क्रि० भिड़ाना, मिलाना।

जुटैया० ना० पु० भिड़ैया, लड़ाका।

जुठारना० स० क्रि० जूठा, करना।

जुड़ना० अ० क्रि० मिलजाना, सटिजाना।

जुड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का पैसा, जोड़ने का काम और जुकाम, श्लेष्मा, ठंढ।

जुड़ाना० स० क्रि० मिलाना, मिलवाना, अ० क्रि० ठढाना, सुस्ताना, दम लेना।

जुड़िया० } ना० पु० दो लड़के जो एक
जुड़िहा० } साथ उपजें।

जुताई० ना० स्त्री० खेत जोतने का काम वा जोतने का पैसा।

जुताना० स० क्रि० हल चला के खेत दुरुस्त कराना।

जुतियाना० स० क्रि० जूतों से मारना।

जुद्ध० ना० पु० युद्ध।

जुधिष्ठिर० ना० पु० युधिष्ठिर।

जुन्हरी० ना० स्त्री० जुआर।

जुन्हाई० ना० पु० चन्द्रमा, स्त्री० चांदनी।

जुन्हार० ना० स्त्री० अन्न विशेष जुआर।

जुन्हैया० ना० स्त्री० चांदनी, चन्द्रमा।

जुरादेना० स० क्रि० पाना।

जुराना० अ० क्रि० धीरज होना, स० क्रि० एकठा होना, पाना।

जुरावना० गु० जो पाने के योग्यहै, मिलनहार।

जुरुआ० ना० स्त्री० जोरू, पत्नी।

जुरना० अ० क्रि० मिलना, प्राप्तहोना, सटना, भिड़ना, एकठ्ठा होना।

जुल० ना० पु० छल।

जुवती० ना० स्त्री० युवती, जवान औरत।

जुवराज० ना० पु० युवराज, बलीअहद।

जुवा० गु० युवा० ना० पु० जूए, छआ।

जुवार० ना० पु० अन्न विशेष।

जुवारी० ना० पु० जुआरी, जूपी।

जुहार० ना० पु० सलाम, प्रणाम।

जू० अव्य० जी।

जूआ० ना० पु० गाड़ी वा हलका काठ जिसमें बैल मचते हैं, मार्चा, द्यूत, जूए।

जूआट० ना० पु० जूआ।

जूआरी० ना० पु० जुआ खेलने में चतुर।

जू० ना० स्त्री० चीलड़।

जूझ० ना० पु० युद्ध, समर।

जूझना० अ० क्रि० लड़ना, लड़ाई में कटना अर्थात् लड़मरना।

जूट० ना० पु० झुण्ड।

जूठ० ना० पु० खायाभया।

जूठन० ना० स्त्री० भोजन के पीछे शेष रहना।

जूठा० गु० जूठ, खायाहुआ।

जूड़० गु० ठंढा, शीतल, ना० पु० शीत।

जूड़ा० ना० पु० ठंढा, शीत, शिरके पीछे गांठि दियेहुये बाल।

जूड़ी० ना० स्त्री० अन्तरिया, जाड़े का रोग।

जूता० } पनही, चमड़े की पादुका।
जूती० }

जून० ना० पु० समय, काल, वक्त।

जूना० ना० पु० तृणकी, रस्सी, ऐंठाहुई घास।

जूप० ना० पु० जूआ।

जूपी० गु० जुआरी।

जूरा० ना० पु० बालों की गांठि, चोटी।

जूरी० ना० स्त्री० समूह, जुरी।

जूस० ना० पु० परेह, रोगी का पथ्य, शोरवा।

जूह० ना० पु० समूह, जूआ।

टुक० गु० थोड़ा, अल्प, ज़रा।
टुकड़ा० ना० पु० एक खण्ड, चिट।
टुकसा० गु० थोड़ासा।
टुंगा० ना० पु० छोटी पूंछ।
टुच्चा० } ना० पु० लुचा, गुण्डा, लपका, तुच्छ।
टुचा०
टुंजा० ना० पु० नन्हा।
टुण्टुक० ना० पु० स्योनावृक्ष।
टुण्टुनाना० अ० क्रि० गुनगुनाना, धीरजसे अलापना, धीरे धीरे बजाना।
टुण्ड० ना० पु० हाथ कटा, डाली कटा वृक्ष।
टुण्डा० गु० हाथ कटा, लूला, अपांग।
टुण्डियांचढ़ाना० स० क्रि० हाथ पीछे बांधना।
टुण्डी० ना० स्त्री० नाभि, गु० जिस स्त्रीका हाथ कटा या टूटाहो।
टुसकना० } अ० क्रि० रोकना, फूकना।
टुहुकना०
टूं० ना० पु० वायु सरने का शब्द अर्थात् पादने का शब्द।
टूंगना० स० क्रि० चींथियाना, चिचोरना, खुटकना।
टूंड़ी० ना० स्त्री० नाभि, टूंठ।
टूक० } ना० पु० टुकड़ा, ढोलक का एक शब्द।
टूका०
टूट० ना० स्त्री० खण्डन, फूटना, टोटा, लिखने में जो भूलके ऊपर लिखादिया, त्रुटि।
टूटना० अ० क्रि० झुमकना, दौड़ना, चढ़ाई, करना, फूटना, फटना, क्षतहोना, गढ़का छूटना, पक्षीका ऊपरसे नीचे उतरना।
टूटा० गु० फूटा, टुकड़े भया, ना० पु० टोटा, न्यूनता।
टूम० ना० स्त्री० थोड़ी बात, भूषणविशेष, छतरी।
टूमटाम० ना० पु० कुछ थोड़ी बातें।
टूसा० ना० पु० आकका फल, मदारका फल।
टूसी० ना० स्त्री० कोंपल, कली।
टेंगरा० ना० पु० } मछलीविशेष।
टेंगरी० स्त्री०
टेंट० ना० पु० करील या कपास का पका फल, फुली।
टेंटर० ना० पु० फलविशेष, आंखका दीदा बढ़ा हुआ अर्थात् आंखका निकाम होजाना।
टेंटा० ना० पु० } करीलका बड़ा पकाफल, व्यर्थभाषण, कटीला,
टेंटी० स्त्री०
...विशेष, कांटे, बैलका कांधा।
टेंटुआ० ना० पु० नरी, सांसी, नरेटी गलेकी पोंगली, हड्डी।
टेंटें० ना० पु० चेंचें, किलकिलाहट।
टेई० ना० स्त्री० आड़, थूनी क्रि० पैनी करी।
टेक० ना० स्त्री० थूनी, अड़, टेकनी, प्रतिज्ञा।
टेकन० ना० स्त्री० आड़, थाम।
टेकना० स० क्रि० आड़ना, थांभना, सहारा लगाना।
टेकनी० ना० स्त्री० टेकन, थूनी।
टेकर० } ना० पु० टीला, ऊंचा।
टेकरा०
टेढ़० ना० स्त्री० वक्रता, कज।
टेढ़ा० गु० वक्र जो सूधा नहीं है।
टेढ़ाई० ना० स्त्री० वक्रता, बांकपन, कज।
टेढ़ी० ना० स्त्री० गर्व, अहंकार, हठ, बांकी।
टेनी० ना० स्त्री० छोटा दण्डा जो अहीर रखते हैं।
टेम० ना० स्त्री० दीपक की जलन वा लव वा जोति।
टेर० ना० स्त्री० स्वर, लय, पुकार।
टेरना० अ० क्रि० पुकारना, ललकारना, अलापना।
टेलना० स० क्रि० पेलना, घुसेड़ना।
टेव० ना० स्त्री० चाल, चाट, स्वभाव।
टेवकिया० ना० स्त्री० छोटी टेवकी।
टेवकी० ना० स्त्री० थूनी, खम्भा, थाम्भा।
टेवना० स० क्रि० बांधदेना, व्याद रखना, यादि रखाना।

जूही० ना० स्त्री० पुष्प का वृक्ष विशेष।
जे० सर्व० जो, सब।
जेट० ना० स्त्री० ढेर।
जेठ० ना० पु० पतिका बड़ाभाई, ज्येष्ठ।
जेठरा० गु० पहिलौठा, पतिका बड़ाभाई।
जेठा० गु० पहिलौठा, बड़ा, कुसुम का पहिलारंग।
जेठानी० ना० स्त्री० जेठकी स्त्री।
जेठी० गु० बड़ी।
जेठीमधु० ना० पु० मुलहठी।
जेठौत० ना० पु० जेठका पुत्र।
जेता० } गु० जितना।
जेतिक० }
जेब० ना० पु० खलीता, पाकट, फ़ारसी शब्द है।
जेयमान० गु० जीतनेवाला, जयमान।
जेर० ना० पु० ऐरी।
जेवड़ा० ना० पु० रस्सा, डोर।
जेवना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।
जेवनार० ना० स्त्री० खाना, भोजन, यज्ञ।
जेवरी० ना० स्त्री० रस्सी, डोरि।
जेहर० ना० पु० स्त्रियों का भूषण विशेष।
जैत० ना० पु० वृक्ष विशेष, रागिनीविशेष।
जैन० ना० पु० नास्तिकों का मत विशेष।
जैनी० गु० जैन मतवाला, सरावक, सरौगी।
जैमाला० ना० स्त्री० जयमाला, जीति की माला।
जैमिनि० ना० पु० मुनि विशेष।
जैमिनी० गु० ब्रह्मवादी।
जैसा० अव्य० यथा।
जैहैं० अ० क्रि० जायेंगे।
जो० सर्व० यह शब्द सम्बन्ध का बोधक है अव्य० यथा, यदि।
जोआरभाटा० ना० पु० समुद्र के जलका च-ढ़ाव उतार।
जोइ० ना० स्त्री० जोरू, दुलहन।
जोउ० अव्य० जो, यदि, जैसा, ज्यों।
जोंक० ना० स्त्री० जलौका, रक्तपा, जलजंतु।
जोंकर० अव्य० जिसप्रकार।
जोंहीं० अव्य० जिससमय।
जोख० ना० स्त्री० तौल।
जोखना० स० क्रि० तोलना।
जोखिम० ना० स्त्री० चिन्ता, शंका, घटी
जोखिमी० ना० पु० जोखिम उठानेहारा।
जोखों० ना० स्त्री० जोखिम।
जोग० ना० पु० योग।
जोगमाया० ना० स्त्री० मायारूपीशक्ति जो यो-गियों में है जिसकरके वे कहते हैं कि हम अपना स्वरूप अपने वश राखें।
जोगवत० क्रि० परखत, राखत, रखत।
जोगा० गु० योग्य।
जोगाभ्यास० ना० पु० जोग का अभ्यास।
जोगिन्० ना० स्त्री० जोगन, जोगी की स्त्री।
जोगिनी० ना० स्त्री० देवी की सहचरी।
जोगिया० ना० पु० जोगी० गु० रंग विशेष ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
जोगी० ना० पु० योगी, शान्त।
जोगेश्वर० ना० पु० योगेश्वर, तपस्वी, पुजारी विशेष श्री महादेवजी, श्रीविष्णुनारायण।
जोग्य० गु० योग्य, उत्तम, अच्छा।
जोजन० ना० पु० योजन, चारकोस।
जोट० ना० पु० साथ, जोड़ी गु० सम।
जोटा० ना० पु० जोड़ा।
जोड़० ना० पु० मेल, गांठ, थेगली, मीज़ान।
जोड़ती० ना० स्त्री० लेखा, गिनती।
जोड़न० ना० पु० सोहागा, सांटन, जामन।
जोड़ना० स० क्रि० मिलाना, एकट्ठा करना, ल-गाना, संकलन करना, धन बटोरना, बनाना, गांठना।
जोड़ा० ना० पु० युग्म, दूसरा, जूता, धोती, एक बार पहिनने के कपड़े।
जोड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का काम या पैसा

टेवा० ना० पु० जन्मपत्री का देखना वा अतिक्रान्त लना, चाट।
टेहरा० ना० पु० छोटागांव, पुरवा।
टेहला० ना० पु० विवाह की रीति।
टोआई० ना० स्त्री० छुआई।
टोटा० ना० पु० पटाका, पुरा, पोड़, बारूद की पुड़िया, बांसका पोढ़।
टोटी० ना० स्त्री० पनाला, मोरी।
टोक० } ना० स्त्री० अटकाव, रुकाव, टोकटाक० } झंझाड़।
टोकना० स० क्रि० पूछना, रोकना, झाइलगाना, बुरी दृष्टि से देखना।
टोकरा० ना० पु० डौरा, डलिया, झौआ।
टोकरी० ना० स्त्री० डौरी, डालिया।
टोकाटोकी० ना० स्त्री० रुकाव, पूछपाछ, झंझाड़।
टोटका० ना० पु० मोहनी लटका, वशीकरण।
टोटरु० ना० पु० घुघु विशेष।
टोटा० ना० पु० घटी, हानि, न्यूनता।
टोड़ी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
टोना० ना० पु० जादू, वशीकरण, स० क्रि० टटोलना।
टोनहा० ना० पु० नटवा, ओझा, बंगा, जादूगर।
टोनहाई० } ना० स्त्री० नटिनी, जादूगरनी।
टोनही० }
टोनहैया० }
टोप० } ना० पु० कानतक शिरढकने का वस्त्र विशेष।
टोपा० }
टोपी० ना० स्त्री० शिर ढकने का वस्त्र विशेष, कुलाह।
टोरा० ना० पु० भीतिमें पानी के बचाव के लिये थाइलगाकर छानी अर्थात् छज्जा निकालने की वस्तु, टोड़ा।
टोल० ना० स्त्री० सभा, संगति।
टोला० ना० पु० मुहल्ला, बस्ती का मुहल्ला।
टोली० ना० स्त्री० टोल, समूह।
टोहना० स० क्रि० ढूंढना, टटोलना।
टोना० ना० पु० टोनहा।

[ठ]

ठई० अ० क्रि० ठहराई, मुकर्रकी।
ठकठक० ना० पु० बहुत परिश्रम का कार्य्य, गूढ़ता, शब्द विशेष।
ठकठकाना० स० क्रि० ठोंकना, खटखटाना।
ठकठकिया० ना० पु० बखेड़िया, झगड़ालू।
ठकठेला० ना० पु० धक्कामुक्की, झगड़ा बखेड़ा।
ठकठौआ० ना० स्त्री० पनसोई।
ठकुरसोहाती० गु० मुखदेखी बातकहना, श्रोता के मनभावित वार्त्ता करना।
ठकुराई० ना० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, राज्य।
ठकुरायन० ना० स्त्री० ठाकुरकी स्त्री, रानी।
ठग० ना० पु० गठिकटा, चोर, प्रतारक, धोखा देनेहारा।
ठगई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी, ठगाई।
ठगना० स० क्रि० छलना, चोराना, धोखादेना।
ठगनी० ना० स्त्री० ठगकी स्त्री, चोट्टी।
ठगाई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी, छल।
ठगाना० स० क्रि० छलाना, चोरीकरवाना।
ठगिन० ना० स्त्री० ठगिनी।
ठगिया० ना० पु० ठग, प्रतारक, चोर, छली।
ठगौरी० ना० स्त्री० ठगई।
ठटरा० ना० पु० बखेड़ा, झगड़ा।
ठट्ठ० ना० पु० भीड़, मंडली।
ठठक० ना० स्त्री० रुकाव, अटकाव, डर डिगाव।
ठठकना० अ० क्रि० रुकना, अटकना, आश्चर्य्य में होजाना, डिगना।
ठठना० स० क्रि० बनाना, सजाना, दुरुस्तकराना, अ० क्रि० पिटना, मारेजाना।
ठठरा० ना० पु० आंड, घेरा।
ठठरी० ना० स्त्री० टाट, रथी, दुर्बल शरीर।

जोड़ी० ना० स्त्री० युग्म, दूसरा।
जोत० ना० स्त्री० उजाला, प्रकाश, ज्योति, हल प्रवाह, किरण, टेम, दृष्टि।
जोतना० स० क्रि० नाधना, जुये में लगाना, हलाई करना, खेत बनाना।
जोतमान्० गु० ज्योतिष्मान, चमकदार।
जोतार० ना० पु० हलवाहा, किसान।
जोति० ना० स्त्री० जोत, प्रकाश, तारा, द्युति, आंखिआदि की ईश्वर।
जोतिष० ना० पु० ज्योतिष, नजूम।
जोतिषी० गु० ज्योतिषी, नजूमी।
जोतिःस्वरूप० गु० तेजस्वी, एक नाम श्रीभगवान् का है।
जोती० ना० स्त्री० तराज़ू के पल्ले की रस्सी, खड़ाऊं की रस्सी।
जोत्स्ना० ना० स्त्री० चन्द्रिका, चन्द्रकला।
जोत्स्नी० ना० स्त्री० रात्रि, रैन, निशा।
जोधन० ना० पु० लड़ाई, समर।
जोधा० ना० पु० योद्धा।
जोन०, जोनि० } ना० स्त्री० योनि।
जोन्ह० ना० पु० चन्द्रमा, चांदनी।
जोबन० ना० पु० यौवन, छाती, स्तन।
जोबनवती० गु० यौवनवती।
जोबनमा०, जोवना० } ना० पु० जोबन, यौवन।
जोय० ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, जोरू।
जायसी० गु० ज्योतिषी।
जोरू० ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, बीबी।
जोलो० ना० पु० छल, धोखा।
जोवत० क्रि० चाहत, देखत।
जोवना० स० क्रि० देखना, ताकना।
जोसी० ना० पु० ज्योतिषी, जाति विशेष।
जोहना० स० क्रि० बाट देखना, ढूंढना।
जौ० ना० पु० अन्नविशेष, यव, अव्य० जब, यदि।
जौतुक० ना० पु० यौतुक, दायजा।
जौन० सर्व० जो।
जौलौ० अव्य० जबतक।
ज्या० ना० स्त्री० माता, पृथ्वी, कमानकारोदह।
ज्याना० स० क्रि० पालना, जिलाना।
ज्येष्ठ० ना० पु० जेठका महीना, बड़ाभाई, गु० श्रेष्ठ, उत्तम।
ज्येष्ठा० ना० स्त्री० १८ अठारहवां नक्षत्र।
ज्योति० ना० स्त्री० जोति, लालनन्दन।
ज्योतिर्गण० ना० पु० तारागण।
ज्योतिष० ना० पु० विद्या विशेष, शास्त्रविशेष, इल्मनजूम।
ज्योतिषी० ना० पु० ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता, नजूमी, पण्डित।
ज्योतिष्मती० ना० स्त्री० मालकंगनी।
ज्योतिष्मान्० गु० प्रतापी, तेजस्वी।
ज्योत्स्ना० ना० स्त्री० चांदनी।
ज्योनार० ना० स्त्री० खाना, पाक, भोजन।
ज्वर० ना० पु० तप, ताप, बुखार।
ज्वरविनाशिनी० ना० स्त्री० गुरच, मजीठ।
ज्वरा० ना० स्त्री० मृत्यु, मौत।
ज्वरान्तक० ना० पु० चिरायता।
ज्वलन० ना० स्त्री० जलन, आगिकी जीभविशेष।
ज्वार० ना० पु० अन्न विशेष।
ज्वारी० ना० पु० जुआरी।
ज्वाला० ना० स्त्री० आंच, लौ, लपक, आग।
ज्वालामुखी० ना० स्त्री० स्थान विशेष जिस में अग्नि सदैव प्रज्वलित रहती है।

[झ]

झंखाड़० ना० पु० विना पत्ते के वृक्ष।
झंझट० ना० पु० झगड़ा, घबराहट।
झंझटी० गु० कठिन, झगड़ालू।
झंझना० गु० चिड़चिड़ा।
झंझनाना० अ० क्रि० झनझनाना, बजना और फड़फड़ाना।

ठोस० गु० टाठा, जो खोखला नहीं है।
ठोसना० स० क्रि० ठांसना
ठोसाई० ना० स्त्री० ठांठाई, दृढ़ता।
ठौर० ना० स्त्री० स्थान, जगह।

[ड]

डकराना० अ० क्रि० कूकमार के रोना।
डकार० ना० स्त्री० उद्गार, आरोग्य।
डकारना० अ० क्रि० ढिकारना, हुंकारना और पचाजाना।
डकैत० ना० पु० डाकू, चोर, बटमार।
डकैती० ना० स्त्री० चोरी, बटमारी, डाका।
डकौत० } ना० पु० वर्णसंकरकी जातिविशेष जिसका बाप ब्राह्मण और महतारी ग्वालिनि थी।
डकौतिया० }
डग० ना० पु० चलावा, फाल, पद, डेग।
डगडगाना० अ० क्रि० हिलना, चमचमाहट से चलना।
डगना० अ० क्रि० हिलना, डिगना।
डगमग० गु० चंचल, चलायमान।
डगमगाना० अ० क्रि० लड़खड़ाना, हिलना।
डगर० ना० स्त्री० मार्ग, सड़क, पैंड़ा।
डगरना० अ० क्रि० हिलना, फिरना।
डगरा० ना० पु० बांसका बनायाहुआ पात्र विशेष।
डग्गा० ना० पु० दुर्बल घोड़ाविशेष।
डङ्क० ना० पु० चेमक, बिच्छू, आदि का विषयुक्त कांटा।
डङ्का० ना० पु० ढका, धौंसा, नक्कारह।
डङ्किनी० ना० स्त्री० डाकिनी।
डङ्कियाना० स० क्रि० डंकमारना, चमकना।
डङ्कीला० गु० जिस जन्तुके डंकहो।
डटना० अ० क्रि० अड़ना, भिड़ना, तकना, बनना।
डटैया० ना० पु० डटनेवाला।
डढ़ना० अ० क्रि० जलजाना, भुनजाना।
डढ़मुण्डा० गु० दाढ़ीरहित।
डढ़ियल० गु० दाढ़ीवाला।
डढुआ० } गु० जलाहुआ, जलगया।
डढाई० }
डण्ड० ना० पु० बाहु, भुजा, व्यायाम करना, साधनविशेष, दण्ड।
डण्डवत० ना० स्त्री० दण्डवत् प्रणाम विशेष, पायँलागी।
डण्डा० ना० पु० सोंटा, सीढ़ीका पाया, दण्ड।
डण्डिया० ना० पु० स्त्रियों के पहिरनेका वस्त्र विशेष और बाज़ारका कर उगाहनेहारा।
डण्डी० ना० स्त्री० बेंटी, बेंट, तराजूकेपलड़ोंमें लगानेका काष्ठ, संन्यासी, हरसिंघार आदि की नली, डण्डी।
डण्डीर० ना० स्त्री० धारी, लकीर, लीक।
डपटना० अ० क्रि० पुकारना, डाटना, सरपट दौड़ना।
डफ० ना० पु० बाजा विशेष।
डफारना० अ० क्रि० कूकमारनो, बिलखना।
डफाली० ना० पु० डफ बजानेहारा।
डब० ना० पु० बल, पराक्रम, जेब, चमड़ा जिससे कुप्पा बनाते हैं।
डबका० ना० पु० टपका, कूपकाजल, गु० मोटा।
डबडबाना० अ० क्रि० भरना, जैसे आंसू आंख से भरआती है।
डबरा० ना० पु० सीलोभूमि, लिवार, अपरा।
डबरिया० गु० खब्बा, बायांहाथ, बामहस्त।
डबोना० स० क्रि० डुबाना।
डब्बा० ना० पु० बड़ी डिबिया।
डब्बू० ना० पु० लोहेका कर्छा।
डमरुआ० ना० पु० घुटना की गांठि।
डमरु० ना० पु० बाजा विशेष।
डमरुमध्य० ना० पु० डमरूका मध्यभाग, स्थलनाय जो अपने से दो बड़े स्थलके भागों को मिलावे।
डर० ना० पु० भय, भीत, शंका।
डरना० } अ० क्रि० भयखाना।
डरपना० }

झंझनाहट० ना० स्त्री० चिड़चिड़ाहट, झनकार।
झंझावायु० ना० पु० प्रचण्डपवन, आंधी।
झंवाना० अ० क्रि० धूपसे कृष्णवर्ण होना, स० क्रि० झामे से पांवधोना, सुलाना।
झक० ना० पु० कोप।
झकझोरी० ना० स्त्री० छीनाछानी।
झकना० अ० क्रि० बकना, बकबककरना, हाय हाय करना।
झकरी० ना० स्त्री० दोहनी।
झकाझक० गु० झलाझल।
झकोर० ना० स्त्री० टंटा, विपत्ति, बौछार।
झकोरना० स० क्रि० चलाना, जैसे आंधीमें झड़ी।
झकोरा० ना० पु० झंपास, वायुसमेत झड़ी, बौछार।
झकोलना० स० क्रि० डुलाना।
झक्कड़० ना० पु० आंधी, चौवाई।
झक्की० ना० पु० विना प्रयोजन बकवादी।
झखना० अ० क्रि० झंखना।
झगड़ना० अ० क्रि० लड़ना, भिरना।
झगड़ा० ना० पु० लड़ाई, रगड़ा।
झगड़ाना० स० क्रि० झगड़ा करना, लड़ाना।
झगड़ालिन्० गु० लड़ाकाली।
झगड़ालू० ना० पु० लड़ाका।
झगा० ना० पु० झंगा।
झगुला० ना० पु० कुर्त्ता।
झझ० ना० पु० सर्म्पादाढ़ी।
झझकारना० स० क्रि० दबकाना, दबाना।
झझला० ना० पु० मिठाईविशेष।
झञ्झर० ना० पु० झंझर।
झञ्झरी० ना० स्त्री० झरोखा।
झञ्झा० ना० स्त्री० झड़ीसमेत आंधी।
झट० गु० उतावली, अव्य० शीघ्र।
झटक० ना० स्त्री० खसोट, उछल।
झटकना० स० क्रि० खसोटना, निर्भोटना, अ० क्रि० दुबला होजाना।
झटका० गु० जो झटकेसे मारागया, फाड़ागया, ना० पु० खींच, खसोट।
झटकाना० स० क्रि० झटका लगाना।
झटपट० अव्य० तुरंत, शीघ्र।
झटास० ना० पु० झड़ाक, बौछार।
झटिति० अव्य० तुरन्त, शीघ्र।
झड़० ना० स्त्री० झड़ी, तालाविशेष, तालेकी कल।
झड़न्० ना० स्त्री० टपकन, जैसे फलटपककर गिरते हैं, बत्तीकी टेम का फूल।
झड़ना० अ० क्रि० टपकना, गिरना, पतनहोना, निकलना, छनना, नीलतयजना।
झड़प० ना० स्त्री० कड़आहट, हमला।
झड़पना० अ० क्रि० लड़ना, हमलाकरना।
झड़पाझड़पी० ना० स्त्री० लड़ाई, दपटादपटी।
झड़पाना० स० क्रि० लड़ाना।
झड़बेर० ना० पु० } जंगलीबेर।
झड़बेरी० ना० स्त्री० } जंगलीबेर।
झड़याना० स० क्रि० झड़ाना।
झड़ाक० } ना० पु० उतावली, फुर्त्ती, हड़बड़ी।
झड़ाका० } ना० पु० उतावली, फुर्त्ती, हड़बड़ी।
झड़ाझड़० अव्य० खटपट।
झड़ाना० स० क्रि० झाड़ दिलवाना, झाड़फूक कराना।
झड़ी० ना० स्त्री० लगातारवृष्टि, और ऊपरी प्राप्ति।
झड़ीता० ना० पु० फलादिका अन्तसमय।
झण्डा० ना० पु० ध्वजा, पताका।
झण्डूला० गु० पत्तोंसे घना वृक्ष, वालोंसे घना शिर।
झंनक० ना० पु० धातु की दो वस्तु भिड़ने का शब्द।
झनकना० अ० क्रि० झनझनाना।
झनकार० ना० स्त्री० झंकार, टनकार।
झनकारना० स० क्रि० बजाना।
झनघा० ना० पु० धानविशेष।
झप० अव्य० झट, तुरन्त, शीघ्र।

डरपोक० गु० डरनेवाला, भयवान्।
डरवैया० गु० भयवान्, हेठा, डरपोक।
डराऊ० गु० भयंकर।
डराक० गु० भयवान्।
डराना० } स० क्रि० भय देना, भय दिलाना।
डरावना० }
डरी० ना० स्त्री० मांसकी बोटी, छोटा टुकड़ा, ढेला।
डरीला० गु० मांस बोटियोंवाला।
डरौना० गु० डराऊ।
डलवा० ना० पु० टोकरा।
डलवाना० स० क्रि० झोंकवाना, गिरवाना, घुसड़ाना।
डला० ना० पु० बड़ा टुकड़ा वा ढेला टोकरा।
डलिया० ना० स्त्री० छोटी टोकरी।
डली० ना० स्त्री० छोटा टुकड़ा वा ढेला, सुपारी।
डस० ना० स्त्री० तराजूकी रस्सी, दशा।
डसना० स० क्रि० काटना, चमकना, डंकवाना।
डसौना० ना० पु० बिछौना।
डहक० ना० पु० गुप्त, लोह, चोरगड्ढा, लालच, बिगाड़, डॉक।
डहकना० अ० क्रि० ठोकना, लालच करना, बिगड़ना।
डहकाना० स० क्रि० निराशकरना, ललचाना, बिगाड़ना।
डहडहा० गु० प्रफुल्लित, खिलाहुआ, चैतन्य।
डहडहाना० अ० क्रि० खिलना, फूलना।
डांक० ना० पु० जगजगा, विष्णुआदिका डंक।
डांग० ना० स्त्री० लाठी, पहाड़की चोटी।
डांगर० गु० दुर्बल, ना० पु० दुर्बलपशु, मूलीका फूलाहुआ पत्ता।
डांटना० स० क्रि० ताड़ित करना, घुड़कना।
डांठल० ना० पु० } डण्डी, बोंट।
डांठी० ना० स्त्री }
डांड० ना० पु० बदला, दंड, ताड़ना, नावखेवनेका अस्त्र, चापू रीढ़, डण्डीर।
डांड़ना० स० क्रि० बदला लेना, दण्डलेना।
डांड़ा० ना० पु० मेंड़, सिवाना, धूरा।
डांडी० ना० स्त्री० खेवनेहारा, खेवैया।
डामाडोल० ना० पु० इधर से उधर खड़कना।
डांवरू० ना० पु० शेरका बच्चा।
डांस० ना० पु० डंक, मच्छड़।
डाक० ना० स्त्री० टप्पा, अन्तररहितगमन, डाकिनीका पति, डाकी, डाक।
डाकना० स० क्रि० वमनकरना, उछालकरना।
डाका० ना० पु० चोरोंका धावा।
डाकिन्० } ना० स्त्री० डायन्, चुड़ैल, योगिनी भेद।
डाकिनी० }
डाकिया० ना० पु० डाकू, डाक लेजानेवाला।
डाकी० गु० खाऊ, पेटू।
डाकू० ना० पु० डकैत, चोर, बदमार।
डाट० ना० स्त्री० घुड़क, धमक, ढट्टी।
डाटना० स० क्रि० डाटना, क्रोधसे देखना।
डाढ़० ना० स्त्री० पिछले दांत।
डाढ़ी० ना० स्त्री० ठुड्डीपर के बाल।
डाब० ना० पु० पत्तल, कच्चा नारियल, तृण विशेष।
डाबर० ना० पु० हाथ धोनेका पात्र, गोल तालाब, झाबर।
डाभ० ना० पु० कुशा, घास दर्भ।
डामर० ना० पु० धूनी, राल।
डायन्० ना० स्त्री० डाकिनी।
डार० ना० स्त्री० डाली, डाल।
डारना० स० क्रि० डालना।
डारिम० ना० पु० दाड़िम, अनारफल।
डाल० ना० स्त्री० डाली, शाखा, टहनी।
डालना० स० क्रि० फेंकना, घुसेड़ना, झोंकना।
डाला० ना० पु० डोला, बड़ीडाली।
डाली० ना० स्त्री० टहनी, शाखा फलादिका भेद, पुष्पादि रखने के लिये बांसका पात्र।

झपकना० स० क्रि० झलना, पंखा हिलाना, अ० क्रि० लपकना, झपटलेना, पलकमारना।
झपकाना० स० क्रि० पलकमारना, मटकाना।
झपकी० ना० स्त्री० लपक, मटकी, नींद।
झपट० ना० स्त्री० लपक, चढाई, डांट।
झपटना० अ० क्रि० लपकना, चढि दौड़ना।
झपट्टा० ना० पु० धावा, दौड़, लपक।
झपट्टामारना० स० क्रि० झपटलेना।
झपलाना० स० क्रि० खंगालना, धोना।
झपाझपी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
झपात० ना० स्त्री० स्फूर्त्ति, जल्दी।
झपाना० अ० क्रि० झपकीलेना, दबाना।
झपास० ना० स्त्री० फूही, झींसी।
झपासिया० गु० छली, अधर्मी।
झबकाना० स० क्रि० घाबरा करना।
झबिया० ना० पु० भूषणविशेष।
झबुआ० गु० जिस कुत्ते वा बकरे के बाल बड़े बड़े हों, झुकाहुआ।
झब्बा० ना० पु० लटकना।
झमक० ना० स्त्री० चमक।
झमकड़ा० ना० पु० चटकीला, भटक।
झमकना० अ० क्रि० चमकना, नाचना।
झमका० ना० पु० प्रताप, शान।
झमकी० ना० स्त्री० झमक, झलक, चमक।
झमझम० अव्य० लगातार।
झमझमाना० अ० क्रि० चमकना।
झमरझमर० अव्य० बूंद बूंद से।
झमाका० ना० पु० झड़ी, बेगताई।
झमाझम० अव्य० झमझम।
झम्पा० गु० झपाहुआ, ढकाभया, ना०पु० चंगुल।
झर० ना० पु० सोता, झरना, झड़ी, जलन।
झरना० ना० पु० सोता, झरना, झरनेवाला।
झरोखा० ना० पु० झंझरी, खिड़की।
झझर० ना० पु० झंझर।
झर्ना० ना० पु० सोता, झाड़नेका कपड़ा, बहुत छेदका सूप विशेष, अ० क्रि० झड़ना, गिरना।

झल० ना० स्त्री० क्रोध, जलजलाहट, आंच, उष्णता।
झलक० ना० स्त्री० चमक, उजेला।
झलकना० अ० क्रि० चमकना।
झलका० ना० पु० फफोला, फोला।
झलकाना० स० क्रि० चमकाना, उज्वल करना।
झलकी० ना० स्त्री० दृष्टि।
झलझल० ना० पु० चमक, लहक।
झलझलाना० अ० क्रि० चमकना, क्रोधित होना।
झलझलाहट० ना० स्त्री० चमक, परपराहट।
झलना० स० क्रि० झपकना, अ० क्रि० सुधरना।
झलमल० ना० पु० चमक।
झलहाया० गु० मसवासी, ज्वलित।
झलाझल० गु० ज्योतिष्मान्, स्त्री० झलक।
झलाबोर० गु० चमकीला, झड़कीला, ना० पु० चमत्कार।
झलाना० स० क्रि० सुधारना, जोड़ना।
झलार० ना० पु० झाड़ी।
झष० ना० पु० मछली, मत्स्य।
झषकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
झांई० ना० स्त्री० परछाईं, लहसुन, मुंहपर श्यामता होजाना।
झांक० ना० पु० ताकना, हिरण या पक्षियों का झुण्ड।
झांकड़० ना० पु० झाड़ी।
झांकना० स० क्रि० झपकेदेखना, ताकना।
झांकाझांकी० ना० स्त्री० देखादाखी, ताकाताकी।
झांख० ना० पु० हिरणविशेष।
झांझ० ना० स्त्री० बड़ा मंजीरा, झगड़ा।
झांझट० ना० पु० झगड़ा, रगड़ा।
झांझा० ना० पु० कांटाविशेष, झगड़ा।
झांझिया० गु० क्रोधी, बखेड़िया।

डासन० ना० पु० बिछौना।
डासना० स० क्रि० बिछाना।
डाह० ना० पु० द्रोह, द्वेष, पेटमें आगिपड़ना।
डाहना० अ० क्रि० वैरीहोना, द्वेषीबनना।
डाही० ना० स्त्री० द्रोही, द्वेषी, कलेजेपर आगि-जलना, मन्दाग्नि।
डिगना० अ० क्रि० हिलना, लहकना, हटना, टलना, चलायमान होना।
डिगाना० स० क्रि० हिलाना, चलाना।
डिठना० स० क्रि० देखना, दृष्टिलगाना।
डिठियारा० गु० देखनेवाला, द्रष्टा।
डिण्डर० ना० पु० समुद्रफेन।
डिण्डुभ० ना० पु० सांप।
डिण्डिम० ना० स्त्री० डमरू।
डिबिया० ना० स्त्री० ढकने समेत काठका गोल पात्रविशेष।
डिब्बा० ना० पु० बड़ीडिबिया।
डिब्बी० ना० स्त्री० डिबिया।
डिम्भ० ना० पु० दम्भ, पाखण्ड, अहङ्कार।
डिम्भी० गु० पाखण्डी, दम्भी।
डींग० ना० पु० बड़ाई, अपनी बड़ाई।
डींगमारना० अ० क्रि० निज बड़ाई करना।
डीठ० } ना० स्त्री० दृष्टि, नजर।
डीठि० }
डील० ना० पु० तनु, क़द।
डीला० ना० पु० ढेला, मिट्टीका टुकड़ा।
डीह० ना० पु० खेड़ा, उजाड़गांव।
डीहा० ना० पु० टीला।
डुक० ना० पु० मुक्का, घूसा।
डुकरवा० ना० पु० बुड्ढा, बुड्ढा।
डुकरिया० ना० स्त्री० बुढ़िया।
डुगडुगाना० अ० क्रि० डंका बजाना, तिमतिमाना।
डुबकी० ना० स्त्री० बुड़की, गोता।
डुबाना० स० क्रि० बोरना, डबोना।
डुबाव० ना० पु० जलस्थान जो बूड़ने के योग्यहै।
डुबोना० स० क्रि० बोरना, डुबाना।
डुरियाना० स० क्रि० फिराना, रस्सी में बांधके ले चलना।
डुलना० अ० क्रि० हिलना, चलना।
डुलाना० स० क्रि० हिलाना, चलाना।
डूंगर० ना० पु० पहाड़, वृन्दावन में विलास, यथा, "ब्रजही में सब खोदि बहावे, डूंगर को परनाम मिटावे,"
डूब० ना० पु० डुबकी।
डूबना० अ० क्रि० डुबकी मारना, बूड़ना, उबकना, चिन्तामें होना।
डूबा० गु० बूड़ामया।
डेग० ना० पु० डग, फलास।
डेढ़० गु० एक और आधा १½।
डेढ़गति० ना० स्त्री० नाचविशेष।
डेरा० ना० पु० देरा, घर, तम्बू, गु० भैंगा।
डेल० } ना० पु० ढेला।
डेला० }
डेवढ़ा० गु० एक और आधा, डेढ़गुणा।
डेवढ़ाना० स० क्रि० डेवढ़ा करना वा लेना।
डेवढ़ी० ना० स्त्री० देहली।
डेहुड़० ना० स्त्री० बन्दूकों की बाढ़दगना।
डेहुड़ी० ना० स्त्री० डेवढ़ी।
डैन० ना० पु० पंख, पक्ष।
डैना० ना० पु० डाल।
डोई० ना० स्त्री० काठकी कर्छी।
डोंगा० ना० पु० } छोटी एक काठकी नाव।
डोंगी० ना० स्त्री० }
डोंड़ी० ना० स्त्री० ढिंढोरा।
डोरा० ना० पु० दो मुखका सांप।
डोकर० } गु० बुड्ढा, बूढ़ा।
डोकरा० }
डोकरी० ना० स्त्री० बुढ़्ढी।
डोब० ना० पु० डूब।
डोबा० ना० पु० ताल, पोखरा, मूर्च्छा।

झांझी० ना० स्त्री० खेल विशेष।
झांपना० स० क्रि० ढांपना, छुपाना।
झांवरा० गु० काला।
झांवली० ना० स्त्री० चोचला, हावभाव।
झांवा० ना० पु० अत्यन्त पकी ईंट।
झांसना० स० क्रि० उभारना।
झांसा० ना० पु० फुसलावा, धोखा।
झांसी० ना० पु० बुन्देलखण्ड में नगर विशेष।
झांसू० ना० पु० फुसलाऊ, धोखाबाज।
झाऊ० ना० पु० छोटा वृक्ष विशेष।
झाग० ना० पु० फेना।
झाझा० ना० पु० मादक वस्तु।
झाड़० ना० पु० छोटावृक्ष जो पीतलआदि का बनता है।
झाड़खण्ड० ना० पु० वन, बैजनाथ के पास का वन विशेष, गु० झाड़ला, धज।
झाड़न० ना० पु० बुहारन, कचरा, फर्कट, कूड़ा, पोंछन।
झाड़ना० स० क्रि० बुहारना, फर्चाकरना, पट-कना, निकालना।
झाड़न्त० अव्य० सभी।
झाड़ा० ना० पु० शह, मलकात्याग, हगना।
झाड़ी० ना० स्त्री० बधना, वन, जंगल।
झाड़ू० ना० स्त्री० बढ़नी, बुहारी।
झापा० ना० पु० टोकरी विशेष।
झाबा० ना० पु० चमड़े का पात्र, तेल, घी मापने के लिये।
झामा० ना० पु० झांवा।
झार० ना० पु० आगकी लव, ज्वाला, सब, अव्य० कड़ुआहट।
झारि० अव्य० सब, तमाम, कमाल।
झारी० ना० स्त्री० थाली, झाड़ी, नदी मुखको जलपात्र विशेष।
झाल० ना० पु० कड़ुआहट, बड़ी टोकरी, भातुका सुधारना।
झालना० स० क्रि० चिकनाना, थोपना, झोरना।
झालर० ना० स्त्री० आंचल, गुच्छे।
झालरा० ना० पु० सोता, गु० बड़ाहुआ।
झिझक० ना० स्त्री० चौंक, भड़क, डर भय।
झिझकना० अ० क्रि० चौंकना, भड़कना, डरना।
झिझका० गु० चौंकाहुआ, भयवान्।
झिझकाना० स० क्रि० भड़काना, डराना, चौं-काना, भचकाना।
झिझकी० ना० स्त्री० भड़की, चौंक, डर।
झिञ्झा० ना० पु० जिगनावृक्ष, फूटीकौड़ी।
झिञ्झाणी० ना० स्त्री० जिगनावृक्ष।
झिञ्झा० ना० स्त्री० फूटीकौड़ी।
झिड़क० ना० स्त्री० धमकी, भभकी, गटकी।
झिड़कना० स० क्रि० घुड़कना, दबकाना, धम-काना, भटकादेना।
झिड़काझिड़की० ना० स्त्री० झगड़ा, झिगड़ी।
झिड़की० ना० स्त्री० घुड़की।
झिनहट्टा० } गु० सुलटा।
झिनहट्टो० }
झिरझिर० गु० जो पतलीधार से बहता, पतला।
झिरझिरा० गु० तबहु पतला।
झिरझिराना० अ० क्रि० बहना, तिरतिराना।
झिलगा० ना० पु० खाटकी पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु० पुरानीखाट।
झिलंगा० ना० पु० पदाति विशेष।
झिलम० ना० स्त्री० युद्धमें पहिरने के लिये लोहे की कुर्ती, टोपपर लोहेका कटोरा, बख्तर।
झिलमिल० ना० पु० द्वार विशेष।
झिलमिलाना० अ० क्रि० लहराना, चिनगी निकलना।
झिल्लिका० ना० स्त्री० झींगुर।
झिल्ली० ना० स्त्री० झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, खेढ़ी।
झींकना० अ० क्रि० पछिताना, शोकित होना, पीनक में आना।
झींगट० ना० पु० भाखी, पटनी।
झींगा० ना० पु० जलकीट प्रसिद्ध।

डोम०
डोमड़०
} ना० पु० जातिविशेष।
डोमिनी० ना० स्त्री० डोम की स्त्री।
डोर० ना० स्त्री० रस्सी।
डोरा० ना० पु० सीवने का सूत, रस्सा, धागा, धार, लगाव।
डोरिया० ना० पु० सूती, मालदई, कपड़ाविशेष।
डोरी० ना० स्त्री० रस्सी।
डोल० ना० पु० पानी भरने के लिये लोहे वा चमड़े का पात्र विशेष, जन्माष्टमी में कृष्णजन्म के लिये मण्डप विशेष।
डोलची० ना० स्त्री० छोटा डोल।
डोलना० अ० क्रि० हिलना, टलना, फिरना, झूलना।
डोला० ना० पु० पालकीविशेष।
डोली० ना० स्त्री० पालकीविशेष, जो स्त्रियों के लिये है।
डौंजा० ना० पु० गंगेज, मचान।
डौंड़ी ना० स्त्री० डोंडी, मनादी।
डौढ़ी० ना० स्त्री० डेवढ़ी, ड्योढ़ी, गु० ड्योढ़ा।
डौल० ना० पु० प्रकार, ढब, ब्योंत, स्वरूप, आकार।
ड्योढ़ा० गु० डेवढ़ा।
ड्योढ़ी० ना० स्त्री० डेवढ़ी, गु० डेढ़गुणा।

[ढ]

ढक० ना० पु० तौल विशेष।
ढकना० स० क्रि० ढपना, छुपना, ना० पु० ढापने की वस्तु विशेष।
ढकनी० ना० स्त्री० चपनी।
ढकार० ना० स्त्री० टकार, ढकार।
ढकेल० ना० पु० रेल, धक्का।
ढकेलना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, झोंकना।
ढकेलू० ना० पु० ढकेलनेहारा।
ढक्का० ना० पु० बाजा विशेष।
ढग० ना० पु० चाल, लक्षण, निशान।
ढट्टा० ना० पु० ढेपी।
ढड़कौवा० ना० पु० जंगलीकौआ, ढालू।
ढड़चा० ना० पु० पक्षीविशेष।
ढण्ढोरना० स० क्रि० ढूंढ़ना।
ढण्ढोरा० ना० पु० राजा की ओरसे कोई आज्ञा सुनाने को बाजा बजाके कहना।
ढण्ढोरिया० ना० पु० ढंढोरा बजानेहारा।
ढनमनना० अ० क्रि० गिरपड़ना।
ढनमनी० गु० स्त्री० गिरपड़ीहुई।
ढपढपाना० स० क्रि० ढोलको पीटना।
ढपना० अ० क्रि० छिपना।
ढब० ना० पु० डौल, रूप, चाल, रीति, बनावट, हथौटी।
ढबरा० गु० गँदला, मैला।
ढबीला० गु० सजीला, सुडौल।
ढबुआ० ना० पु० पैसा।
ढमलाना० अ० क्रि० डगराना।
ढलकना० अ० क्रि० डगराना, फिरना, बहना।
ढलका० गु० चौंधना, झुका, छलका।
ढलकाना० स० क्रि० चौंधाना, बहाना।
ढलना० अ० क्रि० गिरना, फिसलना, बीटना, छलकना, डगरना, झुकना, भरजाना।
ढलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना।
ढलाना० स० क्रि० सांचे में ढालना, बहाना।
ढलैत० ना० पु० ढाल तलवार बांधनेहारा।
ढवाना० स० क्रि० गिरवाना, उजड़वाना।
ढहना०
ढहपड़ना०
} अ० क्रि० गिरपड़ना, उजड़ना।
ढाई० गु० अढ़ाई २½।
ढांकना० स० क्रि० ढांपना, छुपाना।
ढांग० ना० स्त्री० कन्दला, शिखर।
ढांचा० ना० पु० ठाठ, घर, सांचा, लाद भरा घेरा।
ढांपना० स० क्रि० ढांकना, छुपाना।
ढांसना० स० क्रि० दोषदेना।
ढांसा० ना० पु० लिप, दोष।

झींगुर० ना० पु० कीट विशेष, घुरघुरा।
झीण०
झीन०
झीना० } गु० सूक्ष्म, पतला, बारीक।
झीरुका० ना० स्त्री० झींगुर कीट।
झील० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलाशय, बड़ा ताल।
झीसी० ना० स्त्री० फूही, फुहार, छोटी २ बूंदें।
झुकना० अ० क्रि० निहुरना, चलना, क्रोधित होना, व्याकुल होना।
झुकाना० स० क्रि० निहुराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।
झुकावट० ना० स्त्री० चलावट, निहुराई।
झुंझलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ाना, जलजलाना।
झुठलाना०
झुठालना० } स० क्रि० झूठा करना, मिथ्या बतलाना, अशुद्ध करना।
झुण्ड० ना० पु० मंडल, समूह, अखाड़ा।
झुण्डा० ना० पु० पताका, झंडा।
झुण्डी० ना० स्त्री० झाड़ी, वृक्षोंका समूह।
झुन० ना० पु० थोड़ी समानता।
झुनझुना० ना० पु० खिलौना विशेष।
झुनझुनी० ना० स्त्री० पैजनी।
झुमका० ना० पु० कानका भूषण विशेष, फूल वा फलका गुच्छा, फूल विशेष।
झुरमुट० ना० पु० भाड़, मंडली, झूमक।
झुराना० अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।
झुराने० गु० सूखे।
झुरियाना० स० क्रि० सिकाना, साहना पाछना, उज्ज्वल करना।
झुरी० ना० स्त्री० शरीरके मांसका सिकोड़।
झुर्ना० अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।
झुलकाना० स० क्रि० जलादेना, झुलसाना।
झुलना० अ० क्रि० लटकना, डुलना।
झुलझुली० ना० स्त्री० कानके सात।
झुलसना० अ० क्रि० भुसलना, जलजाना।
झुलसाना० स० क्रि० भुलसाना, जलादेना।

झुला० ना० पु० पहिरने का वस्त्र विशेष।
झूंझल० ना० पु० क्रोध का आवेश।
झूंटर० ना० स्त्री० भूमि जिस में वर्षा में दो बार अन्न बोते हैं।
झूंठनझांठन० ना० पु० झूठा, मैला।
झूठ० गु० मिथ्या, अशुद्ध।
झूठा० गु० मिथ्यावादी, झूठबुया, ना० पु० उच्छिष्ट खाना खायके रहगया।
झूना० ना० पु० पकानोरियल, महीन वस्त्र, चूल्हे में ईंधन और आग रखना।
झूमक० ना० स्त्री० झुमट।
झूमझूम० ना० पु० घन, लटके लटक।
झूमना० अ० क्रि० लहरना, हिलाना, ऊंघना, उमंडना, घिरना।
झूरना० स० क्रि० कूदना, पेड़से फल झाड़ना, सूखना।
झूरा० गु० सूखा, मुरझाया हुआ।
झूल० ना० स्त्री० बैलादि पशुओं का ओढ़ना।
झूलना० अ० क्रि० डोलना, हिलना, लटकना, ना० पु० छन्द विशेष।
झूला० ना० पु० हिंडोला, ढाल वृक्ष।
झोंक० ना० स्त्री० ढकेल, धक्का, झकोड़।
झोंकना० स० क्रि० ढकेलना, फेंकना, ईंधन भाड़ में डालना।
झोंटा० ना० पु०
झोंटी० ना० स्त्री० } शिरके पीछे के बाल, झूल का हिलाना।
झोंपड़ा० ना० पु०
झोंपड़ी० ना० स्त्री० } मढ़ी छप्परका छोटा घर।
झोंपा० ना० पु० फलका गुच्छा, थाल, घिराव।
झोंरा० ना० पु० गुच्छा।
झोक० ना० स्त्री० झोंक।
झोका० ना० पु० झोंका, ठोकर, ठेस, झकोरा।
झोझ० ना० पु० खोंता, ओंफ, बड़ापेट।
झोमा० ना० पु० ओझा, बड़पेटा, बड़ापेट।

ढाक० ना० पु० पलाशकावृक्ष,गुहरत,छपाव,सांप का विष उतारने में एक प्रकारका बाजा।
ढाका० ना० पु० बंगालेका नगर विशेष।
ढाटा० ना० पु० आदीबन्धन, ढट्ठा।
ढाटी० ना० स्त्री० कसन, यन्त्रणा, फांदा जो घोड़े के मुखपर बांधते हैं।
ढाढ़स० ना० स्त्री० धीरज, सूरमापन, दिलासा, शान्ति, भरोसा।
ढाढ़िन० ना० स्त्री० ढाढ़ी की स्त्री।
ढाढ़ी० ना० पु० जातिविशेष जो बजाते और गाते हैं।
ढाना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।
ढाबर० गु० मैला, गंदला।
ढाबा० ना० पु० जाल, ओरी, ओलती।
ढार० ना० स्त्री० भांति, कानका गहना, विशेष।
ढारना० स० क्रि० ढालना।
ढारी० गु० भरीहुई।
ढारू० गु० ढालू।
ढाल० ना० पु० उतारू, ना० स्त्री० फरी।
ढालना० स० क्रि० सांचे में उतारना, औंधाना, बिगाड़ना।
ढालवा० गु० उतारू, जो सांचे में उतारागया।
ढालू० गु० उतारू, बेंड़ा, बिगाड़, सांचेका उतारना।
ढाहना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।
ढाहा० ना० पु० नदीका कराड़ा।
ढिग० ना० स्त्री० पास, समीप।
ढिठाई० ना० स्त्री० चंचलता, गुस्ताखी।
ढिड़िम० ना० पु० टटीहरी, पक्षी।
ढिबका० ना० पु० उभार, गुमड़ा।
ढिमढिमी० ना० स्त्री० खंजरी विशेष।
ढिलड़० } गु० आलसी, सुस्त।
ढिलर० }
ढीठ० } गु० चंचल, निडर, बेअदब, औताल
ढीठा० } मगरा।
ढिठोंदे० गु० भौंताली चंचलता से।
ढील० ना० स्त्री० आलस्य, विलम्ब, देर, छूट।
ढीलाई० ना० स्त्री० शिथिलता, आलस्य।
ढीहा० ना० पु० टीला।
ढुकना० अ० क्रि० झुकना, शिरझुकाना।
ढुकी० ना० स्त्री० ताक।
ढुरना० अ० क्रि० फिरना, लुढ़कना।
ढुलना० अ० क्रि० डुलना, टरना, मरना।
ढुलाई० ना० स्त्री० उठवाने का पैसा या काम।
ढुलवाना० } स० क्रि० उठवाना, छलकाना।
ढुलाना० }
ढूआ० ना० पु० तूदा, मेंड, मिट्टीका पिण्ड।
ढूंढढांढ़० ना० पु० खोज, झाड़ी झाड़ी।
ढूंढ़न० ना० पु० खोज।
ढूंढ़ना० स० क्रि० खोजना, तलाशकरना।
ढूंढार० ना० पु० देशविशेष।
ढूंढ़िया० ना० पु० जैनलोगों में भिखारी, गु० ढूंढनेवाला, ढूंढाव।
ढूक० ना० स्त्री० ढुकी, ताक, पैठ।
ढूकना० अ० क्रि० बन्द करना, मूंचना, पास आना, पैठना।
ढूसर० ना० पु० जातिविशेष।
ढेकली० ना० स्त्री० कूपसे जल निकालने यन्त्र।
ढेका० ना० पु० } कूटने का यन्त्र।
ढेकी० ना० स्त्री }
ढेड़स० ना० पु० तरकारी विशेष।
ढेढ़ी० ना० स्त्री० पोस्ताकाफूल।
ढेढ़ा० ना० पु० गर्भ, गर्भता, बबरोट, दोनों के बीच, गदरा।
ढेंक० ना० पु० पक्षीविशेष।
ढकुली० ना० स्त्री० रहट, चरखी।
ढेढ़० ना० पु० चमारकीजातिविशेष, कौआ।
ढेढ़ी० ना० स्त्री० कानका गहनाविशेष।
ढेर० ना० पु० राश, ढाल, बहुतात।
ढेरा० ना० पु० भेगा, जिससे पानी ऐंठते हैं।
ढेरी० ना० स्त्री० थोड़ाढेर।

झोटिंग० ना० पु० प्रेतभेद।
झोटी० ना० स्त्री० चोटी।
झोल० ना० स्त्री० कपड़े की सकोड़ वा चुनत, बचे।
झोला० ना० पु० थैला, अदोग।
झोली० ना० स्त्री० थैली।
झौरा० गु० साँवला, पीला।
झौंसना० अ० क्रि० बहुत जलजाना।
झौंसा० गु० जो बहुत जलगया।
झौड़० ना० पु० झगड़ा।
झौरी० ना० स्त्री० खेतकी घास।

[ट]

टक० ना० स्त्री० स्वभाव, ताक, दृष्टि।
टकटकी० ना० स्त्री० घूर, ताक।
टकना० अ० क्रि० सिलना, सिलजाना।
टकराना० स० क्रि० टकर सिलवाना, टकर मारना, अ० क्रि० टटोलना।
टकवाना० स० क्रि० सिलवाना, सिलाना।
टकसाल० ना० पु० स्थान, जहां रुपयां आदि बनाया जाता है।
टकसालिया० } ना० पु० टकसाल का काम
टकसाली० } करनेहारा।
टका० ना० पु० दो पैसे।
टकाई० ना० स्त्री० सिलाई, करै।
टकी० ना० स्त्री० ताक, टकी।
टकुआ० ना० पु० तकला, तकुआ।
टकैत० } गु० धनवान, मालदार।
टकैता० }
टकोर० } ना० पु० सुखकारी, शमकारी, अति
टकोरा० } छोटा कचा, आंब, ढोल बजाने की गति वा शब्द।
टकोरना० स० क्रि० सेंकना, ततारना।
टकौना० ना० पु० टका।
टक्कर० ना० स्त्री० ठोकर, ठेलाठेली, शिरसे शिर लड़ना, जैसे मेंढे लड़ाते हैं।
टखना० ना० पु० गुल्फ, घुटना।
टघलना० अ० क्रि० पिघलना।
टघलाना० स० क्रि० पिघलाना।
टंक० ना० पु० चार माशे की तौल, खड्ग।
टंकण० ना० पु० सोहागा।
टंकोर० ना० स्त्री० धनुष के रोदे का शब्द।
टंकोरना० स० क्रि० धनुष की पनच झाड़ना।
टंगना० अ० क्रि० लटकना।
टंगड़ी० ना० स्त्री० टांग, गोड़।
टच्च० गु० सूम, कृपण।
टटका० गु० नया, नवीन, ना० पु० उतारा-पुतारा।
टटकी० ना० स्त्री० नई, नवीन, ताजी।
टटवानी० ना० स्त्री० छोटी घोड़ी।
टटिया० ना० स्त्री० टट्टी, झांप, द्वार बन्द करने को जो तृणादि की बनती है।
टटीहरा० } स्त्री० पक्षीविशेष।
टटीहरी० }
टटुआ० ना० पु० छोटा घोड़ा।
टटुई० ना० स्त्री० छोटी घोड़ी।
टटोलना० स० क्रि० टोयाटोई करना, अँगुलियों से दबाना।
टट्टी० ना० स्त्री० चांदी, बाड़।
टट्टर० } ना० पु० बड़ी टट्टी।
टट्टा० }
टट्टी० ना० स्त्री० टटिया, फराकिया।
टट्टू० ना० पु० छोटा घोड़ा।
टण्टा० ना० पु० बखेड़ा, लड़ाई, खटपटी।
टप० ना० पु० कूद फांद, बूंद।
टपक० ना० स्त्री० पीड़ा, टपकने का शब्द।
टपकना० अ० क्रि० टपटपाना, चूना, छना, रिसना, टीसना।
टपका० ना० पु० पानी की बूंद, फल जो वृक्ष से पककर गिरता है यथा आंब।
टपकाना० स० क्रि० चुवाना, छानना, रसाना।

ढेला॰ ना॰ पु॰ माटीका ढोंदा।
ढेलाचौथ॰ ना॰ स्त्री॰ भादोंकी चौथ।
ढैया॰ ना॰ स्त्री॰ अढैया।
ढैयाटेकर॰ पु॰ जो उजड़ आया।
ढोवा॰ ना॰ पु॰ पर्व वा त्योहारमें फल वा फूल जो छोटे लोग लाते हैं।
ढोक॰ ना॰ स्त्री॰ दण्डवत्, विश्वास।
ढोकना॰ स॰ क्रि॰ पीना, ढूंढना।
ढोका॰ ना॰ पु॰ पत्थर आदिका टुकड़ा, ढेर।
ढोटा॰ ना॰ पु॰ लड़का।
ढोना॰ स॰ क्रि॰ लेजाना, उठाना।
ढोर॰ ना॰ पु॰ गायगोरू।
ढोरा॰ ना॰ पु॰ तालियां जो मुसलमान बनाते हैं।
ढोरी॰ ना॰ स्त्री॰ ढोरी चाप।
ढोल॰ ना॰ पु॰ बाजा विशेष।
ढोलक॰ ना॰ पु॰ छोटा ढोल।
ढोलकिया॰ ना॰ पु॰ ढोलबजानेहारा।
ढोलकी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटीढोल।
ढोलन॰ ना॰ पु॰ प्यारा, रसिया।
ढोलना॰ ना॰ पु॰ ढोल के समानयन्त्र विशेष।
ढोला॰ ना॰ पु॰ छोकरा, रागविशेष।
ढोलिया॰ } ना॰ पु॰ ढोल बजानेहारा।
ढोलैत॰ }
ढोवी॰ ना॰ स्त्री॰ देशी पानका परिमाण।
ढौंचा॰ पु॰ साढ़ेचार ४½।
ढौरी॰ ना॰ स्त्री॰ जोरी, दहक, चाप।

[त]

तई॰ अव्य॰ तलक, लग, ना॰ स्त्री॰ दृष्टि, ताक।
तऊ॰ अव्य॰ तोभी, तथापि, तदपि।
तक॰ अव्य॰ तलक, लग, ना॰ स्त्री॰ दृष्टि, ताक, तराजू, तखड़ी।
तकतक॰ ना॰ पु॰ पशु आदि चलाने का शब्द।
तकना॰ स॰ क्रि॰ ताक लगाना, अ॰ क्रि॰ दृष्टि देना।
तकला॰ ना॰ पु॰ तकुआ।
तकली॰ ना॰ स्त्री॰ अटेन, परेता।
तकवाहा॰ ना॰ पु॰ रक्षक, चौकीदार, पहरू।
तकाना॰ स॰ क्रि॰ टुकी लगाना, लखाना।
तकिया॰ ना॰ स्त्री॰ सिरहाने की वस्तु विशेष।
तकुआ॰ ना॰ पु॰ सूत कातने के लिये लोहेकी शलाका जो चरखे में लगती है।
तक्र॰ ना॰ पु॰ मठा, छाछ।
तखड़ी॰ } ना॰ स्त्री॰ तुला, तराजू।
तखरी॰ }
तखान॰ ना॰ स्त्री॰ बढ़ई।
तगण॰ ना॰ पु॰ जिसके अन्तका अक्षर लघुहोता है, गण विशेष।
तगना॰ स॰ क्रि॰ तागा डालना।
तगाई॰ ना॰ स्त्री॰ सिलाई, सिलाईका पैसा।
तगाना॰ स॰ क्रि॰ तागा डलाना, सिलाना।
तगा॰ ना॰ पु॰ हंसी के लिये बनाया हुआ सूत।
तगड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ करधनी।
तंगा॰ ना॰ पु॰ दो पैसा।
तचना॰ अ॰ क्रि॰ गर्म होना।
तचाना॰ स॰ क्रि॰ गर्म करना वा कराना।
तच्छरीर॰ ना॰ पु॰ उसका शरीर।
तज॰ ना॰ पु॰ औषधि, वृक्षविशेष।
तजन॰ ना॰ स्त्री॰ छोड़न, त्यागन।
तजना॰ स॰ क्रि॰ त्यागना, छोड़ना।
तजिय॰ अव्य॰ छोड़िये।
तज्जन॰ ना॰ पु॰ उसका मनुष्य।
तट॰ ना॰ पु॰ तीर, पास, किनारा।
तटस्थ॰ पु॰ तीरवासी।
तटिनी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी।
तट्टीका॰ ना॰ पु॰ उसकी टीका।
तड़॰ ना॰ पु॰ पक्ष।
तड़क॰ ना॰ स्त्री॰ तर्क, ट्रैं, आड़।
तड़कना॰ अ॰ क्रि॰ फटना, छूटना।
तड़का॰ ना॰ पु॰ प्रातःकाल, भोर।

टपना० अ० क्रि० भूलना, कूदना।
टपाना० स० क्रि० भुलाना, फंदवाना, कुदवाना।
टप्पा० ना० पु० डाकघर, डाकचर, मैदान, जहाँ तक गोली जाती है, रागिनीविशेष।
टभक० ना० स्त्री० जो शब्द पानी गिरने से किसी गढ़े या बर्त्तन में होता है।
टभकना० अ० क्रि० चूना, टभकहोना, पोलना।
टर० ना० स्त्री० शेखी, ऐंठ गु० मतवाला, अचेत।
टरटर० ना० स्त्री० बकबक।
टरटराना० स० क्रि० बकबक करना।
टरटरी० ना० स्त्री० बकबकी।
टरना० अ० क्रि० हुलना, टलना, हटना।
टराना० स० क्रि० टलवाना, हटाना।
टर्रा० गु० मगरा, दुष्ट, बकी, बलवान्।
टर्राना० स० क्रि० बकबक करना, मगराना, ऐंठके बात करना।
टलजाना० } अ० क्रि० हटजाना, जाता
टलना० } रहना।
टलप० ना० स्त्री० टुकड़ा, धांट।
टलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना, ललचाना।
टलाटली० ना० स्त्री० मिष, हीलावाली।
टलाना० स० क्रि० हटाना, छिपाना।
टवर्ग० ना० पु० टकारादि पांचअक्षर।
टसक० ना० स्त्री० चमक, टीस।
टसकना० अ० क्रि० हिलना, चसकना, चटना।
टसकाना० स० क्रि० हिलाना, चसकाना।
टसना० अ० क्रि० मसकना, फटना।
टहक० ना० स्त्री० गांठकी पीड़ा।
टहकना० अ० क्रि० दुखना, पीड़ापाना।
टहटह० } ना० पु० सुन्दरता, नवीन।
टहटहा० }
टहना० ना० पु० शाखा, डाल।
टहनी० ना० स्त्री० शाखा डाली।
टहल० ना० स्त्री० गृहस्थी, सेवा, काम।
टहलना० स० क्रि० हवाखाना, बाहर फिरना।
टहलनी० ना० स्त्री० गृहारिथनि, दासी, लौंड़ी।
टहलाना० स० क्रि० चलाना, फिराना, हवाखिलाना।
टहलुआ० ना० पु० सेवक, दास, परिश्रमी।
टहलुई० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
टहो० ना० पु० जन्मते पुत्रका शब्द।
टहोका० ना० पु० घूंसा, चपेटा।
टांक० ना० पु० टंक।
टांकना० स० क्रि० सीवना, लिखना।
टांका० ना० पु० लपकी, तेपची, सांठन, जोड़न।
टांकी० ना० स्त्री० चट, खसरा, कुदरा, कुल्हाड़ी।
टांकू० गु० टांकनेहारा।
टांग० ना० स्त्री० एँड़ीसे घुटने तक का नाम लटकाव।
टांगन० ना० पु० पहाड़ी घोड़ाविशेष।
टांगना० स० क्रि० लटकाना, हिलगाना।
टांगी० ना० स्त्री० टांकी।
टांच० } गु० हठीला, टेढ़, कुजाति, कंजूस
टांचड़ा० }
टांट० ना० स्त्री० चांदी।
टांठा० गु० पोढ़ा, कड़ा, ठोस, कम।
टांठाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई, कड़ाई।
टांड़० ना० पु० मचान।
टांड़ा० ना० पु० खेप, बनिजार की वस्तु।
टाट० ना० पु० सनका बिनाहुआ बिछौना, अजाड़।
टाटक० गु० टटका।
टाटा० ना० पु० टाटा, बड़ी टट्टी।
टाटी० ना० स्त्री० टट्टी।
टाड़ी० ना० स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी।
टानना० स० क्रि० तानना, खैंचना।
टाप० ना० स्त्री० घोड़े के खुरका शब्द, घोड़े की अगले खुरोंकी मार।
टापना० अ० क्रि० टापमारना, हूंदना।

तड़के० अव्य० सवेरे।
तड़तड़ाना० अ० क्रि० रिसाना, भिरभिराना, फटने का शब्द।
तड़प० ना० स्त्री० चटक, झपट, उचक, उतावली।
तड़पना० अ० क्रि० तलफाना, धड़कना, कुर्दकना, फटफटाना, हाथ पांव पटकना।
तड़पाना० स० क्रि० तलपाना, धड़काना।
तड़पीला० गु० फुर्त्तीला, चटपटिया।
तड़फ० ना० स्त्री० व्याकुलता, धड़क।
तड़फड़ाना० अ० क्रि० धड़कना, घबराना।
तड़फड़ाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, घबराहट।
तड़फना० अ० क्रि० व्याकुल होना, फटफटाना।
तड़फाना० स० क्रि० तड़पाना।
तड़ा० ना० पु० टापू, द्वीप।
तड़ाक० गु० भड़कीला, चमकीला।
तड़ाका० ना० पु० मारने का शब्द, चटाका।
तड़ाग० ना० पु० तालाब, पोखरा।
तड़ाड़ा० ना० पु० जलकी धारा, तरेड़ा।
तड़ाया० ना० पु० चटक, भड़क।
तड़ावा० ना० पु० हहा, बनाव।
तड़ित्० ना० स्त्री० बिजली।
तड़ित्वान्० ना० पु० मेघ।
तण्डुल० ना० पु० तन्दुल, चांवल।
तत्० अव्य० वह, सो, तीन, समूह ना० पु० ईश्वर।
तताना० स० क्रि० गर्म करना।
ततेड़ा० ना० पु० पानी गर्म करने का पात्र विशेष।
तत्कन्द० ना० पु० अदरक, बाराहीकन्द।
तत्काल० अव्य० उसी समय।
तत्तत्कार्य० ना० पु० उसी उसी काम में।
तत्ता० गु० गर्म, ज्वलित, क्रोधी।
तत्पर० गु० आसक्त, चतुर, निपुण, समेत।
तत्फल० ना० पु० पीठ वृक्ष, भजपीपरि, जामुन वृक्ष, उसका फल।
तत्त्व० ना० पु० सार, प्रकृति, यथार्थ, मूल, सत्भाव जो किसी से बना नहो।
तत्त्ववल्का० ना० स्त्री० मुरहरी।
तत्त्वज्ञ० गु० मनुष्यादि जो बोलसके, बातके तत्त्व वस्तु जाननेहारा, यथा ब्रह्मवेत्ता।
तत्त्वज्ञान० ना० पु० ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।
तत्क्षण० अव्य० उसीसमय, तुरन्त, उसीक्षण।
तत्र० अव्य० तहां।
तथा० अव्य० तिसी प्रकार, तैसा, वैसाही।
तथाच० अव्य० जैसे, चुनांचि।
तथापि० अव्य० तौभी।
तद्० अव्य० तब तिससमय।
तदनन्तर० अव्य० तिसके पीछे।
तदनु० अव्य० तेहि अनुसार, तिसपीछे।
तदा० अव्य० तब, तहां।
तदपि० अव्य० तौभी।
तद्गत० गु० उस में गयाहुआ।
तद्गति० ना० स्त्री० उसकी दशा, उसकी प्राप्ति।
तद्गुणविशिष्ट० गु० वहगुण जिसमें है।
तद्धवि० ना० पु० उसके यज्ञका द्रव्य।
तद्भय० ना० पु० उसके डर।
तद्भावबोधक० गु० उसभावका बोधक।
तधी० अव्य० तिसी समय, तभी।
तन० ना० पु० शरीर, देह, पुत्र, और विस्तार।
तनक० गु० थोड़ा, अल्प।
तनय० ना० पु० पुत्र, लड़का, सुत।
तनया० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या, सुता।
तनापा० ना० पु० जवानी, तरुणाई।
तनी० ना० स्त्री० अंगरखे का बन्धन, तनया।
तनु० ना० पु० शरीर, देह।
तनुक० गु० थोड़ा, अल्प।
तनुजा० ना० स्त्री० तनया, पुत्री।
तनुत्राण० ना० पु० बख्तर, कवच।
तनूदरी० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, अबला।

तनूरुह० ना० पु० शरीर के बाल।
तनोति० अ० कि० विस्तारकर।
तन्त० ना० पु० तार, सुत,सिद्धि, तुरन्त, सन्तान, औषधि, तदवीर।
तन्तनाना० अ० कि० पिनपिनाना, मचाना।
तन्तनाहट० ना० स्त्री० नमनाहट, जलन से जो पीड़ा।
तन्तु० ना० पु० सूत, तार।
तन्तुना० ना० पु० ततुना, तार।
तन्त्र० ना० पु० टोटका, लटका, शास्त्रोक्त मन्त्र शिवकृत ग्रन्थ विशेष, वीणा।
तन्त्री० गु० तन्त्रका करनेवाला, गानेवाला।
तन्त्रीनाद० ना० पु० वीणाका शब्द।
तन्द्रा० ना० स्त्री० थकाई, श्रम, मूर्च्छा।
तन्द्री० ना० स्त्री० नींद, भ्रकुटी।
तन्दुल० ना० पु० चावल।
तन्ना० अ० क्रि० खिचना, फैलना।
तन्नाना० अ० क्रि० पिनपिनाना, क्रोधितहोना।
तन्नेत्र० ना० पु० उसकी आंखि।
तन्मय० गु० उसमें भराहुआ।
तन्मात्र० अव्य० केवल, वह।
तप० ना० स्त्री० ताप, उष्ण, ना० पु० तपस्या माघका महीना।
तपत० ना० स्त्री० उष्ण, गु० गर्म, तत्ता।
तपन० ना० पु० उष्ण, ज्वलन, सूर्य्य, और भिलावांवृक्ष।
तपना० अ० कि० ऐश्वर्य्यवान् होना, उष्णहोना, अतितेजयुतहोना।
तपनीय० ना० पु० सूर्य्य।
तपलोक० ना० पु० स्वर्गविशेष, लोक विशेष।
तपसी० ना० पु० तपस्वी।
तपस्य० ना० पु० फागुनमास, यथा मधुस्तथा माधव सशक्र च शुक्रःशुचिश्चाथनभो नभस्यौ तथेषु ऊर्ज्जश्च सहस्सहस्यौ तपस्तपस्याविति तेकमेण १।
तपस्या० ना० स्त्री० तप, योग, ईश्वरभजन।
तपस्विनी० ना० स्त्री० तपस्या करनेहारी स्त्री।
तपस्वी० ना० पु० तपस्या करनेहारा योगी।
तपा० ना० पु० अचक, योगी, जोगी।
तपाना० स० कि० गर्म करना तताना, श्रपना।
तपास० ना० स्त्री० किरण, धूप, परिश्रम दौड़ धूप।
तपिच्छ० ना० पु० तापिच्छ, तमाल वृक्ष।
तपी० ना० पु० तपा, मुनि।
तपेश्वर० } तपेश्वरी० } तपोधन० } ना० पु० तपी, मुनि।
तपोधना० ना० स्त्री० मुण्डी, और तपोधन की स्त्री, तपेश्वरिन स्त्री।
तपोमय० गु० तपस्यायुक्त।
तप्त० गु० तत्ता, गरम, तपत।
तप्तांग० ना० पु० ज्वर विशेष, देहगरम।
तब० अव्य० तिससमय।
तबो० } तभी० } अव्य० तिसीसमय।
तम० } तमः } ना० पु० अन्धकारका गुण, अंधेरा तमोगुण, राहुग्रह, क्रोध, अज्ञान, अति, पदांत में बहुतातका बोधक।
तमक० ना० स्त्री० गर्व, घमण्ड, मुखका लाल होना, झुंझाहट, दर्द।
तमकना० स० कि० मुखलाल होना, दहकना, दगदगाना, निष्कारणक्रोध।
तमका० ना० पु० धूपकीमार, बहुतगर्मी।
तमचुर० ना० पु० कुक्कुट, मुरगा।
तमतमाना० अ० कि० मुख में लाली होना, दगदगाना।
तमस० ना० पु० तम, मनु विशेष।
तमस्विनी० ना० स्त्री० राति, रैन।
तमारि० ना० पु० सूर्य्य।
तमाल ना० पु० वृक्ष विशेष, तिलक जो चन्दन से बनाते हैं।

ोषित० गु० हर्षित, धीरजवान।
ोहि० सर्व० तुम्को।
ो० अव्य० तब, तो।
ौसना० अ० क्रि० धूपके कारण से शिथिल होना।
ौल० ना० पु० जोल, परिमाण की क्रिया।
ौलना० स० क्रि० जोखना, परिमाण करना।
ौलवाई० } ना० स्त्री० तौलने का काम वा
ौलाई० } पैसा।
ौलाना० स० क्रि० जोखवाना।
ौलिया० } ना० स्त्री० पात्रविशेष।
ौली० }
ौही० अव्य० अभी।
ौहू० अव्य० तथापि।
यक्त० गु० जिसको त्यागदिया।
याग० ना० पु० छुड़ाव, वैराग्य।
यागन० ना० पु० तजन, विराग, छोड़ने।
यागना० स० क्रि० छोड़ना, तजना।
यागी० गु० वैरागी, छोड़ेहुये।
याज्य० गु० जो त्यागने के योग्य है।
यों० अव्य० तैसे, इस प्रकार, एकही समय में।
योंधा० गु० चुन्धला।
योनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी।
योनारी० ना० स्त्री० स्त्री जो अपना काम बड़ी चतुरता से स्वच्छ बनाती है।
योरुस० ना० पु० दो वर्ष पहिले।
त्योरी० ना० स्त्री० मत्थे की सकोड़, भ्रमनी।
त्योरीचढ़ाना० अ० क्रि० क्रोधित होना।
त्योहार० ना० पु० पर्व, पवनी, आनंदकादिन।
त्रपा० ना० स्त्री० लाज, हया।
त्रय० गु० त्रि, ३।
त्रयईर्षा० ना० स्त्री० तीन ईर्षा अर्थात् पुत्र, सम्पत्ति, पत्नी।
त्रयगंगा० ना० स्त्री० तीनगंगा अर्थात् मंदाकिनी, भागीरथी, प्रभावती।
त्रयताप० ना० स्त्री० तीनताप अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक।
त्रयपावक० ना० पु० तीन अग्नि अर्थात् आहवनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जठरानल, दावानल, बड़वानल।
त्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनरेखा अर्थात् त्रिवल्यादि, तीन लकीर।
त्रयरोग० ना० पु० तीन रोग अर्थात् वात, पित्त, कफ।
त्रयीतनु० ना० पु० सूर्य।
त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस।
त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी।
त्रसित० गु० डरता हुआ, भयवान्।
त्रस्त० गु० कायर, डरपोक, नामर्द।
त्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार।
त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक।
त्राणी० गु० त्राणकर्त्ता, रक्षक।
त्रात० गु० बचायागया, रक्षित।
त्राता० रक्षक, पालक।
त्रास० ना० पु० भय, दुःख।
त्रासक० गु० भयदायक, दुःखदाता।
त्रासा० } गु० भयवान्, डराहुआ।
त्रासित० }
त्राह० } अव्य० दया चाहने का शब्द, परित्राण का शब्द।
त्राहि० }
त्रि० गु० तीन, ३ परंतु यह शब्द विशेष के आगे योगहोता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर।
त्रिंश० गु० तीसवां ३०।
त्रिंशति० गु० तीस, ३०।
त्रिक० } ना० पु० गोखुरू।
त्रिकटु० }
त्रिकाल० ना० पु० तीनकालअर्थात् भूत, भविष्य, वर्त्तमान अथवा प्रातःकाल, मध्याह्न, सन्ध्या
त्रिकुट० ना० पु० सिंघाड़ा।
त्रिकुटा० ना० पु० सोंठ, मिरच, पीपर।
त्रिकूट० ना० पु० पर्वत विशेष जिसपर लंका है।

तमालपत्र० ना० पु० तमाकू।
तमिस्र० ना० पु० तम, अन्धकार।
तमी० ना० स्त्री० रात, निशा।
तमीचर० ना० पु० निशाचर, चोर, उल्लू, चमगीदड़।
तमोगुण० ना० पु० मनोवृत्ति विशेष वा दोष जिससे काम क्रोधादि उपजते हैं।
तमोल० ना० पु० ताम्बूल, पान।
तमोलिन्० ना० स्त्री० तमोली की स्त्री।
तमोली० ना० पु० जाति विशेष जो पान बेचते हैं।
तम्बू० ना० पु० रावटी, पाल, कपड़े का कोठा।
तम्बूल० ना० पु० ताम्बूल।
तम्बेरम० ना० पु० स्तम्बेरम, हाथी।
तर० अव्य० तल, पदान्त में अधिकता का चिह्न, बहुतात का सूचक।
तरई० ना० स्त्री० तारा, नक्षत्र।
तरकारी० ना० स्त्री० भाजी।
तरंग० ना० पु० लहर, उमंग, ललक।
तरंगिनि०
तरंगिनी० } ना० स्त्री० नदी।
तरंगी० ना० पु० बहुरंगी, लहरी।
तरण० ना० पु० मुक्तिमय, पारहोना, उद्धार होना।
तरणि० ना० पु० सूरज, नाव।
तरणी० ना० स्त्री० नाव, तरनी।
तरन० ना० पु० तरण।
तरफना० अ० क्रि० तड़फड़ाना।
तरबूज़० ना० पु० हिन्दवाना, फल विशेष।
तरल० गु० चञ्चल, तीक्ष्ण ओछा, ना० पु० धतूरा वृक्ष।
तरलता० ना० स्त्री० चञ्चलता, तेज़ी।
तरला० ना० पु० बांस विशेष, गु० जो सब से नीचला वा दूसरे से नीचला।
तरलाई० ना० स्त्री० तरलता।
तरव० ना० पु० वृक्ष।
तरवर० ना० पु० बड़ा वृक्ष।
तरस० ना० पु० शीघ्र, जल्दी, आलम्ब, दया, कृपा, कल्क।
तरसना० अ० क्रि० जी लगाकर रहना, ललचाना, दयालुहोना, पसीजना।
तराई० ना० स्त्री० दलदल, चराओं, नीचान।
तरान्० ना० पु० उगाही, त्रास।
तराना० स० क्रि० पारकराना, पैराना, बचाना।
तरि०
तरी० } ना० स्त्री० नाव, नौका।
तरीन० ना० स्त्री० तरीका बहुवचन, नावें।
तरु० ना० पु० वृक्ष।
तरुण० गु० युवा, जवान।
तरुणता०
तरुणाई० } ना० स्त्री० यौवन, किशोर, जवानी।
तरुणी० ना० स्त्री० युवती, जवान स्त्री।
तरेड़ा० ना० पु० टोंटी से पानी का गिरना।
तरया० ना० पु० तारागण, तारा, कविवाक्य यथा (दोहा० यथा तरैया प्रात के सब नृपभये उदास, लखिदिनमाथि कर राम छवि सकुचान बहुश्रास)।
तरौस० ना० पु० किनारा, बिहारीलाल सप्तशतिकायां (श्यामसुरति करि राधिका तकति तरणिजातीर, अंशुनकरत तरौस को खिनक खरौंहीनीर)।
तरौना० ना० पु० कर्ण भूषण विशेष बिहारीलाल समसतिकायां (लसत श्वेत सारी ढप्यो तरल तरौनाकान, पर्यो मनो सुरसरि सलिल रविप्रति बिम्ब विहान)।
तर्क० ना० स्त्री० बुद्धिसे विवेचना, अनुमानोक्ति न्यायशास्त्र, दलील।
तर्कण० ना० पु० कुदन, नई बात बनाना, शङ्का करना।
तर्कित० गु० शङ्कित, लंघित, तर्क कियागया।
तर्की० ना० स्त्री० तरपतिया, ताड़पत्र रचित कानका भूषण विशेष।

त्रिकोण० ना० पु० तीनकोन, तीनकोनेवाला सिंघाड़ा।

त्रिगुण० ना० पु० तीनवेर, तीनगुण अर्थात् सात्विक, राजस, तामस।

त्रिजग० ना० पु० तीनलोक, तिर्यंग्।

त्रिजगयोनि० ना० पु० पशु पक्षी आदि।

त्रिज्या० ना० स्त्री० व्यासार्द्ध, आधाविस्तार।

त्रिदन्ता० ना० पु० महामेदा।

त्रिदश० ना० पु० देवता, गु० तेरह, १३।

त्रिदशकश्यपपत्नी० ना० स्त्री० तेरहकश्यप की स्त्री, अर्थात् दिति, अदिति, कद्रू, विनता, श्रीवामा, भानुयोगेश्वरी, श्रीपतिलका, पत्नेत्रिका, पवनावर्ती, मेघावर्ती, कतकदंश्या, वन्ध्या, कनकमाला।१३।

त्रिदोष० ना० पु० तीनदोष अर्थात् कफ, वात और पित्त।

त्रिदशालय० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिदिव० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिधा० गु० तीनठाम, तीनप्रकार।

त्रिध्वनि० ना० स्त्री० तीनध्वनि अर्थात् मधुर, मंद, गम्भीर।

त्रिनयन० } ना० पु० श्रीसदाशिव।
त्रिनेत्र०

त्रिनेत्रा० ना० स्त्री० भवानी विशेष।

त्रिपथगा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।

त्रिपद० ना० पु० } तिपाई।
त्रिपदी० ना० स्त्री०

त्रिपर्णी० ना० स्त्री० शालपर्णी।

त्रिपादिका० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपु० ना० पु० सीसा, धातु विशेष।

त्रिपुंसा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

त्रिपुटा० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपुटी० ना० स्त्री० निसोत।

त्रिपुण्ड्र० ना० पु० शाक्तमतका तिलक जो आड़ा होता है, वैष्णवमतका तिलक जो ठाढ़ा होताहै।

त्रिपुर० ना० पु० त्रिलोक, दैत्यविशेष।

त्रिपुरारि० ना० पु० श्रीमहादेव जी।

त्रिपुस० ना० पु० खीरा।

त्रिपौलिया० ना० पु० तीनि द्वारका महल।

त्रिफल० ना० पु० तीनफल अर्थात् आंवला, हड़, बहेड़ा।

त्रिभंगा० गु० तिरछा खड़ाहोना।

त्रिभंगी० ना० पु० छन्द विशेष, श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम।

त्रिभुज० गु० तीन भुजाका, त्रिकोना।

त्रिभुवन० ना० पु० तीनि लोक अर्थात् स्वर्ग, मर्त्य, पाताल।

त्रिमुहानी० ना० स्त्री० त्रिवेणी।

त्रिय० } ना० स्त्री० अबला, पत्नी, नारी।
त्रिया०

त्रिलोक० ना० पु० त्रिभुवन, और ऊर्द्ध मध्य अधः वा उत्तम मध्यम और नीच।

त्रिलोकी० ना० पु० तीनलोकका समुदाय।

त्रिलोह० ना० पु० पीतल।

त्रिशंकु० ना० पु० राजा विशेष।

त्रिशूल० ना० पु० महादेवका अस्त्र विशेष।

त्रिसन्ध्या० ना० स्त्री० तीन सन्ध्या अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्न, सन्ध्या।

त्रिसन्ध्यास्वरूप० ना० पु० रक्त, शुक्ल, श्याम

त्रिसोता० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
त्रिस्रोता०

त्रुटि० ना० स्त्री० टूट, न्यूनता।

त्रेता० ना० पु० युग विशेष।

त्रैराशिक० गु० तीनराशि का गणित।

त्रोटक० ना० पु० छंद विशेष।

त्रोण० ना० पु० तूण, तरकश।

त्वं० सर्व० तू।

त्वक्० ना० स्त्री० छाल, स्पर्शेन्द्रिय, खाल।

त्वचा० ना० स्त्री० छिलका, बकला, खाल

त्वची० ना० पु० बांस, गु० त्वचाधारी।

त्वदंघ्रि० ना० पु० तुम्हारे चरण।

तर्कुल० ना० पु० ताड़का फल।
तर्क्षा० गु० धारा जो बहुत शीघ्र बहती है।
तर्जन० ना० पु० कोप।
तर्जना० अ० क्रि० कोपकरना, कूदना।
तर्जनी० ना० स्त्री० अंगुष्ठके पासकी अंगुली।
तर्तरता० गु० जो बहुत चिकना गोलादि से जो टपकता है, अ० क्रि० सनाटा भरना,गलफटा की करना।
तर्तराहट० ना० स्त्री० सनाटा, गींदड़भभकी, गलफटाकी।
तर्पण० ना० पु० पित्रादिके निमित्त जलदानदेना, मंगल, हुलास।
तर्राना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, खुनसाना, कुड़कुड़ाना।
तर्रारा० ना० पु० शीघ्रता।
तर्वरिया० ना० पु० खड्ग, तलवार बांधनेहारा।
तर्स० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम्।
तर्सों० अव्य० परसों के आगे का दिन।
तल० ना० पु० अधोभाग, पाताल विशेष, दृष्टि।
तलक० अव्य० तक, लग।
तलछट० ना० स्त्री० निचोड़, मैल, खूंद।
तलतलाना० स० क्रि० हिलाना।
तलना० स० क्रि० घी वा तेलमें भूनना।
तलपट० गु० मलमेट, चौपाट।
तलफना० अ० क्रि० तरफना।
तलमलाना० अ० क्रि० तलचाना।
तलवरिया० ना० पु० तर्वरिया।
तलवार० ना० पु० खड्ग, तरवार।
तला० ना० पु० पेंदा, थाह, जूतीके नीचे का भाग, पत्र, देवता।
तलातल० ना० पु० पाताल विशेष।
तली० ना० स्त्री० तला, भुकनी, निरसरी।
तलुआ० } ना० पु० पांव के नीचे का भाग।
तलूआ० }
तले० अव्य० नीचे।
तलया० ना० स्त्री० छोटेतालाब।
तल्प० ना० स्त्री० शय्या, सेज, बिस्तर।
तल्लीला० ना० स्त्री० उसकी लीला।
तवर्ग० ना० पु० तकारादि पांच अक्षर।
तवलकार० ना० पु० लकार तेरालिखाहुवा।
तषना० स० क्रि० भागदेना, बांटना।
तषित० गु० भाजित, बाटागया।
तसला० ना० पु० खानापकानेकापात्र विशेष।
तस्कर० ना० पु० चोर।
तस्करता० ना० स्त्री० } चोरी।
तस्करत्व० ना० पु० }
तस्करी० ना० स्त्री० }
तस्मिन्० सर्व्व० तिनमें, उसमें।
तस्य० सर्व्व० उसका।
तस्सू० ना० पु० माप विशेष, फ़ारसी शब्द है।
तहां अव्य० तिसस्थान, उस जगह।
तहियां० गु० पहिले।
तहीं० अव्य० तिसी या उस स्थान।
तक्षक० ना० पु० मुख्यसांप।
तज्ञ० गु० ज्ञाता, ज्ञानी, स्वरूप जाना।
ता० सर्व्व० उसको।
ताइत ना० पु० यन्त्र, गण्डा।
ताई० ना० स्त्री० चाची।
ताऊ० ना० पु० बड़ा चचा।
तांगा० ना० पु० गाड़ी विशेष जो सजी नहीं है।
तांत० ना० स्त्री० चमड़े की रस्सी।
तांतबांधना० स० क्रि० बका को छुपाना।
तांता० ना० पु० पांति, पंक्ति, तार।
तांती० ना० पु० धुनिया, बिहना, पटकार।
तांबड़ा० ना० पु० तांबेका वर्ण, माणिक्य के समान झूठापत्थर।
तांबा० ना० पु० धातु विशेष।
ताक० ना० पु० दृष्टि, दुर्की।
ताकना० स० क्रि० देखना, झांकना, घूरना।
ताकझांक० ना० स्त्री० ठीक समय, दृष्टिरखना।

त्वदीय० सर्व्व० तुम्हारी, रामायणे यथा (त्व-दीयभक्तिसंयुतं)।

त्वरा० ना० स्त्री० उतावली।

[थ]

थई० ना० स्त्री० वस्त्रादि का ढेर।

थंद०
थंबा०
थंभ० } ना० पु० खम्भ, थूनी, स्तम्भ।

थंमना० अ० क्रि० ठहरना, रुकना, संभलना।

थक० ना० पु० थका।

थकथक० गु० लथपथ।

थकना० अ० क्रि० माँदा होना, हारना।

थका० गु० माँदा, हारा।

थकाना० स० क्रि० माँदा करना, हराना।

थकित० गु० थका, जो रुकगया, अचम्भित।

थका० ना० पु० थकान।

थन० ना० पु० गौ आदि का स्तन।

थनी० ना० स्त्री० घोड़े का दोष विशेष।

थनैला० ना० पु० थनका रोगविशेष।

थनेसरी० ना० पु० कुरुक्षेत्र के ब्राह्मण।

थपक० ना० पु० थाप।

थपड़ा० ना० पु० थप्पड़, चपेटा।

थपड़ी० ना० स्त्री० ताली।

थपना० स० क्रि० स्थापना, बैठाना, अ० क्रि० स्थापित होना, बैठजाना।

थपा० गु० स्थापित, बैठायाहुआ।

थपाना० स० क्रि० स्थापित कराना, बैठाना।

थपेड़ा०
थप्पड़० } ना० पु० चपेटा।

थमना० अ० क्रि० रुकना।

थम्भना०
थंमना० } अ० क्रि० रुकना।

थर० ना० पु० सिंह, और शेरका खोह।

थरथर० गु० कम्पा।

थरथराना० अ० क्रि० कांपना, कम्पाना।

थरथराहट०
थरथरी० } ना० स्त्री० कपकपी, कम्पाहट।

थरहरना०
थरहराना०
थर्राना० } अ० क्रि० कांपना, कम्पना, हलहलाना।

थल० ना० पु० भूमि, स्थल।

थलकना० अ० क्रि० धड़कना, तलपना।

थलथलकरना०
थलथलाना० } अ० क्रि० हिलना, यथा स्थूल मनुष्य का मांस हिलता है।

थलचर०
थलचारी० } गु० मनुष्यादि।

थलिया० ना० स्त्री० भोजन करनेका पीतलादि का पात्र।

थली० ना० स्त्री० घर, पांडुर।

थवई० ना० पु० राज, मीमार, घरकारी।

थहराना० अ० क्रि० कांपना।

थांग० ना० स्त्री० चोरों की मांदि।

थांगी० ना० पु० चोर, धनिक।

थांम० ना० पु० स्तम्भ।

थांमना० स० क्रि० टेकना, थाइना, अटकाना, रोकना, सहायता करना।

थांवला० ना० पु० वृक्ष आदि का थाला।

थाकना० अ० क्रि० थकना।

थाका० गु० थका।

थाती०
थायी० } ना० स्त्री० धरोहर, अमानत, सौंपा।

थान० ना० सारा कपड़ा, अश्वादि के रहने का स्थान, मुद्रा, कक्ष, मकान, ठिकाना।

थाना० ना० पु० रक्षकों का स्थान, बांसों का ढेर।

थानी० ना० पु० स्थान का स्वामी, थांगी।

थाप० ना० स्त्री० धौल, थप्पड़, पशु का पांव, मर्याद, बैठक।

थापना० स० क्रि० थोपना, धौलियाना, ना० पु० व्यवहारविशेष स्थापन करना।

तागः० ना० पु० सूत, धागा।
तागना० स० क्रि० सीवना, सूत डालना।
तागा० ना० पु० सूत, धागा।
ताजक० ना० पु० ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
ताजन० ना० पु० कोड़ा।
ताटंक० ना० पु० कर्णभूषण विशेष।
ताड़० ना० पु० वृक्ष विशेष, ना० स्त्री० परिज्ञान।
ताड़क० ना० पु० ताड़ङ्क, ताड़ने हारा।
ताड़न० ना० पु० झिड़की, दंड, डांट।
ताड़ना० स० क्रि० पहिचानना, बूझना, अटकलना, दण्डदेना, मारना।
ताड़नीय० गु० ताड़ना करने के योग्य।
ताड़का० ना० स्त्री० सुबाहुकी माता, राक्षसी।
ताड़ित० गु० ताड़न दियागया, मारागया।
ताड़ी० ना० स्त्री० ताड़कारस।
ताण्डव० ना० पु० ताण्डव, नृत्यविशेष।
तात० ना० पु० पिता, गुरु, मित्र, पुत्र, भाई, शत्रु, सेवकादिका बोधक, गु० तत्ता, गरम, उष्ण।
तातनी०, तातनो० } सर्व० उसकी, उसका।
ताते०, ताते० } सर्व तिससे, उससे, तिसकारण।
तात्कालिक० गु० उसी समयका।
तात्पर्य० ना० पु० अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब हासिल।
तादात्म्य० ना० स्त्री० तत्स्वरूपता।
तादृस० गु० वैसाही।
तान० ना० स्त्री० रागका जो उच्चारण, स्वर।
तानसेन० ना० पु० रागी विशेष।
ताना० ना० पु० वस्त्रका लम्बीसूत।
तानी० गु० रागी, गवैया, ना० स्त्री० तानी
तांत्रिक० ना० पु० सिद्धान्तका जानने हारा विद्वान्, तन्त्रशास्त्र।
तानना० स० क्रि० कसना, खींचना, फैलाना।
ताप० ना० स्त्री० उष्णता, तप, ज्वर, मनका दुःख दण्ड।
तापती० ना० स्त्री० नदी विशेष।
तापना० स० क्रि० आंच लेना, घमाना।
तापस० ना० पु० तपस्वी, शान्त।
तापिच्छ०, तापिञ्छ० } ना० पु० तेंदुआ वृक्ष, तमाल।
तापी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो विन्ध्यके दक्षिण ओर है।
तापीय० ना० पु० सोनामक्खी।
तापूस० ना० पु० तमालपत्र।
ताप्य० ना० पु० सोनामक्खी।
ताफता० ना० पु० रेशमी, कपड़ा जिसको धूप छांह कहते हैं।
तामचीनी० ना० स्त्री० तांबा जिसमें और धातु भी जड़ाहोवे।
तामड़ा० ना० पु० तांबेके रंगकी मणि।
तामपुष्प० ना० पु० कुम्भी।
तामरस० ना० पु० कमल।
तामल० ना० पु० देशविशेष।
तामलकी० ना० स्त्री० भूय रा।
तामस० ना० पु० तमोगुणका कार्य, काम, क्रोध।
तामसिक०, तामसी० } गु० तमोगुण युक्त, क्रोधी।
तामसी० ना० स्त्री० रात, क्रोधी।
तामह० सर्व० उसमें।
तामा० ना० पु० तांबा।
तामिली० ना० स्त्री० भाषा विशेष।
तामेश्वर० ना० पु० तांबेकी भंग।
ताम्बूल० ना० पु० पान।
ताम्र० ना० पु० तांबा।
ताम्रचूड़० ना० पु० मुरगा, करौंदा।
ताम्रवर्ण० ना० पु० हरिन, तांबेकारंग।
ताम्रवल्ली० ना० स्त्री० मँजीठ।
ताम्रसार० ना० पु० लालचन्दन।

थापा॰ ना॰ पु॰ पशुके पांवका चिह्न, थपा।
थापित॰ गु॰ बैठायागया, स्थापित, नियत भया, मुकर्रर हुआ।
थापी॰ ना॰ स्त्री॰ थापने का शब्द, काठकी वस्तु विशेष जिससे छत पीटते हैं।
थाम॰ ना॰ पु॰ थम्भ, थूनी।
थामना॰ स॰ क्रि॰ रोकना, पकड़ना।
थार॰ } ना॰ पु॰ बड़ी थाली।
थाल॰ }
थाला॰ ना॰ पु॰ थांवला, थाल।
थाली॰ ना॰ स्त्री॰ भोजन करने का पात्रविशेष।
थावर॰ ना॰ पु॰ स्थावर, वृक्षादि, अचल।
थाह॰ ना॰ स्त्री॰ नदी की तली, नदी में वह स्थान जहां पैदल उतर जावें।
थाहा॰ ना॰ पु॰ नदीका स्थान जो गहिरा न हो।
थाही॰ ना॰ स्त्री॰ थाहपना गु॰ जो गहरी न हो।
थिति॰ ना॰ स्त्री॰ स्थिति, थिरता, पालन।
थिर॰ गु॰ स्थिर, अचल, क़ायम।
थिरकना॰ अ॰ क्रि॰ चमत्कार करके नाचना।
थिरकाना॰ स॰ क्रि॰ चमत्कार से नचाना।
थिरकी॰ ना॰ स्त्री॰ चमत्कार, घुमाव।
थिरता॰ ना॰ स्त्री॰ } स्थिरता, अचलता।
थिरत्व॰ ना॰ पु॰ }
थिरा॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।
थिराना॰ स॰ क्रि॰ बैठाना, ठहराना, अ॰ क्रि॰ बैठना, ठहरना, पानी की मिट्टी का बैठजाना।
थीर॰ गु॰ सुस्थित, स्थिर, मन्दा।
थुकथुकाना॰ अ॰ क्रि॰ कुवासनादि घिनकी वस्तु देखकर थूकना वा कुदृष्टि दूर करने के लिये थूकना।
थुकाना॰ स॰ क्रि॰ थूक फिकवाना और निन्दा कराना।
थुथुकारना॰ स॰ क्रि॰ तुच्छ करके किसुको बाहर करना।
थुथुनी॰ ना॰ स्त्री॰ शूकरादि का मुख।
थुथाना॰ स॰ क्रि॰ भौंहें टेढ़ी करना।
थूक॰ ना॰ पु॰ मुखमें का पानी।
थूकना॰ स॰ क्रि॰ मुखमें से पानी फेंकना।
थूणी॰ ना॰ स्त्री॰ थूनी।
थूतड़ा॰ ना॰ पु॰ }
थूथन॰ ना॰ पु॰ } शूकरादि का मुख।
थूथना॰ ना॰ पु॰ }
थूथनी॰ ना॰ स्त्री॰ }
थूनी॰ ना॰ स्त्री॰ धरन, टेकन।
थूहर॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।
थेईथेई॰ ना॰ स्त्री॰ चहलबहल।
थेगली॰ ना॰ स्त्री॰ कपड़े में जोड़, पैबन्द।
थेवा॰ ना॰ पु॰ नग।
थैला॰ ना॰ पु॰ }
थैलिया॰ ना॰ स्त्री॰ } बटुआ, दुलमियान।
थैली॰ ना॰ स्त्री॰ }
थोक॰ ना॰ पु॰ समूह, ढेर, एकभाग, थोक महला।
थोड़॰ ना॰ पु॰ फले केले के गर्भ।
थोड़ा॰ गु॰ अल्प, कम।
थोथला॰ गु॰ भोता, मोटा।
थोथा॰ ना॰ पु॰ औषधिविशेष, फलरहित, गु॰ छूछा, पोपला, बदसूरत, कुभण्डा।
थोप॰ ना॰ पु॰ पालकी के बांस के अन्त भूषण, छाप।
थोपना॰ स॰ क्रि॰ टेकना, छोपना, गाजना बटोरना।
थोपियाना॰ अ॰ क्रि॰ मुंदियाना, भिरभिराना।
थोपी॰ ना॰ स्त्री॰ धप्पा।
थोब॰ } ना॰ स्त्री॰ लदी का टेकन।
थोम॰ }
थोहर॰ ना॰ पु॰ थूहर।
थौना॰ ना॰ पु॰ गौने के पीछे स्त्री की विदा।

[द]

द॰ अव्य॰ यह अक्षर जब शब्द के अन्त

ताम्राक्ष० ना० पु० कोयल।
तार० ना० पु० वानर विशेष, मोतीमाला, निर्मली मोती, उच्चस्वर, ताड़।
तारक० ना० पु० मुक्तिदाता, रांगाधातु, गुरु, उद्धारकरनेहारा, जो पारलगावे, मन्त्र विशेष दैत्य विशेष।
तारकारि० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
तारकी० ना० स्त्री० देवदाली।
तारकूट० ना० पु० रूपा, पीतल।
तारकेश्वर० ना० पु० सदाशिवजी।
तारण० ना० पु० उद्धार करनेहारा, उद्धार का करना, मुक्तिदाता, तारनेहारा।
तारणीय० गु० तारनेहारा, योग्य, उद्धार करने लायक।
तारतम्य० ना० पु० न्यूनाधिक, थोड़ा बहुत।
तारार्थ० ना० पु० उसका अर्थ, उसके लिये।
तारना० स० क्रि० उतारना, पारकरना, मुक्ति देना।
तारा० ना० पु० नक्षत्र, ना० स्त्री० नेत्रकी पुतली, अङ्गदकी महतारी।
तारागण० ना० पु० नक्षत्रों का समूह।
तारापथ० ना० पु० आकाश।
तारिका० ना० स्त्री० पुतली, नक्षत्र।
तारिणी० ना० स्त्री० उद्धार करनेहारी।
तारुण्य० ना० स्त्री० तरुणता, जवानी, युवा।
तालु० ना० पु० तालू।

गजमन्ती राकुन्तीभासपत्रियो इत्यमरः।
ताल० ना० पु० ताड़वृक्ष, तालाब, हरताल, ना० स्त्री० करताल, रागका परिमाण, मल्लयुद्ध में बाहुपर बाहु पटकना।
तालखजूरी० ना० स्त्री० दुपहरिया वृक्ष।
तालध्वज० ना० पु० श्रीबलरामजी।
तालपर्णी० } ना० स्त्री० मूसली औषधि।
तालमूलिका० }
तालवृन्त० ना० पु० ताड़का पंखा।
तालव्य० ना० पु० जो अक्षर तालुसे उच्चारण किये जावें यथा त, थ, द, ध, न, ल, श।
ताला० ना० पु० कुफल, द्वार बन्द करने का यन्त्र।
तालांक० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
ताली० ना० स्त्री० कुंजी, चाबी, दोनों हाथों को आपस में मारने से जो शब्द होताहै।
तालीस० ना० पु० वृक्ष विशेष।
तालु० } ना० पु० मुखमें ऊपरका भाग।
तालू० }
ताव० ना० पु० ताप, क्रोध, बल चटक, ऐंठ, कागजका तखता, कस।
तावत्० अव्य० इत्ता, यहांतक, तबतक।
तावना० स० क्रि० गरमकरना, कसना, ऐंठना।
ताश० } ना० पु० गंजीफह, लप्पा, पारसीहै।
तास० }
तासु० } सर्व० उसको उसका।
तासुको० }
ताहि० सर्व० उसको।
ताहिरी० ना० स्त्री० भोजन विशेष।
तिकातिक० ना० पु० गाड़ी आदि के बैल चलाने में यह शब्द बोलाजाताहै।
तिकुरी० ना० स्त्री० तिहाई, तीसरा।
तिकोनिया० गु० तीन कोणका पदार्थ।
तिक्का० ना० पु० मांसका छोटा टुकड़ा।
तिक्त० गु० तीता, चरपरा, ना० पु० चिरायता।
तिक्तका० ना० स्त्री० चिरपोटा।
तिक्तचञ्चका० ना० स्त्री० कुटकी।
तिक्ता० ना० स्त्री० कालीमिरच, खीरा।
तिखरा० गु० तिबारा, तिहरा।
तिखराकरना० स० क्रि० तीनबेर जोतना।
तिखारना० स० क्रि० ठहराना, सचकरना, गलसे पूछना तीनबेर जोतना।
तिगुण० } गु० जिसका तीनगुण है, तेहरा।
तिगुना० }

आता है तब उसका अर्थ देनेहारा होजाता है यथा सुखद अर्थात् सुख देनेहारा।
दई० ना० पु० दैव, भगवान्, ब्रह्मा, स्त्री, मिठाई विशेष।
दंश० ना० पु० वन की मक्खी, दांत।
दंशन० ना० पु० दांतों से काटन।
दंष्ट्री० ना० पु० शूकर, सर्प।
दंस० ना० पु० कुत्ता, सिंह, डांस।
दखन० ना० पु० दक्षिण।
दगड़० ना० पु० धक्का, दका, डंका, राह।
दगड़ा० ना० पु० पैंड़ा।
दगड़ाना० स० क्रि० चलाना, दौड़ाना, डग-राना।
दगदगा० गु० चमकीला।
दगदगाना० अ० क्रि० चमकना, चहकना, तम-तमाना।
दगदगाहट० ना० स्त्री० चमक।
दगधना० स० क्रि० जलाना, छेदना, सताना, डांटना, धुधकारना।
दगला० ना० पु० रुई भरा अंगरखा।
दग्ध० गु० जो जलगया।
दग्धा० गु० जला, तिथिविशेष, वारविशेष, मास युक्त तिथि।
दंगल० ना० पु० चौकीविशेष, बहुतात।
दंगा० ना० पु० बखेड़ा, रौला।
दंगैत० गु० रौला या बखेड़ा करनेहारा।
दटना० अ० क्रि० अड़ना, सामना करना।
दण्ड० ना० पु० लाठी, शासन, डांड, घड़ी, छु-र्माना, जुर्माना।
दण्डक० ना० पु० राजाविशेष, गु० दण्डकर्ता।
दण्डधर० } ना० पु० यमराज, गु० दण्ड
दण्डधारी० } बांधनेहारा।
दण्डमान० गु० दुःखदाता, दण्डदाता, ना० पु० यमराज।
दण्डवत्० ना० स्त्री० दण्ड के समान पड़के प्रणाम करना।
दण्डादण्डी० ना० पु० आपस में लाठीसे लड़ना।
दण्डायमान० ना० पु० दण्डाकी नाईं खड़ा।
दण्डित० गु० दण्ड लियागया, सताया गया, पीड़ित, शिक्षा कियागया।
दण्डी० ना० पु० तपस्वी, गु० दुःखरूपी, टांडी।
दण्ड्य० गु० दण्ड देनेके योग्य।
दतवन० } ना० पु० दन्तधावन, मिसवाक।
दतून० }
दतूना० ना० पु० पौधाविशेष।
दतूली० ना० स्त्री० छोटे २ दांत।
दतौन० ना० पु० दतून।
दत्त० गु० जो दियागया।
दत्तात्रेय० ना० पु० हरि अवतार, मुनिविशेष।
ददरीक्षेत्र० ना० पु० भृगुमुनि का स्थान पट-ना के पास है।
ददियाल० } ना० पु० दादाकाघर, पुरुषे।
ददियाला० }
ददोड़ा० ना० पु० मच्छड़ आदि के काटने की सूजन।
दद्रु० ना० पु० दादुरोग।
दधि० ना० पु० दही, समुद्र।
दधिकांदो० ना० पु० जन्माष्टमी के दूसरे दिन का पर्व्वानन्द।
दधिमुख० ना० पु० लड़का बहुत कम उमर वाल्य, वानरविशेष जो रामदल में था।
दधिरिपु० ना० पु० अगस्त्यमुनि।
दधिवल० ना० पु० सुग्रीव का पुत्रविशेष।
दधिसुत० ना० पु० चन्द्रमा आदिक।
दधीचि० ना० पु० मुख्यराजा, मुनिविशेष।
दनुज० ना० पु० दैत्य, राक्षस।
दनुजपति० }
दनुजराज० } ना० पु० दैत्योंका राजा।
दनुजाधिप० }
दनुजारि० ना० पु० देवता, श्रीनारायण।
दनुजेश० } ना० पु० दैत्यों का राजा।
दनुजेश्वर० }

तिग्म० ना० पु० पीपरि।

तिजरा० ना० पु०
तिजरी० ना० स्त्री०
तिजारी० ना० स्त्री० } अन्तरिया तीसरे दिन जाड़ा और विषमका आना।

तिणुका० ना० पु० घास, घासका टुकड़ा।

तित० अव्य० तिधर, तत्र।

तितना० ना० पु०
तितनी० ना० स्त्री० } गु० प्रमाण या अवधि या निश्चय बोधक।

तितरवितर० गु० भिन्न भिन्न, संगफूटजाना।

तितरी०
तितली० } ना० स्त्री० कीट विशेष जो उड़ता है।

तिथि० ना० स्त्री० चन्द्रकला की क्रिया से उपलक्षितकाल, दिन, तारीख।

तिथिपत्र० ना० पु० पत्रा, जन्त्री।

तिथिक्षय० ना० पु० तिथिका अंतम, हानि।

तिदरा० ना० पु०
तिदरी० ना० स्त्री० } तीनद्वार का स्थान।

तिधारा० ना० पु० पौधा विशेष, तीन धारका संगम।

तिनकना० अ० क्रि० धड़कना, फड़फड़ाना, टीमना।

तिनका० ना० पु० डांडी या टहनी या घासका छोटाटुकड़ा।

तिन्तिणी० ना० स्त्री० अमिली वृक्ष।

तिन्दुक० ना० पु० तेंदुवा, तमालवृक्ष।

तिन्दुला० ना० स्त्री० पीपरि।

तिन्नी० ना० स्त्री० चावल वा उसका पौधा विशेष।

तियारा० गु० तीनिबेर ना० पु० तीन दरका।

तिब्बत० ना० पु० देश विशेष जो हिमालय के उत्तर में है।

तिमि० ना० स्त्री० मछली, अव्य० तैसे, उसी विधि।

तिमिंगिल० ना० पु० मत्स्य, मछली।

तिमिर० ना० पु० अन्धकार, अज्ञान।

तिमिरहर० ना० पु० सूरज।

तिय०
तिया० } ना० स्त्री० योषिता, स्त्री, नारि।

तिरकोना० गु० तीनकोनवाला पदार्थ।

तिरखूंटा० ना० स्त्री० तीनकोने का अस्त्र विशेष।

तिरछा० गु० टेढ़ा, आड़ा, हठीला।

तिरछाना० स० क्रि० टेढ़ा करना, अ० क्रि० हठीला होना, हठकरना।

तिरछी० गु० टेढ़ी, बांकी।

तिरतिराना० अ० क्रि० रिसाना, झिरझिराना।

तिरना० अ० क्रि० पैरना, तैरना।

तिरपद० ना० पु०
तिरपदी० ना० स्त्री० } तिपाई, तीनपद।

तिरपन० गु० पचास और तीन, ५३।

तिरपौलिया० ना० पु० धनुषाकार के तीनद्वार का स्थान।

तिरफला० ना० पु० त्रिफला, तीन फल का, अर्थात् आंवला, हर्रे, बहेड़ा।

तिरभंगा० गु० तिरछा खड़ाहोना।

तिरभंगी० ना० स्त्री० छन्द विशेष ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम।

तिरस्कार० ना० पु० निन्दा, भंजन, अपज्ञा, अपमान।

तिरसठ० गु० साठि और तीन, ६३।

तिरहुत० ना० पु० देश विशेष, नगर विशेष।

तिरोधान० ना० पु० पोशाक, आच्छादन, वस्त्र।

तिरोहित० गु० छुपाहुआ, गुप्त, ना० पु० मिथिला देश।

तिर्मिरी० ना० पु० तेलकी बुंद जो पानीपर बहती है थर थरा।

तिर्मिराना० अ० क्रि० झूलना, लहरना, थरथराना, चमकना यथा तेलकी बुंद पानीपर।

तिर्मिराहट० ना० स्त्री० थरथराहट, फरफराहट।

तिर्मिरी० ना० स्त्री० घुमड़ी।

दन्त० ना० पु० दांत, दशन।
दन्तकाष्ठ० ना० पु० दतून करना, दतुन।
दन्तधानी० ना० पु० धनियां।
दन्तबीज० ना० पु० अनार।
दन्तशठ० ना० पु० मारे औषधि, जंभीरी।
दन्तशूल० ना० पु० दांतोंकी पीड़ा।
दन्तिका० ना० स्त्री० बड़ी छतावर।
दन्ती० ना० पु० हाथी।
दन्तीफल० ना० पु० पिस्ता।
दन्तुर०, दन्तेल०, दन्तैल० गु० जिसके दांत होंठ से न ढके वा जिस जन्तु आदि के बड़े २ दांतहों हवड़ा, हविला।
दन्त्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण दाँतसे होता है यथा, त थ द ध न ल स।
दन्दनाना० अ० क्रि० विरामना, निडर बैठना।
दन्ना० ना० पु० इन्द्रिय, लिंग, गु० निडर।
दन्नापेल० गु० व्यभिचारी, अतिनिश्शंक।
दपट० ना० स्त्री० दौड़, झपट, डांट।
दपटना० अ० क्रि० दौड़ना, डांटना।
दपटाना० स० क्रि० दौड़ाना, डांट दिखाना।
दबकना० अ० क्रि० छिपना, घात में बैठना।
दबकर० ना० स्त्री० कलं।
दबकाना० स० क्रि० धमकाना, डांटना, लुकाना।
दबकी० ना० स्त्री० दांव, छिपकी।
दबकीला०, दबकैल० गु० घुसड़, दबकनेहारा।
दबंग०, दबंगा० गु० कुशील, कुढंगा।
दबना० अ० क्रि० नीचे होना, कुचिलना, कानि करना, मानना।
दबा० ना० पु० दांव, घात।
दबाना० स० क्रि० दाबना, निचोड़ना, डांटना।
दबाव० ना० पु० पराक्रम, आधीनता, बोझ, अदब।
दबीला० ना० पु० औषधिविशेष, बैठा, चापू।
दबेपांव० अव्य० हौले, धीमे।
दबैल० ना० पु० प्रजा, आधीन।
दबोचना० स० क्रि० दबायडालना।
दम० ना० पु० मनको निज वशरखना यद्वा इन्द्रियों को रोकना, दौना सुगन्धि।
दमक० ना० स्त्री० चमक, दहक, झलक, दाह।
दमकना० अ० क्रि० झलकना, चमकना।
दमड़ा० ना० पु० सम्पत्ति, दौलत।
दमड़ी० ना० स्त्री० पैसे का आठवां भाग।
दमदमाना० स० क्रि० हिलाना।
दमन० ना० पु० सुरमा, नागदौन, पुनः विशेष अधीनता, नाशन, दमयन्ती।
दमनीय० गु० दमन के योग्य, दमन कारक, [illegible]ड़नेहारा, रामायणे, (कुँवरि मनोहरि विजै बड़ि कीरति अति कमनीय, पावनहार विरंचि जनु रच्यो न धनु दमनीय)।
दमयन्ती० ना० स्त्री० राजा नल की भार्या।
दमाना० स० क्रि० लचकाना, निहुराना, दु[illegible] वाना।
दमामा० ना० पु० डंका, धौंसा।
दम्पति०, दम्पती० ना० पु० स्त्री पुरुष।
दम्भ० ना० पु० अहङ्कार, घमण्ड, पाखण्ड, धर[illegible] बनाव।
दम्भी० गु० अहङ्कारी घमण्डी, पाखण्डी, धर्म[illegible]
दम्य० गु० शास्य, ना० पु० लैला।
दया० ना० स्त्री० कृपा, करुणा, दान, वितरण।
दयायुक्त०, दयालु०, दयावन्त०, दयावान०, दयाशील० गु० कृपावन्त, मिलनसार, दान[illegible] मायावन्त, मेहरवान।
दर० ना० पु० मोल, भाव, शंख, छेद, डर, पीड़ा।
दरकना० अ० क्रि० चिरजाना, फटना।
दरका० ना० पु० दरार, फटाव।
दरकाना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।

तिर्यक्पति० } नां० पु० शार्दूल, सिंह ।
तिर्यग्पति० }
तिल० नां० पु० पौधा विशेष, जिसके बीज से तेल निकालते हैं, शरीर में काला चिह्न विशेष, सूक्ष्म ।
तिलक० नां० पु० ललाट में विहित चन्दनादि का टीका, पीना, खली, अर्थ करना, अर्थ, वृक्ष विशेष गु० शिरोमणि ।
तिलकुट० नां० पु० तिल और मिठाई विशेष ।
तिलंगा० नां० पु० तैलंगा, सिपाही ।
तिलंगी० नां० स्त्री० गुड्डी, पतंग ।
तिलचट्टा० नां० पु० कीटविशेष ।
तिलचावली० नां० स्त्री० तिल और चावलों की मिलौनी, काले और सफेद बालों की मिलौनी ।
तिलचूरी० नां० स्त्री० मिठाई विशेष ।
तिलड़ा० नां० पु० } तीन लड़का भूषण वि-
तिलड़ी० नां० स्त्री० } शेष ।
तिलपर्णी० नां० स्त्री० चन्दन ।
तिलपिष्टक० नां० पु० पीना, तिलकी खली ।
तिलवर० नां० पु० पक्षी विशेष ।
तिलभेद० नां० पु० पोस्त का बिरवा ।
तिलहा० गु० तेलिया ।
तिलुआ० नां० स्त्री० पिलई ।
तिलोत्तमा० नां० स्त्री० मुख्य अप्सरा ।
तिष्ठना० अ० क्रि० ठहरना, स्थिरहोना, विराजना ।
तिष्ठित० गु० ठहराहुआ ।
तिष्य० नां० स्त्री० आठवां नक्षत्र, पुष्य ।
तिसका० सर्व्व० उसका, जिसका ।
तिसरायत० नां० पु० मध्यवर्ती गैरियत, दुनाली, अपनायतरहित ।
तिसूत० नां० पु० औषध विशेष ।
तिहत्तर० गु० सत्तर और तीन, ७३ ।
तिहरा० गु० तिगुणा, तिलड़ा ।
तिहराना० स० क्रि० तिहरा करना ।
तिहरावट० नां० स्त्री० तिगुण करने का काम ।
तिहरे० सर्व्व० तिहारे ।
तिहाई० नां० स्त्री० तीसरा भाग ।
तिहायत० नां० स्त्री० तिसरायत ।
तिहारी० नां० स्त्री० }
तिहारे० नां० पु० } सर्व्व० तेरी, तेरे ।
तिहारो० नां० पु० }
तिहु० गु० तीनों, तीन ।
तिहुपुर० } नां० पु० तीनोंलोक
तिहुलोक० }
तीखा० गु० तीक्ष्ण, चरपरा ।
तीखी० गु० सूक्ष्मधार, पैनी ।
तीखुर० नां० पु० श्वेत वस्तु, जिसको व्रत के दिन फलाहार करते हैं ।
तीछन० गु० तीक्ष्ण, तीव्र, तेज ।
तीज० नां० स्त्री० तृतीया ।
तीजा० गु० तीसरा, मृतक के तीसरे दिन का काम व तीसरा दिन ।
तीजिया० } नां० स्त्री० श्रवण सुदी तीज का
तीजै } त्योहार ।
तीत० गु० तीता ।
तीतर० नां० पु० पक्षीविशेष ।
तीतरी० नां० स्त्री० तितरी, पतंगाविशेष ।
तीता० गु० कड़वा, पड़पड़ा, तीखा ।
तीन० गु० त्रि, ३ ।
तीनतेरह० गु० तित्तर बित्तर ।
तीय० नां० स्त्री० अबला, स्त्री ।
तीयल० नां० स्त्री० स्त्री के पहिरने के तीनों वस्त्र ।
तीर० नां० समुद्र वा नदी का तट, अव्य० ढिग, पास ।
तीरथ० नां० पु० पुण्यस्थान, यात्रा ।
तीरथराज० नां० पु० प्रयाग ।
तीर्थ० नां० पु० तीरथ ।
तीली० नां० स्त्री० पिंजड़ा की कामी ।
तीव्र० गु० अत्यन्त कड़वा, तीता, पैना ।

दरकी० गु० स्त्री० फटी।
दरदर० ना० पु० ईंगुर, सिंदूर।
दरदरा० गु० अधकूटा, अधपिसा।
दरश० } ना० पु० दर्श, देखना।
दरस० }
दरही० ना० स्त्री० मछली विशेष।
दरांती० ना० स्त्री० हँसिया, कटनी।
दरार० } ना० पु० दरका, चीर।
दरारा० }
दरि० ना० स्त्री० मोल, भाव।
दरिद्र० ना० पु० } दीनता, कंगालता, नि-
दरिद्रता० स्त्री० } र्धनता।
दरिद्री० गु० दीन, कंगाल।
दरी० ना० स्त्री० खोह, गुफा, बिछौना विशेष।
दरीभृत्० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
दरीन० ना० स्त्री० दरीका बहुवचन।
दर्दुर० ना० पु० मेंढक।
दर्प० ना० पु० अहङ्कार, अभिमान, मान।
दर्पक० ना० पु० कामदेव।
दर्पण० ना० पु० आदर्श, मुकुर, शीशा।
दर्पणी० ना० स्त्री० दर्पण।
दर्पणीय० गु० सुन्दर, दिखनौट, सुथरा, अच्छा।
दर्पणोदर० ना० पु० चौरस दर्पण का पेट।
दर्पी० गु० अभिमानी, मानी।
दर्भ० ना० पु० कुश, घास।
दर्रा० ना० पु० दारा।
दर्राना० अ० क्रि० निडर, आगे बढ़ना, बेधड़क आगे चलेजाना।
दर्विका० ना० स्त्री० गोभी।
दर्वी० ना० स्त्री० कर्छी।
दर्वीकार० ना० पु० सांप।
दर्श० ना० पु० दृष्टि, परिवा, प्रतिपदा।
दर्शक० गु० दिखनौट, देखनेवाला।
दर्शकता० ना० स्त्री० दर्शन, दिखावट।
दर्शन० ना० पु० दृष्टि, भेंट।
दर्शनधारी० गु० सुन्दर।

दर्शनी० ना० स्त्री० हुण्डी विशेष जिसको देखते ही रुपया दिया जावे।
दर्शी० गु० देखनेवाला।
दल० ना० पु० पत्ता, बड़ी फौज, ढेर, मोर-पंख।
दलक० ना० स्त्री० झलक।
दलकना० अ० क्रि० झलकना।
दलदल० ना० पु० धसाव, पांक, कीचड़।
दलदलाना० अ० क्रि० कांपना, थरथराना।
दलदलाहट० ना० स्त्री० थरथराहट, कम्प।
दलन० ना० पु० नाशन, दो टूक करनेका काम विशेष।
दलना० स० क्रि० दो टूक करना।
दलबादल० ना० पु० मेघों का समूह।
दलवाना० स० क्रि० दो टूक कराना।
दलवैया० ना० पु० दलनेहारा।
दलाना० स० क्रि० दलवाना।
दलिद्र० ना० पु० } दरिद्र।
दलिद्रता० स्त्री० }
दलिद्री० गु० दरिद्री।
दलित० गु० दो टूक कियागया, आधा।
दलिया० ना० पु० अधकुटा, अधपिसा।
दलिहन० ना० पु० जो अन्न दाल के काम आता है यथा उरद आदि।
दली० गु० दो टूक की गई, ना० पु० वृक्ष।
दलैता० ना० पु० } छोटी पत्ती।
दलैती० ना० स्त्री० }
दव० ना० पु० वन की आग, घात, दावा।
दवागि० }
दवाग्नि० } ना० पु० वन की आगि।
दवानल० }
दवारि० }
दश० गु० दस, १०।
दशकण्ठ० ना० पु० रावण।
दशगात्र० ना० पु० मृतक कर्म विशेष।
दशदिक्पाल० ना० पु० दश दिशापाल अर्थात्

तीसरा० गु० तृतीय।
तीसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।
तीक्ष्ण० ना० पु० मरुआ, मिरच, गु० पड़पड़ा, तत्ता, क्रोधी, भाँभिया, पैना, तीता।
तुक० ना स्त्री० पद, सम्बन्ध।
तुकला० ना० पु०
तुकली० ना० स्त्री० } छोटी पतंग विशेष।
तुक्कल० ना० पु०
तुका० ना० पु० बाण जिसकी नोक नहीं है, थोथा पर्यंत।
तुगावंशी०
तुकाक्षीरी० } ना० पु० वंशरोचन।
तुंग० गु० ऊंचा, लम्बा, समूह।
तुंगवृक्ष० ना० पु० नारियल।
तुच्छ० गु० शल्य, कुत्सित, अपमानी।
तुड़ाना० स० क्रि० तोड़ना।
तुण्ड० ना० पु० चोंच, मुख।
तुतरा० गु० जो तुतलाता हो।
तुतराना० अ० क्रि० अधूरा बोलना जैसे बालक बोलते हैं।
तुतला० गु० तुतरा।
तुतलाना० अ० क्रि० तुतराना।
तुत्थ०
तुत्थिक० } ना० पु० नीलाथोथा।
तुनतुनाना० अ० क्रि० सरोदा देना।
तुन० ना० पु० वृक्षविशेष।
तुन्दिल० गु० तोंदिल, बड़ी तोंदका।
तुन्न० ना० पु० तुत, टूटा।
तुपक० ना० पु० बन्दूक।
तुपकिया० ना० स्त्री० छोटी बन्दूक।
तुम० सर्व० मध्यमपुरुष का बहुवचन वा वाचक।
तुमतमौ० सर्व० तुम्हारा।
तुमाई० ना० स्त्री० तुमाने का पैसा।
तुमाना० स० क्रि० धुनवाना।
तुमुल० ना० पु० रोला, हुल्लड़।

तुम्बा० ना० पु० लौका, कद्दू।
तुम्बिका०
तुम्बी० } ना० स्त्री० तोंबी, कद्दू, बजाने की तोंबी जो मदारी लोग रखते हैं।
तुरई० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।
तुरक० ना० पु० तुरक, देशविशेष।
तुरग०
तुरंग० } ना० पु० घोड़ा।
तुरंगम०
तुरंगाह्वा० ना० स्त्री० असगन्ध।
तुरत०
तुरंत० } अव्य० शीघ्र, अभी।
तुरपना० स० क्रि० सीना, टांकना विशेष।
तुरही० ना० स्त्री० बाजा विशेष नरसिंघा।
तुराई० ना० स्त्री० तोशक, रजाई।
तुराना० अ० क्रि० छूटजाना, छुड़ाना, मर्यादा से बाहिर चलना, बहिचलना।
तुराषाट्० ना० पु० इन्द्र।
तुरिय० ना० पु० घोड़ा।
तुरी० ना० पु० घोड़ा ना० स्त्री० तुरही।
तुरीय० ना० पु० मुक्तअवस्था, मुक्ति, मोक्ष चौथ।
तुरुक०
तुरुष्क० } ना० पु० यवन, देश विशेष।
तुर्त०
तुर्तफुर्त०
तुर्ताव० } अव्य० तुरन्त, शीघ्र।
तुर्तीफुर्ती०
तुल० गु० तुल्य।
तुलना० अ० क्रि० तुलापरचढ़ना, तुल्यहोना।
तुलसा०
तुलसी० } ना० स्त्री० छोटा वृक्ष जिसकी पत्ती विष्णु वा शालग्राम को चढ़ाते हैं।
तुलसीदास० ना० पु० प्रसिद्ध भक्त श्रीरामायण भाषा बनानेहारे।
तुला० ना० स्त्री० तराजू, अपनी देहकी बराबर दान देना, सातवीं राशि विशेष।
तुलाना० स० क्रि० तौलाना, तुलापर चढ़ाना।

इन्द्र, १ अग्नि, २ यम, ३ नैर्ऋति, ४ वरुण, ५ वायु, ६ कुबेर, ७ ईशान, ८ ब्रह्मा, ९ अनन्त, १०।
दशदिशा० } ना० स्त्री० दशओर अर्थात् पूर्व,
दशदिसि० } आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अध, ऊर्ध्व, १०।
दशन० ना० पु० दांत।
दशम० गु० दसवां।
दशमांश० ना० पु० दसवां भाग।
दशमी० स्त्री० दसवीं तिथि।
दशरथ० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी के पिता।
दशहरा० ना० पु० ज्येष्ठ वा आश्विन शुक्लपक्ष की दसवीं तिथि।
दशा० ना० स्त्री० अवस्था, व्यवस्था, गति।
दशांश० ना० पु० दसवांभाग, ⅒।
दशांगुल० ना० पु० फलविशेष अर्थात् खरबूजा।
दश० गु० दस, १०।
दसन० ना० पु० दशन, दांत।
दसम० गु० दशम, दसवां।
दशरथ० ना० पु० दशरथ।
दसहरा० ना० पु० दसहरा।
दसी० ना० स्त्री० सूत, दशी, गाड़ी की फड़।
दसीला० गु० दुखकी दशा में रहनेहारा।
दसोखा० ना० पु० पलंका झाड़ना।
दसोद्वार० ना० पु० शरीर के दशद्वार अर्थात् आंख, कान, नाक, मुख, लिंग, गुदा, चांदि, परन्तु चांदिरहित केवल नवद्वार ठीक है।
दसौंधी० ना० पु० भाट बरदेत।
दस्यु० ना० पु० वैर, चोर।
दस्युवृत्ति० ना० स्त्री० चोरी।
दह० ना० पु० गहराव।
दहक० ना० स्त्री० दाह, चमक।
दहकना० अ० क्रि० जलना, पछिताना, सतापित होना।
दहकाना० स० क्रि० जलाना, बिगाड़ना, पश्चात्तापकराना, गर्माना।

दहन० ना० पु० अग्नि।
दहन० }
दहना० } अ० क्रि० जलना, बरना।
दहनो० }
दहलना० अ० क्रि० दबना, कांपना।
दहलाना० स० क्रि० दबाना, कम्पाना।
दहसेरा० ना० पु० दससेर का तौल।
दहा० गु० जलगया वा जलाहुआ।
दहाड़ना० अ० क्रि० गर्जना, यथा शेरकाशब्द।
दहाना० स० क्रि० जलाना।
दहिना० गु० दक्षिण, सीधा, सहायक।
दही० ना० पु० गोरस, दधि, गु० जलगई।
दहेंड़ी० ना० स्त्री० दहीकी हांडी।
दहेड़० ना० पु० पक्षी विशेष।
दहेल० ना० पु० पक्षी विशेष।
दह्यो० ना० पु० दही, स० क्रि० जलाया।
दक्ष० ना० पु० निपुण, चतुर, ब्रह्मा का पुत्र जिसको ब्रह्माने दक्षिणांगुष्ठसे उत्पन्न किया था, स्मृति विशेष।
दक्षन० ना० पु० दक्षका बहुवचन भाषा में प्रचलित है यथा देव देवन और लोक लोकन इत्यादि।
दक्षसुत० ना० पु० प्रचेता।
दक्षसुता० ना० स्त्री० दक्षकी कन्याविशेष, सती।
दक्षिण० गु० खरा, उदित, सूर्य्य का वामभाग दहिना, दखिन।
दक्षिणअक्षांश० ना० पु० रेखाभूमि के दक्षिण केन्द्रतक जो माप है।
दक्षिणकेंद्र० ना० पु० जिसके चारोंओर हिम समुद्र है वा जिसको हिन्दू शास्त्रज्ञ बड़वानल कहते हैं।
दक्षिणखण्ड० ना० पु० विन्ध्याचल के दक्षिण का देश विशेष।
दक्षिणा० ना० स्त्री० कर्म करवाने के निमित्त ब्राह्मण को दान देना, कार्य्य का वेतन।

तकुवा ठीक कराना।
तुलित० गु० तुलाहुआ, तुलापर चढ़ाया गया।
तुली० ना० स्त्री० मोटीसींक, चित्र लिखने की कलम।
तुल्य० ना० पु० समान, बराबर, सदृश।
तुल्यता० ना० स्त्री० समानता, बराबरी।
तुवर० ना० पु० तिल।
तुवरी० ना० स्त्री० फटकरी।
तुष० ना० पु० धानादि का छिलका।
तुषार० ना० पु० शीत, पाला, हिम।
तुष्ट० गु० प्रसन्न, तृप्त, सन्तोषी।
तुष्टता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, तृप्ति, सन्तोष।
तुष्टित० गु० प्रसन्नित, सन्तोषित।
तुसार० ना० पु० तुषार।
तुहिन० ना० पु० तुसार, तुषार, हिम।
तुही० सर्व्व० तुझको।
तू० सर्व्व० मध्यमपुरुष का एक वचन।
तूतांकरना० स० क्रि० तुकारना।
तूकारना० स० क्रि० अवे तवे करना।
तूठ्यो० गु० सन्तोषित।
तूण०, तूणीर० } ना० पु० बाण रखने का घर, तरकश।
तूनई० ना० स्त्री० टोंटीदार मिट्टी का बर्तन।
तूतिया० ना० पु० नीलाथोथा।
तूबरि० ना० स्त्री० तुम्बी।
तूमना०, तूसा० } स० क्रि० रुई को हाथ से बनाना।
तूर० ना० पु० तूर्य, नक्कारह।
तूरक० ना० पु० जलपिप्पल।
तूरना० स० क्रि० तोड़ना।
तूरी० ना० पु० धतूरा।
तूर्ण० ना० पु० शीघ्र, जल्द।
तूर्य० ना० पु० नक्कारह, नगाड़ा।
तूल० ना० स्त्री० निर्बीज कपास अर्थात् रुई तुल्य।
तूलनीय० ना० पु० कदम वृक्ष।
तूलिनी० ना० पु० सेमर वृक्ष।
तूवर० ना० पु० राजपूतों में जातिविशेष।
तृण० ना० पु० घास।
तृणराज० ना० पु० नारियल, उख, ताड़वृक्ष।
तृणवत्० गु० घास के समान निकम्मा।
तृणावर्त्त० ना० पु० दैत्यविशेष, बौंड़रा, घास का भंवर।
तृणोदक० ना० पु० घास पानी।
तृतीय० गु० तीसरा।
तृतीया० ना० स्त्री० तीज, तीसरीतिथि, तीसरी।
तृतीयान्त० गु० जिस के अन्त में तृतीया का चिह्न है।
तृतीयांश० ना० पु० तीसरा भाग।
तृप्त० गु० सन्तुष्ट।
तृप्ति० ना० स्त्री० भोजनादि करके सन्तोष।
तृवृता०, तृवृत्० } ना० स्त्री० निसोत।
तृषा० ना० स्त्री० प्यास।
तृषार्त्त० गु० पिपासाकरके व्याकुल।
तृषावन्त०, तृषित० } गु० पिपासाक्रान्त, प्यासा।
तृष्णा० ना० स्त्री० प्यास, लालच, अभिलाषा।
ते० अव्य० से, सर्व्व० वे, ये।
तै० सर्व्व० तू, अव्य० से।
तैंतालीस० गु० चालिस और तीन, ४३।
तैंतीस० गु० तीस और तीन, ३३।
तेंदुआ० ना० पु० चीता विशेष, वृक्षविशेष।
तेंदू० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष।
तेईस० गु० वीस और तीन, २३।
तेज० ना० पु० दमक, प्रताप, बल, अग्नि।
तेजआति० ना० पु० सूर्य, भाषा में प्रचलित है।
तेजपात० ना० पु० तजकी पत्ती।
तेजमान०, तेजवन्त० } गु० प्रतापी, चमकीला, चमत्कारी।
तेजबल० ना० पु० औषधिविशेष।
तेजवल्ली०, तेजस्विनी० } ना० स्त्री० तेजबल।

दक्षिणाग्नि० ना० पु० अग्नि विशेष।
दक्षिणायन० ना० पु० कर्कसंक्रान्ति से धनुः संक्रान्ति तक का काल।
दक्षिणीय० गु० दक्षिण देशके मनुष्यादि।
दा० अव्य० पदान्त में दाताका अर्थ सूचक यथा सुखदा अर्थात् सुखदाता।
दाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी।
दाऊ० ना० पु० बड़ा चचा, श्रीबलदेवजी का एक नाम।
दांड़० ना० पु० दण्ड, चम्पू।
दांड़ा० ना० पु० रीति, धूरा, सिवाना।
दांड़ामेंड़ा० ना० पु० सिवाना, छोर, धूरा।
दांड़ी० ना० पु० नाविक, नाव चलाने हारा, ना० स्त्री० दण्डी तुलाआदि की।
दांत० ना० पु० दन्त, दशन।
दांतन० ना० पु० दन्तधावन, काठ, दतून।
दांतपीसना० अ० क्रि० किचकिचाना।
दांताकिलकिल० ना० स्त्री० झगड़ा, बखेड़ा।
दांती० ना० स्त्री० आराके दांत।
दांव० ना० पु० घात, अवसर, होड़, बारी।
दाख० ना० पु० अंगूर, मुनक्का।
दाग़० ना० पु० चिह्न यह शब्द फारसीका है।
दाग़ना० स० क्रि० चिह्नकरना, छोड़ना, यह शब्द यामिनी भाषा का है।
दाड़िम० ना० पु० अनार।
दाढ़ी० ना० स्त्री० ठोढ़ीपरके बाल।
दातन० ना० पु० दतून।
दातव्य० गु० देनेकेयोग्य, दातापन।
दातव्यता० ना० स्त्री० दातापन, देनहारी।
दाता० गु० पु० धर्मात्मा, देनेहारा, दयालु।
दातार० गु० दाता।
दात्र० ना० पु० दरांती विशेष।
दाद० ना० पु० रोग विशेष, दद्रु।
दादमर्दन० ना० दद्रु मर्दन, औषधि विशेष।
दादा० ना० पु० पिताका पिता, बड़ा भाई।
दादी० ना० स्त्री० पिताकी माता।
दादु० ना० पु० दादरोग विशेष दद्रु।
दादुर० ना० पु० मेढक।
दादू० ना० पु० महापुरुष विशेष जिसने अपना पन्थ चलाया जो जातिका विहना था।
दाधना० स० क्रि० दग्धना।
दान० ना० पु० पुण्यार्थ धनका त्याग, भूर, खैरात।
दानपत्र० ना० पु० पुण्यार्थ धनादि का दानपत्र, माफ़ीनामा।
दानव० ना० पु० दैत्य, असुर।
दानवारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी।
दाना० ना० पु० अश्वादिके खाने का अन्न।
दानी० गु० दाता, सखी।
दाप० ना० पु० क्रोध, अभिमान।
दापक० गु० क्रोधी. अभिमानी।
दाबना० स० क्रि० दबाना।
दाम० ना० पु० रुपया, पैसा, ना० स्त्री० माला, रस्सी, गु० पैसे का चौबीसवां भाग, मोल।
दामवती० ना० स्त्री० माला।
दामासाही० ना० स्त्री० यथार्थ भाग की कर्त्तव्यता।
दामिनी० ना० स्त्री० बिजुली, कौंधा।
दामी० ना० स्त्री० यथार्थ बिहारी।
दामोदर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम, बर्द्धमान देशका एक नंद, गु० जिसके पेटतक माला हो।
दाम्भिक० गु० दम्भी, पाखण्डी, अभिमानी।
दाय० ना० पु० पैतृक धन।
दायक० ना० पु० देनेहारा।
दायजा० ना० पु० ब्याहका दान, यौतुक।
दाया० ना० स्त्री० दावा, कृपा।
दार० ना० स्त्री० दारा, काष्ठ, दारु।
दारचीनी० ना० स्त्री० काष्ठ विशेष।
दारा० ना० स्त्री० स्त्री, पत्नी, जोरू।
दारिका० ना० स्त्री० लड़की, लड़का।

तेजस्कर॰ ना॰ पु॰ वीर्य्य बढ़ानेहारा, अव्य॰ पुष्टई।

तेजस्वी॰ } गु॰ प्रतापी, दीप्तिमान्, तेज वा
तेजोमय॰ } प्रकाश से युक्त।

तेता॰ गु॰ तितना।

तेमन॰ गु॰ श्रोदा, गोलाई, व्यंजन।

तेरस॰ ना॰ स्त्री॰ त्रयोदशी।

तेरह॰ गु॰ दश और तीन, १३।

तेरुस॰ ना॰ पु॰ तीसरा वर्ष, त्योरुस।

तेल॰ ना॰ पु॰ चिकना, चिकनाहट, तिलादि का रस।

तेलिन्॰ ना॰ स्त्री॰ तेली की स्त्री।

तेलिया॰ ना॰ पु॰ तेलकासा रंगविशेष।

तेली॰ ना॰ पु॰ तेलकार जाति विशेष।

तेवर॰ ना॰ स्त्री॰ घुमनी, घुमड़ी गु॰ तीतड़ा।

तेवराना॰ अ॰ क्रि॰ घुमड़ी में होना, गिर-पड़ना।

तेवरी॰ ना॰ स्त्री॰ घुमड़ी, घुमनी दृष्टि।

तेवहार॰ ना॰ पु॰ पर्व्व, त्योहार।

तेह॰ ना॰ पु॰ क्रोध, झांझ, बहादुरी, साहस।

तेहर॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्रीके पांवका गहनाविशेष।

तेहा॰ ना॰ पु॰ तेह।

तेही॰ अव्य॰ अभी, सर्व्व, उसको।

तैतिल॰ ना॰ पु॰ करणविशेष।

तैरना॰ स॰ क्रि॰ पैरना।

तैल॰ ना॰ पु॰ तेल।

तैलकार॰ ना॰ पु॰ तेली।

तैलंग॰ ना॰ पु॰ कर्णाटक देश वा उसके वासी।

तैलंगा॰ ना॰ पु॰ तैलंगदेश के लोग, और अंगरेजों के प्यादे।

तैसा॰ गु॰ तिसके समान, अव्य॰ त्योंकर।

तो॰ अव्य॰ तब, तदा, निरसंदेह, सर्व्व, तुझ।

सों॰ अव्य॰ यांकर।

तोंद॰ ना॰ पु॰ बड़ा पेट।

तोंदी॰ ना॰ स्त्री॰ नाभि।

तोंदैल॰ } गु॰ जिसका पेट बड़ा है।
तोंदैला॰ }

तोंही॰ अव्य॰ तभी, उसी समय में।

तोकह॰ सर्व्व॰ तुझको।

तोड़॰ ना॰ पु॰ फूट, नदी की धारा का वेग, दही का पानी।

तोड़जोड़॰ ना॰ स्त्री॰ बात बनाना।

तोड़ना॰ स॰ क्रि॰ फोड़ना, रुपया भुनाना, टु कड़ा करना।

तोड़ल॰ ना॰ पु॰ कड़ा, खंगोरा हाथ के।

तोड़वाना॰ स॰ क्रि॰ फोड़वाना, टुकड़े कराना, रुपया भुनवाना वा भुनाना।

तोड़ा॰ ना॰ पु॰ चटका, सहस्र रुपयों की थैली, रंजक में आगि लगानेकीवस्तु, बरछी, गलेकी सांकर, धंधीका टुकड़ा।

तोड़ाना॰ स॰ क्रि॰ तोड़वाना।

तोतला॰ गु॰ हकला।

तोतलाना॰ अ॰ क्रि॰ हकलाना।

तोता॰ ना॰ पु॰ शुक, सुगा।

तोपना॰ स॰ क्रि॰ ढांपना, गाड़ना।

तोपाना॰ स॰ क्रि॰ गड़वाना।

तोबड़ा॰ ना॰ पु॰ थैली जिसमें घोड़े को दाना दिया जाता है।

तोमर॰ ना॰ पु॰ बाण, तीर, छन्द विशेष।

तोय॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।

तोयनिधि॰ ना॰ पु॰ समुद्र, जलधि।

तोयपिप्पली॰ ना॰ स्त्री॰ जलपीपल।

तोर॰ ना॰ पु॰ दहल विशेष, सर्व॰ तेरा।

तोरण॰ ना॰ पु॰ फूलोंकी माला जो आनंद वा त्योहारके दिन बांधते हैं।

तोरी॰ ना॰ स्त्री॰ ककरी विशेष।

तोल॰ ना॰ स्त्री॰ तौल।

तोलक॰ } ना॰ पु॰ बाट जो बारह मासे भर
तोला॰ } होताहै वा सोलह मासे भर।

तोष॰ ना॰ पु॰ हर्ष, तृप्ति, धीरज।

तोषक॰ गु॰ हर्षदाता, धीरजदाता।

दारिद० ना० पु० दरिद्र।

दारिद्री०
दारिद्री० } गु० दरिद्री।

दारिद्र० ना० पु० दरिद्रता।

दारी० ना० स्त्री० लौंडी जो लूटकरके लाई है।

दारु० ना० पु० काष्ठ, वृक्ष विशेष।

दारुक० ना० पु० श्रीकृष्णजी का रथवान।

दारुगत० गु० काष्ठान्तर, काठ के भीतर।

दारुजचित्र० ना० पु० काठकी पुतली।

दारुण० गु० भयानक, असह्य, कठिन, ना० पु० चीता औषधि।

दारुनारि० ना० स्त्री० काठकी पुतली।

दारुफल० ना० पु० चिलगोजा।

दारुमय० गु० जो काष्ठ से निर्मित।

दारुहरिद्रा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

दारू० ना० स्त्री० औषधि, मद, यह शब्द यामिनी भाषा का है।

दारूहा० ना० पु०
दारूड़ी० ना० स्त्री० } मदिरा, मद।

दारौ० ना० पु० दाड़िम, अनार, विहारीलाल सप्तशतिकायां (सुमर भलो तुव गुण गणन पचये कपट कुचाल, क्योंधौं दारो लौंहियो दरकत नाहिं नँदलाल)।

दार्ढ्य० ना० पु० दृढ़ता।

दार्वी०
दार्व्य० } ना० स्त्री० रसौत।

दार्वी० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

दाल० ना० स्त्री० चनेआदि अन्न के दो खंड।

दालिद्र० ना० पु० दरिद्र।

दालिद्री० गु० दरिद्री।

दाव० ना० पु० दाँव, घात, पेंच, होड़, कुल्हाड़ी विशेष, वन।

दावन० ना० पु० गाहन, चलावन, कुचलन।

दावना० स० क्रि० दाबना।

दावरि० ना० स्त्री० रस्सी।

दावा० ना० पु० दाई का स्वामी, दवा।

दावाग्नि०
दावानल० } ना० पु० वन में उपजे के जो अग्नि वनको जलावे, वनकी आग।

दाशरथि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रादि।

दास० ना० पु० भृत्य, सेवक, नौकर।

दासता० ना० स्त्री० लौंडीपना, सेवकाई।

दासा० ना० पु० हथुआ, कड़ी के नीचेका आड़ जो भीतपर रखते हैं।

दासी० ना० स्त्री० चेली, लौंडी, सेवकिन।

दास्य० ना० पु० दासता।

दाह० ना० स्त्री० जलन, दहक।

दाहक० गु० जलानेवाला, ना० पु० अग्नि।

दाहना० स० क्रि० जलाना।

दाहिना० गु० दक्षिण, सीधा, सहायक।

दाक्षायणी० ना० स्त्री० देवी विशेष।

दाक्षिक० ना० पु० सिंघाड़ा।

दिक्० ना० पु० दिग्, दिशा, ओर, तरफ।

दिक्पाल० ना० पु० दिग्पाल, दिशा मालिक।

दिखलाना० स० क्रि० दिखाना।

दिखाई० ना० स्त्री० सुझाई, लखाई।

दिखाऊ० गु० सुन्दर, दिखनौट, सजीला।

दिखाना० स० क्रि० सुझाना, लखाना, बताना।

दिखाव० ना० पु० भड़काव, टीमटाम, दृश्य।

दिग्० ना० स्त्री० दिशा, ओर, तरफ।

दिग्वान्०
दिग्वार० } ना० पु० रखवारा, पहरू।

दिग्शूल० ना० पु० दिशाशूल, किसी दिशा जाने के लिये बुरादिन, यथा सोमवार शनिश्चर पूर्व को, बृहस्पति दक्षिण को, शुक्र रवि पश्चिम को, मंगल बुध उत्तर को।

दिगम्बर० गु० वस्त्र हीन, नग्न, परमहंस।

दिगीश० ना० पु० इन्द्रादि।

दिग्गज० ना० पु० एक दिशाका रक्षक हाथी।

दिग्गी० ना० स्त्री० बड़ा पोखरा।

दिग्पाल० ना० पु० इन्द्रादिदश १०।

दिग्भाग० ना० पु० दिशाका भाग, देश।

ग्विजय० ना० स्त्री० सब देशोंका जीतना।
ग्विजयी० ना० पु० जो सब दिशाओं को जीते।
ग्विभाग० ना० पु० दिग्भाग, देश।
ठौना० ना० पु० चश्मा, उपनेत्र, ऐनक।
एड० ना० पु० नृत्य विशेष।
ति० ना० स्त्री० दैत्यमाता, कश्यप की स्त्री।
तिसुत० ना० पु० असुर, दैत्यहिरण्याक्षादि।
न० ना० पु० सूर्य्योदयसे सूर्य्यास्त तक का काल, रोज।
नकर० ना० पु० सूर्य्य।
नदानि० गु० बड़ा दाता, दीनप्रतिपालक।
नपति० ना० पु० सूर्य्य।
नप्रति० अव्य० प्रतिवासर, हररोज।
नमणि० ना० पु० सूर्य्य।
नमान० ना० पु० दिनका परिमाण।
नाई० ना० स्त्री० दाद, सेंहुआ।
नामार० ना० पु० डेन्मार्क देश के लोग।
नौ० गु० बहुत दिनका, पुराना।
नेश० ना० पु० सूर्य्य।
नैला० गु० दिनी, पुराना।
या० ना० पु० दीपक, चिराग।
यासलाई० ना० स्त्री० दिया जलाने के लिये वस्तु विशेष।
लवाना० स० क्रि० देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया, दिलाना।
लवाली० ना० पु० दिल्लीके वासी।
लवैया० ना० पु० दिलवानेहार।
लाना० स० क्रि० दिलवाना।
लीप० ना० पु० राजा विशेष।
ल्ली० ना० पु० नगर विशेष जो भूतकाल में भरतखण्डकी राजधानी था।
वः ना० पु० स्वर्ग, आकाश।
वस्पति० ना० पु० स्वर्गका राजा, इन्द्र।
वस० ना० पु० वासर, दिन।
वह० ना० पु० मृत्युपवन।

दिवा० ना० पु० दिन।
दिवाकर० ना० पु० सूर्य्य।
दिवान्ध० ना० पु० जो दिनमें नहीं देखसका यथा उलूक, चमगीदड़ आदि।
दिवाला० ना० पु० ऋणभरने में असमर्थ।
दिवारी० } ना० स्त्री० कार्तिक मासकी अमावस का त्योहार, दीपमालिका।
दिवाली० }
दिविषद्० ना० पु० देवता।
दिवेश० ना० पु० इन्द्र।
दिवौकस० ना० पु० देवता।
दिव्य० गु० शपथ, स्वच्छ, उज्ज्वल, ना० स्त्री० सौंग।
दिव्यलना० ना० स्त्री० अप्सरा।
दिव्यदृष्टि० ना० स्त्री० उज्ज्वल दृष्टि अलौकिक ज्ञान।
दिव्यवसन० } ना० पु० उज्ज्वलवस्त्र, स्वच्छ कपड़े, साफ पोशाक।
दिव्यवस्त्र० }
दिव्यस्थान० ना० पु० उज्ज्वल मकान, पवित्र स्थान।
दिव्यज्ञान० ना० पु० उज्ज्वल ज्ञान, अलौकिक ज्ञान।
दिश० } ना० स्त्री० पूर्वादिदश, ओर, तरफ।
दिशा० }
दिशाशूल० ना० पु० दिग्शूल।
दिशि० ना० स्त्री० दिशा।
दिशिनाथ० ना० पु० दिशापाल।
दिशिप० } ना० पु० दिग्पाल।
दिशिपाल० }
दिष्ट० ना० पु० भाग्य, प्रारब्ध।
दिसावर० ना० पु० देसान्तर।
दिहरा० ना० पु० देवालय।
दिहली० ना० स्त्री० ड्योढ़ी, चौखट, देहली।
दीखना० अ० क्रि० दिखाईदेना।
दीठा० गु० देखने हारा।
दीठ० } ना० स्त्री० दृष्टि दर्शन।
दीठि० }

धनिष्ठा० ना० स्त्री० तेईसवां नक्षत्र।

धनी० गु० लक्ष्मीवान्, मालदार, ना० पु० मालिक, स्वामी।

धनुः० ना० पु० धनुष और नवीं राशि, चारि हाथका प्रमाण, भिलावा।

धनुपट० ना० पु० चिरौंजी।

धनुर्द्धर० ना० पु० जिस मनुष्य के पास धनुष रहताहो, विशेष अर्जुन।

धनुर्विद्या० ना० स्त्री० युद्धविद्या और बाण ज्ञान, तीरन्दाजी।

धनुष० ना० पु० कमान, कमठा।

धनुषाकृति०
धनुषाकार० } ना० पु० धनुष के डौल।

धनुषी० } ना० स्त्री० छोटा धनुष, धनु की
धनुही० } कमठी।

धनेश० ना० पु० पक्षी विशेष, कुबेर गु० धनवान्।

धन्य० गु० प्रशंसाके योग्य, गुणी।

धन्ययासक० ना० पु० जवासा।

धन्यवाद० ना० पु० स्तुति, कृतज्ञता, गुण मानना।

धन्यवादी० गु० कृतज्ञ, स्तुत, गुणगायक।

धन्या० ना० स्त्री० नदी विशेष।

धन्याक० ना० पु० धनिया।

धन्वन्तरि० ना० पु० वैद्यविशेष, जो स्वर्ग वासियों के वैद्य हैं।

धन्वायास० ना० स्त्री० जवासा।

धन्वी० गु० धनुर्द्धर।

धप० } ना० पु० चपेटा, थप्पड़, धक्का।
धप्पा० }

धब्बा० ना० पु० कपड़े में जो लीस, कपड़े का दाग।

धमक० ना० स्त्री० भयका सूचक शब्द, पैरों का शब्द विशेष।

धमकना० अ० क्रि० टीसना, धड़कना, जगमगाना, स० क्रि० पटकना।

धमका० ना० पु० कड़ीधूप, सांस, भारी वस्तु के गिरने का शब्द।

धमकाना० स० क्रि० भिड़कना, डांटना।

धमकाहट० } ना० स्त्री० घुड़की, डाट।
धमकी० }

धमधूसड़० गु० मोटा, स्थूल।

धमन० ना० पु० नड़कुल।

धमनी० ना० स्त्री० नाड़ी, नली।

धमाका० ना० पु० तोप विशेष जो हाथी पर रखते हैं भारी वस्तु गिरनेका शब्द।

धमाचौकड़ी० ना० स्त्री० रौला, बखेड़ा।

धमाधम० ना० पु० पांवपीटनेका शब्द, लगातार पीटना।

धमार० } ना० पु० तालविशेष या गीतविशेष।
धमाल० } जो होली में गाते हैं।

धमिना० ना० पु० सांप विशेष।

धमोका० ना० पु० खंजरी विशेष।

धम्मिल्ल० ना० पु० केशपाश, वेणी।

धर० ना० स्त्री० धरती, ना० पु० धड़।

धरक० ना० स्त्री० धड़क।

धरका० ना० पु० धड़का।

धरणि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन।
धरणी० }

धरणीधर० ना० पु० शेषादि, सांप।

धरती० ना० स्त्री० पृथ्वी, जमीन।

धरधरा० ना० पु० धड़का।

धरन० ना० स्त्री० कड़ी।

धरना० स० क्रि० रखना, सौंपना, पकड़लेना ना० पु० किसी के द्वारपर अड़ना।

धरनी० ना० स्त्री० धरणी, धरन।

धरनैत० ना० पु० धरना, देनेवाला।

धरपना० स० क्रि० दबाना, डपटना, झपटना।

धररुह०ना०पु०वृक्ष, पौधामात्र,जो पृथ्वीपर उगे।

धरषना० स० क्रि० घिसना, रगड़ना।

धरहर० ना० स्त्री० सहाय, मदद, सहजराम

दीधिति० ना० स्त्री० किरण।
दीन० गु० कंगाल, अधीन, दुखी।
दीनता० } ना० स्त्री० दरिद्रता, अधीनता,
दीनताई० } ग़रीबी।
दीनदयालु० गु० दीनप्रतिपालक, ग़रीबपरवर, दीनोंपर दया करनेहारा।
दीनपाल० } गु० दीनदयालु, दीनों का
दीनप्रतिपालक० } पालने हारा।
दीनबन्धु० }
दीना० स० क्रि० देना, दीनमहा।
दीनानाथ० गु० दीनपाल, दीनदयालु।
दीप० ना० पु० दिया, चिराग, द्वीप।
दीपक० ना० पु० दीप, दिया, राग विशेष, अजवाइन।
दीपदान० ना० पु० दिया जलाना।
दीपनी० ना० स्त्री० वटपत्री।
दीपनीया० } ना० स्त्री० अजवाइन।
दीप्य० }
दीपमाला० } ना० स्त्री० दिवाली।
दीपमालिका० }
दीपसुत० ना० पु० काजल।
दीपि० स० क्रि० दीप देकर।
दीपिका० ना० स्त्री० दीपकका प्रकाश।
दीपित० गु० दीपदिया गया।
दीप्त० गु० प्रज्वलित, प्रकाशित।
दीप्ति० ना० स्त्री० चमक, प्रकाश।
दीर्घ० गु० लम्बा, गुरु, द्विमात्रिक अक्षर।
दीर्घक० ना० पु० श्वेतजीरा, सफेदजीरा।
दीर्घकीलक० ना० पु० अंकोल।
दीर्घजंघ० ना० पु० ऊंट।
दीर्घजिह्वा० ना० स्त्री० राजा विरोचन की कन्या।
दीर्घदण्ड० ना० पु० अरण्ड, एरण्ड, रण्ड।
दीर्घदर्शी० गु० अग्रसोची, दूरअन्देशी।
दीर्घपत्रक० ना० पु० लहसुन, पुनर्नवा।
दीर्घपत्रा० ना० स्त्री० चिरपोटा।
दीर्घपुष्पक० ना० पु० मदार, आक।
दीर्घपृष्ठ० ना० पु० सांप।
दीर्घमूल० ना० पु० जवासा, शालपर्णी।
दीर्घमूलक० ना० पु० विधारा।
दीर्घसूत्री० ना० पु० जो विलम्बसे कामकरे।
दीवट० ना० स्त्री० दीपक रखने का आधार।
दीवली० ना० स्त्री० छोटा दिया।
दीवा० ना० पु० दीपक, दिया।
दीसना० स० क्रि० देखना।
दीसा० स० क्रि० भू, देखा, देखता।
दं

दशरथहि दिग्पालन उपहार)।
दीक्षा० ना० स्त्री० मन्त्र का ग्रहण, उपदेश।
दीक्षित० गु० दीक्षा कियागया, ना० पु० ब्राह्मण जाति विशेष।
दु० गु० दो, २।
दुः अव्य० शब्दकी आदि में निषेध वा निन्दा का सूचक।
दुःकर्णी० ना० स्त्री० किरवाली।
दुःख० ना० पु० पीड़ा क्लेश, कष्ट, व्यथा।
दुःखड़ा० ना० पु० आपदा, दुर्गति।
दुःखदाई० गु० दुःखदाता।
दुःखदाता० गु० दुःख देनेहारा।
दुःखना० अ० क्रि० पीड़ा होना।
दुःखाना० स० क्रि० दुःख देना।
दुःखित० }
दुःखिया० }
दुःखियारा० } गु० पीड़ित, क्लेशित, अभागा, कंगाल।
दुःखियारी० }
दुःखी० }
दुःखशील० गु० जिसका स्वभाव दुष्ट हो।
दुःप्रधर्षिणी० ना० स्त्री० श्वेत कटाई।
दुःसमय० ना० पु० विपत्तिकाल।
दुःस्पर्शा० ना० स्त्री० जवासा।
दुकर० ना० पु० दोनों हाथ।

कृत प्रह्लाद चरित्रे यथा (यदि संसार असार महँ राम नाम श्रुतिसार, रविसुत पुर धरहरकरे नरहरि नाम उदार)।

धरा० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, क्रि० भू० रक्खा, पकड़ा।

धरातल० ना० पु० पृथ्वीतल, रूप, ज़मीन।

धराधर० ना० पु० शेषादि।

धराना० अ० क्रि० अर्पी होना, स० क्रि० रखवाना; पकड़ना, लदाना।

धरासुर० ना० पु० ब्राह्मण।

धरित्री० ना० स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

धरोहर० ना० स्त्री० थाती, सौंप, अमानत।

धरौना० ना० पु० पुनर्विवाह।

धर्त्तव्य० गु० ग्राह्य।

धर्त्ता० ना० पु० ऋणी, धारधिक।

धर्तूर० ना० पु० धतूरा, जिस के फल में विष होताहै।

धर्म० ना० पु० न्याय, कीर्ति, पुण्य, व्यवहार, चाल, गुण, काम, मज़हब।

धर्मकूप० ना० पु० काशीजी में स्थान विशेष।

धर्ममूल० ना० पु० वेद शास्त्र, गुरु।

धर्मराज० ना० पु० यमराज, नीतियुत राज्य, राजा युधिष्ठिर।

धर्मशाला० ना० स्त्री० धर्म विचारने का स्थान।

धर्मशील० ना० गु० भक्तिमान्, कीर्तिमान, साधु।

धर्माधिकार० ना० पु० पुण्यकर्म की पदवी भण्डार का काम।

धर्माधिकारी० गु० जो पुण्यकर्म का सिरताज हो।

धर्मात्मा० गु० कीर्तिमान, साधु, ना० पु० ईश्वरल में जो तीसरा है उसका नाम।

धर्माध्यक्ष० गु० न्यायी, विचारकर्त्ता।

धर्मावतार० ना० पु० धर्मका अवतार।

धर्माज्ञा० ना० स्त्री० धर्मकी आज्ञा।

धर्मिष्ठ० } गु० धर्ममें जिनकी निष्ठा है, पुण्यात्।
धर्मी० }

धर्षण० ना० पु० धांसन, रगड़न।

धर्षना० स० क्रि० कोपना, रगड़ना।

धवल ना० पु० शुक्लवर्ण।

धवलाख्य० ना० पु० पिशाच।

धवलागिरि० ना० पु० पर्वत विशेष।

धसकना० अ० क्रि० गड़ना, धसजाना।

धसन० ना० पु० धसान, धसने की अवस्था।

धसना० अ० क्रि० घुसड़ना, घुसना, दिरना, पैठना।

धसान० ना० पु० दलदल, गड़न, धसन।

धसाना० स० क्रि० घुसेड़ना, घुसेड़वाना, पैठालना, पैठवाना, पिराना।

धसाव ना० पु० धसान।

धांधल० ना० पु० नटखटी, फरफन्द, झगड़ा।

धांधली० गु० झगड़ालू, नटखट।

धांगर० ना० पु० जाति विशेष।

धांयधांय० ना० स्त्री० तोपोंका शब्द धड़ाम।

धांसना० स० क्रि० खांसना, खौंखना।

धांसी० ना० स्त्री० खांसी, खौंखी।

धाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी।

धाक० ना० स्त्री० ठाट, प्रताप, कीर्ति, भयकर, ढाक।

धागा० ना० पु० सूत, डोरा।

धाता० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य।

धातु० ना० पु० तांबा आदि, वीर्य्य, क्रियावाचक शब्द मसदर।

धातुमाक्षिक० ना० पु० सोनामक्खी।

धातुसाधित० गु० जो धातु से बनायागया।

धात्वितर० गु० धातु से रहित।

धान० ना० पु० अन्न विशेष।

धाना० अ० क्रि० दौड़ना, टहलकरना, स० क्रि० पूजना, अर्चन।

धानी० ना० स्त्री० धान विशेष, धान के सदृश रंग विशेष।

दुकान० ना० पु० दोनों कान, हाट।
दुकाल० ना० पु० विपत्तिकाल, दुर्भिक्ष।
दुकूल० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष, दोनों तट।
दुख० ना० पु० दुःख।
दुखद०, दुखदा०, दुखदाई०, दुखदाता० } गु० दुःखदाई, कष्टदेनेवाला।
दुखत्रय० ना० पु० तीन दुःख अर्थात् दैविक, दैहिक, भौतिक, अथवा कफ, पित्त और बात।
दुखारी०, दुखित०, दुखिया०, दुखियारा०, दुखियारी०, दुखी० } गु० दुखिया, पीड़ित।
दुखेन० ना० पु० दुःखयुत, दुःखकरके।
दुगई० ना० स्त्री० चियारी, कैंची जो छप्पर में लगाते हैं।
दुगन०, दुगना० } गु० द्विगुण, दोहरा, दूना।
दुग्ध० ना० पु० दूध।
दुग्धिका० ना० स्त्री० दूधिया, पौधा।
दुग्धिनी० ना० स्त्री० कड़ुई तोंबी।
दुग्धी० ना० स्त्री० दूधिया पौधा, सेहुँड़।
दुचित०, दुचिता० } गु० जिसका मन दो ओर लगा हो।
दुचिताई० ना० स्त्री० चिन्ता, दुविधा, भ्रम।
दुचिता० गु० दुचित।
दुत० अव्य० दूर।
दुतकार० ना० पु० उराहना, भिड़क।
दुतकारना० स० क्रि० त्रासना, कुत्तेको डांटना।
दुतकारी० ना० स्त्री० त्रास, ताड़न।
दुताना० स० क्रि० दबाना, डांटना।
दुति० ना० स्त्री० चटक, भड़क, सुन्दरता।

दुतिवन्त०, दुतिवान्० } ना० गु० भड़कीला, चमकदार, सुन्दर, सूर्य चन्द्रादि यथार्हि, राम चन्द्रिकायां यथा (दुतिवन्तन को विपदा अति कीन्हीं, धरणी कह इन्दु बधू गहि दीन्हीं)।
दुदर्बी०, दुदी० } ना० स्त्री० औषधि पौधा विशेष।
दुधा० ना० स्त्री० दोजगह, दोप्रकार।
दुधार०, दुधारा० } गु० दूध देनेहार, दो धार की।
दुधैल० गु० दूध देनेहारी।
दुन्दुभि० ना० स्त्री० नक्कारः, निशान, दैत्य विशेष जिसको बालि ने माराथा।
दुपट्टा० ना० पु० ओढ़ने का वस्त्र विशेष।
दुपद० ना० पु० दो पांववाला अर्थात् मनुष्य।
दुपहरिया० ना० स्त्री० पुष्प विशेष।
दुबधा० ना० स्त्री० सन्देह, धबड़।
दुबला० गु० दुर्बल।
दुबलाई०, दुबलापा० } ना० स्त्री० दुर्बलता।
दुविधा० ना० स्त्री० संदेह, अपांच, शक।
दुविधि० ना० स्त्री० दोतरह, दोप्रकार।
दुमुख० ना० पु० राक्षस विशेष, दोमुखवाला।
दुभाव० ना० पु० दुबिधा।
दुभाषिया०, दुभाषी० } गु० दो भाषाओं का जाननेहारा।
दुर० अव्य० शब्द के प्रथम में संयोगिक अव्यय जिसका अर्थ कु, कठिन, ना० स्त्री० कानका भूषण जो लड़के पहिनते हैं।
दुरतिक्रम० गु० कठिन, मुश्किल।
दुरद० ना० पु० हाथी।
दुरध्वा० ना० स्त्री० कुमार्ग, बुरी राह।
दुरना० अ० क्रि० छुपना, लुकना।
दुरदृष्ट० ना० पु० मन्दभाग्य।
दुरन्त० गु० अशान्त, कठिन, अन्तहीन।
दुराचार० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है।

धानुक० ना० पु० धनुद्दार, कमानदार और जातिविशेष।
धनिय० ना० पु० धनिया।
धान्य० ना० पु० धनिया, धान, धन, माल।
धान्यक० ना० पु० धनिया।
धाप० ना० स्त्री० हाथ से दो तिहाई का माप, जहांतक मनुष्य एक सांस में दौड़सके।
धाम० ना० पु० घर, स्थान, तेज, तन, किरण, ज्योति, बैकुण्ठ, ब्रह्म।
धामा० ना० पु० बेंतका टोकरा।
धामिन्० ना० पु० सूर्य।
धाय० ना० स्त्री० धाई।
धायमारना० अ० क्रि० पुकार के रोना, दौड़के मारना।
धार० ना० स्त्री० लकीर, बहाव, अस्त्र की बाढ़।
धारक० ना० पु० ऋणी।
धारण० ना० पु० धारने की अवस्था, मानलेना, स० क्रि० धारना, मंजूर करना।
धारणा० स० क्रि० रखना, संभालना, धरना, ना० स्त्री० योगकर्मविशेष।
धारना० स० क्रि० धारणा।
धारस० ना० स्त्री० ढाढ़स, धीरज।
धारा० ना० स्त्री० प्रवाह, बहाव, रीति।
धारावाहिक० गु० विच्छेद बिनु।
धारि० ना० स्त्री० डाकूकी सेना।
धारित० गु० जो धारण कियागया।
धारी० ना० स्त्री० लकीर, पौधा विशेष।
धार्त्तराष्ट्र० ना० पु० कालाहंस, यथा—राजहंसास्तुतेचञ्चुचरणैर्लोहितैःसिताः। मलिनैर्मल्लिकाक्ष्यास्तेधार्त्तराष्ट्राःसितेतरैः॥ इत्यमरः धृतराष्ट्र का पुत्र सुयोधन।
धाव० ना० पु० पौधाविशेष, दौड़।
धावच्छदशः० ना० पु० दौड़नेवाला सरगारा।
धावन० ना० पु० सन्देशिया, दूत, हरकारह।
धावना० अ० क्रि० दौड़ना, फिराकरना, चढ़ना, रगड़ना, अर्चना।
धावनी० ना० स्त्री० दूती, छोटी कटाई, श्वेत।
धावमान० गु० दौड़ताभया।
धावा० ना० पु० दौड़, चढ़ाई, वृक्षविशेष।
धाह० ना० स्त्री० रुलाई, कूक।
धात्री० ना० स्त्री० धरती, सरस्वती, धाई, ना० पु० आंवला।
धिक्० अव्य० निन्दा का बोधक शब्द फिट, लानत, कुछ न भये।
धिक्कार० ना० पु० फिटकार, निन्दा, शाप, लानत।
धिक्कारना० स० क्रि० निन्दाकरना, फिटकारना, लानत करना।
धिक्कारी० गु० शापित, निन्दित, फिटकारी।
धिग्० अव्य० धिक्।
धिया० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।
धिरयो० क्रि० धमकाया, डांटा।
धिराना० स० क्रि० धमकाना, डांटना।
धिषण० ना० पु० ब्रह्मा, वृहस्पति।
धिषणा० ना० स्त्री० बुद्धि।
धी० ना० स्त्री० बुद्धि, बेटी।
धीति० ना० स्त्री० प्रतीति, विश्वास, कवियाक्यै यथा—मोहिंडारबैठायसांति तुंकितनलाहितजाय, धीतिलालतेरोकहा दविगुराय भमसाय।
धीम० ना० पु० ढील, कोमलता।
धीमर० ना० पु० कहारजातिविशेष।
धीमा० गु० ढीला, कोमल, मध्यम।
धीमाई० ना० स्त्री० ढील, धीरज, ढरनी।
धीमान्० गु० बुद्धिमान, चतुर।
धीमेधीमे० अव्य० हौलेहौले।
धीय० ना० स्त्री० बुद्धि, कन्या।
धीर० गु० ढीला, सन्तोषी, जीवटा, स्थिर, ना० पु० धीरज।
धीरज० ना० पु० धैर्य, स्थिरता, साहस, सन्तोष।

दुराचारी० गु० जिसका व्यवहार निन्दितहै।
दुरात्मा० गु० पापी, दुष्ट।
दुराधर्ष० गु० अडर, अभय, अशंक।
दुराना० स० क्रि० छुपाना, लुकाना।
दुराराध्य० गु० कष्टसे सेवने के योग्य।
दुरारोह० ना० पुं० ताड़वृक्ष।
दुरालभा० } ना० स्त्री० जवासा।
दुरालम्भा० }
दुराव० ना० पु० छुराव, छल।
दुराशा० ना० स्त्री० कुत्सितआशा, दुष्टतृष्णा।
दुरित० ना० पु० पाप दोष।
दुरी० ना० स्त्री० खेलमें दो पड़ना या दूआ।
दुरुखा० गु० जिसकी दोनो ओर एकसां होवे, यह शब्द फारसी का है।
दुरेफ० ना० पु० भौरा।
दुर्ग० ना० पु० गढ़, घाट, किलअ, अगम।
दुर्गति० ना० स्त्री० कुगति, बुरीअवस्था, नरक, दरिद्रता।
दुर्गन्ध० ना० स्त्री० } दुर्गंधि, बोय, कुवास।
दुर्गन्धि० ना० स्त्री० }
दुर्गन्धा० ना० स्त्री० पियाज, गु० कुवासित।
दुर्गम० गु० औघट, गम्भीर, अगम्य, कठिन।
दुर्गमता० ना० स्त्री० गम्भीरता, औघटता।
दुर्गा० ना० स्त्री० भगवती विशेष।
दुर्गामी० गु० कुगामी, कुमार्गी, बदचलन।
दुर्घट० गु० जो कष्ट से होसके, कुघाट, औघट।
दुर्जन० ना० पु० शत्रु, गु० दुष्ट, अपकारी।
दुर्जनता० } ना० स्त्री० शत्रुता, [illegible] दुष्टता।
दुर्जनताई० }
दुर्जय० गु० बलवान् शत्रु, जो पराभव न होसके।
दुर्दशा० ना० स्त्री० दुर्गति, विपत्ति।
दुर्नाम० ना० पु० बदनाम, अपयश।
दुर्नामी० गु० बदनाम अपयशी, अपकीर्ती।
दुर्नाद० ना० पु० राक्षस विशेष, कुत्सितनाद।

दुर्नीति० ना० स्त्री० कुचाल, अनीति, अन्याय।
दुर्बल० गु० दुर्बल, निर्बल, असमर्थ
दुर्बलता० ना० स्त्री० निर्बलता, असामर्थ्य
दुर्भगा० गु० अभागिनी स्त्री, जिसका स्वामी प्यार नहीं करता है।
दुर्भाग्य० गु० प्रारब्धहीन, अभागी।
दुर्भाव० ना० पु० बुरास्वभाव।
दुर्भिक्ष० ना० पु० अकाल, काल, कुसमय।
दुर्मति० ना० स्त्री० कुबुद्धि, मूर्खता।
दुर्मद० गु० मस्त, मदगलित मत्त, सिड़ी।
दुर्मर्ना० ना० स्त्री० दूबघास।
दुर्मुख० ना० पु० नागविशेष वानरों का एक राजा गु० कठोर भाषी।
दुर्मूल्य० गु० महँगा।
दुर्योग० ना० पु० बहुतेरे बाधकों का समूह कुसंगति।
दुर्योधन० ना० पु० राजा, कौरवाधीश।
दुर्लभ० गु० जो दुःखसे मिले, अनोखा।
दुर्लक्षण० ना० पु० अशुभ चिह्न।
दुर्वचन० ना० पु० बुरीबात, गाली।
दुर्वर्ण० ना० पु० बुरारूप, कुवर्ण, चांदी।
दुर्वर्णता० ना० स्त्री० कुरूपता, चांदी।
दुर्वाक्य० } ना० पु० बुरीबात, गाली।
दुर्वाच्य० }
दुर्वाद० ना० पु० कुत्सितवार्ता, बुरीबात।
दुर्वासा० ना० पु० मुनिविशेष।
दुर्बुद्धि० ना० स्त्री० मूर्खता, कुबुद्धि, नादानी।
दुर्बुद्धी० गु० नादान, कुबुद्धि, मूर्ख।
दुलकी० ना० स्त्री० कूकर चाल, घोड़ेकी एकप्रकारकी चाल विशेष।
दुलड़ा ना० पु० } दोलड़ा, दूगुन।
दुलड़ी० ना० स्त्री० }
दुलत्ती० ना० स्त्री० पशुका पिछले दोपैरोंकामारना।
दुलहा० ना० पु० वर, बनरा, दुलहा।
दुलहिन० ना० स्त्री० नईबहू, वधू, बना बनरी।

धीरजी० गु० दृढ़, सन्तोषी, स्थिर।
धीरता० ना० स्त्री० धैर्य्य, स्थिरता, साहस।
धीरा० गु० कोमल, सन्तोषी, साहसी, विचारशील।
धीरिया० ना० स्त्री० बेटी।
धीरी० ना० स्त्री० नेत्रकी पुतली।
धीरु० गु० दृढ़, धीरजी, बहादुर।
धीवर० ना० पु० धीमर, कैवर्त्त।
धुंगार० ना० पु० छौंकन, बघार।
धुंगारना० स० क्रि० बघारना, छौंकना।
धुंधकार० ना० पु० अंधेरा।
धुंधकारना० अ० क्रि० धुवां समेत आग का जलना।
धुंधारना० अ० क्रि० अन्धाहोना।
धुंधला० गु० अन्धा, अन्धला, ना० पु० अन्धेरा।
धुंधलाई० ना० स्त्री० अन्धेरा, धुंधलाई।
धुंधेला० गु० छली, ठग।
धुकड़ी० ना० स्त्री० छोटी थैली पैसा रखने की होती है।
धुकधुकी० ना० स्त्री० कंठका भूषणविशेष, घबराहट, सन्देह, ध्यान।
धुत्ता० ना० पु० धूर्त्तता।
धुन० ना० स्त्री० चसका, लौ, अभ्यास, परिश्रम, दहक, उमंग।
धुनकना० स० क्रि० तूमना, धुनना।
धुनना० स० क्रि० तूमना, पीटना, मारना।
धुनियां० ना० पु० पिंड्रना, तूमनेवाला।
धुन्ना० स० क्रि० धुनना।
धुमला० गु० धुन्धा, अन्धा, अंधेरा।
धुमलाई० ना० स्त्री० अंधियारा।
धुर० ना० पु० आरम्भ, अवधि, पास, बोझ।
धुरपद० ना० पु० गीतविशेष।
धुरसांझ० ना० स्त्री० गोधूली, सायंकाल।
धुरंधर० गु० धुरी धरनेवाला, ना० पु० धवनृप।
धुरवा० ना० पु० मेघ, काव्ययथा, धुंधुआरे धुरवा चहुं पासा, समुझि परै नहिं अवनि अकासा।
धुरव्य० ना० पु० मेघ।
धुरियाना० स० क्रि० मटियाना, धूललगाना, धूल फेंकना।
धुरी० ना० स्त्री० काष्ठ या लोहे की वस्तु जिसपर पहिया फिरता है।
धुलना० अ० क्रि० स्वच्छहोना, पाकहोना, धोजाना।
धुलवाना० स० क्रि० धुलाना।
धुलाई० ना० स्त्री० वस्त्र धोने का काम वा पैसा।
धुलाना० स० क्रि० मैल निकलाना, व वस्त्र को स्वच्छ करवाना।
धुलेंड़ी० ना० स्त्री० होलीका दूसरा दिन।
धुस्सा० ना० पु० लोई, ऊर्णवस्त्रविशेष।
धूआं० } ना० पु० धुवां, धूम।
धूवां० }
धूंवारा० ना० पु० धुआं निकलने का स्थान।
धुंधरा० ना० पु० अन्धेरा।
धूत० गु० धूर्त्त।
धूति० ना० स्त्री० ठग, छली, यथा—तुलसी रघुवर सेवकहि सके न कलियुग धूति।
धूना० ना० पु० राल।
धूनी० ना० स्त्री० धुवां, आग जो साधु लोग तापते हैं गु० स्थिर।
धूप० ना० स्त्री० घाम, सुगन्धि, द्रव्य जो पूजा में जला के चढ़ाते हैं, वृक्षविशेष वा उसका काष्ठविशेष।
धूपना० स० क्रि० राललगाना, धूपजलाना।
धूपित० गु० धूप दियागया।
धूम० ना० पु० धुवां ना० स्त्री० रौला, बखेड़ा, उत्पात, भीड़।
धूमकेतु० ना० पु० अग्नि।
धूमधाम० ना० पु० धुवांका घर, हल्ला, रौला, बनाव।

दुधाई० ना० स्त्री० ओदनेका एक विशेष।
दुलार० ना० पु० प्यार, स्नेह।
दुलारा० ना० पु० } गु० प्यारयुत, प्यारा,
दुलारी० स्त्री० } प्यारी, लाड़िल, लाड़िली
दुवार० ना० पु० द्वार।
दुविद० ना० पु० वानर विशेष।
दुबे० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष।
दुशाला० ना० पु० पाटवस्त्र विशेष।
दुष्कर० गु० जोकष्टसे कियाजाय।
दुष्कर्म्म० } ना० पु० कुकर्म, पाप।
दुष्कृत० }
दुष्कर्मी० गु० कुकर्मी, पापी।
दुष्ट० गु० बुरा, उत्पाती, नीच, कठिन।
दुष्टता० ना० स्त्री० नीचता, पाप, बुराई।
दुष्टजन्तु० ना० पु० सर्पादि, मूजी जानवर।
दुष्टा० ना० स्त्री० छिनाल, नागिन, पापिन।
दुस्तर० गु० जोतरने के योग्य न होवे, कठिन, अगम्य।
दुस्पर्शा० ना० स्त्री० छोटी कटाई।
दुसह० } गु० जो सहा न जावे, असह्य।
दुस्सह० }
दुहना० स० क्रि० दूधनिकालना, निचोड़ना।
दुहनी० ना० स्त्री० पात्र जिसमें दूधदुहते हैं।
दुहाई० ना० स्त्री० न्यायके लिये पुकार हाय हाय, शपथ, किरिया, कसम।
दुहाईतिहाई० ना० स्त्री० कईबार दुहाईकरना।
दुहाना० स० क्रि० दूध निकलवाना।
दुहार० ना० पु० दूध दोहने वाला।
दुहिता० ना० स्त्री० कन्या, पुत्री।
दुहेला० गु० कठिन, भारी।
दुआ० ना० पु० दोका अङ्क।
दूज० ना० स्त्री० द्वितीया तिथि।
दूजावर० ना० पु० जिसने दो विवाह किये।
दूजा० गु० दूसरा।
दूत० ना० पु० समाचार पहुँचानेहारा, संदेशिया, हरकारह, शैतान, पैगम्बर।
दूतता० ना० स्त्री० चालाकी, तोड़फोड़ और दूतका काम।
दूती० ना० स्त्री० कुटनी।
दूध० ना० पु० दुग्ध, गोरस, क्षीर।
दूधिया० गु० दूधकासा, ना० पु० अनेक पौधों का नाम जिनका रस दूध कासा होता है।
दूधी० गु० दूधका, दुधैला, ना० पु० आहार, मांडी, दुधिया पौधा।
दूना० गु० द्विगुण, दोहरा।
दूब० ना० स्त्री० दूर्वा, घास विशेष।
दूबर० गु० कठिन दुर्बल।
दूबिया० ना० स्त्री० तृण की हरियाई।
दूर० ना० स्त्री० अन्तर, बीच, दूर, व्यवधान, अव्य० परे।
दूरगम० ना० पु० गदहा।
दूरतर० गु० बहुत दूर।
दूरदर्शक० ना० पु० दुरबीन, यन्त्र, गु० दूरका देखने वाला, अग्रशोची।
दूरदर्शी० ना० पु० विवेकी, दूरअंदेश।
दूरदृग० ना० पु० गिद्ध।
दूरबीन० ना० स्त्री० दूरकी वस्तु देखने का यन्त्र, गु० दूरका देखने हारा शब्दफारसी का है।
दूरमूल० ना० पु० जवासा।
दूर्वा० ना० स्त्री० तृण, विशेष, दूबघास।
दूषक० गु० दोष लगानेहारा, दूषणकर्त्ता, टोकने वाला, बिटोकनेहारा।
दूषण० ना० पु० निशाचर विशेष, दोष।
दूषित० गु० दोष लगायागया, दोष युत।
दूष्य० गु० निन्दित, कुत्सित।
दूसरा० गु० दूजा, अन्य।
दृग० ना० पु० नयन, नेत्र, आंख।
दृगञ्चल० ना० पु० नयनकोर, पलककी चाल।
दृढ़० पोढ़ा, अचल, कड़ा, मजबूत।
दृढ़ता० ना० स्त्री० } पोढ़ाई, पौरुख, पायदारी।
दृढ़त्व० ना० पु० }

धूमपुष्पा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष।
धूमयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।
धूमर०
धूमरा०
धूमल०
धूमला० } गु० मटमैला, धुंमैला, धुवां का रंग।
धूमशिखा० ना० पु० अग्नि।
धूमशीर्षा० ना० स्त्री० अग्निजिह्वा विशेष।
धूमा० गु० धूमला।
धूमी० गु० उत्पाती जिसकी धूम होरही।
धूम्र० ना० पु० धुवां, ऊंट।
धूम्रपान० ना० पु० धुवां का पीना।
धूम्रपानयंत्र० ना० पु० हुक्का।
धूम्रयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।
धूम्राक्ष० ना० पु० राक्षस विशेष।
धूर० ना० स्त्री० धूल।
धूरा० ना० पु० जो रोगी के हाथ पांव, आदि में रगड़ते हैं।
धूरि० ना० स्त्री० धूलि।
धूरी० ना० स्त्री० धुरी।
धूर्त्त० गु० नटखट, शठ, ठग, ना० पु० धतूरा।
धूर्त्तता० ना० स्त्री० ठगई, शठता।
धूल०
धूलि० } ना० स्त्री० रज, रेणु, खाक।
धूसना० स० क्रि० ठांसना, भरना, दबाना।
धूसर० गु० मिट्टी लगाये हुये ना० पु० जाति विशेष।
धूसरि० ना० स्त्री० धूलि।
धूहा० ना० पु० धोखा, पक्षी आदि के डराने के लिये खेतमें गाड़ते हैं, धूदा।
धृक्०
धृग्० } अव्य० धिक्।
धृत० गु० जो धारण कियाजाय, रक्खागया।
धृतराष्ट्र० ना० पु० दुर्योधन का पिता।
धृति० ना० स्त्री० दृढ़ता कामों में धीरज।
धृष्ट० गु० विशारद, चतुर, परिपूर्ण, पण्डित, शाला।
धेंगामुष्टी० ना० स्त्री० धूसमधूसा।
धेनु० ना० स्त्री० गाय वा बछड़ासमेत गाय, दुधार गाय।
धेनुक० ना० पु० खररूपी दैत्य विशेष।
धेनमति० ना० स्त्री० गोमती नदी।
धेला० ना० पु० अधेला।
धेली० ना० स्त्री० अधेली, आधा रुपया।
धैर्य० ना० पु० धीरता, धीरज।
धैर्य्यवान्० गु० धीरजी, सन्तोषी।
धैवत० ना० पु० रागका स्वर विशेष।
धोआ० ना० पु० फलकी भेंडाली।
धोई० ना० स्त्री० भिगोई हुई दाल।
धोंवाला० ना० पु० धुवांनिकलने का मार्ग।
धोक० ना० स्त्री० देवता के आगे झुकना, आड़ तकिया।
धोकड़० गु० महाबली।
धोखा० ना० पु० भ्रम, छल, धांधल।
धोता० ना० पु० धूर्त्त, पाखण्डी।
धोती० ना० स्त्री० कटि में पहिरने का वस्त्र विशेष।
धोना० स० क्रि० पखारना, फींचना।
धोप० ना० स्त्री० खड्ग विशेष।
धोव० ना० स्त्री० पखालन, धोनेका काम।
धोबिन० ना० स्त्री० धोबीकी स्त्री।
धोबी० ना० पु० कपड़ा धोनेवाला।
धोरी० ना० स्त्री० मुख्यबैल जो गाड़ी में सब से पहिले मचाया जाता है।
धौ० ना० पु० वृक्ष विशेष।
धौं० अव्य० अथवा, वा, मानो, या।
धौंक० ना० स्त्री० हफाहट, कारा, आरा।
धौंकना० स० क्रि० धौंकनी से आगिफूंकना।
धौंकनी० ना० स्त्री० धौंकी खलैवी जिस से आगिको प्रचण्ड करते हैं, निगाली
धौंका० ना० स्त्री० धौंकनी।

दृढ़ाना० स० क्रि० पीढ़ा करना।
दृश्य० गु० जो देखने के योग्यहै, जो देखाजावे।
दृष्ट० गु० जो देखागया, प्रकट।
दृष्टिकूट० ना० पु० पहेली।
दृष्टान्त० ना० पु० उपमा, उदाहरण, मिसाल।
दृष्टि० ना० स्त्री० दर्शन, नजर, दीठि, आंख।
दृष्टिगोचर० गु० जो आंख के सामने हो।
दृषच्छेद० ना० पु० पाषाण भेद।
दृषद्गर्भ० ना० पु० पन्ना, रत्न।
देआड़ा० ना० पु० दीमकका बनायाहुआघर।
देखना० स० क्रि० लखना, दृष्टिकरना, विलोकना।
देखवैया० ना० पु० देखनेहारा।
देनलेन० ना० पु० व्यवहार।
देना० स० क्रि० देडालना, सौंपना।
देमारना० स० क्रि० पटकना, फेंकदेना।
देय० } देयमान० } गु० देनेके योग्य।
देर० } देरी० } ना० स्त्री० विलम्ब, ढील।
देव० ना० पु० देवता, मेघ, देना।
देवऋषि० ना० पु० देवर्षि, नारदमुनि।
देवक० ना० पु० देवकी का पिता, देवता, गु० देनेहारा।
देवकांडर० ना० पु० चनसुर।
देवकी० ना० स्त्री० श्रीकृष्ण की माता।
देवकुसुम० ना० स्त्री० लौंग।
देवगरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
देवगृह० ना० पु० देवालय, चौहरा।
देवठान० ना० स्त्री० देवोत्थानी कार्तिकशुदी एकादशी को ये त्योहार होताहै।
देवतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष, कार्कदेवृक्ष।
देवता० ना० पु० देव, सुर, फ़रिश्तह।
देवताएड० ना० पु० देवदाली।
देवदत्त० ना० पु० संज्ञाविशेष, गु० जो देवता का दिया हुआ है।
देवदारु० ना० पु० वृक्ष वा काठ विशेष।
देवधुनि० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
देवनागरी० ना० स्त्री० हिन्दी के यथार्थ अक्षर
देवनारि० ना० स्त्री० देवता की स्त्री।
देवपूजक० ना० पु० देवता की पूजा करनेहारा, पौत्तलिक, मूर्तिपूजक।
देवपूजा० ना० स्त्री० देवता का पूजन।
देववधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी, राजरानी, सीताजी, रामचन्द्रिकायां, देववधू जबहीं हरिल्यायो, क्यों तबहीं तजि ताहि न आयो।
देवमुनि० ना० पु० नारदजी।
देवर० ना० पु० पतिका छोटाभाई।
देवराणी० } देवरानी० } ना० स्त्री० देवर की स्त्री, देवताओं की रानी अर्थात् इन्द्राणी, रामचन्द्रिकायां। देवराजा लिये देवरानी मनोछन संयुक्त भूलोक में सोहियो।
देवरिपु० ना० पु० दैत्य, निशाचर।
देवर्षि० ना० पु० नारदमुनि।
देवृ० ना० पु० देवर।
देवल० ना० पु० मन्दिर, ठाकुरद्वारा, चौहरा, यथा, तुलसी देवल देवको लागे लाखकरोरि, काग अभागेहगिभरो महिमाभई न थोरि।
देववल्लभा० ना० स्त्री० केसर, जाफ़रान।
देववाणी० ना० स्त्री० संस्कृत।
देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष।
देवसर० ना० पु० मानसरोवर।
देवश्रेणी० ना० स्त्री० मुरहरी, देवतों का समूह।
देवस्त्री० ना० स्त्री० देवता की पत्नी।
देवस्थान० ना० पु० देवालय, देवता का घर।
देवस्व० ना० पु० देवता का धन।
देवा० ना० पु० देवता, देनेहारा।
देवांगना० ना० स्त्री० देवी, देववामा।
देवारि० ना० पु० दैत्य, निशाचर।
देवाल० ना० पु० देनेहारा।

धौंताल० गु० धनवान्, बलवान्, सूरमा, दुर्जन।
धौंताली० ना० स्त्री० धन, बल, सूरमापन, दुष्टता।
धौंन० ना० पु० चारि पंसेरी का परिमाण।
धौंस० ना० पु० दौड़, धंकी।
धौंसा० ना० पु० बड़ाडंका।
धौंसिया० ना० पु० दौड़करनेहारों का प्रधान।
धौर० ना० पु० कपोत की जाति विशेष।
धौरा० गु० धौला।
धौल० ना० स्त्री० टीप, थप्पड़।
धौलधप्पा० ना० पु० धप्पाधप्पी।
धौला० गु० श्वेत, सुफ़ेद।
धौलाई० ना० स्त्री० उज्ज्वलता, गोराई।
धौलाना० } धौलियाना० } स० क्रि० थप्पड़ मारना, मुक्तियाना।
ध्यान० ना० पु० विचार, सोच, चिन्ता।
ध्यानी० गु० विचारवान्, सोची।
ध्याना० } ध्यावना० } स० क्रि० सोचना, विचारना, मानना, भजना, गाना यशका।
ध्रुव० ना० पु० धूरी, योग राग विशेष, दैत्य विशेष, उत्तर दक्षिणकेन्द्र स्थान में प्रायस्थिर एक तारा उत्तानपादका पुत्र भक्त विशेष, गु० स्थिर, अचल, सनातन, निश्चय।
ध्रुवतारा० ना० पु० उत्तर दक्षिण केन्द्र में प्रायस्थिर एकतारा।
ध्रुवनन्दा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
ध्रुवपद० ना० पु० धुरपद गीत विशेष।
ध्रुवमत्स्ययंत्र० ना० पु० क़ुतुबनुमा।
ध्रुवा० ना० स्त्री० शालपर्णी, कील, लगाम।
ध्वंस० ना० पु० नाश।
ध्वंक्षोली० ना० स्त्री० काकोली।
ध्वज० ना० स्त्री० झण्डा, पताका, ध्वजा।
ध्वजिनी० ना० स्त्री० सेना, फ़ौज।
ध्वजा० ना० स्त्री० पताका।
ध्वनि० ना० स्त्री० शब्द, बाजेका शब्द।
ध्वनित० गु० संक्षेप से कथित।
ध्वनी० ना० स्त्री० नदी, गु० शाब्दक।
ध्वन्यात्मक० गु० शब्दविशेष, जिसमेंवर्ण विवरण हो।
ध्वस्त० गु० भ्रष्ट, खराब।
ध्वान० ना० पु० शब्द।
ध्वान्त० ना० पु० अंधियारा, काव्यंयथा, यथा ध्वान्त विध्वंस आदित्य कारी, तथा देवि विघ्नौघ शोकप्रहारी।

(न)

न० अव्य० अ० नहीं।
नक० ना० स्त्री० नाक।
नकचढ़ा० गु० क्रोधी, चिड़चिड़ा।
नकछिकनी० ना० स्त्री० पौधा विशेष।
नकटा० गु० नाक कटा।
नकड़ा० ना० पु० नाकमें रोग विशेष।
नकतोड़ा० गु० हँसोड़, धूर्त्त।
नकसीर० ना० स्त्री० नाक की शिरा।
नकार० अव्य० ना० पु० अस्वीकार।
नकारना० स० क्रि० नकार करना, मुकरना।
नकुल० ना० पु० न्यौला सांपका वैरी, सुवल पांडुका पांचवां पुत्र।
नकुआ० ना० पु० नाक, छवि।
नकेल० ना० स्त्री० काठ की वस्तु विशेष जो ऊंटकी नाकमें पहिनाते हैं।
नक्का० ना० पु० पांसे या तासका इक्का।
नक्की० ना० स्त्री० नाकसे बोलना, जूए में एक बढ़ना गण्डे से।
नक्कीमूठ० ना० स्त्री० द्यूतविशेष, जुआविशेष।
नक्कू० गु० अपयशी, बदनाम।
नक्र० ना० पु० कुम्भीर, मगर, नाका।
नख० } नखर० } ना० पु० अँगुलियों के अग्रपर का अस्थिभाग, नाखून, नह।
नखरेखा० ना० स्त्री० खसोट, बकोट।
नखियाना० स० क्रि० खसोटना, बकोटना।
नखी० गु० नखधारी, नखवाला, पशु।

देवालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का घर।
देवाला० ना० पु० दिवाला।
देवालिया० गु० जिसका दिवाला निकलगया।
देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी।
देवालेई० ना० स्त्री० देवलेन।
देवी० ना० स्त्री० देवता की स्त्री, भगवती, मुरहरी औषधि।
देवेन्द्र० ना० पु० देवाधिराज अर्थात् इन्द्र।
देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्त्तिक शुक्लपक्ष की तिथि जिस में विष्णु नींद से उठते हैं वा कार्त्तिक शुक्ल एकादशी।
देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर।
देव्याश्रय० ना० पु० देवी की सहायता।
देश० ना० पु० पृथ्वी का खण्ड विशेष, राग रागिनी विशेष, मुल्क, विलायत।
देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह।
देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली।
देशमात्र० गु० सर्वत्र, सब देश।
देशाचार० ना० पु० देशकी रीति।
देशाटन० ना० पु० देशों में फिरना।
देशाधि०, देशाधिप०, देशाधिपति० ना० पु० राजा, बादशाह।
देशाधीश०, देशाध्यक्ष० ना० पु० देशका रक्षक वा राजा।
देशान्तर० ना० पु० दूसरा देश।
देशावर० ना० पु० परदेश, अन्यदेश।
देशी० गु० जो देशका है।
देह० ना० स्त्री० तन, शरीर।
देहरा० ना० पु० धौहरा, देवालय।
देहली० ना० स्त्री० चौखट, ड्योढ़ी।
देही० गु० शरीर, ना० पु० जीव, आत्मा।
दैजा० ना० पु० कन्यादान, यौतुक।
दैत्य० ना० पु० असुर, दितिजात।

दैत्यगुरु०, दैत्यपुरोधा०, दैत्यपुरोहित०, दैत्यपूज्य०, दैत्याचार्य० ना० पु० शुक्राचार्य।
दैत्यारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी।
दैदीप्य० गु० प्रकाशित, रोशन।
दैदीप्यमान० गु० प्रकाशित, चमकीला।
दैन्य० ना० पु० दीनता।
दैय० ना० पु० दैव, ईश्वर।
दैया० ना० स्त्री० माता।
दैव० ना० पु० प्रारब्ध, ब्रह्मा, दैवके आधीन।
दैवगति० ना० स्त्री० कर्मकीचाल, ब्रह्माकीगति।
दैवतामणि० महामेदा।
दैवयोग० ना० पु० कर्मप्रभाव, इत्तिफ़ाक़न।
दैवयावी० गु० आलसी, भाग्याधीन।
दैवज्ञ० ना० पु० गणक, ज्योतिषी।
दैवात्०, दैवी० अव्य० अकस्मात्, नागहान।
दैविक० गु० जो देवता करके होवे।
दो० गु० दूसरी संख्या २।
दोऊ० गु० दोनों।
दोक० ना० पु० बछेड़ा, दोवर्षका घोड़ा।
दोचर० गु० दुहरा, दूसरा।
दोजीया० ना० स्त्री० गर्भिणी।
दोझा० ना० पु० द्विजपर।
दोदना० स० क्रि० मुकरना।
दोना० ना० पु० दौना, पत्तों का पात्र, पुष्प विशेष।
दोनाली० ना० स्त्री० बन्दूक दोनालकी।
दोपर० गु० दोनेर, दुहरा।
दोमुहा० ना० पु० दो मुखका सांप।
दोय० गु० दो २।
दोल० ना० पु० डोल।
दोष० ना० पु० निन्दा, अवगुण, चूक, अपराध,

नग० ना० पु० अंगूठी का पाषाणविशेष, मणि, पर्वत, वृक्ष, धाम।
नगचाई० ना० स्त्री० अवाई।
नगचाना० अ० क्रि० पास आना।
नगचाहट० ना० स्त्री० नगचाई।
नगदौना० ना० पु० पौधा विशेष।
नगन० ना० पु० हाथी, गु० नग्न।
नगभिद्मक० ना० पु० पाषाण भेद।
नगर० ना० पु० शहर, पुरी, ग्राम।
नगरकोट० ना० पु० कोटकांगड़ा।
नगरनारी० ना० स्त्री० गणिका, वेश्या।
नगरवर्त्ती० ना० पु० नगरवासी।
नगरवासी० गु० पुरी वा शहरका वासी।
नगरी० ना० स्त्री० छोटानगर, बस्ती।
नगा० ना० स्त्री० नारी, स्त्री।
नग्न०, नंगा०, नंगा० } गु० दिगम्बर, वस्त्रहीन।
नंगी० ना० स्त्री० नग्न स्त्री।
नचवाना० स० क्रि० नचाना, नाचकराना।
नचवैया० ना० पु० नाचने हारा।
नचाना० स० क्रि० नाचकराना।
नट० ना० पु० डीठबन्दी वा नाचनेहारोंकी जाति विशेष, कौतुकी, स्वांगी।
नटखट० गु० धूर्त, कपटी, छली, फरफन्दिया।
नटखटी० ना० स्त्री० धूर्तता, कपट, छल, फरफन्द।
नटत० क्रि० अस्वीकार करता है, नाचता है।
नटना० अ० क्रि० नमानना, अस्वीकारकरना।
नटनागर० ना० पु० चतुर नट, डीठबन्द, टोनहा।
नटभूषण० ना० पु० हरताल, नटकाभूषण।
नटवर०, नटवा० } ना० पु० डीठबन्द, टोनहा।
नटसाल० ना० पु० टूटाकांटा।
नटिन०, नटिनी० } ना० स्त्री० नटकी स्त्री।
नटी० ना० स्त्री० वेश्या, नाचनेहारी।
नटुआ०, नटुवा० } ना० पु० नटवा।
नठना० अ० क्रि० नशना, बिगड़ना, स० क्रि० नाशना, बिगाड़ना।
नत० गु० नम्र, ना० पु० तगर, औषधि, अव्य० नतरु, नहीं तो।
नतरु० अव्य० नहीं तो।
नतांगी० ना० स्त्री० ककरासिंगी।
नति० ना० स्त्री० प्रणाम, नमस्कार।
नतिनी० ना० स्त्री० नातिन, दौहित्री।
नतैत० ना० पु० नातेदार, सम्बन्धी, गोतैत।
नथ० ना० स्त्री० नाकमें का गहनाविशेष, नथुनी।
नथना० अ० क्रि० छिदना, फसना, ना० पु० नथुना।
नथनी० ना० स्त्री० नाथने का अस्त्र विशेष, नथुनी।
नथी० गु० छिदी, फँसी।
नथुआ० ना० पु० छिदुआ।
नथुई० ना० स्त्री० छिदुई।
नथुना० ना० पु० नाकका मार्ग।
नद० ना० पु० ब्रह्मपुत्रादि जलप्रवाह विशेष।
नदिया० ना० स्त्री० छोटी नदी, ना० पु० नगर विशेष।
नदी० ना० स्त्री० जो जलकी धारा पर्वतादि से निकलकर देशान्तरों में होकर समुद्र में जावै जैसे गंगा और सिन्धु आदि।
नदीकान्ता० ना० स्त्री० काकजंघा बूटी।
नदोला० ना० पु० नांद।
ननद०, ननदिया० } ना० स्त्री० ननदी, पतिकीबहिन।
ननदी० ना० स्त्री० पतिकी बहिन।
ननिहाल० ना० पु० नानाकाघर वा घराना।

काम क्रोधादि, कलंक।
दोषक० गु० निन्दक, अपगुणी, पापी।
दोषना० स० क्रि० दोषदेना वा दोषलगाना।
दोषित० } गु० कलंकित, पापी, अपयशी, अ-
दोषी० } पराधी।
दोहत्तड़ ना० पु० दोनों हाथोंका देमारना।
दोहता० ना० पु० नाती।
दोहती० ना० स्त्री० नातिनी, नातिन।
दोहद० ना० पु० स्नेह, प्रीति, हित, गर्भ।
दोहन० ना० पु० रसका खींचना।
दोहन० } स० क्रि० दूहना, गारना।
दोहना० }
दोहनी० ना० स्त्री० दूहने का पात्र।
दोहरा० गु० द्विगुण, दोलड़।
दोहराव० ना० पु० दोहराने का काम।
दोहा० ना० पु० छन्द विशेष।
दोहाई० ना० स्त्री० दुहाई।
दोहान० ना० पु० दो वर्ष का गौका बच्चा, खेला।
दौड़० ना० स्त्री० बहुत शीघ्र चलने की चाल, धावा।
दौड़धूप० ना० स्त्री० जतन, परिश्रम।
दौड़ना० अ० क्रि० बहुत शीघ्रचलना, धावा।
दौड़ाक० ना० पु० दौड़नेहारा।
दौड़ादौड़ी० ना० स्त्री० वेगावेगी।
दौड़ाना० स० क्रि० शीघ्र चलाना।
दौड़ाहा० ना० पु० संदेशिया, अगुआ।
दौहित्र० ना० पु० नाती, नवासा।
दौहित्री० ना० स्त्री० नातिनी, नवासा।
द्युमणि० ना० पु० सूर्य।
द्यूत० ना० पु० जूआ, जूप।
द्यौरानी० ना० स्त्री० देवरकी स्त्री।
द्रम्म० ना० पु० १६ पणका।
द्रव० गु० बहता हुआ, घुला।
द्रविड़० ना० पु० देश विशेष।
द्रवित० गु० बहताहुआ, कृपायुत, नमतामय।
द्रवौ० } अ० क्रि० दया करो।
द्रवहु० }
द्रव्यजन्यभाव० गु० वस्तु और वस्तु रचित पदार्थका सम्बन्ध।
द्रष्टा० ना० पु० देखनेवाला।
द्रावक गु० घुलावन हारा, कृपालु।
द्रावन० ना० पु० निर्मली।
द्राविड़० ना० पु० कपूर, द्रविड़ देशका ब्राह्मण वा लोग।
द्राविड़ी० ना० स्त्री० छोटी इलायची, द्राविड़ देशकी भाषा वा वासी वा वस्तु।
द्रावी० ना० पु० सुहागा।
द्राक्षा० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
द्रुत० ना० पु० जल्द, शीघ्र।
द्रुपद० ना० पु० राजा विशेष।
द्रुपदी० ना० स्त्री० द्रौपदी, पाण्डवोंकी स्त्री।
द्रुम० ना० पु० वृक्ष, पेड़।
द्रुमलिक० ना० पु० राक्षस विशेष।
द्रुहिण० ना० पु० ब्रह्मा।
द्रोण० ना० पु० कालाकाग, वारिज, पर्वतविशेष, द्रोणाचार्य्य।
द्रोणपुष्पी० ना० स्त्री० गूमा, पौधा।
द्रोणाचार्य्य० ना० पु० कौरव और पाण्डवोंका गुरु।
द्रौपदी० ना० स्त्री० पाण्डवोंकीस्त्री, द्रुपदकन्या।
द्रोह० ना० पु० बैर, शत्रुता, अदावत।
द्रोहिया० } ना० पु० शत्रु, बैरी, मुद्दई।
द्रोही० }
द्वन्द्व० ना० पु० युगल, जोड़ा, रागद्वेषादि, कलह, दुःस्वभाव।
द्वादश० गु० बारह १२।
द्वादशउपवन० ना० पु० बारह उपवन अर्थात् शान्तनुकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर, बरसाना, संकेत, नन्दघाट, चीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगांव, गोकुल, चन्दनवन, १२।
द्वादशभानु० ना० पु० बारह सूर्यनाम।

नन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के कथित पिता, वेटा, नौं ६।

नन्दन० ना० पु० देव उपवन, देववन, चन्दन, लड़का, गु० आनन्ददाता।

नन्दलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

नन्दिग्राम० ना० पु० बस्तीविशेष, जहां भरत जी तपस्या करते थे।

नन्दिनी० ना० स्त्री० पार्वती, पुत्री, पत्नी की बहिन, प्रियंगु, सोंठि, हर्र।

नन्दी० ना० पु० शिवजी का वाहन।

नन्दीगण० ना० पु० शिवजी का गण।

नन्दीघोष० ना० पु० रथ जो, अग्निदेवने अर्जुन को दियाथा।

नन्दोई० ना० पु० पतिकी बहिन का स्वामी, ननद का पति।

नन्दोला० ना० पु० नांद।

नन्दोसी० ना० पु० नन्दोई।

नन्हा० गु० छोटा, लघु।

नपुंसक० ना० पु० क्लीव, हीजड़ा, मोर।

नपुंसकलिंग० ना० पु० तीसरालिंग।

नभः० ना० पु० आकाश, आश्रय और श्रावण मास।

नभग० गु० पक्षी, नक्षत्र, ग्रह, देवता।

नभगनाथ० ना० पु० गरुड, चन्द्रमा।

नभगामी० गु० पक्षीआदि, नभग।

नभगेश० ना० पु० नभगनाथ, गरुड, चन्द्रमा।

नभश्चर० ना० पु० आकाश में उड़ने हारे, यथा पक्षी, तारागण, ग्रह, देवता।

नभस्य० ना० पु० भाद्रपद।

नभस्वत० ना० पु० पवन, वायु।

नमः० ना० पु० नमस्कार, त्याग।

नमत० गु० प्रणाम करते।

नमन० गु० सदृश, समान।

नमस्कार० ना० पु० प्रणाम, सन्मान का बोधक।

नमस्कारी० ना० पु० लजालू।

नमस्य० गु० नमस्कार के योग्य।

नमामि० क्रि० नमस्कार करता हूं।

नमित० गु० नीचे शिर किये, शिरझुकाये नमस्कार करते।

नमो० ना० पु० नमस्कार वा प्रणाम करता हूं, दोहा, नमोनमो शुकदेवजी करौंप्रणाम अनन्त। तुव प्रसाद स्वरभेद को, चरणदास वरनन्त ॥ इतिस्वरोदये।

नम्र० गु० विनयी, मिलनसार, आधीन, नर्म।

नम्रता० ना० स्त्री० आधीनता, विनय, नर्मी।

नय० ना० पु० नीति, कानून।

नयन० ना० पु० नेत्र, आंख।

नयनअमिय० ना० पु० नेत्रोंका अमृत, यथा, श्रीगुरुपदरजमंजुलअंजन। नयनअमियदृगदोषविभंजन। इतिरामायणे।

नया० गु० नवीन, ताजा।

नर० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, पुंस।

नरक० ना० पु० पापों के भोग फल का स्थान, दैत्य विशेष जिसे भौमासुर भी कहते हैं।

नरकट० ना० पु० सरकण्डा, तृणविशेष, जिस की चटाई बनती है।

नरकसी० ना० स्त्री० हलक, गला।

नरकुल० ना० पु० नरकट।

नरपति० ना० पु० मनुष्यों का रक्षक, राजा।

नरपुर० ना० पु० मर्त्यलोक।

नरवाहन०
नरयानी० } ना० पु० कुवेर, यक्षराज।

नरसिंगा० ना० पु० बाजा विशेष, तुरही।

नरसिंगिया० ना० पु० नरसिंगाबजानेहारा।

नरसिंह० ना० पु० विष्णुका चौथाअवतार।

नरसों० अव्य० बीताहुआ चौथादिन, चौथादिन आनेवाला।

नरहड्ड० ना० पु० पिण्डली की हड्डी।

नरहरि० ना० पु० नरसिंहजी, कवि विशेष।

नरहरिदास० ना० पु० गोसाईं, तुलसीदास के सद्गुरु।

अर्थात् विष्णु, शक्र, अर्यमा, धाता, पूषण, त्वष्टा, विवस्वान, सविता, भग, वरुण, अंशुमान, तेजश्चंति।
द्वादशभानुकला० ना० स्त्री० बारह सूर्य की कला अर्थात् तपिनि, तापिनी, धूम्र, मरीची, ज्वलिनी, रुचि, रुचिनिभ, भोगदा, विश्वाबोधिनी, धारिणी, क्षमा।
द्वादशवन० ना० पु० बारहवन ब्रजके अर्थात् मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, बेलवन, भाण्डीर।
द्वापर० ना० पु० तीसरायुग जो ८६४००० वर्ष का होता है।
द्वार० ना० पु० घरकामुख, दरवाजा।
द्वारपाल० } गु० ड्योढीवान, द्वारकारक।
द्वारपालक० }
द्वारा० अव्य० कारण से वसीला, मारफत।
द्वारावती० ना० स्त्री० द्वारिका।
द्वारिका० ना० स्त्री० नगर प्रसिद्ध जो गुजरात में है।
द्वारिकाधीश० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
द्वारिकानाथ० }
द्वारी० ना० पु० द्वारपाल।
द्विगुण० गु० दूना, दोहरा।
द्विज० ना० पु० पक्षी, दांत, ब्राह्मण, नक्षत्र, कौआ।
द्विजदोष० ना० पु० ब्रह्महत्या।
द्विजनायक० ना० पु० ब्राह्मण। गरुड़, चन्द्रमा, सिंह।
द्विजन्मा० ना० पु० ब्राह्मण।
द्विजपति० ना० पु० द्विजनायक।
द्विजपत्नी० ना० स्त्री० ब्राह्मणी।
द्विजप्रिया० ना० स्त्री० सोमवल्ली, ब्राह्मणी।
द्विजराज० ना० पु० द्विजनायक।
द्विजा० ना० स्त्री० छोटी इलायची।
द्विजांगिका० ना० स्त्री० कुटकी।
द्विजाति० ना० पु० द्विज, ब्राह्मण।
द्वितीय० गु० दूसरा।
द्वितीया० ना० स्त्री० दूज, दूसरीतिथि, दूसरी।
द्वितीयान्त० गु० जिसके अन्त में द्वितीयाका प्रत्यय होवे।
द्वित्व० अव्य० दोहरा करना।
द्विधा० अव्य० दोप्रकार।
द्विपद० ना० पु० मनुष्य।
द्विरसन० ना० पु० सांप।
द्विरागमन० ना० पु० गौना, चलौआ।
द्विरुक्ति० ना० स्त्री० पुनरुक्ति, फेरफेरकहना।
द्विरेफ० ना० पु० भौंरा।
द्विवचन० ना० पु० द्वित्व संख्यायुक्त, जोशब्द, जिसका भाषा में प्रयोग नहीं है।
द्विविद० ना० पु० वानर विशेष।
द्विषट्० गु० द्वादश वा बारह।
द्विस्वभाव० ना० पु० दुबिधा।
द्वित्रिंशल्लक्षण० ना० पु० बत्तीस लक्षण अर्थात् सुकृत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुध्यात्मा, अभ्यास, वरविद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्रीत्याग, पूर्णता, लोकेश, दास विभाग, पुण्यविद्या, प्रियवाद, सत्संग, अकाम गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, देवपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धीरज ३२।
द्वीप० ना० पु० टापू पृथ्वी का खण्ड जो जलसे घिराहुआ है, पृथ्वी के सप्तखण्डों में से एक।
द्वीपवती० ना० स्त्री० नदी।
द्वीपशत्रु० ना० पु० छतावर, सतावर।
द्वीपसम्भवा० ना० स्त्री० पिण्ड खजूर।
द्वीपिका० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।
द्वीपी० ना० पु० सिंह, शेर।
द्वेष० ना० पु० बैर, द्रोह, हिंसा, ईर्षा।
द्वेषी० ना० पु० शत्रु, बैर, हिंसक।
द्वै० गु० दो, २।

नरान्तक० ना० पु० नरोंकाकाल, दैत्यविशेष।
नरिया० ना० स्त्री० छोटी नाली, खपरा।
नरी० ना० स्त्री० चर्म विशेष लोहे का यंत्र विशेष, जिसमें बीने का सूत रखते हैं।
नरूख० गु० पुल्लिंग।
नरेट० ना० पु०
नरेटा० ना० पु० } खांसी, नली, नटई
नरेटी० ना० स्त्री०
नरेन्द्र० } ना० पु० राजा, बहुतदेश का अ-
नरेश० } तिपालक।
नरोत्तम० गु० श्रेष्ठमनुष्य ना० पु० श्रीकृष्णजी।
नर्त्तक० ना० पु० नाचनेहारा।
नर्त्तकी० ना० स्त्री० नीच, नाचनेवाली।
नर्त्तन० ना० पु० नाच, नृत्य।
नर्मदा० ना० स्त्री० नदी विशेष।
नल० ना० पु० मुख्य वानर, मुख्यराजा, कुबेर का पुत्र, नड़कुल, फोफी, खोखल।
नलकूबर० ना० पु० कुबेर के बालक।
नलपुरष्टिक० ना० पु० कलिहारी।
नला० ना० पु० उदर में स्थान विशेष।
नलिका० ना० स्त्री० नली, नाड़ी।
नलिन० ना० पु० कमल।
नलिनी० ना० स्त्री० बहुत नलिनका संयोग स्थान वा कमलिनी।
नली० ना० स्त्री० नरेटी, फोफी, नाल, नरहड़ लोहे का यंत्र जिसमें सूत रखकर बिनते हैं।
नलुआ० ना० पु० भारी बांसका एक पोड़जो पत्र आदि रखने के काम आताहै।
नव० गु० गिनती विशेष, ९ नया।
नवखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ भाग अर्थात् भरतखण्ड, इलावर्त्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हिरण्य, रम्य, हरि, कुरुखण्ड।
नवजल० ना० पु० प्रथम वर्षा, नया पानी।
नवयौवना० ना० स्त्री० योवनवती।
नवद्वार० ना० पु० शरीर के नौ द्वार अर्थात् आंख २ कान २ नाक २ मुख, गुदा, लिंग।
नवधा० गु० नौप्रकार।
नवधाभक्ति० ना० स्त्री० नौ प्रकार की भक्ति अर्थात् सत्संग, हरिकथा, गुरुसेवा, हरिगुणगान, वेदपाठ, सज्जनधर्म, समभाव, लाभालाभसम, हरिशरण।
नवधाभजन० ना० पु० नौ प्रकारका भजन अर्थात् हरिगुण श्रवण, हरिगुण कीर्त्तन, हरिस्मरण, हरिपदसेवन, हरिअर्चन, हरिपदवन्दन, दास्यभाव, मित्रभाव, आत्मज्ञान ६।
नवनाड़िका० ना० स्त्री० नौश्वासा अर्थात् इड़ा, पिंगला, सुषुम्णा, पयस्विनी, कूहू, गंधारी, शंखिनी, पूषा, अलम्बुषा।
नवनि० ना० स्त्री० झुकनि, प्रणाम।
नवनिधि० ना० स्त्री० कुबेर का धन।
नवनीत० ना० पु० मक्खन, नैनू, मसका।
नववधू० ना० स्त्री० नईवधू, नई दुलहिन।
नवबाला० ना० स्त्री० नवयौवना।
नवम० गु० नवां ९।
नवमांश० ना० पु० नवांभाग।
नवमी० ना० स्त्री० नवींतिथि, नवीं।
नवरंग० ना० पु० कामदेव, नयारंग, नौरंग।
नवरत्न० ना० पु० बाहुमें पहिरने के लिये भूषण विशेष।
नवरस० ना० पु० नयारस वा नौप्रकारकारस अर्थात् शृंगाररस, वीररस, बीभत्स, शान्तरस, भद्ररस, करुणारस, अद्भुत, हास्य, भयानक ६।
नवल० गु० सुन्दर, नया, ना० पु० फेड़ापौधा।
नवला० ना० स्त्री० नवबाला, नवयौवना।
नवा० ना० गु० नया।
नवाड़ा० ना० पु० नाव विशेष।
नवाना० स० क्रि० झुकाना, झुकना, दोहरा, आधीनकराना।
नवानो० अ० क्रि० रमना, भटकना।
नवारी० ना० स्त्री० पुष्प विशेष वा उत्कृष्ट।
नवासी० गु० अस्सी और नौ ८९।

द्वैत० ना० पु० संदेह, भेद, दुगुनाहट ।
द्वैतवादी० ना० पु० भेदवादी ।
द्वैध० ना० पु० संदेह, दोखण्ड ।
द्वैधीकरण० ना० पु० छेदन ।
द्वैमातुर० ना० पु० श्रीगणेशजी ।
द्वैमधुक० ना० पु० मुलहटी ।
द्वैप० ना० पु० द्वेप ।
द्व्यर्थ० गु० जिस में दो प्रकारके अर्थहों ।
द्व्यक्षर० गु० जिस में दो अक्षरहों ।

[ध]

धंधलाना० स० क्रि० छलना, धोखादेना ।
धंधक० गु० बहुचिन्तक, धन्धेवाला, धंधक ।
धंधा० ना० पु० काम, धंधा ।
धंधार० गु० उदास, एकान्ती ।
धंधारी० ना० स्त्री० उदासी, अकेलापन ।
धंसना० अ० क्रि० धसना, गड़ना, बैठजाना ।
धकधक० ना० पु० धड़क, भयसे कलेजा कांपना ।
धक्का० ना० पु० ढकेल, झोंक, ठेला ।
धक्काधक्की० ना० स्त्री० ठेलाठेली ।
धगड़ा० } ना० पु० यार, लगुआ ।
धगड़० }
धज० ना० पु० चाल, आसन, डौल, रूप, ठाट, सामान, साजबाज ।
धजभंग० ना० पु० नपुंसक ।
धजा० ना० स्त्री० पताका, ध्वजा ।
धजीला० गु० धज से चलने वाला, सजीला ।
धज्जी० ना० स्त्री० पुराने कपड़े का टुकड़ा ।
धड़० ना० पु० देह, शिरसे नीचेका तन ।
धड़क० ना० स्त्री० फड़क, भय, धड़धड़ाहट ।
धड़कना० अ० क्रि० फड़कना, हिलना, धकधकाना ।
धड़का० ना० पु० भय, सन्देह, दुविधा, धड़क ।
धड़काना० स० क्रि० डराना, धड़धड़ाना, अ० क्रि० धड़कना ।
धड़ा० ना० पु० यथा, पक्ष, तौल, जोत ।
धड़ाका० ना० पु० धायधाय, हड़हड़ाहट शब्द होना ।
धड़ी० ना० स्त्री० लकीर, पांचसेर की तौल वा जितना एकवार तौलाजावे ।
धत० ना० पु० हाथी चलाने का शब्द ।
धतूरा० ना० पु० पौधा विशेष ।
धतूरिया० गु० छलिया, बहुरुपिया ।
धधकना० अ० क्रि० भभकना, धायँधायँ जलना ।
धन० ना० पु० द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति, लक्ष्मी, शुक्र ।
धनक० ना० स्त्री० गोटेसे बनीवस्तु जो टोपी आदि में लगाते हैं ।
धनकटी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, धान काटने का समय ।
धनञ्जय० ना० पु० अग्नि, अर्जुन, पाण्डपुत्र, पवन ।
धनन्तर० ना० पु० धन्वन्तरि ।
धनद० ना० पु० कुबेर, धनका दाता ।
धनपति० ना० पु० कुबेर, गु० धनी ।
धनवन्त० } गु० द्रव्यवान्, लक्ष्मीवान् ।
धनवान्० }
धना० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, ना० पु० मक्ष विशेष ।
धनाकुला० ना० स्त्री० रासना ।
धनाढ्य० गु० धनवान, मालदार ।
धनाध्यक्ष० ना० पु० धनका स्वामी, कुबेर ।
धनान्ध० गु० जो धनके कारण अन्धा अर्थात् अहंकारी होरहाहो ।
धनार्जन० ना० पु० द्रव्य का उपार्जन ।
धनाशा० ना० स्त्री० अर्थ की आशा ।
धनासरी० } ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।
धनासिरी० }
धनिक० ना० पु० महाजन, ऋणकादाता ।
धनिया० ना० पु० बीज विशेष, ना० स्त्री० नारि ।

नधी० ना० स्त्री० रस्सी जिससे गाय के पांव दूध दुहते समय बांधते हैं
नवीन० गु० नया, ताजा।
नवीनता० ना० स्त्री० नवापन।
नवोढ़ा० ना० स्त्री० नई स्त्री, नवयौवना।
नवोद्भिद० ना० पु० अंकुर, अंखुआ।
नव्य० गु० नया, नवीन, उपरा।
नव्वे० गु० नवदहाई ९०।
नश्वर० गु० नाशवान्, विनाशी, झूठे।
नशावा० क्रि० मिटाया, नाश दिया।
नखत० ना० पु० नक्षत्र, तारागण, तारा।
नष्ट० गु० जिसका नाश होगया, भ्रष्ट।
नष्टता० ना० स्त्री० भ्रष्टता।
नष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी।
नस० ना० स्त्री० नाड़ी, रग।
नसाना० स० क्रि० नाशकरना, बिगाड़ना।
नसी० ना० स्त्री० फालेका अग्रभाग, वा फाला जो लोहे का हल में लगता है।
नस्य० गु० सानुनासिक, हुलास, जो नासिका से सुंघते हैं।
नह० ना० पु० नख, नाखून।
नहक० गु० दुबला, पतला, सुखड़ा।
नहट्टा० ना० पु० नकोट खसोट।
नहनी० ना० स्त्री० नहर्नी, रुखानी विशेष।
नहरवा० ना० पु० रोग विशेष।
नहर्नी० ना० स्त्री० नख काटने का अस्त्र विशेष।
नहलाना० स० क्रि० स्नान कराना, नहाना।
नहान० ना० पु० स्नान।
नहाना० अ० क्रि० स्नान करना।
नहारहमुह० अव्य० बिनाखाये।
नहारु० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा।
नहियर० ना० पु० स्त्रीकी ससुराल वा मैका।
नहीं० अव्य० निषेध, न।
नक्षत्र० ना० पु० तारा, तारागण।
ना० अव्य० नहीं।
नाई० अव्य० प्रकार, सदृश, समान।
नाइन० ना० स्त्री० नाईकी जोरू।
नाई०
नाऊ० } ना० पु० नापित, जातिविशेष, क्षौरक।
नाक० ना० पु० आकाश, स्वर्ग, स्त्री, नासिका।
नाकड़ा० ना० पु० नाक में रोगविशेष।
नाकपति० ना० पु० इन्द्र।
नाकनटी० ना० स्त्री० अप्सरा, परी।
नाका० ना० पु० मार्ग वा पेड़े का अन्त, सूई का छेद, गली, नक्र, जलजन्तु विशेष।
नाकिन० ना० स्त्री० नाकको स्त्री।
नाग० ना० पु० सांप, पन्न, हाथी, दुष्टनर, सूक्ष्म वायुभेद।
नागउरग० ना० पु० सीसा, धातु।
नागकन्या० ना० स्त्री० कन्या जो पातालमें रहती है सुलोचना, मेघनादकी बीबी।
नागकेसर० ना० पु० पुष्प विशेष।
नागगर्भ० ना० पु० सिन्दूर चन्दन।
नागचाम्पेय० ना० पु० नागकेसर।
नागज० ना० पु० सिंदूर चंदन।
नागदन्ती० ना० स्त्री० इन्द्र वारुणी।
नागदमनी० ना० स्त्री० नागदौन।
नागदौन० ना० पु० पौधा, मरुआ।
नागन० ना० स्त्री० सांपिनी।
नागनी० ना० स्त्री० पान, नागकी स्त्री।
नागपंचमी० ना० स्त्री० श्रावणशुक्लपंचमी, पर्व्व विशेष।
नागपत्नी० ना० स्त्री० सांपिन, नागिन।
नागपाश०
नागपास० } ना० पु० फांसा वा बन्धन विशेष।
नागपुर० ना० पु० नगर विशेष, नागलोक।
नागफांस० ना० स्त्री० फांसी विशेष।
नागबला० ना० स्त्री० गँगरुआ।
नागवल्ली० ना० स्त्री० नागबेलि।
नागवलि० ना० स्त्री० पानआदि।
नागभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषा जो पा-

तालके रहने हारे बोलते हैं।
नागमाता॰ ना॰ स्त्री॰ कद्रू, मनसिल।
नागर॰ ना॰ पु॰ गुजराती ब्राह्मणकी जाति विशेष, नागरोत्पन्न अर्थात् चतुर, और पानी, थौरा, सोंठि।
नागरंग॰ ना॰ पु॰ नारंगी।
नागरमोथा॰ ना॰ पु॰ सुगन्धि तृण विशेष का मूल।
नागरि॰ / नागरिन॰ } ना॰ स्त्री॰ चतुर स्त्री, नागरकी स्त्री।
नागरिपु॰ ना॰ पु॰ न्योला, मोर, गरुड़, सिंह।
नागरी॰ ना॰ स्त्री॰ संस्कृत के अक्षर, चतुर स्त्री।
नागल॰ ना॰ पु॰ हल खेत जोतने का।
नागा॰ ना॰ पु॰ संन्यासी, नम्बर।
नागाह्वा॰ ना॰ स्त्री॰ नागदौन।
नागारि॰ ना॰ पु॰ नागरिपु।
नागार्जुन॰ ना॰ पु॰ सहस्रबाहु राजाविशेष।
नागिन॰ / नागिनी॰ } ना॰ स्त्री॰ सांपकी स्त्री।
नागौर॰ ना॰ पु॰ मारवाड़ देशके पासका प्रदेश।
नाघना॰ / नांघना॰ } स॰ क्रि॰ लांघना, पारजाना।
नाच॰ ना॰ पु॰ नृत्य।
नाचना॰ अ॰ क्रि॰ नाचकरना, कूदना।
नाज॰ ना॰ पु॰ अन्न, अनाज।
नाट॰ ना॰ पु॰ धामा।
नाटक॰ ना॰ पु॰ ग्रन्थविशेष।
नाटा॰ गु॰ ठिंगना, टेना।
नाटिका॰ ना॰ स्त्री॰ नाड़ी।
नाटी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी, ठिंगनी।
नाठि॰ ना॰ स्त्री॰ नाश, विनाश।
नाठी॰ गु॰ नाशगई।
नाड़॰ ना॰ स्त्री॰ ग्रीवा, नाला।
नाड़िका॰ ना॰ स्त्री॰ एकघड़ी।
नाड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ पेटमेंकी नस, रोगपरीक्षा के लिये हाथ में की एकरग, श्वासा, नस, नली।
नाड़ीतिक्त॰ ना॰ पु॰ चिरायता।
नाड़ीधम॰ ना॰ पु॰ सोनार, स्वर्णकार।
नाड़ीमण्डल॰ ना॰ पु॰ नाड़ियों का समूह।
नाड़ीज्ञान॰ ना॰ पु॰ रोगपरीक्षा, और श्वासा का ज्ञान।
नात॰ ना॰ पु॰ सम्बन्ध, रिश्तह, बिरादरी।
नातर॰ / नातरु॰ } अव्य॰ नान्यथा, नहीं तो।
नाता॰ ना॰ पु॰ सम्बन्ध।
नातिन॰ ना॰ स्त्री॰ कन्या की कन्या, बेटा की बेटी।
नाती॰ ना॰ पु॰ बेटीका पुत्र, बेटा का पुत्र, रामायणे यथा, उत्तमकुल पुलस्ति के नाती, शिवविरंचि पूजेबहुभांती।
नाथ॰ ना॰ पु॰ स्वामी, प्रभु, ना॰ स्त्री॰ बैल की नाककीरस्सी, पाव की वत्ती।
नाथना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, बैल के नाकमेंरस्सी डालना।
नाथित॰ गु॰ जो नाथागया।
नाद॰ ना॰ पु॰ शब्द, गरज, गीत, राग।
नाधना॰ स॰ क्रि॰ आरम्भ करना।
नादिया॰ ना॰ पु॰ नन्दी, पशु विशेष जो जोगियों के पास होता है।
नाधना॰ स॰ क्रि॰ जुये में लगाना, आरम्भ करना।
नाधा॰ ना॰ पु॰ तालाब, वा नदी में से पानी निकालने का गढ़ा।
नानक॰ ना॰ पु॰ सिक्खों का गुरु विशेष।
नाना॰ ना॰ पु॰ माताका पिता, गु॰ अनेक, बहुत, समूह।
नानाकार॰ गु॰ बहुत रूपके, अनेकप्रकारके।
नानाकारण॰ ना॰ पु॰ अनेकप्रकार के कारण।
नानाप्रकार॰ / नानाभांति॰ } गु॰ अनेक प्रकार।
नानारूप॰ ना॰ पु॰ अनेक रूप।

नीलरक्ष० ना० पु० नीलम।
नीललोहित० ना० पु० श्रीमहादेव जी।
नीलवर्ण० गु० श्यामरंग, आकाशी रंग।
नीला० गु० जो नीलरंग का है।
नीलाई० ना० स्त्री० श्यामता, नीलापन।
नीलाएडक० ना० पु० नीलगाव, रोझ।
नीलाथोथा० ना० पु० तूतिया।
नीलाम० ना० पु० बिक्री, बिकाव।
नीलाम्बर० ना० पु० नील वर्ण वस्त्र, और श्री-बलदेव जी।
नीलाम्ल० ना० पु० पियावांसा।
नीलोत्पल० ना० पु० नीलकमल।
नीलोपल० ना० पु० नीलम।
नीवा० ना० पु० झुलाहट, मन्दाई।
नीसारना० स० क्रि० निसारना, निकालना।
नीहार० ना० पु० शिशिर, ओस, कुहिरा।
नूत०
नूतन० } गु० नया, नवीन।
नूत्न०
नूघा० ना० पु० तमाकू विशेष।
नून० ना० पु० लोन।
नूनी० ना० स्त्री० छोटे बालक का लिंग।
नूपुर० ना० पु० स्त्रियों के पैरका गहना अर्थात् बिछुआ या नेवर या पायजेब।
नृग० ना० पु० राजा विशेष जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने सरट तनु से उद्धार किया था।
नृत्य० ना० पु० नाच नाचना।
नृत्यक०
नृत्यकारी० } पु० गु० नाचनेवाला।
नृदेघ०
नृदेवता०
नृप० } ना० पु० राजा, बादशाह।
नृपति०
नृपाल०
नृसंसी० गु० दुष्ट, कुवादी।
नृसिंह० ना० पु० चौथा विष्णु का अवतार और मनुष्यों का शिरोमणि।
नें० अव्य० सकर्मकक्रिया के भूतकाल में कर्त्ता के अन्त में यह चिह्न आता है, यथा, उस ने मारा।
नेईं० ना० स्त्री० नींव दीवारकी, भीतर की जड़।
नेई०
नेकु० } गु० तनिक, अल्प, थोड़ा।
नेग० ना० पु० विवाह में जो दान दियाजाता है अथवा जो नेगी गाऊ पाते हैं या जो पटवारी गांव में पाता है।
नेटा० ना० पु० पोंटा, रेंट।
नेठमी० गु० स्थिर, एकठामी, क़ायम।
नेतक० ना० पु० नड़कुल।
नेता० ना० पु० नींबकावृक्ष।
नेति० अव्य० नास्ति, नहीं।
नेती० ना० स्त्री० रस्सी जो मथानी में बांधते हैं सूत जो नाक में डालकर मुखमें निकालकर नाक को स्वच्छ करते हैं, उसका नाम।
नेम० ना० पु० नियम, संयम, प्रण, शौच।
नेमी० गु० संयमी, नियमी, प्रणी।
नेरे० अव्य० निकट।
नेव० ना० स्त्री० भीतिकी जड़ अव्य० नाइम।
नेवतना० स० क्रि० न्योतादेना, भोजन के लिये किसी को बुलाना।
नेवता० ना० पु० बुलाना, निमन्त्रण।
नेवताना० स० क्रि० न्योता दिलाना।
नेवर० ना० पु० घोड़े के पांवका रोग विशेष, भूषण विशेष।
नेवल०
नेवला० } ना० पु० नकुल जन्तु विशेष जो सांप का बैरी होता है।
नेह० ना० पु० स्नेह, प्रीति, तेल।
नेही० गु० स्नेही, ना० पु० मित्र।
नेत्र० ना० पु० नयन, आंख, पट, कस्तूरी, ज्ञान।
नेत्रपुत्रिका० ना० स्त्री० आंख की पुतली।
नेत्रलोत० ना० पु० बन्धुआ।

नानार्थ० ना० पु० अनेक अर्थ।
नानाविधि० गु० अनेक प्रकार।
नानी० ना० स्त्री० माता की माता।
नान्द० ना० स्त्री० नांद, मिट्टी का बड़ा बर्त्तन विशेष।
नान्दिया० ना० पु० शिवका वाहन, वृषभ।
नान्दीमुख० ना० पु० श्राद्ध विशेष, जो पुत्र जन्म के पीछे होता है वा विवाहादि में।
नान्धना० स० क्रि० आरम्भ करना।
नान्यतर०
नान्यथा० } अव्य० अन्यथा नहीं, असत्य नहीं।
नाप० ना० स्त्री० माप, परिमाण।
नापना० स० क्रि० मापना, परिमाण करना।
नापित० ना० पु० नाई, हज्जाम।
नाभि० ना० स्त्री० पेटके मध्यका स्थान, ढोंढी, तोंदी, ना० पु० राजाविशेष।
नाम० ना० पु० कीर्ति, यश, विख्याति, संज्ञा।
नामकरण० ना० पु० संस्कार विशेष, नाम रखना।
नामानि० ना० पु० नामका बहुवचन।
नामी० गु० प्रसिद्ध, कीर्तिमान् विख्यात, यशी, मशहूर।
नायक० ना० पु० मुखिया, प्रधान, स्वामी, सुन्दर रीति से गायक वा नर्त्तक बनजारों का प्रधान।
नायका० ना० स्त्री० नायिका।
नायिन० ना० स्त्री० नाई की जोरू।
नायकी० ना० स्त्री० नायक की स्त्री, धर्मी, त्रिया कुट्टनी।
नार० ना० स्त्री० नारि, नाल, झुण्ड, आँवा।
नारक० ना० पु० नरक।
नारकी० गु० नरक निवासी, नरकी।
नारंगक० ना० पु० }
नारंगी० ना० स्त्री० } फल विशेष।
नारद० ना० पु० मुनि विशेष।
नारा० ना० पु० नाला, कमरबन्द।
नाराच० ना० पु० बाण, तीर।
नारायण० ना० पु० श्रीभगवान्।
नारायणी० ना० स्त्री० लक्ष्मी, शतावर, पौधा, नारायण सम्बन्धी ज्योति विशेष।
नारि० ना० स्त्री० अबला, नाड़ी, जिस में बाने का सूत रखकर बुनते हैं, बन्दूक बिना कांठ, बांसका पोर जिसमें लोन पानी आदि भरके बैल गाय आदिको पिलाते हैं।
नारिकेर०
नारिकेल० } ना० पु० फल विशेष।
नारियल० }
नारियली० ना० पु० नारियल का हुक्का।
नारी० ना० स्त्री० अबला, स्त्री, नाड़ीसाग विशेष, जिसे करमुआ कहते हैं।
नाल० ना० पु० कमलादि की डण्डी, नाड़, पोला नल, नली।
नालकी० ना० स्त्री० पालकी विशेष।
नाला० ना० पु० जल निकलने का मार्ग।
नालिसिंदुक० ना० पु० संभालू।
नाली० ना० स्त्री० मुहरी छोटा नाला, जिसमें दण्डे करते हैं, जिसकाठको उड़ाते हैं।
नाव० ना० स्त्री० नौका, तरनी।
नावना० स० क्रि० झुकाना, डालना, नवाना।
नावरि० ना० पु० निवारा, जलक्रीड़ा।
नाविक० ना० पु० मांझी, नाव या जहाज चलाने हारा, मल्लाह, कप्तान।
नाशक० गु० नाशकरनेहारा, मिटानेहारा।
नाशन० ना० पु० मिटावन, मेटन।
नाशना० स० क्रि० मिटाना, ध्वंसकरना, नाशना।
नाशपाती० ना० स्त्री० फल विशेष।
नाशा० ना० स्त्री० नासिका।
नाशासंभेदन० ना० पु० नकछीकनी पौधा।
नाशिका० ना० स्त्री० नासिका, नाक।
नास० ना० पु० सुंघनी, हुलास।
नाशना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० नाश करना।

नेत्राम्बु० ना० पु० आंसू।
नेत्रोपमा० ना० स्त्री० बादाम, आंखोंकी उपमा।
नैऋत्य० ना० पु० पश्चिम और दक्षिण का कोण, राक्षस।
नैकट्य० ना० पु० निकटता।
नैक० गु० थोड़ा, अल्प।
नैजाना० अ० क्रि० झुकना, निहुरना।
नैना० ना० पु० नैन, पगहा।
नैपाल० ना० पु० तांबा, देश विशेष, नीति का प्रतिपाल।
नैपाली० ना० पु० मनसिल, नैपालवासी।
नैपुण० गु० निपुण।
नैपुण्य० ना० पु० निपुणता।
नैमित्तिक० गु० समयी, निमित्तका।
नैमित्तिकदान० ना० पु० समयपाय देना।
नैया० ना० स्त्री० नावछोटी, खेवट, डांडी।
नैयायिक० ना० पु० न्यायशास्त्र का ज्ञाता, तार्किक।
नैर्मल्य० ना० पु० निर्मलता।
नैवेद्य० ना० पु० देवता के भोजन की सामग्री, गुड़अर्पण।
नैष्ठिक० गु० विश्वासी, निष्ठायुत।
नैहर० ना० पु० स्त्री० को मैका।
नो० अव्य० नहीं।
नोखा० } गु० अनूठा, अजायब।
नोखो० }
नोच० ना० पु० बकोट, चुटकी
नोचना० स० क्रि० बकोटना, चुटकी लेना
नोन० ना० पु० लोन।
नोना० स० [illegible] बांधना,
नोनापानी० ना० पु० लवणांबु, समुद्रका जल।
नोनिया० ना० पु० लोनिया।
नोय० क्रि० दुहते समय गायके पांवबांधना।
नौका० ना० स्त्री० नाव।
नौखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ खण्ड।
नौगरी० ना० स्त्री० नवगिरी।
नौछावर० ना० पु० निछावार।
नौड़ना० अ० क्रि० झुकना, निहुरना, आधीन होना।
नौढ़ाना० स० क्रि० झुकाना, निहुराना।
नौतना० स० क्रि० नेवतना।
नौता० ना० पु० नेवता।
नौमासा० ना० पु० गर्भ से नवें मास का उत्सव।
नौमि० क्रि० नमस्कार करताहूं।
नौमी० ना० स्त्री० नवमी, नवीं तिथि।
नौरतन० ना० पु० नवरत्न।
नौल० ना० पु० नवल।
नौसादर० ना० पु० औषधि विशेष।
न्यक्कार० ना० पु० कुत्सा।
न्यग्रोध० ना० पु० बरगद का वृक्ष।
न्यस्त० गु० सौंपाभया, सौंपित।
न्याय० ना० पु० धर्म, विचार, तर्कशास्त्र, विरोध फैसला।
न्यायक० ना० पु० न्याय करनेहारा।
न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्कशास्त्र।
न्यायी० ना० पु० न्यायक, न्यायशास्त्र का जाननेहारा।
न्यार० ना० पु० चारा।
न्यारा० गु० अलग, निराला, अनूठा।
न्यारिया० गु० सचेता, चोकस।
न्यून० गु० छोटा, घाट, हीन, कम।
न्यूनकोण० ना० पु० छोटा कोना।
न्यूनता० ना० स्त्री० } घटती, कमी।
न्यूनत्व० ना० पु० }
न्यूनवय० गु० कम उमर।
न्यूनाधिक० ना० पु० छोटा बड़ा।
न्यौतना० स० क्रि० नेवतना।
न्यौता० ना० पु० नेवता।
न्यौताना० स० क्रि० नेवताना।

नासा० ना० स्त्री० नाक, नाकड़ा।
नासिका० ना० स्त्री० नाक।
नास्ति० अव्य० जो नहीं है।
नास्तिक० } ना० पु० जिनके मत में पर-
नास्तिकी० } लोक की बात को नहीं मानते हैं, जैनी।
नाह० ना० पु० नाथ, स्वामी।
नाहर० ना० पु० शेर, व्याघ्र।
नाहीं० अव्य० नहीं।
निः० अव्य० यह शब्द जिसशब्द के पहिले संयोगी होवे उसका अर्थर हितकरे, यथा, निःशंक अर्थात् शङ्कारहित, निषेध।
निःपाप० गु० अदोष।
निःशंक० गु० निडर, अभय।
निःशेष० गु० शेषरहित अर्थात् सम्पूर्ण।
निःपट० गु० अति मूर्ख।
निःसंग० गु० संग रहित अर्थात् अकेला।
निःशरण० ना० पु० शरणहीन, अर्थात् मृत्यु उपाय, विदा।
निःस्व० गु० दरिद्री, अधन।
नि० अव्य० में भीतर, ऊपर, रहित।
निष्कंटक० गु० सुगम, बेखटके, निर्दंद, सीधसुखी, बेधड़के।
निकन्द० गु० स्कन्द रहित, अर्थात् उखड़, निर्मूल।
निकन्दन० गु० निर्मूलकर्त्ता, उखाड़नेहारा।
निकट० अव्य० पास, समीप करीब।
निकटवर्त्ती० ना० पु० पासही, समीप में।
निकटी० ना० स्त्री० छोटी तराजू।
निकम्मा० गु० निगुणी जो किसीकामका नहीं है, शिथिल।
निकर० ना० पु० समूह, झुण्ड, सारे, सब।
निकरना० अ० क्रि० निकलना।
निकरम्ब० ना० पु० समूह, गिरोह।
निकलचलना० अ० क्रि० भागजाना, बढ़के बोलना, अधिक होजाना।
निकलना० अ० क्रि० निकसना, बढ़ना, आगे जाना, भागना, उठाना, उखड़ना।
निकलपड़ना० अ० क्रि० बाहर, आना।
निकसना० अ० क्रि० निकालना।
निकाना० स० क्रि० खेतकी घास निकालना।
निकाम० गु० अति कामना रहित, बेकाम।
निकाय० ना० पु० सब, समस्त, समूह।
निकारना० स० क्रि० निकालना, अस्वीकार करना।
निकाल० ना० पु० उभार, निकास, जोड़तोड़।
निकालना० स० क्रि० उतारना, बिनना, चुनना, उठाना, उखाड़ना।
निकास० ना० पु० कगर, नगरके आसपास, मार्ग निकलनेका, युक्ता, मूल।
निकासना० स० क्रि० निकालना।
निकासी० ना० स्त्री० कर, महसूल, बैठ।
निकासू० गु० जो निकालागया।
निकेत० ना० पु० घर।
निकुच० ना० पु० बड़हल।
निकुंज० ना० पु० कुंज, मड़वा।
निकुटी० ना० स्त्री० छोटी इलायची।
निकुम्भिला० ना० स्त्री० राक्षसोंका चौहरा।
निकृष्ट० गु० अधम, नीच, खराब।
निषंग० ना० पु० तूणीर, तरकश।
निखट्टू० गु० आलसी, उड़ाऊ, लुटाऊ।
निखण्ड० गु० मध्य।
निखरना० अ० क्रि० छिलका उतारना, उजला होना, चमड़ा उधड़ना।
निखराना० स० क्रि० उजलाकराना, फचाना।
निखर्व० गु० १० खर्व, १००००००००००००।
निखारना० स० क्रि० उजला करना, कपड़ेकी माड़ी निकालना।
निखारा० गु० स्वच्छ, उज्ज्वल।
निखिल० गु० सर्व, सम्पूर्ण, बिलकुल।
निखोट० ना० पु० खोट रहित मनुष्य।
निखोड़ना० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना।

म्यौला० ना० पु० जन्तु विशेष।
म्वरलांमड़ी० ना० स्त्री० निसोत।

[प]

पकड़० ना० स्त्री० ग्रहण, गिरिफ्त।
पकड़ना० स० क्रि० खींचना, रोकना, मूंदना, ग्रहणकरना, धरलाना।
पकड़ाना० स० क्रि० ग्रहण करोना, सौंपना, गहाना।
पकना० अ० क्रि० रंधाना, पकाहोना, पाचियाना।
पकवाई० ना० स्त्री० पकाने का काम वा पैसा।
पकवान० ना० पु० पाक जो घी में पकाया गया यथा पूरी, समोसा आदि मिठाई।
पकवाना० स० क्रि० रंधाना, पका कराना, चुरवाना।
पका० गु० पका।
पकाई० ना० स्त्री० पुराई, सिद्धता, तैयारी।
पकाना० स० क्रि० पकवाना, पका करना रांधना, चुराना।
पकाव० ना० पु० पीवियाहट, पुरतनी।
पकौड़ा० ना० पु०
पकौड़ी० ना० स्त्री०
पकौड़ी० ना० स्त्री० } बेसनकी बनीहुई, परन्तु विशेष अर्थात् पाकविशेष, फुलौरी।
पक्क०
पक्का० } गु० रांधा, रंधा, पूरा, खड़ा, तयार।
पख० ना० पु० पक्ष।
पखड़ी० ना० स्त्री० फूल की पत्ती।
पखरौटा० ना० पु० पानपर लगाया हुआ स्वर्ण या रौप्य का पत्र।
पखवारा० ना० पु० पक्ष १५ दिनका प्रमाण।
पखा० ना० पु० पंख, पंच, ज्ञानदीपकमें यथा (पंतामोरधारे जटा शीश सोहै)
पखान० ना० पु० पाषाण, दोहा (ज्यों पनिहारी जेवरी सँचतकटत पखान। तुलसी रसना रामकह पाप किंतिक अनुमान)
पखारना० स० क्रि० धोना।
पखारे० स० क्रि० धोये।
पखाल० ना० पु० चमड़ेका जलपात्र जो बैलपर लादकर लाते हैं।
पखावज० ना० पु० ढोल वा बड़ा मृदंग।
पखावजी० ना० पु० पखावज बजानेहारा।
पखेड़०
पखेरू० } ना० पु० पक्षी, परिन्द।
पखेस० ना० पु० छाया, चिह्न।
पखोर० ना० पु० ठोकर, लातकी ठेल।
पखोरन० ना० पु० पखोर का बहुवचन।
पखोरना० स० क्रि० ठोकर मारना, लात का धक्का लगाना।
पग० ना० पु० पद, पांव, पैर।
पगड़ी० ना० स्त्री० सिरबन्द, दस्तार, शिरपर बांधने का वस्त्रविशेष।
पगदण्डी० ना० स्त्री० छोटी वा संकेतराह।
पगना० अ० क्रि० किसी रसमें डूबना वा पकना वा मनलगाना।
पगला० गु० मूर्ख, सिरी, बावेला।
पगहा० ना० पु० बड़ीरस्सी।
पगहिया०
पगही० } ना० स्त्री० छोटापगहा।
पगा० गु० किसी रस में डूबाहुआ, ना० स्त्री० नदी।
पगार० ना० पु० भीति बनाने के लिये भीती मिट्टी वा पांवतक पानी का थाला।
पगारनि० ना० स्त्री० खुडेरी रामचन्द्रिकायां यथा (अति उच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिन्तामणि नारि)
पगिया० ना० स्त्री० पगड़ी।
पगु० ना० पु० पग, पांव।
पगुराना० अ० क्रि० जुगाली करना।
पंक० ना० पु० पानी मिली मिट्टी, कीचड़।
पंकज० ना० पु० कमल।
पंक्ति० ना० स्त्री० पांति, संतर, कतार।
पंख० ना० पु० पखरान, पर, पक्ष।

निगड़० ना० पु० कटिबन्धन, बेड़ी पैकड़ी काठ।
निगत० गु० नंगा।
निगन्दना० स० क्रि० तागना।
निगन्दा० ना० पु० } तागने का काम।
निगन्दाई० ना० स्त्री० }
निगम० ना० पु० वेद, नींचे, जहां जा न सके।
निगमनदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
निगमनिवासी० ना० पु० ब्रह्मा वेदनिवासी।
निगर० ना० पु० दीर्घ बड़ा ठोस।
निगलना० स० क्रि० लीलना, घूंटना।
निगाली० ना० स्त्री० हुक्का पीने की नली, फुकनी।
निगुण० गु० निर्गुण।
निगूढ़० अतिअगम, दुर्गम, अतिकठिन, अप्रकट, गुप्त।
निगोड़ा० ना० पु० अकर्मी, चाण्डाल।
निग्गर० गु० ठोस।
निग्रह० ना० पु० त्याग, रोक, घिन, चिड़, कुपथ्य-दण्ड।
निग्रही० गु० ताड़नेहारा, रोकने हारा।
निघटत० क्रि० घटतेही।
निघटना० अ० क्रि० घटना।
निघटाना० स० क्रि० घटवाना।
निघटी० क्रि० भू० घटी वा बहुत-घटगई।
निघण्ट० ना० पु० औषधि-वर्णन, रोगपरीक्षा।
निघरघटा० ना० पु० दुलखना, ढ्ढाई करना, ढिठाई करना।
निचय० ना० पु० समूह।
निचिन्त० गु० चिन्ता रहित, अचिन्त, अशोच।
निचिन्ताई० ना० स्त्री० प्रमाद, सुभीता, बेखटके।
निचोड़० ना० पु० काम का पूरा होना या कुछ शेषरहना।
निचोड़ना० स० क्रि० दबाना गारना, चूसलेना।
निचोड़ू० गु० लुटेरा, गाऊंघप।
निचोलनि० ना० स्त्री० चोलनी, दुपट्टा, वस्त्र।
निछावर० ना० स्त्री० उतारा, बलि।
निज० गु० आप निश्चय, उत्कृष्ट।
निजका० गु० अपना।
निजगति० ना० स्त्री० अपनी दशा वा चाल।
निजगुरु० ना० पु० अपना गुरु।
निजतन्त्र० गु० निजइच्छा, स्ववश।
निजपति० ना० स्त्री० अपनी प्रतिष्ठा, ना० पु० अपना स्वामी।
निजवर्ती० गु० निजाश्रित, स्वतन्त्र।
निजसन्धि० ना० स्त्री० अवसर, निजसमय।
निजस्थान० ना० पु० अपना घर वा स्थान।
निजानन्द० ना० पु० अपने सुख में, निज में मग्न।
निजाश्रित० गु० स्ववश, निजवश, अपना निज भरोसे।
निझाना० स० क्रि० निरेखना, झांकना।
निझोटना० स० क्रि० खसोटना, झटकना।
निझोल० गु० झोलरहित, अर्थात् सुडौल, सड़ने हारा।
निठुर० गु० कठोर, निर्दय, स्नेही बिनप्रीति।
निठुरता० } ना० स्त्री० कठोरता, निर्दयता।
निठुराई० }
निडर० गु० निर्भय, अशंक।
निढाल० } गु० स्थावर, अचल।
निढोल० }
नित० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।
नितनव० गु० नितनया।
नितप्रति० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।
नितम्ब० ना० पु० चूतड़, कटिके पीछे का नीचला भाग।
नितम्बिनी० ना० स्त्री० युवती, स्त्री, औरत।
नितान्त० अव्य० अत्यन्त, अधिक।
नित्य० अव्य० नितप्रति, सदा, सत्य, पवित्र, अमर।

पंखा॰ ना॰ पु॰ बेना, बिजना।
पंखिया॰ गु॰ वखेड़िया, झगड़ालू।
पंखी॰ ना॰ पु॰ पंखा छोटा, छोटा पक्षी, परन्द।
पंगत॰ } ना॰ स्त्री॰ पंक्ति, श्रेणी, पत्री।
पंगति॰ }
पंगुला॰ गु॰ लँगड़ा।
पचक॰ ना॰ स्त्री॰ सूख।
पचकना॰ अ॰ क्रि॰ सूखना, सूजन उतरना।
पचखना॰ गु॰ पांचखण्ड वाला।
पचघरा॰ ना॰ पु॰ घर विशेष जिस में पांच घर हों।
पचतोरिया॰ } ना॰ पु॰ वस्त्रविशेष अर्थात्
पचतोलिया॰ } सारी ओढ़ने की।
पचना॰ अ॰ क्रि॰ सड़ना, गलना, भस्महोना, परिश्रम करना।
पचपचाना॰ अ॰ क्रि॰ गीला या ढीला वा भीगा होना, पसीजना, सड़ना।
पचपन॰ गु॰ पचास और पांच, ५५।
पचमिल॰ गु॰ मिश्रित, मिलित।
पचमेल॰ गु॰ पचमिल।
पचरुखा॰ ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी।
पचलड़ा॰ ना॰ पु॰ } गु॰ जिसमें पांचलड़ हों।
पचलड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ }
पचलोना॰ ना॰ पु॰ औषधि विशेष।
पचाडालना॰ स॰ क्रि॰ पचाना, सड़ाना, और खापजाना, हजमकरजाना।
पचानवे॰ गु॰ नब्बे और पांच ९५।
पचाना॰ स॰ क्रि॰ पकाना, सड़ाना, हजम करना।
पचास॰ गु॰ पांच दहाई, ५०।
पचासी॰ गु॰ अस्सी और पांच, ८५।
पचीस॰ गु॰ बीस और पांच, २५।
पचीसी॰ ना॰ स्त्री॰ खेल विशेष।
पचूका॰ ना॰ पु॰ पिचकारी।
पचत्॰ क्रि॰ पचताहै, दुखपाता है, पकताहै।

पचोतर॰ } ना॰ पु॰ सैकड़ा पीछे पांच लेना,
पचोत्तरा॰ } पांच रुपये सैकड़ा।
पचौनी॰ ना॰ स्त्री॰ ओझ, झोझ।
पच्चर॰ ना॰ स्त्री॰ फपी, ठेक।
पच्छम॰ } पु॰ पश्चिम।
पच्छिम॰ }
पछड़ना॰ } अ॰ क्रि॰ गिरजाना, हटजाना,
पछरना॰ } आधीन होना।
पछताना॰ स॰ क्रि॰ पश्चात्ताप करना, पीछे को शोचना, अफसोस करना।
पछतावा॰ ना॰ पु॰ पश्चात्ताप, शोच।
पछना॰ ना॰ पु॰ गोंठी, खोदवाई, चीरा, अस्त्र विशेष।
पछनी॰ ना॰ स्त्री॰ शरीर के चमड़े में चीरा करना।
पछरा॰ गु॰ गिरपड़ा पीछे को हटा।
पछवा॰ ना॰ पु॰ पवन जो पश्चिम से आताहै।
पछाड़॰ ना॰ स्त्री॰ पटकन, पटकने का काम।
पछाड़ना॰ } स॰ क्रि॰ गिरादेना, आधीन
पछारना॰ } करना, पटकना।
पछाह॰ ना॰ पु॰ पश्चिम।
पछयाना॰ स॰ क्रि॰ पीछा करना।
पछियाव॰ ना॰ पु॰ पश्चिम का पवन।
पछोड़॰ ना॰ स्त्री॰ फटकन, फटकाव, फटकने का काम।
पछोड़ना॰ } स॰ क्रि॰ फटकना, सूपमें डालके
पछोरना॰ } उछालना।
पजोड़ा॰ गु॰ निकम्मा, पाजी।
पंच॰ गु॰ पांच ५ ना॰ पु॰ जाति के चौधरी, कार्य्यादि के विचारक, सभा, ५ मनुष्य, कमान का रोदा।
पंचक॰ ना॰ स्त्री॰ चिल्ला, रोदह पांचकरना।
पंचकोश॰ ना॰ पु॰ पांचोंश अर्थात् अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्द।
पंचगव्य॰ ना॰ पु॰ पांच पदार्थ जो गाय से प्राप्त होते हैं अर्थात् दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोमय।

नित्यकर्म० ना० पु० स्नानपूजादि कर्त्तव्य कर्म, शुक्लकर्म।
नित्यता० ना० स्त्री० सदापन, सदैव।
नित्यदान० ना० पु० प्रतिदिनदेना, सत्यदान, सात्त्विकदान।
नित्यानन्द० ना० पु० सर्वदाकाल आनन्द।
निथम्भ० ना० पु० स्तम्भ, पीलपाया।
निथरा० गु० फर्चा, फर्चा।
निथारना० स० क्रि० उड़ेलना, फर्चा करना।
निदग्धिका० ना० स्त्री० श्वेत भांटी कटाई।
निदरहि० क्रि० निन्दाकरे, नामाने।
निदरना० स० क्रि० निन्दा करना।
निदरि० अ० क्रि० निरादरकरके, अपमानकर।
निदाघ० ना० पु० ग्रीष्म, गर्मी।
निदान० अव्य० अन्त, पीछे, पूरा, निपट ना० पु० रोगपरीक्षा, औषधि कथन, अन्तविचार, कारण।
निदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन, कीन्हेसि मोरिनिदेशनिमेट्ट, देउँदवायनागतरपेट्ट, इतिश्री रामचरित्रे सहजरामकाव्ये।
निद्रा० ना० स्त्री० औंघाई, नींद।
निद्रारि० ना० पु० चिरायता।
निद्रालु० गु० स्वभावबश, जो अधिक सोवे।
निद्रित० गु० निंदासा, सोवासा।
निधड़क० गु० निर्भय, अव्य० अचानक।
निधन० ना० पु० मृत्यु, नाश, धनहीन।
निधरक० गु० निधड़क।
निधान० ना० पु० स्थान, घर, धन, आधार, खोंचा।
निधि० ना० स्त्री० कुबेरका एक रत्न, सम्पत्ति, ना० पु० समुद्र, गु० नौ ९।
निधिजात० ना० पु० चन्द्रमा आदि।
निधिसुता० ना० स्त्री० श्रीलक्ष्मी जी।
निनन्द० }
निनाद० } ना० पु० शब्द, घण्टा, ध्वनि।
निनायी० ना० पु० खटमल।
निनायी० ना० पु० विरोष, रोगविशेष।
निन्दक० गु० निन्दा करनेहारा, नींदनेहारा।
निन्दकाई० ना० स्त्री० निन्दकता, निन्दा।
निन्दना० स० क्रि० दोषदेना, कलंकलगाना।
निन्दनीय० निन्दा के योग्य।
निन्दा० ना० स्त्री० दोष, कलंक, बुरा कहना।
निन्द्य० गु० निन्दा के योग्य।
निनावा० ना० पु० रोगविशेष।
निन्नानवे० गु० एकोनशत, ९९।
निपट० अव्य० निरानिर, अधिक, बहुत, अति, सरासर, सर्व।
निपटना० अ० क्रि० चुकना, पूराकरना।
निपटाना० स० क्रि० चुकाना, पूराकरना, टहराना, निबड़ना।
निपटारा० ना० पु० निबेड़ा, फैसला।
निपटारू० ना० पु० निबेरू।
निपात० ना० पु० मृत्यु, नाश, गिरना।
निपाता० क्रि० नाश किया, मिटाया।
निपान० ना० पु० जलाशय, दोहनी।
निपुण० गु० प्रवीण, चतुर, दाना।
निपूता० गु० जिसके सन्तान नहीं।
निफल० गु० निरर्थ, फलरहित।
निबटेरा० ना० पु० निस्तोक, छुटौनी।
निबड़ना० अ० क्रि० निपटना, होचुकना।
निबन्ध० ना० पु० बन्धेज, इकरार गु० जो ठहर गया।
निबन्धन० ना० पु० बन्धन, ठहराव।
निबन्धित० गु० जो ठहरगया, बन्धित।
निबल० गु० निर्बल, लाचार बुड्ढा।
निबाह० ना० पु० समास, निबेड़ा, निर्वाह, बात का पूरा करना।
निबाहू० गु० टिकाऊ ना० पु० निपटारू।
निबेड़ना० स० क्रि० निपटाना।
निबेड़ा० ना० पु० निबटेरा, निपटारा।
निबेड़ि० गु० निबाहु।
निभ० ना० पु० तुल्य, बराबर।

पंचज्योनार० ना० पु० पांचप्रकार की ज्योनार अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य, पेय, ५।
पंचतत्त्व० ना० पु० पांचतत्त्व अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल, मिट्टी, ५।
पंचतन्त्र० ना० पु० पांचतंत्र अर्थात् वशीकरण, मारण, उच्चाटन, मोहन, आकर्षण।
पंचत्व० गु० मृत्यु।
पंचदश० गु० पन्द्रह, १५।
पंचदशानर्थ० ना० पु० पन्द्रह अनर्थ अर्थात् चोरी, हिंसा, मिथ्या, दम्भ, काम, क्रोध, विस्मय, वैर, अप्रतीति, भेद, भय, खेद, चिन्ता, क्षोभ, सर्वस्पर्द्धा, १५।
पंचनखी० ना० स्त्री० गोह।
पंचपल्लव० ना० पु० पांच वृक्षों की पत्ती या डाली।
पंचपात्र० ना० पु० पूजाका पात्रविशेष।
पंचपुराणलक्षण० ना० पु० पुराण के पांच लक्षण अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित।
पंचप्राण० ना० पु० पांचप्राण अर्थात् प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, ५।
पंचभूत० ना० पु० पंचतत्त्व।
पंचम० गु० पांचवां, रागका स्वरविशेष।
पंचमांश० गु० पांचवांभाग।
पंचमी० ना० स्त्री० पांचवीं तिथि, व्याकरण में, पांचवांकारक।
पंचमुख० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पंचम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें पंचमीका प्रत्ययहै।
पंचवक्त्र० ना० पु० श्रीमहादेव जी।
पंचविंश०
पंचविंशति० } गु० पचीस, २५
पंचविंशतितम० गु० पचीसवां।
पंचविंशप्रकृति० ना० स्त्री० पचीस प्रकृति अर्थात् अस्थि, मांस, नख, रोम, नाडिका, वीर्य, मूत्र, रक्त, वसा, धार, भूख, प्यास, नींद, कान्ति, आलस्य, दौड़ना, चलना, पसारना, समेटना, कूदना, राग, द्वेष, लाज, भय, मोह, २५।
पंचनख० ना० पु० सिंह, व्याघ्र।
पंचविरोधी० गु० सबका वैरी, दुष्ट।
पंचशर० कामदेव।
पंचशाख० ना० पु० हाथ।
पंचसूक्ष्मवायु० ना० पु० पांचसूक्ष्म वायु अर्थात् नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय।
पंचांगुल० ना० पु० दोनों अरण्ड, पांचअंगुल
पंचांगुली० ना० स्त्री० पांच अंगुली अर्थात् अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका।
पंचाध्यायी० ना० स्त्री० श्रीमद्भागवत के रासमण्डल के पांच अध्याय का समुदाय।
पंचानन० ना० पु० श्रीमहादेवजी, सिंह।
पंचामृत० ना० पु० दही, दूध, घी, मधु, शक्कर, की मिलोनी जो देवता हेतु बनाते हैं।
पंचायत० ना० स्त्री० बहुत मनुष्यों की मति वा मनुष्यों का समूह, जिसमें झगड़ा निपटायाजाता है, वा जातिकी सभा वा समुदाय।
पंचाल० ना० पु० देश विशेष।
पंचालिका० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।
पंचाली० ना० स्त्री० वेश्या, द्रौपदी।
पंचावन० गु० पचपन, ५५।
पंचास० गु० पचास, ५०।
पंचास्य० ना० पु० श्रीमहादेव जी, सिंह, गु० पांच मुखवाला।
पंचीकरण०
पंचीकृत० } गु० पांचकाकियाहुआ, या पांच पांच कियागया।
पंछी० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
पंजर० ना० पु० पांसली, पांजर, पिंजरा।
पंजरगत० गु० पिंजरे में।
पंजाब० ना० पु० देशविशेष जिसमें पांच नदियां हैं अर्थात् सतलज, व्यासा, रावी, चिनाव, जिहलम।

निभना० अ० क्रि० निबाहहोना, पारहोना।
निभाना० स० क्रि० निबाहना, पारकरना।
निमकी० ना० स्त्री० लोनका निम्बू।
निमकौड़ी० ना० स्त्री० नींबका फल।
निमन० गु० ठोस, पोढ़ा, सुन्दर।
निमनाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई।
निमनाना० स० क्रि० पोढ़ाकरना, संभालना।
निमंत्र० } ना० पु० न्योता।
निमंत्रण० }
निमाना० गु० भोला, मैदान।
निमि० ना० पु० राजाविशेष।
निमित्त० ना० पु० कारण, लिये, भाग, हेतु।
निमिष० ना० पु० थोड़ीदेर, पलक, चाल।
निमिषमात्र० ना० पु० अत्यन्त थोड़ाकाल।
निमीलन० ना० पु० मृत्यु, झपकी, पलक।
निमेष० ना० पु० पलक, विपल।
निम्न० गु० नीचारथान, नीचान, अधो।
निम्नगा० ना० स्त्री० नदी।
निम्ब० ना० पु० नींव वृक्ष।
निम्बक० ना० पु० निम्बू।
निम्बरक० ना० पु० नींव, वा महानींव।
निम्बू० } ना० पु० नींबू।
निम्बूक० }
नियत० गु० जो ठेकागया, मुकर्रर, क़ायम।
नियन्ता० ना० पु० स्वामी, अध्यक्ष, सारथी, नियतकर्ता।
नियम० ना० पु० प्रण, वचन, अंगीकार, जो कुछ धर्म की कियाकरे, यथाव्रत।
नियमित० गु० निश्चित, प्रणकिया गया।
नियमन० ना० पु० नीम वृक्ष, रोक।
नियर० } अव्य० समीप, पास।
नियरे० }
नियराई० ना० स्त्री समीपता, निकटता।
नियामक० ना० पु० नाविक, नियन्ता।
नियुक्त० गु० नियोजित, स्थापित।
नियुत० गु० दशलाख, १०००००० ।

नियोग० ना० पु० प्रेरण, आज्ञा, तथा पुत्रोत्पन्न करना।
नियोजन० ना० पु० स्थापन, आज्ञा।
नियोजित० गु० स्थापित, रक्खा।
निर० अव्य० निः।
निरखना० स० क्रि० देखना, विलोकना।
निरंकार० गु० निराकार।
निरंकुश० गु० स्वेच्छाचारी, निडर।
निरंजन० गु० निर्मल, राग रहित, अविद्या रहित, ना० पु० ईश्वर।
निरत० गु० अति प्रीतिमय, लीन।
निरतक० ना० पु० नचवैया।
निरर्थ० गु० झूठ, निष्प्रयोजन, बेफ़ायदह।
निरन्त० गु० अन्तरहित, अपरम्पार, ना० पु० आकाश, ईश्वर।
निरन्तर० अव्य० नित्यप्रति, जिसमें वियोग नहीं, सत्य, अन्तर बिन।
निरन्ध० गु० अन्धा, देखने वाला।
निरपराध० } गु० अपराध रहित, निर्दोष।
निरपराधी० }
निरम्बु० गु० जलरहित।
निरय० ना० पु० नरक, दोज़क।
निरर्थक० गु० ढीला, प्रमादी, अनरीति, अर्थ रहित, निष्प्रयोजन।
निरवग्रह० गु० स्वच्छन्द, स्वतन्त्र।
निरवद्य० गु० आनन्दित, अकथ्य।
निरवारण० ना० पु० उधारन, बचाव, सुलझावट।
निरवारना० स० क्रि० खोलना, छोड़ना।
निरस० गु० रसहीन, फीका, बदमज़ह।
निरस्त० गु० त्यागित, जिसका अस्त न हो।
निरस्त्र० गु० अस्त्रहीन।
निरस्य० गु० त्यागने के योग्य, त्यागकिये।
निरा० गु० केवल, सारा, ठेठ, रूखा।
निराकांक्षी० ना० पु० निस्पृह, आकांक्षारहित।
निराकार० गु० आकारहीन, यथा ईश्वर।

पंजाबी० गु० पंजाब देश का मनुष्य वा वस्तु।
पंडोरि० ना० स्त्री० औषधिविशेष, जो खाया जाती है।
पट० ना० पु० कपड़ापद्धति, गिरने वा मारने का शब्द, द्वार का किवाड़ आदि टकन, गु० उलटा पुलटा पत्र।
पटकन० ना० स्त्री० पछाड़ चोट।
पटकना० स० क्रि० देमारना, पटकदेना, अ० क्रि० चरचराना, फटना, ना० पु० कोड़ा।
पटका० ना० पु० फेंटा, कमर बांधने का कपड़ा।
पटकाजाना० अ० क्रि० दबना, पतितहोना, गिरना।
पटकाना० } स० क्रि० पटकना, देमारना।
पटकारना० }
पटकीदेना० }
पटचर० ना० पु० पुराना वस्त्र, यथा पटच्चरं जीर्णवस्त्रमित्यमरः।
पटड़ा० ना० पु० सिलों बैठने के लिये काठका आसन, चौकी, पीढ़ा, पीड़ा, तख्ता।
पटतर० ना० पु० तुल्य, सदृश, बराबर।
पटन० ना० पु० पटने का काम।
पटना० स० क्रि० छतका बनना, दबना, भर जाना, भरना, भरपाना, ना० पु० नगर विशेष।
पटनी० ना० पु० नैया।
पटपट० ना० पु० भुनने का वा मारने का वा पीटने का शब्दविशेष, चटचट।
पटरा० ना० पु० पटड़ा, ऊजड़।
पटरानी० ना० स्त्री० रानी, शाहजादी।
पटरी० ना० स्त्री० छोटापटरा, पटीया, खपरा।
टल० ना० पु० अभ्रक, अबरक, ढकन, समूह।
पटवा० ना० पु० जातिविशेष, पटुआ।
पटवाना० स० क्रि० पाटना, भरवाना।
पटवारा० } ना० पु० धरती का लेखा लगानेहारा।
पटवारी० }
पटा० ना० पु० गदका, पीढ़ा, पीढ़ी, पट्टलिया।
पटाक० ना० पु० धड़ाक, धारा।
पटाका० ना० पु० दर्दूर, आतशबाजी विशेष, धड़ाका।
पटाना० स० क्रि० भराना, चौका गोबर से लगाना, मिट्टी से लीपना।
पटपट० ना० पु० चटाचट।
पटाव० ना० पु० सीसार, अराव, पदरा जो द्वार वा छतपर डालते हैं।
पटिया० ना० स्त्री० पटरी।
पटीना० ना० पु० पक्षीविशेष।
पटीमा० ना० पु० वस्त्र नापने का बड़ा पत्थर।
पटीलना० स० क्रि० मारना, पीटना, भर्त्सना करना।
पटु० गु० चतुर, निपुण, ना० पु० वस्त्र, नकछिकनी, गु० सुन्दर।
पटुता० ना० स्त्री० चतुराई, निपुणता, सुन्दरता।
पटुआ० ना० पु० पाट, सन।
पटेर० ना० पु० पौधाविशेष, गोंदी।
पटेरा० ना० पु० मुद्राविशेष।
पटेल० ना० पु० लठियाने का काम, प्रभुता, कुरमी, जातिमें प्रधान, महाराष्ट्र की पदवी।
पटेला० ना० पु० नावविशेष, ना० स्त्री० सरावन।
पटेली० ना० स्त्री० छोटा पटेला।
पटेला० ना० पु० पटरा।
पटोतन० ना० पु० पटने।
पटोर० ना० पु० रेशमीवस्त्र, पाट।
पटोल० ना० पु० परवल।
पटोहिया० ना० पु० उल्लू।
पटौनी० ना० स्त्री० नैया, पटनी।
पट्ट० ना० पु० पट, पत्र।
पट्टन० ना० पु० नगर, पुर।
पट्टवस्त्र० ना० पु० रेशमी कपड़ा।
पट्टा० ना० पु० घोड़ेकी पट्टी, कुत्ते के गले में बांधनेका चमड़ा, कानों परके रखायेहुये बाल,

निरादर० गु० आदररहित, अवज्ञायुत, या अ-
पमान करने हारा।
निराधार गु० सहारा रहित, आधार हीन।
निरामिष० गु० मांसरहित भोजन।
निरालम्ब० गु० आलम्बरहित, अवलम्बहीन।
निरालस्य० गु० आलस्य हीन, कामकाजी, मि-
हनती, उपायी।
निराश० गु० भरोसारहित, आशा टूटगई।
निराहार० गु० भोजनहीन, विनकुछखाये।
निरिच्छ०, निरिच्छित० } गु० इच्छारहित विन इच्छा, जिसको कुछ चाह नहीं।
निरीश० गु० स्वामीरहित, जिसका मालिक न
हो पतिहीन, ना० पु० जीव अर्थात् ईश नहीं।
निरीह० गु० चेष्टारहित यथा ईश्वर।
निरीक्षण० ना० पु० ताक, दृष्टि।
निरुत्तर० गु० उत्तरहीन, लाजवाब।
निरुपधि० गु० निष्प्रयोजन।
निरुपम०, निरुपमा० } गु० उपमा हीन, दृष्टान्त रहित।
निरुपाधि० गु० उपाधि रहित, बेखटके।
निरुपाय० गु० उपायहीन, विना उपायकिये।
निरूप० गु० रूपहीन, निराकार।
निरूपण० ना० पु० दृष्टि, निर्णय, जवाब, विस्तार
पूर्वक कथन।
निरूपित० गु० जो विस्तारपूर्वक कहागया वा
निर्णय कियागया, निश्चययुत, स्थापित।
निरेखना० स० क्रि० विलोकना, झांकना।
निरोग०, निरोगी० } गु० निरोग, भला चंगा, रोग रहित।
निरोध० ना० पु० घेरना, फाँसना।
निर्गत० गु० निकला।
निर्गता० गु० निकलकर, ना० स्त्री० निकली।
निर्गम० ना० पु० जहां जाय न सके, अगम।
निर्गुण० गु० गुण हीन, निकम्मा, मूर्ख।
निर्गुण्डी० ना० स्त्री० संभालू।
निर्घण्ट० ना० पु० सूचीपत्र।
निर्घात० ना० पु० वज्र, शब्द।
निर्घृणा० गु० निर्दया कठोर।
निर्घोष० ना० पु० ध्वनि, शब्द।
निर्जर० ना० पु० देवता, जो बूढ़ा न हो।
निर्जन० गु० मनुष्य हीन, जनरहित।
निर्जननदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
निर्जल० गु० जलहीन, सूखा, पायाब।
निर्जीव० गु० जिसमें जीव नहीं है यथा मिट्टी
पत्थर आदि, मृतक।
निर्जास० गु० सार, सिद्धान्त।
निर्झर० ना० पु० झरना।
निर्झरिणी० ना० स्त्री० नदी।
निर्णय० ना० पु० निश्चय, ठिकाना, न्याय,
झगड़ा मिटाना।
निर्णीत० गु० निश्चित, निर्णय कियागया।
निर्दई०, निर्दय०, निर्दया०, निर्दयी० } गु० जिसमें दया नहीं है, कठोर बेरहम।
निर्दिष्ट० गु० जो अच्छी विधि देखा गया वा
निरूपित हुआ वा वर्णन हुआ।
निर्दोष०, निर्दोषी० } गु० दोषहीन, अकलंकी, अदोष।
निर्द्वन्द्व० गु० विना झगड़ा, बेखटके।
निर्धन० गु० धनहीन, दरिद्री।
निर्धार०, निर्धारण० } ना० पु० निश्चय, निर्णय।
निर्धारित० गु० निश्चित, निर्णीत।
निर्वंश० गु० वंशरहित, असन्तान, लावल्द।
निर्बन्धु० गु० बन्धु रहित, अकेला।
निर्बल० गु० लाचार, दुर्बल, जिसको सामर्थ्य
नहीं है।
निर्वश० गु० वश रहित, असमर्थ।
निर्बीज० गु० बीज रहित, पुत्रहीन।
निर्बुद्धि० गु० बुद्धिहीन, मूर्ख।

लिखतंग अर्थात् खेत आदि की सनद।

पट्टी॰ ना॰ स्त्री॰ पाटी, बंधनी, पनकपड़ा, किसी स्थान आदिका भाग, शीराकाखंड।

पट्टू॰ ना॰ पु॰ बनात की चादर, ऊर्णवस्त्र, विशेष।

पट्ठ॰ ना॰ स्त्री॰ नवयौवना, थोड़े दिन की बकरी।

पट्ठा॰ ना॰ पु॰ नवयौवन, पाठा, कुश्ती लड़नेहारा, रागविशेष, जिसका लेखा पत्ताहो।

पठ॰ ना॰ पु॰ पढन्त।

पठकायन्॰ ना॰ स्त्री॰ पाठक की पत्नी।

पठन॰ ना॰ स्त्री॰ पढन।

पठवाना॰ }
पठाना॰ } स॰ क्रि॰ भेजवाना।

पठिया॰ ना॰ स्त्री॰ नवयौवना बकरी।

पठौना॰ ना॰ पु॰ }
पठौनी॰ ना॰ स्त्री॰ } पठाना।

पड़ना॰ अ॰ क्रि॰ गिरना, डेरा करना, जानना, करना, लेटना।

पड़पड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ भड़भड़ाना, टीसना।

पड़ाना॰ स॰ क्रि॰ गिराना, लिटाना।

पड़ापड़॰ अव्य॰ वारंवार मार।

पड़ापाना॰ स॰ क्रि॰ सहेज से पाना, कोई वस्तु मार्ग आदि में पाना।

पड़ाव॰ ना॰ पु॰ ठहराव, टिकाव, टिकासर, टिकने का स्थान, सेना, भीड़।

पड़ावना॰ स॰ क्रि॰ पढ़ाना।

पड़िया॰ ना॰ स्त्री॰ भैंस की बछिया।

पड़ोस॰ ना॰ पु॰ समीपता, निकटता

पड़ोसिन्॰ ना॰ स्त्री॰ पड़ोसिनकी स्त्री, समीप वासी स्त्री।

पड़ोसी॰ ना॰ पु॰ निकटवासी, पड़ोस रहनेहारा।

पढ़न॰ ना॰ स्त्री॰ पढ़ने का मार्ग।

पढ़ना॰ स॰ क्रि॰ बांचना, पाठकरना, जपना।

पढ़न्त॰ }
पढ़न्ति॰ } ना॰ स्त्री॰ अध्याय, संस्था, विद्या, टोटका।

पढ़ा॰ गु॰ चतुर, पण्डित, बुद्धिमान्।

पढ़ाना॰ स॰ क्रि॰ शिक्षा देना, सिखलाना, बताना।

पढ़िन॰ ना॰ पु॰ मत्स्यविशेष, मछलीविशेष।

पढ्य॰ }
पढ्यमान॰ } गु॰ पढ़ने के योग्य।

पण॰ ना॰ पु॰ प्रतिज्ञा, अवस्था, कमाई, मोल चार काकिणी अर्थात् बीसगण्डा कौड़ी।

पण्डा॰ ना॰ पु॰ पुजारी, देवालय का प्रधान।

पण्डित॰ गु॰ विद्वान्, गुणवान्, पढ़ा, बुद्धिमान्।

पण्डिताई॰ ना॰ स्त्री॰ पंडितकाकाम वा विद्या।

पण्डितायन्॰ ना॰ पु॰ पंडितकी जोरू।

पण्डियायन्॰ ना॰ स्त्री॰ पांड़े की जोरू।

पंडुब्बी॰ ना॰ स्त्री॰ जलपक्षी, सुर्खाबी।

पंडूखी॰ ना॰ स्त्री॰ कपोताकृति पक्षीविशेष, फाख़तह।

पंडूरी॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षीविशेष।

पतग॰ ना॰ पु॰ पक्षी, चिड़िया।

पतंग॰ ना॰ पु॰ छोटा उड़नेवाला जन्तु, तुक्कल विशेष, लकड़ीविशेष, रंगविशेष, सूर्य्य, पक्षी, अग्नि, वृक्षविशेष।

पतंगा॰ ना॰ पु॰ चिंगारी, जन्तु पतंगविशेष।

पतझड़॰ गु॰ पत्तोंका गिरजाना, ना॰ स्त्री॰ ऋतुविशेष।

पतन॰ ना॰ पु॰ पटकन, पछाड़, गिरन।

पतना॰ अ॰ क्रि॰ पड़ना गिरपड़ना।

पतला॰ गु॰ दुबला, झीना, जो गाढ़ा न हो।

पतलाई॰ ना॰ स्त्री॰ दुर्बलता, दुबलापन।

पतवार॰ }
पतवाल॰ } ना॰ पु॰ कनहर, नाव के पिछाड़ी का डांड़विशेष।

पतत्रि॰ ना॰ पु॰ पक्षी, चिड़िया।

पता॰ ना॰ पु॰ चिह्न, निशान।

पताका॰ ना॰ स्त्री॰ ध्वजा, छोटी झंडी।

निर्बूझ० गु० जो समझ में न आवे, मूर्ख।
निर्भय० गु० अभय, निडर।
निर्भर० गु० पूर्ण, पूरा।
निर्मम० गु० ममता रहित।
निर्मल० गु० मलहीन, स्वच्छ, शुद्ध, साफ, फर्श।
निर्मलता० ना० स्त्री० पवित्रता, स्वच्छता, सफाई।
निर्मली० ना० पु० बीज विशेष जिससे पानी को स्वच्छ करते हैं।
निर्माण० ना० पु० बनावट, रचना, बनाना, कर्त्तव, सार।
निर्माल्य० ना० पु० प्रसाद, निवेदित वस्तु, स्वच्छता, शुद्धता।
निर्मित० गु० रचित, बनाया गया, निर्माण किया गया।
निर्मूल० गु० हीन मूल, विना जड़।
निर्मोह० } गु० मोहरहित, उदासी।
निर्मोही० }
निर्यास० ना० पु० शिलाजीत, वृक्षका रस अर्थात् गोंद, क्वाथ।
निर्याण० ना० पु० यात्रा, प्रस्थान।
निर्लज्ज० गु० लज्जा रहित, बेहया, नकटा।
निर्लिप्त० गु० स्पर्शहीन, जो लिप्त नहीं है।
निर्लेप० } गु० जिसका चिह्न नहीं वा लेश नहीं, विना लाग, सर्व।
निर्लेश० }
निर्लोभ० गु० लोभ रहित, दाता।
निर्बन्ध० गु० छूटाहुआ।
निर्वाण० ना० पु० मोक्ष, अपवर्ग, लय, गु० वैकुंठवासी, मोक्ष होगया।
निर्वाणसुख० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति, वैकुंठवास।
निर्बाधा० गु० बाधा रहित, अकंटक।
निर्बाह० गु० निबाह।
निर्बाहक० गु० निबाह करनेहारा।
निर्विकल्प० गु० भेद रहित, अतर्क्य, कल्पना हीन।
निर्विकार० गु० विकारहीन, निर्बाध, अरोग।
निर्विघ्न० गु० विघ्नरहित, आनन्द, निर्बाधा।
निर्वृत्ति० ना० स्त्री० मुक्ति, मृत्युआनन्द, पुरुष, मार्ग, तरीक, पन्थ।
निर्वैर० गु० वैर भाव हीन।
निर्व्याज० गु० अचल, अस्वारथ।
निर्व्याधि० गु० व्याधि हीन, अरोग, अकंटक।
निर्हर० ना० पु० हरनेवाला।
निलज्ज० गु० निर्लज्ज, लज्जाहीन।
निलय० ना० पु० घर।
निवान० गु० नीचान।
निवाना० स० क्रि० नवाना।
निवार० ना० स्त्री० कोर, पट्टी सूतकी।
निवारक० गु० बचानेवाला, रोकनेवाला।
निवारण० ना० पु० निषेध, रोक, बचाव।
निवारना० स० क्रि० रोकना, बचाना, बरजना।
निवारत० क्रि० बचावत, रोकत, बर्जत।
निवारि० क्रि० बचाय कर, रोकि, बराजि।
निवारित० गु० बचायागया, बर्जागया।
निवावना० स० क्रि० नवाना।
निवास० ना० पु० बसने का स्थान, वास, घर।
निवासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेवाला।
निविड़० गु० अधिक, सघन, निहायत।
निवुकि० अ० क्रि० झपटि, कूदि।
निवृत्ति० ना० स्त्री० रहाव, रुकावट, विश्राम, चैन।
निवेदन० ना० पु० प्रार्थना, विनती, अर्ज।
निवेदनपत्र० ना० पु० अर्जी, विनयपत्र।
निवेदित० गु० अर्पित, विनय किया गया।
निवेशन० ना० पु० विवाह, शादी।
निशंक० गु० निडर, निस्संदेह, विन प्रयास।
निशा० ना० स्त्री० रात्रि।
निशाकर० ना० पु० चन्द्रमा।
निशागम० ना० पु० रात्रिका आगम, सन्ध्या, सांझ, शाम।

पताल० ना० पु० पाताल।
पति० ना० स्त्री० प्रभु, स्वामी, इज्जत, सुख्याति।
पतित० गु० भ्रष्ट, दोषी, जो गिरगया।
पतिदेव० } ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री, राम-
पतिदेवता० } चन्द्रिकायां, तू पतिदेवनकी गुरु बेटी, तेरी यम मृत्यु कहावत चेटी।
पतिमा० ना० स्त्री० प्रतिमा।
पतिया० ना० स्त्री० पत्री, चिट्ठी।
पतियाना० स० क्रि० प्रतीति करना, भरोसा रखना।
पतियारा० ना० पु० भरोसा, प्रतीति, विश्वास।
पतिव्रता० ना० स्त्री० साध्वी, कुलवन्ती और सुधर्म स्त्री।
पतीरी० ना० स्त्री० चटाई विशेष।
पतील० गु० पतला।
पतीला० ना० पु० बड़ी बटलोई, तौली, तसला।
पतीली० ना० स्त्री० छोटा पतीला।
पतुकी० ना० स्त्री० छोटी कराही, पत्तों का पात्र।
पतुरिया० ना० स्त्री० वेश्या, गणिका।
पतुहिया० ना० स्त्री० पतोहू, बहू।
पतोह० }
पतोहू० } ना० स्त्री० बहू, पुत्रकी स्त्री।
पतौरा० ना० पु० सैंठाकी पत्ती।
पतौवा० ना० पु० पत्ती।
पत्तन० ना० पु० नगर।
पत्तर० ना० पु० पत्र, वर्क।
पत्तल० ना० स्त्री० पत्तोंकापात्र भोजनके लिये।
पत्ता० ना० पु० पात, दल, भगली, गहनाविशेष।
पत्ती० ना० स्त्री० पाती, भंग।
पत्थर० ना० पु० पाषाण शिला।
पत्नी० ना० स्त्री० भार्य्या, विवाहितानारी।
पत्यारो० ना० पु० पतियारा।
पत्र० ना० पु० पत्ता, चिट्ठी, पत्तर, चांदी सोने आदि का पत्र।

पत्ररथ० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
पत्रा० ना० पु० तिथिपत्र, पत्री।
पत्रांक० ना० पु० पत्रकी संख्या।
पत्रिका० ना० स्त्री० चिट्ठी, पत्री।
पत्री० ना० स्त्री० चिट्ठी, पत्ती, वृक्ष, बाण, कमल।
पथ० ना० पु० मार्ग, बाट, राह।
पथरकला० ना० पु० बन्दूकविशेष।
पथरचटा० ना० पु० पौधाविशेष।
पथराना० अ० क्रि० पत्थर होजाना, कड़ा होना।
पथरी० ना० स्त्री० किरकिर, आंकर, कंकरी चकमकका पत्थर जो मूत्रको बंदकरता है, बूटीविशेष, पक्षीका भीतरीअंग विशेष।
पथरीला० गु० भूमि जिसमें बहुत पत्थरहों।
पथिक० गु० पु० बटोही, मुसाफिर, राही।
पथ्य० ना० पु० रोगीका आहार, लाभकारी, उपकारी, मस्तु, मुफीद।
पथ्या० ना० स्त्री० हड़।
पद० ना० पु० चरण, पांव, अधिकार, महिमा, पंक्ति, स्थान, शब्द, स्वरूप, कलिमा।
पदग० }
पदचर० } गु० पैदल, पियादा।
पदच्युत० गु० महिमासे जो भ्रष्ट, अधिकार से बदलजाना, बदलना।
पदज० ना० पु० पांवकी अंगुली।
पदना० ना० पु० } पदकर, पादू, दरपोंक-
पदनी० ना० स्त्री० } ना।
पदपटी० ना० स्त्री० एकप्रकारका नृत्य।
पदपत्र० ना० पु० पुष्करमूल, कमल के पत्ता, अधिकारका पत्र।
पदपीठ० ना० पु० खड़ाऊं, जूता।
पदम० ना० पु० पद्म।
पदवी० ना० स्त्री० पंक्ति, वंशकानाम, आस्पद, मार्ग, अधिकार।

निशाचर० ना० पु० राक्षस, चोर, उलूकादि, चन्द्रमा आदि नक्षत्र ।
निशाटन० ना० पु० निशाचर ।
निशि० ना० स्त्री० निशा ।
निशिचर० ना० पु० निशाचर ।
निशिनाथ० ना० पु० चन्द्रमा, चांद ।
निशिमुख० ना० पु० सन्ध्या, सांझ ।
निशिभानु० ना० पु० चन्द्रमा ।
निशीथ० ना० पु० आधीरात ।
निशीश० ना० पु० चन्द्रमा, चांद ।
निश्चय० ना० पु० निर्णय, विश्वास; गु० ठीक ।
निश्चल० गु० स्थिर, अचल ।
निश्चित० गु० निर्णीत ।
निश्चिन्त० गु० चिन्तारहित, विनाखटके ।
निश्चेष्ट० गु० चेष्टारहित, मूर्च्छित ।
निश्छिद्र० गु० निर्दोष छिद्ररहित ।
निःश्रेणी० ना० स्त्री० निसेनी, सीढ़ी, जीना ।
निश्श्वास० ना० पु० श्वास, श्वासवायु ।
निश्शेष० गु० अशेष, समस्त, सब ।
निषाद० ना० पु० गाने में पहिला स्वर, चाण्डाल संकरवर्णी, केवट, मल्लाह ।
निषिद्ध० गु० जो कर्त्तव्य नहीं वर्जित ।
निषिद्धता० ना० स्त्री० निवारण, कर्त्तव्य रहित, इन्कार ।
निषेद० ना० पु० अदुःख, दुविधा ।
निषेध० ना० पु० इन्कार, निवारण, कर्त्तव्य रहित ।
निषेधित० गु० वर्जित, निवारित ।
निष्क० ना० पु० दीरा, १६ टङ्कका प्रमाण ।
निष्कण्टक० ना० पु० उपाधिरहित, बेधड़क ।
निष्कपट० गु० सत्य, सच्चा, छलहीन, भोला ।
निष्कर्ष० ना० पु० निश्चय ।
निष्कारण० गु० विना प्रयोजन, बे सबब ।
निष्केवल० गु० एकही, सत्यकर ।
निष्क्रमण० ना० पु० संस्कार विशेष ।

निष्ठ० गु० स्थापित, तत्पर, उत्तम, उत्कर्ष ।
निष्ठमति० ना० स्त्री० उत्तमबुद्धि, उत्तमज्ञान ।
निष्ठा० ना० स्त्री० विश्वास, भरोसा ।
निष्ठुर० गु० निठुर, निर्दय, कठोर, अप्रीति ।
निष्ठुरता० ना० स्त्री० } कठोरता, निर्दयता,
निष्ठुरत्व० ना० पु० } निठुरता ।
निष्पत्ति० ना० स्त्री० सिद्धि, समाप्ति ।
निष्पन्न० गु० कृत, बना, सिद्ध ।
निष्पादन० ना० पु० सम्पादन ।
निष्पाप० } गु० पापरहित, निर्दोष ।
निष्पापी० }
निष्प्रपञ्च० गु० छलहीन ।
निष्प्रयोजन० गु० व्यर्थ, विनाप्रयोजन ।
निष्फल० गु० फलहीन, वृथा, बेफायदह ।
निस० ना० स्त्री० निशा ।
निसक्त० गु० असक्त, पौरुषरहित ।
निसंक० गु० निश्शंक ।
निसंकट० गु० संकटरहित ।
निसन्धि० गु० ठोस, सन्धिरहित ।
निसरना० अ० क्रि० निकसना ।
निसांस० गु० आहभरना ।
निसांसी० गु० तंग, हैरान ।
निसान० ना० पु० तूर्य, नक्कारह ।
निसास० ना० पु० विश्वास ।
निसि० ना० स्त्री० निशि ।
निसित० गु० पैनी० तेज, धारदार ।
निसेनी० ना० स्त्री० सीढ़ी, जीना ।
निसोत० ना० पु० औषधि विशेष, गु० ठोस
निस्तार० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, उद्धार ।
निस्तारा० ना० पु० निपटारा ।
निस्तारना० स० क्रि० निस्तार करना ।
निस्तेज० गु० प्रतापहीन, तेजरहित ।
निस्तोक० ना० पु० चुकौता, निपटारा ।
निस्पंद० ना० पु० निश्चेष्ट, हिसाब ।
निस्पृह० गु० लालसाहीन ।
निस्व० गु० निर्धन, दरिद्री ।

पदयुक्त० ना० पु० शब्द, जो दो शब्दोंसे मिलित हो।

पदस्थ० ना० पु० जो अपनी पदवीपर स्थिर रहे।

पदत्राण० ना० पु० जूता।

पदात० ना० पु० पैरकीमार, चरणका घात।

पदाति० ना० पु० पैदल, पियादह, सेवक।

पदाना० स० क्रि० थापु, छोड़ाना, डराना, खेल में हराना।

पदाभिषिक्त० ना० पु० राज्यस्थान में जो अभिषेकित हो।

पदार्थ० ना० पु० वस्तु, अनूप वस्तु और शब्द का अर्थ, द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ अभाव ७, ये सात।

पदिक० ना० पु० जड़ाऊ चौकी, हीरा।

पदुत्तम० ना० पु० सेंधयलोन, उत्तमपदवी।

पदोड़ा० गु० पादू, पदक्कड़, डरपोक।

पद्मराग० ना० पु० पतंगवृक्ष।

पद्वी० ना० स्त्री० पांडुरवृक्ष।

पद्धति० ना० स्त्री० पदवी, मार्ग, दस्तूर, रीति।

पद्म० ना० पु० कमल, चिह्न जो चरणादि में होता है, विष्णु का अस्त्रविशेष, सौनील, १००००००००००००००।

पद्मक० ना० पु० पद्माक, मुख्य सां।

पद्मकर्कटी० ना० पु० कमलगट्टा।

पद्मनाभि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम।

पद्मराग० ना० पु० लालमणि, माणिक।

पद्मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, माही, नदीविशेष।

पद्माकर० ना० पु० कमलयुक्त तालाब, समुद्र, धनवान्।

पद्माह्व० ना० पु० कमलगटा।

पद्मावती० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष, पद्मिनी, छन्दविशेष, नदीविशेष।

पद्मिनी० ना० स्त्री० कमलिनी, उत्तम स्त्री।

पद्मी० ना० पु० हाथी।

पद्य० ना० पु० श्लोक, छन्द, नज़्म।

पधारना० अ० क्रि० विदाहोना, जाना, स्थिर करना।

पन० ना० पु० पण, अपत्यबोधक यथा, बालपन, पानी।

पनघट० ना० पु० पानी भरनेका घाट।

पनच० ना० स्त्री० रोदह, चिल्ला।

पनचक्की० ना० स्त्री० वह चक्की जो पानी से चलाते हैं।

पनचोरा० ना० पु० पात्रविशेष।

पनपना० अ० क्रि० मोटा होजाना, प्रफुल्लित होना।

पनपनाहट० ना० स्त्री० सनसनाहट।

पनभत्ता० ना० स्त्री० पानी और भातकी मिलोनी।

पनय० ना० पु० दोस।

पनवार० ना० पु० पौधाविशेष, राजपूतों में जातिविशेष।

पनवारा० ना० पु० पत्तल।

पनवारी० ना० स्त्री० जिस स्थान में पान उपजता है।

पनस० ना० पु० कटहल।

पनसल्ला० ना० पु० पियाऊ, जहां पथिकादि को पानी पिलाते हैं।

पनसा० गु० फीका, अलोना, ना० पु० छालादा।

पनसारा० ना० पु० औषधि, किराना आदि।

पनसारी० ना० पु० किराना बेचनेवाला।

पनसाल० ना० पु० पनसल्ला।

पनसोई० ना० स्त्री० छोटी नावविशेष।

पनहा० ना० पु० पता, चिह्न, सुराग, चौड़ान वस्त्रका।

पनहाना० अ० क्रि० दूध उतरना, पन्हाना।

पनहारा० ना० पु० पनभरा।

पनहारिन्० } ना० स्त्री० पानी भरनेहारी
पनहारी० } स्त्री।

पनही० ना० स्त्री० जूती।

निस्वना० गु० ध्वनि, शब्द।
निस्सन्देह० गु० सन्देहरहित, बेतरके।
निहंग गु० नंगा, अचिन्त।
निहत्था० गु० औहथा, अस्त्र रहित, लूला, हाथ रहित।
निहाई० ना० स्त्री० लोहेकी वस्तु विशेष जिसपर सोना आदि गढ़ते हैं।
निहाली० ना० स्त्री० रेज, कपड़े।
निहार० ना० पु० अन्धकार, कुहिरा, रामायणे यथा, जिमिनिहार में दिनकरदुरा, दोटे।
निहारना० स०क्रि०देखना, विलोकना, झांकना।
निहारा० स० क्रि० देखा।
निहुरना० अ० क्रि० लचना, झुकना, दबना।
निहुराना० स० क्रि० लचाना, झुकाना, दबाना।
निहोर० } ना० पु० कृपा, उपकार, बिनती,
निहोरा० } फुसलाहट, खुशामद।
निःक्षिप्र० गु० जो निःक्षेप, कियाजावे, त्यागित।
निःक्षेप० ना० पु० परित्याग, धरोहर।
नींद० ना० स्त्री० औघाई, निद्रा।
नींदना० अ० क्रि० सोना, स०क्रि० मुकरना।
नींदू० ना० पु० सोवैया।
नींव० ना० पु० वृक्ष विशेष, निम्ब।
नींबू० ना० पु० लीम्बू, फल विशेष।
नीक० गु० भला, अच्छा।
नीका० } गु० सुन्दर, भला, अच्छा।
नीको० }
नीच० गु० छोटा, कमीना, हीन, कुत्सित, निकम्मा। तले, हेठ)
नीचगामी० गु० जो नीचेजाता है, यथाजल।
नीचा० गु० ऊंचे के विरुद्ध, नसेव।
नीचाई० ना० स्त्री० छोटाई, नीचापन।
नीचे० अव्य० तले।
नीठ० गु० तुम्हारा।
नीति० ना० स्त्री० उचित, व्यवहार, रीति कानून।
नीतिज्ञ० गु० धार्मिक, न्यायी।
नींद० ना० स्त्री० नींद।
नींदना० स० क्रि० नाखानना, मुकरजाना।
नीप० ना० पु० कदमवृक्ष।
नीपुर० ना० पु० लिङ्ग।
नीबी० ना० स्त्री० कोछी, जो स्त्रियांआगे बांधती हैं।
नीबू० ना० पु० निम्बू।
नीम० ना० पु० नींब।
नीमन० गु० निमन।
नीमावत० ना० स्त्री० नीमानन्दसंन्यासीका पन्थ।
नीर० ना० पु० जल, पानी।
नीरज० ना० पु० कमल, जो जलजातहो।
नीरथ० गु० निरर्थ, निष्फल।
नीरद० ना० पु० मेघ।
नीरधर० ना० पु० मेघ, समुद्र।
नीरस० गु० निरस रसहीन, फीका।
नीरोग० गु० निरोग, आरोग्य।
नीरोगी० गु० चंगा, भला, रोगहीन।
नील० गु० कृष्णवर्ण विशेष, काला, ना० पु० वस्तु विशेष जो वृक्षके अत्तों से बनाते हैं मुख्य वानर सौ खर्व, १०००००००००००००।
नीलक० गु० नीला, ना० पु० नीलरंग का हरिण विशेष, बीजगणित में विशेष प्रमाण।
नीलकण्ठ० ना० पु० पक्षी विशेष, मोर, अग्नि और श्रीशंकरजी।
नीलगवय० ना० पु० नीलगाव, रोझ।
नीलगाव० ना० पु० रोझ।
नीलता० ना० स्त्री० } श्यामता, कालापन।
नीलत्व० ना० पु० }
नीलपर्वत० ना० पु० विन्ध्यका एकभाग, जो उड़ीसा के दक्षिणदे, हरिद्वार के समीप तीर्थ विशेष।
नीलपुष्पी० ना० स्त्री० विष्णुकान्ता, अलसी।
नीलबट्टी० ना० स्त्री० नीलकी बट्टी।
नीलम० } ना० पु० मणि विशेष।
नीलमणि० }

पनारा० } नाo पुo मोरी, नाबदान, बदरी।
पनाला०
पनारी० नाo स्त्री० छोटा पनाला।
पनिया० नाo पुo पानी, जलका सांप।
पनियाना० सo क्रि० सींचना, भिगोना; अo क्रि० पानी भर आना।
पनियाला० नाo पुo फलविशेष।
पनीहा० नाo पुo जलजन्तु।
पन्थ० नाo पुo मार्ग, मत, धर्म, अर्हन्त।
पन्था० नाo पुo पन्थ।
पन्थान० नाo पुo मार्ग, बाट, सड़क।
पन्थी० नाo पुo हरेनी, माया, जीव, ईश्वर, अभिमन्यु, पाथिक, मतावलम्बी।
पन्नग० नाo पुo सांप।
पन्नगपति० नाo पुo शेष, सर्पराज।
पन्नगारि० नाo पुo गरुड़, मोर, नेवला।
पन्ना० नाo पुo रत्नविशेष, पत्र।
पन्नी० नाo स्त्री० सुवर्ण इत्यादि का बहुत सूक्ष्म-पत्र।
पपड़ा० नाo पुo टुकड़ा, चूर।
पपड़िया० नाo स्त्री० छोटा पपड़ा।
पपड़ियाकथ० नाo पुo श्वेत कत्था।
पपड़ी० नाo स्त्री० देवली, छिलका, परत, पाकविशेष।
पपड़ीला० गुo परतीला, पपड़ीदार।
पपनी० नाo स्त्री० बरनी।
पपरा० नाo पुo पपड़ा।
पपरी० नाo स्त्री० पपड़ी।
पपीहा० नाo पुo चुहेमार, तुमेती, पक्षी विशेष जो कभी पानी नदी आदिका नहीं पीता है।
पपैया० नाo पुo खिलौना विशेष, वृक्षविशेष या उसका फल।
पय० } नाo पुo दूध, पानी, अमृत, दोष अव्य० ऊपर, तौभी।
पयः०
पयद० नाo पुo मेघ, गाय।
पयोधि० नाo पुo समुद्र।
पयोदधि० } नाo पुo क्षीरसमुद्र अर्थात् दूध या जलका समुद्र।
पयोनिधि०
पयस्विनी० नाo स्त्री० विदारीकन्द, दुधारगाय आदि, खास जो बायें कानमें प्रकाशित है।
पयान० } नाo पुo चाला, बिदा।
पयाना०
पयार० नाo पुo तृणविशेष।
पयोधर० नाo पुo स्तन, चूची, मेघ, तृणविशेष, मदारवृक्ष, पर्वत, समुद्र, राजा।
पर० गुo दूसरा, दूर, पराया, शिरोमणि, परे, अव्य० ऊपर, द्वारा, उपरान्त, तत्पर।
परकना० अo क्रि० सधना, अभ्यासी होना।
परकाज० नाo पुo परायाकार्य्य, और का काम।
परकाजी० गुo पराया काम करनेवाला वा शोचनेवाला, परार्थी।
परकाना० सo क्रि० सधाना, सिखाना।
परकाय० गुo दूसरेका, आनका।
परकीया० नाo स्त्री० पराई स्त्री वा परपुरुषरत स्त्री।
परख० नाo स्त्री० परीक्षा, तजरुबा।
परखना० सo क्रि० परीक्षा करना, जांचना।
परखाई० नाo स्त्री० परखनेका काम वा उसका पैसा।
परखाना० सo क्रि० परीक्षाकराना, जांचवाना।
परखा० } गुo परीक्षक, परखनेहारा।
परखैया०
परच्चा० नाo पुo परीक्षा, इम्तहान।
परचून० नाo पुo आटा दालि आदि।
परचूनिया० नाo पुo बनिया, परचून बेंचनेहारा।
परचौ० नाo पुo परीक्षा, परखकरना, इम्तहान।
परछिद्र० नाo पुo पराया छेद, पराया भेद।
परजंक० नाo पुo खाट, सेज।
परजा० नाo स्त्री० प्रजा।

परत० ना० पु० लड़, पपड़ा, तह।
परतंत्र० ना० पु० पराधीन जो औरके काबू है।
परतल० ना० पु० टेराडएडा।
परतला० ना० पु० डांब, जिसमें तलवार रखते हैं।
परता० ना० पु० परेता, चरखी, बाछ।
परती० ना० स्त्री० पेंजर, पड़ीहुई धरती वा कपड़े से पवन करके अन्न साफ करना।
परतीत० ना० स्त्री० प्रतीत, निश्चय।
परदादा० ना० पु० दादाका बाप।
परदादी० ना० स्त्री० दादे की माता।
परदार० } ना० स्त्री० पराई स्त्री।
परदारा० }
परदेश० ना० पु० आनदेश, विदेश।
परदेशी० गु० अन्यदेशी, अनजान, विदेशी।
परद्रोह० ना० पु० परायावैर, आनका विरोध।
परद्रव्य०ना० पु० परायाधन।
परधन० ना० पु० पराया द्रव्य, परायाधन।
परन० ना० पु० प्रण, प्रतिज्ञा, परण।
परनाना० ना० पु० नाना का बाप, प्रमातामह।
परनाला० ना० पु० } मोरी, नावदान, नाला।
परनाली० स्त्री० }
परन्तु० अव्य० किन्तु, लेकिन।
परपंच० ना० पु० प्रपंच, छल, धोखा, कपट।
परपंची० गु० प्रपंची, छली, कपटी, लपाटी।
परपराना० अ० क्रि० चरपराना।
परपराहट० ना० स्त्री० चरपराहट।
परपुष्टा० ना० स्त्री० कोयल पक्षी।
परपूरन० गु० परिपूर्ण, भरपूर।
परपेठ० ना० पु० हुएडीका उतारा।
परब० ना० पु० पर्व्व, उत्सव, अध्याय, त्योहार।
परबल० गु० प्रबल।
परम० गु० उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, अत्युत्तम, बड़ा।
परमल० ना० पु० चबेण विशेष।
परमविरत० गु० योगेश्वर, सिद्ध, अतिलीन।
परमहंस० ना० पु० योगी विशेष।
परमज्ञान० ना० पु० शुद्ध विज्ञान।
परमा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति।
परमाणु० ना० पु० अत्यन्त सूक्ष्मवस्तु।
परमात्मा० ना० पु० परब्रह्म, भगवान्, ईश्वर।
परमान्न० ना० पु० पायस, खीर।
परमायु० } ना० स्त्री० जीवनकाल, समस्त आयु।
परमायुष० }
परमार्थ० ना० पु० कार्य्य वा व्यवहार जो सब से उत्तम है, कीर्ति, पुण्यतत्त्व वस्तु।
परमार्थी० गु० भक्त, कीर्त्तिमान् उत्तमकार्य्यी।
परमीश० } ना० पु० परमात्मा, सर्व्वोपरिस्थ, ईश्वर।
परमेश्वर० }
परमेष्ठी० ना० पु० ब्रह्मा।
परमोधु० मूर्च्छना, बेहोशी।
परम्परा० ना० स्त्री० क्रमागत, प्राचीन।
परलोक० ना० पु० स्वर्ग, मरने के पीछे जो लोक।
परवर० } ना० पु० पलवल, तरकारी विशेष।
परवल० }
परवश० } गु० अस्वाधीन, पराधीन।
परवस० }
परब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर।
परशाद० ना० पु० प्रसाद।
परशु० ना० पु० फरसा।
परशुधर० } ना० पु० विष्णु नारायण का छठा अवतार।
परशुराम० }
परश्वः० अव्य० परसों।
परस० ना० स्पर्श, छुआवट।
परसना० स० क्रि० छूना, परोसना।
परसिया० ना० पु० हसिया।
परसी० ना० पु० मच्छी मार, रामचन्द्रिकायां यथा, बक हिये न प्रभा सरसीसी, कर्दम काम कछू परसीसी, कामना कामिनि डोरि गसीसी, मीनमनुष्यन की बनसीसी, कि० छद, मिलो।

पाला० नां० पु० शीत, जाड़ा, कोहर, हिम ।
पालागन० ना० पु० पांवछूना, प्रणाम ।
पालाश० ना० पु० ढाक का वृक्ष, गु० हरित ।
पालि० ना० स्त्री० मागधी, प्राकृत भाषा जिस को स्याम आदि देशके पण्डित सीखते हैं ।
पालिक० ना० पु० पालक, खाट ।
पालिकोण० ना० पु० परिधि का कोना ।
पालित० गु० पाला गया, रक्षित ।
पालिन्द्री० ना० पु० गोमा, सूमा, पौधा ।
पाली० ना० स्त्री० बंगाल देशमें तोलने आदि का यन्त्र, जिस स्थान में पक्षी लड़ते हैं ।
पाल्य० ना० पु० पालने के योग्य ।
पावक० ना० पु० अग्नि, कुसुम्भ ।
पावड़ा० ना० पु० पांवड़ा ।
पावन० ना० पु० पाक, पवित्र, जल ।
पावना० स० क्रि० पाना ।
पावरी० ना० स्त्री० खड़ाऊं ।
पावस० ना० स्त्री० वर्षाऋतु, बरसात ।
पाश० ना० पु० पाशा, फांस ।
पाशा० ना० पु० पांसा ।
पांशुभव० ना० पु० खारी, लोन ।
पाषण० ना० पु० पाषाणभेद ।
पाषण्ड० ना० पु० वेदविरुद्ध, अतिदुरात्मा, कपट वा कपटी ।
पाषण्डता० ना० स्त्री० अपनिन्दा, कपट ।
पाषण्डी० गु० कपटी, वेदविरुद्धी, दुरात्मा ।
पाषाण० ना० पु० पत्थर ।
पास० अव्य० समीप, निकट, ना० पु० पाश ।
पासपाति० ना० पु० वरुण देव ।
पासी० ना० स्त्री० फांसी, ना० पु० वरुणदेव, नीचजाति विशेष, फांसी डालने हारा ।
पाहन० ना० पु० पत्थर ।
पाहनकृमि० ना० पु० एक कीड़ा होता है, जो पत्थर में अपना घर बनाता है ।
पाहरू० ना० पु० चौकीदार, पहरुआ ।

पाहि० अव्य० दयाचाहना, पाहि, रक्षाकरो ।
पाही० ना० स्त्री० आनगांव में खेती वा आनगांव की आसामी, अव्य० पास ।

पाहुन० ना० पु०
पाहुना० ना० पु०
पाहुनी० स्त्री० } अतिथि, महिमान ।

पिउ० गु० प्रिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम ।
पिक० ना० पु० कोकिल, कोयल ।
पिकप्रिय० ना० पु० आम्रवृक्ष, आम ।

पिकवयनी०
पिकबैनी० } गु० जिसकी का स्वर पिकके समान हो ।

पिकवल्लभ० ना० पु० आमवृक्ष ।
पिघलना० अ० क्रि० टिघलना, गलना ।
पिघलाना० स० क्रि० टिघलाना, गलाना ।
पिंगल० ना० पु० छन्द शास्त्रका नाम, नाग विशेष, न्योला, कांच, गु० वर्ण विशेष ।
पिंगला० ना० स्त्री० श्वास विशेष जो दहिने पुट में नासिका के प्रकाशित होती है ।
पिंगरा० ना० पु० पालना, हिंडोला ।
पिचकना० अ० क्रि० दबना, सिकुड़ना, सिमटना ।
पिचकारना० स० क्रि० दबाना, समेटना, कोरना ।
पिचकारी० ना० स्त्री० पनूका, पदमकला, जिस में रंगादि भरके छोड़ते हैं ।
पिचपिचा० गु० पिलपिला, ढीला ।

पिचिका०
पिचुका० } ना० पु० पिचकारी ।

पिचुमन्द० ना० पु० नींबका वृक्ष ।
पिछलन० ना० पु० फिसलना, खिसलना ।
पिछलना० अ० क्रि० हटना, फिसलना ।
पिछला० गु० पिछाड़ी वा पीछेका ।
पिछलाना० स० क्रि० पीछे करना वा पीछे करना ।

पिछवाड़ा० ना० पु०
पिछवाड़ी० स्त्री० } पीछा, पीछेकास्थान ।

परसूत० ना० पु० रोग विशेष।

परसूतिया०
परसूती० } गु० जिसको परसूतरोगहो।

परसों० अव्य० अगिला वा पिछला, तीसरादिन।

परस्पर० अव्य० आपुस में।

परहित० ना० पु० परायाकाम, परस्वार्थ।

परत्र० अव्य० परलोक में।

परा० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह मिलता है उसका अर्थ कभी प्रभुता, कभी उलटाई, कभी अहंकार, कभी अधिकाई आदि होता है, ना० पु० श्रेणी, पंक्ति, क़तार।

पराक्रम० ना० पु० सामर्थ्य, पौरुष।

पराक्रमी० गु० सामर्थी, बलवान्।

पराग० ना० पु० फूलकी रज वा धूलि।

परामुख० ना० पु० विमुख, मुखफिरा।

पराजय० ना० पु० पराभव, भगेल, हार।

पराजयी० गु० पराजय करनेवाला।

पराजित० गु० जिसका पराजय हुआ, जो हार गया।

पराजिता० ना० स्त्री० विष्णुक्रान्ता, पौधा।

पराठा० ना० पु० एकप्रकार की रोटी विशेष।

परात० ना० पु० बड़ीथाली, थाल।

परातिक्ता० ना० पु० लाल पुनर्नवा।

पराती० ना० स्त्री० परात, थाल।

पराधीन० गु० जो निजवश में नहीं है, परवतंत्र।

पराना० अ० क्रि० भागना, पंजरियाना।

परानी० ना० पु० प्राणी, जीवधारी।

परान्न० ना० पु० और का अन्न अर्थात् दूसरे की कमाई वा लागत का भोजन।

पराभव० ना० पु० पराजय, निरादर, हार।

पराभूत० गु० जो पराजय होगया, जो हारगया।

परामर्श० ना० पु० विचार, मंत्र, उपदेश।

परामोधना० ना० पु० फुसलाहट।

परायण० ना० पु० किसी काममें मनकी लगावट होनी, गु० गटपट, तत्पर।

पराया० गु० और का, द्वितीय का।

परारा० गु० पराया।

परालब्धि० ना० स्त्री० भाग्य, दैवगति, द्वितीय जन्म अर्थात् पिछले जन्म कर्म का फल भोग।

परावती० ना० स्त्री० कागनंधा बूटी।

परावह० ना० पु० मुख्य पवन।

पराशर० ना० पु० वेदव्यासजी के पिता मुनि विशेष।

परास० ना० पु० पलास वा रस्सी जो उसकी छाल से बनती है।

परासर० ना० पु० पराशर।

परास्त० गु० खराब, नष्ट, तहबाला।

पराह० ना० स्त्री० भागाभाग, देशत्याग।

पराह्ण० ना० पु० दोपहर दिन चढ़े के उपरान्त।

परि० अव्य० अति, पास, जिस शब्द की आदि में यह युक्तहोता है उसका अर्थ कभी चारों दश कभी भाग, कभी त्याग, कभी अवधि, और कभी अधिक आदि होजाता है।

परिकर० ना० पु० कमरफेंट।

परिक्रमा० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा।

परिखा० ना० स्त्री० खाई।

परिगणन० ना० पु० मापना, गिनना।

परिग्रह० ना० पु० पड़ोसी, निकटवासी।

परिघ० ना० पु० वज्र, पर्वत, बाण, सूर्य्य, चांद, शेष, जल और घोंड़ा।

परिचय० ना० पु० मेल मिलाप, जान पहिचान।

परिचर० ना० पु० परिधिस्थ, परिसेवक।

परिचर्य्या० ना० स्त्री० सेवा, ख़िदमत।

परिचारक० ना० पु० सेवक, ढंढोरिया, जमादार।

परिचारी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।

परिच्छिन्न० ना० पु० परिमित, छीन, क्षीण।

परिच्छेद० ना० पु० विभाग, अध्याय, पर्व।

पिछाड़ी० ना० स्त्री० पीछे के पेर बांधने की रस्सी पश्चात्, पीछे।
पिछान० ना० स्त्री० पहिंचान।
पिछाने० गु० जानेहुये, पहिंचाने भये।
पिछूत० अव्य० पीछे, उपरान्त ना० पु० घरका पिछवाड़ा।
पिछेत० ना० पु० घरका पिछवाड़ा।
पिछौरा० ना० पु० चद्दर, दुपटा।
पिछौरी० ना० स्त्री० छोटा पिछौरा।
पिंजर० } ना० पु० पक्षी आदि रखनेका घर
पिंजरा० } जो काठ वा लोहादिका बनता है।
पिंजल० ना० पु० तीतर, पक्षी।
पिंजूषा० ना० पु० कानका मैल।
पिट० ना० पु० नड़कुल।
पिटना० अ० क्रि० मारखाना।
पिटारा० ना० पु० कपड़ा आदि रखने का डब्बा जो तृणादि का होता है।
पिटारिया० } ना० स्त्री० छोटा पिटारा।
पिटारी० }
पिंड० ना० पु० तन, देह, गोलवस्तु, श्राद्धका गोलाकार अन्न, जो चावलादि के मृतक हेतु देते हैं, क्षेत्र, खेत, गांव।
पिंडफला० ना० स्त्री० कड़ई तोमड़ी।
पिंडाली० ना० स्त्री० फोली।
पिंडा० ना० पु० पिण्डा, टुकड़ा, मैनफल।
पिंडारा० ना० पु० लुटेरा, चालाक।
पिंडारव० ना० पु० मैनफल।
पिंडालुका० ना० पु० पिण्डालू।
पिंडालू० ना० पु० फलविशेष, औषधि जड़।
पिंडी० ना० स्त्री० महादेवजी के लिंगका ऊपरी भाग, पिण्डली, बालू से बनाईहुई छोटी बेदी।
पिंडीमुस्त० ना० पु० नागरमोथा।
पिंडुक० ना० पु० धूघू।
पिण्डोल० ना० पु० माटी विशेष, पोतना।
पिण्याक० ना० पु० पीना, खली।
पितर० ना० पु० पूर्वज, पितृ।
पितराई० ना० स्त्री० पितृ के तीनि पीढ़ा के सम्बन्धी, पीतलका मुर्चा।
पितरौ० ना० पु० माता, पिता।
पितरौआ० ना० पु० पितृ पूजने का पात्र।
पितलाना० अ० क्रि० पितराई से बिगड़ना।
पिता० ना० पु० जनक, बाप।
पितामह० ना० पु० ब्रह्मा, पिता का पिता, दादा, आजा।
पितामही० ना० स्त्री० पिताकी माता, दादी।
पितिया० ना० पु० चाचा, बापका भाई।
पितु० ना० पु० पिता, बाप।
पितृ० ना० पु० पिता, देवता, पुरुषा।
पितृघातक० ना० पु० जो पुत्र पिता का बैरी होवे।
पितृपति० ना० पु० धर्मराज।
पितृपक्ष० ना० पु० आश्विन मासका कृष्णपक्ष, कनागत।
पितृव्य० ना० पु० बड़ाचचा, पिता का भाई।
पितृऋण० ना० पु० पिताका ऋण।
पित्त० ना० पु० शरीरका धातु विशेष, सफ़रा।
पित्तलोह ना० पु० पीतल।
पित्ता० ना० पु० शरीर का भीतरी अंग जिस में पित्त रहताहै, क्रोध, कलेजा, जहरा।
पित्तिनी० ना० स्त्री० शालपर्णी।
पित्तपापड़ा० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।
पिधान० ना० पु० आच्छादन, ढकना, पोशाक।
पिन० ना० पु० शर्वद, शब्द।
पिनकी० ना० स्त्री० पीनकवाला।
पिनपिनाना० अ० क्रि० टंकोरना, टनटनाना।
पिनहाना० स० क्रि० पहिराना।
पिनाक० ना० पु० श्रीमहादेवजी का धनुष बाजा विशेष।
पिनाकी० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पिन्ना० ना० पु० पीना खली।
पिन्नी० ना० स्त्री० चावल आदि का लड्डू।

परिजन० ना० पु० परिवारके लोग, निकटवासी।
परिणाम० ना० पु० अन्त, समाप्ति, अवस्थान्तर की प्राप्ति।
परिणाह० गु० विशाल, मोटा, स्थूल।
परितः० अव्य० चारों ओर सर्वत्र।
परिताप० ना० पु० सन्ताप, दुःख, शोक, पीड़ा।
परितोष० ना० पु० सन्तोष, प्रसन्नता।
परित्राण० ना० पु० रक्षा, रखवाली, पालना।
परित्राता० गु० रक्षक, पालनेवाला।
परित्यक्त० गु० जो सर्वप्रकारत्यागित।
परित्याग० ना० पु० जो भलीभांति त्याग।
परिदेवन० ना० पु० विलाप, शोक, रोना।
परिधन० } ना० पु० कपड़ापहिरनेके, रामायणे,
परिधान० } जटा मुकुट परिधन मुनि चीरा।
परिधि० ना० स्त्री० वेष्टनकीमाप, मण्डल, घेरा।
परिधेय० गु० पहिरायागया।
परिन० } ना पु० विवाह, नाम माला, परि-
परिनैन० } ननिवेशन, परिनैन, उद्वाह, जून, विवाह।
परिपक्व० गु० पक्का, पटु।
परिपन्थी० गु० वैरी, शत्रु।
परिपाक० गु० पक्का, ना० पु० समाप्ति और अन्त।
परिपाटी० ना० स्त्री० अनुक्रम, उत्क्रम, रीति, दस्तूर।
परिपेष्टक० ना० पु० सीसा धातु।
परिपूरण० }
परिपूरन० } गु० समस्त, सम्पूर्ण, सर्व्व, सब।
परिपूर्ण० }
परिवाह० ना० पु० मुख्य पवन।
परिभद्र० ना० पु० नीवृक्ष।
परिभव० ना० पु० पराभव, अनादर, बदनामी।
परिभाषा० ना० स्त्री० व्याकरणादि शास्त्र का संकेत।
परिभ्रमण० ना० पु० फिरना, घूमना।
परिभृत० ना० पु० कोकिला, अच्छा सेवक, यथा, वनप्रियाः परिभृतः कोकिलापिकइत्यपि, इत्यमरः रामचन्द्रिकायां, देखो शुभगिरिवर स-कल शोभावर फूलवरष बहु फलनिफरे, संगसरभ ऋष जन केशरिकेनन मनहुं धरनि सुग्रीव धरे, संगशिवा विराजै गज मुखगाजै परिभृतबोलै चित्त हरे, शिरशुभचन्द्रकधर परम दिगम्बर मानोहर अहिराज धरे, इस छन्द में श्लेष है इस लिये परिभृत के दोनों अर्थ सिद्ध हैं।
परिमाल० ना० पु० सुगन्धित, सुवास।
परिमाण० ना० पु० परिच्छेद करना, बाट, बटखरा।
परिमित० गु० जो नापागया, मिलाहुआ।
परिवर्त्त० ना० पु० बदल, एराफेरी, भागाभाग।
परिवर्त्तन० ना० पु० बदला, एराफेरी करना।
परिवाद० ना० पु० गाली, उलहन, निन्दा।
परिवार० ना० पु० घराने के लोग, पौष्यजन, वंश।
परिवृढ० ना० पु० स्वामी, नायक, मालिक।
परिवृत्त० गु० चारों ओर से घिराहुआ।
परिवेष० ना० पु० घेरा, गोलाई, परिधि।
परिवेषण० ना० पु० लपेटना, भोजन का परोसना।
परिवेष्टित० गु० जो लपेटागया, घेरागया।
परिव्राजक० ना० पु० सन्यासी।
परिव्राजी० ना० स्त्री० भ्योड़ी, पौधा, मुण्डी।
परिशोध० ना० पु० ऋणको चुकायदेना।
परिश्रम० ना० पु० आयास, श्रम, थकान, क्लेश, मिहनत।
परिश्रमी० गु० कामकाजी, धुर्ना, मिहनती।
परिष्कार० ना० पु० शोभा, आभूषण।
परिष्कृत० गु० शोभित, आभूषित।
परिहरना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना, खेलना।
परिहार० ना० पु० अवज्ञा, अपमान, और राजपूतों में जाति विशेष।

पिपासा० ना० स्त्री० प्यास, तृषा।
पिपासित० गु० प्यासा, तृषित।
पिपील० ना० स्त्री० चींटी, रामायणे यथा, जिमि पिपील चढ़ सागर थाहा।
पिपीलक० ना० पु० चींटा।
पिपीलका० } ना० स्त्री० चींटी।
पिपीलिका० }
पिप्पल० ना० पु० पीपल वृक्ष।
पिप्पली० ना० स्त्री० पीपली।
पीय० ना० पु० प्रिय, प्रीतम, स्वामी, पति।
पियाना० स० क्रि० पिलाना।
पियार० ना० पु० प्यार, लाड़, दुलार।
पियारा० गु० प्यारा, लाड़ला, दुलारा।
पियाल० ना० पु० चिरोंजी, धान वा कोदी की घास।
पियासी० ना० स्त्री० मछली विशेष, तृषित स्त्री।
पिरकी० ना० स्त्री० फुड़िया।
पिराना० अ० क्रि० दुखना, दर्द होना।
पिरोना० स० क्रि० गूंथना, तागना, छेदना।
पिलई० ना० स्त्री० तापतिल्ली।
पिलचना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।
पिलना० स० क्रि० धावाकरना, घुसड़ना, अ० क्रि० पिटना।
पिलपिला० गु० चिपचिपा, ढीला, नम्र।
पिलपिलाना० स० क्रि० ढीलाकरना, नम्र करवाना।
पिलपिलाहट० ना० स्त्री० कोमलता, ढीलापन।
पिलाई० ना० स्त्री० पीने के बदले देना वा पीने का काम।
पिलाना० स० क्रि० पानकराना, घुसेड़वाना।
पिलुआ० ना० पु० पिल्लू, कीट।
पिल्ला० ना० पु० कुत्ते का बच्चा।
पिल्ली० ना० स्त्री० कुत्ते की बच्ची।
पिल्लू० ना० पु० कीट विशेष।
पिशाच० ना० पु० प्रेतविशेष, भूत।
पिशाचग्रस्त० गु० जिस को पिशाच लगा है।
पिशाची० ना० स्त्री० प्रेतिनी, पिशाचकी पत्नी।
पिशितोदन० ना० स्त्री० केसर।
पिशुन० गु० दुष्ट, कठोर, चुगल।
पिशुनता० ना० स्त्री० दुष्टता, कठोरता, चुगली।
पिसाई० ना० स्त्री० पीसने का काम वा पैसा।
पिसान० ना० पु० आटा, चून।
पिसाना० स० क्रि० पिसवाना, बुकवाना।
पिसू० ना० पु० पिस्सू, छोटा जन्तु विशेष।
पी० गु० पिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम।
पीक० ना० स्त्री० पान के रसयुक्त थूक।
पीच० ना० स्त्री० माड़।
पीचू० ना० पु० फल विशेष।
पीछ० ना० स्त्री० माड़।
पीछा० ना० पु० पिछला भाग, पिछाड़ी पड़ना।
पीछे० अव्य० पश्चात्, निदान।
पीटना० स० क्रि० कूटना, मारना।
पीठ० ना० पु० पृष्ठ, देहका पिछला भाग, आसन विशेष।
पीठसार० ना० पु० अंकोल।
पीठा० ना० पु० भोजन विशेष।
पीठी० ना० स्त्री० धोई और पीसीहुई उरद की दाल, पीठ।
पीठीता० ना० पु० पत्रका पृष्ठ।
पीड़० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दया।
पीड़क० गु० पीड़ादायक।
पीड़ना० अ० क्रि० पीड़ित होना, स० क्रि० दण्ड देना।
पीड़ा० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दर्द।
पीड़ाकर० गु० पीड़ादायक।
पीड़ित० गु० दुःखित, क्लेशित, रंजीदह।
पीढ़ा० ना० पु० पटरा, मचिया।
पीढ़ाचन्द्र० ना० पु० पुस्तकों की आदि का समाचार विशेष, दीबाचह।
पीढ़ी० ना० स्त्री० छोटापीढ़ा, वंशकी परम्परा।

परिहास० ना० पु० व्यंग वाक्य, हँसी, ठट्ठा, खिल्ली, कौतुक।
परी० ना० स्त्री० तेल भांडे से निकालने का पात्र विशेष, पारसी भाषा में अप्सरा को कहते हैं।
परीच्छित० गु० दूसरे की इच्छानुसार।
परीक्षक० ना० गु० परीक्षा करनेहारा।
परीक्षा० ना० स्त्री० जांच, खोज, इम्तहान।
परीक्षित० गु० जो जांचा गया, परीक्षा किया गया, ना० पु० अर्जुनका पोता, राजा विशेष।
परु० ना० पु० पोर, गांठ।
परुष० गु० कठोर, ना० पु० कुवचन, गाली, निरसवचन, असह वचन।
परुषाक्षर० ना० पु० कुवचन, असहवचन।
परुष०
परुषक० } ना० पु० फालसा वृक्ष
परे० अव्य० उधर।
परेखा० ना० पु० पछितावा।
परेतना० स० क्रि० अटेरना।
परेतराट्० ना० पु० जमराज।
परेता० ना० पु० अटेरन, चरखी।
परेवा० ना० पु० कबूतर, प्रतिपत्तिथि।
परेश० ना० पु० श्रीभगवान्।
परेह० ना० पु० पलेव।
परोपकार० ना० पु० पराया स्वारथ करना।
परोपकारी० गु० जो पराया उपकार करे।
परोस० ना० पु० निकट, पास, समीप, पड़ोस।
परोसना० स० क्रि० भोजन थाली आदि में रखना।
परोसा० ना० पु० पाक जो किसी को भेजे वा देवें।
परोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़ोसी।
परोसैया० ना० पु० परोसनेवाला।
परोहन० ना० पु० वाहन, रथ, बहल, घोड़ा आदि।
परौहा० ना० पु० चरस, मोट।

परोक्ष० ना० पु० वनवासी, वानप्रस्थ, गु० गुप्त, अगोचर।
पर्चा० ना० स्त्री० परीक्षा।
पर्चाना० स० क्रि० भेंटकरवाना, बातचीत करना, सुलगाना, जलाना।
पर्चूनिया० ना० पु० आटादाल बेचनेवाला।
पर्चूनी० ना० स्त्री० आटादाल बेचनेकाकाम।
पर्छती० ना० स्त्री० छोटी छपरिया जो भीतकी भीतिपर डालते हैं।
पर्छां०
पर्छांई०
पर्छांवा० } ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, प्रतिरूप, अक्स।
पर्ज० ना० स्त्री० ढालका हथकड़ा, रागिनीविशेष।
पर्ण० ना० पु० पत्ता, पात, प्रतिज्ञा, प्रण।
पर्णकुटी०
पर्णशाला० } ना० स्त्री० पत्तोंसे छाया हुआ झोंपड़ा।
पर्दादा० ना० पु० दादाका बाप, प्रपितामह।
परदादी० ना० स्त्री० दादा की माता, प्रपितामही।
पर्पट०
पर्पटक० } ना० पु० पित्तपापड़ा।
पर्यङ्क०
पर्य्यंक० } ना० पु० सेज, खाट, पलँग।
पर्य्यटन० ना० पु० भ्रमण।
पर्य्यटित० गु० भ्रमित, घूमाभया।
पर्य्यन्त० अव्य० तक, लग, ना० पु० आवेर की सीमा।
पर्यवसान० ना० पु० चरम, समाप्ति।
पर्य्याय० ना० पु० क्रम, डौल, अवसर, टीप।
पर्ला० गु० फालसा, उसपारका।
पर्व० ना० पु० त्योहार, उत्सव, बड़ादिन, नहान, अध्याय, मणि, हीरा, कुसमय।
पर्वत० ना० पु० पहाड़, तरकारीविशेष, मुनि वि०।
पर्वतनन्दिनी० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी।
पर्वतारि० ना० पु० इन्द्र।
पर्वतिया० ना० पु० लौकी, लौना, पर्वतवासी।

पिछाड़ी० ना० स्त्री० पीछे के पैर बांधने की रस्सी पश्चात्, पीछे।
पिछान० ना० स्त्री० पहिचान।
पिछाने० गु० जानेहुये, पहिचाने भये।
पिछूत० अव्य० पीछे, उपरान्त ना० पु० घरका पिछवाड़ा।
पिछेत० ना० पु० घरका पिछवाड़ा।
पिछौरा० ना० पु० चद्दर, दुपट्टा।
पिछौरी० ना० स्त्री० छोटा पिछौरा।
पिंजर० } ना० पु० पक्षी आदि रखनेका घर
पिंजरा० } जो काठ वा लोहादिका बनता है।
पिंजल० ना० पु० तीतर, पक्षी।
पिंजूषा० ना० पु० कानका मैल।
पिट० ना० पु० नकुल।
पिटना० अ० क्रि० मारखाना।
पिटारा० ना० पु० कपड़ा आदि रखने का डब्बा जो तृणादि का होता है।
पिटारिया० } ना० स्त्री० छोटा पिटारा।
पिटारी० }
पिंड० ना० पु० तन, देह, गोलवस्तु, श्राद्ध का गोलाकार अन्न, जो चावलादि के मृतक हेतु देते हैं, खेत, गांव।
पिंडफला० ना० स्त्री० कड़ई तोमड़ी।
पिंडाली० ना० स्त्री० फली।
पिंडा० ना० पु० पिण्डा, टुकड़ा, मैनफल।
पिंडारा० ना० पु० लुटेरा, चालाक।
पिंडाराव० ना० पु० मैनफल।
पिंडालुका० ना० पु० पिण्डालू।
पिंडालू० ना० पु० फलविशेष, औषधि जड़।
पिंडी० ना० स्त्री० महादेवजी के लिंगका ऊपरी भाग, पिण्डली, बालू से बनाईहुई, छोटी वेदी।
पिंडीमुस्त० ना० पु० नागरमोथा।
पिंडुक० ना० पु० घूघू।
पिण्डोल० ना० पु० माटी विशेष, पोतना।
पिण्याक० ना० पु० पीना, खली।
पितर० ना० पु० पूर्वज, पितृ।
पितराई० ना० स्त्री० पितृ के तीनि पीढ़ा के सम्बन्धी, पीतलका मुर्चा।
पितरौ० ना० पु० माता, पिता।
पितरौला० ना० पु० पितृ पूजने का पात्र।
पितलाना० अ० क्रि० पितराई से बिगड़ना।
पिता० ना० पु० जनक, बाप।
पितामह० ना० पु० ब्रह्मा, पिता का पिता, दादा, आजा।
पितामही० ना० स्त्री० पिताकी माता, दादी।
पितिया० ना० पु० चाचा, बापका भाई।
पितु० ना० पु० पिता, बाप।
पितृ० ना० पु० पिता, देवता, पुरुषा।
पितृघातक० ना० पु० जो पुत्र पिता का बैरी होवे।
पितृपति० ना० पु० धर्मराज।
पितृपक्ष० ना० पु० आश्विन मासका कृष्णपक्ष, कनागत।
पितृव्य० ना० पु० बड़ाचचा, पिता का भाई।
पितृऋण० ना० पु० पिताका ऋण।
पित्त० ना० पु० शरीरका धातु विशेष, सफरा।
पित्तलोह ना० पु० पीतल।
पित्ता० ना० पु० शरीर का भीतरी अंग जिस में पित्त रहताहै, क्रोध, कलेजा, जहरा।
पित्तिनी० ना० स्त्री० शालपर्णी।
पित्तपापड़ा० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।
पिधान० ना० पु० आच्छादन, ढकना, पोशाक।
पिन० ना० पु० शरीर, शब्द।
पिनकी० ना० स्त्री० पीनकवाला।
पिनपिनाना० अ० क्रि० टंकोरना, झनझनाना।
पिनहाना० स० क्रि० पहिराना।
पिनाक० ना० पु० श्रीमहादेवजी का धनुष बाजा विशेष।
पिनाकी० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पिन्ना० ना० पु० पीना खली।
पिन्नी० ना० स्त्री० चावल आदि का लड्डू।

पर्वती० ना० पु० पहाड़िया, स्त्री०, लौकी।
पर्वतीय० गु० पहाड़िया, जिस देश में बहुत पर्वत हैं।
पर्वाल० ना० पु० अंजनहारी, कंनिया।
पर्वी० ना० स्त्री० पर्व।
पर्शुका० ना० स्त्री० पांसली।
पल० ना० पु० दण्डका साठवां भाग है, निमेष, मांस, गोश्त, पलक।
पलक० ना० पु० आंखों का ढकन,पपनी, निमेष, फारसी शब्द।
पलंग० ना० पु० खाट।
पलंगड़ी० ना० स्त्री० छोटी खाट।
पलटन० ना० स्त्री० एकसहस्र पैदल की सेना।
पलटना० स० क्रि० बदलना,अ० क्रि० लौटना, फिरना, बहुरना।
पलटा० ना० पु० बदला, प्रतिकार, फल, पैंचा, पौंचा।
पलटाखाना० अ० क्रि० फिरना, उलटना।
पलटाना० स० क्रि० बदलाना, फिराना, लौटाना।
पलटालेना० स० क्रि० बदला लेना।
पलटाव० ना० पु० फिराव।
पलड़ा० ना० पु० तलड़ीका एक पल्ला।
पलथा० ना० पु० लोट पोट।
पलथामारना० अ० क्रि० लोटना, पोटना, पैर समेट के बैठना।
पलथी० ना० स्त्री० एक प्रकार का आसन।
पलन० ना० पु० पलकी बहुतात, पलक, पलावट, प्रतिपालन।
पलना० अ० क्रि० प्रतिपालन होना, मोटाहोना, बढ़ना, पनपना, ना० पु० हिण्डोला।
पलभक्ष० ना० पु० सिंह, मांसभक्षी।
पलल० ना० पु० पीना या खली।
पलवल० ना० पु० तरकारी विशेष।
पलवाना० स० क्रि० पोषवाना, पालनकराना।
पलवार० ना० स्त्री० नाव विशेष।
पलवारी० ना० पु० नाव, पलवार के सेवक।
पलक्ष० ना० पु० द्वीप विशेष।
पला० ना० पु० कच्ची, गु० मोटा।
पलाण्डु० ना०पु० पियाज, कन्द विशेष।
पलान० ना० पु० पालान, जो घोड़े आदिपर रखते हैं।
पलानना० स० क्रि० पलान रखना।
पलाना० अ० क्रि० भागजाना, बराना, छाना, छानना, प्रतिपाल कराना।
पलानी० ना० स्त्री० परछती, जो छप्पर पर डालते हैं, छाने का काम।
पलायन० ना० पु० भागाभाग।
पलाव० ना० पु० पलानी, झांखरयादि भीतिपर रखना बचाव के लिये।
पलाश० ना० पु० ढाककावृक्ष, पत्ता।
पलाशपापड़ा० ना० पु० पलाश का बीज।
पलाशी० ना० स्त्री० कचूर भेद।
पलास० ना० पु० पलाश, पालने का काम।
पलित० गु० शिथिल, ढीला, पालागया।
पली० ना० स्त्री० तेलादि निकालनेकी करछी।
पलीत० ना० पु० भूत, प्रेत, यहशब्द फारसी का है।
पलीता० ना० पु० बत्ती, यह शब्द फारसीकाहै।
पलुवा० ना० पु० पालाभया।
पलेथन० ना० पु० लोई बेलने के लिये सूखा आटा।
पलेच० ना० पु० जूरा, पीह।
पलोटना० स० क्रि० दाबना, सेवना।
पलौठा० ना० पु० पहिलौठा।
पल्लव० ना० पु० नयेपत्ता, पत्तों समेत शाखा।
पल्लवित० गु० नयेपत्ते लगेहुये।
पल्ला० ना० पु० अन्तर,फर्क,पलड़ा,फारसी में।
पल्ली० ना० स्त्री० छोटा गांव।
पल्लू० ना० पु० वस्त्रआदि के खूंट।

पिपासा० ना० स्त्री० प्यास, तृषा।
पिपासित० गु० प्यासा, तृषित।
पिपील० ना० स्त्री० चींटी, रामायणे यथा, जिमि पिपील चढ़ सागर थाहा।
पिपीलक० ना० पु० चींटा।
पिपीलका० } ना० स्त्री० चींटी।
पिपीलिका० }
पिप्पल० ना० पु० पीपल वृक्ष।
पिप्पली० ना० स्त्री० पीपली।
पीय० ना० पु० प्रिय, प्रीतम, स्वामी, पति।
पियाना० स० क्रि० पिलाना।
पियार० ना० पु० प्यार, लाड़, दुलार।
पियारा० गु० प्यारा, लाड़ला, दुलारा।
पियाल० ना० पु० चिरौंजी, धान या कोदो की घास।
पियासी० ना० स्त्री० मछली विशेष, तृषित स्त्री।
पिरकी० ना० स्त्री० फुड़िया।
पिराना० अ० क्रि० दुखना, दर्द होना।
पिरोना० स० क्रि० गूंथना, तागना, छेदना।
पिलई० ना० स्त्री० तापतिल्ली।
पिलचना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।
पिलना० स० क्रि० धावाकरना, घुसड़ना, अ० क्रि० पिटना।
पिलपिला० गु० चिपचिपा, ढीला, नम्र।
पिलपिलाना० स० क्रि० ढीलाकरना, नम्र करवाना।
पिलपिलाहट० ना० स्त्री० कोमलता, ढीलापन।
पिलाई० ना० स्त्री० पीने के बदले देना या पीने का काम।
पिलाना० स० क्रि० पानकराना, घुसड़वाना।
पिलुआ० ना० पु० पिल्लू, कीट।
पिल्ला० ना० पु० कुत्ते का बच्चा।
पिल्ली० ना० स्त्री० कुत्ते की बच्ची।
पिल्लू० ना० पु० कीट विशेष।
पिशाच० ना० पु० प्रेतविशेष, भूत।
पिशाचग्रस्त० गु० जिस को पिशाच लगा है।
पिशाची० ना० स्त्री० प्रेतिनी, पिशाचकी पत्नी।
पिशितोद्भन० ना० स्त्री० केसर।
पिशुन० गु० दुष्ट, कठोर, चुगल।
पिशुनता० ना० स्त्री० दुष्टता, कठोरता, चुगली।
पिसाई० ना० स्त्री० पीसने का काम या पैसा।
पिसान० ना० पु० आटा, चून।
पिसाना० स० क्रि० पिसवाना, बुकवाना।
पिसू० ना० पु० पिस्सू, छोटा जन्तु विशेष।
पी० गु० प्रिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम।
पीक० ना० स्त्री० पान के रसयुक्त थूक।
पीच० ना० स्त्री० माड़।
पीचू० ना० पु० फल विशेष।
पीछ० ना० स्त्री० माड़।
पीछा० ना० पु० पिछला भाग, पिछाड़ी पड़ना।
पीछे० अव्य० पश्चात्, निदान।
पीटना० स० क्रि० कूटना, मारना।
पीठ० ना० पु० पृष्ठ, देहका पिछला भाग, आसन विशेष।
पीठसार० ना० पु० अंकोल।
पीठा० ना० पु० भोजन विशेष।
पीठी० ना० स्त्री० धोई और पीसीहुई उरद की दाल, पीठ।
पीठीता० ना० पु० पत्रका पृष्ठ।
पीड़० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दया।
पीड़क० गु० पीड़ादायक।
पीड़ना० अ० क्रि० पीड़ित होना, स० क्रि० दण्ड देना।
पीड़ा० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दर्द।
पीड़ाकर० गु० पीड़ादायक।
पीड़ित० गु० दुःखित, क्लेशित, रंजीदह।
पीढ़ा० ना० पु० पटरा, मचिया।
पीढ़ाबन्ध० ना० पु० पुस्तकों की आदि का समाचार विशेष, दीबाचह।
पीढ़ी० ना० स्त्री० होतापीढ़ा, वंशकी परम्परा।

पल्वंग० ना० पु० प्लवग, वानर।
पवन० ना० पु० वायु, वायुकोण का स्वामी।
पवनसखा० ना० पु० अग्नि, आग।
पवनावर्त्ती० ना० स्त्री० कश्यप की एक स्त्रीका नाम।
पवमान० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
पवाई० ना० पु० घोड़े के पैरकी सांकर, पैकड़ी, जूते का एक पल्ला।
पवाज० ना० पु० नीच लोग।
पवाँर० ना० पु० राजपूत, जातिविशेष।
पवाँरना० स० क्रि० चलाना, पठाना, फेंकना।
पवि० ना० पु० वज्र।
पविपात० ना० पु० वज्रपड़ना, बीजलीपड़ना।
पवित्र० ना० पु० शुद्ध, पाक, निर्मल, अदोष।
पवित्रता० ना० स्त्री० शुद्धता, पाकी, निर्मलता।
पवित्रा० ना० पु० यज्ञोपवीत, कुश।
पवित्री० ना० स्त्री० मुद्रिका कुशकी जो संकल्पादि पूजा के समय पहिनते हैं या पंचधातु रचित।
पशु० ना० पु० जन्तु, जीवधारी, चतुष्पदादि।
पशुपति० ना० पु० श्रीमहादेवजी, ग्वालादि।
पशुपाल०, पशुपालक० } ना० पु० ग्वाल, अहीर।
पश्चात्० अव्य० पीछे, अनन्तर।
पश्चात्ताप० ना० पु० पछतावा, अफसोस।
पश्चात्तापी० गु० पछितानेवाला।
पश्चिम० ना० पु० पछांह।
पश्यति०, पश्यन्ति० } क्रि० देखता।
पश्यलोहर० ना० पु० सामने चोरी करनेहारा, सुनार।
पषान० ना० पु० पाषाण, ढोंके, ज्यों पनिहारी जेवरी खैंचत कटतपषान, तुलसी रसना रामकहु पाप किंतिक अनुमान।
पसरना० अ० क्रि० फैलना।
पसली० ना० स्त्री० पांजर की हड्डी।
पसा० ना० पु० दोमुट्ठीभर।
पसाई० ना० स्त्री० चावल विशेष, तृणविशेष, जिसकाफल धान के सदृश होता है।
पसाउ०, पसाऊ० } ना० पु० दया, कृपा, मेहरबानी।
पसाना० स० क्रि० भातका मांड़ निकालना, काढ़ना।
पसार०, पसारा० } ना० पु० फैलाव, बिछाव।
पसारी० ना० पु० पनसारी।
पसारना० स० क्रि० फैलाना, बिछाना।
पसीजना० अ० क्रि० स्वेद छूटना, सितली छूटना, दयालु होना।
पसीना० ना० पु० स्वेद, सितली।
पसूज० ना० स्त्री० सीवना, तुर्पन।
पसूजना० स० क्रि० सीना, तुर्पना, तागना, तुर्पाना।
पसेव० ना० पु० पसीना।
पह० ना० पु० तड़का, भोर, अव्य० पास।
पहचान० ना० स्त्री० ज्ञान, चिन्हारी।
पहचानना० स० क्रि० जानना, चीन्हना।
पहनना० स० क्रि० पहिरना, ओढ़ना।
पहनावा० ना० पु० वस्त्र, कपड़ा।
पहर० ना० पु० समयका परिमाण जो तीनघंटे का होता है, एक दिन वा रातका चतुर्थांश।
पहरा० ना० पु० चौकी।
पहराना० स० क्रि० पहिराना, ओढ़ाना।
पहरावनी० ना० स्त्री० जो विवाह आदि में लोगों को कपड़ा पहनाते हैं।
पहरिया०, पहरुआ०, पहरू० } ना० पु० अगोरिया, चौकीदार, कोटवार, रखवारी।
पहरना० स० क्रि० पहनना।
पहल० ना० पु० रुई का पर्त, चढ़ाव, तिकोनादि की एक ओर।
पहला० गु० प्रथम, अव्वल।
पहाड़० ना० पु० पर्वत।

पीत० गु० पीला, ना० स्त्री० प्रीति, कुसुम, ना० पु० मलय चन्दन, पियासाल।
पीतक० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
पीतद्रुमा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
पीतपुष्पा० ना० स्त्री० ककोड़ी, सिसादा।
पीतपुष्पिका० ना० स्त्री० सहदेवी।
पीतफेनु० ना० पु० रीठा।
पीतम० गु० प्रियतम, मित्र, प्यारा।
पीतरक्त० ना० पु० पद्मराग।
पीतरस० ना० पु० हल्दी।
पीतल० ना० पु० धातु विशेष।
पीतला० गु० पीतलका।
पीतसार० ना० पु० मलयचन्दन।
पीता० ना० स्त्री० हल्दी, जूही।
पीताम्बर० ना० पु० रेशमी पीलावस्त्र, श्रीरामचन्द्रजी, श्रीकृष्णचन्द्रजी।
पीन० गु० मोटा, स्थूल, पुष्ट, भारी।
पीनक० ना० स्त्री० अफीम की औंघ।
पीनना० स० क्रि० रुई के अवयवों को पृथक् पृथक् करना।
पीनपयोधर० ना० पु० भारिस्तन, कठोर कुच।
पीनस० ना० पु० नाकका रोग विशेष, ना० स्त्री० पालकी विशेष, नाव, विशेष।
पीना० स० क्रि० घुड़कना, पानकरना, ना० पु० खली।
पीपल० ना० पु० वृक्ष विशेष।
पीपला० ना० पु० खड्गकी नोक वा आँण वा, मुनि।
पीपलामूल० ना० पु० पिप्पली का मूल।
पीपलि० ना० स्त्री० पिप्पली, पीपरी।
पीपा० ना० पु० मर्यादि रखने के लिये काष्ठका वर्तन विशेष।
पीब० ना० स्त्री० माज, राद।
पीवियाना० अ० क्रि० पकना।
पीवियाहट० ना० स्त्री० पकाव, पकनि।

पीयूष० ना० पु० पेउस, अमृत।
पीर० ना० स्त्री० पीड़ा, दर्द, दुःख।
पीरा० गु० पीला।
पीराई० ना० पु० ढोल बजानेहारा।
पीलपर्णिका० ना० स्त्री० मुरहरी।
पीलाम० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष।
पीली० ना० स्त्री० मोहर, सुवर्ण मुद्रा।
पीलीभीत० ना० पु० बांसबरेली के उत्तर नगर विशेष।
पीलु० } ना० पु० वृक्ष विशेष।
पील० }
पीवर० गु० मोटा, भारी, स्थूल।
पीसना० स० क्रि० आटाकरना, किचकिचाना, ना० पु० पीसने का अन्न।
पीहर० ना० पु० स्त्री की ससुराल, मैका।
पुं० ना० पु० नर, मनुष्य, पुरुष।
पुंलिंग० ना० पु० पुरुषका चिह्न।
पुंश्चली० ना० स्त्री० पतुरिया, वेश्या।
पुंस० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, नर।
पुंसवन० ना० पु० संस्कार विशेष।
पुंस्त्व० ना० पु० पुरुषत्व।
पुकार० ना० स्त्री० गोहारि, हांक।
पुकारना० स० क्रि० गुहराना, टेरना, हांकमारना, बुलाना।
पुखराज० ना० पु० मणि विशेष।
पुंग० ना० पु० समूह, गुच्छ, पूग।
पुंगव० ना० पु० श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम।
पुंगीफल० ना० पु० पूग, सुपारी।
पुचकारा० } ना० पु० भीति लीपने के लिये गीली मिट्टी।
पुचारा० }
पुच्छ० ना० स्त्री० पूंछ, दुम।
पुच्छक० ना० पु० भेड़ी।
पुच्छल० गु० पूंछवाला जिसके पूंछहो।
पुच्छलतारा० ना० पु० केतु, दुमदारसितारा।
पुछवैया० ना० पु० खोजनेहारा।
पुजवाना० स० क्रि० पूजाकराना।

पहाड़ा० ना० पु० जोड़ौती, गुणन।
पहाड़िया० गु० पहाड़का निवासी।
पहाड़ी० ना० स्त्री० छोटा पहाड़, पहाड़िया।
पहिया० ना० पु० चक्र, पैया, फिरकी, चर्ख।
पहिरावन० } गु० पहरावनी, ना० स्त्री०।
पहिरावनी० }
पहिरना० स० क्रि० पहनना।
पहिला० गु० पहला, प्रथम, आदिका।
पहिली० ना० स्त्री० प्रथमा।
पहिले० अव्य० आगे।
पहिलौठा० गु० पहिला लड़का।
पहुंच० ना० स्त्री० आगमन, पैठ, प्रवेश, रसीद।
पहुंचना० अ० क्रि० जाना, उतरना।
पहुंचा० ना० पु० कलाई।
पहुंचाना० स० क्रि० भेजवाना, पठाना।
पहुंची० ना० स्त्री० पहुंचा में पहिरने का गहना विशेष।
पहुड़ना० अ० क्रि० लेटना, सोना।
पहुड़ाना० स० क्रि० लेटाना, सुवाना।
पहुनई० ना० स्त्री० अतिथिपालना, पाहुन का सत्कार करना।
पहुना० ना० पु० पाहुना, महिमान।
पहुनाई० ना० स्त्री० महिमानी।
पहुप० ना० पु० पुष्प, पुहप, फूल।
पहेली० ना० स्त्री० कहानी, दृष्टकूट, पहेलिका।
पक्ष० ना० पु० मासार्द्ध, पास, तड़, थाक, रहा, पंख, ओर, तरफदारी।
पक्षपात० ना० पु० अपने या अपनों के लिये आग्रह या रक्षा या विवाद या तर्क।
पक्षहीन० गु० पंखरहित, अनाथ।
पक्षाघात० ना० पु० रोग विशेष
पक्षिराज० ना० पु० गरुड़।
पक्षी० ना० पु० पंखेरू, चिड़िया, सहायक।
पा० ना० पु० पांव।
पाउ० ना० पु० सेरका या प्रत्येक वस्तु का चतुर्थ भाग, पद, चरण।

पाई० ना० स्त्री० एक पैसा, या पैसे का तृतीय भाग, या पतली छड़ी जिसपर ताना लपेटते हैं।
पांक० ना० पु० कीचड़, दलदल।
पांगा० ना० पु० लवणविशेष।
पांच० गु० पंच ५।
पांचवां० गु० पंचम, ५वें।
पांजर० ना० पु० पसली, कांख के नीचे दोनों ओर के हाड़।
पांड़े० ना० पु० ब्राह्मण का आस्पद विशेष, शिक्षक।
पांति० } ना० स्त्री० धारी, श्रेणी, लकीर,
पांती० } पंक्ति।
पांव० ना० पु० पैर, चरण।
पांवड़ा० ना० पु० बिछौना विशेष, जिस पर बड़े मनुष्य चलते हैं।
पांवपांव० गु० पैदल।
पांस० ना० पु० खाद, सार, धूरा।
पांसना० स० क्रि० सारना, खादडालना।
पांशु० ना० स्त्री० रज, धूली।
पांसु० ना० स्त्री० पांजरकी हड्डी, पसली।
पाक० ना० पु० रसोई, भोजन, औषधि विशेष।
पाककार० } गु० रसोइया, बावर्ची।
पाककारी० }
पाकड़० } ना० पु० गूलर विशेष, वृक्ष
पाकड़िया० } विशेष।
पाकना० अ० क्रि० रस में उबलना और पकजाना।
पाकरिपु० ना० पु० इन्द्र।
पाकरी० ना० स्त्री० पकड़िया वृक्ष, कचनार।
पाकशासन० ना० पु० इन्द्र, देवराज।
पाकालय० ना० पु० रसोई जहां खाना पकाया जावे।
पाकपा० ना० स्त्री० कुब्जा स्वरूप।

पुजाना० स० क्रि० भरना, भराना, पूराकरना, पूजा कराना।

पुजापा० ना० पु० पूजा की सामग्री।

पुजारी०
पुजारू० } पु० पूजा करने हारा।

पुंज० ना० पु० समूह, ढेर, गंज।

पुट० ना० पु० पत्ता, दोना, मिलाव, घुलाव।

पुटरी०
पुटली० } ना० स्त्री० गठरी, खांड़।

पुटी० ना० पु० पत्तों का दोना, अंजली।

पुट्ठा० ना० पु० पशु आदि का चूतड़।

पुड़ा० ना० पु० भारी वा बड़ी पुरिया।

पुड़िया० ना० स्त्री० पत्तों की वा कागज की दोनी जिस में कुछ औषधि इत्यादि बांधते हैं।

पुड़ी० ना० स्त्री० खाल जिससे ढोल मढ़ते हैं।

पुण्डरीक० ना० पु० कमल विशेष, आकाश, बाण, सिंह।

पुण्डरीकाक्ष० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, नारायण।

पुण्ड्र० ना० पु० ऊख, गन्ना।

पुण्ड्रक० ना० पु० सर्प विशेष, संज्ञा विशेष।

पुण्य० ना० पु० सुकृतकर्म, कीर्ति, पवित्रदान।

पुण्यग्राम० ना० पु० पुनानगर, पुण्यका समूह।

पुण्यग्रामीय० गु० पूने के सम्बन्धी।

पुण्यजन० ना० पु० निशाचर, राक्षस, रात्रिचरोरात्रि-चरःकर्बुरोनिकषात्मजः, यातुधानःपुण्यजनोनैर्ऋतोयातुराक्षसी, इत्यमरः।

पुण्यभूमि० ना० स्त्री० आर्य्यावर्त्त देश।

पुण्ययोषिता० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।

पुण्यवान्० ना० पु० सुकृती, धर्मात्मा।

पुण्याई० ना० स्त्री० सुकृतकर्म, जो पूर्व किया है, गु० पुण्यात्मा, दाता।

पुण्यात्मा० गु० दाता, सुकृती, धर्मात्मा।

पुतला० ना० पु० तृण वा काष्ठ वा धातु वा मृत्तिका की बनीहुई मूर्त्ति।

पुतली० ना० स्त्री० आंखकी तारा, काष्ठादि निर्मित मूर्त्ति, प्रतिमा।

पुताई० ना० स्त्री० पोतने का काम वा पैसा।

पुत्तलिका० ना० स्त्री० पुतली।

पुत्र० ना० पु० पूत, लड़का, बेटा।

पुत्रक० ना० पु० दोना, सुगन्धित, पौधा।

पुत्रजीवी० ना० स्त्री० जीवापति, पतिजियो।

पुत्रिका० ना० स्त्री० कन्या, बेटी, पुतली।

पुत्री० ना० स्त्री० कन्या, बेटी, आंखका तारा।

पुनः० अव्य० फेर, फिरि, बहुरि।

पुनःपुनः० अव्य० फेर फेर, पुनि पुनि।

पुनराय० ना० पु० दूसरीवार।

पुनरारम्भ० ना० पु० दूसरीवार आरम्भकरना।

पुनरुक्ति० ना० स्त्री० पुनः कथन, दुबारा, फिर से कहना।

पुनरुत्थान० ना० पु० फिरसे उठना।

पुनर्जन्म० ना० पु० दूसरा जन्म, द्वितीयजन्म।

पुनर्नवा० ना० पु० पौधा विशेष।

पुनर्नव० ना० पु० नख, नाखून, नह।

पुनर्वसु० ना० पु० सातवां नक्षत्र।

पुनि० अव्य० फिर, पुनि।

पुनिपुनि० अव्य० पुनः पुनः।

पुनीत० गु० निर्मल, पवित्र, पाक।

पुमान्० ना० पु० नर, पुरुष, मनुज।

पुर० ना० पु० नगर वा ग्राम, दैत्य विशेष।

पुरइन० ना० स्त्री० कमल बेलि।

पुरःसर० ना० पु० अग्रगामी, पैरावा।

पुरट० ना० पु० सुवर्ण, स्वर्ण, सोना।

पुरनिया० गु० प्राचीन, वृद्ध, मगध देश में नगर।

पुरन्दर० ना० पु० इन्द्र।

पुरवासी० गु० नगर का बसने हारा।

पुरविल०
पुरविला० } ना० पु० पिछला वा अगला जन्म।

पुरवाई०
पुरवैया० } ना० स्त्री० पूर्वका पवन।

पाख० ना० पु० पक्ष, १५ दिनका, भीति, विशेष जिसपर बरेंडी रखते हैं।
पाखण्ड० ना० पु० छल, धूर्त्तता, बनाव।
पाखर० ना० पु० घोड़े, वा हाथी के ओढ़ने की, झूल विशेष, जो लोहमय होती है।
पाखा० ना० पु० ओसरा, पाख।
पाग० ना० स्त्री० पगड़ी, रस, चासनी, मिलित।
पागना० अ० क्रि० रसमिलित होना, सनना, मिलना, स० क्रि० पकाना।
पागल० गु० उन्मत्त, सिड़ी।
पागा० ना० पु० घोड़ों का झुण्ड।
पागुर० ना० पु० चभाई, जुगाली।
पागुराना० स० क्रि० चाबना, जुगाली करना।
पाचक० } ना० गु० रसोइया, स्वच्छ, अग्निकारक औषधि, हाजिम।
पाचन० }
पाछ० ना० पु० टीका, गोटी खुदवाई।
पाछना० स० क्रि० टीका देना, गोटी खोदना।
पाछें० } अव्य० पीछे।
पाछे० }
पाञ्चाल० ना० पु० देश विशेष।
पाञ्चाली० ना० स्त्री० द्रौपदी।
पाट० ना० पु० सनकी जाति विशेष, पटुवा, चौड़ाई, टसर, रेशम, सिंहासन।
पाटकृमि० ना० पु० रेशमका कीड़ा।
पाटन० ना० स्त्री० छान, छत, पटना।
पाटना० स० क्रि० छतबनाना, भरदेना, छाना, किसी वस्तुकी बहुतायत करना, थोपना।
पाटमहिषी० ना० स्त्री० पटरानी।
पाटम्बर० ना० पु० चपली, रेशमी कपड़ा।
पाटल० ना० पु० वर्ण विशेष, फूलवाले वृक्ष, लाल सफेद अर्थात् गुलाब।
पाटला० ना० पु० पुष्प विशेष, ना० स्त्री० कुम्भी।
पाटलिपुत्र० ना० पु० शोणभद्र के पास एक प्राचीन नगर।
पाटा० ना० पु० पट्टा।
पाटी० ना० स्त्री० खाट में का लम्बा काठ, पटिया, मिठाई विशेष, चटाई विशेष, तख्ती लिखने की।
पाटीर० ना० पु० चन्दन।
पाठ० ना० पु० सन्था, अध्याय, अध्ययन, सबक।
पाठक० गु० शिक्षक, ना० पु० विप्रजाति विशेष।
पाठशाला० ना० स्त्री० पढ़ने पढ़ाने का घर, चटशाल।
पाठा० ना० पु० युवाजन्तु, मल्लयुद्ध करनेहारा।
पाठी० ना० स्त्री० युवावकरी, ना० पु० मल्ल, पाठक।
पाठीन० ना० पु० सहस्र दाढ़का मच्छ विशेष।
पाठ्य० गु० जो पढ़ने के योग्यहै।
पाड़० ना० स्त्री० गरगज, डौंजा।
पाड़ना० स० क्रि० गिराना, काजल निकालना।
पाड़ा० ना० पु० भैंसका बच्चा, टीला।
पाढ़ा० ना० पु० मृग विशेष।
पाढ़ी० ना० स्त्री० नदी के पारजाना।
पाण० ना० पु० पीना, पत्ता, नये कपड़े की माड़ी।
पाणि० ना० पु० हाथ।
पाणिग्रहण० ना० पु० विवाह, कन्यादान लेना।
पाणिनि० ना० पु० व्याकरणशास्त्रकर्त्ता, मुनि विशेष।
पाणिनीय० गु० पाणिनि मुनिका व्याकरण, उसका पढ़ाने वा पढ़नेहारा।
पाण्डव० ना० पु० पांडुराजा के पांचपुत्र अर्थात् युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव।
पाण्डु० ना० पु० राजा युधिष्ठिर का पिता।
पाण्डुपुत्री० ना० स्त्री० रेणुका औषधि।
पांडुर० ना० पु० वर्ण विशेष, अर्थात् उज्ज्वल, पड़की पक्षी, वृक्ष विशेष, पीला, सींठा।
पाण्डुरा० ना० स्त्री० मयूरांत, पक्षी विशेष।

पुरश्चरण० ना० पु० जपपाठादिकेपूर्णताकारण।
पुरस्कार० ना० पु० सत्कार, आदर, सन्मान ।
पुरा० ना० पु० बड़ागांव, पहिले ।
पुराकृत० ना० पु० पिछले जन्मका कर्म ।
पुराण० ना० पु० इतिहास विद्या जो व्यास रचित है ।
पुराणपुरुष० ना० पु० श्री भगवान् ।
पुरातन० } ना० पु० प्राचीन, पिछला, पुराना ।
पुरातम० }
पुराना० स० क्रि० भरदेना, खिचवाना, कढ़वाना, गु० कालीन, प्राचीन, जीर्ण ।
पुरारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
पुरी० ना० स्त्री० नगर, गांव या अयोध्यादि सात नगर विशेष ।
पुरीष० ना० पु० मल, विट्, मूत्र ।
पुरुखा० ना० पु० बुड्ढा, बूढ़ा ।
पुरुखे० ना० पु० अगले पुरुष ।
पुरुष० ना० पु० मनुष्य, नर ।
पुरुषत्व० ना० पु० मनुष्यता, मनुसाई ।
पुरुषा० ना० पु० प्राचीन या पिछले लोग ।
पुरुषाधम० गु० जो मनुष्यों में निन्दितहोवे ।
पुरुषान० ना० पु० पीढ़ियां, शाखें, पुश्तें, पुरुष का बहुवचन ।
पुरुषारथ० ना० पु० पुरुषार्थ ।
पुरुषोत्तम० ना० पु० मनुष्यों में जो श्रेष्ठ वा प्रधान श्रीविष्णु, नारायण ।
पुरुहूत० ना० पु० इन्द्र ।
पुरैन० ना० स्त्री० कमलबेलि ।
पुरोडास० ना० पु० यज्ञकी द्रव्य, रोटी, यज्ञ का शेष भाग ।
पुरोधा० } ना० पु० कुलगुरु, वंश पूज्य ब्राह्मण ।
पुरोहित० }
पुरोहितानी० ना० स्त्री० पुरोहित की स्त्री ।
पुर्खा० ना० पु० पुरातन, बुड्ढा ।
पुर्चक० ना० स्त्री० छल, बढ़ावा ।
पुर्वा० ना० स्त्री० पूर्वका पवन ।
पुर्वाई० ना० स्त्री० पूर्वकी पवन ।
पुर्वाना० स० क्रि० भरवाना, पूरा करना ।
पुवया० ना० स्त्री० पुरवाई ।
पुर्सा० ना० पु० चारहाथकी माप ।
पुल० ना० पु० सेतु, बांध यह शब्द फारसी का है ।
पुलक० } ना० स्त्री० रोमांच, आनन्द
पुलकावलि० } या शोक में मग्न होना ।
पुलकावली० }
पुलकित० गु० हर्षित, रोमांचित ।
पुलपुला० गु० पिलपिला ।
पुलपुलाना० अ० क्रि० डरना, पिलपिलाना ।
पुलपुलाहट० ना० स्त्री० डर, भय, नरमी ।
पुलस्ति० ना० पु० मुनिविशेष, रावणके पितामह ।
पुलहाना० स० क्रि० मनाना, राजीकरना ।
पुलाक० ना० पु० } मांसोदन भोजन विशेष
पुलाव० } यह शब्द फारसी का है ।
पुलिक० ना० पु० मुल्य सांप ।
पुलिन० ना० पु० बालूका टापू, नदी में किनारा ।
पुलिन्द० ना० पु० म्लेच्छ भेद ।
पुलिन्दा० ना० पु० बस्ता, फारसी शब्द है ।
पुलोमजा० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवरानी, पुलोमजाशचीन्द्राणी इत्यमरः ।
पुँलिङ्ग० ना० पु० पुल्लिंग, नर, मुजक्कर ।
पुवाल० ना० पु० पियाल ।
पुष्कर० ना० पु० आकाश, जल, कमल, तालाब, हाथी की सूंड, तीर्थ विशेष ।
पुष्करजटा० } ना० पु० पुहकरमूल ।
पुष्कराह्व० }
पुष्कराह्वय० ना० पु० सारस ।
पुष्करिणी० ना० स्त्री० जलाशय, तलैया ।
पुष्कल० ना० पु० भरतजी का पुत्र, पूर्ण, श्रेष्ठ
पुष्ट० गु० पाला, स्थूल, पोढ़ा, कड़ा ।

पाण्डे० ना० पु० ब्राह्मण की जाति वा विशेष।
पात० ना० पु० पतन, पत्र, पत्ता, कानका गहना विशेष।
पातक० ना० पु० पाप, पापकर्त्ता।
पातकी० गु० पापी, दोषी।
पातर० ना० स्त्री० वेश्या, गु० पतला, दुर्बल।
पातंजल० ना० पु० शास्त्र विशेष।
पाता० ना० पु० पत्ता, रक्षिता।
पाताल० ना० पु० नागलोक, नरक।
पातालाय० गु० पाताल वासी।
पाती० ना० स्त्री० पत्री, चिट्ठी पत्ती।
पात्र० ना० पु० बर्त्तन, भांडा, गु० उचित, योग्य, उत्तम।
पाथ० ना० पु० जल, पानी।
पाथना० स० क्रि० गोबरसे कण्डे कण्डी बनाना, थोपना, ओंदलगाना।
पाथर० ना० पु० पत्थर।
पाथेय० ना० पु० पथमें व्ययकरनेकी सामग्री।
पाथोज० ना० पु० कमल।
पाथोद० ना० पु० मेघ।
पाथोधि० ना० पु० समुद्र।
पाद० ना० पु० पद, चरण, चौथाभाग, गुदशब्द, ठुसकी।
पादकटक० ना० पु० बिछुआ।
पादना० अ० क्रि० ठरमारना, पादमारना, ठुसकना, गुदा से शब्द मारना।
पादप० ना० पु० वृक्ष, पेड़।
पादांगद० ना० पु० बिछुआ, पांवका भूषण।
पादालोन० ना० पु० लोन विशेष।
पादार्घ० ना० पु० जागीर, माफ़ी।
पादार्पण० ना० पु० पैरदेना।
पादुका० ना० पु० खड़ाऊं, जूती।
पादूकृत० ना० पु० चमार, मोची।
पादोदक० ना० पु० पांवका धोवन।
पाद्य० ना० पु० पांवधोने का पानी।
पान० ना० पु० ताम्बूल, ताम्बोल, पत्ता, पाण पाणि।
पानदान० ना० पु० पान रखनेका पात्र विशेष।
पाना० स० क्रि० उपार्जन करना, मिलना।
पानिप० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, सुन्दरता।
पानी०
पानीय० } ना० पु० जल, वीर्य्य, धातु, भड़क, पति, इज्जत, आबरू।
पान्थ० ना० पु० पथिक, मुसाफ़िर।
पाप० ना० पु० अधर्म, कुकर्म, अपराध, दोष।
पापखण्डन० ना० पु० पापनाशन।
पापड़० ना० पु० बहुत पतले फुलका मूंगके।
पापड़ा० ना० पु० पौधाविशेष।
पापड़ाखार० ना० पु० केले के वृक्षको जलायके क्षार को जो पापड़ों में लगाते हैं।
पापरूपी० गु० पापकी मूर्त्ति, अधम शरीर।
पापरोग० ना० पु० कोढ़, माता विशेष, शीतला विशेष।
पापात्मा० गु० पापिष्ठ, अधर्मी, काफ़िर।
पापिन०
पापिनी० } ना० स्त्री० दोषिनी, पाप करने हारी।
पापिया० ना० पु० एरण्ड, वृक्ष विशेष, जिसके फलको बंगाली खाते हैं।
पापिष्ठ० गु० पापात्मा, अधर्म की मूर्त्ति, हिंसक।
पापी० गु० अपराधी, गुनहगार।
पामर० गु० नीच, अधम, तुच्छ।
पामरी० ना० स्त्री० नीचकी स्त्री, रेशम, वस्त्र विशेष।
पायक० ना० पु० पैदल, सेवक, पैदल योद्धा।
पायढ़० ना० पु० डौंजा।
पायन्त० ना० पु०
पायन्ती० स्त्री० } खाटका वह ओर जिधर पैरकरते हैं।
पायल० ना० स्त्री० पांवकाभूषण, अर्थात् पायजेब आदि गु० सुचाल।
पायस० ना० पु० खीर।

पुष्टद० } गु० पुष्टि कर्त्ता औषधि वा भोज-
पुष्टक० } नादि।

पुष्टता० ना० स्त्री० मोटाई, स्थूलता, पायदारी।

पुष्टि० ना० स्त्री०, पुष्टता, पुत्रजीवा, चन्द्रकला विशेषका नाम।

पुष्टिकर० गु० पुष्टक।

पुष्प० ना० पु० फूल, प्रसून।

पुष्पक० ना० पु० कुबेरका विमान।

पुष्पगन्धा० ना० स्त्री० जूही।

पुष्पचाप० ना० पु० कामदेव, मदन।

पुष्पजम्बुक० ना० पु० केतकी।

पुष्पधनु० ना० पु० कामदेव, मनोज।

पुष्पतीलक० ना० पु० संभालू।

पुष्पपात्र० ना० पु० फूलका आधार।

पुष्पफला० ना० स्त्री० कुम्हड़ा।

पुष्पमृत्यु० ना० पु० नड़कुल।

पुष्परस० ना० पु० फूल जिस में मधु व अमृत निकलता है, फूलकारस।

पुष्पवती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपड़ों से।

पुष्पसंचरी० ना० स्त्री० कलिहारी।

पुष्पाञ्जलि० ना० स्त्री० फूलों से भरी हुई अंजली।

पुष्पित० गु० फूलाहुआ वृक्ष।

पुष्पी० ना० स्त्री० ऊंगा।

पुष्पेशा० ना० पु० माधवी।

पुष्य० ना० पु० आठवां नक्षत्र।

पुस्तक० ना० पु० ग्रन्थ, पोथी, किताब।

पुहमि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
पुहमी० }

पूआ० ना० पु० मीठीपूरी।

पूं० ना० पु० पादने का शब्द।

पूंगी० ना० स्त्री० बांसली विशेष।

पूंछ० ना० स्त्री० पुच्छ, दुम।

पूंछना० स० क्रि० पोंछना, पूछना।

पूंछार० गु० पुच्छवान्, पूछवाला।

पूंजी० ना० स्त्री० मूल, धन, सम्पत्ति।

पूग० ना० पु० समूह, सुपारी वा सुपारीका वृक्ष।

पूगीफल० सुपारी।

पूछ० ना० पु० खोज।

पूछना० स० क्रि० खोजना, प्रश्नकरना।

पूछी० ना० स्त्री० मच्छी की पूछ।

पूजक० गु० पूजा करनेहार।

पूजन० ना० पु० पूजा का व्यापार।

पूजना० स० क्रि० अर्चना, भजना, ध्याना, अ० क्रि० भरना, पूरा होना।

पूजनीय० } गु० पूजा के योग्य, मान्य।
पूजमान० }

पूजा० ना० स्त्री० अर्चा, आदर, सत्कार।

पूजित० गु० जो पूजागया।

पूज्य० } गु० पूजाके योग्य, मान्य।
पूज्यमान० }

पूठ० ना० पु० पुट्ठा।

पूठा० ना० पु० पुस्तक का पुठा।

पूड़ा० ना० पु० बेसनका पकवान विशेष।

पूड़ी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।

पूणी० ना० स्त्री० रूई जो कातने के लिये बनाते हैं।

पूत० ना० पु० पुत्र, पवित्र।

पूतना० ना० स्त्री० हड़, निशाचरी विशेष।

पूतला० ना० पु० पुतली।

पूतरी० } ना० स्त्री० पुतला।
पूतली० }

पूति० ना० स्त्री० गन्धकन्द, पवित्र, खोटा, अवयव।

पूतिचर्चिका० ना० स्त्री० ववरी, पौधा।

पूतिफला० ना० स्त्री० बाकुची।

पूनियो० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूनी० ना० स्त्री० पोनी, पूर्णा।

पूनो० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूप० ना० पु० पुआ।

पूय० ना० पु० राद, मांज।

पाय० ना० पु० खाट आदि का पैर, पारसी शब्द है।
पार० ना० पु० नद्यादि का परला तीर।
पारख० ना० पु० परीक्षक, जांचनेहारा, परख।
पारखी० गु० परीक्षक, परखनेहारा।
पारग० ना० पु० पारजाना।
पारण० ना० पु० उपवास के पीछे भोजन मेव।
पारथ० ना० पु० अर्जुन, काव्ये यथा, पारथ के स्वारथ कियो को स्वारथ भगवान।
पारथी० ना० स्त्री० पालथी।
पारद० ना० पु० पारा।
पारदारिक० ना० पु० परस्त्रीगामी, व्यभिचारी।
पारन० ना० पु० पारण।
पारना० ना० पु० उपवास का खोलना, स० क्रि० निवेड़ना, गिराना, पालना।
पारल० ना० पु० पौधाविशेष।
पारलौकिक० गु० जो परलोक का है।
पारब्रह्म० ना० पु० परब्रह्म, परमात्मा।
पारस० ना० पु० लोहका आकर्षक पत्थर विशेष, जिसको बुद्धलोग लोहा एक प्रकार का कहते हैं।
पारसपीपल० ना० पु० वृक्षविशेष।
पारसाल० ना० पु० अगला वा पिछला वर्ष, यह शब्द फारसी का है।
पारसी० ना० स्त्री० पारसिक देशकी भाषा, ना० पु० वा उस देश के निवासी, जाति विशेष।
पारसीक० ना० पु० पारसी, घोड़ा।
पारा० ना० पु० पारद, धातु विशेष।
पारायण० ना० पु० पुराण आदिका संकल्प पूर्वक पाठ, पूर्णता।
पारावत० ना० पु० कबूतर, कपोत।
पारावार० ना० पु० नदी के दोनों तट, समुद्र।
पारि० ना० स्त्री० पाड़, जगत कूप की।
पारिजात० ना० पु० कल्पवृक्ष, कमल, हरसिंहार।
पारिजाती० ना० स्त्री० तेजबल।
पारितोषिक० गु० जिस से सन्तुष्ट हो, इनाम
पारिभद्रक०
पारिभव० } ना० पु० कूट औषधि।
पारिभाषिक० गु० शास्त्र में सुगमता के लिये संज्ञा मानली है।
पारिषद० ना० पु० सहचर, देखवैया।
पारिष्यदा० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पारिहार्थ० ना० पु० कूट।
पारी० ना० स्त्री० गुड़की भेली, बारी पन्ती।
पार्थिव० ना० पु० श्रीशिवजी, उद्भिद लोन राजा, मृत्तिका से निर्मित।
पार्वण० ना० पु० पर्व में श्राद्ध विशेष।
पार्वती० ना० स्त्री० श्रीभवानी, हिमालय जाता।
पार्श्व० ना० पु० बायां वा दाहिना पांजर, अव्य० पास, समीप।
पार्श्ववर्त्ती० ना० पु० निकटवर्ती।
पाल० ना० पु० नाव दौड़ाने के लिये टाटसे बनीहुई वस्तु, बांधा तम्बू, घास का प्रायश पत्ते जिसमें आंबादि पकाते हैं, सिरकी की बनी वस्तु विशेष।
पालक० ना० पु० साग विशेष, पालनेहारा।
पालकजूही० ना० स्त्री० औषधि, वृक्ष विशेष
पालकता० ना० स्त्री० पालना, पालने का काम।
पालकी० ना० स्त्री० शिबिका, डोली विशेष।
पालक्य० ना० पु० पालकका साग।
पालन० ना० पु० पोषण, पक्ष, रक्षा, परवरिश।
पालना० ना० पु० हिंडोला, स० क्रि० पालन करना।
पालव० ना० पु० वृक्षकी चोटी वा शाखा।

पूर० गु० सब, कुल भरा, प्रवाह, धारा।
पूरक० गु० पूरा करनेहारा, पूरा होने वाला, पु० बिजौरा, श्वास विशेष को जिस क्रिया से खैंचते हैं।
पूरण० गु० भरा, पूरा, सब, सारा।
पूरणा० } ना० स्त्री० चन्द्रमा की कला
पूरणामृता० } विशेष।
पूरना० सं० क्रि० भरना, पूरा करना, फैलाना।
पूरब० ना० पु० पूर्व।
पूरा० गु० पूरण, सब, समस्त।
पूराई० ना० स्त्री० भराई, पूरणता।
पूरिया० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
पूरी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।
पूर्ण० गु० पूरण, समस्त, सारा, भरा।
पूर्णज्या० ना० स्त्री० पूराशेदा, सूधी रेखा।
पूर्णता० ना० स्त्री० पूरणता, पुराई।
पूर्णपात्र० ना० पु० पात्र विशेष, जिस में २५६ मुष्टिका चावल भरके संकल्प करे, गु० पात्र भरपूर, पूरापात्र।
पूर्णभूत० ना० पु० समस्त बीतगया।
पूर्णमासी० ना० स्त्री० शुक्लपक्ष की समाप्ति की, तिथि, पूनो।
पूर्णाहुति० ना० स्त्री० होम पूरा होने पर जो, आहुति देते हैं उसका नाम।
पूर्णिमा० ना० स्त्री० पूर्णमासी।
पूर्व० गु० पहला, पिछला, अगला, ना० पु० जिस दिशा में सूर्योदय होता है।
पूर्वक० गु० विस्तार युत, भराहुआ, साथ।
पूर्वकृत० ना० पु० पहले का काम।
पूर्वकृतकर्म० ना० पु० पूर्व जन्मके किये कर्म।
पूर्वज० ना० पु० अग्रज, बड़ाभाई।
पूर्वयाम० ना० पु० पहला पहर।
पूर्वदेश० ना० पु० मध्य देश के पूर्व का देश। या निज स्थान से पूर्व का देश।
पूर्वपक्ष० ना० पु० ... जो स्थापन ...
पूर्ववत्० अव्य० उसी प्रकार, वैसाही।
पूर्ववायु० ना० पु० पूर्वका पवन, पुरवाई।
पूर्वा० ना० पु० पुरवा, छोटा गांव।
पूर्वाफाल्गुणी० ना० स्त्री० ग्यारहवां नक्षत्र।
पूर्वाभाद्रपद० ना० पु० छब्बीसवां नक्षत्र।
पूर्वाभिमुख० ना० पु० पूर्व दिशाके सामने।
पूर्वार्द्ध० गु० पहिला, आधा।
पूर्वाषाढ़० ना० स्त्री० बीसवां नक्षत्र।
पूर्वाह्ण० ना० पु० दिनका पहला भाग।
पूर्वी० गु० पूर्व देशीय ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
पूर्वोक्त० गु० प्रथम कहा है, प्रथम कहाहुआ।
पूला० ना० पु० } तृण वा अन्न की छोटी
पूली० ना० स्त्री० } गट्ठी।
पूषण० ना० पु० सूर्य।
पूषा० ना० स्त्री० सूजन, चन्द्रकला विशेष, श्वास विशेष, जो दक्षिण कान में प्रकाशित है।
पूस० ना० पु० पौष मास, दशवां मास।
पृच्छा० ना० पु० जिज्ञासा, प्रश्न।
पृतना० ना० स्त्री० सैन्य, फ़ौज, दल।
पृथक्० अव्य० भिन्न, अलग।
पृथक्करण० ना० पु० अलग २ करना।
पृथक्छद० ना० पु० अलरोट।
पृथक्त्व० ना० पु० भिन्नता, जुदाई।
पृथक्पर्णी० ना० स्त्री० सुन्दरी।
पृथग्० अव्य० पृथक्।
पृथग्पृथग्० अव्य० अलग २ जुदा २
पृथवी० ना० स्त्री० पृथिवी।
पृथवीनाथ० ना० पु० राजा, बादशाह।
पृथिवी० ना० स्त्री० धरती, जमीन।
पृथु० गु० बड़ा, भारी, ना० पु० राजा विशेष।
पृथुरोमा० ना० स्त्री० मछली।
पृथुल० गु० बड़ा, भारी, मोटा, स्थूल।
पृथुशिंबा० ना० पु० स्योनाकवृक्ष।

पृथूदर० ना० पु० मेढ़ा, मेंढ़ा।
पृथ्वाक० ना० पु० पुनर्नवा।
पृथ्वी० ना० स्त्री० धरती।
पृथ्वीका० ना० स्त्री० कलौंजी।
पृथ्वीनाथ०, पृथ्वीपति०, पृथ्वीपाल० } ना० पु० राजा, बादशाह।
पृष्ट० गु० पूछागया।
पृष्ठ० ना० पु० पीठ, पिछलाभाग, पत्रका एक ओर।
पृष्टा० ना० पु० पित्तपापड़ा, पूछनेवाला।
पृष्ठास्थि० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।
पृष्ठि० ना० पु० पीठ, पूंछ।
पृष्ठिस्थोरी० ना० पु० घोड़ा।
पेंड़० ना० स्त्री० पिटारी।
पेंग० ना० पु० झूलेका हिलाना, पक्षी विशेष।
पेंगना० अ० क्रि० झूलेको बढ़ाकर झूलना।
पेंठ० ना० स्त्री० हाट, मण्डी, बाजार।
पेंड़० ना० स्त्री० डग, चलावा, टीला, वृक्ष।
पेंदा० ना० पु०, पेंदी० ना० स्त्री० } तला, निचानका खण्ड।
पेखक० गु० यथोचित दूत भेजनेवाला।
पेखना० ना० पु० स्वांग, खिलौना, स्त्रियों का खेल, स० क्रि० देखना।
पेखनिया० ना० पु० स्वांगी।
पेखित० गु० भेजागया।
पेच० ना० पु० मरोरी, घुमाव, फेर।
पेचक०, पेचा० } ना० पु० उलूक।
पेट० ना० पु० उदर, गर्भ।
पेटक० ना० पु० पिटारा।
पेटार्थी०, पेटार्थू० } गु० पेटपाल, खाऊ, मतलबी।
पेटिया० ना० स्त्री० प्रतिदिनका खाना, सीधा।
पेटी० ना० स्त्री० कमरबन्द, पेटका बन्धन, पिटारी, सन्दूक, छाती।
पेटू० गु० पेटार्थी।
पेटौखा० ना० पु० पेटचलने का रोग।
पेठा० ना० पु० लौकी वा कद्दू, वा कुम्हड़ा विशेष।
पेड़० ना० पु० वृक्ष, वृक्ष।
पेड़ा० ना० पु० मिठाई विशेष, लोई।
पेड़ी० ना० स्त्री० पेड़ा० सुपारी, नील आदि का वृक्ष जो एकबार जो कटगया, और पेड़का स्तम्भ।
पेड़ू० ना० पु० नाभिके नीचे का अंग।
पेम० ना० पु० प्रेम।
पेमी० ना० पु० प्रेमी।
पेय० ना० पु० पानी, दूध, शरबत, गु० जो पीने के योग्य हो।
पेरना० स० क्रि० प्रेरणा, कोल्हू में कुचल के रस या तेल निकालना।
पेरू० ना० पु० कुक्कुट विशेष।
पेलड़०, पेलड़ा० } ना० पु० आंड, कौड़ी, फोता।
पेलन० ना० पु० पालन, झूलना।
पेलना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, ठांसना, दबाना, भरना, घुसेड़ना, अ० क्रि० गिलजाना, घुसड़जाना।
पेला० ना० पु० थाड़, दोष, उपद्रव, टक्कर।
पेलू० ना० पु० ढकेलू, घुसेड़।
पेवड़ी० ना० स्त्री० पीतरंग विशेष।
पेवसी० ना० स्त्री० पीयूष जो दूध फटे को पकाते हैं।
पेषण० ना० पु० दलैती, किसी वस्तु को दो पत्थरों से घिसना।
पेषणीय० गु० पीसने के योग्य।
पै० ना० पु० पय, दूध, जल, ना० स्त्री० दोष, अव्य० ऊपर, तौभी, परन्तु।
पैंचना० स० क्रि० पछोड़ना, फटकना, बदलना।
पैंचा० ना० पु० बदला, पलटा।
पैंजनी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष।

प्रसंग० ना० पु० प्रस्ताव, मेल, संगम, संयोग, सम्बन्ध, चर्चा, साथ, रंग, वस्त्र ।
प्रसन्न० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, खुश ।
प्रसन्नता० ना० स्त्री० प्रसाद, हर्ष, आनन्द, कृपा ।
प्रसन्नित० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, राजी ।
प्रसमित० गु० रहित, हीन, बिहून, बिन ।
प्रसव० ना० पु० गर्भ से बालक का निकलना, जनाया, पैदायश, उत्पत्ति ।
प्रसवत० क्रि० उपजते, जन्मते ।
प्रसव्य० गु० बायां, प्रतिकूल उपजने के योग्य ।
प्रसाद० ना० पु० देवताओंकी या गुरुकी जूठन, कृपा, दान, भोजन ।
प्रसादी० ना० स्त्री० जो कुछ देवताओं को चढ़ायागया, भोजन, खाना ।
प्रसारण० ना० पु० फैलाव, पसराव, गन्धप्रसारण, पौधा ।
प्रसारक० ना० पु० आगी, बथुआ का साग ।
प्रसारित० गु० विस्तारित, जो फैलायागया ।
प्रसिद्ध० गु० प्रकाशित, विख्यात, मशहूर ।
प्रसिद्धता० ना० स्त्री० प्रकटता, सुख्याति, जहूर ।
प्रसीद० क्रि० दयालुहो, कृपाकरो ।
प्रसूत० ना० पु० जात, जन्मा, प्रसूति ।
प्रसूति० ना० स्त्री० रोग विशेष, पानीबहने का रोग विशेष ।
प्रसूतिका० } गु० स्त्री० जननी जच्चा, माता ।
प्रसूता० }
प्रसून० ना० पु० पुष्प, फूल, फल ।
प्रसौती० ना० स्त्री० प्रसूती ।
प्रस्तर० ना० पु० पत्थर, पाषाण ।
प्रस्तरमय० गु० पाषाणमय, पथरीला ।
प्रस्ताव० ना० पु० अवसर, चर्चा ।
प्रस्ताविक० गु० समयपर, सामयिक ।
प्रस्तुत० गु० कथित, सिद्ध, स्तुत किया गया ।
प्रस्थ० ना० पु० परिमाण विशेष ।
प्रस्थर० ना० पु० पत्थर ।
प्रस्थान० ना० पु० गमन, बिदा, धावा करने हारेका गमन, पायतुराव, नकल मकान ।
प्रस्थापित० गु० प्रेरित, भेजा गया ।
प्रस्थित० ना० स्त्री० कीर्ति, नेकनामी ।
प्रस्फुटित० गु० विकसित ।
प्रहर० ना० पु० पहर, याम, दिन या रातका चौथा भाग ।
प्रहरण० ना० पु० अस्त्र, मारण ।
प्रहस्त० ना० पु० राक्षस विशेष ।
प्रहार० ना० पु० चोट, ठोकर, मार ।
प्रहारित० गु० मारागया या माराहुआ ।
प्रहारी० गु० मारनेहारा ।
प्रह्वन० ना० पु० विनय, प्रणाम ।
प्रहेलिका० ना० स्त्री० पहेली, दृष्टिकूट ।
प्रहृष्ट० गु० सन्तुष्ट ।
प्रह्लाद० ना० पु० भक्त विशेष ।
प्रह्लादिनी० ना० स्त्री० हंसपादी बूटी ।
प्रक्षालन० ना० पु० धोलाई ।
प्रक्षालित० गु० जो धोयागया ।
प्रज्ञा० ना० स्त्री० सरस्वती, निर्मलबुद्धि ।
प्रज्ञात्मा० गु० आत्मज्ञाता, आत्मध्यानी ।
प्राक्० अव्य० आगे, पहले, पूर्व ।
प्राकार० ना० पु० गढ़ ।
प्राकृतकवि० ना० पु० सूरदासादि ।
प्राकृतभाषा० ना० स्त्री० संस्कृतभाषा विशेष ।
प्राक्तन० गु० पुराना ।
प्रागल्भ्य० ना० पु० प्रगल्भता, ढिठाई, घमण्ड ।
प्राची० ना० स्त्री० पूर्व दिशा ।
प्राचीन० गु० पुराना, अगला ।
प्राचीना० ना० पु० पानी, आंवला ।
प्राड्विवाक० ना० पु० राजाकी आज्ञा से विचार करने के लिये स्थापित पुरुष, न्यायक ।
प्राण० ना० पु० श्वासवायु, जीव, प्रियतम ।
प्राणदा० ना० स्त्री० जीवदाता ।
प्राणप्रतिष्ठा० ना० पु० मन्त्र से देवता में जीव धारण करना ।

पैंड़० } नाः पु० मार्ग, बाट वा बाट देखना।
पैंड़ा० }

पैंतालीस० गु० चालीस और पांच, ४५।

पैंतीस० गु० तीस और पांच, ३५।

पैंसठ० गु० साठ और पांच, ६५।

पैकड़ा० ना पु० } बेड़ी, पैर का गहना विशेष।
पैकड़ी० ना० स्त्री }

पैगू० ना० पु० ब्रह्मा देशका प्रदेश।

पैज० ना० स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण, पराक्रम।

पैठ० ना० पु० हुण्डी की पतिया, पहुँच, प्रवेश।

पैठना० अ० क्रि० घुसना, धसना।

पैठालना० स० क्रि० प्रवेश कराना, घुसाना।

पैड़० ना० पु० पावोंका चिह्न।

पैड़ा० ना० पु० ऊंची खड़ाऊं।

पैड़ी० ना० स्त्री० सीढ़ी।

पैतला० गु० उथला, छिछला।

पैतृक० गु० बपौती, पूर्व जनों से जो धन वा व्यवहार प्राप्त हो।

पैदल० अव्य० पैरों से ना० पु० पियादे।

पैन० ना० पु० नाली, पोखरा।

पैना० ना० पु० पशु हांकने का अस्त्र गु० तीव्र, तीक्ष्ण, तेज।

पैनाना० स० क्रि० तीक्ष्ण करना, बाढ़देना।

पैनाला० ना० पु० परनाला, पुहरी।

पैया० ना० पु० पहिया, चक्र।

पैर० ना० पु० पांव, खलिहान, गु० जो परने के योग्य है।

पैरना० अ० क्रि० हेलना, तिरना, पवरना।

पैराई० ना० स्त्री० पैरने का काम।

पैराक० ना० पु० पैरनेहारा।

पैराकी० ना० स्त्री० पैरनेहारी।

पैराना० स० क्रि० तैराना, हिलाना।

पैराव० गु० जो पैरने के योग्य है।

पैरी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष।

पैला० ना० पु० अन्न मापने का पात्र, दलवा।

पैशून्य० ना० पु० दुष्टता, पिशुनता, चुगली।

पैसा० ना० पु० तांबे का मुद्रा।

पैसार० ना० पु० पैठ, पहुँच, प्रवेश।

पैसारना० स० क्रि० पैठाना, पहुँचाना, प्रवेश कराना, घुसेड़ना।

पोआ० ना० पु० पौधा, दूधपिनेहारा बच्चा, सांप का बच्चा थोड़े दिनों का।

पोआना० स० क्रि० थमाना।

पोईस० अव्य० अरे, बचो, पोश शुदई, फारसी शब्द है।

पोंकना० अ० क्रि० पेट चलना।

पोंका० ना० पु० कीड़ा विशेष।

पोंगा० ना० पु० उल्लू, मूर्ख, ढीला विशेष, पोर, गु० छूछा।

पोंगी० ना० स्त्री० नली, छूछी, खोखली, मूसली।

पोंछन० ना० पु० झाड़ना, गूदड़।

पोंछना० स० क्रि० झाड़ना, स्वच्छ करना।

पोखना० स० क्रि० पालना।

पोखर० } ना० पु० जल, तड़ाग, तालाब।
पोखरा० }

पोच० गु० नीच, लटा, यह शब्द फारसीका है।

पोट० ना० स्त्री० मोट, गांठ, गठरी।

पोटला० ना० पु० बड़ी गठरी।

पोटली० ना० स्त्री० गठरी, लाई विशेष।

पोटा० ना० पु० गेंदा, पलक, पक्षी का झोंझ, झोंझ, रेंटा, गु० पोटनेहारा।

पोढ़ा० गु० कड़ा, बलवान्, ठोस, दृढ़।

पोढ़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, ठोसाई, दृढ़ता।

पोत० ना० स्त्री० कांचकी सूक्ष्म गुरिया, नौ, स्वभाव, प्रकृति, बच्चा, कपड़ा।

पोथकी० ना० स्त्री० पोंय, बेलि।

पोतड़ा० ना० पु० छोटे लड़कों का बिछौना, गुदड़ी।

पोतड़ी० ना० स्त्री० लेरी, हल।

पोतना० स० क्रि० लीपना, घरपोतना, ना० पु० पिंडोर, मृत्तिका विशेष।

प्राणदण्ड० ना० पु० वध, फांसी आदिकी सज़ा।
प्राणान्त० ना० पु० प्राणकानाश, मृत्यु, मौत।
प्राणायाम० ना० पु० श्वासको रोकना वा प्राण को ऊर्ध्व खींचना।
प्राणी० गु० जीवधारी, जन्तु।
प्रातः० } ना० पु० प्रभात, तड़का, सवेरा,
प्रातःकाल० } बिहान।
प्रातःक्रिया० ना० स्त्री० सवेरेकी क्रिया।
प्रादुर्भाव० ना० पु० आविर्भाव, महिमा।
प्राधान्य० ना० पु० श्रेष्ठता, मुख्यता, उत्तमता।
प्रान्त० ना० पु० कगर, शेषभाग, देशकाभाग।
प्रान्तर० ना० पु० दूरदेश का मार्ग, अपथ।
प्रापक० ना० पु० जो पहुंचावे वा पावे।
प्राप्त० गु० जो मिला, लब्ध।
प्राप्ति० ना० स्त्री० लाभ, उपार्जन, गोड़ी, फ़ायदह, नाम सिद्धि विशेष का।
प्राविट्० } ना० पु० वर्षाकाल, बरसात।
प्रावृट्० }
प्रावृष० ना० पु० कदम वृक्ष।
प्रामाणिक० ना० पु० अति मान्यलोग, प्रधान।
प्रायः० अव्य० कभी कभी, बहुधा, अक्सर।
प्रायद्वीप० ना० पु० जो प्रायःजल से घिराहो, और एक ओर थल से मिलाहो, जँजीरानुमा।
प्रायश्चित्त० ना० पु० पापमात्र का नाशक कर्म, पाप, दोष।
प्रारब्ध० ना० स्त्री० भाग लिखा, नसीब।
प्रारम्भ० ना० पु० आरम्भ, शुरूअ।
प्रार्थना० ना० स्त्री० बिनती, चहत, अर्ज़।
प्रार्थित० गु० वाञ्छित, यांचाहुआ।
प्रावृत० ना० पु० घूंघट, ओढ़नी, गुप्त, ढंका, छुपा।
प्रासाद० ना० पु० मन्दिर, राजभवन, सदन।
प्रांशु० गु० बड़ा, मोटा।
प्राक्ष० ना० पु० प्रातसन्ध्या।
प्राज्ञ० गु० पण्डित, चतुर, बुद्धिमान्।
प्रिय० गु० प्यारा।
प्रियक० ना० पु० कदमवृक्ष, अनार।
प्रियंगु० ना० पु० औषधि विशेष।
प्रियतम० गु० अतिप्यारा, ना० पु० प्रिय, प्रेमीपति, मित्र।
प्रियतमा० ना० स्त्री० अति प्यारी।
प्रियवादिनी० ना० स्त्री० अच्छा कहनेहारी।
प्रिया० ना० स्त्री० प्यारी स्त्री, चहीती, भाल लगनी।
प्रियाल० ना० पु० चिरौंजी।
प्रीति० ना० स्त्री० प्रेम, प्यार, मोह, दोस्ती और व्यवहार, चन्द्रमाकी कला विशेष।
प्रेत० ना० पु० पिशाच, भूत, निशाचर, दैत्य, मरा।
प्रेतनदी० ना० स्त्री० वैतरणी, नरककी नदी।
प्रेतनी० ना० स्त्री० प्रेतनी, चुड़ैल, प्रेत की स्त्री।
प्रेतराज० ना० पु० यमराज, धर्मराज।
प्रेतनिवास० ना० पु० श्मशान, मरघट।
प्रेम० ना० पु० स्नेह, प्यार, लाड़, प्रीति।
प्रेमी० गु० प्रेमकर्त्ता, स्नेही, छोही, प्रियतम।
प्रेयस० गु० मित्र, यार, दोस्त, उपपति, जार।
प्रेयसी० गु० स्त्री० प्यारी, परकिया।
प्रेरक० ना० पु० भेजनेहारा, हाकिम, करानेहारा, चलानेवाला।
प्रेरण० ना० पु० } नियोग, भेजना, चलाना,
प्रेरणा० ना० स्त्री० } सुझाना, ताकीद।
प्रेरणार्थ० गु० जिसमें प्रेरण का ज्ञानहो।
प्रेरणार्थक० गु० आज्ञाकारक।
प्रेरित० गु० जो दूतादि भेजा गया।
प्रेषक० गु० यथोचित दूत भेजनेहारा।
प्रेषित० गु० प्रेरित।
प्रेष्ठ० गु० प्रियतम।
प्रेष्य० ना० पु० दूत, सेवक।
प्रेक्षण० ना० पु० चक्षु, नेत्र, दृष्टि।
प्रोक्त० गु० कथित, कहाभया।
प्रोत्साह० ना० पु० बड़ा उछाह, अत्युद्योग।

पोता॰ ना॰ पु॰ पुत्रका पुत्र, पौत्र।
पोती॰ ना॰ स्त्री॰ पुत्रकी कन्या, पौत्री।
पोथा॰ ना॰ पु॰ बड़ा ग्रन्थ।
पोथी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा ग्रन्थ।
पोदना॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष।
पोदनी॰ ना॰ स्त्री॰ पोदना की स्त्री।
पोना॰ स॰ क्रि॰ पकाना, पिराना, ना॰ पु॰ झरना।
पोनी॰ ना॰ स्त्री॰ पूर्णी।
पोपनी॰ ना॰ पु॰ बाजा विशेष।
पोपला॰ गु॰ दांतों से रहित।
पोमचा॰ ना॰ पु॰ जय नगरी, वस्त्र विशेष।
पोय॰ ना॰ स्त्री॰ साग विशेष, बेलि विशेष।
पोया॰ ना॰ पु॰ साग विशेष।
पोर॰ ना॰ पु॰ दो गांठियों का मध्यभाग।
पोरी॰ ना॰ स्त्री॰ बांसकीगांठ, टोंटा।
पोला॰ गु॰ छूंछा, कोमल, खोखला, खाली।
पोली॰ ना॰ स्त्री॰ छूंछी, खोखली, अनाड़ी।
पोषक॰ ना॰ पु॰ पालनेहारा।
पोषण॰ ना॰ पु॰ पालन, पालना।
पोषना॰ स॰ क्रि॰ पालना।
पोषित॰ गु॰ पालागया, पालाहुआ।
पोष्य॰ गु॰ पालने के योग्य।
पोष्यपुत्र॰ ना॰ पु॰ ले पालक।
पोष्यवर्ग॰ ना॰ पु॰ कुटुम्ब।
पोसना॰ स॰ क्रि॰ पालना।
पोसे॰ क्रि॰ पाले।
पोह॰ ना॰ स्त्री॰ पौ, तड़का, भोर।
पोहना॰ स॰ क्रि॰ पिरोना, पैदा बनाना।
पोत्री॰ ना॰ पु॰ सुअर, शूकर।
पौ॰ ना॰ पु॰ जल पिलाने की शाला, पांसेमेंका एका।
पौंढ़ा॰ ना॰ पु॰ मोटा इक्षु विशेष गन्ना।
पौरि॰ ना॰ स्त्री॰ ड्योढ़ी।
पौरिया॰ ना॰ पु॰ ड्योढ़ीवान, द्वारपाल।
पौढ़ना॰ स॰ क्रि॰ लेटना, सोना।
पौढ़ा॰ गु॰ पोढ़ा, लेटाहुआ।
पौढ़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ पोढ़ाई, लेटास।
पौण्ड्रक॰ ना॰ पु॰ ऊख, गन्ना, पौंढ़ा।
पौत्तलिक॰ ना॰ पु॰ मूर्त्तिपूजक।
पौत्र॰ ना॰ पु॰ पुत्रका पुत्र, पोता।
पौत्री॰ ना॰ स्त्री॰ पुत्रकी कन्या, पोती।
पौधा॰ ना॰ पु॰ वृक्ष जो तरुण है, बिरवा एक वर्षका।
पौन॰ गु॰ तीन चौथाई, ¾ ना॰ पु॰ पवन।
पौनचक्र ना॰ पु॰ बैंड़रा, पवनग्रन्थि।
पौना॰ ना॰ पु॰ झरना, पौनका पहाड़ा।
पौने॰ गु॰ चतुर्थांश रहित।
पौर॰ ना॰ स्त्री॰ फाटक, द्वार।
पौराणिक॰ ना॰ पु॰ श्रीवेदव्यास, सूतजी, पुराण का वक्ता।
पौरि॰ ना॰ स्त्री॰ पौर।
पौरुष॰ ना॰ पु॰ मनुष्यत्व, बल।
पौरोहित्य॰ ना॰ स्त्री॰ पुरोहिताई।
पौलस्त्य॰ ना॰ पु॰ रावण, कुबेर।
पौलिया॰ ना॰ स्त्री॰ पौरिया, छोटी खड़ाऊं।
पौली॰ ना॰ स्त्री॰ पौरि, खड़ाऊं।
पौलोमी॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्राणी, देवरानी।
पौवा॰ ना॰ पु॰ सेर का चौथा भाग।
पौष॰ ना॰ पु॰ नवांमास, पूस।
पौष्कराह्वय॰ ना॰ पु॰ पुहकरमूल।
पौष्टिक॰ गु॰ पुष्टिकारक।
पौसरा॰ ना॰ पु॰ पिआऊ।
पौह॰ ना॰ पु॰ जल पिलाने का स्थान।
पौहदा॰ ना॰ पु॰ पौधा।
पौहा॰ ना॰ पु॰ गाय बैलादि पशु।
प्यार॰ ना॰ पु॰ प्रेम, दुलार।
प्यारा॰ गु॰ प्रिय, दुलारा, लाड़िला।
प्यारी॰ ना॰ स्त्री॰ प्रिया, दुलारी, लाड़िली।
प्यावना॰ स॰ क्रि॰ पिलाना।
प्यास॰ ना॰ स्त्री॰ तृषा।

प्रोदिका० ना० स्त्री० पोय बेलि।
प्रोषित० गु० जो उकसागया, विदेशी।
प्रोषितपतिका० } ना० स्त्री० जिसका पति
प्रोषितभर्तृका० } विदेशको गया हो।
प्रोष्टी० ना० स्त्री० सफरी, मछली।
प्रोहित० ना० पु० पुरोहित।
प्रोक्षण० ना० पु० यज्ञ में बलिदान करना, छिड़कावा, वध।
प्रोक्षित० गु० जो छिड़कागया, वधकियागया।
प्रौढ़० गु० जो बढ़चुका, स्याना, सभ्य, चालाक विद्वानों की सभाका।
प्रौढ़ता० ना० स्त्री० पोढ़ाई, स्यानपन, चतुराई।
प्रौढ़ा० ना० स्त्री० स्त्री तीसवर्ष से पचपन वर्ष तक।
प्रौढ़ि० ना० स्त्री० जोखिम, ध्वनि, अभिमान से बात कहनी।
प्लवंग० } ना० पु० वानर, बन्दर।
प्लावी० }
प्लीहा० ना० स्त्री० पिलही, तिल्ली।
प्लीहारी० ना० पु० सरफोंका।
प्लुत० ना० पु० त्रिमात्रिकस्वर, स्वर विशेष, राग का नाम विशेष।
प्लुति० ना० स्त्री० कूदना, फांदना।

[फ]

फंदना० अ० क्रि० फसना, कूदना।
फंदलाना० स० क्रि० फुसलाना।
फंदा० ना० पु० फसरी, फांसी, जंजाल।
फंसाव० ना० पु० उलझाव, अटकाव।
फंसियारा० ना० पु० बटपार जो पथिकों को फांसी देकर मारडालता है।
फकड़ी० ना० स्त्री० अनादर करने का नाम।
फक्कड़० ना० पु० झगड़ा, गालीगलौज, ठठोली।
फका० ना० पु० फंगा।
फकिका० ना० स्त्री० फांकी।
फकिया ना० स्त्री० फांक।
फकी० ना० स्त्री० फांकी।
फगुनहटे० गु० फागुनके पास, फागुन के दिनों।
फगुवा० ना० पु० होली के दिन, अथवा जो स्त्री फागुन में नेग लेती है।
फंका० ना० पु० } चूर्ण इत्यादि को हाथ में
फंकी० ना० स्त्री० } रखकर मुखमें डालना।
फटक० ना० पु० स्फटिक।
फटकना० स० क्रि० पछोड़ना, झाड़ना, अ० क्रि० तड़फड़ाना।
फटकरी० ना० स्त्री० फिटकरी।
फटका० ना० स्त्री० चिड़ीमार का जाल, बड़ा पिंजरा, पक्षियों के डराने के लिये फटा बांस आदि जो रस्सी में बांधकर वृक्षादि पर लटकाते हैं।
फटना० अ० क्रि० टूटना, चिरना, फूटना।
फटपड़ना० अ० क्रि० बहुतसा उपजना, एकाएक मोटा होजाना, कामकी अधिकता में व्याकुल होना, फाट के गिरना।
फटफटाना० स० क्रि० पंखझाड़के उड़ना, कान बजाना कुत्तादि का, अ० क्रि० तड़पना, व्याकुल होना।
फटा० गु० चिराहुआ।
फटाक० अव्य० उसी समय, तुरन्तही।
फटाका० ना० पु० बन्दूकादि का शब्द।
फटाना० अ० क्रि० संगसे अलग चलना।
फटाव० ना० पु० चिराव, जुदागी, अलगहोना।
फटिक० ना० पु० स्फटिक।
फड़० ना० पु० द्यूतस्थान, पक्ष।
फड़कना० अ० क्रि० उछलना, फड़फड़ाना मांसआदि का उछलना, दीसना।
फड़फड़ाना अ० क्रि० फड़कना।
फड़फड़िया० ना० पु० फड़कनेहारा।
फड़ाना० स० क्रि० चिराना, फटाना।
फण० ना० पु० सांप, या, सांपका पसरा हुआ माथा।
फणधर० ना० पु० सांप।

प्यासा० } गु० तृषावन्त, तृषित ।
प्यासी० }

प्यौसार० } ना० पु० पतिका घर स्त्री० ससु-
प्यौहर० } राल ।

प्र० अव्य० जिस शब्दकी आदि में यह मिलितहो उसका अर्थ कभी आगे कभी अधिकहै ।

प्रकट० } गु० प्रकट, प्रसिद्ध ।
प्रकटित० }

प्रकम्पन० ना० पु० आंधी, झकड़ ।

प्रकर० ना० पु० समूह, गिरोह ।

प्रकरण० ना० पु० एक विषयका प्रस्ताव, पाठमें विश्राम स्थान, अध्याय, समूह ।

प्रकाम० ना० पु० सिद्धि विशेष ।

प्रकार० ना० पु० रीति, तरह, विशेषण, भेद, सादृश्य, चौका ।

प्रकारान्तर० गु० दूसरे प्रकार, दूसरा प्रकार ।

प्रकाश० ना० पु० ज्योति, उजाला, रोशनी, गु० प्रकट ।

प्रकाशक० ना० पु० प्रकाशकर्त्ता ।

प्रकाशवान्० गु० प्रकाशयुत, प्रकाशित, रोशन ।

प्रकाशित० गु० प्रकाश कियागया, रोशन ।

प्रकाश्य० गु० प्रकाशकेयोग्य ।

प्रकीर्ण० ना० पु० चौंरा, अध्याय, गु० प्रकट व्याप्त ।

प्रकीर्त्तन० ना० पु० कथन, भाषण ।

प्रकीर्त्तित० गु० कथित, भाषित ।

प्रकृत० ना० स्त्री० स्वभाव, गुण, गु० जो बनाया गया ।

प्रकृतार्थ० ना० पु० प्रकृतका जो अर्थ ।

प्रकृति० ना० स्त्री० स्वभाव, मूल, माया, संसार ।

प्रकृष्ट० गु० उत्तम, श्रेष्ठ, मुख्य, अच्छा ।

प्रक्रम० ना० पु० चलन, गमन, अवकाश ।

प्रक्रिया० ना० स्त्री० व्याकरण का ग्रन्थ विशेष, साधनिका ।

प्रखर० ना० पु० पाखर, गु० तीक्ष्ण ।

प्रख्यात० गु० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रसन्न, आनन्दित ।

प्रगट० गु० व्यक्त, साक्षात्, प्रत्यक्ष, प्रकाश, प्रसिद्ध ।

प्रगटना० अ० क्रि० प्रकटहोना ।

प्रगल्भ० गु० शास्त्र से विजयी, अभय, योद्धा, प्रतिष्ठावान्, सामर्थी ।

प्रगाढ़० ना० पु० पीड़ा, तपस्या, गु० बहुत गाढ़ा, कठिन ।

प्रग्रह० ना० पु० किरणाली ।

प्रघट० गु० प्रगट ।

प्रघटी० ना० स्त्री० सुवर्ण या रौप्य के लिये सांचा ।

प्रचण्ड० गु० बलवान्, तेज, असह्य, भयङ्कर, क्रोधी ।

प्रचलित० गु० जो चलताहै, जारी ।

प्रचार० ना० पु० विस्तार, फैलाव, चलन, प्रकाश, जारी होना, प्रकटता ।

प्रचारक० गु० प्रचार करनेहारा ।

प्रचारना० स० क्रि० चलाना, बाढ़ देना, उमड़ाना ।

प्रचारित० गु० विस्तारित, चलित और प्रकाशित ।

प्रचुर० गु० बहुत ।

प्रचेता० ना० पु० वरुण देवता ।

प्रचोदित० गु० प्रेरित, जो आज्ञा कियागया ।

प्रच्छन्न० ना० पु० चोर, खिड़की, गु० गुप्त, आच्छादित ।

प्रजरण० ना० पु० ज्वलन, जलन ।

प्रजरना० अ० क्रि० जलना, बरना ।

प्रजरित० गु० ज्वलित, जलता भया ।

प्रजा० ना० स्त्री० सन्तान, सेवक, राज्य के वासी, रैयत ।

प्रजाता० ना० स्त्री० जननी, जच्चा ।

प्रजापति० ना० पु० राजा, ब्रह्मा, दक्ष, कुम्हार ।

प्रजारक० गु० जलानेहारा ।

प्रजारण० ना० पु० जलावन, दहकाहट ।

फणपति० ना० पु० शेषजी सर्पोंका राजा।
फणा० ना० पु० फण।
फणि० ना० पु० सांप वो उसकी मणि।
फणिक० ना० पु० सांप।
फणिज्जक० ना० पु० मरुआ, सुगन्धितपौधा।
फणी० ना० पु० फणि, सांप।
फणीन्द्र० } फणीश० } ना० पु० सांपोंका राजा, शेषजी।
फदकना० अ० क्रि० दालआदिका चुरना।
फदफदाना० अ० क्रि० बलबलाना, छोटे २ दाने पड़ना।
फन० ना० पु० फण।
फनगा० ना० पु० टिड्डा, आंखफोड़ा।
फनफनाना० अ० क्रि० फण खोलना, फुफकारना।
फन्दा० ना० पु० फांसी, पेंच, उलझाव।
फफसा० ना० पु० फूलाहुआ।
फफूदी० ना० स्त्री० गीलापन के कारण से जो, सफेदी अचार आदि में लगजाती है, सड़त।
फफोला० ना० पु० फुलका, छाला।
फब० ना० स्त्री० शोभा।
फबकना० अ० क्रि० पनपना, डाल निकलना।
फबता० ना० पु० योग्य, ठीक, भगता।
फबती० ना० स्त्री० शोभा, किसीको वस्त्र पहिने देखकर कहना यह किस जातिका है।
फबन० ना० स्त्री० शोभा, छेजनी।
फबना० अ० क्रि० सोहना, छाजना, सजना।
फबीला० गु० शोभित, सजीला, शोभायमान।
फर० ना० पु० फल, तीरकीगांसी, पक्षी।
फरकना० अ० क्रि० फड़कना।
फरचा० ना० पु० मेघोंका फटजाना, फैसला।
फरचाना० स० क्रि० न्यायकरना, आज्ञा देना।
फरछा० गु० निर्मल, स्वच्छ, खरा।
फरछाना० स० क्रि० स्वच्छ वा निर्मल कराना, खराना।

फरफन्द० ना० पु० छल, कपट, धोखा।
फरफन्दिया० गु० छली, धूर्त, ठग, कपटी।
फरसं० ना० पु० फरसा।
फरसा० ना० पु० फावड़ा, कुल्हाड़ा, तबर, अस्त्र विशेष।
फरहरा० ना० पु० } फरहरी० ना० स्त्री० } ध्वजा, पताका, गु० अधखुला।
फरहा० ना० पु० खोखला, फरुला, निर्माण।
फरिया० ना० स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष, लड़कियों के पहरने का वस्त्र विशेष।
फरी० ना० स्त्री० ढाल, ढाली, फल समेत।
फरांटा० ना० पु० बांसका टुकड़ा, ध्वजाके हिलने या घोड़े की श्वासका जो शब्द होता है।
फराना० अ० क्रि० हिलना या उड़ना।
फल० ना० पु० वृक्षादिका रसप, पलटा मोती, कर्मोंका भोग, सन्तान, बाणके आगे का लोहा खड़ादि।
फलकना० अ० क्रि० फड़कना।
फलचारि० ना० पु० अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।
फलजनक० ना० पु० जो फलजन्मावे।
फलताड़० ना० पु० ताड़का फल।
फलद० ना० पु० वृक्ष गु० फलका दाता।
फलदाता० } फलदानि० } गु० फल देनेहारा।
फलना० अ० क्रि० फललाना, भाग्यवान्होना।
फलमूल० ना० पु० फल की दुरुनी।
फलराज० ना० पु० खरबूजह, दशांगुल।
फलवर्तुल० ना० पु० तरबूज, हिंदवाना।
फलवान्० गु० जो फल युक्त हो।
फला० ना० पु० संयुक्ताचर, समस्ताक्षर, गु० फलित।
फलांग० ना० स्त्री० कूदन, लंघन, डग, जस्त।
फलाशिन० ना० पु० खिरनी।
फलाश० ना० स्त्री० फलांग।
फलित० गु० फलाहुआ, फला समेत।

प्रजारना० स० क्रि० जलाना, दहकाना।
प्रजाशन० गु० प्रजामक्षक।
प्रजेश० ना० पु० राजा, मन्त्री, कुम्हार।
प्रज्वलता० ना० स्त्री० ज्योति, उज्ज्वलता और जलाव।
प्रज्वलित० गु० ज्योतिष्मान्, उज्ज्वल, जला।
प्रण० ना० पु० प्रतिज्ञा, दावा।
प्रणऊं० क्रि० प्रणाम करों।
प्रणत० गु० अतिदीन, अतिनम्र, शरणागत।
प्रणति० ना० स्त्री० नमस्कार, प्रणाम।
प्रणय० ना० स्त्री० प्रीति, प्रेम, मुक्ति, भरोसा, अपनापन।
प्रणव० ना० पु० अक्षर, मन्त्रराज, ओंकार।
प्रणवों० क्रि० प्रणाम करों।
प्रणाम० पु० नमस्कार, सलाम।
प्रणाली० ना० स्त्री० नाली।
प्रणिधान० ना० पु० मनोयोग, उद्योग।
प्रणिपात० ना० पु० दण्डवत्, प्रणाम।
प्रणी० गु० प्रण करनेहारा, मनचेला।
प्रतन० गु० पुराना, प्राचीन।
प्रताप० ना० पु० ऐश्वर्य्य, तेज, सूरमापन।
प्रतापवान्० } गु० तेजवान्, तेजस्वी, तेज
प्रतापी० } धारी।
प्रतारक० ना० पु० ठग, वंचक, मंचक।
प्रतारण० } ना० पु० वंचन, ठगई।
प्रतारणा० }
प्रतारित० गु० ठगाया, वंचित।
प्रति० ना० स्त्री० नक़ल, अव्य० यह शब्द जिस शब्द के आदि में होता है, उसका अर्थ कभी फेर कभी सन्ते कभी एक एक।
प्रतिउपकार० ना० पु० प्रत्युपकार, प्रतिकार।
प्रतिकार० ना० पु० बदला, पलटा।
प्रतिकूल० गु० विरुद्ध, उलटा, प्रतिबन्धक।
प्रतिग्रह० ना० पु० दान, जो ब्राह्मणादि सायंकाले वा ऐसा दान लेना, ग्रहणादि।
प्रतिघात० ना० पु० मारण, वध।
प्रतिच्छाया० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, सदृश, मूर्ति।
प्रतिछांह० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, छाया।
प्रतिदान० ना० पु० धरोहर, फेरदेना।
प्रतिदिन० अव्य० दिन दिन।
प्रतिधा० अव्य० बार, बार, हरबार, हरदफ़ा।
प्रतिनिधि० ना० स्त्री० सदृश, तदनुरूप मनिष्, पेशकार।
प्रतिपत्० ना० स्त्री० परेवा, पखवी प्रथमतिथि।
प्रतिपत्ति० ना० स्त्री० यश, ज्ञान।
प्रतिपद्० ना० स्त्री० प्रतिपत्, परेवा।
प्रतिनिष्का० ना० स्त्री० गन्धपसारन।
प्रतिपन्न० गु० जानागया, निश्चित।
प्रतिपक्ष० ना० पु० } शत्रु, वैरी।
प्रतिपक्षी० स्त्री० }
प्रतिपादन० ना० पु० दान, बुझावना।
प्रतिपादित० गु० जिसका प्रतिपादन होगया।
प्रतिपाद्य० गु० बोध्य, वर्णन के योग्य।
प्रतिपाल० ना० पु० पालन, पोषण।
प्रतिपालक० ना० पु० पालन करनेहारा।
प्रतिपालन० ना० पु० प्रतिपाल, पोषण।
प्रतिपालना० स० क्रि० पालन करना, पोसना।
प्रतिप्रसव० ना० पु० जो बात और बात से सिद्ध हो।
प्रतिफल० ना० पु० सम्पूर्ण फल, दुनयाग।
प्रतिबन्ध० ना० पु० काम का बिगाड़।
प्रतिबन्धक० ना० पु० बाधक, रोकनेहारा, अटकानेहारा।
प्रतिभट० ना० पु० समान योद्धा, तुल्यपराक्रम।
प्रतिभा० ना० स्त्री० बुद्धि, ज्योति, समझ।
प्रतिभाग० ना० पु० अंश, अंशभार, हरहिस्सा।
प्रतिभू० ना० पु० ज़ामिन, ज़ामिन, ज़मानती।
प्रतिमा० ना० स्त्री० मूर्ति, तसवीर, बुत।
प्रतिमास० ना० पु० महीने महीने, माह बमाह, हरमाह।
प्रतिरूप० ना० पु० परछाई, दर्पण, मूर्ति।

फलितार्थ॰ ना॰ पु॰ तात्पर्य्यार्थ, ठीक अर्थ।
फलिनी॰ ना॰ पु॰ प्रियंगु।
फलिया॰ ना॰ स्त्री॰ छीमी, तुकमा।
फली॰ ना॰ स्त्री॰ छीमी, तुकमा, ना॰ पु॰ वृक्ष, गु॰ स्त्री॰ फलित।
फलीरा॰ ना॰ पु॰ पारसपीपल।
फलोदय॰ ना॰ पु॰ फलोत्पत्ति, प्राप्तकाम, स्वर्ग आनन्द।
फलोपम॰ ना॰ पु॰ सफेद बैंगन, श्वेत भांटा।
फसकड़॰ ना॰ स्त्री॰ बैठक विशेष।
फसकना॰ अ॰ क्रि॰ फटना, फूटना।
फसकाना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना, तोड़ना, फोड़ना।
फसफाऊ॰ ना॰ पु॰ फाड़, तोड़, फोड़।
फसना॰ अ॰ क्रि॰ बझना, उलझना, जालमें पड़ना, बन्दीशाला में पड़ना, रुकना, फंदे में आना, काबू में आना।
फसफसा॰ गु॰ पिलपिला, अलगा।
फसफसाना॰ अ॰ क्रि॰ पिलपिलाना, डरना।
फसवाना॰ स॰ क्रि॰ उलझाना, अटकाना, रुकवाना, बन्दी करवाना।
फसाना॰ स॰ क्रि॰ बझाना, उलझाना, रुकाना, अटकाना, जाल में डालना, और बन्दीशाला में रखवाना।
फहरना॰ अ॰ क्रि॰ फरीना।
फहराना॰ अ॰ क्रि॰ फरीना, उछलना, कूदना।
फांक॰ ना॰ स्त्री॰ फलका टुकड़ा।
फांकना॰ स॰ क्रि॰ फंका मारना।
फांकी॰ ना॰ स्त्री॰ फांक, फक्किका, पूर्व्वपक्ष।
फाटना॰ स॰ क्रि॰ बांटना, विभाग करना।
फांट॰ ना॰ पु॰ बांटाव, हिस्सा, विभाग।
फांद॰ ना॰ पु॰ फंद, फंदा।
फांदना॰ स॰ क्रि॰ लांघना, कूदजाना।
फांदा॰ ना॰ पु॰ फांद, गुच्छा।
फांदी॰ ना॰ स्त्री॰ गन्ना का एक बोझ।

फांफड़॰ ना॰ पु॰ छेद, छेद।
फांस॰ ना॰ स्त्री॰ सूक्ष्म कांटा।
फांसना॰ स॰ क्रि॰ बांधना, रोकना, बन्दकरना, जाल में लाना।
फांसा॰ ना॰ पु॰ डोरका उबका।
फांसी॰ ना॰ स्त्री॰ फन्दी, फसड़ी, फन्द, कण्ठ बन्धन।
फाग॰ ना॰ पु॰ गुलाल या उसका डालना या उड़ाना, होली का समय।
फागुन॰ ना॰ पु॰ फाल्गुन।
फाटक॰ ना॰ पु॰ बड़ा द्वार, अटकाव।
फाटना॰ अ॰ क्रि॰ फटना।
फाड़खाना॰ स॰ क्रि॰ भंभोरना, झंझोरना।
फाड़ना॰ स॰ क्रि॰ चीरना, फोड़ना, तोड़ना, मसकाना।
फाड़ा॰ गु॰ चीराहुआ।
फाल॰ ना॰ स्त्री॰ हलके अगिला लोहा, चौकड़ी सुपारी का टूक, डग चौ।
फालसा॰ ना॰ पु॰ फल वा वृक्ष विशेष।
फाल्गुन॰ } ना॰ पु॰ फागुन मास, अर्जुन।
फागुन॰
फाल्गुनिका॰ ना॰ स्त्री॰ फगुई, होली।
फाव॰ ना॰ पु॰ पलुआ, लसन।
फावड़ा॰ ना॰ पु॰ माटी खोदने का अस्त्र, फसा, बड़ी और चौड़ी कुदाल।
फावड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ बैरागा, बैरागी।
फावना॰ अ॰ क्रि॰ सोहना, शोभादेना।
फावित॰ गु॰ शोभित।
फावी॰ गु॰ शोभितभई, शोभा दी।
फाहा॰ ना॰ पु॰ मरहम से भीगाहुआ कपड़ेका छोटा टुकड़ा, तीसी।
फिकारना॰ स॰ क्रि॰ शिर नंगा करना।
फिट॰ ना॰ पु॰ फिटकारा।
फिटकार॰ ना॰ स्त्री॰ धिक्कार, लानत।
फिटकरी॰ ना॰ स्त्री॰ फटकरी।

प्यासा० } गु० तृषावन्त, तृषित।
प्यासी० }
प्यौसार० } ना० पु० पतिका घर स्त्री० ससु-
प्यौहर० } राल।
प्र० अव्य० जिस शब्दकी आदि में यह मिलितहो उसका अर्थ कभी आगे कभी अधिकहै।
प्रकट० } गु० प्रकट, प्रसिद्ध।
प्रकटित० }
प्रकम्पन० ना० पु० आंधी, झकड़।
प्रकर० ना० पु० समूह, गिरोह।
प्रकरण० ना० पु० एक विषयका प्रस्ताव, पाठमें विश्राम स्थान, अध्याय, समूह।
प्रकाम० ना० पु० सिद्धि विशेष।
प्रकार० ना० पु० रीति, तरह, विशेषण, भेद, सादृश्य, डौल।
प्रकारान्तर० गु० दूसरे प्रकार, दूसरा प्रकार।
प्रकाश० ना० पु० ज्योति, उजाला, रोशनी, गु० प्रकट।
प्रकाशक० ना० पु० प्रकाशकर्त्ता।
प्रकाशवान्० गु० प्रकाशयुत, प्रकाशित, रोशन।
प्रकाशित० गु० प्रकाश कियागया, रोशन।
प्रकाश्य० गु० प्रकाशके योग्य।
प्रकीर्ण० ना० पु० चौंरी, अध्याय, गु० प्रकट, व्याप्त।
प्रकीर्त्तन० ना० पु० कथन, भाषण।
प्रकीर्त्तित० गु० कथित, भाषित।
प्रकृत० ना० स्त्री० स्वभाव, गुण, गु० जो बनाया गया।
प्रकृतार्थ० ना० पु० प्रकृतका जो अर्थ।
प्रकृति० ना० स्त्री० स्वभाव, मूल, माया, संसार।
प्रकृष्ट० गु० उत्तम, श्रेष्ठ, मुख्य, अच्छा।
प्रक्रम० ना० पु० चलन, गमन, अवकाश।
प्रक्रिया० ना० स्त्री० व्याकरण का ग्रन्थ विशेष, साधनिका।
प्रखर० ना० पु० पाखर, गु० तीक्ष्ण।
प्रख्यात० गु० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रसन्न, आनन्दित।
प्रगट० गु० व्यक्त, साक्षात्, प्रत्यक्ष, प्रकाश, प्रसिद्ध।
प्रगटना० अ० क्रि० प्रकटहोना।
प्रगल्भ० गु० शास्त्र से विजयी, अभय, योद्धा, प्रतिष्ठावान्, सामर्थी।
प्रगाढ़० ना० पु० पीड़ा, तपस्या, गु० बहुत गाढ़ा, कठिन।
प्रग्रह० ना० पु० किरवाली।
प्रघट० गु० प्रगट।
प्रघटी० ना० स्त्री० सुवर्ण या रौप्य के लिये सांचा।
प्रचण्ड० गु० बलवान्, तेज, असहा, भयङ्कर, क्रोधी।
प्रचलित० गु० जो चलताहै, जारी।
प्रचार० ना० पु० विस्तार, फैलाव, चलन, प्रकाश, जारी होना, प्रकटता।
प्रचारक० गु० प्रचार करनेहारा।
प्रचारना० स० क्रि० चलाना, बाढ़ देना, उमगाना।
प्रचारित० गु० विस्तारित, चलित और प्रकाशित।
प्रचुर० गु० बहुत।
प्रचेता० ना० पु० वरुण देवता।
प्रचोदित० गु० प्रेरित, जो आज्ञा कियागया।
प्रच्छन्न० ना० पु०, तीर, खिड़की, गु० गुप्त, आच्छादित।
प्रजरण० ना० पु० ज्वलन, जलन।
प्रजरना० अ० क्रि० जलना, बरना।
प्रजरित० गु० ज्वलित, जलता भया।
प्रजा० ना० स्त्री० सन्तान, सेवक, राज्य के वासी रैयत।
प्रजाता० ना० स्त्री० जननी, जच्चा।
प्रजापति० ना० पु० राजा, ब्रह्मा, दक्ष, कुम्हार।
प्रजारक० गु० जलानेहारा।
प्रजारण० ना० पु० जलावन, दहकावट।

फिटकारना० स० क्रि० धिक्कार करना, कोसना, शापना।
फिटाना० स० क्रि० फेंटना, फिनाना।
फिर० अव्य० पुनि, पुनः, फेर।
फिरकवाहनी० ना० स्त्री० सेजगाड़ी।
फिरकी० ना० स्त्री० बंगी, भौंरा, चर्कई, फिराने की वस्तु जिसको लड़के फिराते हैं।
फिरजाना० अ० क्रि० पलटना, फिरना।
फिरत० ना० पु० वस्तु जो अप्रसन्नता से लौटादी।
फिरता० गु० रमता, फेरने का पैसा।
फिरतारहना० अ० क्रि० रमना, फेरा करना, भटकता रहना।
फिराना० स० क्रि० घुमाना, भटकाना, रमाना।
फिराव० ना० पु० घुमाव, फेर।
फिर्ना० अ० क्रि० घूमना, लौटना, भटकना, रमना।
फिर्नी० ना० स्त्री० फिरकी।
फिल्ली० ना० स्त्री० पिण्डली।
फिसफिसा० गु० डरपोक, फसफसा।
फिसफिसाना० अ० क्रि० भयभीत होना, डराना।
फिसलन० ना० स्त्री० खिसलन, बिछलना।
फिसलना० अ० क्रि० खिसलना, बिछलना, रपटपड़ना।
फिसलाना० स० क्रि० खिसलाना, बिछलाना, चूकना।
फिसलाहट० ना० स्त्री० खिसलाहट, चिकनाहट।
फींचना० क्रि० ना० खंगालना, धोना।
फीका० गु० स्वादरहित, सीठा, सांवला, बदरंग, बेमज़े।
फुंकार० ना० स्त्री० सांपकी फनफनाहट।
फुंकारना० अ० क्रि० फनफनाना।
फुंदार० ना० स्त्री० फांसी, फूंदी।
फुकना० अ० क्रि० जलना, ना० पु० थैली।

फुकनी० ना० स्त्री० धौंकनी, निगाली, आग फूकने की जो बांस या पीतलादि की होती है।
फुट० गु० अयुग्म।
फुटकर० गु० अलग, भिन्न भिन्न, अयुग्म।
फुटकी० ना० स्त्री० छींट, छिटकी, गु० अयुग्म।
फुड़िया० ना० स्त्री० फुंसी छोटा फोड़ा।
फुदकना० अ० क्रि० कुदकना, थोड़ा थोड़ा उछलना।
फुदकी० ना० स्त्री० पक्षी विशेष।
फुनगी० ना० स्त्री० कली, कोंपल, वृक्षकी चोटी।
फुनंग० ना० स्त्री० शिखर, चोटी।
फुनसी० ना० स्त्री० मुहासा, फुड़िया, पिरकी।
फुनिया०, फुन्नी०, फुन्नो० } ना० स्त्री० लोली।
फुफकार० ना० स्त्री० फुंकार।
फुफ्फा० ना० पु० फूफा।
फुफ्फो० ना० स्त्री० फूफू, फूआ।
फुफेरा० ना० पु०, फुफेरी० ना० स्त्री० } गु० जो फूफूसे उत्पन्न भया या जो फूफूका सम्बन्धी होवे।
फुर० गु० सच, ठीक, सत्य।
फुरति० ना० स्त्री० फुर्ती।
फुरफुराना० अ० क्रि० कांपना, हिलना।
फुरफुरी० ना० स्त्री० कम्पाहट, थरथराहट।
फुर्त०, फुर्ती० } ना० स्त्री० वेगता, शीघ्रता, चालाकी, चटपटी, जल्दी।
फुर्तीला० गु० वेगी, चालाक, चटपटिया।
फुलका० गु० फूलाहुआ, हलका, ना० पु० फफोला, पतली छोटी रोटी।
फुलकारना० अ० क्रि० फूलना, फण, उठाना।
फुलकारी० ना० स्त्री० कपड़ा जिसमें फूलहों।
फुलकिया०, फुलका० } ना० स्त्री० रोटी विशेष।
फुलझड़ी० ना० स्त्री० आतशबाजी विशेष।

प्रदेश० ना० पु० भूमिखण्ड, देश, स्थान, परदेश, छोटी वितरित।
प्रदोष० ना० पु० सूर्यास्त से दोदण्ड, शिवव्रत विशेष, दोष।
प्रदोषा० ना० स्त्री० रात, रात्रि।
प्रद्युम्न० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीकापुत्र, कामदेव।
प्रद्योतन० ना० पु० सूर्य।
प्रधान० ना० पु० मुख्यमंत्री, श्रेष्ठ, गु० पहला।
प्रधानता० ना० स्त्री० मुख्यता, श्रेष्ठता, सन्नारत।
प्रधाननगर० ना० पु० प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर।
प्रनाम० ना० पु० प्रणाम।
प्रनाशी० गु० नाशनेवाला, मिटनेवाला।
प्रपंच० ना० पु० छल, विरोध, ढेर, धोखा, चूक, संसार, बातों का विस्तार।
प्रपंचित० गु० जो विस्तारयुत वर्णनहुआ, जो कहा गया।
प्रपंची० ना० पु० प्रपंचकर्त्ता घाती, छली।
प्रपितामह० ना० पु० पितामह का पिता, परदादा।
प्रपितामही० ना० स्त्री० पितामह की माता, परदादी।
प्रपुन्नाड० ना० पु० पवांर पौधा।
प्रपौत्र० ना० पु० पौत्रका पुत्र, परपोता।
प्रपौत्री० ना० स्त्री० पौत्रकी पुत्री, परपोती।
प्रफुल्ल० ना० पु० फफूल मेथि।
प्रफुल्ल० गु० विकसित, फूला, खरा।
प्रफुल्लित० गु० विकसित, फूलाभया, आनन्द, मग्न, खुश।
प्रबन्ध० ना० पु० क्रम से वाक्य की बनावट, रचना विशेष, कथा, वृत्तान्त, बन्दोबस्त।
प्रबन्धाधीन० गु० प्रबन्ध के आधीन।
प्रबल० गु० बलवान्, पहलवान्।
प्रबलता० ना० स्त्री० बलात्कारी, बरबस।

प्रबोध० ना० पु० ज्ञान, उपदेश, मूर्च्छा, उजागता, तसल्ली, खबर।
प्रबोधक० गु० प्रबोध करने हारा।
प्रभद्र० ना० पु० नींब वृक्ष।
प्रभंजन० ना० पु० पवन, गु० विनाशन।
प्रभव० ना० पु० उत्पत्ति, उत्पन्न, उत्पत्तिकारी।
प्रभा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, दीप्ति, चमक।
प्रभाकर० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा।
प्रभाव० ना० पु० माहात्म्य, सामर्थ्य, फल।
प्रभात० ना० पु० प्रातःकाल, भोर, तड़का।
प्रभाती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
प्रभावती० ना० स्त्री० पातालगंगा।
प्रभास० ना० पु० तीर्थ विशेष।
प्रभिन्न० ना० पु० हाथी, (प्रभिन्नोगर्जितोमत्तः, इत्यमरः)।
प्रभु० ना० पु० नाथ, स्वामी, राजा, ईश्वर, प्रतिपालक, गुरु।
प्रभुता० ना० स्त्री० } राज्यादि अधिकार, धनाढ्यता, स्वामित्व, ईश्वरता।
प्रभुताई० ना० स्त्री० }
प्रभुत्व० ना० पु० }
प्रभुतालय० ना० पु० नीतिगृह, कचहरी, अदालत।
प्रभृति० अव्य० इत्यादि।
प्रमदा० ना० स्त्री० सुलक्षणा स्त्री।
प्रमदी० ना० स्त्री० कलिहारी।
प्रमथा० } ना० स्त्री० हड़, शिवा।
प्रमथ्या० }
प्रमथनाथ० } ना० पु० श्रीमहादेवजी, यथा (मृत्युंजयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः इत्यमरः)।
प्रमथाधि० }
प्रमथाधिप० }
प्रमा० ना० स्त्री० यथार्थ का ज्ञान, अनुभव।
प्रमाण० ना० पु० निश्चय का कारण, साक्षी, अवधि, प्रत्यक्ष, निश्चय, सच्चा, ग्राह्य।
प्रमाणिक० गु० योग्य, निश्चयकारक, माध्य रूप प्रमाण के योग्य।

फुलवाई० ना० स्त्री० फुलवाड़ी, रामायणे यथा, एक सखी सियसंग विहाई, गई रहे देखन फुलवाई।

फुलवाड़ी० ना० स्त्री० फूलोंकी बाड़ी वा बाग।

फुलाना० स० क्रि० सुजाना, मोटाकरना।

फुलासरा० ना० पु० लल्लोपत्तो, फुसलाहट।

फुलेल० ना० पु० चंबेली का तेल।

फुलौरि० ना० स्त्री० पकौड़ी।

फुल्ल० गु० फूला, खिला।

फुल्लड़० गु० पचेला, फूलसे थोड़े दिनके फल।

फुल्ली० ना० स्त्री० आंखकी फूली।

फुसफुसाना० अ० क्रि० धीरे धीरे बातकहना, झीसी पड़ना।

फुहार० ना० स्त्री० पानी के कण छोटे २ पड़ना।

फुहारा० ना० पु० फव्वारह छोटी २ बूंदें छूटना।

फूआ० ना० स्त्री० फूफू, बापकी बहन।

फूंक० ना० पु० फूंकने का काम या चाल।

फूकना० स० क्रि० मुख से वायु छोड़ना, सुलगाना, मुख से बजाना, उड़ाना, जलाना।

फूकारना० अ० क्रि० फनफनाना।

फूही० ना० स्त्री० झीसी, फूही।

फूकना० स० क्रि० फूकना।

फूट० ना० स्त्री० ककड़ीविशेष, अयुग्म, बिगाड़, भिन्नता, खोंट।

फूटन० ना० स्त्री० अलगता, विरोध।

फूटना० अ० क्रि० टूटना, फटना, भिन्न भिन्न होना, प्रकट होना दुर्गन्धि निकलना।

फूटा० गु० टूटा।

फूटी० ना० स्त्री० विरोध, बिगाड़, गु० टूटी।

फूफा० ना० पु० फूफूका पति।

फूफी० } ना० स्त्री० बापकी बहिन।
फूफू० }

फूल० ना० पु० पुष्प, कली, निहानी, सूज, जले हुए मृतककी हड्डी।

फूलना० अ० क्रि० खिलना, बिगसना, आनन्दितहोना, सूजना, अभिमानी होना।

फूला० गु० सूजा, ना० पु० धानोंके लावा।

फूलाव० ना० पु० सूजन।

फूली० ना० स्त्री० फुल्ली जो आंख में होती है।

फूस० ना० पु० पुरानी घास, तृण, पूसमास।

फूसड़ा० ना० पु० गूदड़।

फूसी० ना० स्त्री० भूसी।

फूहड़० ना० स्त्री० फूहर।

फूहड़ा० गु० कुवचन कहनेहारा।

फूहर० ना० स्त्री० अनअीती, धामड़, कुचाल चलनेहारी, ना० स्त्री० मिट्टल।

फूहा० ना० पु० स्तनके सदृश रुई गोढ़ा।

फूहार० ना० स्त्री० फूहर, फुहरा।

फूही० ना० स्त्री० झीसी।

फेंक० ना० स्त्री० फेंकने का काम या चाल।

फेंकना० स० क्रि० डालना, झोंकना।

फेंकाव० गु० फेंकने के योग्य।

फेंट० ना० स्त्री० उच, कटिबन्ध, पटका।

फेंटन० स० क्रि० मिलाना, सानना, लतपत करना।

फेंटा० ना० पु० छोटी पगड़ी, पटका।

फेंटी० ना० स्त्री० आंटी।

फेट० ना० स्त्री० फेंट।

फेटना० स० क्रि० फेंटना।

फेटा० ना० पु० फेंटा।

फेणु० ना० पु० फेना।

फेणोचारि० ना० पु० समुद्र फेणु।

फेन० } ना० पु० झाग, फेणु।
फेना० }

फेनाना० अ० क्रि० फेना उठना।

फेनी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।

फेनुस० ना० पु० पीयूष।

फेफड़ा० ना० पु० अंग विशेष जिसके द्वारा श्वास लेते हैं।

प्रतिमूर्त्ति० ना० स्त्री० एक प्रतिमा के तुल्य द्वितीय।
प्रतियोग० ना० पु० शत्रुता, विरोध, वैर।
प्रतियोगी० गु० शत्रु, वैरी, विरोधी।
प्रतिरूप० ना० पु० सदृश, चित्र, मूर्त्ति।
प्रतिरोध० ना० पु० अटकावर, रोक।
प्रतिरोधक० ना० पु० चोर, रोकनेवाला।
प्रतिलोम० गु० बायां, औंधा, उलटा, दुष्ट, नीच।
प्रतिवचन० ना०पु० उत्तरपीछे वचन,वचनपर।
प्रतिवर्ष० ना० पु० वर्ष वर्ष, हरसाल।
प्रतिवाक्य० ना० पु० प्रति वचन, गु० जो उत्तर देने के योग्य है।
प्रतिवाद० ना० पु० विवाद, झगड़ा, विरोध।
प्रतिवादी० ना० पु० विवादी, विरोधी, प्रत्यर्थी।
प्रतिवास० ना० पु० पड़ोस।
प्रतिवासी० ना० पु० पड़ोसी।
प्रतिविम्ब० ना० पु० जो दर्पणादि देखने में रूप देख पड़ता है, अक्स, प्रतिरूप।
प्रतिशब्द० ना० पु० शब्द पीछे, शब्द के साथही शब्द।
प्रतिशब्दक० ना० पु० भाईं शब्द, जो शब्द के साथही कूपादि से शब्द सुनाई देता है।
प्रतिपिद्ध० ना० पु० निषिद्ध, वर्जित।
प्रतिषेध० ना० पु० निषेध, ना० स्त्री० मनाई।
प्रतिष्ठा० ना० स्त्री० मूर्त्ति स्थापन, सुख्याति, कीर्त्ति, आबरू, बड़ाई।
प्रतिष्ठित० गु० स्थापित, कीर्तिमान्, यशी, सुख्यातियुत, इज्जतदार।
प्रतिहत० गु० जो निराशभया, रोकागया, भ्रष्ट, नष्ट।
प्रतिहार० ना० पु० ड्योढ़ीवान, चोवदार।
प्रनिर्हिंसक० गु० घातक का घाती, कीनावर।
प्रतिज्ञा० ना० स्त्री० वचन, प्रण, अवधि, अवश्य करने का स्वीकार।

प्रतीक० ना० पु० अवयव, अङ्ग।
प्रतीकार० ना० पु० पलटा, बदला।
प्रतीची० ना० स्त्री० पश्चिम दिशा, पछांह।
प्रतीत० गु० प्रतिष्ठित, प्रकट।
प्रतीति० ना० स्त्री० विश्वास, श्रद्धा, भरोसा, समझ।
प्रतीक्षा० ना० स्त्री० और का मार्ग देखना, प्रत्याशा।
प्रतोली० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह।
प्रतोष० ना० पु० सन्तोष, धीरज, सबर।
प्रत्न० गु० पुराना।
प्रत्यक० ना० पु० ऊंगा।
प्रत्यय० ना० पु० विश्वास, समझ, चिह्न, निशान।
प्रत्यवाय० ना० पु० वियोग।
प्रत्यह० अव्य० प्रतिदिन, हररोज।
प्रत्यक्ष० गु० प्रसिद्ध, साक्षात्, दृष्टि गोचर, देखने के योग्य, अव्य० आगे।
प्रत्याशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा, उम्मेद।
प्रत्याहार० ना० पु० स्वल्प भोजन।
प्रत्युत्तर० ना० पु० उत्तरका उत्तर, जवाब।
प्रत्युत्थान० ना० पु० उठकरके जो सन्मान।
प्रत्युपकार० ना० पु० उपकार के पलटे उपकार, पलटादेना, इनाम।
प्रत्येक० गु० एक एक, एक, एक, हरएक।
प्रथम० गु० पहला, आदि, अव्वल, मुख्य।
प्रथमा० ना० स्त्री० पहली।
प्रथमान्त० गु० जो नाम या सर्व नाम प्रथम विभक्ति में हो।
प्रथा० ना० स्त्री० सुख्याति, यश, कीर्ति।
प्रथित० गु० यशवन्त, प्रसिद्ध, कीर्तिमान्।
प्रद० गु० दाताका चिह्न शब्दान्त में, दाता।
प्रदक्षिण० } ना० स्त्री० पूज्यको दाहिनेकर उस
प्रदक्षिणा० } के चारोंओर फिरकर निजासन पर आना, फिरना।
प्रदीप० ना० पु० दीपक, दिया।

फेफड़ी० ना० स्त्री० चलनेकी आशक्ति।
फेर० अव्य० पुनः।
फेर० ना० पु० वोक, टेढ़ाई, घुमाव, घेरा, कुण्डली, पोल, घुमाव।
फेरना० स० क्रि० घुमाना।
फेरा० ना० पु० घुमाव, फैलाव।
फेराफेरी० ना० स्त्री० इधर उधर जाना, आवागमन।
फेरी० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा।
फेरीवाला ना० पु० फेरनेवाला, बिसाती आदि।
फेरु० ना० पु० शृगाल, गीदड़, धोखा, अन्तर, फेर।
फेंटा० ना० पु० फेंटा।
फैलना० अ० क्रि० बिछना, पसरना, बिथरना, प्रकट होना।
फैलाना० स० क्रि० बिछाना, चौड़ाना, पसारना, बिथराना, प्रकट करना।
फैलाव ना० पु० बिछाव, पहराव, प्रकटता, प्रचार, भरपूर।
फोंक० गु० खोखला, पोला, ना० स्त्री० बाणकी एक ओर जिधरसे पेंच में लगाते हैं।
फोंकी० ना० स्त्री० नली, छूंछी।
फोहार० ना० स्त्री० फुहार।
फोक० ना० पु० तरछट, सीठी, गु० खोखला. वस्त्र का फटावा, बाण का एक ओर।
फोकट० ना० पु० कंगाल।
फोकड़० ना० पु० खूद, तरछट, कूड़ा।
फोड़ना० स० क्रि० तोड़ना, फाड़ना।
फोड़ा० ना० पु० स्फोटक, बालतोड़, पिरकी।
फोला० ना० पु० फफोला, छाला।

[ब]

बंझोटी० ना० स्त्री० बांझ होने की औषधि विशेष।
बंटवाना० स० क्रि० भागकरवाना, हिस्साकरवाना।
बंटवैया० ना० पु० भागकर्त्ता, बांटनेहारा।
बंटाना० स० क्रि० बांटना, वा बंटवाना।
बंटैत० ना० पु० बंटवैया।
बंडोहा० ना० पु० ववण्डर, बौंड़ा।
बंश० ना० पु० बांस।
बंशकार० ना० पु० बांस का बनानेवाला।
बंशलोचनी० ना० पु० बंशरोचन।
बंशरोचन० पु० बंसलोचन।
बंशावली० ना० स्त्री० बंसावली।
बंशी० ना० स्त्री० बंसी।
बक० ना० पु० बक, ना० स्त्री० झक, गप।
बकुची० ना० स्त्री० पौधा विशेष जिसके बीज से खुजली जाती है।
बकझक० ना० स्त्री० बकवाद।
बकना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, झकलगाना।
बकबक० ना० स्त्री० बड़बड़, गप शप।
बकबकाना० स० क्रि० बकबक करना।
बकरा० ना० पु० अज, छाग।
बकरी० ना० स्त्री० अजा, छेरी, छाग।
बकला० ना० पु० छिलका, छाल।
बकवाद० ना० स्त्री० बकबक।
बकवादी० ना० पु० बकबकिया।
बकवास० ना० पु० बकवाद।
बकवाहा० ना० पु०, बकवाही० ना० स्त्री० } बड़बड़िया।
बकसा० गु० समेट बन्धेजी।
बकसूवा० ना० पु० सुपड़ास, चपरास।
बकसैला० गु० बकसा।
बकायन० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष।
बकारा० ना० पु० अगुवा, पथिक, बटोही।
बकारी० ना० स्त्री० टेढ़ीलकीर।
बकिया० ना० स्त्री० छुरी, चाकू।
बकुला० ना० पु० बगला।
बकेनी० ना० स्त्री० बहुत दिनकी. ब्यानी गाय अथवा भैंस।
बकेरू० ना० पु० पलाश अर्थात् ढांककी जड़।

प्रसंग० ना० पु० प्रस्ताव, मेल, संगम, संयोग, सम्बन्ध, चर्चा, साथ, रव, वरल ।
प्रसन्न० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, खुश ।
प्रसन्नता० ना० स्त्री० प्रसाद, हर्ष, आनन्द, कृपा ।
प्रसन्नित० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, राजी ।
प्रसमित० गु० रहित, हीन, बिहून, बिन ।
प्रसव० ना० पु० गर्भ से बालक का निकलना, जनाया, पैदायश, उत्पत्ति ।
प्रसवत० क्रि० उपजते, जन्मते ।
प्रसव्य० गु० बायां, प्रतिकूल उपजने के योग्य ।
प्रसाद० ना० पु० देवताओंकी या गुरुकी जूठन, कृपा, दान, भोजन ।
प्रसादी० ना० स्त्री० जो कुछ देवताओं को चढ़ायागया, भोजन, खाना ।
प्रसारण० ना० पु० फैलाव, पसराव, गन्धपसारण, पौधा ।
प्रसादक० ना० पु० भाजी, पशुओं का साग ।
प्रसारित० गु० विस्तारित, जो फैलायागया ।
प्रसिद्ध० गु० प्रकाशित, विख्यात, मशहूर ।
प्रसिद्धता० ना० स्त्री० प्रकटता, सुख्याति, जाहूर ।
प्रसीद० क्रि० दयालुहो, कृपाकरो ।
प्रसूत० ना० पु० जात, जन्मा, प्रसूति ।
प्रसूति० ना० स्त्री० रोग विरोष, पानीबहने का रोग विशेष ।
प्रसूनिका० } गु० स्त्री० जननी जच्चा, माता ।
प्रसूता० }
प्रसून० ना० पु० पुष्प, फूल, फल ।
प्रसूती० ना० स्त्री० प्रसूता ।
प्रस्तर० ना० पु० पत्थर, पाषाण ।
प्रस्तरमय० गु० पाषाणमय, पथरीला ।
प्रस्ताव० ना० पु० अवसर, चर्चा ।
प्रस्ताविक० गु० समयपर, सामयिक ।
प्रस्तुत० गु० कथित, सिद्ध, स्तुत किया गया ।
प्रस्थ० ना० पु० परिमाण विशेष ।
प्रस्थर० ना० पु० पत्थर ।

प्रस्थान० ना० पु० गमन, विदा, यात्रा करने हारेका गमन, पायतुराव, नकल मकान ।
प्रस्थापित० गु० प्रेरित, भेजा गया ।
प्रस्थित० ना० स्त्री० कीर्ति, नेकनामी ।
प्रस्फुटित० गु० विकसित ।
प्रहर० ना० पु० पहर, याम, दिन या रातका चौथा भाग ।
प्रहरण० ना० पु० अस्त्र, मारण ।
प्रहस्त० ना० पु० राक्षस विशेष ।
प्रहार० ना० पु० चोट, ठोकर, मार ।
प्रहारित० गु० मारागया या माराहुआ ।
प्रहारी० गु० मारनेहारा ।
प्रहून० ना० पु० विनय, प्रणाम ।
प्रहेलिका० ना० स्त्री० पहेली, दृष्टिकूट ।
प्रहृष्ट० गु० सन्तुष्ट ।
प्रह्लाद० ना० पु० भक्त विशेष ।
प्रह्लादिनी० ना० स्त्री० हंसपादी बूटी ।
प्रक्षालन० ना० पु० धोलाई ।
प्रक्षालित० गु० जो धोयागया ।
प्रज्ञा० ना० स्त्री० सरस्वती, निर्मलबुद्धि ।
प्रज्ञात्मा० गु० आत्मज्ञाता, आत्मज्ञानी ।
प्राक्० अव्य० आगे, पहले, पूर्व ।
प्राकार० ना० पु० गढ़ ।
प्राकृतकवि० ना० पु० सूरदासादि ।
प्राकृतभाषा० ना० स्त्री० संस्कृतभाषा विशेष ।
प्राक्तन० गु० पुराना ।
प्रागल्भ्य० ना० पु० प्रगल्भता, ढिठाई, घमंड ।
प्राची० ना० स्त्री० पूर्व दिशा ।
प्राचीन० गु० पुराना, अगला ।
प्राचीना० ना० पु० पानी, आंवला ।
प्राड्विवाक० ना० पु० राजाकी आज्ञा से विचार करने के लिये स्थापित पुरुष, न्यायक ।
प्राण० ना० पु० श्वासासु, जीव, प्रियतम ।
प्राणदा० ना० स्त्री० जीवदाता ।
प्राणप्रतिष्ठा० ना० पु० मन्त्र से देवता में जीव धारण करना ।

को कूटकर बनाते हैं जिसकी रस्सी आदि बनती है।
बकोटना० स० क्रि० खसोटना, नोचना।
बक्रम० ना० पु० रंगने का काठ।
बक्कल० ना० पु० बकला।
बक्का० ना० पु० } गु० झूठी, गप्पी, बकवादी।
बक्की० ना० स्त्री० }
बखरी० ना० स्त्री० झोपड़ी, घर, मकान।
बखा० ना० पु० बखौरा, मोढ़ा।
बखान० ना० पु० वर्णन, स्तुति।
बखानना० स० क्रि० वर्णनकरना, स्तुतिकरना, सराहना।
बखार० ना० पु० } खाता, भण्डार, अनाज
बखारी० ना० स्त्री० } रखने की कोठी वा कोठरी।
बखेड़ा० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई, रोला।
बखेड़िया० गु० झगड़ालू, लड़ाका।
बखेरना० स० क्रि० बिगराना, छिटकाना।
बखोर० ना० स्त्री० टोक, रोक, अपशकुन।
बखोरना० स० क्रि० टोकना, पूछना।
बखौरा० ना० पु० कन्धा, मोढ़ा।
बग० ना० पु० बक, बगुला, बाग।
बगछूट० ना० पु० सरपट।
बगपाँति० } ना० स्त्री० बगुलों की पाँति।
बगपाँत० }
बगड़० ना० पु० चावल विशेष।
बगड़ा० ना० पु० डर, दुःख।
बगड़िया० गु० छली, ठग।
बगदना० अ० क्रि० फिरना, बिगड़ना, भूलना, फैलना।
बगदाना० स० क्रि० फिराना, बिगाड़ना, भुलाना, फैलाना।
बगमेल० ना० पु० अति निकट, बाग में बाग का मिलजाना।
बगर० ना० पु० घर आंगन, सदन।
बगराना० स० क्रि० छिटकाना, फैलाना, बिथराना।
बगला० ना० पु० बक, बगुला, पक्षी विशेष।
बगलाभगत० गु० कपटी, धूर्त, छली।
बगहंस० ना० पु० हंस विशेष।
बगिया० ना० स्त्री० } फुलवाड़ी, छोटा उपवन,
बगीचा० ना० पु० } छोटाबाग, फारसी शब्द है।
बगुला० ना० पु० बक, पक्षी विशेष।
बगूला० ना० पु० बवण्डर, बौंडरा।
बघनहा० ना० पु० सुगन्धि विशेष, जड़ विशेष।
बघना० ना० पु० बाघ के नख या दांत जो बालक को पहिनाते हैं।
बघरूरा० ना० पु० बवण्डर, बगूला, पवनग्रन्थि।
बघार० ना० पु० छौंक।
बघारना० स० क्रि० छौंकना।
बघी० ना० स्त्री० डांस, घुड़मक्खी।
बघेल० ना० पु० राजपूत, जाति विशेष।
बघेलखण्ड० ना० पु० देश विशेष, रीवां का प्रदेश।
बघेला० ना० पु० बघेल, बाघका बच्चा, डामरू।
बंक० ना० पु० बांका।
बंकाई० ना० स्त्री० फंद, टेढ़ाई।
बंग० ना० पु० धातु विशेष, उल्लूपन, बंगाला देश।
बंगरी० ना० स्त्री० गहना विशेष।
बंगला० ना० पु० छप्पर वा खपरैल का घर विशेष, पान विशेष, बंगाले के घरका भाग।
बंगसेन० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।
बंगा० ना० पु० बांसकी जड़का पोर, गु० उल्लू, नासमझ, रामायणे यथा, तीरथ राज प्रयाग मंदा पुनि बंगा, रामसुतन कसेर, शठबंगा।
बंगाल० } ना० पु० देश विशेष जो गयाजी से पूर्व में है।
बंगाला० }
बंगालिन० ना० स्त्री० बंगाली की स्त्री।
बंगाली० गु० बंगाले का वासी।

प्रमातामह० ना० पु० मातामह का पिता, परनाना।
प्रमातामही० ना० स्त्री० मातामहकी माता, परनानी।
प्रमाद० ना० पु० भूल, चूक, गफलत, आना-कानी।
प्रमादी० गु० अचेत, अशोच, मुलड़।
प्रमीलिका० } ना० स्त्री० भौंह, भृकुटी।
प्रमीला० }
प्रमुख० ना० पु० निशाचर विशेष, प्रधान।
प्रमुदित० गु० हर्षित, आनन्दित।
प्रमेह० ना० पु० वीर्य्यका रोग, क्षीणरोग।
प्रमोद० ना० पु० हर्ष, आनन्द।
प्रमोदित० गु० हर्षित, आनन्दित, खुश।
प्रयन्त० अव्य० पर्य्यन्त।
प्रयाग० ना० पु० तीर्थराज, इलाहाबाद।
प्रयाण० ना० पु० धावा, गमन।
प्रयान्ति० क्रि० जाता है।
प्रयुक्त० गु० मिलाहुआ, भराहुआ।
प्रयोग० ना० पु० अनुष्ठान, दृष्टान्त, फल, उपाय, तदवीर, प्रयोजन।
प्रयोगी० गु० उपायी, चलानेवाला।
प्रयोजक० ना० पु० प्रेरक, उठाने हारा।
प्रयोजन० ना० पु० कारण, तात्पर्य्य, ग़रज, मतलब।
प्रयोजनी० गु० अवश्य, मतलबी, ग़रजी।
प्रयोज्य० गु० मुख्य, ना० पु० सेवक, चेला।
प्रलम्ब० ना० पु० प्रलम्बासुर, लम्बा।
प्रलम्बघ्न० ना० पु० बलदेव जी।
प्रलय० ना० पु० कल्पान्त, सर्वनाश, तूफान।
प्रलयकाल० ना० पु० नाशका समय।
प्रलाप० ना० पु० अज्ञानता समय का वाक्य, निरर्थवाक्य।
प्रलेप० ना० पु० औषधि आदिका लेपन।
प्रवञ्चना० ना० स्त्री० प्रतारण, ठगी, चोरी।
प्रवर० ना० पु० सन्तान, वंश, गोत्र, गु० बलवान्, श्रेष्ठ, बहादुर।
प्रवर्त्तक० ना० पु० प्रेरक, उतारनेहारा।
प्रवर्षण० ना० पु० पर्वतविशेष।
प्रवाल० ना० पु० मूंगा।
प्रवास० ना० पु० विदेश, देशावर, परदेश।
प्रवासा० ना० स्त्री० मधुशर्करा।
प्रवासी० गु० विदेशी, परदेशी।
प्रवाह० ना० पु० नदीकी धारा, बहाव, श्रेष्ठ पवन।
प्रविष्ट० गु० जो प्रवेश हुआ, घुसा, पैठा।
प्रवीण० गु० निपुण, सुचतुर, स्याना।
प्रवीणता० ना० स्त्री० निपुणता, चतुराई, स्यानपन।
प्रवृत्तकर्त्ता० गु० विश्वासी, मंजूर, नज़र।
प्रवृत्ति० ना० स्त्री० काम, समाचार, धारा, इच्छा, किसी काम में लगना वा लगाना यत्न।
प्रवेक० गु० प्रधान, सरदार।
प्रवेणी० ना० स्त्री० वेणी, केशपाश।
प्रवेश० ना० पु० पैठ, पहुंच, घुसाव।
प्रशक्त० गु० लीन, लगाहुआ, थकित।
प्रशंसक० गु० स्तुतिकर्त्ता, बड़ाई करनेहारा।
प्रशंसनीय० गु० प्रशंसा के योग्य।
प्रशंसा० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई।
प्रशमन० ना० पु० वध।
प्रशस्त० गु० आनन्दी, योग्य, भला।
प्रशस्ति० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई, योग्य, अच्छी।
प्रश्न० ना० पु० जिज्ञासा, सवाल पूछना।
प्रश्नोत्तर० ना० पु० प्रश्न का उत्तर, सवाल जवाब।
प्रषद० ना० पु० मृग, हरिण।
प्रष्टा० ना० पु० पूछनेहारा।
प्रसक्त० अव्य० सदा, गु० सनातन, आसक्त।

बंगी॰ ना॰ स्त्री॰ } भौंरा जो बेल आदि का
बंगू॰ ना॰ पु॰ } बनता है जिसको बालक नचाते हैं।

बच॰ ना॰ स्त्री॰ पौधे विशेष की जड़, बात।

बचकाना॰ गु॰ छोटा, ना॰ पु॰ भवैया, भंगतिया।

बचत॰ } ना॰ स्त्री॰ शेष, बाकी, अधिक।
बचती॰ }

बचन॰ ना॰ पु॰ भाषा, बोली, बात, प्रण, बाद, नियम, मर्याद इकरार, वचन।

बचनदत्त॰ गु॰ मंगेतर, जो सगाई कियागया।

बचना॰ अ॰ क्रि॰ रक्षापाना, शेषरहना।

बचपन॰ ना॰ पु॰ लड़कपन, बालकता, लड़काई।

बचांसि॰ ना॰ पु॰ बात।

बचाना॰ स॰ क्रि॰ उद्धार वा रक्षा करना, छोड़ना, शेषरखना, छुपाना।

बचाव॰ ना॰ पु॰ रक्षा, पक्ष।

बच्चा॰ ना॰ पु॰ लड़का, टाट, गेद, वत्स।

बच्छ॰ ना॰ पु॰ वत्स, लड़का, बछड़ा।

बच्छनाग॰ ना॰ पु॰ विष विशेष।

बच्छा॰
बछड़ा॰
बछड़ू॰
बछरू॰
} ना॰ पु॰ गायका बच्चा।

बछेड़ा॰ ना॰ पु॰
बछेड़ी॰ ना॰ स्त्री॰
बछेरा॰ ना॰ पु॰
बछेरी॰ ना॰ स्त्री॰
} घोड़ी का बच्चा।

बजना॰ अ॰ क्रि॰ शब्दहोना, लड़ना।

बजनी॰ ना॰ स्त्री॰ लड़ाई, जो वस्तु बजे।

बजंत्री॰ ना॰ पु॰ समाजी, बाजाबजानेहारा।

बजबजाना॰ अ॰ क्रि॰ उबलना।

बजरबट्टू॰ ना॰ पु॰ फल विशेष।

बजरंग॰ ना॰ पु॰ हनुमानजी का एकनाम।

बजरंगी॰ ना॰ पु॰ तिलक विशेष।

बजरा॰ ना॰ पु॰ नाव विशेष।

बजरी॰ ना॰ स्त्री॰ जो कंकर पत्थरादि छोटे २ गचमें डाले जाते हैं।

बजाक॰ ना॰ पु॰ सर्प विशेष।

बजाना॰ स॰ क्रि॰ शब्द वा स्वर निकालना।

बजालाना॰ स॰ क्रि॰ पूराकरना, पार करना, निर्वाहकरना, मानना।

बंजर॰ ना॰ पु॰ वह धरती जो जोती बोई नहीं गई है।

बझना॰ अ॰ क्रि॰ फंसना, पकड़ाजाना।

बझाना॰ } स॰ क्रि॰ पकड़वाना, फँसाना।
बझावना॰ }

बट॰ ना॰ पु॰ बड़गद, पण्डित, ब्राह्मण, मार्ग, एक कौड़ी।

बटई॰ ना॰ स्त्री॰ बटेरपक्षी, बादला बनाने की विद्या विशेष।

बटना॰ स॰ क्रि॰ बलदेना, एंठनदेना, रस्सी बनाने का काम, अ॰ क्रि॰ विभागित होना, ना॰ पु॰ पत्थर जिससे चटनीआदि बांटते हैं, यन्त्र जिससे रस्सी को बलदेते हैं।

बटपार॰ ना॰ पु॰ ठग, हत्यारा, लुटेरा, राहजन।

बटपारी॰ ना॰ स्त्री॰ ठगई, डकैती, राहमारना।

बटलोई॰ } ना॰ स्त्री॰ पात्र विशेष जिसमें
बटलोही॰ } दाल आदि पकाते हैं।

बटवार॰ ना॰ पु॰ करलेनेहारा, भाग, हिस्सह।

बटवारा॰ ना॰ पु॰ बांट, भाग, अंश, हिस्सह।

बटाई॰ ना॰ स्त्री॰ बांट रस्सी आदि बटने का काम वा पेसा।

बटाऊ॰ ना॰ पु॰ बटोही, पथिक, मुसाफिर।

बटिया॰ ना॰ स्त्री॰ छोटामार्ग, पगदण्डी, पत्थर का छोटाबाट।

बटु॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मचारी, बटू।

बटुक॰ ना॰ पु॰ भैरव विशेष।

बटुवा॰ ना॰ पु॰ थैली, बटलोई।

बटुरना० अ० क्रि० इकट्ठाहोना।
बटेर० ना० स्त्री० पक्षी विशेष।
बटोर० ना० पु० भीड़, समेट, जमाव।
बटोरना० स० क्रि० इकट्ठा करना, समेटना।
बटोही० ना० पु० पथिक, राही, मुसाफिर।
बट्टा० ना० पु० खोयपन, बांटकायन्त्र, प्याला।
बट्टी० ना० स्त्री० ढेली, बरी।
बड़० ना० पु० बरगद, वृक्ष विशेष, बड़ा।
बड़ना० अ० क्रि० पैठना।
बड़बड़० ना० स्त्री० बकबक।
बड़बड़ाना० स० क्रि० कुड़कुड़ाना, बकबककरना।
बड़बड़िया ना० पु० बका बकबकी।
बड़वाग्नि० ना० पु० } अग्नि विशेष जो समुद्रमें
बड़वानल० ना० पु० } बसती है।
बड़हल० ना० पु० वृक्ष विशेष वा उसका फल।
बड़ा० गु० महा, लम्बा, ऊंचा, ना० पु० उरदका पकवान विशेष अर्थात् बरा।
बड़ाई० ना० स्त्री० }
बड़ापन० ना० पु० } महत्त्व, प्रधानता, घमंड।
बड़प्पन० ना० पु० }
बड़ादिन० ना० पु० जो दिसम्बरकी २५ तारीख को होताहै
बड़ी० गु० स्त्री० महाप्रधान, ऊंची, ना० स्त्री० जो उरद पीसके बनातेहैं मुगौरी।
बड़ेला० }
बड़ौखा० } ना० स्त्री० इक्षु विशेष, ऊंख विशेष।
बढ़ई० ना० पु० खाती, सुतार, जाति विशेष।
बढ़ता० ना० पु० }
बढ़ती० ना० स्त्री० } अधिकाई, बढ़ाव।
बढ़इन० ना० स्त्री० बढ़ई की स्त्री।
बढ़ना० अ० क्रि० अधिकहोना, आगे जाना, उगना, चढ़ना।
बढ़नी० ना० स्त्री० झाड़ू, बुहारी, बगाड़ी।
बढ़ाना० स० क्रि० अधिकाना, लम्बाना, चलाना, बुझाना, चढ़ाना, दुकान उठाना।
बढ़ावाना० स० क्रि० आगेलाना, दुकान उठालाना।
बढ़ाव० ना० पु० चढ़ाव, बढ़ती, अधिकता।
बढ़िया० गु० महँगी, बहुमूल्य, कीमती।
बढ़ेला० ना० पु० बनैलासूकर।
बढ़ोतर० ना० पु० }
बढ़ोतरा० ना० पु० } ब्याज, लाभ, सूद।
बढ़ोतरी० ना० स्त्री० }
बणियां० ना० पु० वणिक्, वैश्यजाति विशेष।
बत० ना० पु० कीट विशेष ना० स्त्री० बात वा बातका संक्षेप।
बतकहा० गु० बक्की, बातूनी।
बतकहाव० ना० पु० } बकबक, बातचीत,
बतकही० ना० स्त्री० } तकरार।
बतक्कड़० गु० बक्की।
बतराना० स० क्रि० बातचीत करना।
बतलाना० स० क्रि० बातचीत करना, बताना, पढ़ाना, समझाना, सुझाना।
बता० ना० पु० खपाच, लम्बा चौड़ा पत्थर विशेष जिसपर चूरण पीसते हैं।
बताना० स० क्रि० दिखलाना, समझाना, सिखलाना ना० पु० पगड़ी के नीचे का फेंटा।
बताशी० ना० स्त्री० मांडेली।
बतास० ना० पु० वायु, पवन।
बतासा० ना० पु० बुल्ला, बुल्बुला, मिठाई विशेष।
बतियाना० स० क्रि० बातचीत करना, बोलना, छोटे छोटे फल लगना।
बतूनी० गु० गप्पी।
बतौरा० ना० स्त्री० फुड़िया विशेष।
बत्ती० ना० स्त्री० दीपक में जलाने के लिये ऐंठी हुई रुई, मोम आदिकी, कपड़ेकी जो घावमें भरते हैं, योग क्रिया में साधन विशेष।
बत्तीस० गु० तीस और दो, ३२।
बत्तीसा० ना० पु० घोड़े आदि के हेतु औषधि विशेष।

बावड़ी० ना० पु० बड़ा कूप।
बावनतास० ना० स्त्री० दैवग्रस्त, दुर्गति, आपदा।
बावन० गु० पचास और दो, ५२ अंक, ना० पु० श्रीविष्णुनारायण का पांचवां अवतार।
बावर० गु० बवला, बगादी, बकवादी, अधर्मी।
बावरि० ना० स्त्री० मृगबन्धनी, बागुरि, गु० सिड़न।
बावला० गु० विक्षिप्त, सिड़ी।
बावली० ना० स्त्री० बड़ाकूप, भोंवा, गु० सिड़न।
बावसड़ना० अ० क्रि० पादना, गुदा से पवन का निकलना।
बावशूल० ना० पु० वायुशूल, पेटमें रोगविशेष।
बास० ना० पु० बसने का स्थान, ठांव, ना० स्त्री० गन्धि, महक।
बासन० ना० पु० बरतन, पात्र।
बासना० स० क्रि० सोंधाना, महकाना, ना० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, सुगन्धि।
बासन्ती० ना० स्त्री० औषधिविशेष।
बासा० ना० पु० बूटी प्रसिद्ध, रहनेकास्थान।
बासित० गु० सुगन्धित कपड़े पहनेहुये।
बासी० गु० भोजनादि जो कलकापका है, महै- फीका, बासयुत।
बाह० ना० पु० घोड़ा।
बाहक० ना० पु० बहनेहारा।
बाहन० ना० पु० वाहन, सवारी।
बाहना० स० क्रि० अस्त्रचलाना वा फेंकना, भैंस का गर्भित वा प्रसवित होना।
बाहर० अव्य० बहिः, परदेश।
बाहिनी० ना० स्त्री० सेना।
बाहु० ना० स्त्री० भुजा, बांह।
बाहुदा० ना० स्त्री० नदीविशेष जो हिमालय से निकलती है।
बाहुदेना० अ० क्रि० हाथ पकड़ना।
बाहुमुख० ना० पु० हाथ।
बाहुयुद्ध० ना० पु० मल्लयुद्ध, कुश्ती।
बाहुलेय० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
बाहुल्य० ना० पु० } आधिक्य, अधिकाई,
बाहुल्यता० ना० स्त्री० } बहुतायत।
बिआरी० ना० स्त्री० बयाल, सायंकालका भोजन।
बिंजन० ना० पु० व्यंजन।
बिक० ना० पु० हुण्डार, भेड़िया।
बिकट० गु० कठिन, भयानक, भयंकर, टेढ़ा, प्रबल।
बिकना० अ० क्रि० खपना, बिकजाना।
बिकरार० } गु० भयानक, भोंडा, भयंकर,
बिकराल० } टेढ़ा, डरौना, कठिन।
बिकल० गु० व्याकुल, निरथिर, घाबड़ा।
बिकलता० स्त्री० } व्याकुलता, घबड़ाहट, बेचै-
बिकलत्व० पु० } नी, निस्थिरता।
बिकलित० गु० व्याकुल, घाबड़ा, बेचैन।
बिकल्प० ना० पु० विचार, मनसूबा, तर्क।
बिकसन० ना० पु० प्रकाश, हर्ष, फूलन।
बिकसना० अ० क्रि० खिलना, फूलना, हर्षित होना।
बिकसित० गु० प्रफुल्लित, हर्षित, फूलाहुआ।
बिकसोमण्डा० ना० पु० मंजीठ।
बिकाऊ० गु० बिकनेहारा।
बिकाना० अ० क्रि० बिकजाना, स० क्रि० बेचाना।
बिकाव० ना० स्त्री० बिक्री।
बिकास० ना० पु० प्रकाश, फैलाव, दिखलावा, हर्ष, आनन्द।
बिकी० ना० स्त्री० खपन, बेंटनी, भाव, बचेगी, चर्चित, चटित।
बिखरना० अ० क्रि० बिथुरना, फैलनी, बोथित होना।
बिगड़ना० अ० क्रि० नाश वा भ्रष्ट होना, झगड़ना,
बिगाड़ी० ना० स्त्री० लूट, उजाड़।

बत्तीसी० ना० स्त्री० ,सब दांत; गु० जिसमें बत्तीस वस्तुका समुदाय हो।
बतला० ना० पु० चावल विशेष।
बथुआ० ना० पु० } शाक विशेष भाजी।
बथुई० ना० स्त्री० }
बद० ना० स्त्री० रोग विशेष, बावी।
बदना० स० क्रि० दांवलगाना, मानना, अंगीकार करना।
बदर० ना० पु० सेव मेवा एक सहस्र मुद्राकी थैली अर्थात् तोड़ा, यह शब्द अरबी में शुद्ध बद्रः है परन्तु अयोध्या-काण्ड में यों लिखाहै, यथा, विरच बदर जनु तुम्हरे हाथा।
बदल० ना० पु० मेघ, प्रतीकार, अव्य० सन्ती।
बदलना० स० क्रि० पलटना, पोधना।
बदला० ना० पु० सन्ती, तोड़ाव, पलटा, पौधा।
बदलाई० ना० स्त्री० तोड़वाई, पलटाई, पौधाई।
बदलाना० स० क्रि० फेरबदलना, तोड़ाना पौधाना।
बदली० ना० स्त्री० अंधेरा, छोटा मेघ।
बदा० गु० जो प्रारब्ध में लिखितहै।
बदाबदी० अव्य० हिसका समेत, छगड़े से।
बदि० } ना० स्त्री० कृष्णपक्ष, हेतु, लिये।
बदी० }
बद्दल० ना० पु० मेघ।
बद्ध० गु० जो बांधागया।
बद्धी० ना० स्त्री० गले में पहरनेकी वस्तु विशेष, तसमा, चमड़े का।
बद्रीवन० ना० पु० बद्रीनाथ का वन।
बध० ना० पु० हत्या, हिंसा, हनन।
बधन० ना० पु० हतन, हनन।
बधना० स० क्रि० मारडालना, हत्या करना, ना० पु० पानी पीने का पात्रविशेष।
बधवंश० ना० पु० वंशका बध।
बधस्थान० गु० जिस स्थान में बध कियाजाय।
बधाई० ना० स्त्री० } जयकार मानना, आनन्द,
बधावा० ना० पु० } मङ्गलाचार जो बेटी आदि की लड़के के घर फूफी लेजाती है।
बधिक० गु० पु० खटकी, हत्यारा, फांसियारा, बहेलिया, कसाई।
बधिया० ना० स्त्री० पशुओं में जो अण्डहीन हुआ।
बधिर० गु० बहिरा।
बधू० } ना० स्त्री० बहू, पुत्रकी स्त्री।
बधूटी० }
बध्य० गु० जो बध करने के योग्य है।
बन० ना० पु० बन, पानी।
बनज० ना० पु० बणिज, व्योपार, कमल।
बनजारा० ना० पु० अन्नका व्योपारी, जो बैलों पर अन्न लादकर लेजाता है।
बनजारी० ना० स्त्री० बनजारा की स्त्री, गतपू विशेष, अंधसीभा जो अन्न।
बनठन० गु० शृङ्गारयुत, संवारा, सजधज से।
बनत० ना० पु० गोटेसे बनीहुई वस्तु विशेष जो शोभाके लिये टोपी आदि में लगाते हैं।
बनतराई० ना० स्त्री० पौधाविशेष।
बनना० अ० क्रि० रूपपकड़ना, तैयार होना, सजना।
बनपड़ना० अ० क्रि० बनना, सुधारना।
बनप्रिय० ना० स्त्री० कोयल।
बनमञ्जरी० ना० स्त्री० संभालू।
बनमाल० } ना० स्त्री० माला जो बहुपुष्पों से
बनमाला० } गूंथी और लम्बी पांव तक होती है।
बनमालिका० ना० स्त्री० बराहीकन्द, बनमाला।
बनमाली० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एकनाम।
बनरा० ना० पु० दुलहा।
बनरी० ना० स्त्री० दुलहन्।

बिगसन० ना० पु० विकसन, खिलना।
बिगसना० अ० क्रि० विकसना, खिलना, फूलना।
बिगहा० ना० पु० बीघा।
बिगाड़० ना० पु० भंगता, तोड़, लड़ाई झगड़ा।
बिगाड़ना० स० क्रि० नसाना, टोटा देना, मित्रों में लड़ाई कराना।
बिगोना० स० क्रि० भुलाना, छुपाना, भ्रष्टकरना।
बिघन० ना० पु० विघ्न।
बिच० अव्य० बीच।
बिचकना० अ० क्रि० निराशहोना, भागजाना, अंगीकार करके बदलजाना।
बिचकाना० स० क्रि० निराशकरना न मानना, वचन तोड़ना।
बिचल० गु० चलायमान, मचल।
बिचलना० अ० क्रि० फिरना, घूमना, चलना, बिचलना।
बिचली० गु० भागी, घूमी, घबड़ानी।
बिचवई० ना० पु० बिचवानी, जामिन।
बिचार० ना० पु० विचार, सोच, बूझ, ध्यान।
बिचारक० ना० पु० विचारी, सोची, बूझने हारा, न्यायक।
बिचारना० स० क्रि० सोचना, ध्यानकरना, यांचना, समझना।
बिचारित० गु० सोचाहुआ, विचाराहुआ, बूझा, समझा।
बिचारी० गु० विचारी, विचारक।
बिचाली० ना० स्त्री० पोआरवाल।
बिचौलिया० ना० पु० मध्यस्थ, तिसरैत।
बिच्छु० ना० पु० वृश्चिक, जन्तुविशेष।
बिछना० अ० क्रि० फैलना, पसरना।
बिछरना० अ० क्रि० भिन्नहोना, जुदाहोना।
बिछराहट० ना० स्त्री० भिन्नता।
बिछलो० } अ० क्रि० खिसलना, फिसलना,
बिछलना० } भिन्न भिन्नहोना, बिलगना।
बिछवाना० स० क्रि० फैलाना, पसराना।
बिछाना० स० क्रि० फैलाना, पसारना।
बिछुआ० ना० पु० कटारविशेष, पैरोंकाभूषण।
बिछुड़ना० अ० क्रि० बिछलना।
बिछुरन० ना० पु० वियोग, जुदायगी।
बिछुरना० अ० क्रि० वियोगहोना, जुदाहोना।
बिछोना० स० क्रि० भिन्नकरना, बिलगाना।
बिछोह० } ना० पु० वियोग, जुदायगी, विरह।
बिछोहा० }
बिछौना० ना० पु० बिस्तर, सेज।
बिजना० ना० पु० पंखा, बेना।
बिजली० ना० स्त्री० विद्युत्, चंचला, वज्र।
बिजान० गु० अज्ञान, मूर्ख, जो कुछ नहीं जानता।
बिजायठ० ना० पु० बांहका गहनाविशेष।
बिजार० ना० पु० सांड़ बैल।
बिजाला० गु० बीज संयुक्त।
बिजया० ना० स्त्री० भंग, बूटी।
बिझकना० अ० क्रि० चौंकना, डरना, भाग जाना, बदलजाना।
बिझका० गु० चौंका, चौंकेल, भागा, डरांमया।
बिझकाना० स० क्रि० चौंकाना, डरवाना, भगाना, न मानना, बदलना।
बिट० ना० पु० बीट, विष्ठा।
बिटचर० ना० पु० शूकर, घरेला।
बिटना० अ० क्रि० बिथुरना, छिटकना, गिर जाना।
बिटप० ना० पु० वृक्ष का नया फैल, पल्लव, पसराव, गुच्छा।
बिटाना० स० क्रि० छिटकाना, बिथराना, गिराना।
बिठाना० स० क्रि० बैठाना।
बिडकन० ना० पु० बटेरादि पक्षी, रामचन्द्रिकायां यथा, बिडकनघन घूरे भांति के बाज जीवे।
बिडरना० अ० क्रि० भागजाना डरजाना।

बनवाई० ना० स्त्री० किसी वस्तु के बनवानेका पैसा।

बनवाना० स० क्रि० रचाना, तय्यार कराना, मुंडवाना।

बनवारि० ना० पु० श्रीकृष्णचंद्र का नाम।

बनविलासिनी० ना० स्त्री० शतावरी।

बनवैया० ना० पु० बनानिहारा, कर्त्ता।

बनसी० ना० स्त्री० बांसली, मुरली, मछली पकड़नेकी कटिया बंसिरा।

बना० ना० पु० दुलहा, गु० बनायाहुआ, बनाभया।

बनात० ना० स्त्री० ऊनका वस्त्र विशेष।

बनाती० गु० जो बनात से बनाया गया।

बनाना० स० क्रि० पकाना, रचना, कमाना, सधाना, उठाना, सुधारना, गांठना, सँवारना, साटना।

बनायुज० ना० पु० घोड़ा, अश्व।

बनाव० ना० पु० रचाव, शृंगार, मिलाप।

बनावट० ना० स्त्री० सांठगांठ, डौल, बहाना, जुगति, छलावा, बांधन।

बनिज० ना० पु० वणिज, व्योपार, लेनदेन।

बनिन्० ना० स्त्री० बनियाकी स्त्री।

बनिया० ना० पु० व्योपारी, वणिक।

बनियायिन्० ना० स्त्री० बनिन्।

बनी० ना० स्त्री० दुलहन।

बनेटी ना० स्त्री० छोटी लकड़ी जिसके दोनों ओर बत्ती लगाकर फिराते हैं।

बनेला० गु० बनैला।

बनैनी० ना० स्त्री० बनिन्।

बनैला० गु० जंगली, वन्य।

बनौटिया० ना० स्त्री० कपासी रंग।

बनौटी० ना० स्त्री० कपास, कपासकी लकड़ी।

बनौटीरंग० ना० पु० कपासी रंग

बन्दनवार० ना० पु० } सिहरा मौर, हार,
बन्दनवारि० ना० स्त्री० } गजरा।

बन्दर० ना० पु० कपि, बानर या जहां जहाज लगते हैं।

बन्दरिया० } ना० स्त्री० बन्दर की स्त्री।
बन्दरी० }

बन्दरी० ना० स्त्री० धौदविशेष, सहविशेष तृणविशेष।

बन्दी० ना० स्त्री० वन्दन।

बन्दी० ना० पु० बंधुआ, कैदी, ना० स्त्री० माथे परका गहना।

बन्दीगृह० ना० पु० बंधुओं का निवासस्थान, कैदखाना, जिहलखाना।

बन्दीजन० ना० पु० बंधुआ, कैदी।

बन्दीशाला० ना० स्त्री० बन्दीगृह, कैदखाना।

बन्ध० ना० पु० गांठ, पट्टी, गु० जो बांधागया।

बन्धक० ना० पु० गहना, गिरवीं, धरोहर।

बन्धन० ना० पु० गांठ, बांध, अटकाव, पट्टी, कैद।

बन्धनी० ना० स्त्री० मालती, बांधनेकी वस्तु।

बन्धान० ना० पु० बंधीजीविका, ठुकरैंह जो सूप में चमड़े को लगाते हैं।

बन्धानी० ना० पु० नीचजाति, जो मगर मों लट्ठा उठाते हैं जो बन्धान पाते हैं।

बन्धु० ना० पु० भाई, नतैत, मित्र।

बन्धुजीव० ना० पु० दुपहारी फूलका वृक्ष।

बंधुता० ना० स्त्री० मित्रता, मित्रों वा भाइयों की अधिकता।

बन्धुवा० ना० पु० कैदी, बन्दी।

बन्ध्या० ना० स्त्री० बांझ अनफल।

बन्ना० अ० क्रि० रचना, संवरना, मिलना, सधना, होना, सुधरना, चिढ़ना; ना० पु० दूल्हा।

बन्य० गु० बनवासी।

बन्हा० ना० पु० टोनहा।

बन्हाई० ना० स्त्री० टोनही, टोन्हाई।

बपंश० }
बपैती० } ना० स्त्री० पैतृक, बापका अंश।
बपौती० }

बिडार० ना० पु० बनबिलाव, मगोश।
बिडारना० स० कि० भगाना, बिचलाना, डराना।
बिडारी० गु० भगाई।
बिडौजा० ना० पु० इन्द्र।
बिढ़ई० ना० स्त्री० कमाई, फायदा उठाया, बिसनौटी।
बित्त० ना० पु० धन, द्रव्य, वस्तु, सामर्थ्य।
बितना० अ० कि० व्यतीत होना, गु० छोटा ना० पु० बितस्ति, बालिश्त।
बितरानी० गु० घबरानी, बिलखानी।
बितरना० स० कि० देडालना, दान करना।
बिताना० स० कि० गँवाना, काटना, व्यतीत करना।
बितीत० ना० पु० व्यतीत।
बित्त० ना० पु० वित्त, धन, द्रव्य।
बित्ता० ना० पु० बितस्ति, बालिश्त।
बित्तिया० ना० पु० बौना, बांटा, डुमका।
बिथरना० अ० कि० छिटकना, बिखरना।
बिथराना० स० कि० छितराना, छिटकाना, छिड़काना, बिखराना।
बिथा० ना० स्त्री० पीड़ा, आपदा।
बिथुरना० अ० कि० बिथरना, पसरना।
बिथुरा० ना० पु० दुःख, पीड़ा गु० छिटकाहुआ।
बिदरना० अ० कि० फरना, चिरना।
बिदा० ना० स्त्री० रुखसत करना।
बिदारन० ना० पु० फाड़ना, तोड़ना।
बिदारना० स० कि० फाड़ना, चीरना।
बिध० ना० स्त्री० विधि।
बिधना० ना० पु० बिधाता, ब्रह्मा।
बिधावट० ना० स्त्री० सोल, छेद।
बिन० अव्य० बिना।
बिनती० ना० स्त्री० बिनय, प्रार्थना, बड़ाई करना।
बिनसा० अ० कि० बिनजाना।
बिनवाई० ना० स्त्री० बिनाई।
बिनसना० अ० कि० नशाना, बिगड़ना।
बिना० अव्य० रहित, बिन।
बिनाई० ना० स्त्री० बिनने का काम वा पैसा।
बिनाना० स० कि० बिनवाना, उठाना।
बिनावट० ना० स्त्री० बिनने का काम।
बिनु० अव्य० रहित, छोड़ि।
बिनौना० स० कि० बिनती करना, अरचना, पूजना, भजना, छांटना।
बिनौला० ना० पु० रुईका बीज।
बिनौली० ना० स्त्री० छोटाओला जो आकाश मार्ग से बरसताहै।
बिन्द० } ना० स्त्री० बिन्दु।
बिन्दी० }
बिन्धना० स० कि० डसना, डंकियाना, अ० कि० छिदना, फसना।
बिन्ना० स० कि० धुआं, जाली निकालना, चुनना।
बिपत० }
बिपता० } ना० स्त्री० बिपत्ति, आफत।
बिपति० }
बिफना० अ० कि० बिड़ना, दुःखित होना। झगरा, हठीला वा ढीठहोना।
बिया० ना० पु० बीज।
बियारी० } ना० स्त्री० सायङ्काल का भोजन,
बियालू० } पश्चात् का भोजन।
बियाह० ना० पु० बिवाह।
बिरकट० ना० पु० योगी बिशेष, गु० जिसका मन उच टित है।
बिरचन० ना० पु० मेरका आश।
बिरद० ना० पु० यश, स्तुति, तीरवाना और हथियार।
बिरदावलि० ना० स्त्री० सुयश, स्तुति।
बिरमना० अ० कि० रहना, बिलम्बकरना।
बिरमाना० स० कि० ठहराना, अटकाना अपने बशमें करना।
बिरवा० ना० पु० वृक्ष छोटा बूटा, पौधा।

बफारा० ना० पु० भाफ, भाफ।
बबुआ० ना० पु० लड़का, बालक।
बबूल० ना० पु० वृक्ष विशेष, कीकड़।
बम० ना० स्त्री० सोता, पुसी।
बमकना० अ० कि० उभरना, सूजना, फूलना।
बम्बई० ना० पु० देश वा नगर विशेष।
बम्बा० ना० पु० कूप विशेष, सोता, यंत्र विशेष।
बया० ना० पु० पक्षीविशेष, निरली।
बयार० ना० पु० वायु, पवन, हवा।
बयाला० ना० पु० रोशनदान, घुघुका, गु० जिस वस्तु में बाई रहती है।
बयालीस० गु० चालीस और दो, ४२।
बयासी० गु० अस्सी और दो, ८२।
बर० ना० पु० आशीर्वाद, पदार्थ, दुलहा, थान की चौड़ाई, कांकड़ वृक्ष बरदान, ना० स्त्री० बिर्ली, गु० श्रेष्ठ, सुन्दर, अभिराम।
बरई० ना० पु० तम्बोली।
बरखना० अ० कि० बरसना।
बरगत०} ना० पु० बट, वृक्ष विशेष।
बरगद०}
बरजना० स० कि० निषेध करना, हटकना, बारना, रोकना।
बरत० ना० पु० व्रत बर्त्त, चमोटी, चमड़े की रस्सी जिस से पुलका पानी खींचते हैं, गु० जलत, धधकत।
बरतना० स० कि० सोचना, विचारना।
बरतनी० ना० स्त्री० अक्षरौटी, वर्णमाला।
बरदैत० ना० पु० भाट, दसौंधी, गानावाले।
बरध० ना० पु० बैल, वृषभ।
बरधना० स० कि० गौ और बैलका संगहोना।
बरधाना० स० कि० गौका बैल से प्रसंग कराना।
बरन० ना० पु० वर्णन, अव्यय तो भी, किंवा, बल्कि।
बरनन० ना० पु० वर्णन।
बरना० ना० पु० वृक्ष विशेष, स० कि० विवाह करना अ० कि० जलना, धधकना, नदी विशेष।
बरनी० ना० स्त्री० पपनी।
बरबस० ना० पु० बल बलात्कार, प्रबलता।
बरब० ना० पु० पक्षी विशेष।
बरबट० ना० पु० रोग विशेष, सर्प विशेष, बरबस, बरियाई।
बरवा० ना० पु० छन्द विशेष, कांटा मछलीमारने का ना० स्त्री० रागिनीविशेष जिससे हरिण और सर्प मोहता है।
बरस० ना० पु० वर्ष, मादक वस्तु विशेष जो अफीम से बनती है।
बरसगांठ० ना० स्त्री० जन्मदिन, जन्मदिन में सर्वदा गांठ बांधने का व्यवहार।
बरसना० अ० कि० पानी पड़ना।
बरसवान० गु० वर्षा, संवती, वार्षिक।
बरसौड़ी० ना० स्त्री० वर्ष का भाड़ा वा कर, वार्षिक।
बरहा० ना० पु० खेत जिसमें गौचराते हैं, रस्सा चमोटी, खेतमें पानी लेजाने का मार्ग, पुत्रजन्म के बारहवें दिन का व्यवहार।
बरा० ना० पु० बड़ा, भोजन में व्यंजन विशेष, स्त्री० बाकुची, गु० अच्छी स्त्री।
बराक० ना० पु० बराक, देवता।
बरात० ना० स्त्री० दूलह और उसके साथी।
बराती० ना० पु० विवाह के न्योतहारी।
बराना० अ० कि० परे रहना, अलग होना, आचार करना तजना, छोड़ना।
बराव० ना० पु० संयम, अलगाव।
बरियाई० ना० स्त्री० बड़ाई, उमंग, बरबस।
बरियाय० ना० पु० बरट, जबरदस्ती।
बरियार० गु० बलवान, प्रबल, तेजस्वी।
बरियारा० ना० पु० पौधा विशेष, बरेरा।
बरी० ना० स्त्री० कली, बड़ी औषधि की गोली, बटी, बिवाही।

विरह० ना० पु० वियोग।
विरहा० ना० पु० वियोग, धोबियों का गीत विशेष।
विराहित गु० वियोगित।
विरहिनी० गु० विरहिनी, वियोगिनी।
विरहिया० ना० स्त्री० विरहिनी।
विरही० गु० जो पुरुष अपनी सजनी से भिन्न है।
विराजना० अ० क्रि० प्रकाशित या प्रज्वलित होना, स्वाधीन होके सुख भोग करना, शोभित होना, बैठना।
विराट्० ना० पु० जगद्रूप, ईश्वर, जगत्, राजाधिराज, देशविशेष, राजाविशेष।
विराना० गु० पराया, स० क्रि० चिढ़ाना, सताना।
विराम० गु० व्याकुल, रिथर, मांदा।
बिरिया० ना० स्त्री० समय, जून।
विर्नी० ना० स्त्री० वर।
बिल० ना० स्त्री० सर्पादि जन्तुका घर या छिद्र वा भट्टा या भार।
बिकलना० अ० क्रि० सिसकना, फूकना, किसी वस्तुपर जी लगना।
बिलख० ना० पु० दुःख, अप्रसन्नता।
बिलखना० स० क्रि० देखना, निरखना, विलोकना, अ० क्रि० सिसकना, अप्रसन्न होना।
बिलखाय० } अ० क्रि० अप्रसन्नहोय, दुःख
बिलखि० } मान
बिलग० गु० अलग, भिन्न, ना० स्त्री० भिन्नता, फूट, ईर्षा, बुराई।
बिलगना० अ० क्रि० अलग २ होना, फटना, फूटना, जमना, दुखना।
बिलगाना० स० क्रि० भिन्न २ करना, फोड़ना, बिछोड़ना।
बिलगाव० ना० पु० भिन्नता, बिछुराहट, असहता।
बिलगाही० अ० क्रि० अलग होजावे।
बिलगना० स० क्रि० लदावकरना, चढ़ना।
बिलनी० ना० स्त्री० अंजनहारी।
बिलपना० अ० क्रि० रोना, विलापकरना।
बिलपाना० स० क्रि० रोलाना, विलापकरना।
बिलबन्द० ना० पु० निपटारा, निस्तार।
बिलबिलाना० अ० क्रि० व्याकुलहोना, पीड़ा से दुःखितहोना, हायहायकरना, तड़पना।
बिलम्ब० ना० पु० देरी, ढील, टाल मटोल, शिथिलता।
बिलम्बना० अ० क्रि० ढीलकरना, अटकना।
बिलम्भ० ना० पु० विलम्ब।
बिलम्भना० अ० क्रि० विलम्बना।
बिललाना० अ० क्रि० बिलबिलाना।
बिलसना० } अ० क्रि० भोगना, तृप्तहोना, आनन्दित होना।
बिलस्त० ना० पु० बित्ता, बिलस्त।
बिलहरा० ना० पु० पान रखने का पात्र।
बिलहरी० ना० स्त्री० पत्ती, छोटा बिलहरा।
बिलाई० ना० स्त्री० बिल्ली, कद्दूककड़ी आदि रगड़ने की लोहे की वस्तु।
बिलाईकंद० ना० पु० औषधिविशेष।
बिलाना० अ० क्रि० अलोपना, मिटना, भटकना, स० क्रि० अलोप कराना, उड़ाना, बांटना, खोना।
बिलाप० ना० पु० विलाप, हाहाकार।
बिलापना० अ० क्रि० रोकना, फूकना, हाहाकार करना।
बिलार० ना० पु० मार्जार, पशुविशेष, बिलाव।
बिलाव० ना० पु० बिलार।
बिलावल० ना० पु० रागिनी विशेष।
बिलास० ना० पु० विलास आनन्द।
बिलासी० गु० विलासी।
बिलास० ना० पु० विलास, हर्ष, तृप्ति, क्रीड़ा, सुखभोग।
बिलासी० गु० सुखभोगी, आनन्दी, सर्प।
बिलोकना स० क्रि० देखना, निरखना।

बरीस० } गु० वर्ष, काव्ये यथा, कृष्णावरया
बरीसा० } पांच बरीसा, जब राधिका प्रथम दिन दीसा।

बरु० अव्य० चाहो, यद्यपि

बरेठन० ना० स्त्री० धोबिन्।

बरेठा० ना० पु० धोवी।

बरेरा० ना० पु० चिरवा विशेष, चिरनी।

बरै० ना० स्त्री० तम्बोली।

बरैन० ना० स्त्री० तम्बोलिन्।

बरोठा० } ना० पु० ड्योढ़ी।
बरौठा० }

बर्छा० ना० पु० } भाला विशेष।
बर्छी० ना० स्त्री० }

बर्छैत० ना० पु० भालैत, भाला मारनेवाला।

बर्त० ना० पु० काम, अभ्यास, बरत।

बर्तन० ना० पु० बासन, भांड़े, पात्र।

बर्तना० स० क्रि० काममें लाना।

बर्मा० ना० पु० बेधक, बढ़ई का अस्त्र विशेष।

बर्माना० स० क्रि० बेधना, छेदना।

बर्हा० ना० पु० देशविशेष जो भारतखण्ड के पूर्व है।

बर्रै० ना० पु० कुसुम का बीज, डंकदारकीड़ा विशेष।

बर्वै० ना० पु० भाषाका छन्दविशेष।

बर्स० ना० पु० वर्ष।

बर्सात० ना० स्त्री० वर्षा, प्रावृट्।

बर्साती० ना० पु० घोड़े के पैर में रोगविशेष गु० जो बर्सातमें उपजता या संवत्सरलताहो।

बर्साना० स० क्रि० पानी गिराना, ना० पु० ब्रजमें नगर विशेष।

बर्सी० ना० स्त्री० बरसवेंदिन का श्राद्ध।

बर्हि० ना० पु० मोरपंख।

बर्ही० ना० पु० मोर, मयूर।

बल० ना० पु० सामर्थ्य, श्रीबलदेवजी, तली, ऐंठन, दल, वीर्य्य, ओज, दैत्य विशेष।

बलकना० अ० क्रि० खोलना, निज बड़ाई करना।

बलताड़० ना० पु० वृक्ष विशेष।

बलतोड़० ना० पु० फुड़िया जो बाल के टूटने से होती है।

बलद० ना० पु० बैल जो बोझा ढोता है।

बलदाऊ० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलदिया० } ना० पु० बैल का लादने हारा
बलदी० } वा बैल का चलाने या चराने हारा।

बलदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के ज्येष्ठ भ्राता।

बलना० अ० क्रि० जलना।

बलिबकरा० ना० पु० बलिका बकरा, युद्ध में जो विना लड़े मारा जावे।

बलबलाना० अ० क्रि० उबलना, घमंडी होना।

बलबीर० ना० पु० श्रीबलदेवजी या श्रीकृष्ण।

बलभद्र० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलम० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति।

बलमा० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति, प्रियतम राग विशेष जो होली में गाते हैं।

बलराम० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलवन्त० गु० पराक्रमी, सामर्थी, योद्धा।

बलवर्द्धक० गु० बलका बढ़ाने हारा।

बलवान्० गु० बलवन्त।

बलाही० ना० स्त्री० आंधी, भार।

बलाईलेना० स० क्रि० और की दुर्गति के आप चाहना।

बलात्कार० ना० पु० बरबस, अनिच्छा से काम कराना, जबरदस्ती।

बलाराति० ना० पु० इन्द्र, देवराज।

बलि० ना० पु० भोजन, भाग, अंश, पूजा, गन्धक, सदका, राजा विशेष, ना० स्त्री० न्योछावर, लहरी।

बलित० गु० भरा, पूरा, बल संयुक्त।

बिलोना० } बिलोवना० } स० क्रि० मथना, महना।

बिलौटा० ना० पु० बिलार।

बिलौटिया० ना० स्त्री० बिल्ली।

बिल्ला० ना० पु० बिलार, बिलाव।

बिल्ली० ना० स्त्री० बिलारि, बिल्ली।

बिल्लीलोटन० ना० पु० बिलाईकन्द, औषधि विशेष।

बिस० ना० पु० विष।

बिसखपरा० ना० पु० औषधि पौधाविशेष, जन्तुविशेष जो गोहके सदृश होता है।

बिसखोपरा० ना० पु० जन्तुविशेष, जो गोह के सदृश होता है।

बिसन० ना० पु० दोष, पाप, बुराई, काम, कामना।

बिसनपन० ना० पु० छैलपन, लुचपन।

बिसनी० ना० पु० लुचा, लम्पट, गु० सुघड़, छैल, छिछोर।

बिसबिसाना० अ० क्रि० बजबजाना, सड़ी हुई वस्तु से शब्द निकलना।

बिसमार० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।

बिसर० ना० पु० चूक, भूल।

बिसरा० गु० भूलाहुआ, चूकाहुआ।

बिसराना० स० क्रि० भुलाना, बहकाना।

बिसर्ना० अ० क्रि० भूलना, भटकना।

बिसात० ना० स्त्री० मूल, पूजी।

बिसांध० } बिसांयध० } ना० स्त्री० कुबास, दुर्गंध।

बिसांसी० ना० पु० विश्वासघाती।

बिसाना० स० क्रि० मोललेना, चलना पौरुष का, वश, काबू।

बिसार्ना० स० क्रि० भुलाना।

बिसाहु० ना० स्त्री० वस्तु जो मोललो, खरीद।

बिसाहना० स० क्रि० मोल लेना।

बिसुरना० अ० क्रि० सिसकना, टुकना।

बिसेला० गु० विषधर, जहरीला।

बिस्तर० } बिस्तार० } ना० पु० विस्तार, बढ़ाय के कहना, ब्यौरेवार चौड़ाव, आसार,

बिस्तुइया० } बिस्तुई० } ना० स्त्री० छिपकली।

बिहन० ना० पु० बीज।

बिहवल० गु० व्याकुल, भयभीत, विह्वल।

बिहरना० अ० क्रि० रीझना, हुलसना, स० क्रि० भोग करना, रिझाना, फटना।

बिहरी० ना० स्त्री० चन्दा, दामशाही।

बिहसना० अ० क्रि० हँसना।

बिहाग० ना० पु० रागविशेष जो थोड़ी रातरहे पर गाया जाता है।

बिहान० ना० पु० प्रात काल, तड़का, बीतगया.

बिहाना० अ० क्रि० काल काटना, बिताना, तजना, छोड़ना।

बिहाने० अव्य० सवेरे।

बिहार० ना० पु० क्रीड़ा, लीला, आनन्द देशविशेष।

बिहारस्थल० } बिहारस्थली० } क्रीड़ा का घर, लीलाभवन, आनन्दगृह।

बिहारी० गु० खिलाड़ी, क्रीड़ाकर, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी का एक नाम।

बिहारीलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, सतसई-कर्त्ता कविविशेष।

बिहून० } बिहूना० } अव्य० रहित, बिन, बिदून।

बी० अव्य० भी।

बींड़ा० ना० पु० लपेटाहुआ, कागज, गट्ठा।

बींधना० स० क्रि० बेधना, छेदना।

बीघा० ना० पु० ३० बिस्वा, गिगहा।

बीच० अव्य मध्य में, अन्तर।

बीछी० ना० पु० बिच्छू।

बीज० ना० पु० वीर्य, अमर, जड़, मयी, हारण, सबब, किया।

बलिदान० ना० पु० देवता के हेतु पशु का अर्पण।

बलिपुष्ट० } ना० पु० कौआ, काग।
बलिभुक्० }

बलिरसा० ना० स्त्री० गन्धक।

बलिष्ठ० गु० बलवान्, पहलवान।

बलिहारी० ना० स्त्री० न्योछावर, कुर्बान।

बली० गु० बलवान्, पहलवान, वीर।

बलीमुख० ना० पु० वानर, कपि, बन्दर।

बलीवर्द० ना० पु० बलद।

बलुआ० गु० बालुमय।

बलूला० ना० पु० बुल्बुला।

बलैंडा० ना० पु० बवण्डर, बौंडरा, बड़ीबलेंडी।

बलैंडी० ना० स्त्री० लम्बी धरनि, जो दो छप्परों के बीच में रखते हैं।

बल्कि० क्रि० बकवादकर, निज बड़ाई करना।

बल्गुजा० ना० स्त्री० बकुची।

बल्पा० ना० स्त्री० असगन्ध।

बल्लक० ना० पु० मोढ़, मध।

बल्लकी० ना० स्त्री० बीन, तम्बूरा।

बल्लभ० ना० पु० भाला, सेलग।

बल्लरी० ना० स्त्री० बेल, गुरच।

बल्लरीकोष० ना० पु० हरसिंगार।

बल्ला० ना० पु० लट्ठा, दण्डा, लम्बा बाँस, जिस से नाव चलाते हैं गोबर की बनी वस्तु जो होली में डालते हैं।

बवंडर० ना० पु० बगडोड़ा, बगूला, बौंडरा, पवन की ग्रन्थि।

बवासीर० ना० स्त्री० गुदा में रोगविशेष।

बवेलिया० ना० पु० गांड, गंडिया।

बस० ना० पु० बश।

बसन० ना० पु० कपड़ा।

बसना० अ० क्रि० रहना, अराहोना, ना० पु० कपड़ाविशेष जिसमें पान लपेटते हैं।

बसनी० ना० स्त्री० थरिया, थैली।

बसाना० स० क्रि० आबाद करना, अ० क्रि० गन्ध देना।

बसूला० ना० पु० बढ़ई का अस्त्र विशेष।

बसूली० ना० स्त्री० ईंट छांटने के लिये अस्त्र विशेष, छोटा बसूला।

बसेंधा० गु० सड़ा, उमसा।

बसेरा० ना० पु० वेफस, सायंकाल, बसना।

बसोवास० ना० पु० बसाति।

बस्त० ना० स्त्री० वस्तु, चीज।

बस्ती० ना० स्त्री० ग्राम, गांव, नगर, बड़ावा।

बस्ना० ना० पु० बेठन।

बहकना० अ० क्रि० निराश होना, भटकना, भूलना।

बहकाना० स० क्रि० निराश करना, भटकाना, भुलाना, बहकाना।

बहंगी० ना० स्त्री० जिसमें कहार बोझ लेचलते हैं।

बहजाना० अ० क्रि० बहना, बिगड़ना, उजड़ना।

बहत्तर० गु० सत्तर और दो, ७२।

बहना० अ० क्रि० चलना, भसना, उमड़ना, मर्याद से बाहर जाना, भूलजाना।

बहनेऊ० ना० पु० बहिनके स्वामी, बहनोई।

बहनेली० ना० स्त्री० ले पालक, बहन।

बहनोई० ना० पु० बहनका पति।

बहनेटा० ना० पु० भाजाको बालक।

बहर० ना० स्त्री० अनेक मौका।

बहरा० गु० बधिर, जिसको सुनाई नहीं देता है।

बहरिया० गु० अनजान, बाहरका।

बहरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष जो कबूतर को पकड़ लेता है।

बहल० ना० स्त्री० चलने की गाड़ी।

बहलाना० अ० क्रि० मनप्रसन्न रहना वा करना।

बहलाना० स० क्रि० खिलाना, फिराना, मन प्रसन्न करना।

बीजक० ना० पु० चलान, चिट्ठी, लेखा, विजयसार, फिहरिस्त।

बीजना० ना० पु० पंखा, बेना।

बीजार० गु० बिजैला।

बीजी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष, नकुल।

बीझना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, खोदना।

बीट० ना० स्त्री० विष्ठा, गुह।

बीटना० अ० क्रि० छलकना, ढलना, मिथरना।

बींट० ना० स्त्री० पक्षियों का विष्ठा।

बीठा० ना० पु० बिड़ना, एड़ुरा।

बीड़ा० ना० पु० लगायाहुआ पान।

बीतना० अ० क्रि० व्यतीत होना, पूराहोजाना, गुजरना, होचुकना।

बीता० गु० गुजरगया, व्यतीतहोगया, ना० पु० बितस्ति।

बीन० ना० स्त्री० बीणा, विद्या विशेष।

बीनना० स० क्रि० चुनना, उठाना।

बीमा० ना० पु० वस्तु को टोटे समेत पहुँचाने के लिये जो पैसा दियाजाता है ठीका, हुंडा, भाड़ा यह शब्द फ़ारसी है।

बीर० ना० पु० भाई, बीर, कानका भूषण।

बीरता० ना० स्त्री० बीरता, मर्दुमी, शूरता।

बीरबहुट्टी० }
बीरबहूटी० } ना० स्त्री० लालरंगका कीड़ा विशेष।

बीरा० ना० पु० बीड़ा, भाई।

बीरी० ना० स्त्री० बीड़ा।

बीर्य० ना० पु० बीर्य, पराक्रम।

बील० ना० पु० बिल्वफल।

बीस० गु० दो दहाई, २०।

बीसा० ना० पु० बीस नखका कुत्ता।

बीसी० ना० स्त्री० अन्नमापनेका परिमाण विशेष, गु० बीसकी।

बुन्दा० ना० पु० बिन्द।

बुन्दियां० ना० स्त्री० मिठाई वा भोजनविशेष।

बुन्देला० ना० पु० बुन्देलखण्डका राजपूत

बुकटा० }
बुकट्टा० } ना० पु० नख, मूठीभर।

बुकनी० ना० स्त्री० चूर्ण, चूरा।

बुकलाना० अ० क्रि० आपीआप बकना,

बुक्का० ना० पु० बुकटा।

बुकी० ना० स्त्री० गांती, मूठीभर।

बुजना० ना० पु० निहानीके कारण से जो वस्त्र स्त्रियां पहनती हैं।

बुजहरा० ना० पु० पानी गर्म करनेकापात्र।

बुझना० अ० क्रि० ठंढा होना।

बुझाना० स० क्रि० ठंढाकरना, समझाना, सुझाना

बुड़ाना० स० क्रि० डुबाना।

बुड्ढा० गु० बूढ़ा प्राचीन मनुष्य।

बुढ़मस० गु० जो बूढ़ा तरुणकी चालचले।

बुढ़वा० गु० बुड्ढा।

बुढ़ापा० ना० पु० वृद्धावस्था।

बुढ़िया० गु० बूढ़ी स्त्री।

बुंडा० ना० पु० कानका भूषणविशेष।

बुत० ना० पु० जुआ वा पचीसी खेलने में सपर पांसा फेंकते हैं धूंसा।

बुताना० स० क्रि० बुझाना।

बुत्ता० ना० पु० ठगाई, छल।

बुदबुद० ना० पु० बुलबुला।

बुदबुदाना० अ० क्रि० बड़बड़ाना।

बुद्ध ना० पु० पण्डित, चौथाग्रह, चौथाव नवम अवतार।

बुद्धि० ना० स्त्री० ज्ञान, समझ, बूझ, सोच अक़्ल।

बुद्धिमान्० गु० ज्ञानवान्, समझदार, च पण्डित।

बुद्धिहा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।

बुद्धी० गु० चतुर, समझदार, बुद्धिमान्।

बुध ना० पु० चौथाग्रह, चन्द्रपुत्र, चौथादिन नवम अवतार जो गया में भया, पण्डि देवता।

बहलिया० ना० पु० आखेटकी, बधिक, बहेलिया, नीचजातिविशेष।
बहली० ना० स्त्री० छोटी बहल।
बहाना० स० क्रि० धसाना, ढलाना, उमड़ाना, भुलाना, मर्यादा भ्रष्ट चलाना।
बहाव० ना० पु० अहिला, बाढ़ प्रवाह।
बहिः० अव्य० बाहर।
बहिःकोण० ना० पु० बाहरका कोना।
बहिजाना० अ० क्रि० पतित होना, बहना, बिगड़ जाना, खराब होना।
बहिन० ना० स्त्री० भगिनी, अनुजा।
बहिरन्तर० अव्य० बाहर भीतर।
बहिरा० गु० बधिर, बहरा।
बहिराना० स० क्रि० बहलाना, अ० क्रि० निकलना।
बहिर्देश० ना० पु० बाहरस्थान, बाहरकादेश।
बहिर्मुख० ना० पु० धर्मकरने में अचेत, असगत।
बही० ना० स्त्री० महाजनों के हिसाब की पोथी, खसरह, खाता।
बहीर० ना० स्त्री० सेना के संग जो भंडरादि सामग्री।
बहु० गु० बहुत, ढेर, अनेक।
बहुकाल० ना० पु० अनेक दिन, बहुत दिन।
बहुकालीन० गु० बहुत दिनों का।
बहुत० गु० अधिक ढेर, बड़ा।
बहुतात० } ना० स्त्री० अधिकता, सरसाई, बहुतायत० } विस्तार, नियादती।
बहुतेरा० गु० अनेक, अधिक।
बहुत्व० ना० पु० बहुतायत।
बहुदर्शी० ना० पु० जिसने बहुत देखा है।
बहुधा० अव्य० अनेक प्रकारसे, बहुत प्रकार, कईबार, अक्सर।
बहुनयन० }
बहुनेत्र० } ना० पु० इन्द्र।
बहुनैन० }
बहुपद० ना० पु० बरगदवृक्ष।
बहुपघा० ना० पु० भौंरा, भ्रमर।
बहुपुट० ना० पु० भोजपत्र।
बहुपुत्रिका० } ना० स्त्री० बड़ी शतावर, बहुपुत्री० } बहुतबेटी।
बहुबाहु० } ना० पु० बाणासुर, सहस्रार्जुन, रावण, बहुभुज० } गु० जिसके बहुत भुजा हों।
बहुभुजक्षेत्र० ना० पु० बहुतभेड़ों का खेत।
बहुमंजरी० ना० स्त्री० तुलसी।
बहुमूल्य० } गु० महगा या जिसका बहुत बहुमोल्य० } मोल है, कीमती।
बहुर० अव्य० फेर, पुनि।
बहुरंगी० गु० अनेक रंग का धरिधर।
बहुरना० अ० क्रि० फिरना, फिरआना।
बहुराना० स० क्रि० फेरलाना, फिराना।
बहुरि० अव्य० पुनः फेर।
बहुरिया० ना० स्त्री० बधू, बहू।
बहुरूप० ना० पु० शरट।
बहुरूपिया० }
बहुरूपी० } ना० पु० भांड़, स्वांगी।
बहुरूप्य० ना० पु० भांड़ती।
बहुल० }
बहुलता० } गु० बहुतायत, अधिकता, इफरात।
बहुलच्छद० ना० पु० सहिजनवृक्ष।
बहुला० ना० स्त्री० छोटी कटाई।
बहुवचन० ना० पु० अधिकत्व, संख्या का बोधक, प्रत्यय, बहुतबातें।
बहुविध० }
बहुविधि० } गु० अनेक प्रकार, बहुधा।
बहुव्रीहि० ना० पु० समासविशेष।
बहुशः० अव्य० बारम्बार, बार बार।
बहू० ना० स्त्री० बधू, दुलहन।
बहेड़ा० ना० पु० फलविशेष।
बहेतू० ना० पु० लुचा, फिरन्ता, गु० बेराहुआ।
बहेलिया० ना० पु० बधिक, चिड़ीमार।
बहोरना० स० क्रि० फिराना, लौटाना।
बहोरि० अव्य० फिर, बहुरि।

बुधवार० ना० पु० चौथावार।
बुधि० ना० स्त्री० बुद्धि।
बुन्द० ना० पु० बिन्दु, स्वल्प, कतरह।
बुनना० स० क्रि० बिनना।
बुभुक्षित० गु० भूखा।
बुरमसिया० गु० बुदमस।
बुरा० गु० दुष्ट, खटा, खराब, अकार।
बुराई० ना० स्त्री० दुष्टता, खोट।
बुर्ज० ना० पु० रस्सा, लासा।
बुर्जरा० ना० स्त्री० स्त्रियों की गाली।
बुर्जोरी० ना० स्त्री० बुर्मेरी।
बुलबुला० ना० पु० बुल्ला।
बुलाक० ना० पु० नाक में का भूषणविशेष।
बुलाना० स० क्रि० पुकारना, हांक देना, तलब करना।
बुलाहट० ना० स्त्री० आवाहन।
बुहनी० ना० स्त्री० अगवानी, पहिलीबिक्रीका नाम, बयानह।
बुहरी० ना० स्त्री० भुनेहुये जौ।
बुहारन० ना० स्त्री झाड़न।
बुहारना० अ० क्रि० झाड़ना।
बुहारी० ना० स्त्री० झाड़।
बुहारू० ना० पु० भंगी।
बूआ० ना० स्त्री० बहिन, फूफी, माता।
बूई० ना० स्त्री० लड़कों के डराने का शब्द।
बूंद० ना० स्त्री० बिन्दु, टपकन, गु० भला, ऊंचा, लड़ाकू।
बूंदा० ना० पु० बड़ीबूंद।
बूंदी० ना० स्त्री० टपका, पानी की बूंद, मिठाई विशेष।
बूकना० स० क्रि० पीसना, बुकनी करना।
बूका० ना० पु० चूर्ण, छोटामोती, बुकनी।
बूचा० ना० पु० जिसके कान नहीं, कनकटा।
बूची० गु० स्त्री० कनकटी।
बूझ० ना० स्त्री० समझ, बुद्धि।
बूझना० अ० क्रि० समझना, जानना।
बूट० ना० पु० हराचना, तरकारी।
बूटा० ना० पु० पौधा, वृक्ष, फूल कपड़े का।
बूटी० ना० स्त्री० वनस्पति, औषधि, छोटा वृक्ष, निरवा, भंग, विजया।
बूड़ना० अ० क्रि० डूबना।
बूड़मरना० अ० क्रि० डूबमरना।
बूड़िया० ना० पु० डूबनेहारा।
बूत०, बूता० ना० पु० बल, सामर्थ्य, पौरुष, ताक़त।
बूबू० ना० स्त्री० बहन, बीबी।
बूर० ना० स्त्री० भूसी, छिलका।
बूरा० ना० स्त्री० खांड, लकड़ी की बुकनी, चूर्ण, यह शब्द फ़ारसी का है।
बे० अव्य० अरे।
बेंट० ना० पु० हथकड़ा, दस्ता।
बेंड़ा० पु० गु० टेढ़ा, बांका।
बेंधना० स० क्रि० गूंधना, चलना।
बेग० ना० पु० वेग, जोर।
बेगवान्० गु० वेगवान्, जोरवाला।
बेगार० ना० पु० बरबस काम कराना।
बेगारी० ना० स्त्री० मोटिया, बेगारकर्त्ता।
बेगी० गु० वेगी।
बेंग० ना० पु० मेढक, भेक।
बेंचना० स० क्रि० बिकाना, मोल लेकरदेना।
बेचू० गु० बेचनेवाला।
बेजू० ना० पु० जन्तुविशेष।
बेझा० ना० पु० निशाना, जिसपर तीर या गोली का अभ्यास करते हैं।
बेटा० ना० पु० पुत्र, लड़का।
बेटी० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या।
बेठन० ना० पु० वेष्टन, लपेटन।
बेड़० ना० पु० बाड़ा, बियावर, भ्रमक।
बेड़िया० ना० पु० जातिविशेष।
बेड़ी० ना० स्त्री० पैकड़ी, जिसटोकरी से लेत सींचते हैं।

बांक० ना० पु० धातुविशेष, कटारविशेष, फेर, टेढ़ाई, घुमाव, दोष।
बांकपन० ना० पु० टेढ़ापन, छछोड़पन, लुचपन।
बांका० ना० पु० छैला, अकड़ैत, बांसकाटने का अस्त्र विशेष, गु० टेढ़ा।
बांबी० ना० स्त्री० सांप का बिल।
बांगा० ना० स्त्री० बिनौला समेत रूई, पीली सरसों।
बांचना० स० क्रि० पढ़ना।
बांजर० ना० पु० बंजर, बिना जोती बोई धरती।
बांझ० ना० स्त्री० बन्ध्या।
बांट० ना० पु० भाग, अंश, बटखरा।
बांटना० स० क्रि० भागकरना, पीसना।
बांड़ा० गु० पूछ बिना पशु, मनुष्य जिसके कोई नहीं रहा, सर्प पूछरहित।
बांड़ी० ना० स्त्री० लठ, लकड़।
बांदा० ना० पु० आकाशलता जो वृक्षपर होती है।
बांदी० ना० स्त्री० लौंडी, दासी।
बांध० ना० पु० मेड़, बन्ध, पुल।
बांधना० स० क्रि० जकड़ना, गांठना, लगाना, बन्दकरना, बनाना, लटकाना, लपेटना, उठाना, तकाना।
बांधनू० ना० पु० रंगनेकीरीतिविशेष, कलंक, उपाय, रेशमी कपड़ाविशेष, तोताविशेष।
बांस० ना० पु० वृक्षविशेष, तालाबआदिनापनेके लिये मापकविशेष।
बांसफोड़ा० ना० पु० जातिविशेष जो बांसकी वस्तु बनाता है।
बांसली० ना० स्त्री० मुरली, वंशी।
बांसा० ना० पु० नासिका की हड्डी।
बांसी० ना० स्त्री० मुरली, छोटाबांस, बांस से बनी हुई वस्तु, बांस का फल।
बांसुरी० ना० स्त्री० मुरली।
बांह० ना० स्त्री० भाहुं।
बांहिया० गु० पक्षी, ओरी तरफ़दार।
बाई० ना० स्त्री० महाराष्ट्रों में स्त्रियों का नाम, कंचनी बात अव्य० जांघ।
बाईस० गु० बीस और दो, २२।
बाईसी० ना० स्त्री० राजा की फ़ौज बाईस हजार पलटन प्रधानता।
बाकला० ना० पु० तरकारी विशेष।
बाकस० ना० पु० झाड़ी जिसके कोयलों से बारूद बनाते हैं।
बाखर० } ना० पु० अंगनाई, कई एकघर
बाखल० } जो एक हाते के भीतर हों।
बाग० ना० स्त्री० लगाम।
बागडोर० ना० स्त्री० लम्बी बाग, लगामकी रस्सी।
बागा० ना० पु० जोड़ा, खिलत, पहिरने का वस्त्र विशेष।
बागी० ना० पु० असवार, घुड़चढ़ा।
बाघ० ना० पु० व्याघ्र, शेर।
बाघन० }
बाघनी० } ना० स्त्री० व्याघ्री, शेरनी।
बाघम्बर० ना० पु० बाघकी खाल।
बाघा० ना० पु० बाघ।
बाछ० ना० स्त्री० चुनाव, छांट, हिस्सह, लगाने होंठके दोनोंओरके कोने, गु० निकम्मा।
बाछना० स० क्रि० चुनना, छांटना।
बाजगाज० ना० पु० अनेक बाजों का इकट्ठा शब्द।
बाजन० ना० पु० कई एक बाजा।
बाजना० अ० क्रि० बजना, प्रकट होना, भिड़ना।
बाजरा० ना० पु० वाद्य, ढोल आदि, गु० भिड़।
बाजा० ना० पु० वाद्य, ढोल आदि, गु० भिड़ गया।
बाजी० ना० पु० घोड़ा।
बाजू० ना० पु० बांहमें पहिरने का गहना विशेष।
बाहा० अव्य० बाहर।

बेड़ना० स० क्रि० बाड़बांधना, छेंकना, हंकारना, लाभउठाना, छीनलेना, कमाना, चुराना।
बेत० ना० पु० बेंत, छड़ी, आकाश।
बेद० ना० पु० वेद।
बेदगिरा० ना० पु० वेदवाणी।
बेध० ना० पु० छेद, सूराख।
बेधक० गु० छेदनेवाला।
बेधड़क० गु० निधड़क।
बेधना० स० क्रि० छेदना।
बेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी।
बेधा० ना० पु० ब्रह्मा, खरांफूल।
बेधी० ना० पु० वेधक।
बेन० ना० स्त्री० बांसुरी, बंसी।
बेना० ना० पु० पंखा, खस खसं।
बेनी० ना० स्त्री० जूड़ा, चोटी, किवाड़काएक काठविशेष।
बेर० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, ना० स्त्री० बार, विलम्ब, बेला।
बेरबेर० अव्य० बारंबार।
बेरभयानक० ना० पु० प्रलयकी रात, मृतक की रात।
बेरी० ना० स्त्री० बेरका वृक्ष।
बेरे० ना० पु० नाव, जहाज।
बेल० ना० पु० बिल्वफल, पुष्पविशेष, बेलि।
बेलन० ना० पु० रोटी बेलने की वस्तु।
बेलना० स० क्रि० फैलाना० ना० पु० बेलन।
बेलनी० ना० पु० टहनी।
बेलबूटा० ना० पु० झाड़ी, लताविशेष।
बेला० ना० पु० पुष्प विशेष, कटोरा, बेला नाम
बेलि० ना० स्त्री० बेलि, लता जो पौधा आपसे खड़ा न होसके।
बेसन० ना० पु० चनेका आटा।
बेसनी० ना० स्त्री० बेसनसे बनीहुई।
बेसनौटी० ना० स्त्री० बेसनकी रोटी।
बेसर० ना० स्त्री० नथनी।
बेसरा० ना० पु० पक्षीविशेष।
बेसवा० ना० स्त्री० वेश्या।
बेह० ना० पु० छिद्र, सूराख।
बेहड़० ना० स्त्री० पृथ्वी जहांऊंची नीचीहो।
बैंगन० ना० पु० भांटा, तरकारीविशेष।
बैंगनी० } गु० रंग जो बैंगन के समान हो,
बैंजनी० } पिंगल।
बैंदी० ना० स्त्री० टिकुली।
बैठक० ना० स्त्री० } बैठनेकास्थान, चौपाड़, बैठ-
बैठका० ना० पु० } नेकी चाल या रीति।
बैठना० अ० क्रि० आसन मारना।
बैठवा० गु० चपटा, चौपट।
बैठा० ना० पु० चप्पू, डांड।
बैठाना० } स० क्रि० स्थापन कराना।
बैठालना० }
बैतरा० ना० स्त्री० सोंठिविशेष।
बैतरणी० ना० स्त्री० नरकमार्ग की नदी।
बैदिक० ना० पु० वैदिक, वेदका जाननेवाला।
बैन० ना० पु० वचन, वाणी, बनसी।
बैनतेय० ना० पु० विनताके पुत्र गरुड़, अरुण।
बैना० ना० पु० गायेपरका भूषणविशेष, पकवान जो विवाह आदि में बांटते हैं, ब्यौहारी, पवन।
बैपार० ना० पु० व्यापार, तिजारत।
बैपारी० ना० पु० सौदागर, ताजिर, ब्योपारी।
बैर० ना० पु० वैर, दुशमन।
बैरख० ना० स्त्री० झंडी, ध्वजा, पताका।
बैरागी० ना० पु० बैरागी, जिसको वैराग्यहो।
बैल० ना० पु० वृषभ, बरध।
बैस० ना० पु० आयुर्दा, वयः, वैश्य, राजपूतों में जातिविशेष।
बैसन्दर० ना० पु० आग।
बैसांडु० गु० आसकती, मक्खीमार, घर में बैठनेहारा।
बोआई० ना० स्त्री० बोने का काम, बोने का समय।

बाह्यालय० ना० पु० मन्दिर के बाहर।
बाट० ना० स्त्री० मार्ग, राह, पन्थ।
बाट० ना० पु० बांट जो पत्थर आदि के होते हैं।
बाड़० ना० स्त्री० धार, पार, सिपाहियों की पंक्ति।
बाड़व० ना० पु० ब्राह्मण।
बाड़वाग्नि० } ना० पु० जल में की अग्नि।
बाड़वानल० }
बाड़ा० ना० पु० हाता, घेर, मन्दिर, भूर, दान।
बाड़िया० ना० पु० बाड़ बनाने हारा।
बाड़ी० ना० पु० उपवन विशेष; उपवन समेत जो घर।
बाढ़० ना० स्त्री० धार, बढ़ती, अधिकाई, सरसई, अतसीव, अहिला, बहिया।
बाढ़ना० } अ० क्रि० बढ़ना, उमण्डना।
बाढ़नो० }
बाण० ना० पु० शर, बाध, खाटकी रस्सी।
बानप्रस्थ० ना० पु० तृतीयाश्रमी अर्थात् जो स्त्री प्रसंग रहित हो परन्तु स्त्री के साथरहे।
बाणा० ना० पु० मूंज।
बाणासुर० ना० पु० दैत्यविशेष, राजाबलि का पुत्र।
बाणिज्य० ना० पु० ब्योपार; तिजारत, सौदागरी।
बाणी० ना० स्त्री० सरस्वती, आवाज़।
बात० ना० स्त्री० वार्त्ता, वाणी, वचन, कारण, कारज, समाचार, पवन।
बातकीबातमें० अव्य० अभी, तुरन्त।
बाती० ना० स्त्री० बत्ती, दीपक की बत्ती, अपर की बत्ती।
बातुनिया० } गु० बड़बड़िया, मर्चेत, बड़ा
बातूनी० } बतकहा, बकवादी।
बादल० ना० पु० मेघ।
बादला० ना० पु० सोनेरूपे का तारविशेष,लप्पा।
बादली० ना० स्त्री० लप्पा।
बादुर० ना० पु० चमगीदड़।

बाध० ना० पु० निवारण, रोक, खाट बुनने की रस्सी।
बाधक० ना० पु० जो बाधकरे, प्रतिबन्धक, दुःखदाता।
बाधा० ना० स्त्री० दुःख, पीड़ा, अटकाव, रुकाव, मिथ्या, आफ़त।
बाध्य० गु० बाधने के योग्य।
बान० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल, यथा, तुलसी यहमन तजत नहिं कुरबिनिया की बान, ना० पु० बाण, खाटबुनने की रस्सी।
बानगी० ना० स्त्री० नमूना, सरीखा, दृष्टान्त।
बानबे० गु० नब्बे और दो, ९२।
बाना० ना० पु० स्वभाव, व्यवहार; अस्त्र विशेष, कपड़े की ब्योंत, भर्नी, भेष, निशानी, प्रतिज्ञा, फैलाना।
बानि० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल।
बानिक० ना० पु० बनाव, पहनाव, सजाव।
बानी० ना० स्त्री० वाणी।
बानीबोली० ना० स्त्री० विनवाई।
बानूआ० ना० पु० जलपक्षी विशेष।
बानूसा० ना० पु० } वृक्ष विशेष।
बानूसी० ना० स्त्री० }
बानैत० गु० बानावाले, बानधारी, वीर भटबैर।
बान्धव० ना० पु० भाई, नतैत, सम्बन्धी।
बाप० ना० पु० पिता, जनक।
बापड़ा० ना० पु० बापुरो।
बापरो० } गु० तुच्छ, नीच, दीन, कंगाल,
बापुरो० } असमर्थ।
बाफ० ना० स्त्री० भाफ, बफारा।
बाबर० ना० पु० मिठाईविशेष।
बाबा० ना० पु० नानक, दादा, बूढ़ा, बालक संन्यासी।
बाबू० ना० पु० बालक, राजा, स्वामी।
बाम० ना० स्त्री० बामा, औरत।
बाह्मन० ना० पु० ब्राह्मण।

बोआना० स० क्रि० बीजडलवाना, बसाना।
बोआरा० ना० पु० बोने का समय।
बोंट० ना० पु० डांट, डंठा, डाली।
बोक०
बोकड़ा०
बोकरा० } ना० पु० बकरा, अज।
बोकरी० ना० स्त्री० बकरी।
बोच० ना० पु० मगर, कुम्भीर।
बोचा० ना० पु० पालकी विशेष, बूचा।
बोझ० ना० पु० भार, लादी।
बोझना० स० क्रि० लादना।
बोझल०
बोझिल० } गु० लदा, भरा।
बोटी० ना० स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा।
बोतू० ना० पु० बकरा।
बोदली० ना० स्त्री० भोली, गेगली।
बोदा० गु० निर्बल, आसक्त, भोला, गेगला।
बोद्धा० गु० बुद्धिमान्।
बोध० ना० पु० ज्ञान, मति, मनौती, धीरज।
बोधक० ना० पु० जिससे ज्ञानहो, बोधकर्त्ता।
बोधना० स० क्रि० फुसलाना, समझाना।
बोना० स० क्रि० बीजडालना।
बोनी० ना० स्त्री० बोने का समय।
बोर० ना० पु० पाजेब के घुंघरू।
बोरा० ना० पु० गोन, गठिया, लोथा, टाट का थैला।
बोरी० ना० पु० रामधनुष, चावल विशेष।
बोल० ना० पु० शब्द, गीतका शब्द, बात।
बोलचाल० ना० स्त्री० बात चीत।
बोलता० ना० पु० प्राण, जीव, बोलने की शक्ति।
बोलना० अ० क्रि० बातकरना, कहना, बजना।
बोलबाला० ना० पु० आशीर्वादविशेष।
बोली० ना० स्त्री० वाणी, भाषा, बात।
बौंड़० ना० पु० बेलि, लता।
बौंड़ना०
बौंड़ियाना० } अ० क्रि० लिपटना, घूमना, भवँर, स्थान।

बौंड़ी० ना० स्त्री० बेलि, लता।
बौछार० ना० स्त्री० वायुसहित बड़ी वृष्टि या जो वायु के झकोड़ से बूंदें घर में चली आती हैं।
बौद्ध० ना० पु० बुधका मतावलम्बी।
बौना० गु० छोटा, वावन, नाटा।
बौनी० ना० स्त्री० ठिगनी, बोने का समय या काम।
बौरहा० गु० बौराहा।
बौरा० गु० गूंगा, मूक।
बौराना० अ० क्रि० बावला होना।
बौरापन० ना० पु० सिड़पन।
बौराहा० गु० बावला, सिड़ी।
बौला० गु० पोपला, मुर्ख।
बौहा० गु० पथरीला।
बौहाई० ना० स्त्री० जिस स्त्री को गर्भका रोगहै।
ब्यान० ना० पु० पशुआदि का प्रसव।
ब्याना० अ० क्रि० जन्मना, उत्पन्न होना।
ब्याह० ना० पु० विवाह।
ब्याहता० गु० विवाहिता।
ब्याहनयोग० गु० जो ब्याहने के योग्य है।
ब्याहना० स० क्रि० विवाह करना।
ब्याहा० गु० विवाहित, जिसका विवाह होगया।
ब्योंगा० ना० पु०
ब्योंगी० स्त्री० } चमड़ा छीलने का अस्त्र।
ब्योंत० ना० पु० गढ़न, डौल, रीति, ढब।
ब्योंतना० स० क्रि० कपड़े को छांटिवाना या बनाना।
ब्योरा० ना० पु० भेद, वृत्तान्त, वखान, अन्तर।
ब्योपार० ना० पु० व्यापार, तिजारत, सौदागरी।
ब्योपारी० गु० व्यापारी, ताजिर, सौदागर, देशावरी।
ब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर, जगत् का कारण ब्रह्मा, वेद, देवता, जीव, कुल।
ब्रह्मअस्त्र० ना० पु० ब्रह्माजी का अस्त्रविशेष।
ब्रह्मकाष्ठ० ना० पु० शहतूत, तूत।

ब्राह्मनी० ना०, स्त्री०, औषधि, पौधा, विशेष, कंजिया, ब्राह्मणी, अंजनहारी, कीटविशेष, छिपकली।
बायन० ना० पु० व्योहारी, मिठाई आदि जो मित्रों के घर भेजते हैं।
बायव० गु० दूसरा, अलग, ना० पु० वायुकोण।
बायव्य० ना० पु० वायुकोण।
बायां० गु० वामा, दहिणांग के विपरीत अंग।
बायो० क्रि० फैलाया, पसारा।
बार० ना० पु० द्वार, दिन, बालक, बाल, ना० स्त्री० समय, पात, बाला, दां।
बारण० } ना० पु० हाथी, निवारण, दगाव, रुकावट, बचाना, न्योछावर।
बारन० }
बारना० अ० क्रि० लिपटना, बिलगना, स० क्रि० निषेधकरना, जलाना।
बारनारि० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।
बारम्बार० अव्य० बारबार, प्रतिदिन, घड़ीघड़ी।
बारह० गु० द्वादश, १२।
बारहखड़ी० } ना० स्त्री० द्वादश मात्रा जो
बाराखरी० } व्यंजनोंमें मिलाकर बालकों को पढाते हैं।
बारासिंगा० ना० पु० कन्दहार, मृगविशेष।
बाराह० ना० पु० शूकर।
बाराहीबेर० ना० पु० नेत्रबाला।
बारी० ना० स्त्री० बाड़ी, झरोखा, बिनव्याही कन्या, ओसरी, नौबत, ना० पु० जाति विशेष, दाव, बाला, ना० स्त्री० बाली।
बारूत० ना० स्त्री० बारूद जिससे बन्दूकचलाते हैं।
बारे० ना० पु० बच्चे, लड़के।
बाल० ना० पु० सिरोरुह, बालक, बाली, मूर्ख, गूंगा, बाला, दरार, नाक, रामायण का प्रथम काण्ड।
बालक० ना० पु० लड़का, नेत्रबाला, औषधि।
बालकता० } ना० स्त्री० लड़काई।
बालकपन० }
बालका० ना० पु० योगी वा संन्यासीका चेला।
बालछड़० ना० स्त्री० औषधि वा सुगन्धिविशेष।
बालतोड़० ना० पु० बलतोड़।
बालतृक० ना० पु० कत्था, खैर।
बालदशा० ना० स्त्री० बालकता।
बालना० स० क्रि० जलाना, सुलगाना।
बालपत्र० ना० पु० जवासा।
बालबच्चे० ना० पु० लड़केबाले।
बालभाव० ना० पु० लड़काई, बालकता।
बालभोग० ना० पु० प्रातःकाल जो श्रीकृष्णचन्द्रजीके निमित्त भोग लगाते हैं।
बालम० ना० पु० प्रियतम, पति, कपड़ाविशेष।
बालमूल० ना० पु० मूली।
बालरांड० ना० स्त्री० जो बालकपन से विधवा है।
बाला० ना० स्त्री० सोलह वर्षतक की कन्या, युवती, पौधा विशेष, जूही, ना० पु० कान में पहरने का भूषण, बालक।
बालापन० ना० पु० लड़कपन, बालकता।
बालिक्य० ना० पु० मांई औषधि।
बाली० ना० स्त्री० लड़की, गेहूं आदिकीबाली, कानमें पहरने का भूषण विशेष।
बालुरू० ना० पु० एलुवा, मुसब्बर।
बालुका० ना० स्त्री० बालू, रेत।
बालुकामय० गु० रेतीला, रेतला, किरकिरा।
बालू० ना० स्त्री० रेत, रेणु।
बालूसर० ना० पु० गांजा विशेष।
बाल्मीक० ना० पु० मुनि विशेष, रामायणकर्ता।
बाल्य० } ना० स्त्री० लड़काई, बालकता।
बाल्यावस्था० }
बाल्हिक० ना० पु० घोड़ा।
बाल्हीक० ना० पु० हींग देशविशेष।
बाव० ना० पु० वायु।
बावग० ना० पु० बोवाई, बोआरा।
बावगोला० ना० पु० वायुशूल।
बावभक्ष० गु० गप्पी, झक्की।

ब्रह्मगिरा० ना० स्त्री० आकाशवाणी, ब्रह्मवाणी।
ब्रह्मघोष० ना० पु० जहां वेद पढ़ाया वा पढ़ा जाता है, वेदपाठशाला।
ब्रह्मचर्य० ना० पु० ब्रह्मचारी का व्यवहार।
ब्रह्मचारी० ना० पु० प्रथमाश्रमी, ईश्वरपूजक।
ब्रह्मदारु० ना० पु० शहतूत।
ब्रह्मदैत्य० ना० पु० ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मन० ना० पु० ब्राह्मण।
ब्रह्मपादप० ना० पु० ढांखका वृक्ष।
ब्रह्मपुत्र० ना० पु० नदविशेष, ब्रह्माका पुत्र।
ब्रह्मयान० ना० पु० ब्रह्मास्त्र।
ब्रह्मभवन० ना० पु० ब्रह्माका स्थान।
ब्रह्मभुवन० ना० पु० ब्रह्माका लोक।
ब्रह्मभोज० ना० पु० ब्राह्मणों को भोजनदेना।
ब्रह्ममेखला० ना० स्त्री० मूंज।
ब्रह्मरन्ध्र० ना० पु० मस्तकका मध्यस्थान।
ब्रह्मरात्रि० ना० स्त्री० ब्रह्माकी रात जो सहस्र चतुर्युगी होती है।
ब्रह्मराक्षस० ना० पु० प्रेत विशेष, लूका।
ब्रह्मवाद० ना० पु० वेदान्त कथन।
ब्रह्मवादी० ना० पु० वेदान्ती।
ब्रह्मविचार० ना० पु० वेदान्तविद्या, अध्यात्मज्ञान।
ब्रह्मलोक० ना० पु० लोकविशेष जहां ब्रह्माजी का निवासस्थान है।
ब्रह्मश्रव० ना० पु० वेद।
ब्रह्मसूत्र० ना० पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ।
ब्रह्महत्या० ना० स्त्री० ब्राह्मणकी हत्या।
ब्रह्मज्ञान० ना० पु० ईश्वरतत्त्वज्ञान, परमज्ञान, आत्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।
ब्रह्मा० ना० पु० देशविशेष जो पूर्व में है या उस देश के राजा की जातिविशेष, विधाता, सृष्टिकर्त्ता।
ब्रह्माचारी० ना० पु० ईश्वरपूजक, ब्रह्मविचारी।
ब्रह्माण्ड० ना० पु० जगत्, संसार, शिरकीराह।
ब्रह्मानन्द० ना० पु० निज स्वरूपानन्द, आत्मानन्द।
ब्रह्माणी० ना० स्त्री० सरस्वती।
ब्राह्मण० ना० पु० प्रथम वर्ण।
ब्राह्मणी० ना० स्त्री० ब्राह्मण की स्त्री।
ब्राह्मण्य० ना० पु० ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की सभा, सातवां ग्रह।
ब्राह्मी० ना० स्त्री० संहिताविशेष, सरस्वती, बाला औषधि।
ब्राह्मय० ना० पु० अचम्भा, आश्चर्य, ब्राह्मणों की सभा।
ब्राह्ममुहूर्त्त० ना० पु० सूर्योदय से पहले चार घड़ी पौह, पह।

[भ]

भ० ना० पु० नक्षत्र, राशि।
भंवर० ना० पु० भौंरा, चक्कर।
भंवर० } ना० पु० अलि, लता, भ्रमर।
भंवरा० }
भंवरी० } ना० स्त्री० तीतरी, पतंगाविशेष।
भंवोरी० }
भंवोरना० स० क्रि० काटना, काटखाना।
भकसी० ना० स्त्री० पृथ्वी में गुफा, अंधेरी।
भकुवा० गु० निर्बुद्धि, मूर्ख, अहमक।
भकुवाना० अ० क्रि० निर्बुद्धि होना, उल्लू होजाना।
भकोसना० स० क्रि० खालेना, ढुकसना।
भक्त० ना० पु० अर्चक, सेवक, उपासक, भात, गु० धर्मा, चाहक।
भक्तवत्सल० ना० पु० भक्तप्रिय, श्रीभगवान्।
भक्ता० ना० पु० भक्त।
भक्ताई० ना० स्त्री० भगताई, सेनकाई, भक्ति, धर्म।
भक्ति० ना० स्त्री० मत, धर्म, श्रद्धा, प्रीति, सेवा।
भग० ना० स्त्री० योनि, गुद, सुभाग, ऐश्वर्यादि गुण, ना० पु० सूर्य, भागवती यथा, धाता

विधाता वरुणोऽर्यमा सविता भगः।
भगण० ना० पु० अक्षरीगणविशेष, जिसमें आदिका अक्षर दीर्घ होता है यथा, राघव।
भगत० ना० पु० भक्त।
भगतन० ना० स्त्री० भगतकी स्त्री वा वेश्या।
भगताई० ना० स्त्री० भगतपन।
भगतिया० ना० पु० भनैया, कथिक, राधा, जाति।
भगन्दर० } ना० पु० गुदा में रोग विशेष।
भगन्धर०
भगनी० ना० स्त्री० बहन, भगिनी।
भगर० ना० पु० मगल।
भगल० ना० पु० छल, कपट, फरेब, इन्द्रजाल।
भगवत० ना० स्त्री० भागवत।
भगवती० ना० स्त्री० माया, आदिशक्ति, ईश्वरी।
भगवन्त० ना० पु० भगवान्।
भगवाँ० ना० पु० गेरुआ वस्त्र।
भगवान्० ना० पु० ऐश्वर्यादि गुणसंयुक्त, तेजस्वी, प्रतापवान्, ईश्वर।
भगाना० स० क्रि० हँकाना, चलाना, दूरकरना।
भगीरथ० ना० पु० राजा विशेष जो श्रीगंगाजी को स्वर्ग से लाया।
भगेल० ना० स्त्री० पराजय, ना० पु० भगोड़ा।
भगोड़ा० ना० पु० भागने हारा।
भगुला० ना० पु० दूत, हरकारह, भग्गू।
भग्गू० ना० पु० भगोड़ा।
भग्न० गु० पराजित, नाशित, टूटा फूटा।
भंकार० ना० पु० शब्द करना, आदिका शब्द।
भंग० ना० पु० खण्डन, तोड़, लहर, पराजय। भांग गु० भग्न।
भंगड़ा० ना० पु० जड़ी विशेष, भंगरान।
भंगड़ी० गु० भांग पीनेहारा।
भंगन० ना० स्त्री० भंगी की स्त्री।
भंगना० ना० स्त्री० मछली विशेष।
भंगा० ना० स्त्री० भांग, पक्षी विशेष।
भंगार० ना० पु० भंगरा, भंगड़ा।
भंगी० ना० पु० भंगेड़ी, मिहतर, खुदरा, गु० नाशक, मेटनेवाला।
भंगेरन० ना० स्त्री० भंग की बेचनेहारी।
भंगेरा० ना० पु० भंग बेचनेहारा।
भंगेला० ना० पु० भंग के त्वचाओं का वस्त्र विशेष।
भचक० गु० भावड़ा, विस्मित, अचम्भित।
भचकना० अ० क्रि० अचम्भित या विस्मित होना।
भचक्र० ना० पु० दौरह, चालभर, निजगति पर्यन्त।
भजन० ना० पु० अर्चा, पूजन, सेवन और नौविधि ईश्वर का यशगाना।
भजना० स० क्रि० अर्चा या पूजा या सेवा, जप करना अ० क्रि० भागना।
भजनी० गु० भजन करनेहारा।
भजनीक० ना० पु० अर्चक, भजन करनेहारा।
भजाभि० स० क्रि० भजताहूं, ध्यावताहूं।
भजजाना० अ० क्रि० भागजाना।
भज्जि० अ० क्रि० भागकर।
भज्य० अ० क्रि० भागके, बांटके।
भञ्जन० ना० पु० खण्डन, मारन, तोड़न।
भञ्जाना० स० क्रि० तोड़ाना, भुनाना, पद लाना।
भट० ना० पु० योधा, शूरवीर, धिक्कार, तनूर।
भटई० ना० स्त्री० भाट की स्तुति, भाट का काम।
भटकना० अ० क्रि० भूलजाना, भ्रमना, चूकना, टपना।
भटका० गु० भूलाहुआ, भूला, चूका, भ्रमित।
भटभेरा० ना० पु० मिलाप, मिलान, मुलाकात।
भटकाना० स० क्रि० बहकाना, भुलाना, भड़काना।
भटकीला० गु० जिसमें भटका पायाजावे।

मंजरी० ना० स्त्री० फूलोंका गुच्छा फलों समूह।
मंजस० ना० पु० अंजीरवृक्ष।
मंजा० ना० पु० नये वर्षापानी का फेन अर्थात् मञ्मय आषाढ़ में वर्षनेकापानी मछली को विष होता है, रामायणे यथा, मंजा मनहुं मीन कहं व्यापा
मंजार० ना० पु० बिलार, बिलाव।
मंजारी० ना० स्त्री० बिल्ली।
मंजित० गु० मंजन कियागया या किये हुये, धोयाभया।
मंजिष्ठ० ना० पु० मजीठ।
मंजीर० ना० पु० बिछुवा, पांवका भूषण।
मंजीरा० ना० पु० मजीरा।
मंजु० गु० सुन्दर, मनोहर, चाहता।
मंजुघोष० ना० पु० कबूतर, परेवा।
मंजुघोषा० ना० पु० कबूतरी, कोयल, कोकिला।
मंजुल० गु० सुन्दर, मनोहर, चाहता, अच्छा।
मंजुला० ना० स्त्री० मजीठ।
मंजूषा० ना० स्त्री० टोकरा।
मटक० } ना० स्त्री० चोचला, झांवली, अ-
मटकना० } ठिलानपन, चमकन।
मटकना० ना० पु० घरा, मथनी, मृत्तिकाका बांडापात्र।
मटकना० अ० क्रि० पलक या झांवली मारना, चमकना।
मटका० ना० पु० मटोर मृत्तिकाकाबड़ावर्त्तन।
मटकाना० स० क्रि० आंख घुमाना, चमकाना, दूसरेको बिराना।
मटकी० ना० स्त्री० छोटा मटका, चूसनी, गुल्ली, छगुनी, झपकी, सेन।
मटकोठा० ना० पु० मिट्टीका घर।
मटर० ना० पु० अन्न विशेष, किराउ।
मटरा० ना० पु० मटरविशेष, रेशमीवस्त्रविशेष।
मटरी० ना० स्त्री० मटर विशेष।
मटरीला० गु० जिसमें मटर मिलाहो।
मटियाना० स० क्रि० मिट्टीसे मांजना, अ० क्रि० ऐन, खींचना, आंख छुपाना, होनेदेना, शिथिल होजाना।
मटियार० ना० पु० एकप्रकारकी धरती विशेष जो रेतली नहीं है।
मटियारा० गु० जो किसी कामका न हो, जोताऊ खेती के योग्य।
मटियाव० ना० पु० आनाकानी, आंखछुपाव।
मट्टी० ना० स्त्री० मिट्टी, मृत्तिका।
मट्ठा० ना० पु० छांछ, मठा।
मठ० ना० पु० शिवालय, गोसाइयों का घर, मण्डप।
मठड़ी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।
मठपति० } ना० पु० गोसाईं, अतिथि वा जो
मठवासी० } मनुष्य शिवार्पितवस्तु लेताहो।
मठा० ना० पु० मट्ठा, गु० ढीला, धीमा, धीरा।
मठोर० ना० पु० मटका।
मढ़ियाना० स० क्रि० चपकाना, मीढ़ीलगाना, जमाना।
मड़ोड़० ना० स्त्री० ऐंठ, बल, पेच।
मड़ोड़ना० स० क्रि० ऐंठना, बलदेना, पेच डालना।
मड़ोड़ा० ना० पु० पेट में की पीड़ा, पेचिश।
मड़ोड़ी० ना० स्त्री० मुररी, ऐंठन, जोड़न।
मढ़न० ना० पु० मढ़ने की वस्तु वा काम।
मढ़ना० स० क्रि० लेसना, लगाना, चिपटाना।
मढ़ा० गु० जो मढ़ागया, ना० पु० विवाह का मण्डप, मढ़ी मढ़ी।
मढ़िया० ना० स्त्री० छोटी मढ़ी।
मढ़ी० ना० स्त्री० कुटी, झोंपड़ी, मण्डप।
मणि० ना० स्त्री० भूषण के लिये पाषाण विशेष, हीरा मोती आदि चमकदार, शिरोमणि और प्रसिद्ध है कि वस्तु विशेष सर्प के पास होती है जो रात्रिको प्रकाशित रहती है।

भटाई० ना० स्त्री० बहादुरी, लड़ाई, भटई।

भट्ट० ना० स्त्री० सती, निधीसिंह प्रकाशे, देखिके भट्टको मैं लट्ट ह्वैरह्यो शिवनाथ ओढ़े पीत पट्ट सो अटापै बालठाढ़ी है।

भट्ट० ना० पु० विद्यावान्, पण्डित, दक्षिणी ब्राह्मणों का आस्पद, भट।

भट्टाचार्य्य० ना० पु० पण्डितों में जो सब से बड़ा ज्ञानवान् बंगाले के ब्राह्मणों का उपनाम वा आस्पद।

भट्टी० ना० स्त्री० चूल्हा विशेष।

भठियारपन० ना० पु० भठियारे का काम।

भठियारा० ना० पु० सराय का भाड़ा उगाहने हारा, जाति विशेष।

भठियारन० ना० स्त्री० भठियारे की स्त्री।

भठियाल० गु० जो नदी की धारापर से बहे।

भड़० ना० पु० बड़ी नाव विशेष।

भड़क० ना० स्त्री० चटक, झलक, घबराहट, झझक, चौंक।

भड़कना० अ० क्रि० झिझकना, चौंकना, आंच उठना, जल उठना।

भड़काना० स० क्रि० डराना, भटकाना, आंच करना, लूका लगाना, चौंकाना।

भड़की० ना० स्त्री० चटकी, चमक, आंच, चौंक।

भड़कीला० गु० चटकीला, चमकीला, चौंकेल।

भड़केल० गु० जंगली, अनपहिचान, चौंकेला।

भड़भड़िया० गु० निष्कपट, सीधा।

भड़भूजन० ना० स्त्री० भुर्जन।

भड़भूजा० ना० पु० भुर्जी, भुजवा।

भड़रिया० ना० पु० ठग, मन्त्री, जोसी।

भड़साई० ना० पु० भाड़।

भड़िहा० गु० चोर, चाटने हारा, घिनौना, निलज्ज।

भड़िहाई० ना० स्त्री० भड़िहापन, रामायणे यथा, सो दशशीश श्वान की नाईं, इत उत चितै चला भड़िहाई।

भडुवा० ना० पु० कुटना, वेश्याका भ्राता, पितादि।

भडुवाई० ना० स्त्री० कुटनापन।

भड़ैत०
भड़ैती० } ना० पु० भाड़ादेनेहारा प्रजा।

भणन० ना० पु० कथन।

भणित० गु० कथित, कहाहुआ, कविता।

भण्टिका० ना० स्त्री० भांटा, बैंगन।

भण्ड० ना० पु० भांड, भण्डता।

भण्डा० ना० पु० मटका, मांटी, भरई।

भण्डार० ना० पु० कोठा, खाता बखार।

भण्डारा० ना० पु० योगी, वा संन्यासी, व उदासियों का ज्योनार वा जिमाना, भोजन।

भण्डारी० ना० पु० भण्डारे का रक्षक, रोटिया, रसोइयां।

भण्डेरिया० ना० पु० भड़रिया।

भण्डेला० ना० पु० भांड।

भण्डौवा० ना० पु० निन्दा, फक्कड़।

भतरा० ना० पु० भतार, पति।

भतरौंड़० ना० पु० मथुरा वृन्दावन के मध्य स्थान विशेष।

भतार० ना० पु० भर्तार, पति, स्वामी, कन्त।

भतीजा० ना० पु० भाई का बेटा।

भतीजी० ना० स्त्री० भाई की कन्या।

भत्ता० ना० पु० भात।

भद० ना० स्त्री० भप्पा, धड़ाका, कुयश।

भदभद० ना० पु० वृक्षके फल गिरने का, व मनुष्य के चलनेका शब्द।

भदभदाना० स० क्रि० मारने से जो शब्द निकलता है, वारंवार मारना।

भदभदाहट० ना० स्त्री० भदभद।

भदाक० ना० पु० धड़ाक, फटाक।

भदाका० ना० पु० धड़ाका शब्द।

भदेस०
भदेसल० } गु० जो अच्छा नहो कुडौल, भोंडा, अनाड़ी रामायणे यथा, भणित भदेसवस्तु भलिवरणी।

भद्दा० गु० निर्बुद्धि, उल्लू, भोंडा।

भद्र० ना० पु० मागमानी, मूँछ रहित शिरक

मणिकर्णिका० ना० स्त्री० काशीजी में स्थान विशेष जहां देवीजी के कान की मणि गिरीथी।
मणिका० ना० स्त्री० छोटी मणि, गुरिया।
मणिपूर० ना० पु० चक्र विशेष, देश विशेष, जो बंगाल देश के पूर्व में है।
मणियां० ना० पु० मालाकी गुरिया वा दाना।
मणियार० ना० पु० सर्प विशेष जिसके मणि होती है, जाति विशेष जो चूड़ी बनाता है।
मण्ड० ना० पु० जूस, माड़, पोच वा खाता जिसमें शीरा भराजाता है।
मण्डन० ना० पु० भूषण विशेष, मिलान।
मण्डप० ना० पु० तृणादि से रचित देवताकाघर, मढ़ा, मड़वा।
मण्डल० ना० पु० स्थान, देश, गोला, कुंडल, आकाश, तल।
मण्डला० ना० स्त्री० घीकुवार।
मण्डलाकार०, गु० गोलाकार।
मण्डलाग्र० ना० पु० खड्ग, तलवार।
मण्डलाना० अ० क्रि० फिरना, उड़ना, यथा, पक्षी उड़ते हैं।
मण्डलिया० ना० पु० कपोत विशेष।
मण्डली० ना० स्त्री० समूह, सभा, बैठक, घर।
मण्डलीक० ना० पु० राजा, महन्त, चौधरी।
मण्डलेश्वर० ना० पु० राजा, मंडलपति।
मण्डवा० ना० पु० कुञ्ज ना० स्त्री० मंडवी।
मण्डवी० ना० स्त्री० अन्न विशेष।
मण्डा० ना० पु० पेड़ा विशेष।
मंडित० गु० जड़ित, शोभित, भूषित, मढ़ा हुआ।
मण्डियाना० अ० क्रि० कलफदेना वा लगाना।
मण्डी० ना० स्त्री० हाट, गोला, गंज।
मण्डूक० ना० पु० मेंढक, भेक।
मण्ढना० स० क्रि० मढ़ना।
मत० ना० पु० धर्म दीन, सलाह, सम्मत, रीति, ढब, डौल, पन्थ अभिप्राय, बुद्धि, अव्य० निषेधार्थ अर्थात् नहीं, जनि।
मतंग० ना० पु० हाथी, मुनि विशेष।
मतना० ना० पु० ऊख विशेष।
मतभेद० ना० पु० मतान्तर, अभिप्राय का भेद।
मतराना० स० क्रि० मनाना।
मतलाना० अ० क्रि० जी घिनाना, उबकना।
मतवाला० गु० मत्त, मदमाता।
मतहीन० गु० मतरहित, बुद्धि रहित।
मता० ना० पु० उपदेश, सलाह, परामर्श।
मतानुसार० ना० पु० अभिप्राय के अनुकूल, मजहब के मुवाफ़िक
मतान्तर० ना० [illegible] दूसरा धर्म।
मतान्तराचार० ना० पु० द्वितीय धर्म का व्यवहार।
मतावलम्बी० ना० पु० मताश्रयी, पन्थी।
मताश्रयी० ना० पु० मत के आश्रित, मतके आधीन, पन्थी।
मति० ना० स्त्री० बुद्धि, सम्मति, रीति, राय।
मतिमान्० } गु० बुद्धिमान्।
मती० }
मतीर० ना० पु० तरबूज़, हिन्दुवाना, समराङ्गिकाणां यथा, मरुधर पाइ मतीर ही मानक है पयोधि।
मतो० ना० पु० मत, सम्मत।
मत्त० गु० मधुमाता, मस्त, मतवालाहाथी।
मत्तवत्० गु० मधुमाता, मधुमाते के समान।
मत्सर० ना० पु० डाह, जलन, ईर्षा, गु० जलनी।
मत्स्य० ना० पु० मछली, देश विशेष।
मत्स्यघ्नी० } ना० स्त्री० बाड़िश, जिससे
मत्स्यवेधन० } मछली मारते हैं।
मत्स्यपित्ता० ना० स्त्री० कुटकी।
मत्स्याक्षी० ना० स्त्री० ब्राह्मी, श्वेतदूब।
मथन० ना० पु० बिलोवन, मंथोवन, हुड़ाव।

पुरहन, कल्याण, भद्रती, नवखण्डों में से एक का नाम गु० भला, श्रेष्ठ, भाग्यवान् ।
भद्रक० ना० स्त्री० प्राप्त, लाभ, स्वभाव, सुन्दरता, भलाई ।
भद्रकाली० ना० स्त्री० दुर्गादेवी ।
भद्रकाष्ठ० ना० पु० देवदारु ।
भद्रचन्दन० ना० पु० जवासा ।
भद्रजयव० ना० पु० इन्द्रजौ ।
भद्रपर्णिका० ना० स्त्री० कम्भारी, गन्धपसार ।
भद्रपर्णी० ना० स्त्री० गन्धपसारन ।
भद्रमस्त० ना० पु० नागरमोथा ।
भद्रवती० ना० स्त्री० कायफल ।
भद्रवृक्ष० ना० पु० गोखुरू ।
भद्रश्रिय० ना० पु० चन्दन ।
भद्रहोना० अ० क्रि० मूंछसहित शिरमुड़ाना ।
भद्रा० ना० स्त्री० असाकुन समय, पक्षकी दूसरी सातवीं बारहवीं तिथि, कम्भारी, गन्धपसारन, कुपश्ची, कल्याणकारिणी, ना० पु० पक्षी विशेष ।
भद्राक्ष० ना० पु० कृत्रिमरुद्राक्ष ।
भद्रिका० ना० स्त्री० दशाविशेष, कल्याणी ।
भद्री० ना० पु० डकौत, सामुद्रिकी, कायफल ।
भद्रोदनी० ना० स्त्री० खिरहटी ।
भबकना० अ० क्रि० क्रोधित होके दौड़ना, आग लगना, लोटे आदि से पानी गिरने का शब्द ।
भबका० ना० पु० बड़े मुखका पात्र विशेष ।
भबकाना० स० क्रि० सुलगाना, जलाना, उकसाना, लिगाना, एड़गारना ।
भबकी० ना० स्त्री० धमकी ।
भभड़० ना० पु० डर, खटका, भभरा ।
भभक० ना० स्त्री० अचानक जो आंच आदि की कुबास आजावे ।
भभकना० अ० क्रि० सनसनाना, बुलबुला उठना, खलबलाना ।
भभर० ना० पु० डर, खटक ।
भभराना० अ० क्रि० खटका होना, सूजना ।
भभरि० क्रि० डरकर, घबड़ाकर ।
भभूका० ना० पु० ज्योति, आंच, एकाएक आग जलउठना, गु० लाल, सुन्दर, भड़कीला ।
भभूत० ना० स्त्री० भस्म, विभूति ।
भय० ना० पु० डर, शङ्का, खौफ ।
भयकार०, भयंकर० } गु० भयानक, डरौनी मूर्ति ।
भयचक० गु० भयकरके जो व्याकुल हो ।
भयद०, भयदायक० } गु० भयानक, भयंकर ।
भयभीत० गु० शंकित, डराक, डराहुआ ।
भयमान० गु० डरपोक, शंकित ।
भया० ना० पु० भाई, क्रि० हुआ ।
भयातुर० गु० भयचक, भयमस्त ।
भयानक० गु० भयंकर, जिसको देखकर डर लगे, डरौना, रस विशेष ।
भयापा० ना० पु० अपनाइत, भाईपन ।
भयावना०, भयावहा० } गु० भयंकर, भयानक ।
भर० गु० पूर्ण, पूरा, सब ।
भरका० ना० पु० जब बरीपर पानी दिया उस का नाम ।
भरकाना० स० क्रि० बरीपर पानी डालना ।
भरण० ना० पु० पोषण, पालन, धारण ।
भरणी० ना० स्त्री० दूसरा नक्षत्र, सांपभक्षक, जीव विशेष ।
भरत० ना० पु० अनेक धातु का मेल, राजा विशेष, जिसके नाम से हिन्दुस्तान भरतखण्ड प्रसिद्ध है, रामचन्द्रजी के भाई ।
भरतखण्ड० ना० पु० हिन्दुस्तान ।
भरतपुर० ना० पु० शूरसेन देशका एक नगर विशेष ।
भरद्वाज० ना० पु० मुनि विशेष, खंजनपक्षी
भरद्वाजसुत० ना० पु० द्रोणाचार्य ।
भरन० अव्य० तक, तलक ।

मथना० स० क्रि० : महना, बिलोवना, मथोना,
  ना० पु० मथनी, पात्र विशेष।
मथनियां० ना० स्त्री० मथानी।
मथनी० ना० स्त्री० बिलोनी, महानी, दुई।
मथा० ना० पु० माथा, गु० मथाहुया।
मथानी० ना० स्त्री० दूधहांडी, मटकी, चाटी।
मथित० गु० छांछ, मट्ठा जो मथा गया।
मथुरा० ना० पु० नगर विशेष, जहां श्रीकृष्ण-
  चन्द्र जन्मे थे।
मथुरिया० ना० पु० मथुराके ब्राह्मण।
मथुरनी० ना० स्त्री० मथुरिया की जोरू।
मथोष्ट० ना० पु० चन्दा, बिट्टरी, बात्र।
मथौरा० ना० पु० सूर्यमुखी, धाता, धतुरी।
मद० ना० पु० गर्व, अहंकार, कस्तूरी, मादक
  वस्तु, मदिरा आदि।
मदकल० ना० पु० हाथी।
मदकारिणी० ना० स्त्री० सुराखानी अजवाइने।
मदन० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष, मैनफल,
  कामदेव, प्रद्युम्नजी, दौना।
मदनांकुश० ना० पु० लिंग।
मदनाह्वा० ना० स्त्री० सिरहटी।
मदनारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
मदमाता० ना० पु० } गु० मतवाला, मत-
मदमाती० ना० स्त्री० } वाली।
मदमाल० ना० पु० बिछुआ, पादांगद।
मदयन्तिका० ना० स्त्री० मालती।
मदान्ध० गु० अभिमानी, मदिरा में गलित।
मदार० ना० पु० आक, अर्क।
मदारिया० ना० पु० मदारका फूल।
मदारी० ना० पु० संपेरा, नटखर, सांपवाला।
मदिक० गु० अहंकारी, मदान्ध।
मदिरा० ना० स्त्री० शराब, दारू, ना० पु०
  छन्द।
मदोत्कट० ना० पु० कपोत, कबूतर।
मदोत्कल० ना० पु० हाथी।
मद्गुर० ना० पु० मोगरा, मत्स्य विशेष, मुदगर।
मद्य० ना० स्त्री० सुरा, मदिरा, शराब।
मद्यगन्धा० ना० स्त्री० मौलसिरी।
मद्यप० ना० पु० अधिक मदिरा पीनेवाला।
मद्या० ना० स्त्री० बकरी।
मधुमाता० गु० मतवाला।
मधुचोपित० ना० पु० कंकोल, मिरच।
मधु० ना० पु० मदिरा, पुष्प का रस, शहद,
  पानी, चैत्रमास, वसंतऋतु, वृक्ष, दूध, अमृत,
  दैत्य विशेष।
मधुक० ना० पु० महुआ वृक्ष।
मधुकर० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
मधुकरी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी, रोटीविशेष।
मधुकर्कटिका० ना० स्त्री० मधुकर्कटी।
मधुकोष० ना० पु० मधुमाखी का छत्ता।
मधुकोष० ना० पु० महुआ वृक्ष।
मधुग० ना० पु० महुआ भेद।
मधुतृण० ना० पु० ऊख, गन्ना।
मधुदूतिका० ना० स्त्री० कोयल।
मधुद्रुम० ना० पु० मधूकवृक्ष, चैत्रके वृक्ष।
मधुप० ना० पु० भौंरा, भ्रमर।
मधुपर्क० ना० पु० पूजाकी सामग्री, मधु और
  दही आदि मिलाकर खाना।
मधुपर्णी० ना० स्त्री० दूधिया, पौधा।
मधुपर्श० ना० पु० पका रसीला फल।
मधुपुर० ना० पु० } मथुराजी।
मधुपुरी० ना० स्त्री० }
मधुफल० ना० पु० अंगूर, दाख।
मधुमल० ना० पु० मोम।
मधुमक्खी० ना० स्त्री० शहदकी मक्खी, ममाखी।
मधुमाल० ना० पु० रागिनी विशेष।
मधुमास० ना० पु० चैत्रमास।
मधुयष्टी० ना० स्त्री० मुलहठी।
मधुयोनि० ना० पु० अंगूर, दाख।
मधुर० गु० मीठा, स्वादता, सुन्दर, अच्छा।
मधुरमल० ना० पु० मोम।
मधुरसा० ना० स्त्री० मुरहरी, अंगूर, दाख।

भिगाना० } भिगोना० } भिजाना० } स० क्रि० गीला या ओदा करना।

भिटनी० ना० स्त्री० कुच के ऊपर नोक फुनगी।

भिड़ना० अ० क्रि० मिलना, सटना, लड़ना।

भिड़ाना० स० क्रि० भिलाना, सटना, लड़ाना।

भिण्डपाल० ना० पु० गोफना, धनवासी, जिस में ढेला रखकर घुमाय के चलाते हैं।

भिण्डी० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।

भित्ती० ना० स्त्री० भीत, दीवार।

भिनकना० } भिनभिनाना० } स० क्रि० मक्खी उड़नेसे जो शब्द निकले।

भिनसार० ना० पु० तड़का।

भिन्न० गु० पृथक् अलग, कसर।

भिन्नता० ना० स्त्री० अलगाहट।

भिन्नाना० अ० क्रि० शिरघूमजाना, चकराना।

भिन्सार० ना० पु० भोर, प्रात, तड़का, सबेरा।

भिरना० अ० क्रि० भिड़ना।

भिरत० ना० स्त्री० घरट, लड़ाई।

भिलावाँ० ना० पु० वृक्ष या उसका फलविशेष, जो देहमें लगने से छाला पड़आता है।

भिलौंजी० ना० स्त्री० भिलावांका बीज।

भिषक्० } भिषज० } ना० पु० वैद्य, हकीम, तबीब।

भिक्षा० ना० स्त्री० भीख, खैरात।

भिक्षाटन० ना० पु० भीखमांगना वा भीख मांगने के लिये फिरना।

भिक्षु० ना० पु० दण्डी, संन्यासी, म्योंड़ी पौधा।

भिक्षुक० ना० पु० भिखारी।

भी० अव्य० च, हं और।

भीख० ना० स्त्री० भिक्षा, मँगनई।

भीगना० } भीजना० } अ० क्रि० गीला वा ओदाहोना, दुःखी होना।

भीजा० गु० गीला, भीगा भया।

भीठ० ना० स्त्री० ऊंची धरती, वा जिस स्थान में पान उत्पन्न होते हैं।

भीड़० ना० स्त्री० मण्डली, ठठ, बहुतात, क्लेश।

भीड़ा० ना० पु० संकीर्ण।

भीत० गु० डरा, भययुक्त, ना० स्त्री० दीवार।

भीतर० अव्य० अन्तर, बीचमें।

भीतरिया० ना० पु० भीतर रहनेवाला या जो मनुष्य देवालयका प्रधानता से कामकरताहै अर्थात् भण्डारी, रसोइया, पुजारी।

भीतरी० ना० पु० भीतरिया, गु० भीतर का।

भीति० ना० स्त्री० भय, शंका, दीवार।

भीम० ना० पु० भय, अमलवेत वृक्ष, युधिष्ठिर का भाई, गु० भयानक, भयंकर।

भीमसेन० ना० पु० पांडुका दूसरा पुत्र।

भीमसेनी० ना० पु० कपूरविशेष।

भीर० ना० स्त्री० भीड़।

भीरु० } भीरुक० } गु० कायर, डरपोक।

भील० ना० पु० जातिविशेष।

भीलन० } भीलिन० } ना० स्त्री० भीलकी जोरू।

भीलुक० गु० भीरुक।

भीषण० ना० पु० भय, गु० भयानक, भयंकर।

भीष्म० ना० पु० शिवजी, कौरवों का दादा।

भीष्माष्टमी० ना० स्त्री० माघकी शुक्लाष्टमी।

भुहार० } भुआल० } ना० पु० राजा।

भुक्० गु० भोक्ता, भोगी, खानेहारा।

भुक्त० गु० जो भोजन किया गया है।

भुक्ति० ना० स्त्री० भोगवस्तु, भोजनादि।

भुगतना० अ० क्रि० सुख या दुःखको भोगना, पुण्य वा पाप का उठाना, व्यतीतहोना।

भुगतमान्० गु० जो भुगतने के योग्यहै।

भुगताना० स० क्रि० भोगकराना, निपटाना।

भुग्गा० गु० सीधा, भोला।

भुच० अनगढ़, मूर्ख, जो छीला नहीं गया।

मधुरा० ना० स्त्री० काकोली।
मधुरी० गु० स्त्री० मीठी, रसीली।
मधुरान्न० ना० पु० मीठा भोजन यथा रसावर।
मधुलिड्० } ना० पु० भौंरा, भ्रमर।
मधुलिह्० }
मधुवन० ना० पु० मथुरा नगर।
मधुव्रत० ना० पु० मधुकर, भौंरा, भ्रमर।
मधुशिग्रु० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।
मधुश्रवा० ना० स्त्री० गुड़हर, संजीवन बूटी।
मधुष्ठीली० ना० पु० महुआ वृक्ष।
मधुष्ठीव० ना० पु० गुड़हर।
मधुसूदन० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
मधूक० ना० पु० महुआ वृक्ष।
मधुकरी० ना० स्त्री० पकाये अन्नकी भिक्षा जो अतिथि को देते हैं, भौंरी, रोटी।
मधूनका० ना० स्त्री० मुलहठी।
मधूप० ना० पु० गुड़हर।
मधोर्दन्ती० ना० स्त्री० कुम्भी तालाव की।
मध्य० अव्य० अन्तराल, बीच, विषय।
मध्यदिवस० ना० पु० दुपहर।
मध्यदेश० ना० पु० पुरुष वानर, बीच का देश, अर्थात् हिमालय और विंध्य और प्रयाग और कुरुक्षेत्र के मध्यका देश, अवध आदि।
मध्यभाग० ना० पु० मध्यस्थान।
मध्यम० गु० न भला, न बुरा, समासम, धीरे, न्यूनाधिक रहित, रागका स्वर विशेष।
मध्यमपुरुष० ना० पु० मध्यभागीनर, सामने वाला, मुखातिब, हाजिर।
मध्यमा० ना० स्त्री० अनामिका और तर्जनी के बीचकी अंगुली।
मध्यलोक० ना० पु० मनुष्यलोक।
मध्यवर्ती० } ना० पु० बिचवैया, बिचवई,
मध्यस्थ० } समानवर्ती।
मध्यस्थल० } ना० पु० कटि, कमर, बीचका
मध्यस्थान० } स्थान।
मध्याह्न० ना० पु० ठीकदोपहर, दिनका बीच।

मध्वा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।
मन० ना० पु० चित्त, हृदय, आत्मा, ४० सेरका।
मनकामना० ना० स्त्री० मनोयोग।
मनघटा० ना० पु० कुवांकी जगत।
मनचला० गु० चरफरा, अगमना, सूरमा।
मनजात० ना० पु० कामदेव।
मनत० ना० स्त्री० मनौता, स्वीकार।
मनन० ना० पु० चिन्तन, मनसूबा।
मनभावन० } गु० ग्राह्य, भला, चाहता।
मनभावना० }
मनमत्त० ना० पु० कामदेव।
मनमारना० स० क्रि० अपनी इच्छाको रोकना।
मनमोहन० ना० पु० सज्जन, प्यारा, श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम जो मनको मोहलेवे।
मनस्विनी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री।
मनसा० ना० स्त्री० इच्छा, अर्थ विचार, इरादह।
मनसिज० ना० पु० कामदेव।
मनसी० गु० स्त्री० संकल्पकी, देनेकी इच्छाकी।
मनसेधू० ना० पु० मनुष्य।
मनस्ताप० ना० पु० मनकी पीड़ा।
मनहु० अव्य० मानो, जानो।
मनहारी० गु० मन का हरण करनेहारा।
मनाना० स० क्रि० अंगीकार करवाना, श्राकर लेना, बहलाना, मनको थांभना, कृपालिकरना।
मनावना० स० क्रि० मनाना।
मनि० ना० स्त्री० मणि।
मनिका० ना० स्त्री० मणिका, दाना, गुरिया।
मनिहार० ना० पु० चूड़ीवाला, जाति विशेष।
मनिहारी० ना० स्त्री० चूड़ी बेचनेवाली।
मनीषा० ना० स्त्री० बुद्धि।
मनीषी० ना० गु० बुद्धिमान्, चतुर।
मनु० ना० पु० स्वायंभुव आदि १४ जो प्रत्येक कल्प में होते हैं, स्वायंभुवमनु विरचित स्मृति, ब्रह्मा, ब्रह्मा का पुत्र, प्रथम मनुष्य।
मनुआ० ना० पु० मन, बिलार, ना० स्त्री० रुई विशेष।

भुकम्पा० ना० पु० वृक्ष विशेष।
भुज० ना० स्त्री० बाहु, दण्ड, मेंड, भोजपत्र।
भुजग० ना० पु० सांप।
भुजंग०, भुजंगम० } ना० पु० कालासर्प विशेष, गु० काला।
भुजंगपर्णिनी० ना० स्त्री० नागदौन।
भुजंगिनि० ना० स्त्री० सर्पिणी।
भुजा० ना० स्त्री० भुज, बाहु।
भुजाभूषण० ना० पु० बाजूबन्द।
भुजाली० ना० स्त्री० तलवार विशेष, बाजूबन्द।
भुजिया० ना० स्त्री० भांजी।
भुट्टा० ना० पु० बाली ज्वारकी, बड़ी ज्वार।
भुण्डली० ना० पु० कीड़ा विशेष।
भुतना० ना० पु० छोटा भूत, भोकस।
भुतनी० ना० स्त्री० भुतने की स्त्री।
भुतवा० ना० पु० भुतना।
भुताहा० गु० जो भूतके समानहै।
भुतियाना० अ० क्रि० भुताहा होना।
भुनि० अव्य० मानो, गोया, सी।
भुना० अ० क्रि० कहलना, भुजना, पकना।
भुरभुरा० गु० सूखी बुकनी।
भुरभुराना० स० क्रि० लोन आदि खाने की वस्तु पर छिड़कना, बुरकाना।
भुलसना० अ० क्रि० भुलसना, जलजाना।
भुलाना० स० क्रि० भूलकराना, फुसलाना, बहकाना।
भुलावा० ना० पु० धोखा, ठगपन।
भुव० ना० पु० स्वर्ग, आकाश, अम्बर, धरती।
भुवंग०, भुवंगम० } ना० पु० भुजंग, सांप।
भुवन० ना० पु० जगत्, संसार, लोक, मन्दिर, आकाश, पानी, भाग, १४ लोक।
भुवाल०, भुवालु० } ना० पु० राजाधिराज, बादशाह, राजा, भूमिपाल।
भुस० ना० पु० चोकर।
भुशुण्ड० ना० पु० माथा, शिर, टांट।
भुशुण्डी० ना० स्त्री० तोप, बन्दूक रामायण विशेष।
भुसूंडा० ना० पु० भुशुण्ड, कमल की जड़।
भुसेरा० ना० पु०, भुसैला० ना० पु०, भुसौरा० ना० पु०, भुसौरी० ना० स्त्री० } स्थान विशेष जिस में भूसा रखते हैं।
भू० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
भूईडोल० ना० पु० भूकम्प, हालाचाला।
भूं०, भूइ० } ना० स्त्री० भूमि।
भूंजा० ना० पु० भड़भूंजा।
भूंसना० अ० क्रि० हाँ हाँ करना।
भूकम्प० ना० पु० भौंचाल, हालाडोला।
भूख० ना० स्त्री० क्षुधा।
भूखा० गु० क्षुधित।
भूगोल० ना० पु० धरामण्डल।
भूचर० ना० पु० पृथ्वीपर चलनेहारे जन्तु।
भूजन० ना० पु० पृथ्वीपर के मनुष्य, भोगना।
भूड़० ना० स्त्री० रेतली धरती।
भूत० ना० पु० अतीतकाल, पृथिव्यादि पंचतत्त्व अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, नभ, और प्रेतविशेष, जीव।
भूतघ्नी० ना० स्त्री० तुलसी
भूततया० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
भूतनाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
भूतनाशन० ना० पु० हींग।
भूतनी० ना० स्त्री० प्रेतनी।
भूतंदुला० ना० स्त्री० विडंग।
भूतपति० ना० पु० भूतनाथ, शिवजी, भैरव।
भूतभक्षी० ना० पु० समुद्रलोन।
भूतल० ना० पु० पृथ्वी, धरातल।
भूतवास० ना० पु० बहेड़ा।
भूतवृक्ष० ना० पु० स्योना।
भूति० ना० स्त्री० विभूति, सम्पदा, राख, मुक्ति।

मनुज० ना० पु० मनुष्य, आदमी।
मनुजाद० ना० पु० असुर, दैत्य, राक्षस।
मनुष्य० ना० पु० मानव, मर्त्य, आदमी।
मनुष्यता० स्त्री० } मनुसाई, पुरुषार्थ, भल-
मनुष्यत्व० पु० } मनसात।
मनुसाई० ना० स्त्री० पुरुषार्थ, मनुष्यता, भल-मनसी।
मनुहार० ना० स्त्री० मोहनी, सुन्दरी।
मनो० अव्य० मानो, जानो।
मनोगुप्ता० ना० स्त्री० मनसिल।
मनोज० ना० पु० कामदेव।
मनोभव० ना० पु० कामदेव।
मनोयोग० ना० पु० मनका योग।
मनोरथ० ना० पु० इच्छा, कामना, वासना, मतलब।
मनोरम० ना० पु० गु० मनोज्ञ, सुन्दर, कुन्द।
मनोहर० गु० मनका हरनेहारा, मनोज्ञ।
मनोज्ञ० गु० सुन्दर, स्वरूप, चाहता, मनभावित, मनको जाननेहारा।
मनौती० ना० स्त्री० कामिनी ना० पु० विचवई और मध्यस्थ।
मन्त्र० ना० पु० टोटका, वशीकरणी, लटका, एकान्त या गुप्त उपदेश, सम्मति, सलाह।
मन्त्रणा० ना० स्त्री० परामर्श, विचार, उपदेश।
मन्त्रराज० ना० पु० तारकादि मन्त्र।
मन्त्री० ना० पु० जिसके साथ परामर्श की जावे, वजीर, सम्मति, सलाही, गु० मन्त्रजाननेहारा।
मन्थन० ना० पु० मथन।
मन्थरा० ना० स्त्री० केकयी की दासी विशेष।
मन्थित० गु० छाछ, मट्ठा, मथित।
मन्थी० ना० पु० चन्द्रमा, कामदेव, नाका, स्व-र्भानु अर्थात् राहु, शनैश्चर।
मन्द० गु० अल्प, थोड़ा, शिथिल, बुरा, दुष्ट, नीच, अभागी, धीरा, मलीन, ना० पु० पाप, शनैश्चर, अज्ञान।
मन्दतर० गु० अतिमन्द, अतिनीच।
मन्दर० ना० पु० पर्वत विशेष।
मन्दरा० ना० पु० गुचगीना, गु० नाटा, ठिगना।
मन्दराचल० ना० पु० मन्दर।
मन्दराज० ना० पु० समुद्र के तट पर नगर विशेष।
मन्दा० गु० धीरा, कोमल, नम्र, सस्ता, हलका।
मन्दाकिनी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी, स्वर्गीय।
मन्दार० ना० पु० कमल, मदार, कल्पवृक्ष।
मन्दिर० ना० पु० घर, देवालय।
मन्दिरा० ना० पु० मजीरा।
मन्दोदरी० ना० स्त्री० रावण की स्त्री, पांचवीं कन्या।
मन्मथ० ना० पु० कामदेव।
मन्वन्तर० ना० पु० एक मनुका राज्य, अर्थात् इकहत्तरि युगका परिमाण वा दो मनुओं के मध्य का काल।
मपान० ना० पु० नाप, परिमाण।
मपाना० स० क्रि० माप करवाना, नपाना।
मफेनक० ना० पु० अफयून, अफीम।
मम० सर्व० मेरा, मैं, ना० स्त्री० ममता, ईर्षा।
ममता० स्त्री० } घमण्ड, दम्भ, मनमौज, माया,
ममत्व० पु० } मोह, दया, प्यार।
ममाखी० ना० स्त्री० मधुमक्खी।
ममियासास० ना० स्त्री० पति वा पत्नी की ममानी।
ममियाससुर० ना० पु० पति वा पत्नी का मामू।
ममेरा० गु० मामूका० यथा, मामूका पुत्र।
ममेराभाई० ना० पु० मामूका पुत्र।
ममेश० ना० पु० मेराईश्वर, मेरास्वामी।
मय० ना० पु० कार्य, प्रधान, रूप, दैत्य विशेष, मदिरा गु० बहुत।
मयकूल० ० ना० पु० पर्वत विशेष।

भूतिक० ना० पु० कपूर।
भूतेश० ना० पु० भूतनाथ।
भूदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
भूधर ना० पु० पर्वत, राजा, हाथी, मेघ, सांप, शेष, गौ, सूर्य, कच्छप।
भूधात्री० ना० पु० भूआंवला।
भूनना० स० क्रि० पकाना, कहलाना, तलना।
भूनिम्ब० ना० पु० चिरायता।
भूप० } ना० पु० राजा, महीपति।
भूपति० }
भूपपद० ना० पु० राज्य, बादशाहत।
भूपाल० ना० पु० भूपति, राजा, महीपति।
भूमल० ना० पु० गरम राख।
भूभृत्० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
भूमण्डली० ना० स्त्री० विल्व, धरामंडल।
भूमध्यस्थ० ना० पु० जो समुद्र यूरुप और अफ्रिकाके मध्यवर्ती है।
भूमि० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन।
भूमिका० ना० स्त्री० दीबाचह, सारांश।
भूमिज० ना० पु० मंगल, भौमासुर, उद्भिज, लोन।
भूमिनाग० ना० पु० साधारण सांप।
भूमिपति० } ना० पु० राजा, महीपति।
भूमिपाल० }
भूमिया० ना० पु० भूमिका देवता।
भूमीश० ना० पु० भूपाल, राजा।
भूयः० अव्य० पुनः, फेर।
भूयोभूयः० अव्य० पुनः पुनः, फिर फिर।
भूर० } ना० स्त्री० दक्षिणा, बाड़ा, दान,
भूरसी० } भीख।
भूरा० गु० खरा, कपिल, पिंगल।
भूरि० गु० बहुत अधिक।
भूर्ज० ना० पु० भोजपत्र।
भूर्जतरु० ना० पु० भोजपत्र वा उसका वृक्ष।
भूर्जपत्र० ना० पु० भोजपत्र।
भूल० ना० स्त्री० विस्मरण, चूक, धोखा।
भूलना० अ० क्रि० बिसरना, चूकना, भटकना, खोजाना, खोपड़ाना।
भूलाबिसरा० } गु० जो भटकगया।
भूलाभटका० }
भूलोक० ना० पु० मनुष्यलोक।
भूषण० ना० पु० आभरण, गहना, शोभा।
भूषित० गु० अलंकृत, भूषणयुत, शोभित।
भूसा० ना० पु० गेहूं और जौ आदिका सूखा तृण।
भूसिता० ना० स्त्री० अकोल।
भूसी० ना० स्त्री० छिलका, धान आदिका चोकर चूरा।
भूसुता० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
भूसुर० ना० पु० ब्राह्मण।
भूस्वामी० ना० पु० भूपति।
भृकुटी० ना० स्त्री० भौंह, भ्रू, घुड़की।
भृगु० ना० पु० मुनिविशेष, ढालना।
भृगुनन्दन० }
भृगुनाथ० } ना० पु० परशुराम।
भृगुनायक० }
भृगुपति० }
भृगुबन्धु० ना० पु० कुन्दपुष्प।
भृगुमश्रा० ना० स्त्री० भारंगी औषधि।
भृंग० ना० पु० भ्रमर, भौंरा, कीटविशेष।
भृंगराज० ना० पु० झाड़ीविशेष, पक्षीविशेष, भँगरा, बूटी।
भृंगाह्व० ना० पु० भँगरा बूटी।
भृंगारि० ना० पु० झींगुर।
भृंगी० ना० स्त्री० कुम्हारी, कीट, कीड़ाविशेष जो झींगुरको लाकर निजरूप करताहै, शिवगण विशेष।
भृत्य० ना० पु० दास, सेवक, गुलाम।
भृत्यगण० ना० पु० सेवकों का समूह।
भृत्या० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
भेउ० ना० पु० प्रकार, स्वभाव, भेद, मर्म।
भेगा० गु० स्वर्गपातालो, डेरा।

मयंक० ना० पु० चन्द्रमा।
मयन० ना० पु० कामदेव।
मयना० ना० स्त्री० पार्वती की माता, मैना।
मयसुता० ना० स्त्री० मन्दोदरी।
मया० ना० स्त्री० माया, दया।
मयूर० ना० पु० मोर, पक्षी विशेष, हंस।
मयूरक० ना० पु० ऊंगा।
मयूरग्रीवक० ना० पु० नीलाथोथा, तूतिया।
मयूरचोख० ना० पु० स्योना।
मयूख० ना० पु० किरण।
मरक० ना० पु० सर्वव्यापक रोग महामारी।
मरकत० ना० पु० नीलम, नीलमणि, पन्ना।
मरकन्हा०
मरकहा० } गु० मारनेहारा।
मरगजी० ना० पु० मुरझाया हुआ मरगशब्द फ़ारसीका अर्थात् मौत और जो जीव अर्थात् मुआ जीव यह शब्द सतसई में है।
मरघट० ना० पु० मृतकों के जलाने का स्थान।
मरजाना० अ० क्रि० मरना।
मरजिया० ना० पु० समुद्र से मोती निकालने हारेका नाम।
मरण० ना० पु० प्राणवियोग, मृत्यु।
मरदनिया० ना० पु० मर्दनी।
मरना० अ० क्रि० प्राण निकलना।
मरपच० अ० गु० सरा, मन्दा, जीर्ण।
मरपचना० अ० क्रि० दुःख वा शोकका भोग करना, अत्यन्त उद्यम करना, बहुत परिश्रम अर्थात् मिहनत करना।
मरभूखा० गु० उपासा, लंघा, खाऊ, बड़पेटा।
मरमर० ना० पु० पाषाण विशेष, बिलोर।
मरमराना० स० क्रि० चरचराना, यथा नई जूती बोलती है।
मरवैया० ना० गु० मरनेहारा वा मारनेहारा, मृतक।
मरहट्टा० ना० पु० छन्द विशेष, जाति विशेष।
मरा० गु० मरगया, मृतक।
मराल० ना० पु० हंस, बतक।
मराली० ना० स्त्री० मराल की स्त्री, ग्राचाल।
मरिच० ना० स्त्री० मिरच, कालीमिरच।
मरीचि० ना० स्त्री० किरण, लहरी, ना० पु० मुनि विशेष।
मरीचिका० ना० स्त्री० मृगतृष्णा, शराब।
मरु० ना० पु० रेता, बालू।
मरुआ० ना० पु० पौधा विशेष, जिसमें सुगन्धि होती है।
मरुक० ना० पु० मरुआ।
मरुप्रिय० ना० पु० ऊंट।
मरुद्भवा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, जवासा।
मरुभूमि० ना० स्त्री० मारवाड़कीधरती, रेतली।
मरुख० ना० पु० मरुआ।
मरुत्० ना० पु० वायु, पवन।
मरोड़० ना० स्त्री० मरोड़।
मरोड़ना० स० क्रि० मड़ोड़ना।
मरोड़फली० ना० स्त्री० पौधाविशेष की फली।
मरोड़ा० ना० पु० मड़ोड़ा।
मरोड़ी० ना० स्त्री० मड़ोड़ी, ऐंठन, मुरही।
मरोर० ना० स्त्री० मरोड़।
मरोरना० स० क्रि० मरोड़ना।
मरोह० ना० स्त्री० छोह, प्यार, माया, मलम-नसीत।
मरोही० गु० छोही, मायावन्त, दयाशील।
मर्कट० ना० पु० वानर, कपि।
मर्कटी० ना० स्त्री० कौंचबीज, जाल, मकड़ी, वानरी, गणित मर्कटी जो पिंगल में है।
मर्त्य० ना० पु० मनुष्य।
मर्त्तलोक०
मर्त्यलोक० } ना० पु० मनुष्यलोक।
मर्दक० ना० पु० पवार पौधा, गु० मलने-हारा।
मर्दन० ना० पु० शरीर का मलना, रगड़ना, पिसौव, नाशन।
मर्दना० स० क्रि० मलना, नाशना, मिटाना।

भेट० ना० स्त्री० भेंट।
भेटना० स० क्रि० भेंटना।
भेक० ना० पु० मेढक, भेघा।
भेज० ना० स्त्री० लगान, धरतीका पठावन।
भेजना० स० क्रि० पठाना, पहुंचाना।
भेजा० ना० पु० गूदा मस्तकका, भीतरी मांस।
भेंट० ना० स्त्री० दर्शन, मुलाकात, सौगात, अर्पण, उपायन, उपहार, नजर।
भेटना० स० क्रि० मिलना, उपायन करना।
भेंटी० ना० स्त्री० } गोट, ठठा, भेंटना, मिलेया।
भेटू० ना० पु० }
भेड़० ना० स्त्री० मेढ़, मेषकी जाति विशेष।
भेड़ा० ना० पु० मेढ़ा।
भेड़िया० ना० पु० विक, हुण्डार।
भेड़ियाधसान० ना० पु० गचपच करके मरदनी।
भेड़ी० ना० स्त्री० भेड़ी, मेष।
भेद० ना० पु० भिन्नभाव, बीचविशेष, गुप्त बात, मर्म, छेद, अन्तर, फर्क, क़िस्म।
भेदक० गु० भेदकरानेहारा, पाषाणभेद।
भेदकिया० ना० पु० भेदलगानेहारा, खोजी।
भेदन० ना० पु० भेद करने का काम।
भेदिका० } ना० पु० भेदकरनेहारा, खोजी, जासूस, घातिया, मर्म जाननेहारा।
भेदिया० }
भेदी० }
भेदू० ना० पु० भेदरखनेहारा।
भेद्य० गु० भेदके योग्य।
भेना० ना० स्त्री० बहन।
भेर० } ना० स्त्री० बाजा विशेष, कर्नाय।
भेरि० }
भेरी० }
भेलाo ना० पु० भिलावां।
भेली० ना० स्त्री० गुड़का ढेला।
भेव० ना० पु० भाव, प्रकृति, स्वभाव, मर्म, भेद।
भेष० ना० पु० रूप, चाल, सूरत।
भेषज० ना० पु० औषधि, दवा।
भेषरज० ना० पु० भंगरा।
भैंस० ना० स्त्री० महिषी।
भैंसा० ना० पु० महिष, जामूरा।
भैंसिया० ना० स्त्री० छोटी भैंस।
भैंसियादाद० ना० पु० दाद रोग विशेष।
भैचक० गु० भयचक।
भैमी० ना० स्त्री० माघ शुक्ल एकादशी, दमयन्ती, नलकी स्त्री।
भैया० ना० पु० भाई।
भैरव० ना० पु० रागविशेष, शिवजी था उनका सहचर, घृणा, कराल।
भैरवी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, भैरवकी स्त्री, दुर्गा।
भैहू० } ना० स्त्री० छोटे भाई की स्त्री।
भैहा० }
भोंकना० स० क्रि० टोकना, हूलना।
भोंड़ा० गु० कुडौल, कुरूप।
भोंदू० गु० सीधा, भोला।
भोंप० ना० पु० नरसिंहा।
भोई० ना० पु० कहार, क्रि० भिगोई।
भोकस० ना० पु० ओझा, मन्त्री।
भोक्ता० गु० भोजन में जो निपुण, अच्छा खानेहारा।
भोग० ना० पु० सुख वा दुःखका उठाना, वा हर्ष, सुख, खाना, नैवेद्य, विहार, विलास। ... दुःखका उठाना हा पा।
भोगवती० ना० स्त्री० शेषका निवासस्थान।
भोगा० ना० पु० छल, ठगई, धोखा।
भोगी० गु० भोग करनेवाला, आनन्दी ना० पु० सांप।
भोग्य० गु० जो भोग करने के योग्य है।
भोज० ना० पु० ज्योनार, राजा विशेष, देशविशेष जो पटना और भागलपुर का प्रदेश है।
भोजन० ना० पु० आहार, खाना।

मर्दनच्छर्दन० ना० पु० मैनफल।
मर्दनी० गु० मलनेहारा।
मर्दित० गु० जो मलागया, मारागया।
मर्म० ना० पु० भेद, समाचार, ज्ञान, कोर, कठोर हृदयादि अंग।
मर्मर० ना० पु० एक पत्थर का नामहै यह शब्द फ़ारसी का है।
मर्मस्थान० ना० पु० शरीरके जिस स्थान का घाव संघातिक है, भेदका स्थान।
मर्मज्ञ० ना० पु० जो मर्म को जाने, ज्ञानी।
मर्मी० गु० भेदू, भेदज्ञाता, मर्मज्ञ।
मर्य्याद० ना० स्त्री० महत, पति, सन्मान,
मर्य्यादा० सीमा, हद, वादा, प्रमाण।
मल० ना० पु० मैल० विष्ठा, स्त्री की रज, पाप।
मलक० ना० पु० पानी, आँवला, जी घिनाना।
मलकना० अ० क्रि० कहारके समान चलना, जी घिनाना वा उबकाना।
मलंग० ना० पु० पक्षीविशेष।
मलंगी० ना० पु० लोन बनानेहारा।
मलत० ना० पु० रुपया या पैसा जो घिसगया हो, सिलपट।
मलथ० ना० स्त्री० फटुंबरि।
मलन० ना० पु० बाट, सोक, मलने का काम।
मलना० स० क्रि० मर्दना, घिसना, माँजना।
मलवा० ना० पु० कूड़ा, मैल, बर्तन विशेष।
मलमल० ना० पु० कपड़ा विशेष।
मलमास० ना० पु० लौंद, अधिमास।
मलमेट० ना० पु० उजाड़, सत्यानाश, होचुका जैसे संवाद।
मलय० ना० पु० पर्वतविशेष, जो दक्षिणमें है।
मलयज० ना० पु० चन्दन।
मलयगिरि० ना० पु० पर्वतविशेष, जहाँ चन्दन अधिकतासे उपजताहै।
मलया० ना० स्त्री० पद्माक, ना० पु० मलय।
मलयागिरि० ना० पु० चन्दन का रंग।
मलयुत० गु० मैला।
मलवाई० ना० स्त्री० मलवानेका पैसा वा काम।
मलविका० ना० स्त्री० कालानिशोत।
मलवैया० ना० पु० मलनेहारा।
मलाई० ना० स्त्री० साढ़ी, बालाई, मलने का काम वा पैसा।
मलान० ना० पु० दुःख, उदास, दुःखी।
मलाना० स० क्रि० मर्दन कराना, घिसाना, मिजाना।
मलार० ना० पु० रागविशेष।
मलिच्छ० गु० म्लेच्छ।
मलिन० गु० मलीन, मैला, उदास, ना० स्त्री० कालीमिरच।
मलिनता० ना० स्त्री० मालिन्य, अपवित्रता, मैलापन।
मलिनमुख० गु० उदास, कठोर, लिहाड़ा, दुष्ट।
मलिनी० ना० स्त्री० पुष्पवती, रजस्वला।
मलिन्द० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
मलिया० ना० स्त्री० काष्ठ वा नारियल वा मिट्टी का पात्र, जिसमें तेल रखते हैं, डुँबिया।
मली० गु० मैला।
मलीन० गु० मैला, अपवित्र, धूँधला, उदास, दुःखित, व्याकुल।
मलीनता० ना० स्त्री० मलिनता।
मलेपज० गु० घोड़ा जिसकी आयुदशवर्ष से अधिक हुई।
मलेच्छ० गु० म्लेच्छ।
मल्ल० ना० पु० भालू, जो बाहुयुद्ध में निपुण, योद्धा, पहलवान।
मल्लयुद्ध० ना० पु० बाहुयुद्ध, कुश्ती।
मल्लार० ना० पु० मलार।
मल्लिक० ना० पु० पर्वत विशेष।
मल्लिका० ना० स्त्री० मालती, चम्बेली, पुष्प विशेष।
मल्लूर० ना० पु० बेलु, बिल्व।
मवास० ना० पु० शरण पाला, आसरा।

भोजनचार० ना० पु० चारप्रकार का आहार अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य।
भोजपत्र० ना० पु० वृक्षविशेष की छाल।
भोजपुर० ना० पु० नगर विशेष।
भोज्य० ना० पु० जो खाने के योग्य है, सीधा।
भोट० ना० पु० भोट देशके वस्त्र, देश विशेष, जो तिब्बत का एक देश है।
भोटन्त० ना० पु० देश विशेष जो नैपाल के पूर्व है।
भोटिया० ना० पु० भोट देश के लोग।
भोड़र०
भोड़ल० } ना० पु० अभ्रक, अबरक।
भोता० गु० जो अस्त्र तेज नहीं है, मन्द।
भोपा० ना० गु० टोनहा, उल्लू, बाजा विशेष।
भोपाल० ना० पु० देश वा नगरविशेष।
भोर० ना० पु० प्रातःकाल, पौढ़।
भोरा० ना० पु० धोखा, गु० भोला, सीधा, दयालु।
भोरे० गु० धोखे, भूले, रामायणे यथा, का अति लाभ जीर्ण धनु तोरे। देखा राम नये के भोरे।
भोला० गु० छलहीन, सीधा, ना० पु० शिवजी।
भोलानाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
भोली० गु० स्त्री० सीधी।
भौं० ना० स्त्री० भृकुटी, भ्रू, भूमि।
भौंकना० अ० क्रि० हाँ हाँ करना, मूर्खता से बोलना, कुत्तेका शब्द।
भौंचाल० ना० पु० भूमिकम्प, हलाचाला।
भौंर० ना० पु० भँवर।
भौंरा० ना० पु० भ्रमर, अलि, षट्पद।
भौंरियाना० स० क्रि० फिराना, घुमाना।
भौंरी० ना० स्त्री० घोड़े के दोष विशेष, भौंरकी स्त्री, छोटी रोटी, फेरी।
भौंसना० अ० क्रि० भौंकना।
भौ० ना० पु० भय, डर।
भौचक० गु० भयचक।
भौजाई०
भौजी० } ना० स्त्री० बड़े भाई की स्त्री।
भौनास० ना० पु० बड़ा खूंटा जिसमें हाथी बांधते हैं।
भौतिक० गु० जो भूत करके हाव, शरीरार्थ।
भौतिकदेह० ना० स्त्री० पञ्चतत्त्वकृतशरीर।
भौम० ना० पु० मंगल, उद्भिज, लोन, भौमासुर।
भौमवार० ना० पु० मंगलवार।
भौमासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको नरकासुर भी कहते हैं।
भ्रंस० ना० पु० ध्वंस।
भ्रम० ना० पु० भूल, चूक, सन्देह, संशय।
भ्रमण० ना० पु० पर्यटन, भांवर, फिरना।
भ्रमणा० ना० स्त्री० भ्रम, भूल, सन्देह, फिरना।
भ्रमभीर० ना० पु० भूलका समूह वा बोझ।
भ्रमर० ना० पु० भौंरा, अलि।
भ्रमरी० ना० स्त्री० भ्रमरकी स्त्री, भौंरी।
भ्रमरका० ना० स्त्री० बावरी, जुल्फ।
भ्रष्ट० गु० पतित, स्वधर्म्महीन, छुटखेला।
भ्रष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।
भ्रष्टाचार० ना० पु० अधर्म, स्वधर्म्महीन, सर्व्वभक्षी।
भ्राजमान० गु० शोभित, सुशोभित, जेबा।
भ्राता० ना० पु० भाई।
भ्रातृज० ना० पु० भतीजा, भाईका लड़का।
भ्रान्त० गु० जो घुमायागया।
भ्रान्ति० ना० स्त्री० भूल, चूक, भ्रम, मतिभ्रम।
भ्रामक० गु० भ्रमदाता, ठग, धोखा देनेवाला।
भ्रुव०
भ्रू० } ना० स्त्री० भौंह, पंक्ति, घुड़कना।

मशक० नाo पुo ममक, चमड़ारूपी जलपात्र।
मशहरी० नाo स्त्रीo मच्छड़ों के निवारणार्थ जो आवरण पलंग के ऊपर रहताहै।
मसृणा० नाo स्त्रीo अलसी।
मषी० नाo स्त्रीo स्याही, रोशनाई।
मष्ट० गुo चुप, मौन, नाo स्त्रीo मौनी।
मष्टता० नाo स्त्रीo चुपकी, मौनता।
मसक० नाo पुo मच्छड़, बिलार, मसा।
मसकना० अo क्रिo फटना, चिरना, चसना, पोलना।
मसकाना० सo क्रिo फाड़ना, चीरना, तोड़ना, घुलाना।
मसकी० नाo स्त्रीo दवाई, फटी, थोली।
मसमसाना० अo क्रिo किसू के डरसे मनकी बात छुपाना, गुनहोजाना।
मसलना० अo क्रिo कुचलना, मींजना और पीसना।
मसहरी० नाo स्त्रीo मशहरी।
मसा० नाo पुo मच्छड़, इसा, शरीर में काला ऊंचा चिह्न विशेष।
मसान० नाo पुo श्मशान, मरघट।
मसानिया० नाo पुo जो मृतक की वस्तु लेवे।
मसि० नाo स्त्रीo, स्याही, रोशनाई।
मसिपात्र० नाo पुo दवायत, दवात।
मसिबिन्दुक० नाo पुo अनखा, काजलका टीका जो स्त्रियां बालक के माथे में लगाती हैं।
मसी० नाo स्त्रीo मसि, रात, काली।
मसीन० } नाo पुo दलिद्दर।
मसीना० }
मसूड़ा० नाo पुo दांतों के ऊपर का मांस।
मसूर० नाo पुo अन्न विशेष।
मसूरविदला० नाo स्त्रीo कालानिसोत।
मसूरिका० नाo स्त्रीo माता विशेष, शीतला विशेष।
मसे० नाo पुo छोटी २ मूछें जो नई जवानी में निकलती हैं।
मसोसना० सo क्रिo मरोड़ना, निचोड़ना।
मसोसा० गुo मरोड़ा, निचोड़ा, नाo पुo दुःख, व्यथा, पछतावा।
मस्तक० नाo पुo माथा, शिर, खोपड़ी।
मस्तूल० नाo पुo खम्भ जो नाव के बीचमें पाल चढ़ाने के लिये गाड़ते हैं।
मस्या० नाo स्त्रीo कुटकी, कुटकी।
मस्याधार० नाo पुo दवायत, मसी रखने का पात्र।
मस्सा० नाo पुo मसा।
मह० अव्यo मध्य, में, बीच।
महंगा० गुo बड़ेमोलका, काल, दुर्भिक्ष।
महंगी० नाo स्त्रीo काल, दुर्भिक्ष, कहत।
महक० नाo स्त्रीo सुगन्धि, सुबास।
महकना० अo क्रिo सुबास निकलना वा उठना।
महकाना० सo क्रिo बासना, सोंधाना।
महकीला० गुo सुगन्धित, सोंधा।
महत्० गुo बड़ा, तेजस्वी, श्रेष्ठ, नाo स्त्रीo बड़ाई, मर्यादा, मान।
महता० नाo पुo महतो।
महति० नाo स्त्रीo बड़ी कटाई, गुo बड़ी।
महतिया० नाo पुo महतो।
महतो० } नाo पुo जो मनुष्य गांव में प्रधान
महतौ० } होता है, मुकद्दम, महतिया।
महत्फला० नाo स्त्रीo बड़ीतुरई।
महत्त्व० नाo पुo श्रेष्ठता, बड़ाई, बड़प्पन।
महद्भाग्य० नाo पुo बड़ाभाग्य।
महना० सo क्रिo मथना।
महन्त० नाo पुo सन्तों में जो प्रधान।
महन्ताई० नाo स्त्रीo महन्तका काम।
महर० नाo पुo प्रधान ना० उबरी, जोल, आदि का उपनाम।
महरा० नाo पुo कहार, भोई।

भ्रूणहत्या० ना० स्त्री० गर्भपातन वा विनाशन।
भ्रूभङ्ग० ना० पु० भ्रूविक्षेप, घुड़की।

[म]

मउआ० ना० पु० अश्व विशेष।
मकड़ा० ना० पु० कीट विशेष जो जाला बनाता है।
मकड़ना० अ० क्रि० टेढ़ाचलना, ऐंठराना।
मकड़ी० ना० स्त्री० छोटा मकड़ा, लूतक।
मकर० ना० पु० दशवीं राशि, मगर, मृग, मच्छ।
मकरध्वज० ना० पु० कामदेव, श्रीबलदेवजी, श्रीहनुमानजी का पुत्र।
मकरन्द० ना० पु० पुष्पका रस, कोकिला।
मकरन्दी० ना० पु० कमल।
मकराकृत० गु० मछली के डौल।
मकराक्ष० ना० पु० खरासुर का पुत्र।
मकरी० ना० स्त्री० मछली, मकर की स्त्री, मकड़ी।

मकुष्ठ०
मकुष्ठक० } ना० पु० मोठ अन्न।

मकोड़ा० ना० पु० बड़ा चूंटा।
मकोय० ना० पु० फल या पौधा वा झाड़ी विशेष।
मक्खन० ना० पु० नवनीत, माखन, नैनू, मसकह।
मक्खी० ना० स्त्री० माछी, बन्दूक का मासा।
मख० ना० पु० यज्ञ।
मखन० ना० पु० माखन।
मखना० ना० पु० हाथीविशेष जिसके दांत न हों, मुर्ग जिस के लाग न हों।
मखनिया० ना० पु० माखन बनानेहारा।
मखाना० ना० पु० पौधाविशेष।
मखी० ना० स्त्री० मक्खी।
मग० ना० पु० मार्ग, पन्थ, नष्ट, मगध देश।
मगध० ना० पु० देशविशेष, जिस में गयातीर्थ है वा पटनादि नगर हैं।
मगधभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषाविशेष जो ब्रह्मा और श्याम में प्रचलित है जिसको वहां पालिक कहते हैं।
मगण० ना० पु० गणविशेष जिस में तीन अक्षर दीर्घ होते हैं।
मगन० गु० मग्न।
मगनता० ना० स्त्री० मग्नता, प्रसन्नता।

मगर०
मगरमच्छ० } मकर, ग्राह, कुम्भीर।

मगरा० गु० ढीठ, घमण्डी, हठीला, मचला।

मगराई० ना० स्त्री० } ढिठाई, घमण्ड, मचलाहट।
मगरापन० पु०

मगरेला० ना० पु० कालेरंग का छोटा बीज विशेष।
मगसिर० ना० पु० मंगसिर, अगहन महीना।
मगही० गु० मगध देश की वस्तु।
मगहैया० ना० पु० मगध देश के वासी।
मगुरी० ना० स्त्री० मछलीविशेष।
मग्न० गु० डूबा, प्रसन्न, हर्षित, मुदित, गलित।
मग्नता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, हर्ष, मुद।
मघवा० ना० पु० इन्द्र।
मघवास्त्र० ना० पु० वज्र।
मघा० ना० स्त्री० दशवां नक्षत्र।
मघोनी० ना० स्त्री० इन्द्राणी।
मंका० ना० पु० जापी, माला, सुमिरन, गुरी।

मंगत०
मंगता० } ना० पु० भिखारी।

मंगन० ना० पु० भिक्षुक, भिखारी, कवि।
मंगनी० ना० स्त्री० सगाई, उधार।
मंगरा० गु० नलवान, ढीठ, मगरा।
मंगल० ना० पु० कुशल, आनन्द, तीसरा ग्रह, तातार देश के लोगों की तीनजाति में से एक और तीसरा वार, रागविशेष जो विवाहादि आनन्द में गायाजाता है।
मंगलछोटी० ना० स्त्री० चटाई विशेष।
मंगलघट० ना० पु० विवाहादि का कलश।

महारी० ना० स्त्री० कहरई, गोपों का राग विशेष।

महरि० ना० स्त्री०स्त्री०, पक्षीविशेष,महरकीस्त्री।

महर्लोक० ना०पु० स्वर्ग विशेष।

महर्षि० ना० पु० महाऋषि, महामुनि।

महा० गु० बड़ा, कुलीन, निपट, अति।

महाउन्नत० ना० पु० कदमवृक्ष, गु० महाऊंचा, महोन्नत।

महाकन्द० ना० पु० लहसुन।

महाकर्त्ता० गु० बड़ाकर्त्ता, निरीक्षकर्त्ता।

महाकाल० ना० पु० श्रीशिवजी का नाम, मूर्त्ति विशेष, जो उज्जैन में है।

महाकुम्भी० ना० पु० कायफल।

महाखात० ना०पु० समुद्रका जल जो चौड़े मुंह से खत में लगा है।

महाघो० ना० पु० करुशासिंही।

महाजन० ना० पु० उत्तमलोग, साहूकार, सेठ।

महाजनी० ना० स्त्री० महाजन का काम।

महाजम्बू० ना० पु० जामुन, फलेंद।

महाजाल० ना० पु० जालर।

महातम० ना० पु० माहात्म्य, बड़ाअंधकार।

महातरु० ना० पु० सेहुँड।

महातल० ना० पु० पातालविशेष।

महातीर्थ० ना० पु० श्रेष्ठतीर्थ।

महातुम्बी० ना० स्त्री० बड़ी लौकी।

महात्मा० गु० महाशय,श्रेष्ठशिष्ट।

महात्म्य० ना० पु० महात्म्य, यश, बड़ाई।

महात्यागी० गु० संसार को श्रेष्ठ जाननेहारा।

महादेव० ना० पु० देवदेव, श्रीशिवजी।

महाद्रुम० ना० पु० महुआ, ताड़वृक्ष।

महान्० गु० बहुतबड़ा।

महानन्दा० ना० स्त्री० जो श्रीगंगाजीमेंमिलीहै।

महानवमी ना० स्त्री० आश्विनशुक्लनवमी।

महानसा० ना० स्त्री० इन्द्रायणी।

महानिद्रा० ना० स्त्री० बड़ी नींद, मृत्यु।

महापद्मक० ना० पु० सर्प विशेष।

महापातक० ना० पु० ब्रह्महत्यादि, बड़ापाप।

महापातकी० गु० बड़ापापी, हत्यारा, जो ब्रह्महत्या या गोहत्या करे।

महापुरुष० ना० पु० साधु मनुष्य,सिद्धपरमात्मा, श्रीनारायण, बड़ी धतावर।

महाप्रतापी० गु० बड़ा तेजस्वी, ऐश्वर्यवान्।

महाप्रलय० ना० पु० जगत् का नाश जो प्रति कल्पान्त में होता है वा जिसमें ब्रह्मा सृष्टिसमेत नशाता है।

महाफल० ना० पु० नारियल।

महाफला० ना० स्त्री० लौकी, कुम्हड़ा।

महाबिल० ना० पु० आकाश।

महाभारत० ना० पु० कौरव और पाण्डव का युद्ध या उसके वृत्तान्त का एकपुराण।

महाभोगी० गु० बड़ा भोगी, निरिच्छाभोगी।

महामणि० ना० पु० जाहरमुहरा।

महामाया० ना० स्त्री० भगवती, जगज्जननी।

महामुण्डी० ना० स्त्री० पौधाविशेष।

महामेदा० ना० स्त्री० मेदा, औषधि।

महामोह० ना० पु० अत्यन्तअज्ञानता, बड़ीमोह।

महारजत० ना० पु० सुवर्ण, धतूरा।

महारस० ना० पु० ऊख, गन्ना।

महाराज० ना० पु० राजाधिराज, बड़ाराजा, साधारण बड़ों का सम्बोधन।

महारानी० ना० स्त्री० महाराजकी रानी।

महाराष्ट्र० ना० पु० देशविशेष, जातिविशेष।

महावट० ना० पु० मेघ ओला। माघ में बरसता है, सुहागी द्वार आदि में लगाते हैं।

महावत० ना० पु० हाथीवान, फीलवान।

महावर० ना० पु० रंग लाल जो स्त्रियां लगाती हैं।

महावला० ना० स्त्री० सहदेई बूटी।

महाशङ्ख० ना० पु० खोपड़ी, कपाल।

महाशिरा० ना० स्त्री० मोटी नस।

मंगलद्रव्य० ना० पु० फूलयादि।
मंगलवार० ना० पु० तीसरा वार।
मंगलसमाचार० ना० पु० शुभसमाचार, अच्छी खबर।
मंगला० ना० स्त्री० पार्वती, दशाविशेष, मसूराज्ञ।
मंगलाचार० ना० पु० वधावा, विवाह का गीत।
मंगलाचरण० ना० पु० शुभ कर्मों में गणेशादि देवताओं की विनय या पूजा या नमस्कारवाक्य।
मंगलामुखी० ना० स्त्री० बजंत्री, गवैया, वेश्या।
मंगली० गु० मंगलकारक, जयवन्त।
मंगल्या० ना० स्त्री० सजीवन, गोरोचना।
मंगवाना० स० क्रि० बुला भेजना।
मंगशिर० ना० पु० मार्गशीर्ष, अगहन।
मंगाना० स० क्रि० बुलाभेजना, उठवालेना, तलबकरना।
मंगूला० ना० पु० छोटाफल्ला।
मंगतर० ना० स्त्री० सगाई।
मचक० ना० स्त्री० गांठ की पीड़ा, मरमराहट, दबन।
मचकना० अ० क्रि० गांठों में पीड़ाहोना, चरचराना, मरमराना।
मचकाना० स० क्रि० चरचराना, भपकना, पलकमारना।
मचना० अ० क्रि० लगना, उठना, होना, रचना।
मचमचाना० अ० क्रि० चरचराना, मरमराना।
मचलना० अ० क्रि० हठकरना, मचलाहोना।
मचलपन० ना० पु० हठ, मगरापन, ढिठाई।
मचला० गु० हठीला, मगरा, ढीठ।
मचलाई० ना० स्त्री० मचलापन, मचलाहट।
मचलाना० अ० क्रि० हठकरना, मतलाना, कहाना, करना।
मचलाहट० ना० स्त्री० हठ, ढिठाई।
मचलहा० गु० हठीला।
मचान० ना० पु० मंच।
मचामच० गु० लदालद।
मचिया० ना० स्त्री० पीढ़ी, चौकी, पलंगिया।
मचोड़ना० स० क्रि० निचोड़ना, ऐंठके तोड़ना।
मच्छ० ना० पु० मत्स्य, मछली।
मच्छड़० ना० पु० मसा, छोटा कीट उड़नेहारा।
मच्छी० ना० स्त्री० मछली, मक्खी।
मछ० ना० पु० मत्स्य, मछली।
मछन्दर० ना० पु० चूहा, गु० मूर्ख।
मछली० ना० स्त्री० जलशायनी, जलतुरई, मत्स्य।
मछवा० ना० पु० धीमर, कहार, मच्छीमार।
मछी० ना० स्त्री० मछली।
मछुवा० ना० पु० मछवा, धीमर।
मजीठ० ना० पु० औषधि विशेष जिससे लालरंग बनता है।
मजीत० गु० सस्ता, जो वस्तु काम में लाई जावे और फिर बेंचीजावे।
मजीरा० ना० पु० मंजीर, बाजा विशेष, झांझ।
मजूर० ना० पु० कमेरा, ठीक शब्द मजदूर है, यह शब्द फारसी का है।
मज्जा० ना० स्त्री० हाड़ के भीतर का गूदा, चर्बी।
मझला० गु० मझोला, बीचवाला, मध्यवर्ती।
मझार० ना० पु० बीच, मांझ।
मझेली० ना० स्त्री० मझोली।
मझोला० गु० जो न छोटा न बड़ा अर्थात् न अच्छा और न बुरा, अर्थात् मध्यम।
मझोली० ना० स्त्री० छोटीगाड़ी वा बहल।
मञ्च० ना० पु० गरगज, ऊंचा, सिंहासन विशेष खाट, वेदी, मचान, तख्त, तख्तपोश।
मञ्जन० ना० पु० दांत धोने का चूर्ण विशेष, मार्जन, स्नान, नहान।
मञ्जना० अ० क्रि० उजला होना, साफहोना,

महावृत्त० ना० पु० मूसली।
महाशय० ना० पु० महात्मा, दाता।
महाशिरा० ना० स्त्री० मछली।
महाश्यामा० ना० स्त्री० निधारा।
महाश्वेता० ना० स्त्री० बिदारीकन्द।
महाष्टमी० ना० स्त्री० आश्विनशुक्लाष्टमी।
महासागर० ना० पु० समुद्र।
महासिद्धि० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति।
महास्कन्धा० ना० स्त्री० जामुन, फलेंद।
महि० ना० स्त्री० पृथ्वी।
महिदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
महिपाल० ना० पु० राजा, बादशाह।
महिमा० ना० स्त्री० महत्त्व, बड़ाई, श्रेष्ठता। नेकनामी, सिद्धिविशेष।
महिरुह० ना० पु० वृक्ष, वर्क्षादि।
महिला० ना० स्त्री० नारि, स्त्री, औरत।
महिष० ना० पु० भैंसा, दैत्यविशेष।
महिषध्वज० ना० पु० यमराज।
महिषासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।
महिषाक्ष० ना० पु० गुग्गुल, गूगल।
महिषी० ना० स्त्री० भैंसी, पटरानी, राजरानी।
महिषेश० ना० पु० यमराज।
मही० ना० स्त्री० पृथ्वी, ना० पु० दही, मट्ठा।
महीधर० ना० पु० पर्वत, शेषादि, राजा, गौ, दिग्गज, कच्छप।
महीना० ना० पु० मास, मासिक, दरमाहा।
महीन्द्र०, महीप० } ना० पु० राजा, पृथ्वीपति।
महीरक्षि० ना० पु० राजा, पृथ्वीपति।
महीयते० क्रि० प्रसन्नहोताहै, जाता है।
महीरुह० ना० पु० महिरुह।
महीश० ना० पु० राजा, बादशाह।
महीश्वर०, महीसुर० } ना० पु० ब्राह्मण।
महुआ० ना० पु० वृक्ष विशेष।
महेन्द्र० ना० पु० राजेन्द्र, प्रधान राजा।
महेर० ना० पु०, महेरी० ना० स्त्री } भोजनविशेष।
महेला० ना० पु० घोड़ेके लिये पकायाहुआ अदौवा।
महेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
महेश्वरी० ना० स्त्री० पार्वती, पीतल धातु।
महैश्वर्य्य० ना० पु० बड़ा ऐश्वर्य्य।
महोप०, महोपा० } ना० पु० पक्षीविशेष।
महोटिका० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
महोत्सव० ना० पु० बड़ा उत्सव, अत्यानन्द।
महोदर० ना० पु० निशाचर विशेष, बड़ापेट।
महोसा० ना० पु० जो तरुणावस्था में मुँह में मसूढ़े निकलते हैं।
महोक्ष० ना० पु० बड़ा बैल, मूर्ख।
महौजसी० ना० स्त्री० तेज, बल।
महौमवान्धरा० ना० स्त्री० मेदा औषधि।
महौषध० ना० पु० जो औषधि शीघ्र रोगहरै, लहसुन, अतीस।
महौषधि० ना० स्त्री० सोंठि, महौषध।
मह्लो० ना० पु० मही, छाछ, मट्ठा।
मक्षिका० ना० स्त्री० मक्खी, माखी, माछी।
मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, माता, सर्व, मुझको, हमको।
माई० ना० स्त्री० माता।
माई० ना० स्त्री० मुमानी, औषधी विशेष।
मा०. अव्य० में भीतर, अन्तर।
मांग० ना० स्त्री० शिरके बालोंके बीचकी लकीर जो कन्या वचनदत्त हुई।
मांगचिकनी० ना० पु० पक्षीविशेष।
मांगलेना० स० क्रि० किसी के लिये उधारलेना
मांगना० स० क्रि० चाहना, तलबकरना।
मांगलेना० स० क्रि० उधारलेना, सेंतलेना।
मांगी० ना० स्त्री० उधार, सेंत, वचनदत्त।
मांज० ना० पु० राद, पीब।
मांजना० स० क्रि० मलना, उज्ज्वल करना।

मांझ॰ ना॰ पु॰ रागिनी विशेष, अव्य॰ मध्य, बीच।

मांझत॰ ना॰ स्त्री॰ ठाठ।

मांझा॰ ना॰ पु॰ पतंगकी डोर में शीशा और भातका लगाना, जड़वट।

मांझी॰ ना॰ पु॰ नाविक, कर्णधार, बिचमानी, मध्यवर्ती।

मांड॰ ना॰ पु॰ पीच, कांजी।

मांडना॰ स॰ क्रि॰ मलना, मींजना, सानना, करना, कलपचढ़ाना।

मांडा॰ ना॰ पु॰ फलीविशेष, रोटीविशेष।

मांडी॰ ना॰ स्त्री॰ कलपविशेष जो चांवलों को पीसके वा पकाके बनाते हैं।

मांढा॰ ना॰ पु॰ मढ़ा।

मांद॰ ना॰ पु॰ गुफा, मार, गोबर।

मांस॰ ना॰ पु॰ मांस, गोश्त, कलिया।

मांसभक्षी॰ } ना॰ पु॰ गु॰ मांस खानेहारा।
मांसाद॰ }
मांसाहारी॰ }

मांह॰ } अव्य॰ मध्य,में अन्तर, भीतर।
मांहि॰ }

माकन्द॰ ना॰ पु॰ आंबका वृक्ष या फल।

माखड़ा॰ गु॰ मूर्ख, निर्बुद्धि, उल्लू।

माखन॰ ना॰ पु॰ मक्खन, नैनू, दही, मसकह।

माखी॰ ना॰ स्त्री॰ मक्खी, शहद।

मागध॰ ना॰ पु॰ भाट, कड़खैत, वंशावली कहने हारा, पुरुषों का प्रशंसक।

मागधा॰ ना॰ स्त्री॰ वाराहीकन्द, सौंफ।

मागधी॰ ना॰ स्त्री॰ पीपली, सौंफ।

माघ॰ ना॰ पु॰ ग्यारहवां महीना, काव्यविशेष।

माघी॰ ना॰ स्त्री॰ जो माघ में उत्पन्न हो।

माचा॰ ना॰ पु॰ मंच, पलंग।

माचिका॰ ना॰ स्त्री॰ मारे दवा।

माची॰ ना॰ स्त्री॰ हेंगा, संग्रेता।

माछर॰ ना॰ पु॰ मच्छड़, मसा, मशक।

माछी॰ ना॰ स्त्री॰ मक्खी।

माजाई॰ ना॰ पु॰ बेटा वा बेटी जो एकमांसे उपजे हों।

माजू॰ ना॰ पु॰ माजूफल।

माझ॰ ना॰ पु॰ मांझ।

माझधार॰ ना॰ पु॰ बीचधारा।

माट॰ ना॰ पु॰ बड़ा मटका।

माटी॰ ना॰ स्त्री॰ मृत्तिका, मिट्टी।

माठा॰ ना॰ पु॰ मगरा, नटखट, मट्ठा।

माठू॰ ना॰ पु॰ ठठोल।

माड़ना॰ स॰ क्रि॰ माड़ना।

माड़नि॰ ना॰ स्त्री॰ मांड़।

माड़िया॰ गु॰ पतला, दुर्बल।

माड़ौ॰ ना॰ पु॰ मण्डप, मड़वा।

माणवक॰ ना॰ पु॰ यज्ञोपवीत के योग्य जो बालकहो या जिसकी अवस्था सोलह वर्ष से कमहै।

माणिक॰ } ना॰ पु॰ देश विशेष, सामान्य
माणिक्य॰ } तेज, हीरा, लाल, रत्न विशेष।

मात॰ ना॰ स्त्री॰ माता, माता, मतवालपन।

मातंग॰ ना॰ पु॰ हाथी।

मातना॰ अ॰ क्रि॰ मतवाला होना।

मातलि॰ ना॰ पु॰ इन्द्रका रथवान्।

माता॰ ना॰ स्त्री॰ जननी, शीतला, गोऊवारि, गु॰ मत्त, मस्त।

मातामह॰ ना॰ पु॰ नाना, माता का बाप।

मातामही॰ ना॰ स्त्री॰ नानी, माताकी माता।

मातुल॰ ना॰ पु॰ मामू, माता का भाई।

मातुलानी॰ ना॰ स्त्री॰ ममानी, भाग।

मातुली॰ ना॰ स्त्री॰ ममानी।

मातुलुंग॰ ना॰ पु॰ बिजौरा।

मातृ॰ ना॰ स्त्री॰ माता, महतारी।

मात्र॰ गु॰ अल्प, किंचित्, अव्य॰ सर्व, सब।

मात्रा॰ ना॰ स्त्री॰ अक्षर के ऊपरकी रेखा, सार, परिमाण।

मात्सर्य्य॰ ना॰ पु॰ डाह, द्वेष, जलन, हसद।

माथा॰ ना॰ पु॰ मस्तक, ललाट, गलरी।

मूर्द्धज० ना० पु० केश, बाल।
मूर्द्धन्य० जिस अक्षरका उच्चारण मूर्द्धा से हो यथा ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष।
मूर्द्धा० ना० पु० मस्तक, तालुसे ऊपर।
मूर्द्धनि० ना० पु० तालु से कुछेक ऊपर।
मूर्वा० ना० स्त्री० मुरहरी।
मूल० ना० पु० जड़, वंश, कुल, पूंजी, असल, बिना टीका की पुस्तक, उन्नीसवां नक्षत्र, कारण।
मूलक० ना० पु० मूली।
मूलद्वार० ना० पु० गुदा।
मूलवीर० ना० पु० पुहकरमूल।
मूलस्थिति० ना० स्त्री० पहिली स्थिति।
मूलिया० गु० जिसका मूल नक्षत्र में जन्म हुआ।
मूली० ना० स्त्री० तरकारी विशेष, मूल विशेष।
मूल्य० ना० पु० मोल।
मूसल० ना० पु० मुसल।
मूसली० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
मूष०, मूषक०, मूषिक० } ना० पु० मूसा, चूहा।
मूषकवाहन० ना० पु० श्रीगणेशजी।
मूसना० स० क्रि० चुराना, झपटलेना।
मूसरा० ना० पु० चूहा।
मूसरी० ना० स्त्री० चुहिया।
मुसल० ना० पु० जिससे धान्यादिक कूटते हैं।
मूसलधर० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
मूसलधार० ना० पु० झड़ी, अति वृष्टि।
मूसली० ना० पु० श्रीबलदेवजी, ना० स्त्री० औषधि।
मृग० ना० पु० हरिण, वनके जीवजन्तु।
मृगछाला० ना० पु० मृगका चमड़ा।
मृगजल० ना० पु० मृगतृष्णा का पानी।
मृगतृष्णा० ना० स्त्री० ज्येष्ठादि ग्रीष्मकाल में सूर्य की किरणों में जो जल की कान्ति देख पड़ती है।
मृगदंशक० ना० पु० कुत्ता।
मृगद्विप०, मृगध्वंस० } ना० पु० सिंह, व्याघ्र।
मृगनाभि० ना० स्त्री० कस्तूरी, मृगकीनाभि।
मृगनाभिरसा० ना० स्त्री० कस्तूरी, मुश्क।
मृगनयनी०, मृगनैनी० } ना० स्त्री० गु० जिस स्त्री की आंखें मृगकी आंखों के सदृश हों।
मृगपति० ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र।
मृगबन्धनी० ना० स्त्री० वागुरि, जाल, फंदा।
मृगमद० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
मृगया० ना० स्त्री० आखेट, अहेर, शिकार।
मृगराज० ना० पु० सिंह, व्याघ्र।
मृगशिर०, मृगशिरा० } ना० पु० पांचवां नक्षत्र।
मृगांक० ना० पु० चन्द्रमा।
मृगाण्डज० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
मृगाधीश०, मृगाशन० } ना० पु० सिंह, शेर।
मृगाक्षी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
मृगी० ना० स्त्री० रोगविशेष, हरिणी।
मृगेन्द्र० ना० पु० सिंह, मृगपति।
मृड० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
मृडानी० ना० स्त्री० श्रीपार्वती।
मृणाल० ना० पु० ईस, कमलनाल।
मृणालिका० ना० स्त्री० कमल की जड़।
मृणाली० ना० स्त्री हंसिनी।
मृत्० ना० स्त्री० मिट्टी।
मृत० गु० मरा, मुआ, मुर्दा।
मृतक० ना० पु० शव, लोथ, मुर्दा।
मृतकर्पट० ना० पु० कफन, मुर्देके लिये वस्त्र।
मृत्तिका० ना० स्त्री० मिट्टी।
मृत्यु० ना० स्त्री० मौत, काल, मरण।
मृत्युक० ना० पु० मृतक।

माथीलेना० स० क्रि० एकसा बनाना।
माथुर० ना० पु० मथुराका वासी, ब्राह्मण और कायस्थकी जाति विशेष।
मादक० गु० मत्त करनेहारी वस्तु, नशा बढ़ाने वाली चीज़।
मादकता० ना० स्त्री० नशा, अमल, हिताहित विचारहीन, मस्ती, बेहोशी।
माद्री० ना० स्त्री० सहदेव और नकुलकी माता।
माधव० ना० पुं० वैशाखमास, मधूपवृक्ष, श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम।
माधवी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द, खांड और लताविशेष।
माधुरी० ना० स्त्री० मीठी, सुन्दर।
माधुर्य्य० ना० पु० सुन्दरता, मिठास।
माध्वी० ना० स्त्री० महुआकी मदिरा।
मान० ना० पु० नामपति, मर्य्यादा, घमंड, अहङ्कार, परिमाण, अभिमान, नाज़।
मानकच्चू० ना० पु० कन्दविशेष जो बंगाल में होता है।
मानता० ना० स्त्री० मण, प्रतिज्ञा, पूजा, दान, बड़ाई।
मानदा० ना० स्त्री० मानकी दाता, चन्द्रमाकी एक कलाका नाम।
मानव० ना० पु० मनुष्य, आदमी।
मानस० ना० पुं० मन, मनसा, मनुष्य, मान सरोवर।
मानसमूल० ना० पुं० सरयूनद।
मानसिक० गु० मनकी आशा, मनोवृत्ति, मनसे।
मानहु० अव्य० मानो।
मानामान० ना० पु० मान और अपमान।
मानिक० ना० पु० माणिक्य।
मानिकजोड़० ना० पु० पक्षीविशेष।
मानिनी० ना० स्त्री० अभिमानवती स्त्री।
मानी० गु० मर्यादिक, अभिमानी।
मानुष० } ना० पु० मनुष्य, आदमी।
मानुष्य० }
मानो० अव्य० जानो।
मान्धाता० ना० पु० राजाविशेष।
मान्ना० स० क्रि० पतिरखना, पूजना, महणकरना, अंगीकार करना, बजालाना।
मान्य० ना० गु० जो पूजने वा मानने के योग्य, पूज्य।
मान्यता० ना० स्त्री० पूजा, बड़ाई।
माप० ना० पु० नाप, पैमाइश।
मापक० गु० नापनेवाला, अमीन।
मापना० स० क्रि० नापना, पैमाइश करना।
माबाप० ना० पु० माता पिता।
मामा० ना० पु० मातुल, मामू।
मामी० ना० स्त्री० मगानी, माई, मामाकी जोरू।
मामीलेना० स० क्रि० पक्षकरना, ओलीभरना।
मामू० ना० पु० मामा, सर्प।
माया० ना० स्त्री० कृपा, मोह, दया, करुणा, प्रेम, छल, धोखा, सम्पत्ति, धन, भूल, योगमाया, आदिशक्ति, त्रिगुण, इन्द्रजालविद्या।
मायाकृत० ना० पु० संसार, इन्द्रजाली गु० जो माया से बनाया गया हो।
मायापति० ना० पु० जो माया का स्वामी होवे विशेष परमात्मा।
मायावी० गु० छली, कपटी, राक्षसविशेष।
मायिक० ना० पु० बाजीगर, ऐन्द्रजालिक, टोनहा।
मार० ना० पु० कामदेव, विघ्न, विष, धतूरा, ना० स्त्री० प्रहार, धप्पा, लड़ाई।
मारक० ना० पु० मारनेहारा।
मारग० ना० पु० मार्ग।
मारडालना० स० क्रि० वधकरना।
मारण० ना० पु० वध, हत।
मारना० स० क्रि० पीटना, कूदना, ताड़न करना, वधकरना, बिगाड़ना, उठाना, झकि

मृत्युगण० ना० पु० यमदूत, मलकुल्मौत।
मृत्युञ्जय० ना० पु० श्रीमहादेवजी, और मन्त्र विशेष।
मृत्सा० } ना० स्त्री० मिट्टी, माटी।
मृत्स्ना० }
मृदंग० ना० पु० बाजाविशेष।
मृदंगिया० } ना० पु० मृदंग बजानेहारा।
मृदंगी० }
मृदु० ना० पु० गु० नम्र, कुन्द, कोमल, मीठा।
मृदुकन्दक० ना० पु० पियाबांसा।
मृदुका० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
मृदुच्छद० ना० पु० करौंदा।
मृदुपत्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना।
मृदुफल० ना० पु० फालसा।
मृदुल० गु० कोमल, द्रु।
मृद्वीका० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
मृषा० अव्य० मिथ्या, वृथा, झूठ।
मैं० सर्व, मुझको, मेरा।
मैं० अव्य, अधिकरण का बोधक।
मैंगनी० ना० स्त्री० लेंड़ी, अजादिकी विष्ठा।
मैंड़० ना० स्त्री० खेतकी सीमा।
मैंड़क० ना० पु० भेक, मंडूक।
मैंड़की० ना० स्त्री० भेकी, मंडूकी।
मैंड़ा० ना० पु० कुवेंका मुख।
मैंड़ियाय० अ० क्रि० घिरना।
मैंढ़ा० ना० पु० मेढ़ा।
मेह० ना० पु० वृष्टि।
मेहँदी० ना० स्त्री० मिहँदी, पौधाविशेष।
मेख० ना० पु० मणिपुर और वंगाले के बीच एक प्रकार के पर्वतीयलोग, कील।
मेखला० ना० स्त्री० स्त्रियोंकी करधनी, ब्राह्मण का यज्ञोपवीत जो मृगछाला से बनताहै, तीनवर्णों का यज्ञोपवीत।
मेखली० ना० स्त्री० दाड़, पट्टी।
मेघ० ना० पु० घन, बादल, अभ्र, रागविशेष।
मेघडम्बर० ना० पु० रावणका छत्रविशेष।
मेघाध्वा० ना० पु० आकाश।
मेघनाद० ना० पु० मेघकी शब्द, मेघवत्शब्द, रावणका पुत्रविशेष।
मेघनाथ० } ना० पु० इन्द्र, मेघपति।
मेघराज० }
मेघागम० ना० पु० वर्षाकाल, बरसात।
मेघाभा० ना० पु० जामुन, फलेंद।
मेचक० गु० काला, श्याम।
मेटना० स० क्रि० धोडालना, नाशन, मतभेद, विरोधकरना।
मेटा० गु० मिटायागया।
मेढ़ा० ना० पु० मेढ़ा।
मेथिका० ना० स्त्री० मेथी।
मेथी० ना० स्त्री० सागविशेष।
मेद० ना० पु० मेध, चर्बीमोटाई।
मेदनाद० ना० पु० मोर।
मेदा० ना० स्त्री० पौधाविशेष।
मेदिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, मालती।
मेदिनीपुर० ना० पु० नगरविशेष।
मेध० ना० पु० यज्ञ, बलिदान।
मेधा० ना० स्त्री० अनुभव, बूझ, बुद्धि, निपुणता।
मेधाख्या० ना० स्त्री० नागरमोथा।
मेधावती० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नीविशेष।
मेधावी० गु० मेधावान्, बुद्धिमान्, निपुण।
मेध्या० ना० स्त्री० शंखाहोली।
मेन० ना० पु० मोम।
मेनका० ना० स्त्री० मुख्यअप्सरा, हिमालय की स्त्री।
मेमना० ना० पु० बकरी का बच्चा।
मेरीकरी० ना० स्त्री० स्वर्गीय, गंगाजी जो विश्वामित्रीय गंगा प्रसिद्ध है, यह शब्द रामचन्द्रिकामें विश्वामित्र का वाक्यहै, द्वितीयस्थान प्रसिद्ध है।
मेरु० ना० पु० पर्वतविशेष, सुमेरु।
मेल० ना० पु० संयोग, भेंट, मिलाप, संबन्ध।

शाना, डाकना, रोकना, भोगना, मर्दनकरना।
मारवा० ना० पु० रागविशेष।
मारवाड़० ना० पु० देश विशेष।
मारवाड़ी० ना० पु० मारवाड़देशका वासी वा उस देशकी वस्तु।
मारा० गु० वधाहुआ, जो हनगया, ना० पु० पारा, शिकार।
माराजाना० अ० क्रि० कटजाना, दबजाना, आधीनहोना, वधहोना।
मारी० ना० स्त्री० मरक, महामारी, वबा।
मारीच० ना० पु० कंकोल, दैत्यविशेष।
मारीचपत्रक० ना० पु० शालवृक्ष।
मारुत० ना० पु० वायु, पवन।
मारुतसुत० } ना० पु० श्रीहनुमान्जी, भीमसेन।
मारुति० }
मारू० ना० पु० बैंगनविशेष, रागविशेष, डंका, मारनेहारा, मरुदेश।
मारे० अव्य० स० कारण, निमित्त।
मार्कण्डी० ना० स्त्री० मकसा।
मार्कण्डेय० ना० पु० कालीन, मुनि विशेष।
मार्कव० ना० पु० भृंगराज, भंगरा, पौधा।
मार्ग० ना० पु० सड़क, बाट, राह, अगहन, अगुन।
मार्गण० ना० पु० बाण, तीर।
मार्गशीर्ष० ना० पु० अगहन।
मार्गित० गु० मार्गदेखना, बाटहेरना।
मार्जन० ना० पु० फर्श करने का काम, बुहारी, मांजना।
मार्जार० ना० पु० बिलाव, बिलाड़।
मार्तण्ड० ना० पु० सूर्य।
मार्तण्डमण्डल० ना० पु० सूर्यमण्डल, जिसका मार्गविशेष।
माल० ना० पु० मद्य, माता, समूह।
मालकंगनी० } ना० स्त्री० औषधि, पौधा विशेष।
मालकाकुनी० }
मालकोश० } ना० पु० रागविशेष।
मालकौस० }
मालती० ना० स्त्री० दो तीन जाति के पुष्प, पौधाविशेष।
मालतीजात० ना० पु० सुहागा।
मालतीपत्रिका० ना० स्त्री० जावित्री।
मालद्वीप० ना० पु० सिंहलद्वीप के समीप द्वीप विशेष।
मालपुआ० } ना० पु० पकवानविशेष।
मालपूप० }
मालव० } ना० पु० देश विशेष, रागत।
मालवा० }
माला० ना० स्त्री० पुष्पादिका हार, पोथी, पंक्ति, कंठी, तसबीह, रुद्राक्षादिकी।
मालाकार० ना० पु० माली।
मालिन्० ना० स्त्री० मालीकी स्त्री।
मालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष।
मालिन्य० ना० पु० मलिनता।
माली० ना० पु० बागसींचनेहारा वा लगानेहारा, जाति विशेष, मालाधारी।
मालूर० ना० पु० बिल्व, बेल।
माल्य० ना० पु० फूलकी माला।
माल्यवान्० ना० पु० राक्षस विशेष।
मावस० ना० स्त्री० अमावस, कृष्णपक्षकी १५।
मावा० ना० पु० ओहार, अंडेकी बिलाई, खोवा, गाढ़ा दूध।
माष० ना० पु० उरद, अन्नविशेष, दूर्वा, दुरित।
माषमात्र० ना० पु० एकउरदभर।
माषा० ना० पु० तोलेकाबारहवांभाग, ८ रत्ती।
मास० ना० पु० महीना, रमोती, मांस।
मासा० ना० पु० माषा।
मासान्त० ना० पु० महीने का अन्त वा अन्त की तिथि।
मासिक० गु० महीनेका, मासवारी, दरमहा, ना० पु० श्राद्ध जो प्रतिमास कियाजाता है।

मेलना० स० क्रि० ठांसना, घुसेड़ना, डालना।
मेला० ना० पु० तीर्थादि पर किसी देवता की पूजाहेतु बहुतजनों का इकट्ठा होना वा किसी प्रकार बहुत मनुष्यों का इकट्ठा होना।
मेली० ना० पु० साथी, गु० मिलापी।
मेव०
मेवड़ा०
मेवाती० } ना० पु० मेवात, पर्वत के निवासी।
मेष० ना० पु० भेड़ा, प्रथमराशि, सर्वांवृत्त।
मेषवल्ली० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
मेषला० ना० स्त्री० मेखला।
मेषशृङ्गी० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
मेह० ना० पु० मेघ, मूत्र व धातु में रोग विशेष।
मेहतर० ना० पु० मंत्री, प्रधान, चौधरी।
मेहतरानी० ना० स्त्री० भंगिन।
मेहनहा० ना० पु० ठठोली करनेहारा।
मेहना० ना० पु० ठठोली।
मैं० सर्व० सर्वतोमर्यादक उत्तम पुरुष का एक वचन।
मेकलसुता० ना० स्त्री० नर्मदानदी।
मैका० ना० पु० स्त्री के मा बाप का घर वा घराना।
मैत्री० ना० स्त्री० मित्रता, बन्धुता।
मैथिल० ना० पु० तिरहुत के बसने हारे, ब्राह्मण की जाति विशेष।
मैथिली० ना० स्त्री० श्रीसीताजी, मिथिला की भाषा विशेष।
मैथुन० ना० पु० प्रसंग, रति, पुत्रोत्पादनार्थ दम्पति की क्रिया।
मैनफल० ना० पु० औषधि, फल विशेष।
मैना० ना० स्त्री० पक्षी विशेष, पार्वतीकी माता।
मैनाक० ना० पु० पर्वत विशेष।
मैमा० ना० स्त्री० सौतेलीमाता।
मैया० ना० स्त्री० माता, महतारी।
मैल० ना० पु० मल, धुवाँ, झाग, गाज।
मैला०
मैला कुचैला० } गु० मलीन, अपवित्र।
मैहिका० ना० पु० महिष, भैंसा।
मैहिकी० ना० स्त्री० महिषी, भैंसी।
मो० सर्व, मैं।
मोढ़ा० ना० पु० कंधा, कूबड़, मोढ़ा।
मोकना० स० क्रि० लगन, छोड़ना, जोड़ना।
मोखा० ना० पु० रोशनदान, झ्याला।
मोगरा० ना० पु० मुदगर, बड़ी मोगरी, पुष्प विशेष।
मोगरी० ना० स्त्री० कूटने को काठरचित वस्तु विशेष।
मोघ० गु० वृथा, निरर्थ, निष्फल।
मोच० ना० पु० लचक, कचक, झटका।
मोचक० ना० पु० मोचरस, गु० छुड़ानेहारे।
मोचन० ना० पु० चोरी, छोड़ना, त्याग।
मोचना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना, झाड़ना, बुझाना, मिटाना, ना० पु० बाल उखाड़ने के लिये चिमटा।
मोचरस० ना० पु० सेमल वृक्षका गोंद।
मोचस्राबी० ना० पु० मोचरस।
मोचा० ना० पु० सेमरवृक्ष, केला वा उसकागाभा।
मोची० ना० पु० चर्मकार।
मोट० ना० स्त्री० गठरी, मोट।
मोटक० ना० पु० कन्द विशेष।
मोटकी० ना० स्त्री० कुदारी, मोटी स्त्री।
मोटरा० ना० पु० गठरी।
मोटा० ना० स्त्री०, गठरा, गड्ढा, गु० स्थूल, गाढ़ा, बड़ा, भद्दा।
मोटाई० ना० स्त्री०
मोटापा० ना० पु० } पुष्टता, गाढ़ाई, स्थूलता।
मोटिया० ना० पु० मोट उठानेहारा।
मोठ० ना० स्त्री० गठरा, पाट, बोझ, चरस, पुरवट, अन्न विशेष।
मोड़० ना० पु० बांक, फेर, वल, ऐंठन।

मासिकविभाग० ना० पु० नौकरी का पैसा बांटना।

मासिकविभागी० गु० बखशी, नौकरीका रुपया बांटनेहारा।

मासी० ना० स्त्री० मौसी, माताकी बहन।

माह० ना० पु० माघ, अव्य० मध्य, बीच, से।

माहात्म० } ना० पु० सुयश, सुकीर्त्ति, बड़ाई,
माहात्म्य० } बड़प्पन, महातम।

माहीं० अव्य०, बीच,में, ना० स्त्री० माघी।

माहुर० ना० पु० विष, हलाहल।

माहू० ना० पु० कीटविशेष, फनसलाई।

माक्षिक० ना० स्त्री० सोनामक्खी।

मिचकारना० स० क्रि० खंगालना, खनखासना, धोना।

मिचना० अ० क्रि० मूंदना, लगना, बन्दहोना।

मिचोलना० स० क्रि० आंखमूंदना।

मिटना० अ० क्रि० बिगाड़ना, मलमिटहोना।

मिटाना० स० क्रि० बिगाड़ना, मेटना, मलमेट करना।

मिटिया० ना० स्त्री० मिट्टी की हंडी विशेष।

मिटियाना० स० क्रि० मिट्टी से मलना।

मिटियामेट० गु० मिटगया, निश्शेषहोगया।

मिटेलना० स० क्रि० मिटाना।

मिटेला० गु० मिटायागया, मिटायाहुआ।

मिट्टी० ना० स्त्री० माटी, मृत्तिका, धूल, भूमि।

मिठरी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।

मिठाई० ना० स्त्री० मिष्ठान, मिष्टान्न, गुड़, शकर।

मिठास० गु० मधुरता, मिष्टता।

मिताक्षरा० ना० स्त्री० न्यायग्रन्थविशेष ना० पु० छन्द विशेष।

मिति० ना० स्त्री० अन्त, मर्याद, वादह, प्रमाण।

मिती० ना० स्त्री० तिथि, तारीख, ब्याज, सूद।

मित्र० ना० पु० हितू, बन्धु, दोस्त, सूर्य, अग्नि।

मित्राई० } ना० स्त्री० बन्धुता, हितकार, प्रीति,
मित्रता० } दोस्ती, यारी।

मित्रद्रोही० ना० पु० जो मित्रके साथ वैरकरे।

मित्रपोषी० गु० मित्रका पालनेहारा, दोस्तपर्वर।

मिथः० अव्य० परस्पर।

मिथिला० ना० पु० जनकपुर, तिरहुत।

मिथिलापति० } ना० पु० राजा जनक, वा
मिथिलेश० } मिथिलाका राजा।

मिथुन० ना० पु० पुरुष स्त्री, युग्म, दो, और राशि तीसरी।

मिथ्या० अव्य० अयथार्थ ना० पु० झूठ, वृथा।

मिथ्यादृष्टि० ना० स्त्री० नास्तिकता, कुफ़र, झूठी नजर।

मिथ्यामति० ना० स्त्री० भ्रम, भूल।

मिथ्यावाद० ना० पु० झूठ, वृथा वार्त्ता।

मिथ्यावादी० गु० झूठा, वृथावादी।

मिनती० ना० स्त्री० विनती।

मिमियाना० अ० क्रि० बिल्ली वा बकरीकाशब्द करना।

मिमियाहट० ना० पु० बिल्ली वा बकरीकाशब्द।

मिरा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।

मिर्गी० ना० स्त्री० राजरोग विशेष।

मिर्गहा० गु० जिसको मिर्गीका रोगहोवे।

मिर्च० ना० स्त्री० मरिच।

मिर्चा० ना० पु० लालमिर्च।

मिर्दंग० ना० पु० मृदंग।

मिर्दंगिया० } ना० पु० मृदंगकाबजानेहारा।
मिर्दंगी० }

मिर्दहा० ना० पु० करोड़ा जो गांव में रहताहै।

मिलन० ना० पु० मेल, मुलाकात।

मिलनसार० गु० मिलापी, मेली।

मिलना० अ० क्रि० मिश्रित होना, भेंटना, एकट्ठा होना, बैठना, पचना, पाना।

मिलवाना० स० क्रि० मिश्रित करवाना, भेंट करवाना।

मिलान० ना० पु० मिलाप, भेंट।

मिलना० स० क्रि० मिश्रित करना, जोड़ना,

मोड़ना० स० क्रि० फेरना, ऐंठना, नतखिलाना, चंदाना।

मोड़ा० ना० पु० वैरागी।

मोढ़ा० ना० पु० आसन विशेष, पैर रखने की वस्तु।

मोतिया० ना० पु० पुष्प विशेष।

मोतियाबिन्दु० ना० पु० आंखों में का रोग विशेष।

मोती० ना० पु० मुक्ता।

मोतीचूर० ना० पु० मिठाई विशेष।

मोथरा० ना० पु० घोड़े में रोग विशेष अर्थात् हरा।

मोथा० ना० पु० नागरमोथा।

मोथी० ना० स्त्री० अन्न विशेष।

मोद० ना० पु० हर्ष, आनन्द, खुशी।

मोदक० ना० पु० लड्डू, आनन्दका उत्पादक।

मोदगी० ना० पु० जिगनां वृक्ष।

मोदित० गु० आनन्दित, हर्षित।

मोदिनी० ना० स्त्री० लजारू पौधा।

मोदी० ना० पु० बनिया, बनजारा, व्योपारी।

मोम० ना० पु० मधुमल, फारसी शब्द है।

मोमबत्ती० ना० स्त्री० मोमरची बत्ती।

मोमियाई० ना० स्त्री० चोटकी औषधि विशेष, फारसी शब्द।

मोमी० गु० मोमका, जिसमें मोम लगाया गया है।

मोर० ना० पु० मयूर, पक्षी विशेष, सर्व, मेरा।

मोरका० ना० स्त्री० मुरहरी।

मोरचंद्रिका० ना० स्त्री० मोरपंख में की आंखें।

मोरछल० ना० पु० चँवर जो मोरपंखकाहोता है।

मोरध्वज० ना० पु० राजा विशेष।

मोरा० सर्व० मेरा।

मोरना० स० क्रि० फेरना, घुमाना, टालना।

मोरे० गु० घुमाये, फेरे, सर्व० मेरे।

मोल० ना० पु० भाव, दाम, मिलाइ, कीमत।

मोह० ना० पु० मूर्च्छा, माया, दया, करुणा, भुला[illegible] हाव भाव, भूल, अज्ञानी।

मोहन० ना० पु० सज्जन, प्यारा, मोहनेहार[illegible] भुलानेहारा, विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजीका एकनाम[illegible] हिताहित विचार रहित, मंत्र विशेष।

मोहनभोग० ना० पु० मिठाई या हलु[illegible] विशेष।

मोहनमाला० ना० स्त्री० माला जो सुवर्ण[illegible] दानों और मूंगों से बनी है।

मोहना० स० क्रि० मनहाथ में लेलेना, भुला[illegible] वशीभूत करना वा होना।

मोहमय० गु० झूठा, भूलमें।

मोहर० ना० स्त्री० स्वर्णमुद्रा, अशरफी।

मोहरा० ना० पु० द्वार, दरवाजा।

मोहि० सर्व० मुझको, क्रि० मोहवशहोकर।

मोहित० गु० मूर्छित, जो मोहा गया, भूल[illegible] हुआ।

मोहिनी० ना० स्त्री० मोहनेहारी स्त्री, वेश्य[illegible] दिटबन्दी टोटकी, वशीकरणी।

मोही० सर्व० मुझको, गु० मोह करनेहारा।

मोक्ष० ना० पु० मुक्ति, निजात।

मौ० ना० पु० मधु।

मौक्ति० ना० स्त्री० सीपी, सीप।

मौन० ना० पु० चुप, चुप्पी, खामोशी।

मौनता० ना० स्त्री० चुप्पी, खामोशी।

मौना० ना० पु० मटका, डलिया।

मौनी० गु० चुपका, चुपचाप, ना० पु० यो[illegible] विशेष. ना० स्त्री० छोटा मटका, चुप्पी।

मौर० ना० पु० वृक्षकाफूल वा कली, कंध[illegible] सेहरा जो दूलहको पहराते हैं।

मौरना० अ० क्रि० खिलना, फूलना।

मौरे० गु० फूलेहुये।

मौलना० अ० क्रि० मौरना, फूलना।

मौलसरी० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष।

मौलि० ना० पु० मस्तक, माथा।

मौलिक० गु० कायस्थ जो छोटी जातिका।

बनाना, सादरी करना, मिलाप कराना।
मिलाप० नाः पु० मेल, बनाव, भेंट, एकता।
मिलापी० गु० मिलनसार।
मिलाव० नाः पु० मिलौनी, मेल।
मिलित० गु० मिला हुआ, मिश्रित।
मिलौनी० ना० स्त्री० मिलाव, मेल।
मिशि० ना० पु० सोया का साग।
मिश्र० गु० मिलाहुआ, मिलित, ब्राह्मणों में जाति विशेष, वैद्य।
मिश्रानी० ना० स्त्री० मिश्र की स्त्री, वैदई।
मिश्रित० गु० मिलित, मिलाहुआ।
मिश्री० ना० स्त्री० मिठाई प्रसिद्ध, मिसी।
मिश्रेय० ना० पु० सोया का साग।
मिष० ना० पु० बनावट, पेलना, धांधल, धोखा, हीला, बहाना।
मिष्ट० ना० पु० मीठा, मधुर।
मिष्टा० ना० स्त्री० मिठाई, गुड़।
मिष्टान्न० } ना० पु० मिठाई मिला अन्न।
मिष्टान्न० }
मिस० ना० पु० मिष।
मिसना० अ० क्रि० पिसना।
मिसर० ना० पु० मिश्र, देश विशेष जो यूनान के दक्षिण में है।
मिसी० ना० स्त्री० मिस्सी।
मिसु० ना० पु० मिष।
मिस्सी० ना० स्त्री० दांतों का मंजन विशेष।
मिहंदी० ना० स्त्री० मेंहदी।
मिहना० ना० पु० बोली ठोली।
मिहरा० ना० पु० पुरुष जो स्त्रीका वेषधरता है।
मिहरारू० }
मिहरिया० } ना० स्त्री० स्त्री, औरत, नारि।
मिहरी० }
मिहाना० अ० क्रि० सीलना, गीला होना।
मिहानी० ना० स्त्री० मथानी, मथनिया, चाटी।
मिहिर० ना० पु० सूर्य।

मींजना० स० क्रि० मांजना, मलना, मसलना।
मीच० ना० स्त्री० मृत्यु, मौत।
मीचना० } स० क्रि० मूंदना, बन्द करना।
मीछना० }
मीजना० स० क्रि० मलना, रगड़ना, मसलना।
मीजू० ना० स्त्री० मसूर।
मीठा० गु० मधुर, धीमा, सुस्त, नामर्द, ना० पु० विष विशेष, फल विशेष।
मीठिया० } ना० स्त्री० चूमा, चूमी, मंची।
मीठी० }
मीड़ना० स० क्रि० मींजना।
मीड़े० गु० मलेगये, मलेहुए।
मीणा० ना० पु० जाति विशेष।
मीत० ना० पु० मित्र, सज्जन, मीता, दोस्त।
मीतन० ना० स्त्री० सनामीस्त्री, सखी, सहेली।
मीता० ना० पु० सनाम, हमनाम।
मीन० ना० स्त्री० मछली, बारहवीं राशि, ना० पु० श्रीविष्णुजीका प्रथमावतार।
मीनकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
मीनहा० ना० पु० बनसी, बड़िया, बरवा।
मीना० ना० पु० हिन्दूजाति विशेष जो चोर होते हैं।
मीमांसक० ना० पु० ब्रह्मवादी, ईश्वरवेत्ता।
मीमांसा० ना० स्त्री० हिन्दू का मत विशेष, शास्त्र विशेष।
मीमियाना० अ० क्रि० मिमियाना।
मीसना० स० क्रि० पीसना, मलना, पढ़ना, घुरेरना, धुनना।
मुकतई० ना० स्त्री० छुट्टी, छुटाई।
मुकरना० स० क्रि० नकार करना, न मानना।
मुकरी० ना० स्त्री० ब्रजभाषा में छन्दविशेष।
मुकुट० ना० पु० मउक, ताज, छत्र।
मुकुन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम, मुक्तिदाता।
मुकुर० ना० पु० दर्पण, आइनह।
मुकुल० ना० पु० कली जो खुलजाती है।

मौली० ना० स्त्री० नारा।
मौल्य० ना० पु० मोल, कीमत।
मौसा० ना० पु० माताकी बहन का पति।
मौसी० ना० स्त्री० माताकी बहन।
मौसेरा० गु० जो मौसी का है, यथा,मौसेरा भाई।
म्लान० गु० मैला, मन्द।
म्लेच्छ० ना० पु० जो लोग वेद और शास्त्र से विपरीत चलते हैं।
म्लेच्छदेश० ना० पु० देश जिस में म्लेच्छ बसते हैं।

[य]

यक० गु० एक, १।
यकआंक० अव्य० निश्चय करके।
यजमान० ना० पु० जो दक्षिणादि देके धर्म या कर्म करवावे।
यजुः० ना० पु० द्वितीय वेद, यजुर्वेद।
यतन० ना० पु० यत्न।
यति० ना० पु० यती, संन्यासी, भिखारी या जैनमतका भिखारी।
यत्० अव्य० जो, जब।
यत्किञ्चित्० अव्य० जो कुछ।
यत्न० ना० पु० जतन, उपाय, उद्योग,तदबीर।
यत्नमान० } गु० यत्न करनेहारा।
यत्नी० }
यत्र० अव्य० जहां, जिस जगह।
यत्रतत्र० अव्य० जहां तहां।
यथा० अव्य० जैसा, जिस प्रकार।
यथाकथञ्चित्० अव्य० जिसकिसी प्रकारसे।
यथाकाल० ना० पु० जैसा समय।
यथाक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी से, जैसी रीति, सिलसिलेवार।
यथापि० अव्य० यद्यपि, जोभी, अगर्चि।
यथायोग० ना० पु० जैसा उचित वा चाहिये, अव्य० जैसा चाहिये वैसा।
यथार्थ० अव्य० ठीक, सच, खरा।
यथावत्० अव्य० सम्पूर्ण।
यथावस्थित० अव्य० ज्योंकात्यों, गु० स्थिर।
यथाशक्ति० ना० स्त्री० जैसी सामर्थ्य।
यथाशास्त्र० अव्य० शास्त्र के अनुसार, शास्त्र सम्मत, ना० पु० जैसा शास्त्र।
यथासम्भव० गु० जैसा होनहार।
यथेच्छा० ना० स्त्री० जैसी इच्छा।
यथोक्त० गु० जैसा कहागया।
यथोचित० गु० यथायोग्य, जैसा, उचितहोवे।
यदवधि० अव्य० जबसे।
यदपि० अव्य० जोभी, अगर्चि।
यदा० अव्य० जब, जहां।
यदि० अव्य० जो, कदाचित्।
यदु० ना० पु० सोमवंशी, पांचवां राजा।
यदुजात० ना० पु० यदुवंशी।
यदुनाथ० } ना पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
यदुपति० }
यदुवर० }
यदुराय० }
यदुवंश० ना० पु० राजा यदुकी सन्तान।
यदुवंशी० ना० पु० यदु से जो उत्पन्न, यथा श्रीकृष्णचन्द्रादि।
यद्यपि० अव्य० जोभी, यदपि, अगर्चि।
यद्यातद्या० अव्य० ऐसा वैसा, भलाबुरा।
यंत्र० ना० पु० कल, समाज, वाद्य, टोटका, तवीज, ताला।
यंत्रणा० ना० स्त्री० पीडा, क्लेश।
यंत्रित० गु० यन्त्र कियागया, तालालगायाहुआ, यंत्रयुक्त।
यंत्री० ना० पु० यन्त्रदेनेहारा, तारखींचने का यन्त्र, बजानेहारा कलसाज।
यम० ना० पु० यमराज, यमदूत, साधन वा नियम विशेष, गु० दो।
यमक० ना० पु० छन्दमें अक्षर लगाई जो प्रथम का शब्द, तुक, जोड़िया, जो दो बालक एक साथही उत्पन्नहों।

मुकुलित० गु० थोड़ी खिलीहुई कली, फूला मौरयुत, आंब आदि बौर समेत।
मुकुन्दक० ना० पु० पिस्ता मेवा।
मुकेल० ना० स्त्री० नकेल।
मुक्का० ना० पु० } घूंसा, घुस्सा।
मुक्की० ना० स्त्री० }
मुक्त० गु० जिसने मुक्तिपाई, अवन्धित।
मुक्तरमा० ना० स्त्री० रास्ना।
मुक्ता० ना० पु० मोती, गु० बहुत।
मुक्तामणि० ना० पु० मोती।
मुक्तास्फोट० ना० पु० सीपी।
मुक्ताहल० ना० पु० मोती, शब्दबीज के यथा, मुक्ताहल लिगे चोंच लुभावे, मौनरहे की हरिगुणगावे।
मुक्ति० ना० स्त्री० मोक्ष, पाप से उद्धार, निस्तार, त्राण, छुटकारा, निजात।
मुक्तिदाता० ना० पु० मुक्तिदेनहारा, उद्धारक।
मुख० } ना० पु० बदन, मुँह।
मुखड़ा० }
मुखदूषक० ना० पु० पियाज, पलांड, प्याज।
मुखमण्डन० ना० पु० तिलकवृक्ष।
मुखर० गु० बकवादी, दुष्ट।
मुखागर० } ना० पु० स्मृत, जबानी याद।
मुखाग्र० }
मुखान० ना० पु० मुखका बहुवचन।
मुखिया० } ना० पु० प्रधान, गु० पहिला, बड़ा,
मुख्य० } खास, असल, सर्दार।
मुगदर० ना० पु० मोगरा, काष्ठकी मोगरी विशेष, जिसको फिराते हैं।
मुग्ध० गु० अज्ञानी, मूर्ख, मकुवा, कठमुल्ला।
मुग्धा० ना० स्त्री० कुंवारीकन्या, अज्ञातयौवना, गु० झूठी, मूर्ख।
मुचुकुन्द० ना० पु० राजा विशेष जो अयोध्या में हुआ है।
मुजरा० ना० पु० प्रणाम, दण्डवत्, भेंट।
मुटापा० ना० पु० मोटाई, मोटापन।

मुट्ठी० ना० स्त्री० हाथ, मुक्का।
मुठभेर० गु० अति निकट, बहुतपास।
मुठिया० ना० पु० हाथभर, दस्ता, कब्जा।
मुठोलिया० ना० पु० मठोलिया, ठट्ठा।
मुठोली० ना० स्त्री० ठट्ठा, मठोली।
मुड़ना० अ० क्रि० टेढ़ाहोना, बलखाना।
मुड़० ना० पु० प्रधान।
मुड़िया० अ० क्रि० मुड़ना।
मुण्ड० ना० पु० शिर, मस्तक, मूंड।
मुण्डधारी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, अघोरी।
मुण्डन० ना० पु० बालकके पहिले बालबनवाना, मुण्डने का काम।
मुण्डना० अ० क्रि० बालबनवाना, ठगजाना।
मुण्डला० गु० मूंड़ागया, मुंडिया।
मुण्डवाना० स० क्रि० बालबनवाना, ठगाना।
मुण्डा० ना० पु० पतंग का शिर, मूंड, गु० जो मूंड़ागया, चन्दला।
मुण्डाना० स० क्रि० मुंडवाना।
मुण्डासा० ना० पु० कुछ कपड़ा जो मूंड़ में बांधते हैं, अम्मामा।
मुण्डित० गु० मुंडला, मुड़ागया।
मुण्डिभिक्षु० ना० स्त्री० म्योड़ी, मुंडी।
मुण्डिया० ना० पु० शिर, एकप्रकार के साधू।
मुण्डी० ना० स्त्री० म्योड़ी, ना० पु० मुंडिया, साधू।
मुण्ड्ड० ना० पु० संन्यासी, गोसाईं।
मुण्डेर० } ना० स्त्री० छतपर की छोटीभीत,
मुण्डेरी० } भीत का सिरा।
मुतना० गु० बहुत मूतने हारा, खटमुतना।
मुतास० ना० स्त्री० मूतने की इच्छा।
मुतासा० गु० जिसको मूतने की इच्छा है।
मुद० ना० पु० आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।
मुदा० ना० स्त्री० मोर, मयूर।
मुदित० गु० हर्षित, आनन्दित, निहाल।
मुदिर० ना० पु० मेघ, बादल।

राचा० गु० प्यारमें अनुरक्त।

राछ० ना० पु० कारीगरों का अस्त्र।

राज० ना० पु० राज्य, घरबनानेहारा कारीगर, थवई।

राजअंश० ना० पु० कर, महसूल, राजा को भाग।

राजकर० ना० पु० राजअंश।

राजकर्कटी० ना० स्त्री० कुम्हड़ा, कद्दू।

राजकीय० गु० राजा का, राजाऊ।

राजकुमार० ना० पु० राजा का पुत्र।

राजगृह० ना० पु० राजाकाघर, नगर विशेष।

राजजम्बू० ना० स्त्री० जामन, फलेंद।

राजत्व० ना० पु० राजाका काम।

राजद्वार० ना० पु० राजभवन का फाटक।

राजधर० ना० पु० राजा की मन्त्री।

राजधानी० ना० स्त्री० जिस नगर में राजा आपबसे, यथा अवध में लखनऊ।

राजन्० ना० पु० राजा।

राजनय० ना० पु० राजनीति।

राजना० अ० क्रि० चमकना, शोभित होना।

राजनिभ० ना० पु० लोह।

राजनीति० ना० स्त्री० राज्यकरने की चाल, दस्तूर, कानून।

राजपति० ना० पु० राजा, हिन्दूलोगों की पदवी।

राजपद० ना० पु० राज्य, प्रभुता, बादशाही।

राजपुताना० }
राजपुत्थान० } ना० पु० देश विशेष जिसमें जयपुर जोधपुर आदि हैं।

राजपुत्र० ना० पु० राजाकापुत्र, जाति विशेष।

राजपुत्रिका० ना० स्त्री० राजाकी कन्या और रायलता और पौधा।

राजपुत्री० ना० स्त्री० राजाकी कन्या, कड़ई तुम्बी।

राजपूत० ना० पु० राजाकापुत्र, जातिविशेष।

राजभवन० ना० पु० राजाका मन्दिर।

राजभोग० ना० पु० राज्यकाभोग, मध्याह्न में देवता के लिये नैवेद्य।

राजमन्दिर० ना० पु० राजभवन।

राजमार्ग० ना० पु० राजपथ, सड़क, पैंडा।

राजयोग० ना० पु० जन्मकुंडली में उच्च ग्रहों का होना यथा बृहस्पति मूर्तिमें इत्यादि।

राजयोग्य० गु० जो राजा के योग्य है।

राजराज० ना० पु० यक्षपति, कुबेर, राजाधिराज।

राजराणी० }
राजरानी० } ना० स्त्री० राजाकी स्त्री।

राजरोग० ना० पु० वह रोग जिससे बचने की आशा न हो, यथा क्षयरोग, मृगी।

राजला० ना० स्त्री० मीठीतुम्बी, लौकी।

राजलोक० ना० पु० राजभवन।

राजवंश० ना० पु० राजाकी सन्तान।

राजवंशी० ना० पु० राजाकी सन्तान, राजपूतों में जाति विशेष।

राजवला० ना० स्त्री० गन्धप्रसारन।

राजवल्ली० ना० स्त्री० रायलता।

राजवृत्त० ना० पु० किरवाली।

राजशाला० ना० स्त्री० सभा, कचहरी।

राजशासन० ना० पु० राजा की आज्ञा और राज का दण्ड।

राजश्री० ना० स्त्री० राजाकी सम्पत्ति।

राजस० ना० पु० जो काम रजोगुण करके होवे, रजोगुण।

राजसिंहासन० ना० पु० राजा का सिंहासन।

राजसू० }
राजसूय० } ना० पु० यज्ञ विशेष जिसको केवल राजाधिराज करसके हैं।

राजस्व० ना० पु० राजाकाअंश, कर, महसूल।

राजहंस० ना० पु० हंस विशेष, बतक।

राजा० ना० पु० नृपति, देशपति, बादशाह।

राजादन० ना० पु० खिरनी विशेष।

राजाहा० ना० स्त्री० खिरनी।

मुदिरनाथ० ना० पु० इन्द्र।

मुद्ग० ना० पु० मूंग अन्न।

मुद्गर० ना० पु० मुदगर, मोंगरा।

मुद्रा० ना० स्त्री० छाप, सुवर्ण वा चांदी का रुपया वा मोहर, छल्ला, यन्त्र, अंगूठी।

मुद्रांकित० गु० जो छापागया।

मुद्रिका० ना० स्त्री० मुन्दरी, अंगूठी।

मुद्रित० गु० अनखिला, मुँदा जो छापा गया, लिखा जारी कियागया।

मुनमुन० ना० पु० बिल्ली के पुकारने का शब्द। घास विशेष।

मुनमुनाना० अ० क्रि० बिल्ली का पुकारना, शीशा बढ़के सूखजाना।

मुनि० ना० पु० ऋषि, तपस्वी, विद्वान्।

मुनिद्रुम० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।

मुनिपट० ना० पु० बकला, भोजपत्रादिके वस्त्र।

मुनिपति० ना० पु० मुख्य मुनि।

मुनिपद० ना० पु० शांतपदवी, मुनिका पैर।

मुनिया० ना स्त्री० लालपक्षी की स्त्री।

मुनिवल्लभ० ना० पु० चिरौंजी।

मुनीन्द्र० } ना० पु० मुनियों का प्रधान,
मुनीश० } अर्पारा।

न्या० ना० स्त्री० ज्योतिष में प्रसिद्ध।

न्दना० अ० क्रि० बन्दहोना, मिचना।

न्दरी० ना० स्त्री० अंगूठी, मुंदरी।

माखी० ना० स्त्री० मधुमाखी।

मुमुक्षु० गु० मुक्ति खोजनेवाला।

मुमूर्षु० ना० पु० जो मनुष्य मरने पर है।

र० ना० पु० दैत्यविशेष।

रई० ना० स्त्री० मूली।

कना० अ० क्रि० ऐंठना, बलपड़ना।

काना० स० क्रि० ऐंठना, बलदेना।

की० ना० स्त्री० कान का भूषणविशेष।

चंग० ना० पु० बाजाविशेष।

मुरझाना० अ० क्रि० सूखजाना, कुम्हलाना।

मुरण्डाकरना० स० क्रि० जकड़ना, बांधना।

मुरमुरा० ना० पु० चर्वणविशेष।

मुरला० गु० पोपला, अदांत, ना० पु० मोर।

मुरली० ना० स्त्री० बनसी, बंसी, बांसुरी।

मुरलीधर० ना० पु० वंशीधर, श्रीकृष्णजी।

मुरवा० ना० पु० पांव की कलाई, मोर।

मुरहा० ना० पु० जकड़, ऐंठ, मयूर, बिनामाता पिताका बालक।

मुरही० ना० स्त्री० ऐंठन, मरोड़,।

मुराई० } ना० पु० काछी, तरकारी बेचने
मुराऊ० } वाला वा बोनेहारा, कोयरी।

मुरार० ना० स्त्री० कमल की जड़।

मुरारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

मुरेला० ना० पु० मोरका बच्चा।

मुर्दा० ना० पु० मुरदा, मेचिरा, अर्बुदर।

मुसकना० अ० क्रि० मुसकाना।

मुलतान० ना० पु० देश वा नगरविशेष।

मुलतानी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, गु० जो मुलतानवासी है।

मुलतानीमिट्टी० ना० स्त्री० पीली मिट्टी प्रसिद्ध।

मुलहट्टी० ना० स्त्री० जेठीमधु।

मुलाई० ना० स्त्री० यंकव।

मुलाना० स० क्रि० मोलठहराना, चुकाना।

मुष्क० ना० पु० अण्डकोश।

मुष्टामुष्टि० ना० पु० घूंसमघूसा।

मुष्टि० ना० स्त्री० मुट्ठी, घूंसा, मुक्का।

मुष्टिक० ना० पु० घूंसा, मुक्का।

मुसकाना० अ० क्रि० मुसके हँसना।

मुसकुराई० ना० स्त्री० हँसी।

मुसकुराना० अ० क्रि० मुसकाना।

मुसल० ना० पु० मूसल।

मुसलमान० ना० पु० मुहम्मदका मतावलम्बी।

मुसाना० स० क्रि० चोरी करवाना।

राजाधिराज० ना० पु० राजाओंमें जो बड़ा राजा।
राजिका० ना० स्त्री० पांति, धियली, समूह।
राजिल० ना० पु० सांप यथा राजिल डिंडिभौ इत्यमरः।
राजी० ना० स्त्री० पंक्ति, पांति।
राजीव० ना० पु० कमल, मछली, पानी, चन्द्रमा, मोती।
राजीवगण० ना० पु० कमलोंका समूह।
राजेश्वर० ना० पु० महीपति, बादशाह।
राज्य० } ना० पु० अधिकार, देश, राज,
राज्यपद० } काज, प्रभुताई, बादशाहत।
राटो० ना० स्त्री० चोरकी बोली बुन्देलखण्ड में।
राठेर० ना० पु० शूरसेन देश।
राठौर० ना० पु० राजपूतोंकी जाति विशेष।
राढ़ा० ना० पु० क्षत्रियों में जाति विशेष।
राढ० ना० पु० गौड़देश का एकखंड जो गंगा के पश्चिममें है, कड़ा।
राढी० ना० पु० राढ देश का ब्राह्मण, कंडी तरकारी।
राणा० ना० पु० राजपूत की जाति विशेष।
राणी० ना० स्त्री० रानी।
रात० ना० स्त्री० रात्रि, निशा।
रातना० स० क्रि० रंगदेना, अ० क्रि० रचना।
राता० गु० रक्त, लाल जो रँगागया, जो रांजा।
रात्रि० ना० स्त्री० रजनी, रैनि, निशा।
रात्रिचर० ना० पु० निशाचर, भूत, प्रेत, चोर, उलूकादि।
रात्र्यन्ध० गु० जो रात्रि में नहीं देखता है यथा उलूक।
राद० } ना० पु० पीव, मज्जा।
राध० }
राधा० ना० स्त्री० वृषभानुसुता, प्रीति, जाति विशेष।
राधानगरी० ना० स्त्री० रेशमीवस्त्र, जो राधानगरमें बनता है।
राधिका० ना० स्त्री० वृषभानुसुता, कृष्णप्रिया।
राना० ना० पु० राय।
रानी० ना० स्त्री० राजा की स्त्री, राणी।
राव० ना० स्त्री० जूती विशेष, वस्तु विशेष जिससे शक्कर बनती है।
रावड़ी० ना० स्त्री० रबड़ी भोजन विशेष।
राम० ना० पु० परशुराम, श्रीरामचन्द्रजी, श्रीबलरामजी, गु० ३।
रामकहानी० ना० स्त्री० रामायण, लम्बा वृत्तान्त।
रामकली० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
रामचन्द्र० ना० पु० श्रीराम, दशरथपुत्र।
रामजनी० ना० स्त्री० नाची, बेश्या, वेश्या विशेष।
रामठ० ना० पु० हींग।
रामतुरई० ना० स्त्री० तोरी, तरकारी विशेष।
रामदुहाई० ना० स्त्री० राम की शपथ।
रामदूत० ना० पु० श्रीहनुमान्जी आदिक।
रामफल० ना० पु० कमरख।
रामराम० ना० पु० प्रणाम वा सलाम विशेष।
रामसर० ना० पु० पौधा विशेष, नरकट विशेष।
रामसेवक० ना० पु० चिरायता।
रामानन्दी० ना० पु० बैरागी, रामानन्द के सेवक।
रामायण० ना० पु० रामधाम, राममार्ग, रामकहानी, ग्रन्थ विशेष।
रामावत० ना० पु० बैरागी, जाति विशेष का मत।
राय० ना० पु० राजा, राणा।
रायता० ना० पु० कद्दू वा रामतुरई को दही में डाल के जो बनाते हैं।
रायबांस० ना० पु० बांस विशेष।
रायबेलि० ना० स्त्री० पुष्पविशेष।

मुकुलित० गु० थोड़ी खिलीहुई कली, फूली मौरयुत, आंब आदि बौर समेत ।
मुकुन्दक० ना० पु० पिस्ता मेवा ।
मुकेल० ना० स्त्री० नकेल ।
मुका० ना० पु० } घूंसा, मुक्का ।
मुकी० ना० स्त्री० }
मुक्त० गु० जिसने मुक्तिपाई, अयन्त्रित ।
मुक्तरसा० ना० स्त्री० रास्ना ।
मुक्ता० ना० पु० मोती; गु० बहुत ।
मुक्तामणि० ना० पु० मोती ।
मुक्तास्फोट० ना० पु० सीपी ।
मुक्ताहल० ना० पु० मोती, शब्दयोग के यथा, मुक्ताहल लिये चोंच लुभायें, मौनरहें की हरियशगावें ।
मुक्ति० ना० स्त्री० मोक्ष, पाप से उद्धार, निस्तार, त्राण, छुटकारा, निजात ।
मुक्तिदाता० ना० पु० मुक्तिदेनेहारा, उद्धारक ।
मुख० } ना० पु० बदन, मुँह ।
मुखड़ा० }
मुखदूषक० ना० पु० पियाज, पलांडु, प्याज ।
मुखमण्डन० ना० पु० तिलककूर्च ।
मुखर० गु० बकवादी, दुष्ट ।
मुखाग्र० } ना० पु० स्मृत, जबानी याद ।
मुखाग्रे० }
मुखान० ना० पु० मुखका बहुवचन ।
मुखिया० } ना० पु० प्रधान, गु० पहिला, बड़ा,
मुख्य० } खास, असल, सर्दार ।
मुगदर० ना० पु० मोगरा, कांधकी मोंगरी विशेष, जिसको फिराते हैं ।
मुग्ध० गु० अज्ञानी, मूर्ख, मकुवा, मूढ़ ।
मुग्धा० ना० स्त्री० कुंवारीकन्या, अज्ञातयौवना, गु० मूढ़ी, मूर्ख ।
मुचुकुन्द० ना० पु० राजा विशेष जो अयोध्या में हुआ है ।
मुजरा० ना० पु० प्रणाम, दण्डवत्, भेंट ।
मुटापा० ना० पु० मोटाई, मोटापन ।
मुट्ठी० ना० स्त्री० हाथ, मुक्का ।
मुठभेर० गु० अति निकट, बहुतपास ।
मुठिया० ना० पु० हाथभर, दस्ता, फब्बंद ।
मुठोलिया० ना० पु० मठोलिया, ठट्ठा ।
मुठोली० ना० स्त्री० ठट्ठा, मठोली ।
मुड़ना० अ० क्रि० टेढ़ाहोना, बलखाना ।
मुड्ड० ना० पु० प्रधान ।
मुड़िया० अ० क्रि० मुड़ना ।
मुण्ड० ना० पु० शिर, मस्तक, मूंड ।
मुण्डधारी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, अघोरी ।
मुण्डन० ना० पु० बालकके पहिले बालबनवाना, मुण्डने का काम ।
मुण्डना० अ० क्रि० बालबनाना, ठगजाना ।
मुण्डला० गु० मूंड़ागया, मुंडिया ।
मुण्डवाना० स० क्रि० बालबनवाना, ठगाना ।
मुण्डा० ना० पु० पतंग का शिर, मूंड, गु० जो मूड़ागया, चन्दला ।
मुण्डाना० स० क्रि० मुंडवाना ।
मुण्डासा० ना० पु० कुछ कपड़ा जो मूंड़ में बांधते हैं, अम्मामा ।
मुण्डित० गु० मुंडला, मुंड़ागया ।
मुण्डिभिक्षा० ना० स्त्री० म्योढ़ी, मुंडी ।
मुण्डिया० ना० पु० शिर, एकप्रकार के साधू ।
मुण्डी० ना० स्त्री० म्योढ़ी, ना० पु० मुंडिया साधू ।
मुण्ड्ड० ना० पु० संन्यासी, गोसाईं ।
मुण्डेर० } ना० स्त्री० छतपर की छोटीभीत
मुण्डेरी० } भीत का सिरा ।
मुतना० गु० बहुत मूतने हारा, लघमुतवा ।
मुतास० ना० स्त्री० मूतने की इच्छा ।
मुतासा० गु० जिसको मूतने की इच्छा है ।
मुद० ना० पु० आनन्द, प्रसन्नता, खुशी ।
मुदा० ना० स्त्री० मोद, मयूर ।
मुदित० गु० हर्षित, आनन्दित, निहाल ।
मुदिर० ना० पु० मेघ, बादल ।

रायरायान्० ना० पु० राजाधिराज।
रायलता० ना० स्त्री० पुष्प, वृक्ष विशेष।
रारि० ना० स्त्री० विरोध, लड़ाई, झगड़ा।
राल० ना० स्त्री० धूना।
राव० ना० पु० राजकुमार, राजा, राय।
रावचाव० ना० पु० विलास, आनन्द।
रावटी० ना० स्त्री० तम्बू विशेष।
रावण० ना० पु० लंकेश, राक्षसपति विशेष।
रावणारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
रावणि० गु० जो रावण से सम्बन्ध रखता है, ना० पु० मेघनाद।
रावत० ना० पु० शूर्मा, वीर, सर्दार।
रावरा० } सर्व० तुम्हारा, आपका।
रावरो० }
रावी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो पंजाब में है।
राशि० ना० स्त्री० ढेर, समूह, मेषादि १२।
राश्यंतर० ना० पु० एकराशि से दूसरी राशि तकका समय।
राष्की० ना० स्त्री० बड़ी कढ़ाई।
राष्ट्र० ना० पु० बसाहुआ देश।
रास० ना० पु० गोपियों के साथ श्रीकृष्णचन्द्रजी की क्रीड़ा पर्वविशेष, राशि ना० स्त्री० बाग सन्देशा लेपालन।
रासचक्र० ना० पु० लग्नमण्डल।
रासधारी० ना० पु० रासकरनेहारे।
रासभ० ना० पु० गधा, खर।
रासभी० ना० स्त्री० गदही, खरकी स्त्री।
रासी० गु० घोड़ा इत्यादि जो न भला हो न बुरा मध्यम, ऐसा वैसा।
रासना० } ना० स्त्री० जो वृक्षपर जमताहै यथा
रास्ना० } बांदा।
राहना० स० क्रि० चक्की में दांत बनाना।
राहु० ना० पु० आठवां ग्रह, दैत्य विशेष जो चन्द्रमा और सूर्यको ग्रासता है।
राक्षस० ना० पु० असुर विशेष कौणप।
राक्षसी० ना० स्त्री० राक्षसकी स्त्री।
राक्षसीवेला० ना० स्त्री० संध्या उपरांतीन मुहूर्त।
रिक्त० गु० खाली, शून्य।
रिचा० ना० स्त्री० ऋचा, वेदमन्त्रका नाम।
रिझवैया० ना० पु० रीझने हारे।
रिझाना० स० क्रि० प्रसन्न करना, खुशकरना, सताना, दुःखदेना।
रितोना० स० क्रि० रीता कराना, छुधा कराना दुर्गंध दूर कराना।
रितु० ना० स्त्री० ऋतु।
रितुराज० ना० पु० ऋतुराज, बसन्त।
रित्तम० ना० पु० मनु विशेष।
रिद्धि० ना० स्त्री० सम्पत्ति, बढ़ती, वृद्धि, ऋद्धि।
रिपु० ना० पु० बैरी, शत्रु, मुद्दई।
रिपुता० ना० स्त्री० शत्रुता, बैर, अदावत।
रिपुंजय० गु० शत्रुजित्, अतिशूर्मा।
रिपुपाक० ना० पु० इन्द्र।
रिपुहा० ना० पु० शत्रुघ्न, गु० शत्रुजित्।
रिषि० ना० पु० ऋषि।
रिषिमित्र० ना० पु० ऋषिमित्र।
रिष्ट० ना० पु० खड्ग, गु० जो निकृष्ट है।
रिष्टपुष्ट० गु० मोटा, स्थूल।
रिस० ना० स्त्री० कोप, क्रोध, खिसियाहट।
रिसना० अ० क्रि० धीमें टपकना।
रिसहा० गु० क्रोधी।
रिसाते० गु० क्रोधयुत, क्रोध करते।
रिसाना० } अ० क्रि० अप्रसन्न वा क्रोधित
रिसियाना० } होना, चिढ़ना, दुःखित होना।
रिच्छ० ना० पु० ऋक्ष, रीछ।
रिक्षराज० } ना० पु० ऋक्षराज, जाम्बव-
रिक्षेश० } न्तादि।
री० अव्य० रे।
रींगना० अ० क्रि० कीटचाल, रेंगना।
रींधना० स० क्रि० पकाना।
रीछ० ना० पु० ऋक्ष, भालु।
रीझ० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, सुख, तृप्ति।

मुदिरनाथ० ना० पु० इन्द्र ।
मुद्ग० ना० पु० मूंग अन्न ।
मुद्गर० ना० पु० मुदगर, मोगरा ।
मुद्रा० ना० स्त्री० छाप, सुवर्ण वा चांदी का रुपया वा मोहर, छल्ला, यन्त्र, अंगूठी ।
मुद्रांकित० गु० जो छापागया ।
मुद्रिका० ना० स्त्री० मुन्दरी, अंगूठी ।
मुद्रित० गु० अनखिला, मुंदा जो छापा गया, सिका जारी कियागया ।
मुनमुन० ना० पु० बिल्ली के पुकारने का शब्द घास विशेष ।
मुनमुनाना० अ० क्रि० बिल्ली का पुकारना, बोझा बदने मुलंजाना ।
मुनि० ना० पु० ऋषि, तपस्वी, विद्वान् ।
मुनिद्रुम० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।
मुनिपट० ना० पु० बकला, भोजपत्रादिके वस्त्र ।
मुनिपति० ना० पु० मुख्य मुनि ।
मुनिपद० ना० पु० शांतपदवी, मुनिका पैर ।
मुनिया० ना० स्त्री० लालपक्षी की स्त्री ।
मुनिवल्लभ० ना० पु० चिरौंजी ।
मुनीन्द्र० } ना० पु० मुनियों का प्रधान,
मुनीश० } अगस्त ।
मुन्था० ना० स्त्री० ज्योतिष में प्रसिद्ध ।
मुन्दना० अ० क्रि० बन्दहोना, मिचना ।
मुन्दरी० ना० स्त्री० अंगूठी, मुंदरी ।
मुमाखी० ना० स्त्री० मधुमाखी ।
मुमुक्षु० गु० मुक्ति खोजनेवाला ।
मुमूर्षु० ना० पु० जो मनुष्य मरने पर है ।
मुर० ना० पु० दैत्यविशेष ।
मुरई० ना० स्त्री० मूली ।
मुरकना० अ० क्रि० ऐंठना, बलपड़ना ।
मुरकाना० स० क्रि० ऐंठना, बलदेना ।
मुरकी० ना० स्त्री० कान का भूषणविशेष ।
मुरचंग० ना० पु० बाजाविशेष ।
मुरझाना० अ० क्रि० मुलजाना, कुम्हलाना ।
मुरण्डाकरना० स० क्रि० जकड़ना, बांधना ।
मुरमुरा० ना० पु० चर्वणविशेष ।
मुरला० गु० पोपला, अर्थात, ना० पु० मोर ।
मुरली० ना० स्त्री० बनसी, बंशी, बांसुरी ।
मुरलीधर० ना० पु० वंशीधर, श्रीकृष्णजी ।
मुरवा० ना० पु० पांव की कलाई, मोर ।
मुरहा० ना० पु० जकड़, ऐंठ, मयूर, बिनामाता पिताका बालक ।
मुरही० ना० स्त्री० ऐंठन, मरोड़, ।
मुराई० } ना० पु० काछी, तरकारी बेचने
मुराऊ० } वाला वा बोनेहारा, कोयरी ।
मुरार० ना० स्त्री० कमल की जड़ ।
मुरारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
मुरेला० ना० पु० मोरका बच्चा ।
मुर्दा० ना० पु० मुर्दौला, मेंचिरा, छछूंदर ।
मुलकना० अ० क्रि० मुसकाना ।
मुलतान० ना० पु० देश वा नगरविशेष ।
मुलतानी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, गु० जो मुलतानवासी है ।
मुलतानीमिट्टी० ना० स्त्री० पीली मिट्टी प्रसिद्ध ।
मुलहट्टी० ना० स्त्री० जेठीमधु ।
मुलाई० ना० स्त्री० अंकुर ।
मुलाना० स० क्रि० मोलठहराना, चुकाना ।
मुष्क० ना० पु० अण्डकोश ।
मुष्टामुष्टि० ना० पु० घूंसमघूंसा ।
मुष्टि० ना० स्त्री० मुट्ठी, घूंसा, मुक्का ।
मुष्टिक० ना० पु० घूंसा, मूका ।
मुसकाना० अ० क्रि० चुपके हँसना ।
मुसकुराई० ना० स्त्री० हँसी ।
मुसकुराना० अ० क्रि० मुसकाना ।
मुसल० ना० पु० मूसल ।
मुसल्मान० ना० पु० मुहम्मदका मतावलम्बी ।
मुसाना० स० क्रि० चोरी करवाना ।

रीझना० अ० क्रि० प्रसन्न वा तृप्तहोना।
रीठा० ना० पु० फल विशेष।
रीठी० ना० स्त्री० छोटा रीठा।
रीढ़० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।
रीता० गु० खाली, रहथ।
रीति० ना० स्त्री० चाल, चलन, प्रकार, कानून, दस्तूरदह।
रीर० ना० रीढ़, रीर।
रिरियाना० अ० क्रि० बालककी रीति से रोना, कुड़कुड़ाना, स० क्रि० गिड़गिड़ाना, खुशामद करना।
रीस० ना० स्त्री० क्रोध।
रुक० ना० पु० रोक, उवियाहट।
रुकना० अ० क्रि० अटकना, बन्दहोना, ठहरना।
रुकवैया० ना० पु० अटकाऊ।
रुकाना० स० क्रि० अटकाना, ठहराना, थिकवाना।
रुकाव० ना० पु० } अटकाव, छेकाव।
रुकावट० स्त्री० }
रुक्म० ना० पु० सुवर्ण, चांदी, रुक्मिणीका भाई।
रुक्मिणी० ना० स्त्री० श्रीकृष्णचन्द्रजीकी पटरानी विशेष।
रुक्मकेश० ना० पु० रुक्मिणीजीका भाई।
रुख० ना० पु० संकेत, इशारह, आज्ञा, मुंह।
रुखाई० ना० स्त्री० छुड़की, तिखाई।
रुखान० ना० पु० बढ़ई का अस्त्र विशेष।
रुखाना० अ० क्रि० रुखापन होना, सुखाना, सूखना।
रुखानी० ना० स्त्री० छोटा रुखान, गु० सूखीहुई।
रुग्न० गु० टेढ़ा, रोगी।
रुच० ना० स्त्री० रुचि।
रुचना० अ० क्रि० भावना, अच्छोलगना।
रुचि० ना० स्त्री० मनोभिलाष, भोजनमें प्रवृत्ति, चाहत, शौक, गोरोचना।
रुचिक० ना० पु० लाहौरीलोन, सोचरलोन।
रुज० ना० पु० रोग विकार।
रुट्० ना० पु० क्रोध, गुस्सा।
रुणि० ना० पु० शब्द।
रुणित० गु० गुंजारित, शब्द करता भया।
रुण्ड० ना० पु० शिर रहित शरीर।
रुदन० ना० पु० रोदन, रोना।
रुदित० गु० रोताहुआ।
रुद्ध० गु० छेका, रुका, बँधा।
रुद्र० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
रुद्राणी० ना० स्त्री० पार्वती।
रुद्रावतार० ना० पु० श्रीहनुमान्जी।
रुद्री० ना० स्त्री० ११ बेलपत्र, ११ शोशनिश।
रुधिर० ना० पु० रक्त, लोहू, खून।
रुधिरा० ना० स्त्री० केसर, जाफरान।
रुपना० अ० क्रि० डटना, अड़ना।
रुपया० ना० पु० रुपैया।
रुपहरा } गु० रूपेका, जो रूपेसे बना है।
रुपहला }
रुपी० गु० डटीहुई, खड़ी।
रुपैया० ना० पु० चांदीकामुद्रा, १६ आनेका।
रुरुदका० ना० स्त्री० खुरासानी अजवाइन।
रुलाना० स० क्रि० रोकना, दुःखदेना।
रुष्ट० गु० क्रुद्ध, क्रोधित।
रुसना० अ० क्रि० रिसना।
रुह० ना० पु० उत्पन्न, जन्मित।
रुहा० ना० स्त्री० कुम्भी तालाव की।
रुहा० ना० स्त्री० दूब घास।
रूक्ष० गु० रूखा, रूढ़ा, खरखरा।
रूक्षिगन्धक० ना० पु० सोचरलोन।
रुइया० ना० पु० रुईका व्योपारी।
रुई० ना० स्त्री० जो कपास से निकलती है।
रूंगट० ना० पु० मैल, मल, बाल, रोम।
रूंधना० स० क्रि० घेरलेना, अ० क्रि० व्याकुलता।

मुस्तवारिधर०, मुस्ता० } ना० पु० नागरमोथा।
मुहरा० ना० पु० हरावल, अगाड़ी, दरवाज़ह।
मुहरी० ना० स्त्री० कोस, छोटापनाला।
मुहाना० ना० पु० नदी का वह स्थान जहाँ समुद्र से मिलती है।
मुहासा० ना० पु० फुनसी, मुँहरसा, महोसा।
मुहीं० सर्व० मोहिं, मुझको।
मुहुर्भाषा० ना० स्त्री० दुःखित वाक्य, पुनः कथन।
मुहुर्मुहुः० अव्य० पुनः पुनः बारंबार।
मुहूर्त्त० ना० पु० दोघड़ी।
मुआ० गु० मरा।
मूंग० ना० पु० अन्नविशेष।
मूंगची०, मूंगरी० } ना० स्त्री० मूंगकी बड़ी।
मूंगा० ना० पु० प्रवाल, विद्रुम।
मूंगिया० ना० पु० मूंगके रंगके तुल्य रंग।
मूंछ० ना० स्त्री० मूछ होंठके ऊपर के बाल।
मूंज० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसकी रस्सी बनाते हैं।
मूड़० ना० पु० मुण्ड, शिर।
मूड़ना० स० क्रि० बाल बनाना, घोटना, शिष्य करना, फुसलाके लूटना।
मूड़ला० गु० मुण्डली, जिसका शिर मूंड़गया।
मूड़ी० ना० स्त्री० शिर, सिरमुण्ड।
मूढ़ा० ना० पु० मोढ़ा।
मूंदना० स० क्रि० बन्दकरना, ढांकना, मीचना।
मूंदरी० ना० स्त्री० मुन्दरी, अँगूठी।
मूह० ना० पु० मुख, वदन।
मूहा० ना० पु० मुखका रोगविशेष।
मूक० गु० गूंगा, जो बात चीत न करसके।
मूका० ना० पु० घूंसा, मोखा, झरोखा, हाथ।
मूकी० ना० स्त्री० घूंसा, मुक्की।
मूछ० ना० स्त्री० मूंछ।
मूछाकड़ा० ना० पु० बड़ी मूंछ।

मूछारा०, मूछैल० } गु० बड़ी मूछवाला।
मूठ० ना० पु० बेंट, दस्ता, कब्ज़ा, हाथ, मर।
मूठा० ना० पु० बेंट, मुट्ठी।
मूठी० ना० स्त्री० मुट्ठा।
मूढ़० गु० मूर्ख, नादान, अहमक़।
मूढ़ता० ना० स्त्री० मूर्खता, उल्लूपन, अहा
मूत० ना० पु० मूत्र, लघुशंका, पेशाब, का
मूतना० अ० क्रि० लघुशंका करना, पे करना।
मूत्र० ना० पु० मूत।
मूत्रफला० ना० पु० खीरा।
मूना० अ० क्रि० मरना, देह तजना, छोड़ना।
मूनू० गु० लघु, छोटा, थोड़ा।
मूर० ना० पु० मूल।
मूरख० गु० मूर्ख।
मूरत० ना० स्त्री० मूर्त्ति।
मूरि० ना० स्त्री० जड़ी, बूटी, पौधा।
मूरिसंजीवन० ना० स्त्री० औषधि, पौ विशेष।
मूरी० ना० स्त्री० मूली।
मूर्ख० गु० मूढ़, अज्ञानी, बोदला।
मूर्खता०, मूर्खताई० } ना० स्त्री० अज्ञानता, दुर्मति नादानी, उल्लूपन।
मूर्छना० ना० स्त्री० रागभेद, मूर्च्छावन्त।
मूर्छा० ना० स्त्री० अचेत होना, तेवर, रा।
मूर्छावन्त० गु० जो मूर्च्छित होगया।
मूर्छित० गु० जो मूर्च्छामें पड़ाहै, मोहित।
मूर्त्ति० ना० स्त्री० प्रतिमा, आकार, पुतलं तसवीर।
मूर्त्तिपूजक० गु० देवपूजक, चातुर्वर्ण्य लो
मूर्त्तिमन्त० गु० आकारवन्त, शरीरधारी।

रूख० ना० पु० वृक्ष, पेड़, बूटा।
रूखड़० ना० पु० योगी विशेष।
रूखड़ा० ना० पु० छोटा वृक्ष।
रूखन० ना० पु० पलुआ, रुखान।
रूखा० गु० सूखा, निरा, रुक्ष, स्नेहरहित।
रूखाई० ना० स्त्री० खरखराहट, खराई।
रूखानी० ना० स्त्री० टांकी, छेनी।
रूखी० ना० स्त्री० खींचर, गु० सूखी।
रूखे० गु० सूखे, विनारस, उदास।
रूचना० अ० क्रि० रुचना।
रूच्य० गु० मनभावित, चाहता।
रूछ० गु० रुक्ष।
रूज० ना० पु० कीट विशेष।
रूझा० गु० जन्तु या पक्षी जिसको रुज सताता है।
रूठना० अ० क्रि० बिगड़ना, झगड़ना, रिसाना, मानकरना।
रूठनी० ना० स्त्री० लजारू, गु० मानवती, झगड़ालू।
रूठा० गु० रिसाना, बिगड़ाहुआ।
रूठारूठी० ना० स्त्री० परस्पर बिगाड़।
रूढ़० ना० पु० कड़ा, अकड़ा, कठोर।
रूढ़ि० ना० पु० वह संज्ञा जो मिश्रित न हो।
रूप० ना० पु० आकार, मुख, चित्र, द्रव, चाल, सुन्दरता, तुल्य, शोभा।
रूपक० ना० पु० सदृश, तुल्य, समान।
रूपजस्त० ना० पु० रांगा।
रूपमञ्जरी० ना० स्त्री० अप्सरा, सदा सुहागिल फूल विशेष।
रूपरई० गु० स्वरूपवश्य।
रूपरस० ना० पु० रूपा जो जलायागया, रूप और रस।
रूपराशि० } ना० स्त्री० सुन्दर स्त्री, अत्यंत
रूपवती० } सुन्दरी।
रूपवान्० गु० सुन्दर स्वरूप, सुघड़।
रूपहला० गु० जो रूपे से बना है।
रूपा० ना० पु० चांदी, रजत, ना० स्त्री० वेश्या, रूपवती।
रूपान्तर० ना० पु० दूसरारूप।
रूपी० गु० आकारवान्।
रूमी० ना० पु० रूमदेशीय मनुष्यादि।
रूमीमस्तगी० ना० स्त्री० औषधि विशेष।
रूरा० गु० अच्छा, सुन्दर।
रूसना० अ० क्रि० रीसना, रूठना।
रूसी० ना० स्त्री० शिरका मैल, ना० पु० रूस देशीय।
रूसक० ना० पु० वासा औषधि विशेष।
रे० अव्य० अरे, हो।
रेंक० ना० स्त्री० गदहे का शब्द।
रेंकना० अ० क्रि० रेंकरना।
रेंगना० अ० क्रि० चलना, कीट चाल।
रेंट० ना० पु० रहट रेंटा।
रेंटा० ना० पु० पोटा, सिनक, नेटा।
रेंड़० ना० पु० } एरण्ड वा उसका बीज।
रेंड़ी० ना० स्त्री० }
रेंदा० ना० स्त्री० छोटीककड़ी।
रेंदी० ना० स्त्री० छोटा खरबूजह।
रेख० ना० स्त्री० लकीर, चिह्न, प्रारब्ध, ललाट।
रेखना० स० क्रि० लकीरकरना, चिह्न बनाना।
रेखा० ना० स्त्री० रेख, लकीर।
रेखागणित० ना० पु० गणित विशेष।
रेखागति० ना० स्त्री० कर्मगति, प्रारब्धकी चाल।
रेचक० ना० पु० वह औषधि जिस में दस्त आते हैं, योग में वह क्रिया जिससे पवन को उतारते हैं।
रेचनी० ना० स्त्री० नरपत्री जो दस्त उपजाते।
रेचा० ना० स्त्री० कपाला।
रेड़० ना० स्त्री० चिह्न, निशान।
रेणु० ना० स्त्री० धूलि, खाक।
रेणुका० ना० स्त्री० परशुराम की माता, गंगा जी का रेता, धूलि, बालू।

रेणुपित्तहा० ना० पु० पित्तपापड़ा।
रेत० ना० पु० वीर्य, बीज, बालू, छीलन।
रेतः० ना० पु० वीर्य, कामदेव।
रेतना० स० क्रि० सोहनकरना, छीलना, ओंदना।
रेतल० } गु० जहां बहुत रेतहोवे।
रेतला० }
रेता० ना० पु० बालू, रेत, गु० छीलाभया।
रेताई० ना० स्त्री० रेतने का काम वा दाम।
रेतियाना० स० क्रि० रेतना, चिकना करना।
रेती० ना० स्त्री० जहां अधिक रेतहो, रेतने का हथियार।
रेतीला० गु० बालूया, किरकिरा।
रेतुआ० ना० पु० रेतनेहारा।
रेफ० ना० पु० रकार के आगे का वर्ण।
रेर० ना० पु० शोर, हल्ला।
रेलना० स० क्रि० ठेलना, ढकेलना, पेलना।
रेलपेल० ना० स्त्री० बहुतात, सरसाई, भीड़।
रेला० ना० पु० अहिला, बाढ़, पशुओं की पांति, ढकेल, पेला, झपट, दला।
रेवड़ी० ना० स्त्री० तिलमिलित मिठाई विशेष।
रेवत० ना० पु० राजा विशेष, रेवती का बाप।
रेवती० ना० स्त्री० सत्ताईसवें नक्षत्र, श्रीबलदेवजी की पत्नी।
रेवतीरमण० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
रेवन्दचीनी० } ना० स्त्री० औषधि विशेष।
रेवन्दचीनी० }
रेवा० ना० पु० नर्मदानद। ना० स्त्री० नदी विशेष।
रेह० ना० स्त्री० रेहन।
रेहड़ू० ना० पु० लदिया।
रेहा० ना० स्त्री० रेह।
रेहू० ना० स्त्री० ऊसर भूमिकी मिट्टी।
रेंकना० अ० क्रि० रेंकना।
रैन० } ना० स्त्री० रात, निशा।
रैनि० }
रैनिचर० ना० पु० निशाचर।
रैनिचर्ण० गु० काला, श्याम।
रैवत० ना० पु० मनु विशेष।
रोआई० ना० स्त्री० विलाप, हाहाकार।
रोआना० स० क्रि० रोलाना, सताना, कुढ़ाना, अ० क्रि० कुढ़ना, खिसियाना।
रोआं० ना० पु० रोम।
रोंगटी० ना० स्त्री० झगड़ा, छल, ठगविद्या।
रोंटना० स० क्रि० मुकरना।
रोपना० स० क्रि० लगाना, जमाना, गाड़ना।
रोक० ना० स्त्री० टोक, अटक, विघ्न, नकद।
रोकड़० ना० स्त्री० जो रुपया अपने पास जमा है।
रोकड़िया० ना० पु० रोकड़ रखनेहारा।
रोकन० ना० स्त्री० ओट, आड़, छेकन।
रोकना० स० क्रि० घेरना, थांभना, छेकना, अटकाना, बातकाटना।
रोकू० ना० पु० रोकनेहारा।
रोग० ना० पु० व्याधि, दुःख, विकार, बीमारी।
रोगरिपु० ना० पु० वैद्य, धन्वन्तरि, औषधि।
रोगहा० } गु० वैद्य, औषधि।
रोगहारी० }
रोगाह्वय० ना० पु० कूट औषधि।
रोगिया० } गु० व्याधी, दुःखी, बीमार, मरीज।
रोगी० }
रोच० ना० पु० खुशी।
रोचक० ना० पु० पाचक, जो रुचि उपजावे।
रोचन० ना० पु० तिलक, गोरोचन, मनभावन।
रोचनरक्त० ना० पु० कपाला।
रोचना० ना० पु० गोरोचना, तिलक, स० क्रि० रुचना, भावना।
रोचिष० ना० पु० मनु विशेष।
रोज० } ना० पु० विलाप, रोना।
रोजड़ा० }

लूटना० स० क्रि० बरबस छीनलेना, उड़ाना, गवाना।
लूटालूट० ना० स्त्री० लूटने का काम।
लून० ना० पु० लवण, लोन, नमक।
लुनिया० ना० पु० लोन बनानेहारा, जाति-विशेष, पौधाविशेष, गु० लोना।
लूनी० ना० स्त्री० मक्खन, लोना।
लूता० ना० स्त्री० मकड़ी, व्याधिविशेष।
लूम० ना० स्त्री० पुच्छ, पूंछ, दुम।
लूला० गु० टुण्डा।
लूह० ना० स्त्री० लू।
लूहर० ना० पु० लुकेठा, लूक, पतिततारा।
ले० अव्य० से, तक, तलक।
लेई० ना० स्त्री० चेहार, जो कपड़ा आदि में लगाते हैं।
लेंड़ी० ना० स्त्री० मेंगनी, बकरी आदि की विष्ठा।
लेंढ़ा० ना० पु० गेदरे।
लेख० ना० पु० लिखना, लिखित, तहरीर।
लेखक० ना० पु० लिपिकर, लिखनेहारा।
लेखन० ना० पु० लिपि, लिखाई।
लेखनी० ना० स्त्री० क़लम, लिखनी।
लेखर्षभ० ना० पु० इन्द्र, देवराज।
लेखा० ना० पु० देवता, गिनती, हिसाब, बीजक।
लेख्य० ना० पु० पत्र, चिट्ठी, लिखागया, लिखने के योग्य।
लेख्यपत्र० ना० पु० भोजपत्र।
लेजाना० स० क्रि० ढोना, लेभागना, जीतना।
लेट० ना० स्त्री० चूनादि वस्तु भीतपर लगाने के लिये।
लेटना० अ० क्रि० पौढ़ना, सोना, पड़ना।
लेनदेन० ना० पु० व्यवहार, व्यापार।
लेना० स० क्रि० ग्रहण करना, पकड़ना, छूना।
लेपकना० स० क्रि० संगपड़ना, मैथुन करना, अपने कलङ्क में दूसरे को फँसाना।
लेपना० स० क्रि० पातना, चुपड़ना।
लेपालक० ना० पु० धर्मका पुत्र, पोष्यपुत्र।
लेपालना० स० क्रि० बेटा करके लेना, पोष्य-पुत्र करना।
लेमरना० अ० क्रि० कलङ्क लगाना, दोषदेना।
लेयमान० गु० जो लेनेवाला है।
लेरू०, लेरुआ० ना० पु० बछरा।
लेला० ना० पु० भेड़ी का बच्चा।
लेलिह० ना० पु० सांप, सर्प।
लेलीतिक० ना० पु० गन्धक।
लेलुट० गु० लेया लूट, लहलूट।
लेलेना० स० क्रि० ग्रहणकरना, छीन लेना।
लेव० ना० पु० भीतकी पपड़ी जो गिरने योग्य है, एक बारका कराव।
लेवा० ना० पु० छोटा पोलरा, लेनेहारा, धन, लीरी, रोटी पकाने के बर्तनों पर जो मिट्टी लगाते हैं।
लेवादेई० ना० स्त्री० लेनदेन, कहाउनी।
लेवार० ना० पु० गीलीमिट्टी जो दीवार में लगाते हैं।
लेवारा० ना० पु० लेवा में लोटना।
लेवास० ना० पु० लट।
लेवैया० ना० पु० लेनेहारा।
लेश० गु० छोटा, थोड़ा, ना० स्त्री० छोटाई।
लेस० ना० पु० भूसा मिली मिट्टी की भीतमें लगावट, लीप पोत।
लेसना० स० क्रि० लीपना, पोतना, सुलगाना, बालना, झगड़ा उठाना।
लेसालेस०, लसौआ० ना० पु० लीपा लीर।
लेह० ना० स्त्री० शीघ्रता, उतावली, चटापट।
लेहन० ना० पु० चाटना।

रोट० } नाः पु० मोटी रोटी, श्रीहनुमानजी
रोटा० } का मोटी रोटीका नैवेद्य।
रोटी० नाः स्त्री० भोजन विशेष।
रोड़ा० नाः पु० बड़ा कंकर।
रोड़ी० नाः स्त्री० छोटा कंकर।
रोदन० नाः पु० रोवाई, आंसू निकलना।
रोदसी० नाः स्त्री० भूमि, आकाश।
रोध० नाः पु० तीर, तट, रोक, घिराव।
रोधी० गु० रोकनेहारा, घेरनेहारा, तटवाला।
रोना० अ० क्रि० आंसूडालना, विलापना, उदास होना, नाः पु० विलाप, रोदन, शोक।
रोपक० नाः गु० जो रोपणकरे।
रोपण० नाः पु० वृक्षादि का लगाना।
रोपना० स० क्रि० रोपना, रोकना, अटकाना।
रोम० नाः पु० शरीर के बाल, ऊन।
रोमकर्ण० नाः पु० चौगड़ा, खरगोश।
रोमकूप० नाः पु० रोमकी जड़।
रोमपट० } नाः पु० रोमीवस्त्र, यथा कम्बल,
रोमवस्त्र० } दुशाला इत्यादि।
रोमल० नाः पु० डाँडस, तमालपत्र, प्रखर।
रोमसफला० नाः स्त्री० डाँडस।
रोमहर्पण० } नाः पु० रोम खड़े होना,
रोमाञ्च० } गदगद।
रोरी० नाः स्त्री० जिसका शिरमें टीका लगाते हैं, रोली।
रोलना० स० क्रि० रन्दाकरना, चिकनाना, चुंथी।
रोली० नाः स्त्री० रोरी, चावल और हल्दी और फटकरी की मिलौनी जिसका लाल तिलक माथेपरलगाते हैं।
रोवना० अ० क्रि० रोना, गु० रोनेहारा।
रोश० } नाः पु० क्रोध, दुःख, गुस्सह।
रोष० }
रोषण० नाः पु० फालसा, पारा, क्रोध।
रोप० नाः पु० रोष।
रोसना० अ० क्रि० रूठना।
रोहट० नाः स्त्री० रोदन।
रोहण० नाः पु० राजा विशेष, रोहिणी का पिता।
रोहिणी० नाः स्त्री० श्रीबलदेवजी की माता, चौथा नक्षत्र, बुधकी माता, हर्र, कुटकी।
रोहित० नाः पु० मत्स्य विशेष।
रोहिताश्व० नाः पु० राजा हरिश्चन्द्रका पुत्र।
रोहित्य० नाः पु० मेथी।
रोहिये० स० क्रि० धारण करिये।
रोही० नाः पु० बरगद।
रोहू० नाः पु० मत्स्य विशेष।
रोहेलखण्ड० नाः पु० बांसबरेली के आस पासका देश।
रौंदना० } स० क्रि० पांवसे खूंदना वा पांव
रौंधना० } से मींजना वा मसलना या मलना।
रौताई० नाः स्त्री० लड़ाई, समर, युद्ध।
रौद्र० नाः पु० आंक, क्रोध, धूप, गु० भयानक, कठिन, नाः पु० शृंगारादि नवरस में से एक का नाम।
रौप्य० नाः पु० चांदी, रजत।
रौर० नाः पु० रौला, जस।
रौरव० नाः पु० नरकका खण्ड विशेष।
रौरा० सर्व० तुम्हारा।
रौला० नाः पु० धूम धाम, बखेड़ा, हुल्लड़।
रौव्य० नाः पु० मन्त्र विशेष।
रौहिणीय० } नाः पु० श्रीबलदेवजी, बुध।
रौहणेय० }

[ल]

लकड़० नाः पु० काष्ठ, काठ, लठ।
लकड़हारा० नाः पु० लकड़ी बेचनेहारा।
लकड़ा० नाः पु० गिरर, लकड़ीका बड़ाटुकड़ा।
लकड़ी० नाः स्त्री० लाठी, काष्ठ, इन्धन, गु० कड़ा, कठिन।
लकीर० नाः स्त्री० रेखा, धारी, डँकीर।
लकुट० नाः पु० छड़ी, लाठी।
लकुच० नाः पु० बड़हल।

वायुजात० } वायुपूत० } ना० पु० श्रीहनुमान, भीमसेन।
वाय्वग्नि० ना० पु० पवन और अग्नि।
वार० ना० पु० ठोकर, घाव, इसपार, दिन।
द्वार० ना० स्त्री० अवकाश, विलम्ब, समय, धीरजता।
वारण० ना० पु० वर्जन, निषिद्धता, रोकने, न्योछावर, हाथी।
वारद० ना० पु० कपास।
वारन० स० क्रि० अर्पण, भेंट, बलि, हाथी।
वारना० स० क्रि० घेर लेना, अर्पण करना, भेंट चढ़ाना।
वारवधू० } वारस्त्री० } ना० स्त्री० वेश्या, पतुरियां, पुंश्चली।
वारा० ना० पु० सस्तांई, बचाव, निछावर, गु० सस्ता, लाभ।
वारापार० अव्य० इधर से उधर तक।
वाराणसी० ना० स्त्री० काशी, बनारस।
वारि० ना० पु० जल, पानी।
वारिचर० ना० पु० मछली आदि।
वारिचरकेतु० ना० पु० कामदेव, श्रीवल्लदेवजी।
वारिज० ना० पु० कमल, संमुद्र लवण, गु० जो जल से उत्पन्न हो।
वारिद० ना० पु० मेघ।
वारिदनाद० ना० पु० मेघनाद, रामायणे यथा (वारिद नाद जेठ सुत तासू, भटमहं प्रथम रेख जग जासू)
वारिधर० ना० पु० मेघ।
वारिधि० ना० पु० समुद्र।
वारिवल्ली० ना० स्त्री० करेला, तरकारी।
वारिविहंग० ना० पु० जलके पक्षी।
वारिशुक्ति० ना० पु० कौड़ी।
वारिसंभव० ना० पु० लाग।
वारीश० ना० पु० समुद्र।
वारुणी० ना० स्त्री० मदिरा विशेष, पश्चिम दिशा, गंगाजीका पर्व विशेष, दूब घास विशेष, हाथीकी चाल, पचीसवां नक्षत्र।
वारे० अव्य० लागे, छोड़े।
वार्ता० ना० स्त्री० वृत्तांत, बात, बातचीत।
वार्ताकी० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
वार्तिक० ना० पु० मूलग्रन्थ का पूरकग्रन्थ, जो छन्दोंसे रहित, ग्रंथ, बातों में।
वार्तिका० ना० स्त्री० भंटा, बैगन।
वार्द्धक्य० ना० पु० बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
वार्षि० गु० संवती, वर्षका, जो बरसातमें उपजता है, जो बरसात के योग्य है।
वाल्य० ना० पु० बालकपन, बालकता।
वावदूक० ना० पु० बड़ावक्ता, वाचक, गुणी।
वाष्प० ना० पु० बाफ, भाफ।
वार्ष्पिका० ना० स्त्री० कालाजीरा।
वास० ना० पु० घर, बसने का स्थान, बास।
वासना० ना० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, अ० क्रि० महकना।
वासन्ती० ना० स्त्री० लता विशेष, चैत्रमास में कामदेवका पर्व विशेष।
वासर० ना० पु० दिन, दिवस।
वासव० ना० पु० इन्द्र, देवराज।
वासांसि० ना० पु० वस्त्र, कपड़े।
वासा० ना० पु० बासा।
वासित० गु० सुगन्धि संयुक्त, वस्त्रयुत।
वासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेहारा।
वासुकि० ना० पु० सर्पराज, प्रधान सर्प।
वासुदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
वास्तव० अव्य० यथार्थ, तात्पर्य्य, असल।
वास्तव्य० गु० बसने के योग्य।
वास्तिका० ना० स्त्री० मेथीका शाक या मेथी।
वास्तुक० ना० पु० बथुआ का साग।
वास्तुकाकार० ना० पु० पालक का साग।
वास्तूक० ना० पु० बथुआ का शाक।

लख० ना० पु० मायाका पसार, गु० जो देखा जावे मौजूदात, लाख।
लखन० ना० पु० लषण, लक्ष्मण।
लखनऊ० ना० पु० अवधदेश की राजधानी।
लखना० स० क्रि० देखना, समझना।
लखपति० } गु० धनी, भाग्यवान्, जिसके पास
लखपती० } लाखों रुपया हो।
लखलुट० गु० उड़ाऊ।
लखा० ना० पु० लाखों।
लखाऊ० गु० जनाऊ, दिखाऊ।
लखिया० ना० पु० देखनेहारा।
लखेरा० ना० पु० लहेरा, लाख चढानेहारा।
लखौटा० गु० जिसमें लाख लगाई गई।
लग० अव्य० तक, पर्यन्त, समीप, ना० स्त्री० छड़ी।
लगचलना० अ० क्रि० साथ साथ चलना, जल्द चलना।
लगड़० ना० पु० पक्षी विशेष।
लगन० ना० स्त्री० लग्न।
लगना० अ० क्रि० होना, सोहना, फबना, सहीहोना, भिड़ना, मिलना, जलना, गु० लगुआ, ना० पु० लगाव।
लगभग० अव्य० आस पास, निकट।
लगातार० गु० एकपर एक तावड़तोड़।
लगाना० स० क्रि० उतराना, पासकरना, मिडाना, मिलाना, बन्दकरना, लेसना, बांधना, चिपटाना, कहासुनी करना।
लगाव० ना० पु० गढ़ाव, मेल, सम्बन्ध।
लगावट० ना० स्त्री० मिलान, गठावट।
लगुड़० ना० पु० लाठी।
लगुआ० } ना० पु० यार, धगड़।
लगूआ० }
लग्गा० ना० पु० स्नेह, माया, बड़ा बांस।
लग्गी० ना० स्त्री० छोटाबांस, लाठी।
लग्न० ना० स्त्री० निमिष, पल, राशिका उदयकाल, प्रेम, मित्रता, विवाह का दिन, मुहूर्त।
लग्नेष्ट० ना० पु० लग्नका ठीक।
लग्नेप्सित० गु० लग्न विचारित।
लग्नोत्सव० ना० पु० विवाहका आनन्द।
लघिमा० ना० स्त्री० सिद्धिविशेष।
लघिष्ठ० गु० पास, पासवाला, लगाहुआ।
लघुता० ना० स्त्री० छोटाई, हलकापन और शीघ्रता, जल्दी, रामचन्द्रिकायां यथा, (कोटि भांतिन पौनते मनते महालघुता लसै, बैठके ध्वज अग्र श्रीहनुमन्त अंतक ज्यों हँसै)।
लंक० ना० पु० कटि, लंका, गु० देर, बहुत।
लंकना० ना० पु० लम्बा, चौगड़ा, शशा।
लङ्कनायक० } ना० पु० लंकाका राजा, राम
लंकप० } चन्द्रिकायां यथा (लंकनायक को विभीषण देवदूषणको दहै)।
लंका० ना० स्त्री० उपद्वीप विशेष।
लंकाधिप० } ना० पु० रावण, लंकाकाराजा।
लंकापति० }
लंकिनी० ना० स्त्री० निशाचरी विशेष।
लंकेश० } ना० पु० रावण, लंका का
लंकेश्वर० } राजा।
लंग० } गु० पंगु, अपाहज।
लंगड़ा० }
लंगड़ाना० अ० क्रि० लंगकरना।
लंगर० ना० पु० नौकादि के ठहराने के लिये बड़ाभारी लोह, लंगड़ा, ढीट।
लंगरी० ना० स्त्री० थाली।
लंगूचा० ना० पु० खाने की वस्तुविशेष।
लंगूर० ना० पु० वानरविशेष, हनुमानजी।
लंगोट० } ना० पु० काछ बांधने का छोटा
लंगोटा० } वस्त्र, कौपीन।
लंगोटिया० ना० पु० जो लड़कांका यार है।
लंगोटी० ना० स्त्री० लंगोट।
लंघन० ना० पु० उपास, फाका, उल्लंघन, न मानना, नांघना।
लंघना० अ० क्रि० उछलना, फांदना, नांघना।

वास्तोःपति०
वास्तोष्पति० } नाम० पु० इन्द्र, अमर कोषे यथा। (वास्तोष्पतिस्सुरपतिर्बलारातिश्शचीपतिः)।

वाह० नाम० पु० घोड़ा, बाजी।

वाहक० नाम० पु० घुड़सवार।

वाहन० नाम० पु० घोड़ा, जिसपरजदके जाया जाय, सवारी।

वाहवैरी० नाम० पु० भैंसा।

वाहि० सर्व० उसको।

वाहिनी० नाम० स्त्री० वाहिनी, सवारी।

बाहु
बाहू } नाम० पु० भुज।

बाहुमूल० नाम० पु० हाथ।

बाह्य० गु० बाहर का।

बाह्यालय० नाम० पु० मन्दिर के बाहर वा बाहर का।

वि० अव्य० यह शब्द उपसर्ग है उसका अर्थ कभी निर्णय कभी भिन्नता कभी विरोध कभी विशेषण कभी हीन इत्यादि होता है।

विकट० गु० विकट।

विकराल० गु० विकराल, भयंकर।

विकल० गु० व्याकुल, अधूरा।

विकलित० गु० विकल, व्याकुल।

विकल्प० नाम० पु० चूक, सन्देह, विचार।

विकशित०
विकसित० } गु० प्रफुल्लित, फूलाहुआ।

विकार० नाम० पु० बदल, रोग, स्वभाव की बदल।

विकाल० नाम० पु० गोधूलि, सायंकाल।

विकाश० नाम० पु० प्रकाश।

विकीरण० नाम० पु० मदार वृक्ष, आक।

विकीर्ण० गु० फैलाया गया।

विकृत० गु० विरोधी, मलीन; नाम० पु० घृणा।

विकृति० नाम० स्त्री० विचार वा स्वभाव आदि की बदल।

विक्रम० नाम० पु० पराक्रम, शूरता, वीरता।

विक्रमादित्य० नाम० पु० राजा विशेष जिसने संवत् चलाया है।

विक्रय० नाम० पु० बिक्री।

विक्रीत० गु० जो बिकाया।

विक्रेता० नाम० पु० बेचवैया, बेचनेहारा।

विख्यात० गु० प्रकट, प्रसिद्ध, प्रकाशित।

विगत० गु० रहित, बिना, विहीन।

विगति० नाम० स्त्री० बिगाड़, बुराई, विरोध।

विगन्ध० नाम० स्त्री० कुवास, बदबू।

विगुण० नाम० पु० औगुण, अवगुण।

विग्रह० नाम० पु० शरीर, फैलाव, वैर, युद्ध।

विघटन० नाम० पु० तोड़न, सम्पूर्ण करण।

विघटित० गु० पूराकियागया, घटायागया।

विघ्न० नाम० पु० अटकाव, रुकाव, भूल, चूक, धोखा, शुभकर्म में जो बाधा।

विघ्नराज०
विघ्नविदारण०
विघ्नहरण० } नाम० पु० श्रीगणेशजी।

विचरण० नाम० पु० पर्यटन, सैर, विहार फिराव।

विचरित० गु० विहारित।

विचल० गु० चलायमान, चंचल, निरथिर।

विचलित० गु० चलायमान, चंचल, अथिर।

विचक्षण० गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, स्याना।

विचार० नाम० पु० ध्यान, सोच, तर्क, चिंता, कल, ज्ञान।

विचारक० गु० पु० विचार करनेहारा।

विचारित० गु० जो विचारागया, निर्णीत।

विचारी० नाम० पु० विचारक।

विचार्य० गु० जो विचारने के योग्य है।

विचित्र० गु० रंगारंग, नानाप्रकार का, मनोहर।

विच्छेद० नाम० पु० वियोग, निवारण।

विजय० नाम० पु० जय, जीत, फतह, ममोठ, पार्षद विशेष जो हिरण्यकश्यप हुआ था।

लंघनी॰ ना॰ स्त्री॰ उपासी, गु॰ उपासा, भूखा।
लचक॰ ना॰ स्त्री॰ लिमड़ाहट।
लचकना॰ अ॰ क्रि॰ टेढ़ा होना।
लचका॰ ना॰ पु॰ धक्का, झोंक, नाच विशेष।
लचकाना॰ स॰ क्रि॰ टेढ़ाकरना, धक्का देना, झुकाना।
लचना॰ अ॰ क्रि॰ टेढ़ाहोना।
लचलचाना॰ अ॰ क्रि॰ लजलजहोना, चिमड़ा होना।
लचर॰ ना॰ पु॰ थनाड़ी।
लचाना॰ स॰ क्रि॰ टेढ़ा करना।
लच्छा॰ ना॰ पु॰ फेटी।
लच्छन॰ ना॰ पु॰ लक्षण।
लजलजा॰ गु॰ ललखला, चिपचिपा।
लजलजाना॰ अ॰ क्रि॰ पिलपिला होना।
लजवाना॰ स॰ क्रि॰ संकोच कराना, शरमाना।
लजाना॰ अ॰ क्रि॰ संकोचना, लज्जितहोना।
लजारू॰ } ना॰ स्त्री॰ लज्जावन्ती, पौधा
लजालू॰ } विशेष, गु॰ संकोची, लजीला।
लजियाना॰ अ॰ क्रि॰ लजाना।
लजीला॰ गु॰ लाजवन्त, संकोची।
लज्जा॰ ना॰ स्त्री॰ लाज, संकोच, हया।
लज्जावान्॰ गु॰ संकोचित, लाजयुक्त।
लज्जित॰ अ॰ क्रि॰ लजाकर।
लज्जिका॰ ना॰ स्त्री॰ लजालु, वेश्या।
लज्जित॰ संकोचित, लाजयुक्त।
लट॰ ना॰ स्त्री॰ केश, जो उलझगया है।
लटंक॰ ना॰ स्त्री॰ हिलन, कांवलीका प्रकारविशेष।
लटकन॰ ना॰ पु॰ गहना विशेष जो नथ में पड़ता है, फल विशेष, पक्षी विशेष, घरोंचा।
लटकना॰ अ॰ क्रि॰ हिलना।
लटका॰ ना॰ पु॰ टोना, झाड़फूंक, टोटका, चुटकुला।
लटकाना॰ स॰ क्रि॰ हिलाना, टांगना।
लटकाव॰ ना॰ पु॰ टंगाव।
लटपटा॰ गु॰ चंचल, खिलाड़, पगड़ी जो अनरीति से बांधी है।
लटपटाना॰ अ॰ क्रि॰ लड़खड़ाना, ठोकरखाना।
लटपटी॰ ना॰ स्त्री॰ [illegible]
लटा॰ गु॰ •
लटाई॰ ना॰ स्त्री॰ परेती, चर्खी, गु॰ दुर्बलपना।
लटापटा॰ गु॰ ऐसा वैसा।
लटूरिया॰ } ना॰ स्त्री॰ छोटे केश जिन में
लटूरा॰ } लट पड़जाती है।
लटोरा॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष।
लट्टू॰ ना॰ पु॰ भौंरा, चकी, मोहित।
लट्टूहोना॰ अ॰ क्रि॰ किसीपर मोहित होना।
लठ॰ ना॰ पु॰ सोंटा, लाठी।
लठालठी॰ ना॰ स्त्री॰ परस्परलाठी की लड़ाई।
लठियाना॰ स॰ क्रि॰ लठालठी करना, लाठी से पीटना।
लठ्ठर॰ ना॰ पु॰ गु॰ ढीला, टेढ़ा।
लड़॰ ना॰ स्त्री॰ पद, पंक्ति, लड़ी, यथा पद।
लड़कपन॰ ना॰ पु॰ शैशव, बालकता, लड़काई।
लड़कबुद्धि॰ ना॰ स्त्री॰ निर्विज्ञापन, लड़के कीसी बुद्धि।
लड़का॰ ना॰ पु॰ बालक, पुत्र, बच्चा।
लड़काई॰ ना॰ स्त्री॰ } लड़कपन, बालकता,
लड़कापन॰ ना॰ पु॰ } शिशुता।
लड़खड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ डगमगाना, लड़बड़ाना।
लड़ना॰ स॰ क्रि॰ झगड़ना, युद्धकरना।
लड़बड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ लड़खड़ाना।
लड़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ युद्ध, समर, झगड़ा।
लड़ाक॰ } गु॰ झगड़ालू, युद्धदाता, वीर।
लड़ाका॰ }

विजयदशमी॰ ना॰ स्त्री॰ आश्विन शुक्ला१०, कार सुदी १० ।

विजयनर॰ ना॰ पु॰ अर्जुन ।

विजया॰ ना॰ स्त्री॰ भंग, बूटी ।

विजयी॰ गु॰ जयवन्त, जीतनेहारा ।

विजाती॰ } **विजातीय॰** } गु॰ भिन्न जातिका, अनजाति ।

विजान॰ ना॰ पु॰ अजान, अज्ञान, अबूझ, मूर्ख ।

विट्॰ ना॰ पु॰ बीट ।

विट्चर॰ ना॰ पु॰ शूकर, परेला ।

विटप॰ ना पु॰ वृक्ष, पल्लव, पेड़, रामायणे यथा (पुलपकुंयोगी ज्यों उरगारी, मोह-विटप नहिं सकत उपारी।)

विडम्ब॰ ना॰ पु॰ दुःख, क्लेश, छलना ।

विडम्बना॰ ना॰ स्त्री॰ दुःखदायक, निज बड़ाई वा निन्दायुत वचन ।

विडम्बित॰ गु॰ दुःखित, पतित, निन्दित ।

विडाल॰ ना॰ पु॰ मार्जार, बिलार ।

वितण्डा॰ ना॰ स्त्री॰ खण्डिताई ।

वितन॰ ना॰ पु॰ कामदेव ।

वितरण॰ ना॰ पु॰ दान, त्यागना, पार का उतरना ।

वितल॰ ना॰ पु॰ पाताल विशेष ।

वितस्ता॰ ना॰ स्त्री॰ व्यासानदी विशेष, जो पंजाब में है ।

वितस्ति॰ ना॰ पु॰ बारहअंगुल, बालिश्त ।

वितान॰ ना॰ पु॰ विस्तार, चन्दवा, तम्बू, मण्डप ।

वितुन्न॰ ना॰ पु॰ धनियां ।

वितृष्णा॰ ना॰ स्त्री॰ निराश, वैराग्य, तृष्णा, अरुचि ।

वित्त॰ ना॰ पु॰ धन, दौलत, द्रव्य, खजाना ।

विथक॰ } **विथकित॰** } गु॰ चकित, भवाडम्रा ।

विद्॰ गु॰ जाननेहारा ।

विदग्ध॰ ना॰ पु॰ लम्पट, गु॰ चतुर, विभ्रमयुक्त ।

विदग्धा॰ ना॰ स्त्री॰ लम्पट स्त्री, चतुर स्त्री ।

विदारण॰ ना॰ पु॰ फाड़ना ।

विदारना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना, चीरना ।

विदारिका॰ ना॰ स्त्री॰ विदारीकन्द ।

विदारिगन्धा॰ ना॰ स्त्री॰ शालिपर्णी ।

विदिक्॰ ना॰ स्त्री॰ आग्नेयादि कोण, विदिशा ।

विदित॰ गु॰ प्रकट, जो जानागया, प्रसिद्ध ।

विदिशा॰ } **विदिश॰** } ना॰ स्त्री॰ विदिक् ।

विदीर्ण॰ गु॰ फाड़ा, चीरा, फटाटूटा ।

विदुर॰ ना॰ पु॰ दासीसुत, हरिभक्त विशेष ।

विदुष॰ गु॰ पण्डित, गुणी ।

विदूषक॰ ना॰ पु॰ भांड़, निन्दक ।

विदेश॰ ना॰ पु॰ अनदेश, परदेश, विलायत ।

विदेशी॰ ना॰ पु॰ परदेशी, विलायती ।

विदेह॰ ना॰ पु॰ राजा जनक, कामदेव ।

विदेहजा॰ ना॰ स्त्री॰ सीताजी ।

विदैवत॰ ना॰ पु॰ देवता ।

विद्यमान॰ गु॰ वर्त्तमान, असत, मौजूद ।

विद्या॰ ना॰ स्त्री॰ शास्त्रका ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, इल्म, हुनर, गुण, शिक्षादिक १४ ।

विद्याधर॰ ना॰ पु॰ देवता विशेष, गु॰ पण्डित, गुणी, कारीगर ।

विद्यावान्॰ गु॰ ज्ञानवान् पण्डित, आलिम ।

विद्यार्थी॰ ना॰ पु॰ छात्र, शिष्य, गु॰ पढ़नेहारा ।

विद्यालय॰ ना॰ पु॰ पाठशाला, विद्या का घर ।

विद्युत्॰ ना॰ स्त्री॰ बिजली, कौंदा ।

विद्युत्क्ता॰ ना॰ स्त्री॰ कलिहारी ।

विद्युल्लता॰ ना॰ स्त्री॰ बिजली, कौंधा ।

विद्रुम॰ ना॰ पु॰ मूंगा ।

विद्वद्विनोद॰ ना॰ पु॰ शास्त्रार्थ, गुण विद्याकी चर्चा पण्डितों में ।

विद्वान्॰ गु॰ विद्यावान्, पण्डित, पढ़ा ।

लड़ाना० स० क्रि० लड़ाई वा युद्ध करवाना, और लाड़ करना।

लड़ियाना० स० क्रि० पिरोना, गूंथना।

लड़ी० ना० स्त्री० मोतियों की सलैक।

लड़ैता० गु० दुलारा, बहुतप्यारा, ढीठ।

लड्डू० ना० पु० मोदक जो मोठआदिके बनते हैं, मिठाई विशेष।

लढ़ा० ना० पु० } छकड़ा, लहडू।
लढ़िया० स्त्री० }

लढ़ी० ना० स्त्री० छोटाछकड़ा, लढ़िया।

लण्ठ० ना० पु० मूर्ख।

लण्ड० ना० पु० लिंग, लौड़ा।

लण्डूरा० गु० लुण्डा, पाँड़ा, बन्धुहीन, अनाथ।

लत० ना० स्त्री० बुरीचाल, आदत।

लतना० स० क्रि० घोड़ी का घोड़ेके साथ प्रसंग होना।

लतरी० ना० स्त्री० पुरानी जूती, दालिहन्नविशेष।

लता० ना० स्त्री० बेल, प्रियंगु, दाखका सीधा।

लताड़ना० स० क्रि० दौड़धूप कराना, हलका करना, तुच्छ करना।

लताना० स० क्रि० घोड़ी से घोड़ेका प्रसंग कराना।

लतिका० ना० स्त्री० लता।

लतिया० गु० जिसकी चालबुरी है, कुचर्मी।

लतियाना० स० क्रि० लात से मारना।

लती० गु० लतिया।

लतुआ० ना० पु० स्यापड़ा।

लत्ता० ना० पु० पुरानाकपड़ा, चीथड़ा, पांव, लात, रामचन्द्रिकायां (हनूमन्त खुत्ता हत्यो देह भूल्यो, छुट्यो कर्णनासादिले इन्द्र फूल्यो।)

लत्ती० ना० स्त्री० लट्टू की डोरी, उतने की चोलाव, घोड़े की लात।

लथड़ना० अ० क्रि० कीचड़ आदिसे भीगजाना।

लथेड़ना० स० क्रि० कीचड़ से भिगादेना।

लदना० अ० क्रि० बोझिल वा भराहोना।

लदनियां० ना० पु० लादनेहारा, लदनेहारा, लदाव।

लदान० ना० पु० बोझ, भराव, लदाव।

लदाना० स० क्रि० बोझना, भरना, लादना।

लदाव० ना० पु० लदान, बोझ।

लदुआ० ना० पु० जो लादाजाता है।

लप० ना० पु० मुख, मुट्ठी, हथेली, पसर।

लपक० ना० स्त्री० चटक, भभक, झलक, झपट।

लपकना० अ० क्रि० लहकना, भभकना, चमकना, झपटना, झपकरना।

लपका० ना० पु० झपट, फुर्ती, बुरीचाल।

लपकाना० स० क्रि० किसी वस्तु के लेने को हाथ बढ़ाना।

लपकी० ना० स्त्री० लपची, रटोका, मत्स्य विशेष।

लपची० ना० स्त्री० मछली विशेष।

लपझप० गु० फुर्तीला, चंचल।

लपट० ना० स्त्री० सुगन्ध, महक, दहक, भिड़ाव।

लपटना० अ० क्रि० लिपटना, एंठना, सिमटना, लड़ना।

लपटा० ना० पु० जूरी विशेष, घास विशेष, सम्बन्ध।

लपटाना० स० क्रि० भिड़ाना, लिपटाना, चपेटना, लगाना, मलदेना।

लपटी० ना० स्त्री० लुपरी।

लपलप० गु० झपझप।

लपाट० } गु० मिथ्यावादी, महाझूठा।
लपाटिया० }

लपाटी० ना० स्त्री० मिथ्या, झूठ मूठ।

लपाडु० गु० लपाटिया।

लपेट० ना० स्त्री० पर्त, लड़, लपटन।

लपेटन० ना० स्त्री० बेठन।

विद्वेष० ना० पु० बैर, विरोध, अदावत ।
विद्वेषिनी० ना० स्त्री० विरोधिनी, निन्दक, और दुःखदाता ।
विद्वेषी० ना० पु० वैरी, शत्रु ।
विध० ना० स्त्री० प्रकार, रीति ।
विधवा० ना० स्त्री० रांड़, बेवह ।
विधर्म० ना० पु० निज, वर्णाश्रमसे विपरीत धर्म ।
विधाता० ना० पु० ब्रह्मा ।
विधान० ना० पु० शास्त्रोक्त व्यवहार, विधि, आचार ।
विधायक० ना० पु० जो विधानकरै, सौंपनहारा ।
विधात्री० ना० स्त्री० सरस्वती ।
विधि० ना० स्त्री० प्रारब्ध, ना० पु० ब्रह्मा, देवता, कर्म, भाग्य, विधान, काल, प्रकार, शास्त्रोक्त व्यवहार ।
विधिअण्ड० ना० पु० ब्रह्माण्ड ।
विधिकर० ना० पु० सेवक, भृत्य, गुलाम ।
विधिगति० ना० स्त्री० कर्म की चाल, ब्रह्मा की दशा या लिखनि या चाल या कर्त्तव्य ।
विधिपिता० ना० पु० कमल ।
विधिवत्० अव्य० यथा योग्य, विहित ।
विधु० ना० पु० चन्द्रमा ।
विधुन्तुद० ना० पु० राहु, आठवां ग्रह ।
विधुवदनी० ना० स्त्री० चन्द्रवदनी, अतिसुन्दर, जिसका मुख चन्द्रमा के समान है ।
विधुर० ना० पु० वियोग, व्याकुलता ।
विधेय० गु० साधाऊ, शिष्ट, होनहार, समाचार, विशेषणभेद ।
विधेयार्थवर्द्धक० गु० विधार्थ का अर्थ बढ़ानेहारा ।
विध्वंस० ना० पु० विनाश, घृणा, विरुद्धता ।
विन० सर्व० उन ।
विनत० गु० नम्र, आधीन, झुका, टेढ़ा ।
विनता० ना० स्त्री० गरुड़जीकी माता, कश्यप की स्त्री ।
विनती० ना० स्त्री० प्रार्थना, निवेदन, खुशामद ।
विनय० ना० पु० शिष्टाचार, लाज, नम्रता, आदर, स्वभाव, खुशामद ।
विनयी० गु० विनयशील, शिष्टाचारी, नम्र, नीतिज्ञ ।
विनष्ट० गु० जिसका विनाश होगया ।
विना० अव्य० त्यागे के, छोड़, रहित ।
विनायक० ना० पु० श्रीगणेशजी ।
विनाश० ना० पु० ध्वंस, नाश ।
विनिमय० ना० पु० अदलबदल, एरफेर ।
विनीत० गु० विनयी, नम्र, ना० पु० मारना ।
विनीता० ना० स्त्री० उत्तमा ।
विनु० अव्य० विना ।
विनोद० ना० पु० चोप, आनन्द, क्रीड़ा, खेल ।
विन्दक० गु० लाभयुत ।
विन्दु० ना० पु० बूंद, अनुस्वार, शून्य, मणि, वीर्य, रेत ।
विन्ध्य० ना० पु० विन्ध्याचल ।
विन्ध्यगिरि० ना० पु० विन्ध्याचल ।
विन्ध्यवासिनी० ना० स्त्री० विन्ध्याचल की देवी विशेष जो मिर्जापुरके समीप है ।
विन्ध्याचल० ना० पु० पर्वत विशेष जो भरतखण्ड के मध्यमें है ।
विन्यास० ना० पु० समूह संग्रह, और संग्रह को स्थान ।
विपत्०, विपत्ति०, विपत्ति० } ना० स्त्री० आपदा, अभाग, दुर्गति, आफत ।
विपथ० ना० पु० दूरपन्थ, कुमार्ग ।
विपद्० ना० पु० विपत्ति ।
विपद्ग्रस्त० गु० अभागी, दुर्गती ।
विपरीत० ना० पु० उलटा, विरोधी, ना० स्त्री० विरोध, बुराई, अपकार ।
विपर्य्यय० ना० पु० विरुद्धता, विपरीतता ।
विपल० ना० पु० पलका साठवां भाग ।
विपक्ष० ना० पु० शत्रु, वैरी ।

लपेटना० स० क्रि० बांधना, मेठना, लगाना, लीपना ।
लपेटवा० गु० लपेटागया ।
लप्पा० ना० पु० कपड़ा जोबादले से बिना है ।
लबड़सबड़० ना० पु० बकझक, झूठ सच ।
लबड़ा० ना० पु० झूठा, बकी ।
लबनी० ना० स्त्री० मिट्टी का पात्र जिसमें ताड़ी चुआते हैं ।
लबलब० ना० पु० पथरी, दलदल, उल्लू ।
लबलबा० गु० चिपचिपा, लजलजा ।
लबार० ना० पु० बकवादी, झूठा, गप्पी ।
लबी० ना० स्त्री० खांड का जलाव जब चीनी बनाने को पकाते हैं ।
लबेदा० ना० पु० सोंटा, लठ विशेष ।
लबेरा० ना० पु० फल या वृक्ष विशेष, लभेरा ।
लब्ध० गु० प्राप्त, उपार्जित ।
लब्धि० गु० प्राप्ति ।
लभेरा० ना० पु० वृक्ष या उसका फल विशेष ।
लभ्य० गु० मिलनहारा, मिलने के योग्य ।
लमछड़ा० गु० ऊंचा, लम्बा ।
लम्पट० गु० झूठा, असत्य, स्वैरण, छुटखेल, परस्त्रीगामी, व्यभिचारी ।
लम्ब० ना० पु० अमूद, सूधीरेखा, ऊंचाव ।
लम्बकर्ण० ना० पु० शशा, चौगड़ा, खरगोश ।
लम्बा० गु० ऊंचा, दीर्घ, बड़ा ।
लम्बाई० स्त्री० } ऊंचाई, दीर्घपन ।
लम्बान० ना० पु० }
लमधाना० स० क्रि० लम्बाकरना, बढ़ाना ।
लम्बित० गु० जो लटकायागया ।
लम्बियाकरना० अ० क्रि० कलोल करना, कुदकना ।
लम्बा० ना० स्त्री० गु० ऊंची, बड़ी ।
लम्बीसांसभरना० अ० क्रि० रोना, विलाप करना ।
लम्बू० गु० लम्बा ।
लम्बोदर० ना० पु० श्रीगणेश जी ।
लम्सा० ना० पु० चौगड़ा, शशा ।
लय० ना० पु० प्रलय, नाश, देर, ताल, स्वर, विनाश, अत्यन्तस्नेह, ना० स्त्री० चितवन ।
लर्छो० ना० पु० फंदा, आदि ।
ललक० ना० स्त्री० लहर, तरंग, नम्रता ।
ललकना० अ० क्रि० चढ़ना, धावाकरना, नम्रता करना ।
ललकाना० स० क्रि० झगड़ा उठाना, लड़ाना, नम्रकरना ।
ललकार० ना० स्त्री० हांक, पुकार ।
ललकारना० स० क्रि० पुकारना, हांकना और लड़ाई मांगना, प्रचारना ।
ललगएडा० ना० पु० वानर, कपि ।
ललचाना० अ० क्रि० तरसना, जीलगारहना, स० क्रि० तरसाना ।
ललना० ना० स्त्री० खिलाड़ नारि ।
लला० ना० पु० छोकरा, लौंडा ।
ललाट० } ना० पु० माथा, कपाल, प्रारब्ध,
ललार० } पेशानी ।
ललित० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, गु० सुन्दर, अच्छा, लौकता भया ।
ललिता० ना० स्त्री० स्त्री, अटखेल, देवी प्रसिद्ध श्रीराधिका की सखी विशेष ।
ललिया० ना० स्त्री० लली ।
ललियाना० स० क्रि० फुसलाना, बहलाना, अ० क्रि० गिड़गिड़ाना, तमतमाना ।
लली० ना० स्त्री० छोकरी, लौंडी, लड़की, गु० ढीला, नपुंसक मनुष्य ।
लल्लोपत्तो० ना० पु० चापलोसी, खुशामद ।
लव० ना० पु० अंश, क्षण, श्रीसीताजी का छोटा पुत्र विशेष ।
लवंग० ना० पु० लौंग, वृक्ष विशेष ।
लवण० ना० पु० लोन, नमक ।
लवणसिन्धु० ना० पु० खारी समुद्र ।
लवणाम्बु० ना० पु० समुद्र, खारीपानी ।
लवणासुर० ना० पु० लवनासुर, दैत्यकानामहै ।

विपक्षता० ना० स्त्री० शत्रुता, वैर, अदावत।
विपक्षी० ना० पु० शत्रु, मुद्दई।
विपाक० ना० पु० प्रारब्ध का हेतु, भोजन का पकाना।
विपाट० } ना० स्त्री० व्यासानदी पंजाब
विपाशा० } की।
विपिन० ना० पु० वन, जंगल।
विपुल० गु० बहुत, बहुतात, विस्तार।
विपुलता० ना० स्त्री० बहुतायत, विस्तारित।
विपुला० ना० स्त्री० धरती, सुमेरुका पश्चिम भाग।
विपुषा० ना० स्त्री० आहूवेर।
विप्र० ना० पु० ब्राह्मण।
विप्रचरण० ना० पु० ब्राह्मण का पांव, विशेष भृगुलता का चिह्न जो श्रीविष्णुनारायण के हृदय में चिह्नित है।
विप्रलाप० ना० पु० अनर्थवाक्य, मृतकगुणकथन, विलाप समय वार्त्ता।
विफल० गु० निष्फल, व्यर्थ।
विभक्त० गु० जो भागकियागया, पृथक्, अलग।
विभक्ति० ना० स्त्री० अंश, भाग, बांट, सुबादि और तिङ् आदि और कारक बोधक।
विभक्त्यन्त० ना० पु० जिस शब्द वा सर्वनाम के अन्त में विभक्तिका प्रत्यय है।
विभञ्जक० गु० भंजन करने हारा, नाशन।
विभञ्जन० ना० पु० मारण, भंजन, नाशक।
विभव० ना० पु० द्रव्य, राज्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, मुक्ति।
विभाकर० ना० पु० सूर्य।
विभाकरी० ना० स्त्री० रात, रात्रि।
विभाग० ना० पु० अंश, विभक्ति।
विभावसु० ना० पु० सूर्य, अग्नि।
विभिस० ना० पु० सौंफ।
विभीतक० ना० पु० बहेड़ा।
विभीषण० ना० पु० रावणका छिमाता भाई, गु० भयानक।
विभु० ना० पु० स्वामी, श्रीविष्णुजी, श्रीशंकर, ब्रह्मा, गु० सर्वव्यापी, सर्वत्र।
विभूति० ना० स्त्री० यज्ञकी भस्म, ऐश्वर्य, भस्म, अष्टसिद्धि, प्रभुता।
विभूषण० ना० पु० आभरण, अलंकार, शोभा।
विभूषित० गु० शोभित, आभूषित, अलंकृत।
विभेद० ना० पु० अन्तर, फूट, विशेषभेद।
विभ्रम० ना० पु० भांवली, चूक, भूल, धोखा, सन्देह।
विमत० ना० स्त्री० विशेष बुद्धि, ना० पु० भाटविशेष जो जनक राजाका दिसौंधी था।
विमल० गु० उजला, निर्मल, स्वच्छ, साफ।
विमलनयन० ना० पु० ज्ञानदृष्टि, दिव्यदृग्, निर्मल आंख।
विमला० ना० स्त्री० श्रीपार्वती जी।
विमाता० ना० स्त्री० सौतेली माता, दूसरीमाता।
विमातृ० ना० स्त्री० विमाता, साधारण लोग, इसका उच्चारण विमाप्रिजके स्थान में करते हैं।
विमातृज० ना० पु० सौतेली माताकापुत्र, सौतेला भाई।
विमान० ना० पु० स्वर्ग का सिंहासन, देवता का यान।
विमुख० गु० विरोधी, प्रतिकूल, जिसका मुख फिरगया है, यह शब्द सम्मुख का विरोधी है।
विमोचन० }
विमोक्षण० } ना० पु० त्याग, तजन।
विम्ब० ना० पु० परछाहीं, प्रतिविम्ब, कुन्दुरू, तरकारीविशेष, चन्द्र और सूर्य्य का मंडल।
विम्बा० ना० पु० फलविशेष जो अतिकटु होता है और पकने पर अतिलाल वर्ण होजाता।
विम्बीर० ना० पु० कुन्दुरी लता, अमर, बेल।
विम्बुक० ना० पु० लाल, भभूका।
वियो० गु० दूसरा।
वियोग० ना० पु० बिछोह, बिछुराहट, विच्छेद, आपदा, जुदाई।

लवणोद॰ ना॰ पु॰ समुद्र खारीजलका।
लवमात्र॰ गु॰ अव्य॰ थोडीदेर, क्षणभर।
लवा॰ ना॰ पु॰ बटेर पक्षी।
लवाई॰ ना॰ स्त्री॰ थोड़े दिनकी ब्यानीगाय।
लश्टम्पश्टम्॰ गु॰ उलटापलटा।
लशुन॰ ना॰ पु॰ लहसुन।
लषण॰ ना॰ पु॰ श्रीलक्ष्मणजी।
लषणपुर॰ ना॰ पु॰ लखनऊ नगर विशेष।
लस॰ ना॰ स्त्री॰ चिपचिपाहट।
लसकना॰ अ॰ क्रि॰ लजलजा होजाना, गीला होना।
लसना॰ अ॰ क्रि॰ सोहना, सजना, फबना, चमकना।
लसलसा॰ गु॰ पिचपिचा, लसवाला।
लसलसाना॰ अ॰ क्रि॰ लसलसाहोना।
लसित॰ गु॰ उचित, साक्षात्।
लसियाना॰ अ॰ क्रि॰ पिचपिचाहोना, लसलसा होना।
लसी॰ ना॰ स्त्री॰ लस।
लसीला॰ गु॰ जिसमें लसहोवे।
लसोड़ा॰ ना॰ पु॰ फल विशेष जिस में लस होती है।
लस्सी॰ ना॰ स्त्री॰ लसी, दूध और पानी।
लहँगा॰ ना॰ पु॰ घँघरा, फरिया।
लहक॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, झलक।
लहकना॰ अ॰ क्रि॰ हिलना, चमकना, झलकना, गिटकरी लेना।
लहकाना॰ स॰ क्रि॰ गिटकरी से गाना, चमकाना, दहकाना, दरकाना।
लहकारना॰ स॰ क्रि॰ चुमकारना, पेटपरहाथ फेरना।
लहकावट॰ ना॰ स्त्री॰ चमकावट, दहकावट।
लहकीला॰ गु॰ चमकीला, भड़कीला।
लहकौर॰ } ना॰ स्त्री॰ खीर जो दूल्हा
लहकौवर॰ } दुलहन खाते हैं, दही बतासे जो विवाह में खिलाते हैं।

लहना॰ स॰ क्रि॰ पाना, खोना, अ॰ क्रि॰ फलना, काम आना, ना॰ पु॰ उधार, धर्ता, प्रारब्ध।
लहचर॰ ना॰ पु॰ तोता विशेष।
लहचेरा॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष।
लहर॰ ना॰ स्त्री॰ तरंग, हिलोर, सांपके विषकी जो तरंग आती है।
लहरबहर॰ ना॰ स्त्री॰ सुभाग, सम्पत्ति।
लहराना॰ अ॰ क्रि॰ ललचाना, हिलकोरना।
लहरालगाना॰ स॰ क्रि॰ टालना, उड़ान घाई करना।
लहरिया॰ गु॰ जो लहरकी रीतिपर होवे।
लहरी॰ गु॰ तरंगी, तरल, ओछा।
लहलहा॰ गु॰ विकसित, प्रफुल्लित, हरा।
लहलहाना॰ अ॰ क्रि॰ खिलना, फूलना, हराहोना।
लहलोट॰ गु॰ जो उधार लेकर फिर न देवे।
लहसुन॰ ना॰ पु॰ कन्द विशेष।
लहसुनिया॰ ना॰ पु॰ रत्न विशेष।
लहालेह॰ ना॰ स्त्री॰ शीघ्रता, जल्दी।
लहास॰ } ना॰ स्त्री॰ नाव बांधनेकी रस्सी।
लहासा॰ }
लहियत॰ क्रि॰ पाता है वा पाते हैं।
लहुरव॰ ना॰ पु॰ शीघ्रता, जल्दी।
लहू॰ ना॰ पु॰ लोहू, रुधिर, खून।
लहूआ॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष।
लहौर॰ ना॰ पु॰ लाहौर।
लहौरी॰ गु॰ जो लाहौर का है।
लक्ष॰ ना॰ पु॰ सौ हजार, १०००००, लाख, वह लाख जिसकी चूड़ी बनती हैं।
लक्षण॰ ना॰ पु॰ चिह्न, गुण, लक्ष्मण जी।
लखत॰ क्रि॰ विलोकत, देखत।
लक्षित॰ गु॰ प्रकाशित, जो देख पड़ता है।
लक्ष्मण॰ ना॰ पु॰ रामचन्द्रजीके छोटे भाई।
लक्ष्मणा॰ ना॰ स्त्री॰ सारस पक्षी, श्रीकृष्णचन्द्रकी पटरानी विशेष, छोटी कटाई।

वियोगित० गु० जो बिछुड़ गया, भिन्नभया ।
वियोगिनी० ना० स्त्री० भिन्न, बिछुरी, जुदी ।
वियोगी० गु० विरही, जुदा, बिछुरा, भिन्न ।
विरक्त० गु० वैराग्य, शील, कामजित्, उदासी ।
विरचन० ना० पु० बनावन, रचन, पैदाकरना ।
विरचना० स० क्रि० बनाना, रचना, उपजाना ।
विरचित० गु० बना, रचा ।
विरजा० ना० स्त्री० पौधाविशेष, तृणविशेष, दूब ।
विरञ्चि० ना० पु० ब्रह्मा ।
विरज० गु० निर्मल, शुद्ध ।
विरत० गु० निवृत्ति, संगहीन ।
विरति० ना० स्त्री० निवृत्ति, वैराग्य ।
विरथ० गु० रथहीन, पदाति ।
विरद० ना० पु० विरद, गु० निंदन्त ।
विरल० गु० सूक्ष्म, ढीला, प्रकट, प्रसिद्ध ।
विरलच्छदा० ना० स्त्री० पालक का शाक ।
विरला० गु० कोई, अनूठा, अनूप, सूक्ष्म, ढील ।
विरस० गु० रसहीन ।
विरह० ना० पु० वियोग ।
विरहित० गु० वियोगित ।
विरहिनी० गु० स्त्री० वियोगिनी ।
विरही० गु० वियोगी ।
विराग० ना० पु० मन की इच्छा का त्याग, जुदाई, विषय भोग का परित्याग, सुख दुःख हीन ।
विरागी० गु० उदासी, मनकी इच्छा मारने हारा ।
विराजना० अ० क्रि० विराजना ।
विराजमान० } गु० शोभायमान ।
विराजित० }
विराट० ना० पु० विराट राजा का नाम है ।
विराम० ना० पु० देर, विश्राम, हलका चिह्न, गु० अस्थिर, व्याकुल, बीमार ।
विरालिका० ना० स्त्री० विदारीकन्द ।
विरुज० गु० आरोग्य, तन्दुरुस्त ।
विरुद्ध० गु० विरोधी, विपरीत, जो रोकागया, वैर, अदावत ।
विरुद्धता० ना० स्त्री० विरोध, चिढ़, घिन, शत्रुता ।
विरूप० गु० कुरूप, भोंड़ा ।
विरूपाक्ष० ना० पु० श्री महादेवजी, राक्षस विशेष ।
विरेक० ना० पु० पेटौला, दस्त ।
विरेचन० ना० पु० पेटौला होना, दस्तजारी होना ।
विरोचन० ना० पु० सूर्य्य, अग्नि, दैत्य, राजा बलिका पिता, राजाविशेष ।
विरोध० ना० पु० वैर, झगड़ा, अदावत ।
विरोधी० गु० विरोधकारक, झगड़ालू, वैरी ।
विरोधोक्ति० ना० स्त्री० अनर्थवाक्य, विपरीत कथन ।
विल० ना० पु० बिल ।
विलग० गु० भिन्न, पृथक् ।
विलज्ज० गु० निर्लज्ज, बेहया ।
विलम्ब० ना० पु० देर अबेर, टालमटोल ।
विलम्बना० अ० क्रि० रहना, ठहरना, देर करना ।
विलय० ना० पु० प्रलय, जगत् का नाश ।
विलक्षण० गु० अजब प्रकारका, अद्भुत ।
विलाप० ना० पु० सन्ताप, शोक का कथन, रोना ।
विलायत० ना० स्त्री० परदेश, अन्यदेश ।
विलाश० ना० विलास ।
विलासी० गु० भोगी, क्रीड़ाकारक, ना० पु० सर्प ।
विलास० ना० पु० हर्ष, आनन्द, सुरत, क्रीड़ा, खिलाड़पन, भोग, कार्य ।
विलिका० ना० स्त्री० विलिका औषधि ।
विलुप्त० गु० जो नाश को प्राप्तभया, मिटगया ।
विलेप० ना० पु० लेप, चन्दन उपटना ।

लक्ष्मी० ना० स्त्री० सम्पत्ति वा धन, कमला, रमा।
लक्ष्मीफल० ना० पु० श्रीफल, बिल्व, बेल।
लक्ष्य० गु० जो देखाजावे, ना० स्त्री० लक्ष्मी, निशाना।
लाई० ना० स्त्री० धान के लावा, क्रि० लराई।
लांघना० स० क्रि० फांदना, कूदना।
लाकृति० ना० स्त्री० टेढ़ा आकार, रूप।
लाख० ना० पु० लक्ष, लाह, लाखा जिसकी चूरी बनती है।
लाखना० स० क्रि० लाख लगाना।
लाखी० ना० स्त्री० लालरंग जो लाख से निकालते हैं।
लाग० ना० पु० बैर, शत्रुता, द्वेष, स्नेह, मोह, भाव, मोल, नगचारे, खोर, कसूर, भेद।
लागत० ना० स्त्री० दाम, मोल।
लागना० अ० क्रि० लगना।
लागी० ना० स्त्री० चाह, स्नेह, मोह।
लागू० गु० चाहनेहारा, पिछलगा।
लाघव० ना० पु० आरोग्य, क्षेमकुशल, हलकई, सूक्ष्मता, उसीसमय, जल्दी, शीघ्र।
लांगल० ना० पु० हल।
लांगली० ना० पु० किसान, नारियल, श्रीबलदेव जी।
लांगूल० ना० पु० लोम, पुच्छ, पूछ।
लांगूली० ना० पु० कौंचबीज, बानर।
लाज० ना० स्त्री० लज्जा, संकोच, हया।
लाजना० अ० क्रि० लाज करना।
लाजवन्त० गु० लजीला, संकोची, कुलवन्त।
लाजा० ना० स्त्री० खीला।
लाझा० ना० पु० लस।
लाञ्छन० ना० पु० दोष, पाप, चिह्न, कलंक।
लाट० } ना० स्त्री० स्तम्भ, खम्भा।
लाठ० }
लाठी० ना० स्त्री० लकड़ी, छड़ी।
लाड़० ना० पु० प्यार, दुलार।
लाड़ला० गु० प्यारा, दुलारा।
लाड़ली० ना० स्त्री० प्यारी, दुलारी।
लाडू० ना० पु० लड्डू।
लात० ना० स्त्री० पांवकी मार, टांग, पांव।
लातिन्० ना० स्त्री० भाषा विशेष।
लाद० ना० स्त्री० बोझा।
लादना० स० क्रि० बोझना।
लादिया० ना० पु० बोझनेहारा।
लादी० ना० स्त्री० छोटीलादे, धोबी के कपड़ेकी गठरी।
लादू० गु० जो लादने के योग्य या लादागया।
लाना० स० क्रि० ले आना, जनाना, उपजाना, ब्याना।
लापाक० ना० पु० शृगाल, गीदड़।
लाफना० अ० क्रि० कूदना, उचकना।
लाभ० ना० पु० प्राप्ति, उपार्जन, फल, नफा।
लाय० ना० पु० अग्नि।
लार० ना० स्त्री० थूक, मुखका पानी, राल।
लारी० ना० स्त्री० लार।
लाल० गु० दुलारा, प्रिय, रक्तवर्ण, ना० पु० बालक, रत्न विशेष, पक्षी विशेष।
लालच० ना० पु० लोभ, तृष्णा, अदेव।
लालची० गु० लोभी, आपकाजी।
लालड़ी० ना० स्त्री० मानिक चुनी।
लालन० ना० पु० बालक, ना० स्त्री० ललना।
लालबुझक्कड़० ना० पु० मूर्ख जो अपने तईं ज्ञानवान् जानता है।
लालमधु० ना० पु० सहिजना वृक्ष।
लालसा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, औत्सुक्य, चाहत।
लाला० ना० पु० वैश्यादिकों की पदवी, कायस्थ विशेष जो बालक पढ़ाता है।
लालाटिक० ना० पु० भाग्याधीन।
लालित्य० ना० पु० मनोहरता, कोमलता, चमक।
लाव० ना० पु० रस्सी, लहास।

विलेशय० ना० पु० शशा, चौगड़ा, खरगोश।
विलोकन० ना० स्त्री० दृष्टि, ताक।
विलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना, निरखना।
विलोचन० ना० पु० नेत्र, नयन, आंख।
विलोड़ना० स० क्रि० मथना, मड़ना।
विलोम० ना० पु० उलटा, विपरीत।
विलोवना० स० क्रि० विलोड़ना।
विल्व० ना० पु० बेल वृक्ष या उसका फल।
विवकिल० ना० पु० बिल्व, बेल।
विवर० ना० पु० छिद्र, छेद, बिल, घर, गुहरा।
विवरण० ना० पु० व्याख्या, बखान, विस्तार, टीका, वर्णहीन।
विवर्ण० ना० पु० नीचजातिकामनुष्य, कुजाति।
विवर्द्धक० गु० वृद्धिकारक, बढ़ानेहारा।
विवर्द्धन० ना० पु० बढ़ती, वृद्धि।
विवर्द्धित० गु० वृद्धिको प्राप्तभया, बढ़ाहुआगया।
विवश० वशहीन, वशीभूत, अवश्य, पराधीन, मृत्युसमय जो घबरा या अस्थिर हो।
विवस्त्र० गु० वस्त्रहीन, नंगा।
विवस्वान्० ना० पु० सूर्य।
विवक्षा० ना० स्त्री० वांछा, कहनेकी इच्छा।
विवक्षित० गु० वांछित, इष्ट।
विवाद० ना० पु० कलह, झगड़ा।
विवादी० गु० जो विवादकरे।
विवाह० ना० पु० ब्याह, गठबन्धन।
विवाहित० गु० जो विवाहागया।
विवाहिता० ना० स्त्री० जो बियाहीगई।
विवि० गु० दो, २।
विविक्त० ना० पु० एकान्त, रहित।
विविध० गु० नानाप्रकार, अनेक, बहुरूपी।
विबुध० ना० पु० देवता, पण्डित।
विबुधवन० ना० पु० स्वर्ग, नन्दनवन।
विबुधवैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार।
विबुधारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य।
विवेक० ना० पु० न्यारा, विचार, ज्ञान।
विवेकी० गु० विचारी, ज्ञानी।
विवेचक० ना० पु० असत्य और सत्य का विचारी।
विवेचन० ना० पु० विचार।
विवेचना० ना० स्त्री० सत्यासत्य का विचार, परखना, जानना।
विशद० गु० उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ, ठीक।
विशदण्ड० ना० पु० अतिनम्रदण्डी, दण्ड की निन्दा, कमलनाल।
विशदवाणी० ना० स्त्री० उज्ज्वलवार्त्ता, स्वच्छभाषा, साफबात।
विशल्या० ना० स्त्री० कलिहारी।
विशाख० ना० पु० पुनर्नवा पौधा।
विशाखा० ना० स्त्री० स्त्री, सोलहवां नक्षत्र।
विशार० ना० पु० मछली।
विशारद० ना० पु० मौलसिरीवृक्ष, गु० चतुर, प्राज्ञ, ज्ञाता।
विशाल० गु० बड़ा, चौड़ा, सुन्दर, दुःखरहित।
विशाला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
विशिख० ना० पु० बाण, तीर।
विशिखासन० ना० पु० धनुष, कमान।
विशिष्ट० गु० संयुक्त।
विशुद्ध० गु० पवित्र, पाक, साफ, चक्रविशेष जो अष्टांगयोगमें वर्णित है।
विशूचिका० ना० स्त्री० छर्दि, हुलकी, हैज़ा।
विशेष० ना० पु० जाति, ढब, भेद, गुण, खासकर, गु० बहुत, अधिक, एक।
विशेषण० गु० जो एकको दूसरे से पृथक्करे, गुणवाचक, तारीफ, सिफ़त।
विशेषता० ना० स्त्री० अधिकाई, खुसूसियत।
विशेष्य० ना० पु० गुण, जिसकी तारीफ की जावे, गु० जो विशेषण के योग्य है, मुखिया पहला।
विशोक० गु० शोकरहित, क्लेशहीन, अदुःख।
विश्रान्त० गु० जिसने विश्राम किया, ना० पु० मथुरापुरीमें स्थानविशेष।

लावण्य० ना० पु० } सुन्दरता, लोनाई,
लावण्यता० ना० स्त्री० } बड़ाई।

लावलाव० ना० पु० लालच, अधीरज।

लावा० ना० पु० खील, फूला।

लासा० ना० पु० चेप, पौधोंका दूध, सरेस, लसदार, तिब्बत देशका नगर विशेष।

लाह० ना० पु० कपड़ा विशेष, लाभ, क्षेमकुशल, अस्त, डाली।

लाहा० ना० पु० लाभ।

लाही० ना० स्त्री० पौधा विशेष, महीन कपड़ा विशेष।

लाहु० } ना० पु० लाभ, फायदह।
लाहू० }

लाहौर० ना० पु० पंजाबदेशकी राजधानी।

लाक्षा० ना० स्त्री० लाह, जतु।

लिखंत० } ना० पु० पत्री, चिट्ठी, दीप।
लिखंतना० }

लिखना० स० क्रि० लेखना, लिखाई करना।

लिखनी० ना० स्त्री० लेखनी, कलम।

लिखनीदास० ना० पु० लेखक, उपलेखक।

लिखा० ना० पु० प्रारब्ध, होतव्य।

लिखाई० ना० स्त्री० लिखने का काम या पैसा।

लिखाना० स० क्रि० लेखकरवाना।

लिखाव० ना० पु० } लिखने का काम।
लिखावट० ना० स्त्री० }

लिखित० गु० जो लिखागया।

लिंग० ना० पु० मदनांकुश, स्त्रीप्रसंग करने की इन्द्रिय, सूक्ष्म शरीर, तीन लिंग अर्थात् स्त्री, पुरुष, नपुंसक।

लिंगी० ना० स्त्री० प्रसंगेन्द्रिय, मदनांकुश।

लिचु० ना० पु० फलविशेष।

लिमड़ी० ना० स्त्री० हल, खेड़ी, पोतड़ी।

लिस्य० ना० पु० हलुआ आदि भोजन।

लिटाना० स० क्रि० सोलाना, पौढ़ाना।

लिट्टी० ना० स्त्री० टिकिया, अंगाकड़ी, बाटी, भौरी।

लिथड़ना० अ० क्रि० लथड़ना।

लिथाड़ना० स० क्रि० लथेड़ना।

लिपटना० अ० क्रि० चिपकाना, चिपटना, सटना।

लिपटाना० स० क्रि० सटाना, लगाना, चिपटाना।

लिपड़ी० ना० स्त्री० बहुत दिनों की पगड़ी।

लिपवाना० } स० क्रि० गोमय आदिसे पोतवाना।
लिपाना० }

लिपि० ना० स्त्री० हस्ताक्षर, लिखापत्र, लेख, खत।

लिपिकर० ना० पु० लेखक।

लिप्त० गु० लीपागया, लीन, मशगूल।

लिये० अव्य० निमित्त, कारण, वास्ते।

लिवाना० स० क्रि० ग्रहण करवाना।

लिवालाना० स० क्रि० लेआना, बुलालाना।

लिवैया० ना० पु० लेवैया।

लिसौड़ा० ना० पु० लसोड़ा।

लिहाड़ा० गु० नीच, कुत्सित।

लीक० ना० स्त्री० गाड़ीका मार्ग, पगडण्डी, मर्याद, कलंक, लकीर।

लीख० ना० स्त्री० छोटाकृमिकीट, अर्थात् जूआं।

लीचड़० गु० कृपण, कंजूस, सूम।

लीची० ना० स्त्री० फल विशेष।

लीझी० ना० स्त्री० गादि, तरछट।

लीतरा० ना० पु० पुराने जूता।

लीद० ना० स्त्री० घोड़ेकी विष्ठा।

लीन० गु० तन्मय, डूबाहुआ, मिलाहुआ, लायक, अच्छा, योग्य।

लीम० ना० पु० सन्धि, मेल, मिलाप।

लीर० ना० स्त्री० चिट, धज्जी।

लील० ना० पु० नील, गु० नीला।

लीलना० स० क्रि० निगलना, घूंटना।

विश्राम० ना० पु० सुख, चैन, कल।
विश्राविगंधा० ना० स्त्री० आहुवेर।
विश्लेष० ना० पु० वियोग।
विश्व० ना० पु० जगत्, देवतोंकी जाति जिसमें दशावसु इत्यादि हैं, सोंठ, सव।
विश्वकर्मा० ना० पु० देवतों का थवई।
विश्वगन्धिका० ना० स्त्री० आहुवेर।
विश्वदेवा० ना० पु० गंगेरुवा।
विश्वनाथ० ना० पु० काशी में प्रधानशिव।
विश्वभेषज० ना० पु० सोंठ।
विश्वम्भर० ना० पु० परमात्मा, ईश्वर।
विश्वम्भरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
विश्वरूप० ना० पु० सर्वरूप, ईश्वर, विराट् तन।
विश्वरूपक० ना० पु० काला अगरु।
विश्वविमोहन० ना० पु० कामदेव।
विश्वसर्ग० ना० पु० ब्रह्मा, कर्त्ता, विधाता।
विश्वामित्र० ना० पु० मुनिविशेष, धनुर्वेद कर्त्ता।
विश्वास० ना० पु० प्रतीत, भरोसा, प्रत्यय।
विश्वासघात० ना० पु० विश्वास का हनन।
विश्वासघाती० ना० पु० विश्वास का घात कर्त्ता, जो मित्रतामें छलकरे।
विश्वासी० गु० प्रतीत वा भरोसा रखनेहारा।
विश्वेश्वर० ना० पु० विश्वनाथ, भगवान्।
विश्वौषधि० ना० स्त्री० सोंठ।
विष० ना० पु० गरल, हलाहल।
विषण० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य्य।
विषद० गु० विशद, श्वेत, गोरा, ठेठ।
विषधर० ना० पु० सांप, सर्प, ग्रामहदेव।
विषध्वंसी० ना० पु० नागरमोथा।
विषपुष्पक० ना० पु० मैनफल।
विषम० गु० अयुग्म गिनती यथा ३।५।७ जो बराबर न हो, असम, कठिन, भयानक, ना० पु० ज्वरविशेष।
विषमत्रिभुज० ना० पु० जिसकी भुजा तुल्य न हों।
विषमान० ना० पु० औषधि या विषविशेष।
विषमुष्टक० ना० पु० महानीम।
विषय० ना० पु० इन्द्रियां जिन वस्तुओंको ग्रहण करती हैं यथा स्वाद, रंग, रूप, रस, भोगादि, काम, बात, अर्थ, अव्य० लिये, मध्ये।
विषयक० गु० संसारी जगत् के।
विषयी० गु० जो विषयों में आसक्त।
विषवैद्य० ना० पु० जांगलिक, गारुडि जो सर्पादि काटेका विष उतारता है।
विषहा० गु० जो विषसे भरा है।
विषाण० ना० पु० पशुके सींग।
विषाद० ना० पु० थकाई, उदासी, दुःख।
विषादी० गु० उदासी, थका, दुःखी।
विषानिका० ना० स्त्री० मेढासिंही।
विषुव० } ना० पु० जब दिन रात समान होता है उसीका नाम।
विषुवत्० }
विषुवत्काल० ना० पु० जिस समय सूर्य्य विषुवत् रेखापर रहते हैं।
विषुवद्रेखा० ना० स्त्री० रेखा, भूमि के ऊपर शून्य में समान सूत डालने से जो रेखा कल्पित है।
विषे० अव्य० में, बीच, मध्य।
विष्कर० ना० पु० मुर्गा।
विष्ठा० ना० स्त्री० बीट, मल, गुह।
विष्ठाकृमि० ना० पु० विष्ठा का कीड़ा।
विष्टि० ना० स्त्री० भद्रा, कुयोग।
विष्टर० ना० पु० आसनविशेष।
विष्टरश्रवा० ना० पु० विष्णु, नारायण।
विष्णु० ना० पु० साधु, मनुष्य, सूर्य, अग्नि, वसु, श्रीनारायण।
विष्णुकान्ता० ना० स्त्री० पौधाविशेष, कोआगोडी।
विष्णुपद० ना० पु० आकाश, छन्दविशेष, गीतविशेष।

लीला० ना० स्त्री० क्रीड़ा, विहार, खेल, चरित्र, गु० नीलवर्ण ।

लीलाइच० } गु० ख्यालहीमें लीलाके प्रकार।
लीलावत्० }

लीलावती० ना० स्त्री० गणित की पुस्तक विशेष ।

लुक० ना० पु० गिरनेहारा, तारा, लूक।

लुकना० अ० क्रि० छिपना ।

लुका० गु० गुप्त ।

लुकाञ्जन० ना० पु० अंजनविशेष जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्यहो जाता है ।

लुकान० गु० गुप्तहुआ, छुपा, ना० स्त्री० छिपावट ।

लुकाना० अ० क्रि० छिपना, स० क्रि० छिपाना, गुप्त करवाना ।

लुकावना० स० क्रि० छिपावना, गुप्तकरवाना ।

लुगाई० ना० स्त्री० औरत, स्त्री ।

लुंगा० ना० स्त्री० मधुककड़ी ।

लुंगी० ना० स्त्री० धोती विशेष ।

लुच० गु० निरा नग्न ।

लुचई० ना० स्त्री० पूरीविशेष ।

लुचपन० ना० पु० नष्टता, अधमाई, शुहदपन ।

लुच्चई० ना० स्त्री० लुचपन, कुकर्म ।

लुच्चा० ना० पु० कुकर्मी, लुचपन करनेहारा ।

लुजलुजा० गु० लजलजा ।

लुंज० } गु० अपाहिज, लूला, हाथोंसे हीन ।
लुंजा० }

लुटना० अ० क्रि० लूटहोजाना, लूटजाना ।

लुटवैया० ना० पु० लुटेरा ।

लुटाना० स० क्रि० गवाना, उड़ाना, लूटे करवाना ।

लुटिया० ना० स्त्री० छोटालोटा ।

लुटेरा० } ना० पु० लूट करनेहारा, उड़ाऊ ।
लुटेरू० }

लुट्टस० ना० पु० लूट, बिगाड़, सत्यानाश ।

लुड़का० ना० पु० कानका भूषणविशेष ।

लुड़खना० } अ० क्रि० टमेलाना, निकल जाना ।
लुढ़कना० }

लुढ़ना० अ० क्रि० लुढ़कना ।

लुढ़ाना० स० क्रि० गिरादेना, ढगराना ।

लुढ़िया० ना० स्त्री० छोटा सोद ।

लुढ़ियाना० स० क्रि० कपड़े को खड़ा करके दूसरे बार सीना ।

लुण्डा० गु० बांडा, पुच्छहीन ।

लुतरा० ना० पु० बड़बड़िया, उधर की इधर और इधर की उधर करने हारा ।

लुपरी० ना० स्त्री० भोजनविशेष ।

लुपलुप० ना० पु० चभ चभड़ ।

लुस० गु० गुप्त, लूट, नाश ।

लुब्ध० गु० लालची, लोभी ।

लुब्धक० ना० पु० बधिक, लुब्धा, लम्पट ।

लुभ ना० स० क्रि० ललचाना, जीभगाना ।

लुम्पक० ना० पु० राजाविशेष, नाशक ।

लुम्पित० गु० मिटायागया, नाशित ।

लुहण्डा० ना० पु० लोहेका पात्रविशेष ।

लुहरा० ना० पु० छोटा ।

लुहांगी० ना० स्त्री० लाठी जिसमें लोहालगा होता है ।

लुहार० ना० पु० लोहकार, जातिविशेष ।

लुहारिन० ना० स्त्री० लुहार की जोरू ।

लू० ना० स्त्री० ज्येष्ठ बैशाख की गरम वायु ।

लूआट० गु० लूकट ।

लूक० ना० पु० अग्निकी लुकठी, पतिततारा ।

लूकट० गु० अधजला ।

लूकटी० ना० स्त्री० करेलनी, छोटालूकट ।

लूकना० अ० क्रि० लू से जलना ।

लूकवाई० ना० स्त्री० अगवाही, कहीं २ दीवालीको जलाकर घरके बाहर डालते हैं ।

लूका० ना० पु० जलती हुई चिनगारी ।

लूख० ना० स्त्री० आंच, लूका ।

लूट० ना० स्त्री० वस्तु का बरबस छीनना ।

विष्णुपदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
विष्णुपद्य० ना० पु० विष्णु का भजन।
विष्णुवल्लभा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी।
विस० सर्व० उस।
विसर्ग० ना० पु० दो बिन्दुमात्र वर्णविशेष अः
विसर्जन० ना० पु० विदा, त्याग, दान, पूरा।
विसारन० ना० पु० विस्मरण।
विसूरति० क्रि० चिन्ता, दुबिधा।
विस्तर० } ना० पु० फैलाव, पसराव, घेरा-
विस्तार० } घाल, चौड़ाव, ग्रसार।
विस्तीर्ण० गु० बड़ा, फैलाहुआ, फैला।
विस्तृत० गु० फैलाया, पसारा, विस्तारयुत।
विस्फोटक० ना० पु० फोड़ा, चेचक, माता।
विस्मय० ना० पु० आश्चर्य, अचंभा, शोक, सन्देह, शंक।
विस्मरण० ना० पु० भूल, चूक, भुलाहट।
विस्मित० गु० आश्चर्यित, सचम्भित, चकित, चिन्तित।
विस्मृत० ना० स्त्री० भूल भुलाहट।
विस्वादु० गु० स्वादहीन, नीरस।
विहग० ना० पु० पंछी, विहंग, चिड़िया।
विहगेश० ना० पु० गरुड़।
विहंग० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
विहङ्गपति० ना० पु० गरुड़।
विहंगम० ना० पु० पक्षी, विहग।
विहंगराज० ना० पु० गरुड़, वैनतेय।
विहण्डन० ना० पु० काटन, छेदन, भेदन।
विहरण० ना० पु० गमन।
विहरना० अ० क्रि० फटना, तड़कना।
विहसना० अ० क्रि० हसना, खिलना।
विहाय० अव्य० त्याग, छोड़, सिवाय।
विहायस० ना० पु० आकाश।
विहायसी० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
विहार० ना० पु० क्रीड़ा, आनन्द, ऐश।
विहारस्थली० ना० स्त्री० क्रीड़ाघर।
विहारी० गु० क्रीड़ाकारक, चंचल, चपल।
विहित० गु० उचित।
विहीन० गु० त्यागित, रहित, अतिहीन, अतिनिकृष्ट, नीचतर।
विह्वल० गु० व्याकुल, घबरा।
विक्षिप्त० गु० उन्मत्त, छुपा।
विक्षेप० ना० पु० व्याकुलता, त्याग, फेंक, विघ्न।
विज्ञ० गु० चतुर, निपुण, विद्वान्।
विज्ञता० ना० स्त्री० निपुणता, चातुर्य, ज्ञानकारी।
विज्ञप्ति० ना० स्त्री० विनती, विनय।
विज्ञान० ना० पु० विशेषज्ञान, अनेकविधि, आश्चर्य रस।
विज्ञाननिधान० ना० पु० महाज्ञानी, महाज्ञाती, अध्यात्मज्ञाता, ब्रह्मवादी।
विज्ञानी० गु० परमज्ञानी, अतिचतुर, महा पण्डित।
विज्ञापन० ना० पु० जतावना, चितावन।
वीचि० } ना० स्त्री० लहरी, मौज।
वीचिका० }
वीज० ना० पु० मूल, कारण, मिंगा, पानी।
वीणा० ना० स्त्री० तम्बूरह, बाजाविशेष।
वीतराग० ना० पु० विरागयुक्त, वैरागी।
वीथिका० } ना० स्त्री० गली, मार्ग, बाट, राह।
वीथी० }
वीय० गु० दो, २
वीर० ना० पु० शूर, सुभट, बहादुर, भाई।
वीरता० ना० स्त्री० } शूरमापन, बहादुरी।
वीरत्व० ना० पु० }
वीरपुष्पा० ना० स्त्री० सहदेवी पौधा।
वीरभद्र० ना० पु० शिवगणविशेष।
वीरभाव० ना० पु० सामर्थ्य, वीरता, बहादुरी।
वीरभूमि० ना० स्त्री० युद्धस्थान, ना० पु० बंगालदेश में एक जिलाह।

वीररस० ना० पु० काव्यरसविशेष, वीरता।
वीरवृक्ष० ना० पु० भिलावां वृक्ष।
वीरसेन० ना० पु० आड़ू।
वीरा० ना० पु० केला (कदली अन्यनी मोचा रम्भावीरापरच्छदा, इति निघण्टे) काकोली, धान।
वीर्य० ना० पु० बीज, सामर्थ्य, बल।
वीर्यकर० ना० पु० उड़द धान।
वुर्हा० अव्य० उसी समय या उसी स्थान में, यहीं।
वुरला० } ना० स्त्री० मीठी तुम्बी, लौकी, राम
वुली० } तुरई (तुम्बिमिष्टा महातुम्बी राजला मुरला वुधी इति निघण्टे)।
वृक० ना० पु० भेड़िया, हुण्डार, पपीहा पक्षी, दैत्यविशेष।
वृत्त० ना० पु० गोल, गोलाकार, दैत्यविशेष।
वृत्तखण्ड० ना० पु० जो दो त्रिज्याओं और मध्यस्थ चापसे घिरा हो, वृत्तका टुकड़ा।
वृत्तफल० ना० पु० लालकंगा।
वृत्ताश० ना० पु० गोलका अंश।
वृत्तान्त० ना० पु० समाचार, पत्री, कथा, कहानी।
वृत्तार्द्ध० ना० पु० गोलार्द्ध, गोलका आधा।
वृत्ति० ना० स्त्री० आचरण, स्वभाव, धन्धा, जीविका, व्यवहार, सूत्रका अर्थ, टीका।
वृथा० अव्य० व्यर्थ, झूठा, निष्फल, बेमतलब।
वृद्ध० गु० बूढ़ा।
वृद्धक० गु० वृद्धिकारक, बढ़ानेहारा।
वृद्धतम० गु० बहुतबूढ़ा।
वृद्धता० ना० स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धपन।
वृद्धप्रपितामह० ना० पु० प्रपितामहका पिता।
वृद्धप्रपितामही० ना० स्त्री० प्रपितामहकी माता।
वृद्धश्रवा० ना० पु० इन्द्र।
वृद्धा० ना० स्त्री० डोकरी, बुढ़िया।

वृद्धापन० ना० पु० वृद्धता, बुढ़ापा।
वृद्धावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धता।
वृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, बाढ़, अधिकता।
वृन्तफला० ना० स्त्री० अखरोट।
वृन्ता० } ना० पु० भांटा, बैंगन।
वृन्ताकी० }
वृन्द० ना० पु० समूह, यूथ, झुण्ड, ढेर।
वृन्दा० ना० स्त्री० तुलसी, देवीविशेष जो वृन्दावन में है।
वृन्दारक० ना० पु० देवता, सुर।
वृन्दावन० ना० पु० तीर्थ वा नगरविशेष।
वृश्चिक० ना० पु० बिच्छू, आठवीं राशि।
वृश्चिकाली० ना० स्त्री० मेढ़ासिंगी।
वृष० ना० पु० बैल, दूसरीराशि, कर्ण का पुत्र, इन्द्र, कामदेव, धर्म, सत्तापौधा।
वृषकेतु० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कर्णका पुत्र।
वृषदंश० } ना० पु० बिलावपशु, बिलाव
वृषदंशक० } महाभारत भीष्मपर्वणि ०शिर्षा (चत्वारिंशत्सहस्राः वृषदंशस्य चोच्यते, यथा पुत्र तेरावी रोशनियमेवचा ०)।
वृषभ० ना० पु० बैल, धर्म, दैत्यविशेष।
वृषभध्वज० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
वृषभानु० ना० पु० श्रीराधाजीका पिता।
वृषभाक्षी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
वृषा० ना० स्त्री० अडूसा।
वृषादित्य० ना० पु० वृषराशिके सूर्य।
वृष्टि० ना० स्त्री० मेह, वर्षा, बरसात।
वृष्टिरांची० ना० स्त्री० गारि, श्योपुधि।
वृष्यगन्धा० ना० स्त्री० पिंडालू।
वृह० ना० पु० चलना, बढ़ना।
वृहती० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
वृहत्० गु० बड़ा, चौड़ा।
वृहत्खण्ड० ना० पु० बड़ा टुकड़ा, बड़ा खण्ड।
वृहत्फला० ना० स्त्री० जामुन, कलिंद, ककड़ी, चचेंडा।

शुचा० ना० स्त्री० पवित्रता, पावनता, पाकी।

शुचि० गु० श्वेत, पवित्र, शुद्ध, पाक।

शुचिद्दीय० गु० सामान्य जो मनते पवित्र हो, विशेष्यार्थ, पतिव्रता।

शुंठि०
शुंठी० } ना० स्त्री० सोंठि।

शुंड० ना० सूंड़, हाथी की नाक।

शुंदि० ना० स्त्री० उजेलापाल।

शुद्ध० गु० पवित्र, निर्दोषी, अकेला, ठीक।

शुद्धता० ना० स्त्री० पवित्रता, ठीकहोना।

शुद्धि० ना० स्त्री० पवित्रता, सुधराव, खबर।

शुद्धोचार० ना० पु० ठीकपाठ।

शुन०
शुनक० } ना० पु० कुत्ता।

शुभ० गु० भला, अच्छा, भाग्यवान्, ना० पु० कल्याण, सुभाग, सौभाग।

शुभग० गु० अच्छा, भाग्यवान्।

शुभगुण० ना० पु० अच्छेगुण, ज्ञानादि।

शुभंकर० गु० मंगलकारी, कृपालु।

शुभचिन्तक० गु० अच्छाचाहनेहारा, खैरख्वाह।

शुभा० ना० स्त्री० सुधा, शोभा, सिद्धिविशेष, परखी और बकरी।

शुभ्रांशु० ना० पु० चन्द्रमा।

शुभ्रांसिता० ना० स्त्री० वंशरोचन।

शुभ्र० गु० श्वेतवर्ण, उजला, सुन्दर।

शुभ्रपुष्प० ना० पु० पोस्ता का पौधा।

शुम्भ० ना० पु० दैत्यविशेष जो दुर्गाने बधा।

शुशकारना० अ० क्रि० अहेर करने में कुत्तेको हुसकाना वा दौड़ाना।

शुशकारी० ना० स्त्री० कुत्तेको हुसकानेका काम।

शुश्रूषा० ना० स्त्री० सेवा, टहल, कहना, बोलना, सुननेकी इच्छा।

शुष्क० गु० सूखा।

शुष्कास्थि० ना० पु० सूखीहड्डी।

शूकर० ना० पु० सूअर, वराह, श्री विष्णुका तृतीयावतार।

शूकरक्षेत० ना० पु० वाराहक्षेत्र, पचर्कागार।

शूता० ना० स्त्री० कुम्भीपौधा।

शूद्र० ना० पु० चौथावर्ण, नीचजाति।

शूद्रता० ना० स्त्री० नीचपन, नीचता।

शूद्रा० ना० स्त्री० शूद्रजाति की स्त्री।

शूद्री० ना० स्त्री० शूद्र की स्त्री।

शून्य० गु० सूना, खाली, एकान्त, ना० पु० बिन्दु।

शून्यता० ना० स्त्री० सूनापन, खाली होना।

शून्यवादी० ना० पु० नास्तिक, काफिर, जैनधर्मी।

शूर० ना० पु० सूर्य, सूअर, सर्प, गु० बहादुर।

शूरता० ना० स्त्री० वीरता, सूरापन, बहादुरी।

शूरत्व० ना० पु० शूरता।

शूरवीर० ना० पु० रावत, योद्धा, वीर।

शूरसेन० ना० पु० वसुदेवजी के पिता, मथुरा के पास देशविशेष।

शूर्प० ना० पु० सूप, सूप, छाज।

शूर्पणखा० ना० स्त्री० रावण की बहन।

शूल० ना० पु० हथियार, बड़ी पीड़ा, त्रिशूल, बबूल का कांटा, दर्द, रोगविशेष।

शूलनाशन० ना० पु० हींग।

शूली० ना० पु० श्रीशिवजी, शूलरोगग्रस्त, सूली।

शृकाल०
शृगाल० } ना० पु० गीदड़, सियार।

शृंखल० ना० पु० बन्धनविशेष, सांकल, सिकड़ी, जंजीर।

शृंखला० ना० स्त्री० कटिबन्धन, बाहुबन्द, घुन्ना, सिलसिला, जंजीर।

बृहद्दला० ना० स्त्री० सहदेवी पौधा।
बृहद्राज० ना० पु० कसेरू।
बृहद्भानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि।
बृहस्पति० ना० पु० पांचवां ग्रह, देवपुरोहित।
बृहस्पतिवार० ना० पु० पांचवांवार, बिहफे।
वृक्ष० ना० पु० पेड़, तरवर।
वृक्षकन्दा० ना० स्त्री० विदारीकन्द, मूसली।
वृक्षमूल० ना० पु० वृक्षकी जड़।
वृक्षमूलस्थली० ना० स्त्री० थाला, थांवला।
वृक्षवल्ली० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
वृक्षसारक० ना० पु० गूमा, पौधाविशेष।
वेग० ना० पु० उतावली, फुर्त्ती, अव्य० शीघ्र।
वेगगामी० } गु० उतावला, शीघ्रगामी, जल्द।
वेगवती० }
वेगवान्० ना० पु० पवन, चीतापशु, गु० वेग-गामी।
वेगि० } अव्य० शीघ्र, जल्द।
वेगी० }
वेणी० ना० स्त्री० त्रिवेणी अर्थात् प्रयाग में गंगा यमुना सरस्वती का संगम, स्त्रियों की चोटी।
वेणु० ना० पु० वंशी, मुरली, बांस, राजाविशेष।
वेणुधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, बाजीगर।
वेणुवा० ना० पु० वंशरोचन, बाजीगर, ठग, चालाक।
वेतस० ना० पु० उजरत, मिहनताना।
वेतम० ना० पु० अम्लवेत।
वेताल० ना० पु० पिशाचविशेष, जिन।
वेत्ता० ना० पु० ज्ञाता, ज्ञानी, जाननेहारा।
वेत्र० ना० पु० बेंत।
वेत्रवती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
वेत्रवन्ती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
वेद० ना० पु० हिन्दूलोगों में आकाशीयपुस्तक जो चार हैं अर्थात् ऋग्, यजु, साम, अथर्वण।
वेदगिरा० ना० स्त्री० वेदवाणी ना० पु० मुनि-विशेष।
वेदत्रयी० ना० पु० त्रिवेद अर्थात् ऋग्, यजु, साम।
वेदन० } ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द।
वेदना० }
वेदविद्० गु० वेदवादी, वेदवक्ता, और वेद पाठक।
वेदव्यास० ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने वेदका संग्रह किया।
वेदाङ्ग० ना० पु० वेदका अंग अर्थात् शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ छन्द ४ ज्योतिष ५ निरुक्त ६।
वेदान्त० ना० पु० ईश्वर के विषयमें जो वार्त्ता वेद में निर्णीतहै उसका छओं उपनिषदमें संग्रह कियागया।
वेदान्तविद्या० ना० स्त्री० जो वेदान्त में है, आत्मज्ञान, ब्रह्मविचार।
वेदान्ती० गु० वेदान्त मतका ज्ञाता, आत्मवादी।
वेदिका० } ना० स्त्री० अग्निहोत्र, चौक, वेदी।
वेदी० }
वेध० ना० पु० छिद्र।
वेधक० ना० पु० छिदवैया, वेधकार।
वेधना० स० क्रि० छेदना।
वेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी।
वेधी० ना० पु० वर्मा, वेधक।
वेरमयानक० ना० पु० मलयरात, मृतकरात।
वेला० ना० स्त्री० समय, सायत, काल।
वेशर० ना० स्त्री० बेसर।
वेश्म० ना० पु० घर, मकान।
वेश्या० ना० स्त्री० गणिका, पतुरिया, छिनाल।
वेष्टकेसी० ना० पु० मोचरस।
वेष्टन० ना० पु० बेठन, लपेटन।
वेष्टित० गु० जो चारों ओरसे ढका, पूरा।
वेश्म० ना० पु० वेश्म।
वै० अव्य० निश्चय।
वैकल० गु० व्याकुल, विकल।

शृंग० ना० पु० सींग, शिखर, पहाड़की चोटी।
शृंगनाम्नी० ना० स्त्री० ककरासिंगी।
शृंगवेर० ना० पु० सोंठ, अदरक।
शृंगाट० ना० पु० सिंघाड़ा।
शृंगार० ना० पु० प्रथमरस, १६ प्रकार का सिंगार, सँवार, सजधज।
शृंगारित० गु० सँवारीहुई, शृंगारयुत।
शृंगिका० ना० स्त्री० मेढ़ासिंगी।
शृंगी० ना० पु० जिस पशुके सींगहों, ककरासिंगी, भैंसा, पर्वतमुनिविशेष।
शृणु० क्रि० सुनो।
शेखर० ना० पु० शिरमें बांधने की फूलों की माला, मस्तकाभरण, शिर।
शेफालिका० ना० स्त्री० हरसिंगार।
शेल० ना० पु० अस्त्र विशेष।
शेली० ना० स्त्री० सांग, बालों की लट।
शेलु० ना० पु० भेधी।
शेलमुख० ना० पु० बिल्व, बेल।
शेश० ना० पु० सांपोंकाराजा, धरणीधर।
शेष० ना० पु० अवशिष्ट, समाप्ति, बाकी, नागराजविशेष, जिसके सहस्र शिर हैं, जिनपर विष्णुनारायण सोते हैं, थोड़ा।
शेषावस्था० ना० स्त्री० वृद्धावस्था, बाकी उमर।
शैखरिक० ना० पु० ऊंगा।
शैत्य० गु० ठंढा।
शैथिल्य० ना० पु० शिथिलता।
शैल० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
शैलराज० ना० पु० हिमाचल, पर्वत का राजा।
शैली० ना० स्त्री० रीति, वार्त्तिक, गु० पर्वती।
शैव० ना० पु० शिवका उपासक।
शैवाल० ना० पु० जलका पौधाविशेष, सिवाल।
शैवी० ना० पु० शैव।
शैशव० ना० पु० शिशुता, बालकता, लड़काई।
शोक० ना० पु० दुःख, क्लेश, सन्ताप, विलाप।
शोकार्णव० ना० पु० दुःखका सागर, महादुःख।
शोकार्त्त० गु० शोकग्रस्त, शोकसे व्याकुल।
शोच० ना० पु० चिन्ता, अफसोस, अन्देशाह।
शोचन० ना० पु० विचारन, मनसूबह, चिन्तन।
शोचना० च० क्रि० विचारना, अन्देशाहकरना, अफसोसकरना, पश्चात्ताप करना।
शोचनीय० गु० जो शोचने के योग्य है।
शोण० ना० पु० पुष्पविशेष, लालरंग, लाल, मगधदेशका नद।
शोणभद्र० ना० पु० मगधदेश, मैं नदविशेष।
शोणित० ना० पु० रुधिर, लोहू, केसर।
शोथ० ना० पु० सूज, फुलाव।
शोध० ना० पु० ऋणका भरदेना, पता, खबर, तलाश।
शोधन० ना० पु० दोषका निकालना अर्थात् शुद्ध करना।
शोधित० गु० जो सोजागया या ढूंढागया, शुद्ध कियागया।
शोध्य० गु० जो शोधने के योग्य।
शोभन० गु० मनोरम, मनोहर, सुन्दर।
शोभा० ना० स्त्री० सुन्दरता, शृंगार, चमक, कान्ति।
शोभायमान० } गु० विभूषित, चमकीला,
शोभित० } भड़कीला।
शोल० ना० पु० मृगविशेष।
शोषक० गु० चूसनेहारा, सुखानेवाला, घटानेहारा।
शोषण० ना० पु० सुखाना, चुसाव, घटना।
शौच० ना० पु० स्नान, स्नानादि कर्त्तव्यकर्म।
शौचकर्म० ना० पु० स्नानादि, शुचि क्रिया।

वैकुण्ठ० ना० पु० विष्णुधाम, स्थिर, नारायण (विष्णुर्नारायणःकृष्णो० वैकुण्ठोविष्टरश्रवाः इत्यमरः)।
वैकुण्ठनाथ० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
वैगन्ध० ना० पु० गन्धक।
वैचित्रता० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, रंगारंग।
वैजनाथ० ना० पु० वैद्यनाथ।
वैजयन्तिका० ना० स्त्री० अरणी।
वैजयन्ती० ना० स्त्री० पताका, झण्डा।
वैडूर्य्य० ना० पु० नीलमणि, नीलम।
वैतरणी० ना० स्त्री० यमपुरी की नदी।
वैताल० ना० पु० वितल, बेताल, पिशाच, भाट, बन्दी।
वैदिक० ना० पु० वेदपाठी, जो वेदोक्त कर्म करता है।
वैदेही० ना० स्त्री० पीपरी, श्रीसीताजी।
वैद्य० ना० पु० चिकित्सक, तबीब, हकीम।
वैद्यक० ना० पु० वैद्यविद्या की पुस्तक, वैद्य विद्या।
वैद्यनाथ० ना० पु० धन्वन्तरि, झारखण्ड में श्रीमहादेवजी।
वैभव० ना० पु० राज्य, विभवता, ऐश्वर्य।
वैर० ना० पु० शत्रुता, अदावत।
वैरागी० ना० पु० जो वैराग्य धारण करे।
वैराग्य० ना० पु० विषय त्याग, उदासपन।
वैराट्० ना० पु० जगत्रूप, सर्वरूप।
वैरिन्० ना० स्त्री० शत्रु स्त्री, वैरी की स्त्री।
वैरी० ना० पु० शत्रु, दुश्मन।
वैलक्षण० ना० पु० विलक्षणता, भावान्तर।
वैलापत्रक० ना० पु० मुख्य सर्प।
[illegible]

वैशारण० ना० पु० मत्स्य, मछली।
वैशेषिक० ना० पु० शास्त्रविशेष।

वैश्य० ना० पु० तृतीय वर्ण, राजपूत, जाति विशेष, बैस।
वैश्यका० ना० स्त्री० मुहूर्ती, नदी।
वैश्यनी० ना० स्त्री० वैश्यकी स्त्री।
वैश्रवण० ना० पु० कुबेर, यक्षराज।
वैषम्य० ना० पु० असमता, विषमता, एकान्त।
वैखानस० ना० पु० वैरागी, उदासी।
वैष्णव० ना० पु० विष्णुका उपासक, गु० जो विष्णुका है।
वैष्णवी० ना० स्त्री० लक्ष्मी जो विष्णुकी है।
वैसा० गु० उसके समान, उसीप्रकार।
वैसे० अव्य० सेंत, विनामोल, मुफ्त।
वैज्ञानिक० ना० पु० विज्ञान, ज्ञाता, परमज्ञानी।
वोहित० ना० पु० जहाज, बड़ीनाव।
व्यक्त० गु० ज्ञात, मालूम, खुला, स्पष्ट, ज्ञानी, पद, एक।
व्यक्ति० ना० स्त्री० एकता, पृथगात्मा, एकाई, प्रकटता, विभक्ति।
व्यग्र० गु० भूला, भटका, व्याकुल, घाबरा।
व्यग्रित० गु० चिन्तायुत, विकलित।
व्यंग० ना० पु० लोहा, कुटिलाई।
व्यंगता० ना० स्त्री० कुटिलता।
व्यजन० ना० पु० पंखा, बेना।
व्यञ्जक० गु० प्रकाशक।
व्यञ्जन० ना० पु० स्वररहित समस्त वर्ण, शाक आदि तरकारी, चटनी।
व्यतिक्रम० ना० पु० उल्लंघन, अन्यथा, विरुद्धता।
व्यतिरिक्त० गु० अलग, भिन्न, अन्य।
व्यतिरेक० ना० पु० भिन्नता, भेद।
व्यतीत० गु० जो बीतगया, गुजरगया।
व्यतीपात० ना० पु० योगविशेष।
व्यत्यय० ना० पु० उलटाई, विरोध, विरुद्धता।

शौनक० ना० पु० मुनिविशेष ।
शौरि० ना० पु० भगवान्, शनैश्चर ।
शौरिप्रिय० ना० पु० विजयसार ।
शौर्य्य० ना० पु० सूर्मापन, बहादुरी ।
श्मशान० ना० पु० मरघट, मृतक जलाने का स्थानविशेष ।
श्याम० ना० पु० कोकिला, काम्बोज से पश्चिम देशविशेष, श्रीकृष्णचन्द्रजी, कालावर्ण ।
श्यामकर्ण० ना० पु० यह घोड़ा जिसका एक कान श्याम और केश पीत और सर्व शरीर चन्द्रवर्ण होवे ।
श्यामल० गु० कालावर्णविशेष, गु० पीपरी ।
श्यामली० ना० स्त्री० काली, नीली ।
श्यामसुन्दर० ना० पु० श्रीकृष्णजी ।
श्यामा० ना० स्त्री० श्यामरंग का पक्षी, पांडर, पीपली, श्यामली, इन्द्रली, भरजली, प्रिय गुरात, प्रीति, कालिकादेवी ।
श्यामाक० ना० पु० सामाधान ।
श्यालक० } ना० पु० साला, पत्नी का भाई ।
श्याला० }
श्येन० ना० पु० पक्षीविशेष, बाज ।
श्रद्धान० गु० श्रद्धायुक्त ।
श्रद्धा० ना० स्त्री० आदर, इच्छा, विश्वास, प्रतीति, शुभेच्छा ।
श्रद्धालु० गु० श्रद्धासंयुक्त ।
श्रम० ना० पु० थकाई, दौड़धूप, उद्यमकष्ट ।
श्रमबुन्द० ना० पु० श्रम करने में जो पसीना ।
श्रमित० गु० थका, मांदा ।
श्रमी० गु० श्रमकरनेहारा, उद्यमी ।
श्रव० ना० पु० कान, बहन, चलन ।
श्रवण० ना० पु० कान, सुनाई और बाईसवां नक्षत्र ।
श्रवणशीर्षिका० ना० स्त्री० म्योड़ी, मुण्डी ।
श्रवणा० ना० स्त्री० बाईसवां नक्षत्र ।
श्रवणीय० गु० जो सुनने के योग्य है ।
श्रवत० क्रि० चुवत, बहत ।

श्रवती० ना० स्त्री० नदी ।
श्राचूक० ना० पु० अर्जुन ।
श्राद्ध० ना० पु० पितरों को शास्त्र रीति से पिण्डदान देना, यज्ञ ।
श्राद्धदेव० ना० पु० धर्मराज, यमराज ।
श्राद्धपक्ष० ना० पु० कनागत, आश्विन कृष्ण ।
श्रान्त० गु० श्रमित, जो थकगया, श्रमित ।
श्रान्ति० ना० स्त्री० श्रम, परिश्रम ।
श्राप० ना० पु० शाप, आशीर्वाद से विपरीत, बद्दुआ ।
श्रापित० गु० शापित, शाप दियागया ।
श्रावक० ना० पु० जातिविशेष जो नास्तिक अर्थात् जैनियों के चेले हैं, नास्तिक ।
श्रावण० ना० पु० सावन, चौथा महीना ।
श्री० ना० स्त्री० संपत्ति, शोभा, सुन्दरता, लक्ष्मी, शब्द के पहले बड़ाई का बोधक ।
श्रीकण्ठ० ना० पु० सदाशिव ।
श्रीकान्त० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण ।
श्रीखण्ड० ना० पु० चन्दन ।
श्रीगेह० ना० पु० श्वेतकमल, शोभा का घर, लक्ष्मी का घर, खजाना ।
श्रीदामा० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक सखा ।
श्रीपति० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण ।
श्रीपर्णी० ना० स्त्री० कम्भारी ।
श्रीपुष्प० ना० पु० लौंग, लवंग ।
श्रीफल० ना० पु० नारियल, बेल, आंवला ।
श्रीमत्० गु० भाग्यवान्, धनी, शोभा संयुक्त, धनाढ्य, दौलतवर ।
श्रीधर० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण ।
श्रीधराचार्य० ना० पु० आचार्यविशेष जिन्हों ने श्रीमद्भागवत का तिलक किया ।
श्रीनगर० ना० पु० बद्रीनाथ के मार्ग में पर्वत पर नगरविशेष, कश्मीर में नगरविशेष ।
श्रीमन्त० } गु० भाग्यवान्, धनी, शोभासंयुक्त,
श्रीमान्० } धनाढ्य, दौलतवर ।

व्यथा० ना० स्त्री० पीड़ा, बाधा, दुःख, दर्द।
व्यथित० गु० दुःखित, पीड़ित।
व्यभिचार० ना० पु० परस्त्रीगमन, कुकर्म।
व्यभिचारिणी० ना० स्त्री० दुराची, कुलटा, स्वैरिणी, छिनाल।
व्यभिचारी० ना० पु० छिनला, स्वैरथ, बदकार, जो व्यभिचार करे।
व्यय० ना० पु० लागत, क्षय, नाश, खर्च।
व्ययक० गु० खर्च करनेहारा, नाशक।
व्यर्थ० गु० वृथा, निकम्मा।
व्यलीक० ना० पु० कपट, छल, झूठ।
व्यवच्छेद० ना० पु० अलग करना।
व्यवधान० ना० पु० आच्छादन, अन्तर, बीच, बीचबिचाव।
व्यवधायक० ना० पु० जो व्यवधान करे।
व्यवसाय० ना० पु० उद्योग, परिश्रम, यत्न, उपाय, तदबीर, छल।
व्यवसायी० गु० जो व्यवसाय करे।
व्यवस्था० ना० स्त्री० धर्मशास्त्रकी आज्ञा वा वाक्य, अलग करना, दशा, रीति।
व्यवस्थापक० गु० व्यवस्था का देनेहारा।
व्यवस्थित० गु० जो भिन्न कियागया, जो व्यवस्था, कियागया, अचल।
व्यवहार० ना० पु० उद्यम, धन्धा, कार्य, टण्टा, व्यापार, अभ्यास, झगड़ा, मोल, रीति, भांति, देनलेन।
व्यवहार्य्य० गु० जो व्यवहार के योग्य हो।
व्यवहित० गु० संयुक्त, ढकाहुआ, छुपा।
व्यसन० ना० पु० जूआआदि कुकर्म।
व्यसनी० गु० ज्वारी आदि कुकर्मी।
व्यस्त० गु० व्याकुल, फैला।
व्याकरण० ना० पु० शब्दके साधुत्वका उपयोगी शास्त्र, जिस से पदबोध होवे।
व्याकरणी० ना० पु० व्याकरणज्ञाता।
व्याकुल० गु० घाबरा, अस्थिर चित्त, हैरान।
व्याकुलता० ना० स्त्री० घबराहट, हैरानी।
व्याख्या० ना० पु० } अर्थका व्याख्या व्याख्यान० ना० स्त्री० } कहना, वर्णन, बखान।
व्याघात० ना० पु० अटकाव, योगविशेष।
व्याघ्र० ना० पु० बाघ, शेर।
व्याघ्रपाद० ना० पु० कांकेई, बाघका पांव।
व्याघ्रपुच्छ० ना० पु० दोनों अरण्ड।
व्याघ्री० ना० स्त्री० छोटी कटाई, व्याघिनी।
व्याज० ना० पु० छल, ठगई, मिस, ब्याज, सूद, थोड़ा, बहाना।
व्याजक० गु० छली, ब्याज, अर्थ।
व्याजी० ना० पु० ब्याज लेनेहारा, छली।
व्याजू० ना० पु० ब्याजके लिये जो ऋणहो।
व्याध० } ना० पु० आखेटकी, हिंसक, शिकारी, जो वनके पशु मारखावे।
व्याधा० }
व्याधि० ना० स्त्री० रोग, पीड़ा जो ताप आदि से होवे।
व्याधिघात० ना० पु० किरवाली।
व्याधित० } गु० रोगी, पीड़ित, दुःखित।
व्याधी० }
व्यान० ना० पु० समस्त शरीर में व्यापक वायु, प्राणविशेष।
व्याप० ना० पु० दबाव।
व्यापक० गु० फैलाहुआ, विभु।
व्यापकता० ना० स्त्री० फैलाव, विभुता, वैभव।
व्यापना० अ० क्रि० सर्वत्र फैलना।
व्यापाद० ना० पु० नास्तिकता, कुकर्म।
व्यापार० ना० पु० काम धन्धा, चाली, धर्म, खबर, चिह्न।
व्यापारार्थ० गु० जिसका अर्थ व्यापार है।
व्यापी० गु० विभु, सर्वत्र फैलनेहारा।
व्याप्त० गु० जो फैलगया, सर्वगत।
व्याप्ति० ना० स्त्री० सर्वत्रगति, व्याप्ति सामान्य।
व्यामोह० ना० पु० पीड़ा, दुःख।

श्रीयुक्त० } गु० यशवन्त, सुख्याती, धनी,
श्रीयुत० } भाग्यवान्, नामी ।

श्रीरंग० ना० पु० श्रीनारायण, विष्णुजी ।

श्रीरंगपट्टन० ना० पु० महीशूर अर्थात् मैसूर देश की राजधानी ।

श्रीराग० ना० पु० रागविशेष, तीसरा राग ।

श्रीवणा० } ना० स्त्री० म्योंड़ी, मुण्डीपोधा ।
श्रीवर्णी० }

श्रीवत्स० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण, लक्ष्मी का हृदय में वास ।

श्रीहट्ट० ना० पु० सिलहट, नगरविशेष, जो ढाका के पूर्व है ।

श्रीहिंडोल० ना० पु० रागविशेष ।

श्रुत० गु० जो सुना गया ।

श्रुति० ना० पु० वेद, कर्ण, कान, समाचार, ना० स्त्री० सुनाहट ।

श्रुतिमणि० ना० पु० कुण्डल, कर्णफूल ।

श्रुतियुक्ति० ना० स्त्री० वेद की विधि, शास्त्रोक्त ।

श्रुतीदृग० ना० पु० पीलुवृक्ष ।

श्रेणी० ना० स्त्री० पंक्ति, लकीर, कतार, समूह, यूथिका ।

श्रेय० ना० पु० कल्याण, कीर्ति ।

श्रेयसी० ना० स्त्री० हड़, गजपीपर, रासना ।

श्रेष्ठ० गु० उत्तम, अच्छा, सबसे भला, प्रधान ।

श्रेष्ठता० ना० स्त्री० उत्तमता, प्रधानता, भलापन ।

श्रोण० ना० पु० रुधिर, रक्त, लोहू, खून ।

श्रोणातिलका० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नी ।

श्रोणि० ना० स्त्री० कटि, कमर ।

श्रोणित० ना० पु० रुधिर, रक्त, लहू ।

श्रोत० ना० पु० कान, कर्ण, नदी की धारा, झरना, सोता ।

श्रोतव्य० गु० जो सुनने के योग्य ।

श्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी ।

श्रोता० ना० स्त्री० नदी, गु० सुननेहारा ।

श्रोत्र० ना० पु० कान, रोमरन्ध्र, सुननेहारा ।

श्लाघनीय० गु० बड़ाई के योग्य, मर्य्यादिक ।

श्लाघा० ना० स्त्री० स्तुति, मर्य्यादा, विनती ।

श्लाघ्य० ना० पु० श्लाघनीय ।

श्लीपद० ना० पु० थम्भ, फीलपाया ।

श्लेष० ना० पु० जिसपद के दो अर्थ वा अधिक हों ।

श्लेषा० ना० स्त्री० नवां नक्षत्र, अश्लेषा ।

श्लेष्मा० ना० स्त्री० कफ, साकटपकना, जुकाम ।

श्लोक० ना० पु० पद्य, छन्द ।

श्वशुर० ना० पु० पत्नी वा पति का पिता, ससुर ।

श्वश्रू० ना० स्त्री० सास, पत्नी या पति की माता ।

श्वसन० ना० पु० पवन, वायु, यथा (प्रचेता: वरुण:पाशी यादसांपतिरप्पति:; श्वसन: स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वासदागति:, इत्यमर:)।

श्वसनक० ना० पु० रूसा पौधा ।

श्वान० ना० पु० कुत्ता ।

श्वास० ना० पु० प्राणवायु, सांस ।

श्वेत० गु० शुक्ल, धौला, सफ़ेद ।

श्वेतता० ना० स्त्री० शुक्लता, उज्ज्वलता, सफ़ेदी ।

श्वेतदंडी० ना० स्त्री० दूब, घास ।

श्वेतपुष्पा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, कनैर वृक्ष ।

श्वेतफला० आहुलेर ।

श्वेतमूली० ना० स्त्री० पुनर्नवा ।

श्वेतराजी० ना० स्त्री० चचेंडा तरकारी ।

श्वेतसर्षप० ना० पु० सफ़ेद सरसों ।

श्वेता० ना० स्त्री० दूब घास ।

श्वेतिका० ना० स्त्री० सौंफ ।

[ष]

षट्० ना० गु० छः, ६ ।

षट्कोण० ना० पु० इन्द्रका वज्र, छः कोनेका ।

षट्चक्र० ना० पु० छः चक्र अर्थात् आधार, स्वा-

व्यायाम० नां० पु० परिश्रम, थकाई, मेहनत, कर्म।

व्याल० नां० पु० सांप, सर्प, चीतापशु, हाथी, दिन, क्रूरमनुष्य।

व्यालदंष्ट्रक० नां० पु० गोखुरू।

व्यालपत्री० नां० स्त्री० ककड़ी।

व्याला० नां० पु० करैता, घूहेरा, नां० स्त्री० सांपिन।

व्यालारि० नां० पु० गरुड़, मोर, न्योला, सिंह।

व्यासी० नां० पु० श्रीमहादेवजी, गु० सपेरा।

व्यावहारिक० नां० पु० मंत्री, परामर्शी।

व्यास० नां० पु० कुतर, विस्तार, फैलाव, श्रीवेदव्यास।

व्यासार्द्ध० नां० पु० आधाविस्तार।

व्यासेश्वर० नां० पु० काशीके पार रामनगर में व्यासस्थापित महादेव।

व्युत्क्रम० नां० पु० उलटाक्रम।

व्युत्पत्ति० नां० स्त्री० शास्त्रीय ज्ञान, विद्या, शब्दको सिद्ध करने का ज्ञान, उत्पत्ति, दृढ़ता, विद्याकी।

व्युत्पन्न० नां० पु० व्युत्पत्तिमान्, विद्यावान्।

व्यूह० नां० पु० युद्धहेतु सेनाकी रचनाविशेष, सेनाका कोठविशेष, समूह, झुण्ड।

व्योम० नां० पु० आकाश, आसमान।

व्योमकेश० नां० पु० श्रीमहादेवजी।

व्योमचर० नां० पु० पक्षी, देवता, ग्रह, नक्षत्र।

व्योमासुर० नां० पु० दैत्यविशेष।

व्यौत्स्ना० स० क्रि० [illegible]।

व्रज० नां० पु० देशविशेष।

व्रजन्ति० क्रि० [illegible], जाते हैं।

व्रजवासी० नां० पु० व्रजके निवासी।

व्रजेन्द्र० } नां० पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
व्रजेश० }

व्रत० नां० पु० पुण्यकर्मविशेष यथा तपस्या, उपवास।

व्रती० गु० जो व्रतकरे।

व्रात्य० नां० पु० वह ब्राह्मण जिसका यज्ञोपवीत नहीं भया।

व्रीड़ा० नां० स्त्री० लाज, लज्जा, हया।

व्रीहि० नां० पु० अनेक प्रकार का धान्य।

[श]

शक० नां० पु० संवत् चलानेहारा, राजा, यथा शालिवाहन, जातिविशेष, देशविशेष, संवत्, शाक।

शककर्त्ता० } नां० पु० शाका चलानेहारा,
शककारक० } यथा कलियुग में युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, शालिवाहन, विजयाभिनन्दन, नागार्जुन, बलि।

शकट० नां० पु० छकड़ा।

शकुन० नां० पु० शुभाशुभ का सूचक चिह्न, पक्षी, सगुन, चिड़िया।

शकुनी० नां० पु० जो मनुष्य शकुनको जानता हो, पक्षी, चिड़िया, कौरवोंका मन्त्री।

शकुन्त० } नां० पु० पक्षी, चिड़िया।
शकुन्ति० }

शकुल० नां० पु० कुटकी, मत्स्यविशेष।

शक्त० गु० सामर्थी, बलवान्।

शक्राह्व० नां० पु० इन्द्रजौ।

शक्ति० नां० स्त्री० सामर्थ्य, बल, बरछी, सांग, देवताका पराक्रम जो अपनी स्त्रीरूपी ठहराया गया, माया, देवी, भगवती।

शक्तिमान्० गु० बलवान्, समर्थी।

शक्य० गु० होनेके योग्य, करनेके योग्य।

शक्यता० नां० स्त्री० होने और करनेकी योग्यता, या [illegible]।

शक्र० नां० पु० इन्द्र।

शक्रधनु० } नां० पु० [illegible] धनुष जो
शक्रचाप० } [illegible] है वा [illegible] धनुष।

विधान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा ।

षट्पद० ना० पु० भौंरा, मधुमाखी, छन्द-विशेष ।

षट्पदी० ना० स्त्री० भ्रमरी ।

षट्शास्त्र० ना० पु० छः शास्त्र अर्थात् न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, पातंजल, सांख्य, वेदान्त ।

षड्ग्रन्थि० ना० स्त्री० पीपरामूल ।

षड्ऋतु० ना० पु० छः ऋतु अर्थात् वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर ।

षड्ऊर्मी० ना० स्त्री० छः ऊर्मी अर्थात् शीत, उष्ण, दुःख,सुख,मान, अपमान ।

षड्लोक० ना० पु० छः लोक अर्थात् भू, अन्तरिक्ष, स्वर्ग, पितृ, सूर्य, ब्रह्मलोक ।

षड्गुण० ना० पु० छः गुण अर्थात् निर्भेद, निर्मात्सर्य, निर्मोह, निर्लोभ, निष्क्रोध, निष्काम ।

षड्रस० ना० पु० छः रस अर्थात् कड़ुआ, खट्टा, मीठा, चर्परा, कसैला, खारा ।

षड्ग्रन्था० ना० स्त्री० कचूर भेद ।

षड्राग० ना० पु० छः राग अर्थात् मेघ, भैरव, मलार, दीपक, श्रीहिंडोल, मालकोश और झगड़ा बखेड़ा ।

षड्वदन० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक ।

षड्विकार० ना० पु० छः विकार अर्थात् उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालकता, प्रौढ़ता, वृद्धता, मृत्यु ।

षडंग० ना० पु० शरीर के छः अंग अर्थात् हाथ, पांव, कटि, शिर, वेदके छः अंग अर्थात् ज्योतिष, व्याकरणादि, गोखुरू ।

षड्गुणा० ना० स्त्री० वच औषधि ।

षण्नेत्रिका० ना० स्त्री० कश्यपकी पत्नी ।

षड्विंशति० गु० छब्बीस, २६ ।

षड्विंशतितम० गु० छब्बीसवां ।

षड्विधि० ना० स्त्री० छः प्रकार ।

षडंगवेद० ना० पु० वेदके छः अंग अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष, छन्दःप्रबन्ध ।

षडंगसमाधि० ना० स्त्री० समाधि के छः अंग अर्थात् शम, दम, उपराम, विषय, सुख, दुःख, समान, वेद आचार्य का आज्ञाकारी होना, एकाग्रचित्त ।

षडानन० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक ।

षण्ढ० ना० पु० नपुंसक ।

षण्मास० ना० पु० छः मास ।

षण्मुख० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक ।

षष्ठ० गु० छः, ६, छठवां ।

षष्टि० गु० साठ, ६० ।

षष्ठी० ना० स्त्री० दुर्गाजी, छठी तिथि, कारक ।

षष्ठ्यन्त० गु० जिसके अन्त में षष्ठीका प्रत्यय है ।

षोडश० गु० सोलह, १६ ।

षोडशचन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा की १६ कला अर्थात् अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, जोत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूरणा, पूर्ण अमृता १६ ।

षोडशविधपूजा० ना० स्त्री० सोलह प्रकार से पूजा अर्थात् आवाहन, स्थापन, पाद्य, सिंहासन, अर्घ, आचमन, स्नान, चन्दन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमस्कार, आरती १६ ।

षोडशशृङ्गार० ना० पु० सोलह शृङ्गार अर्थात् शुचि, स्नान, निर्मलपट, महावर, वेणीबंधन, मांगसिन्दूर, आललौरि, तिलकपोल, केसरमर्दन, मेंहदीपग, कुसुमाभरण, हेमाभरण, लवंगादि आभरण, दांतोंमें मिस्सी, ताम्बूल, आंखों में सुरमा १६ ।

षोडशी० ना० स्त्री० मृतकका कर्म विशेष ।

[स]

स० अव्य० जिसशब्द के आदि में रहके

शंक० ना० पु० भय, डर, मुख्यसर्प।

शंकर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कल्याण, गु० सकुड़ा, तंग, कठिन, दुरंगा जिसमें दूसरा मिलगया।

शङ्करदेव० ना० पु० श्रीशिव, शङ्कराचार्य।

शङ्करा० ना० रागिनीविशेष।

शङ्कराचारी० ना० पु० शङ्कराचार्य्य का मतावलम्बी।

शङ्कराचार्य्य० ना० पु० योगेश्वरविशेष जिन्हों ने जैनमतका खण्डन किया।

शङ्कराभरण० ना० पु० रागिनीविशेष।

शङ्करी० ना० स्त्री० पार्वती।

शङ्का० ना० स्त्री० भय, डर, खटका, जागरू, जायज़रूर, हरास।

शङ्कित० गु० भयभीत, डराभया।

शंकु० ना० पु० ठूंठ, मत्स्यविशेष, बर्छी, कील विशेष।

शङ्ख० ना० पु० जलजन्तुविशेष, वा उसका घर, बड़ा घोंगा।

शङ्खचूड़० ना० पु० राजाविशेष।

शङ्खनाम्नी० } ना० स्त्री० शङ्खाहोली।
शङ्खपुष्पी० }

शङ्खलिखित० ना० पु० स्मृतिविशेष।

शङ्खासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।

शङ्खाहोली० ना० स्त्री० पौधाविशेष।

शङ्खिनी० ना० स्त्री० विशेष लक्षणयुक्त स्त्री, श्वासविशेष जो गुदा से निकलती है।

शङ्खोद्धार० ना० पु० द्वारिकाजी और काशीजी में तीर्थविशेष।

शचान० ना० पु० बाज, शिकरा।

शटी० ना० पु० कचूर, कचूरभेद।

शठ० गु० धूर्त, ठग, छलिया, मूर्ख।

शठता० ना० स्त्री० धूर्तता, ठगई, मूर्खता।

शण० ना० पु० सन।

शणसूत्र० ना० पु० सुतली, सनका जाल।

शण्ड० ना० पु० सांड।

शण्डी० ना० स्त्री० सांडिनी।

शत० ना० पु० सौ, शत, १००।

शतखण्ड० ना० पु० सौटुकड़ा।

शतघ्नी० ना० स्त्री० तोप, बंडीभुशुण्डी।

शतद्रु० } ना० स्त्री० सतलज, नदी जो पंजाब
शतद्रू० } में है।

शतधन्वा० ना० पु० यादवविशेष।

शतपत्र० ना० पु० सफेद कमल।

शतपदा० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।

शतपञ्च० गु० सात पांच १२ वा ५००।

शतपर्विका० ना० स्त्री० दूर्वा, दूबघास।

शतपा० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।

शतपुष्पा० ना० स्त्री० सौंफ।

शतभिषा० ना० स्त्री० पचीसवां नक्षत्र।

शतभेदक० ना० पु० अम्लवेत।

शतमत० ना० पु० सत्यधर्म, सच्चामत।

शतमन्यु० ना० पु० इन्द्र।

शतमूली० ना० स्त्री० लताविशेष।

शतशः अव्य० सैकड़ों।

शता० ना० स्त्री० सौंफ।

शतावरि० ना० स्त्री० शतावर, छतावर।

शत्रु० ना० पु० वैरी, रिपु, दुश्मन।

शत्रुघ्न० ना० पु० सुमित्रासुत, रामचन्द्र भाई।

शत्रुता० ना० स्त्री० वैर, दुर्जनताई।

शनक० ना० पु० विजयसार, मुनिविशेष।

शनि० ना० पु० सातवां ग्रह, शनैश्चर।

शनिवार० ना० पु० सातवांवार, शनीचर।

शनैःशनैः० अव्य० हौले २, सहज २, धीरे २

शनैश्चर० ना० पु० सातवां ग्रह।

शपथ० ना० पु० किरिया, सौंह, सौगन्द।

शब्द० ना० पु० ध्वनि, आवाज, शास्त्र बात संज्ञा आदि।

शब्दग्रही० ना० पु० कान, श्रवण।

शम० ना० पु० बाह्य इन्द्रियों का निग्रह अर्थात् त्याग।

प्रयोग होवे उसका अर्थ सहित, समान, से होता है।

सई० ना० स्त्री० नदी विशेष।

सं० अव्य० सम, सहित, से।

संक्रन्दन० ना० पु० शय्या, इन्द्र।

संयम० ना० पु० त्यागादि नियम, बराव, परहेज़।

संयमनी० ना० स्त्री० यमपुरी।

संयमनीपति० ना० पु० यमराज।

संयमी० गु० नियमी, मध्यम।

संयुक्त० गु० मिलाहुआ, संलग्न, लगा, जुड़ा।

संयुग० ना० पु० युद्ध, समर, रण, लड़ाई।

संयुत० गु० संयुक्त।

संयोग० ना० पु० मिलान, द्रव्यका मेल, संगत, देवागत इत्तिफ़ाक़न्।

संयोगी० ना० पु० मिलित, मिलनसार, संगी।

संरक्त० गु० अरुण, लालवर्ण।

संरम्भ० ना० पु० कोप, क्रोध, अहङ्कार।

संलग्न० गु० संयुक्त, संगत।

संलग्नी० गु० मिलित, लगाहुआ, संगी, संयोगी।

संलाप० ना० पु० परस्पर बातचीत।

संवत्० ना० पु० वर्ष, शाका, साल, सन्।

संवत्सर० ना० पु० वर्ष, साल।

संवत्सरी० ना० पु० वर्षका व्यवहार।

संवरण० ना० पु० आवरण, आच्छादन।

संवरना० अ० क्रि० सजना, शोभित होना, बना।

संवर्त्त० ना० पु० स्मृति ग्रन्थविशेष।

संवर्त्तक० ना० पु० बहेड़ा।

संवल० ना० पु० दैत्यविशेष, जानना मार्गका।

संवलारि० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।

संवह० ना० पु० मुख्यपवन।

संवाद० ना० पु० बातचीत, प्रश्नोत्तर, चर्चा।

संवाधा० ना० स्त्री० विपत्ति, क्लेश, आफ़त।

संवार० ना० स्त्री० सजाव, बनाव, शोभा।

संवारना० स० क्रि० सजाना, बनाना, शृङ्गार करना।

संशय० ना० पु० चिन्ता, सन्देह, भय।

संशयापन्न० गु० सन्देही, चिन्तायुक्त, भयभीत।

संसक्त० गु० समीप, मिला, युक्त।

संसर्ग० ना० पु० संगति, भेद, दर्शन, मेल, पड़ोस, समीप।

संसर्गी० गु० मिलनसार, चिन्हारी, पड़ोसी, संगती।

संसचा० ना० स्त्री० फटकरी।

संसार० ना० पु० जगत्, गृहाश्रम, दुनिया।

संसारी० गु० लौकिक, जो संसारका है।

संसृत० गु० संसारी, दुनियवी।

संस्कार० ना० पु० स्मरण का हेतु, व्यवहार यथा गर्भाधानादि १० पवित्रता।

संस्कृत० ना० पु० देववाणी।

संस्कृतानुयायी० गु० देववाणी के अनुसार।

संस्कृतभिज्ञ० गु० संस्कृत भाषा जाननेवाले लोग।

संस्थान० ना० पु० ढेर, रूप, बनावट, चतुष्पथ।

संस्पर्श० ना० पु० छुआवट, सत, लगाव।

संहत० गु० ठोस, इकट्ठा।

संहति० ना० स्त्री० समूह, ढेर।

संहरण० ना० पु० वध, हनन, मरण, हरन।

संहरना० अ० क्रि० वधहोना, हतहोना, मारा जाना।

संहार० ना० पु० नाश, वध, हत्या, गु० मारा, बधा।

संहारक० गु० नाशक, वधिक।

संहारना० स० क्रि० वधना, नाश करना।

संक्षेप० ना० पु० सार, विशेष कथन, गु० थोड़ा, सारांश, चुनाहुआ, मुख्तसर।

संक्षिप्त० गु० छिपा, अप्रकट।

संज्ञक० ना० पु० नामी, नामक।

संज्ञा० ना० स्त्री० नाम, शब्द, बुद्धि, ज्ञान।

शमन० ना० पु० शान्ति, बलिदान, यमराज, कपाली ओषधि।
शमी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, फली, छीमी।
शम्याक० ना० पु० किरवाली।
शम्बुक०
शम्बूक० } ना० पु० कौड़ी, घोंघा, सीपी, शंख।
शम्भु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
शयन० ना० पु० सोना, नींद, लेटना, बिछौना।
शय्या० ना० स्त्री० जिसपर शयन करते हैं।
शर० ना० पु० बाण, तीर, सरकण्डा, जीति, तालाब, गणित में ×।
सरजन्मा० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
शरट० ना० पु० गिरगिट, कृकलास।
शरण० ना० पु० घर, जो रक्षाकरे, श्रोथय, पनाह।
शरणागत० गु० आश्रित, जो शरणचाहे, जो पनाह मांगे।
शरण्य० ना० पु० शरण, गु० शरणके योग्य।
शरत्० स्त्री०
शरत्काल० पु० } ऋतुविशेष, जिसमें कुआर कातिक हैं, सामन्य शीतकाल।
शरत्पुष्प० ना० पु० दुपहरीफूल या उसका वृक्ष।
शरद्० स्त्री०
शरदृतु० स्त्री०
शरत्काल० पु०
शरदर्तु० स्त्री० } शरत्काल।
शरपुंखा० ना० पु० शरफोंका पौधाविशेष।
शराट० ना० पु० शब्द, निनाद, ध्वनि।
शराभ्यास० ना० पु० निशाना या चिह्न जिसे बाणादि से बेधते हैं अर्थात् बाण मारना सीखते हैं।
शराव० ना० पु० सकोरा।
शरावती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
शरावलि० ना० स्त्री० बाणों की पंक्ति, तीरों का समूह।

शरासन० ना० पु० धनुष, कमान।
शरासुर० ना० पु० बाणासुर।
शरीर० ना० पु० देह, तन।
शरीरी० गु० देही, प्राणी।
शरण० ना० पु० बाणोंसे, तीरोंसे, नाथकरके।
शर्करा० ना० स्त्री० खांड।
शर्मा० ना० पु० ब्राह्मणके नामका उपपद।
शर्वरी० ना० स्त्री० रात।
शलभ० ना० पु० टिड्डी।
शलाका० ना० स्त्री० सलाई, जदयलपट्टी, रूलर।
शलादिनी० ना० स्त्री० कुटकी।
शलीत० ना० पु० थैला, बोरा।
शल्य० ना० पु० राजाविशेष, काँटा, बाण, वैद्य क्रियाका एक अंग।
शल्यक० ना० पु० मैनफल।
शव० ना० पु० लाश, लोथ, मृतक।
शबर० ना० पु० भील।
शबरी० ना० स्त्री० भीलनविशेष, भीलनी, पीकुमारि।
शष्प० ना० स्त्री० दूबयादि नवीन घास (बाल व लतृण घास, हरयमरः)।
शश०
शशक०
शशा० } ना० पु० शशा, खरगहा।
शशांक०
शशि० } ना० पु० चन्द्रमा।
शशिवर्ण० गु० श्वेत, चन्द्ररूप, सफेद।
शशिरस० ना० पु० अमृत, पीयूष।
शस्त्र० ना० पु० हथियार जो बिनाफेंके मारते हैं, यथा खड्गादि।
शस्त्रमय० ना० पु० लोहा।
शस्त्री० हथियारबन्द, अस्त्रधारी।
शाक० ना० पु० साग, भाजी, पृथ्वी के स० द्वीपोंमें से एकका नाम।
शाकटुम्मुखी० ना० स्त्री० भाई ओषधि।

सकट० ना० पु० छकड़, लढ़ी, गणेशजी का जन्मोत्सव दिन।
सकटाख्य० ना० पु० धववृक्ष।
सकटासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको श्री कृष्णजी ने मारा था।
सकटी० ना० स्त्री० लढ़ी, गाड़ी।
सकत० ना० पु० शक्ति।
सकना० अ० क्रि० सामर्थ्य होना।
सकरा० गु० संकेत, छोटा, तंग।
सकराई० ना० स्त्री० सकेती, तंगी, छोटाई।
सकराना० स० क्रि० संकेत करना, सकोरना, स्वीकार करना, कबूल कराना।
सकरुणा० गु० दयायुत, दीनता से।
सकर्मक० गु० कर्म सहित क्रिया।
सकल० गु० सारा, समस्त, सब, सगरा।
सकाना० अ० क्रि० उदासहोना, धकना, दबना।
सकानी० गु० स्त्री० उदास होगई, लज्जित, दबगई।
सकाम० ना० पु० काम या कामना सहित।
सकारना० स० क्रि० हुण्डी को सलना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, कबूलना।
सकारे० ना० पु० प्रातःकाल, सबेरे।
सकिलना० अ० क्रि० सिमिटना, हटना।
सकिलाना० स० क्रि० समिटाना, हटाना।
सकुचना० अ० क्रि० डरना, संशयकरना, लजना।
सकुचाना० स० क्रि० लजाना, डराना।
सकुचित० गु० लज्जित।
सकुल० ना० पु० पक्षी, कुलसमेत, समस्त।
सकुलादानी० ना० स्त्री० गेंडदूर्वा।
सकेत० गु० सकरा, तंग, छोटा, ना० स्त्री० दुःख, आपदा, दुर्भिक्ष।
सकेतना० स० क्रि० समेटना, संकेत करना।
सकेलना० अ० क्रि० सकुड़ना, समेटना, बटोरना।
सकेला० ना० पु० लोहाविशेष।
सकोच० ना० पु० आदर सन्मान।
सकोरना० स० क्रि० समेटना, संकोचना, तंग करना।
सकोरा० ना० पु० कटोरा, मिट्टी वा काठका छोटा बर्त्तन।
सकोरी० ना० स्त्री० थाली, पिरिच।
सक्रोध० गु० क्रोधसमेत।
सखर० गु० अधिक, खरयुत।
सखा० ना० पु० मित्र, बन्धु, प्रियतम।
सखी० ना० स्त्री० मित्रस्त्री, सहेली, संगिन।
सख्य० ना० स्त्री० मित्रता, प्रीति।
सगड़० ना० पु० सकट, शकट।
सगर० ना० पु० अयोध्या का राजाविशेष।
सगरे० गु० सब, समस्त।
सगर्भ० गु० गर्भिणी, गर्भसमेत।
सगपहिता० ना० पु० सागपड़ीहुई दाल।
सगा० गु० जो एक माता से उत्पन्न है, अपना।
सगाई० ना० स्त्री० भाईचारा, आपस, नाता, मँगनी, नीच जातियों स्त्रीका दूसराविवाह, रिश्तह।
सगुन० ना० पु० शकुन।
सगोत्र० ना० पु० समानगोत्र, दूरकासंबन्धी।
सगौती० ना० स्त्री० मांस।
सग्लानि० गु० निरादर, लज्जित।
सघन० गु० घना, बहुतघना, गुंजान।
सध्रीची० ना० स्त्री० सखी, सहेली।
संकट० ना० पु० विपत्ति, दुःख, कष्ट, आपदा।
संकटा० ना० स्त्री० दुर्दशा, दशाविशेष, काशी जी में देवीविशेष।
संकर० ना० पु० दोगलेसे जन्मित सन्तान।
संकर्षण० ना० पु० श्रीबलदेवजी, खींचना।
संकल० ना० पु० संग्रह, ढेर, सांकर, जंजीर।
संकलन० ना० पु० जोड़, जोड़ती, योग, सांकलकी विधि से गांठना।
संकलित० गु० जो जोड़ागया, जो एकपर एक मिलायागया, ना० पु० गणित।
संकल्प० ना० पु० मनकी इच्छा, नियम, श्रा-

शाकबीज० ना० पु० बथुआ।
शाकम्भरी० ना० पु० दुर्गादेवी, नगरविशेष।
शाकल० } ना० पु० तिल जो चावल घी खांड़
शाकल्य० } आदि की मिलौनी जो हवनमें है।
शाकवणिक्० ना० पु० पुराकू, कवड़िया।
शाकश्रेष्ठ० ना० पु० सजीवनी।
शाका० ना० पु० शाक।
शाकिनी० ना० स्त्री० देवीविशेष जो दुर्गा की सहचरी हैं।
शाक्त० ना० पु० शक्तिका उपासक, देवीपूजक।
शाक्तीक० ना० पु० शाक्त, भगवतीका उपासक।
शाख० ना० स्त्री० डाली, टहनी।
शाखा० ना० स्त्री० डाली, टहनी, बहुतर्क, बहु विचार।
शाखामृग० ना० पु० वानर, बन्दर।
शाखाविलासी० ना० पु० वानर, बन्दर।
शाखाशन० ना० पु० ऊंटी।
शाखी० ना० स्त्री० वृक्ष, शाखी।
शांकरी० ना० स्त्री० पार्वती, शंकरी।
शाटिका० } ना० स्त्री० सारी, स्त्रियों के पहरने
शाटी० } का वस्त्रविशेष।
शाठ्य० ना० पु० शठता, ठगई।
शाण० ना० पु० खरशान, जिसपर हथियार चाकू आदि तेज करते हैं।
शांडिल्य० ना० पु० बिल्व, बेल, मुनिविशेष।
शातकुम्भ० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
शातातप० ना० पु० धर्मशास्त्र का प्रवर्तक मुनि।
शानपाको० ना० पु० सिरहटी।
शान्त० गु० स्थिर, शुद्धि, ठंढा, मृत।
शान्ति० ना० स्त्री० स्थिरता, कल, ठंढाई, सहन, विवाह आदि में प्रसिद्ध कर्म।
शाप० ना० पु० सराप, धिक्कार, बददुआ।
शाब्दिक० गु० शब्दज्ञाता, व्याकरणी।

शारद० ना० स्त्री० सरस्वती, शारदा, शर्दी।
शारदा० ना० स्त्री० सरस्वती, चातुरी।
शारदी० गु० जो शरदमें उत्पन्न हो।
शार्दूल० ना० पु० प्रबलसिंह, कोई कोई मनुष्य कहते हैं कि एक पक्षी होताहै जो हाथीको पंजे में दाब लेजाता है।
शाल० ना० पु० शालवृक्ष, चिरौंजी, कांटा, मत्स्यविशेष, छंद, शृगाल, शोभा, उपवस्त्र-विशेष, धन।
शालक० गु० दुःखद, छेदनेहारा, ना० पु० साला।
शालपर्णी० ना० स्त्री० औषधिविशेष।
शाला० ना० स्त्री० स्थान, घर।
शालि० ना० पु० हेमन्तऋतु के धान।
शालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, छेदनेहारी, दुःखद।
शालिवाहन० ना० पु० राजाविशेष, शाका-प्रचारक।
शाली० ना० पु० शालि, पुत्री की बहन, गु० छेदी, वान्, वन्त, युक्त, स्वामी।
शालीना० } ना० स्त्री० शोभाका गुण।
शालीशता० }
शालूर० ना० पु० मेंडक। (भेके मंडूकवर्षाभू शालूरप्लवदर्दुराः, इत्यमरः)।
शाल्मल० ना० पु० द्वीपविशेष जो पृथ्वी के सात द्वीपमें से है।
शाल्मलि० } ना० पु० सेमरवृक्ष।
शाल्मली० }
शासन० ना० पु० } आज्ञा, इकरारनामा,
शासना० ना० स्त्री० } पत्र, ताड़न, ताड़ना।
शासनीय० गु० आज्ञाके योग्य, ताड़नीय।
शास्ति० ना० स्त्री० आज्ञा, राज्य।
शास्त्र० ना० पु० आज्ञा, हिन्दूलोगोंके धर्मसम्बंधी आज्ञाकारी पुस्तकविशेष, यथा वेदविद्या की पुस्तकें।

स्त्रीय कर्म में प्रतिज्ञाविशेष, दानकल्पना।
संकल्पना० स० क्रि० दानदेना, नियम व प्रतिज्ञा करना।
संकाश० गु० ना० पु० तुल्य, प्रकाशयुत।
संकीर्ण० गु० मचामच, घना।
संकीर्त्तन० ना० पु० गुणोंका गान।
संकुचित० गु० सकुचाया, लज्जित।
संकुल० गु० मचामच, घना, भराहुआ, पूरा।
संकुलित० गु० भरा, युक्त।
संकेत० ना० पु० वचन, अवधि, सैन, इंगित, सलाह, इशारह, एकान्त।
संकोच० ना० पु० लाज, लज्जा, केसर, कानि, चिलगोजा, सिमट।
संकोचन० ना० पु० खेंच, सिमटाहट।
संकोचना० स० क्रि० बटोरना, समेटना, लजाना, कानिकरना।
संकोची० गु० लजीला, लाजवन्त।
संक्रम० ना० पु० संचार, गमन।
संक्रान्त० गु० जो बीतगया, जो एकसे दूसरे को सौंपागया।
संक्रान्ति० स्त्री० एक राशि से दूसरी राशि में सूर्यका जाना।
संखिया० ना० स्त्री० विषविशेष।
संख्या० ना० स्त्री० एकदो आदिगिन्ती, शुमार।
संग० ना० पु० संयोग, मेल, लीलागोथा, अव्य० साथ, सहित।
संगविछ० ना० पु० मोचरस।
संगति० ना० स्त्री० मैथुन, भेंट, मेल, मिलाप।
संगम० ना० पु० मेल, मिलाप, मैथुन।
संगर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, आपदा, प्रण, छावनी, लश्कर।
संगसी० ना० स्त्री० संड्सी।
संगी० ना० पु० साथी, हमराही, मिलापी।
संगीत० ना० पु० रागभेद, गान, गानेकी विद्या।
संगीतदर्पण० ना० पु० रागविद्या का ग्रन्थविशेष।
संगोपन० ना० पु० छिपाव, गोपन।
संग्रह० ना० पु० बटोर, संक्षेपन, सारार्थ लेना।
संग्रहण० ना० पु० स्वीकार करना, लेलेना।
संग्रहणी० ना० स्त्री० अतीसाररोगविशेष।
संगृहीत० गु० जो संग्रह कियागया, जो इकट्ठा कियागया।
संग्राम० ना० पु० युद्ध, समर, रण।
संघ० ना० पु० झुण्ड, समूह, मेला, ढेर, संग।
संघट० ना० पु० संयोग, मिलान, रगड़।
संघट्टन० ना० पु० रगड़न, घिसन।
संघात० ना० पु० मारना, समूह, नरकविशेष।
संघार० ना० पु० संघार।
संघारक० ना० पु० संघारक, काल, भैरव।
संघारना० स० क्रि० संहारना।
सच० गु० सत्य, साँच, अव्य० हां, ठीक।
सचमुच० अव्य० सचकर।
सचल० ना० पु० चलनेकी शक्ति, समेत, गु० जो चल फिरसके यथा मनुष्य, पशु, पक्षी।
सचाई० ना० स्त्री० सत्यता।
सचिव० ना० पु० मंत्री, वज़ीर।
सचिवज० ना० पु० मंत्रीका पुत्र, वज़ीरज़ादह।
सचु० ना० पु० आनन्द, सत्य, सांच।
सचेत०
सचेतन० } गु० सुचेत, चौकस, चैतन्य, चुस्त।
सचेष्ट० गु० चेष्टायुत, उद्युक्त।
सचौटी० ना० स्त्री० सचाई, सचकहनेकीचाल।
सच्च०
सच्चा० } गु० सत्य, ठीक, सीधा।
सच्चाई० ना० स्त्री० सचाई।
सच्चिदानन्द० ना० पु० ब्रह्म, ईश्वर।
सच्छास्त्र० ना० पु० अच्छाशास्त्र।
सज० ना० स्त्री० डौल, ढब, सिंगार, शोभा, रूप।
सजक० ना० पु० स्योना।
सजग० गु० होशियार, ख़बरदार, उजागर, चौकस, चैतन्य।

शास्त्रविहित० गु० शास्त्रकी विधिसे जो शास्त्र का है।

शास्त्रज्ञ० ना० पु० जो शास्त्र को जानता है।

शास्त्रार्थ० ना० पु० संवाद, चर्चा, बहस।

शास्त्री० गु० शास्त्रज्ञ।

शास्त्रीय० गु० शास्त्रसम्बन्धी

शास्य० गु० शासन के योग्य।

शिंशपा० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, शीशम वृक्ष।

शिखण्डिज० ना० पु० बृहस्पति।

शिखण्डिनी० ना० स्त्री० जूही।

शिखण्डी० ना० पु० मयूर, मोर, राजा द्रुपद का पुत्र।

शिखर० ना० पु० पर्वतकी धार या चोटी, शृङ्ग, लौंग।

शिखरी० ना० पु० पर्वत, ऊंचा।

शिखा० ना० स्त्री० चोटी, ...

शिखाचूड़० ना० पु० केशपाश, ...

शिखि० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि।

शिखियाला० ना० स्त्री० मयूर, मोर।

शिखिवाहन० ना० पु० स्वामिकार्तिक।

शिखी० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि, गु० फनैला।

शिग्रु० ना० पु० सहिंजन वृक्ष।

शिथिल० गु० ढीला, थका, बुरा, मन्द।

शिथिलता० ना० स्त्री० ढीलापन, थकन, थकान, सुस्ती, मांदगी।

शिम्बि० }
शिम्बिका० } ना० स्त्री० सेम तरकारी।

शिर० ना० पु० सिर, मस्तक, मूंड।

शिरा० ना० स्त्री० रंगें, नसें, नाड़ी जिसके द्वारा रुधिर सारे शरीर में फिरता है।

शिरीष० ना० पु० वृक्षविशेष, सिरसा।

शिरोधी० ना० स्त्री० गला, गर्दन।

शिरोमणि० ना० पु० मणिजटित माथेका भूषणविशेष, गु० सर्दार, श्रेष्ठ, उत्तम।

शिल० }
शिला० } ना० स्त्री० चट्टान पत्थरकी।

शिलागोली० ना० स्त्री० मनशिल।

शिलाजीत० }
शिलाजतु० } ना० पु० शिलाजीत, शिलाका रस।
... पु० शिलाजीत।

शिलायन्त्र० ना० पु० पत्थरका घाणी।

शिल्प० ना० पु० चित्रादिकर्म, कारीगरी, बढ़ईका काम।

शिल्पकार० }
शिल्पी० }
शिल्पीकर० } ना० पु० बढ़ई, सुनार, लोहार।

शिव० ना० पु० शुभ, कल्याण, सलिल, आंवला, भूआंवला, गंदिक, श्रीमहादेवजी।

शिवगिरि० ना० पु० कैलासपर्वत।

शिवरात्रि० ना० स्त्री० फागुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवजन्म दिनका व्रत।

शिववाहन० ना० पु० नन्दीगण।

शिवशैल० ना० पु० कैलास पर्वत।

शिवसुत० ना० पु० श्री गणेशजी, स्वामिकार्तिक।

शिवसुतवाहन० ना० पु० मूषक, मयूर।

शिवा० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी, हड़, शृगालकी स्त्री, तोयाका शाक।

शिवालय० }
शिवाला० } ना० पु० शिवजीका मन्दिर वा मठ।

शिवि० ना० पु० राजाविशेष जो अयोध्याका था।

शिविका० ना० स्त्री० पालकी।

शिवेश० ना० पु० सदाशिवजी, शृगाल।

शिशिर० ना० पु० जाड़ा, पाला, हेमन्त, ऋतुविशेष जो माघ फागुन में होती है।

शिशु० ना० पु० बालक, बच्चा।

शिशुता० ना० स्त्री० }
शिशुत्व० ना० पु० } बालकपन, लड़कई।

शिशुपाल० ना० पु० राजाविशेष जिसको

सजधज० ना० स्त्री० बनावट, रूप, शान।
सजन० ना० पु० पति, प्रियतम।
सजना० अ० क्रि० बनना, फबना, सोहना, पहिरना, सुधरना, ना० पु० सज्जन, सेज्जन।
सजनी० ना० स्त्री० सखी, सहेली।
सजल० गु० जो जलसे भरा।
सजला० ना० पु० संझिला भाई, चारभाइयों मेंसे जो तीसरा भाई हो उसका उपनाम।
सजाई० ना० स्त्री० बनवाई, बनावट, संजाय, रामायणे यथा तौ विधिदेइहि मोहिं सजाई।
सजातीय० गु० समान सम जातिका, एक जाति का।
सजाना० स० क्रि० बनाना, रचाना।
सजावट० ना० स्त्री० बनावट, रचावट।
सजीला० गु० सुडौल, सुढम, सुन्दर।
सजीव० गु० जीवन, जीवधारी, जीव समेत, आनन्द में।
सजीवनि० ना० स्त्री० बूटीविशेष।
सजोयल० गु० बख्तर समेत, हथियारबन्द।
सज्जन० गु० कुलवन्त, आदरी, साधु, और अच्छा मनुष्य ना० पु० प्रियतम, प्यारा।
सज्जना० अ० क्रि० सजना।
सज्जी० ना० स्त्री० क्षारविशेष।
सझिया० ना० स्त्री० साझिया सेतआदि।
सझिआर० ना० पु० साझी, शरीक।
सझियारा० ना० पु० साझा, शराकत।
संचय० ना० पु० संग्रह, ढेर, समूह।
संचयी० गु० संचय करनेहारा।
संचार० ना० पु० संक्रमण, गूढता से जो चलन, मार्ग, राह, बाट, चलन, निशान।
संचारिका० ना० स्त्री० कुटनी।
संचारिणी० गु० स्त्री० चलनेवाली।
सञ्चित० गु० जो बटोरागया, पूर्वकृत धर्माधर्म।
संचेत० गु० सचेत।
संछिप्त० गु० छिपा, गुप्त।
संजात० क्रि० उत्पन्न पैदा।
सकट० ना० पु०, लचीली छड़ी, भगावट, पेचमान हुक्काकी नय।
सटकना० अ० क्रि० भागजाना, छिपना, अलग होना।
सटकाई० ना० स्त्री० उतार चढाव।
सटकाना० स० क्रि० निरस करना, छिपाना, भगाना, बोलाना।
सटना० अ० क्रि० मिलना, जुड़ना, चिपकना।
सटपटाना० अ० क्रि० घबड़ाना, टरना।
सटा० ना० स्त्री० गलेके बाल, जटा।
सटाना० स० क्रि० चिपकाना, जोड़ना, लगाना।
सटासट० ना० स्त्री० लगालग।
सट्टिया० ना० स्त्री० छड़ी।
सटीक० गु० टीकासमेत, तिलकसंयुक्त।
सठियाना० अ० क्रि० साठ वर्षकी आयुसे अधिक होना, बुद्धिबल घटना।
सठौरा० ना० पु० पुंदई विशेष जो प्रसूती को दिया जाता है।
सड़क० ना० स्त्री० राजमार्ग, पथ, पैंड़ा।
सड़न० ना० स्त्री० सड़ाय, गलन।
सड़ना० अ० क्रि० गलना, उफलना।
सड़ा० गु० गला, उबसा।
सड़ांध० } ना० स्त्री० सड़नेकी दुर्गन्ध।
सड़ाना० स० क्रि० गलाना, पसाना।
सड़ियल० गु० निर्बल, सड़ाहुआ।
सड़ैंधा० गु० सड़ियल।
संडसी० ना० स्त्री० गहुआ, संगसी, दानसी।
संडा० गु० पोढ़ा, मोटा।
संडास० ना० पु० पायखाना, घरझोभी।
संडासा० ना० पु० बड़ी संडसी।
संडासी० ना० स्त्री० सण्डसी।
सत्० गु० सत्य, ना० पु० सार, हीर, भल मनसाव, रस, कीर्त्ति, सचाई।
सतमासा० ना० पु० सातवें महीनेके गर्भ में

पाण्डव के यज्ञ में श्रीकृष्णचन्द्रजी ने वध किया था।

शिशुमार० ना० पु० मगरमच्छ।
शिष० ना० पु० शिक्षा, उपदेश, सीख, मन्त्र।
शिष्ट० गु० आधीन, आज्ञाकारी, जो आज्ञादीगई, उत्तम, श्रेष्ठ।
शिष्टता० ना० स्त्री० आधीनता, उत्तमता।
शिष्टाचार० ना० पु० आदर, सत्कार, सन्मान, मिलन्सारी, बड़ाई देना।
शिष्टाचारी० गु० सन्मानी, जो शिष्टाचार करे।
शिष्य० ना० पु० चेला, मतावलम्बी, सीखनेहारा।
शिक्षक० ना० पु० गुरु, अध्यापक, उपदेशक।
शिक्षा० ना० स्त्री० सीख, उपदेश, मन्त्र।
शिक्षित० गु० जो सिखाया वा पढ़ायागया, जो उपदेश कियागया।
शीकर० ना० पु० झींसी, फुहार।
शीघ्र० अव्य० तुरन्त, द्रुत, उतावल, जल्द।
शीघ्रग० ना० पु० खच्चर, गधा।
शीघ्रगामी० गु० शीघ्र, चलनेहारा।
शीघ्रता० ना० स्त्री० वेगताई, उतावली, शितावी।
शीत० ना० पु० हिम, जाड़ा, ठंढ, पाला, पीलू का वृक्ष।
शीतकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी के २३½ अंश उत्तर और २३½ अंश दक्षिण का भूमिखण्ड।
शीतकर० ना० पु० चन्द्रमा।
शीतकाल० ना० पु० जाड़े के दिन, हेमन्त।
शीतज्वर० ना० पु० तपलर्जह, विषमज्वर के विपरीत अर्थात् जाड़ा।
शीतभीरु० ना० पु० सम्हालू।
शीतरज० ना० पु० कपूर।
शीतल० गु० ठंढा।
शीतलता० ना० स्त्री० ठंढ, ठंढाई।
शीतांशु० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर।
शीतांग० ना० पु० अर्द्धाङ्ग रोगविशेष।
शीतांतिका० ना० स्त्री० तेजबल औषधि
शीतार्त्त० गु० जो ठठर गया, जो जाड़े से
शीतोष्ण० गु० सरद गरम।
शीर्ण० गु० पतला, क्षीण।
शीर्ष० ना० पु० मस्तक, शिर, चोटी, ऊप
शीर्षकोण० ना० पु० ऊपर का कोना।
शीर्षच्छी० ना० स्त्री० केशपाश, बालोंकी
शील० ना० पु० स्वभाव, सुभाव, सुरव्रत
शीलवान्० ना० गु० सुशील, मिलन्सार,
शीश० ना० पु० सिर, मूड़।
शीशम० ना० पु० वृक्षविशेष।
शुक० ना० पु० तोता, सूआ।
शुकछद० ना० पु० थुनेरा।
शुकदेव ना० पु० शुकाचार्य, वक्ता।
शुकप्रिय० ना० पु० अनार।
शुकवर्ण० ना० पु० थुनेरा।
शुकाचार्य० ना० पु० मुनिविशेष, व्या
शुक्त० ना० पु० अम्लवेत।
शुक्तचण्डिका० ना० स्त्री० अमिली वृक्ष
शुक्ति० ना० स्त्री० सीपी।
शुक्तिज० ना० पु० मोती।
शुक्र० ना० पु० छठाग्रह, वीर्य, अग्नि, ज छठांवार, दैत्योंका गुरु।
शुक्रदारु० ना० पु० देवदारु।
शुक्रमाता० ना० स्त्री० भार्गी।
शुक्रवार० ना० पु० छठांवार।
शुक्ल० गु० श्वेतवर्ण, ब्राह्मणों में उपपद ना० पु० कुन्द, सफेद जीरा।
शुक्ल० ना० पु० उजेलापाख।

की पूजा विशेष वा ज्योनार।
सतमी॰ ना॰ स्त्री॰ सप्तमी।
सतर॰ ना॰ स्त्री॰ तिर्छी, टेढ़ी।
सतराना॰ अ॰ क्रि॰ क्रोधित होना, कुढ़ना।
सतरौहीं॰ ना॰ स्त्री॰ टेढी, तिर्छी।
सतर्क॰ गु॰ सावधान।
सतलज॰ ना॰ स्त्री॰ पंजाबकी नदी विशेष।
सतलड़ा॰ गु॰ सतगुना, जिसमें सातलड़ हैं।
सतसठ॰ गु॰ साठि और सात, ६७।
सतसैया॰ ना॰ स्त्री॰ बिहारीलाल कविकृत ग्रन्थ विशेष।
सतहत्तर॰ गु॰ सत्तर और सात, ७७।
सताना॰ स॰ क्रि॰ दुःख देना, खेदना।
सती॰ ना॰ स्त्री जो स्त्री पति के साथ अग्नि में जलती है, पतिव्रता, दक्षसुता।
सतीमठ॰ ना॰ पु॰ स्थान जहाँ सती के अस्थि आदिथापन करते हैं।
सतीर्थ॰ ना॰ पु॰ जिन्होंने एक गुरु से अध्ययन किया है, गुरुभाई, साध्यायी, एक साथ के पढ़नेहारे।
सतीला॰ गु॰ पराक्रमी।
सतीवाड़॰ ना॰ पु॰ स्थान जिसमें सतीहुई है।
सतुवा॰ / **सतूआ॰** } ना॰ पु॰ सत्तू।
सत्कर्म॰ ना॰ पु॰ भलाकर्म, ठीक काम।
सत्कार॰ ना॰ पु॰ सन्मान, लोथका जलाना।
सत्कारी॰ ना॰ पु॰ मुर्देका जलानेवाला, सन्मान वा आदर करनेहारा।
सत्क्रिया॰ ना॰ स्त्री॰ मृतककी सुगति, उत्तम कर्म, आवभगति।
सत्तम॰ गु॰ श्रेष्ठ, बड़ा, मर्य्यादिक, साधुओं में जो सब से अच्छा।
सत्तर॰ गु॰ सातदहाई, ७०।
सत्तरह॰ गु॰ दश और सात, १७।
सत्ता॰ ना॰ स्त्री॰ बल, पराक्रम, गंजीफा में जो सात, आकार, वजूद।
सत्ताईस॰ गु॰ बीस और सात, २७।
सत्तानवे॰ गु॰ नब्बे और सात, ९७।
सत्तावन॰ गु॰ पचास और सात, ५७।
सत्तासी॰ गु॰ अस्सी और सात, ८७।
सत्तू॰ ना॰ पु॰ भूनेयव आदिका चून।
सत्पथ॰ ना॰ पु॰ सन्मार्ग, अच्छामार्ग।
सत्पुत्र॰ ना॰ पु॰ सुपूत, भलापुत्र।
सत्य॰ गु॰ यथार्थ, ठीक, निश्चय, सांच।
सत्यकेतु॰ ना॰ पु॰ राजाविशेष, सत्यकी पताका।
सत्यता॰ ना॰ स्त्री॰ भलाई, सचाई।
सत्ययुग॰ ना॰ पु॰ प्रथमयुग जो सत्रह लाख अट्ठाइस सहस्रवर्ष का प्रमाण है।
सत्यभामा॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीकृष्णकी स्त्री विशेष।
सत्यभाव॰ ना॰ पु॰ सीधा स्वभाव।
सत्यलोक॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मलोक स्वर्गविशेष।
सत्यवचन॰ ना॰ पु॰ यथार्थ कहना, ठीक।
सत्यवती॰ ना॰ स्त्री॰ वेदव्यास की माता, पतिव्रता स्त्री।
सत्यवाद॰ ना॰ पु॰ सत्यवचन, ठीकवार्त्ता।
सत्यवादी॰ गु॰ सच्चा, सच कहनेहारा।
सत्यसिन्धु॰ गु॰ बड़ासच्चा।
सत्यानाश॰ ना॰ पु॰ सम्पूर्णनाश, बिगड़ना।
सत्यानाशी॰ ना॰ स्त्री॰ कटीला पौधाविशेष, गु॰ जो बिगड़गया, नष्ट।
सत्यानृत॰ ना॰ पु॰ वाणिज्य, व्यापार।
सत्ययुग॰ ना॰ पु॰ सतयुग, सत्ययुग।
सत्व॰ / **सत्वगुण॰** } ना॰ पु॰ भलाई का गुण।
सत्वन्ता॰ गु॰ भला कीर्तिमान्।
सत्वर॰ अव्य॰ तुरन्त, शीघ्र, जल्द।
सथराव॰ ना॰ पु॰ युद्धमें जो मारेगये उनके ढेर।
सथिया॰ ना॰ पु॰ अस्त्र वैद्य, जर्राह, चिह्न विशेष जो महाजन लोग, खाते के प्रथमपत्र में करते हैं।

[illegible]

सदा०
सदाई० } अव्य० हमेश, नित्य, हमेशह।

सदाकार० ना० पु० [illegible] का वृक्ष वा फल।

सदागति० ना० पु० पवन, वायु।

सदाचार० ना० पु० सर्वदाकाल आचार करना, श्रेष्ठाचार; पवन, वायु, हवा।

सदानन्द० ना० पु० शिव वा सर्वदाकाल प्रसन्न, [illegible]।

सदापुष्प० ना० पु० मदारवृक्ष, कुन्दवृक्ष, वृक्ष, जिसमें सर्वदा काल फूल लगते हों।

सदाफल० ना० पु० नारियलवृक्ष, बेलवृक्ष, गूलरवृक्ष, कटहल, गु० वृक्ष जिसमें सर्वदा फल मिलता हो।

सदाव्रत० ना० पु० अतिथी और अभ्यागतादि को नित्य भोजन देना।

सदाशिव० ना० पु० श्रीशिवजी का एक नाम।

सदासुहागिन० ना० स्त्री० पक्षीविशेष, वृक्ष विशेष, फकीर वा भिक्षुक, जो स्त्री का भेष करता है।

[illegible]

[illegible]

सभ्य० गु० सांचा।
सशंक० गु० सभय।
सशब्दयोगि० गु० शब्दयोगी अव्यय सहित।
सशोक० गु० दुःखित भयभीत।
ससक० ना० पु० खरगोश, चौगड़ा।
ससता० गु० जो महंगा नहीं है।
ससताई० ना० स्त्री० ससतापन।
ससा० ना० पु० शश, चौगड़ा, खरगोश।
ससापत्री० ना० स्त्री० लजारू।
ससुर० ना० पु० श्वशुर।
ससुराल० ना० स्त्री० श्वशुरका घर।
ससुराली० गु० जो श्वशुरका है, जो ससुराल का है।
सस्य० ना० पु० फल, अन्न, धान।
सह० अव्य० साथ, सहित, गु० जो सहने के योग्य है।
सहकार० ना० पु० आम्रविशेष, सहायता।
सहकारी० गु० सहायक।
सहगामिनी० ना० स्त्री० सती स्त्री।
सहचर० ना० पु० पियासाला, साथी, संगी।
सहचरी० ना० स्त्री० सखी, सहेली, अनुगामिनी।
सहज० गु० सामान्य, निश्चल, स्पष्ट, सुगम।
सहजना० ना० पु० वृक्ष विशेष।
सहदेवी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, सहदेई।
सहन० ना० पु० कपड़ा विशेष, सहनेकी शक्ति।
सहनहार० गु० सन्तोषी, सहवैया।
सहना० अ० क्रि० निबाहकरना, सन्तोषकरना, सुनलेना, बरदाश्त करना।
सहमना० अ० क्रि० डरना, भयभीत होना।
सहमरण० ना० पु० मृतकपतिके साथ जलना।
सहराना० अ० क्रि० थर्थराना, सहलाना।
सहरायन० ना० स्त्री० गुदगुदी, सुरसुरी।
सहरी० ना० स्त्री० बालाई दूधकी, मछली, विशेष, मूर मछली।
सहरोष० गु० रोष सहित, क्रोध से।

सहलाना० अ० क्रि० गुदगुदाना, चुलचुलाना।
सहलाहट० ना० स्त्री० गुदगुदाहट, चुलचुलाहट।
सहवास० ना० पु० पड़ोस।
सहवासी० गु० पड़ोसी।
सहवैया० गु० सहनहार।
सहस० गु० सहस्र, हजार, १०००।
सहसकर० ना० पु० सूर्य, बाणासुर, नागार्जुन।
सहसवदन० ना० पु० शेषजी, सहस्रवदन।
सहसबाहु० ना० पु० सहस्रबाहु, रागविशेष।
सहसनयन० ना० पु० सहस्रनयन, इन्द्र।
सहसा० अव्य० बिनाविचार किये, उतावली से।
सहसांखी० ना० पु० सहस्रआंखी, इन्द्र।
सहसाक्षी० गु० गवाहसमेत, साक्षीसहित।
सहसानन० ना० पु० शेषजी।
सहस्र० गु० हजार, १०००।
सहस्रनयन० ना० पु० इन्द्र।
सहस्रमुखी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
सहस्रवदन० ना० पु० शेषजी।
सहस्रबाहु० ना० पु० बाणासुर, नागार्जुन।
सहस्रवीर्य० ना० पु० बड़ी सतावर।
सहस्रशिर० ना० पु० रावण विशेष जिसको श्रीसीताजीने वधकिया था।
सहस्रा० } सहस्रांगी० } ना० स्त्री० पीलूवृक्ष।
सहाई० ना० स्त्री० सहाय, कटक, ना० पु० सहायक।
सहाऊ० गु० जो सहने के योग्य है।
सहाना० ना० पु० रागविशेष, स० क्रि० निर्वाहकराना, सन्तोषकराना, बरदाश्त कराना।
सहाय० ना० स्त्री० सहारा, सैन, मदद, साथ।
सहायक० ना० पु० मित्र, सहाय करनेहारा।
सहायता० ना० स्त्री० } सहारा० ना० पु० } उपराला, उपकार, मदद।

ग्वालियर के निकटपर्वत विशेष, जिसपर सनीचर की मूर्त्ति है।
सनेह० ना० पु० तेल, गु० स्नेह।
सन्त० ना० पु० साधुविशेष, ईश्वरसेवन, गु० अच्छाधनी, भला।
सन्तत० अव्य० निश्चल, निरन्तर।
सन्तति० ना० स्त्री० सन्तान, वंश, पुत्रादि औलाद।
सन्तप्त० गु० पीड़ित, दुःखित, सतायागया, सन्तापसहित।
सन्तरण० ना० पु० तरणा, मुक्तहोना।
सन्ता० गु० विगड़ा।
सन्तान० ना० पु० वंश, लड़केबाले, कल्पवृक्ष।
सन्ताप० ना० पु० शोक, पीड़ा, दुःख।
सन्तापित० गु० सन्तप्त, सताया गया, पीड़ित।
सन्तापी० गु० शोकसंयुक्त, उदास, दुःखी।
सन्ती० ना० पु० बदला, अव्य० बदले, पलटे, लिये।
सन्तुष्ट० गु० धीरजी, सन्तोषी, तृप्त, मनभरा, हर्षित।
सन्तोष० ना० पु० आनन्द, धीरज, हर्ष, सुख।
सन्तोषी० गु० धीरजवान्, आनन्दी, हर्षित।
सन्था० ना० स्त्री० पाठ, सबक।
सन्दशी० ना० स्त्री० सण्डसी, सन्सी।
सन्दर्शन० ना० पु० साक्षात्कार।
सन्दान० ना० पु० दानदेना, रस्सी जो घोड़ा आदि के पांवमें बांधते हैं, सुनारों का हथियार विशेष।
सन्दिग्ध० गु० सन्देहयुत, भरमीला।
सन्दिग्धभूत० ना० पु० जिसके बीतने में सन्देह हो।
सन्देश०
सन्देशा०
सन्देस०
सन्देसा० } ना० पु० समाचार, पैगाम, ख़बर।
सन्देसी० ना० पु० दूत, पैगम्बर।
सन्देह० ना० पु० संशय, शंका, चिन्ता, शक।
सन्देहिक० गु० जिसमें सन्देहहो।
सन्देही० ना० पु० संशयी, चिन्तायुक्त।
सन्दोह० ना० पु० समूह, बहुतायत।
सन्धान० ना० पु० अन्वेषण, खोज, झांक, लगान, लगावट, मिलान।
सन्धानना० स० क्रि० जोड़ना, लगाना, ताकना।
सन्धाना० ना० पु० आचार।
सन्धि० ना० स्त्री० मेल, संयोग, मिलाप, छिद्र, दरार, मिला।
सन्ध्या० ना० स्त्री० सायंकाल, गोधूलि, सांझ, त्रिकाल में उपासना समयका नाम, यथा सूर्योदय, मध्याह्न, सूर्यास्त।
सन्नाटा० ना० पु० जलकी लहरोंका, जो शब्द, वायु या झड़ी, से जो शब्द होताहै।
सन्निकर्ष० ना० पु०
सन्निधान० ना० पु०
सन्निधि० ना० स्त्री० } समीप, समीपी, निकटता, समीपहोना।
सन्निपात० ना० पु० रोगविशेष, सर्सांम।
सन्निहित० गु० निकट, समीप, पास।
सन्मान० ना० पु० आदर, सत्कार, मर्य्यादा।
सन्मानार्थ० गु० जिस शब्द से प्रतिष्ठापाई जाती है।
सन्मानी० गु० शिष्टाचारी, आदरी, सत्कारी।
सन्मुद० ना० पु० हर्ष, प्रीति, आनन्दी, ख़ुशी।
सन्न्यास० ना० पु० चौथा आश्रम, दिगम्बर।
सन्न्यासी० ना० पु० चौथा आश्रमी, दिगम्बरी।
सपदि० अव्य० तत्क्षण, तुरन्त, अभी।
सपना० ना० पु० स्वप्न।
सपल्लव० गु० सहित पल्लव, पत्तेसहित।
सपक्ष० ना० पु० सहायक, संगी, गु० पंखसमेत।
सपीतक० ना० पु० घीयातुरई।
सपुत्र० ना० पु० लड़के सहित।
सपुष्पा० ना० स्त्री० स्वर्णकेतकी।

सहित० अव्य० संग, साथ, समेत, गु० हित समेत।
सही० ना० स्त्री० खाताविशेष, नहीं, अव्य० निश्चयबोधक।
सहेजना० स० क्रि० जांचना, परखना, सैंतना, बनाना, बनावा, ठहरा, रखना।
सहेली० ना० स्त्री० सखी, आली, संगकी स्त्री।
सहोदर० गु० जो एक माता से उत्पन्न भया, यथा सगाभाई।
सहोदरभाई० } ना० पु० सगाभाई।
सहोदरभ्राता० }
सहौटी० ना० स्त्री० सुहौटी, चौलट, विशेष।
सह्य० गु० सहने के योग्य।
सक्षत० गु० खचित, घावयुक्त।
सा० अव्य० सादृश्यबोधक यथा छोटासा, पीलासा।
साऊ० गु० सीखनेहार, शिष्ट।
साऊंगी० ना० स्त्री० सांगी।
सांई० ना० पु० स्वामी, भगवान्।
सांक० ना० स्त्री० शंका, कासरवात।
सांकर० ना० स्त्री० सांकल, गु० गाढ़, विपत्ति, कठिनता।
सांकरी० } ना० स्त्री० संकल, सिकली, भूषण
सांकल० } विशेष, जंजीर।
सांखू० } ना० पुल, सेत, बांध, काठ
सांखो० } विशेष।
सांगी० ना० स्त्री० गाड़ी में स्थान विशेष जिसमें गठरी आदि रखते हैं, बर्छी।
सांगूस० ना० स्त्री० मछली विशेष, शंक।
सांघर० ना० पु० अगिलेपतिका पुत्र।
सांच० गु० सत्य, सच, सच्चा।
सांचा० ना० पु० ढालने वा भरने का आधार, प्रगटी, गु० सच्चा, सत्यवक्ता।
सांझ० ना० स्त्री० सन्ध्या, सायंकाल।
सांझा० ना० पु० } झांकी जो पितृपक्ष में
सांझी० ना० स्त्री० } बनाते हैं पुतलियां जो लड़के पितृपक्ष में बनाते हैं।
सांटा० ना० पु० कोड़ा, ऐंड, छप्परकी कमरका बांस।
सांटी० ना० स्त्री० छड़ी, लग।
सांटो० ना० पु० बदला, पलटा रामचन्द्रिकायां (महसांटोलयकृष्णावतार, तब हैही तुम संसारपार)।
सांठ० ना० स्त्री० योग, संयोग, युग, धन पाटने के लिये संम्पा सवैदा।
सांठगांठ० ना० पु० सांट बांट, मेल संयोग।
सांठना० स० क्रि० सटाना, लगाना, जुटाना।
सांड० ना० पु० शण्ड।
सांड़नी० ना० स्त्री० ऊंटनी, शण्डकी स्त्री।
सांड़ा० ना० पु० छिपकली के तुल्यजन्तुविशेष।
सांती० अव्य० सन्ती।
सांप० ना० पु० सर्प।
सांपन० ना० स्त्री० सांप की स्त्री।
सांभर० ना० पु० लवणविशेष, नगरविशेष, झीलविशेष जो जयपुर और जोधपुर के मध्य में है।
सांवला० गु० कृष्ण सदृश जो वर्ण।
सांवा० ना० पु० अन्नविशेष।
सांशयिक० गु० संदेहयुत, चिन्तायुत।
सांस० ना० स्त्री० श्वास, दम।
सांसना० स० क्रि० डाटना, कुदृष्टि देखना।
सांसभरना० अ० क्रि० आहभरना।
सांसा० ना० पु० संशय।
सांसारिक० गु० जो संसारका है।
साक० ना० पु० शाक, साग।
साकवणिक० ना० पु० मुराऊ, कबड़िया।
साका० ना० पु० शाका।
साकार० अव्य० आकार सहित।
साकल्य० ना० पु० शाकल्य, शाकल।
साकेबन्ध० ना० पु० राजा जिसने शाका बांधा है।

सपूत० ना० पु० सुपूत।

सपूताई० } ना० स्त्री० सत्पुत्रता, सुपूती।
सपूती० }

सपेला० ना० पु० } सांपकाबच्चा, छोटा
सपोला० ना० पु० } सांप, जन्मता सांप
सपोलिया० ना० स्त्री० } का बच्चा।

सप्त० गु० सात ७।

सप्तईति० ना० स्त्री० सातईति अर्थात् अनावृष्टि १ अतिवृष्टि २ टीढी ३ मूषक ४ शुक ५ स्वसैन्य ६ परसैन्य ७।

सप्तऋषि० ना० पु० सातऋषि अर्थात् कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वशिष्ठ ७।

सप्तजिह्वाग्नि० ना० पु० अग्निकी सातजिह्वा अर्थात् काली १ कराली २ जयवती ३ रक्तवर्णिका ४ ज्वलनी ५ धूम्रपुष्पा ६ धूम्रशीर्षा ७।

सप्तति० गु० सत्तर ७०।

सप्तदश० गु० सत्तरह १७।

सप्तदेवपुरी० ना० स्त्री० सात देवपुरी अर्थात् विष्णुपुरी १ शिवपुरी २ ब्रह्मपुरी ३ अमरावती ४ अलकावती ५ वरुणावती ६ और यमपुरी ७।

सप्तद्वीप० ना० पु० सातद्वीप अर्थात् जम्बू १ लक्ष २ कुश ३ क्रौंच ४ शाक ५ शाल्मलि ६ पुष्कर ७।

सप्तपाताल० ना० पु० सात पाताल अर्थात् अतल, वितल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल, सुतल, ७।

सप्तपुरी० ना० स्त्री० अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, द्वारका ७।

सप्तम० गु० सातवां।

सप्तमी० ना० स्त्री० सातवींतिथि, अधिकरण।

सप्तम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें, सप्तमी का प्रत्यय है।

सप्तमुख्यअप्सरा० ना० स्त्री० घृताची १ मेनका २ रम्भा ३ उर्वशी ४ तिलोत्तमा ५ सुकेशी ६ मंजुघोषा ७।

सप्तमुख्यवायु० ना० पु० सातमुख्यपवन अर्थात् आवाह, प्रवाह, अनुवह, संवह, विवह, परावह, परिवाह ७।

सप्तयुद्ध० ना० पु० सात प्रकारका समर अर्थात् धनुष, चक्र, कुंत, खड्ग, गदा, छुरिका, मल्ल ७।

सप्तराज्यांग० ना० पु० राज्य के सात अंग अर्थात् स्वामी, मंत्री, देश, कोश, मित्र, गढ, सैन्य, ७।

सप्तविंशति० गु० सत्ताईस २७।

सप्तविंशतितम० गु० सत्ताईसवां।

सप्तसिंधु० ना० पु० सात समुद्र अर्थात् लवणोद, रसोद, सुरानिधि, घृतनिधि, दधिनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि ७।

सप्तस्वर० ना० पु० सातस्वर अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, धैवत, निषाद, पंचम ७।

सप्तस्वर्ग० ना० पु० सातस्वर्ग अर्थात् भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक ७।

सप्ताश्व० ना० पु० सूर्य।

सप्ताह० ना० पु० अठवारा, हफतह।

सप्ति० ना० पु० घोड़ा, यथा वाजिवाहार्व गंधर्व हय सैन्धव सप्तय इत्यमरः।

सफरी० ना० स्त्री० मत्स्य, मछली।

सब० गु० सर्व, सारा, ना० स्त्री० रात।

सबरस० ना० पु० जल, पानी।

सबल० गु० बलवान्, प्रौढ, पहलवान।

सबलता० } ना० स्त्री० बल, प्रौढता, पहलवानी।
सबलाई० }

सबेर० गु० समय से पहले, ठीक वा अच्छे समय।

सबेरा० ना० पु० भोर, प्रातःकाल, तड़का।

सबेरे० अव्य० तड़के, भोरहे।

साख० } नां० स्त्री० धाक, भरम, नाम, मर्याद, धौति, प्रतीति; पुरुवान्।
साखि० }
साखो० ना० स्त्री० साखी, गवाही ना० पु० वृत्तगवाह।
साखोच्चार० ना० पु० वंशवर्णन।
साखोटक० ना० पु० सहोरावृक्ष।
साख्य० ना० पु० साक्षात्।
साग० } ना० पु० शाक।
सागपात० }
सागर० ना० पु० समुद्र, बड़ातालाव, भरतखण्डका नगरविशेष।
सागरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
सागून० ना० पु० काष्ठविशेष वा उसीकावृक्ष।
सांख्य० ना० पु० शास्त्रविशेष।
सांग० गु० समास, सहितअंग।
सांगोपांग० गु० सम्पूर्ण, समस्त, ज्योंका त्यों।
साज० ना० पु० अस्त्रादि के पहरने की सामग्री, समर्थ, सजाव, शाला।
साजन० ना० पु० सज्जन, पति, स्वामी।
साजना० स० क्रि० पहिनाना, सँवारना, सजाना, साधना।
साजा० ना० स्त्री० जो फूटी टूटी नहीं है।
साझा० ना० पु० व्यापारादि में कई मनुष्यों का मेल, शराकत।
साझी० ना० पु० साथी, भागी, अंशिक।
साठ० गु० छः दहाई ६०।
साठी० ना० पु० धान वा चावलविशेष।
साढ़साती० गु० शनैश्चर जो साढ़ेसात वर्ष तक रहता है।
साढ़ा० गु० आधा।
साढू० ना० पु० जोरूकी बहिन का पति।
साढ़े० गु० जिस गिनती के आदि में यह लगाते हैं उसपर एकका आधा अधिक सूचित होताहै, ३॥
सात० सत, ७।
सात्यकि० ना० पु० मुनिविशेष, यादवविशेष।
सात्विक० गु० सतोगुणी, उत्तमदर्जे।
साथ० अव्य० संग।
साथरी० ना० स्त्री० आसनी, बिछौना।
साथी० गु० संगी, संगवाला।
सादर० गु० आदरसमेत।
सादरा० ना० पु० गीतविशेष।
सादृश्य० ना० पु० समानता, उपमा, तुल्यता, दृष्टान्त।
साध० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, चोप गु० साधु, अच्छामनुष्य।
साधक० ना० पु० तपस्वी, साधु, साधन करने द्वारा।
साधन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तन, परमार्थ का अनुष्ठान, बनावट, उपाय, नित्यक्रिया।
साधनक्रिया० ना० स्त्री० रूपबनानेका काम।
साधना० स० क्रि० हिलना, सिखलाना, सीखना, सुधारना, अभ्यास करना, साजना, निबाहना, ना० स्त्री० अभ्यास, निबाह, बनावट, उपाय, नित्यक्रिया, तदबीर।
साधनिका० ना० स्त्री० साधनी, उपाय, तदबीर।
साधस० ना० पु० डर, भय, शंका।
साधारण० गु० सामान्य, सीधा।
साधी० गु० थाँभीहुई, ठहराई गई।
साधु० गु० जिसका व्यवहार उत्तम है, धन्य, सुन्दर ना० पु० सन्त, साहूकार।
साधुता० ना० स्त्री० साधुका कर्म या चाल।
साधुमत० ना० पु० शिष्टाचार, आदर, गु० अच्छामत।
साधुसाधु० गु० धन्य धन्य।
साधू० ना० पु० साधु गु० उपायी, क्रियमाण, साधक।
साध्य० गु० जतन से जो होवे, साधना के योग्य, रोगी, जो औषध के योग्य है।
साध्वी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री।
सान० ना० स्त्री० शाण, धार।

ग्वालियर के निकटपर्वत विशेष जिसपर सनीचर की मूर्त्ति है।

सनेह० ना० पु० तेल, गु० स्नेह।

सन्त० ना० पु० साधुविशेष, ईश्वरसेवन, गु० श्रेष्ठाधनी, भला।

सन्तत० अव्य० निर्छल, निरन्तर।

सन्तति० ना० स्त्री० सन्तान, वंश, पुत्रादि औलाद।

सन्तप्त० गु० पीड़ित, दुःखित, सताया गया, सन्तापसहित।

सन्तरण० ना० पु० तरणा, मुक्तहोना।

सन्ता० गु० बिगड़ा।

सन्तान० ना० पु० वंश, लड़केवाले, कल्पवृक्ष।

सन्ताप० ना० पु० शोक, पीड़ा, दुःख।

सन्तापित० गु० सन्तप्त, सताया गया, पीड़ित।

सन्तापी० गु० शोकसंयुक्त, उदास, दुःखी।

सन्ती० ना० पु० बदला, अव्य० बदले, पलटे, लिये।

सन्तुष्ट० गु० धीरजी, सन्तोषी, तृप्त, मनभरा, हर्षित।

सन्तोष० ना० पु० आनन्द, धीरज, हर्ष, सुख।

सन्तोषी० गु० धीरजवान्, आनन्दी, हर्षित।

सन्था० ना० स्त्री० पाठ, सबक।

सन्दंश० ना० स्त्री० सण्डसी, सन्सी।

सन्दर्शन० ना० पु० साक्षात्कार।

सन्दान० ना० पु० दानदेना, रस्सी जो घोड़ा आदि के पांवमें बांधते हैं, सुनारों का हथियार विशेष।

सन्दिग्ध० गु० सन्देहयुत, भरमीला।

सन्दिग्धभूत० ना० पु० जिसके बीतने में सन्देह हो।

सन्देश० } ना० पु० समाचार, पैगाम, खबर।
सन्देशा० }
सन्देस० }
सन्देसा० }

सन्देसी० ना० पु० दूत, पैगम्बर।

सन्देह० ना० पु० संशय, शंका, चिन्ता, शक।

सन्देहिक० गु० जिसमें सन्देहहो।

सन्देही० ना० पु० संशयी, चिन्तायुक्त।

सन्दोह० ना० पु० समूह, बहुतायत।

सन्धान० ना० पु० अन्वेषण, खोज, झांक, लगान, लगावट, मिलान।

सन्धानना० स० क्रि० जोड़ना, लगाना, ताकना।

सन्धाना० ना० पु० आचार।

सन्धि० ना० स्त्री० मेल, संयोग, मिलाप, छिद्र, दरार, मिला।

सन्ध्या० ना० स्त्री० सायंकाल, गोधूलि, सांझ, त्रिकाल में उपासना समयका नाम, यथा सूर्योदय, मध्याह्न, सूर्यास्त।

सन्नाटा० ना० पु० जलकी लहरोंका जो शब्द, वायु या झड़ी से जो शब्द होताहै।

सन्निकर्ष० ना० पु० } समीप, समीपी, निकटता, समीपहोना।
सन्निधान० ना० पु० }
सन्निधि० ना० स्त्री० }

सन्निपात० ना० पु० रोगविशेष, सर्सोम।

सन्निहित० गु० निकट, समीप, पास।

सन्मान० ना० पु० आदर, सत्कार, मर्यादा।

सन्मानार्थ० गु० जिस शब्द से प्रतिष्ठापाई जाती है।

सन्मानी० गु० शिष्टाचारी, आदरी, सत्कारी।

सन्मुद० ना० पु० हर्ष, प्रीति, आनन्दी, खुशी।

सन्न्यास० ना० पु० चौथा आश्रम, दिगम्बर।

सन्न्यासी० ना० पु० चौथा आश्रमी, दिगम्बरी।

सपदि० अव्य० तत्क्षण, तुरन्त, अभी।

सपना० ना० पु० स्वप्न।

सपल्लव० गु० साहित पल्लव, पत्तेसहित।

सपक्ष० ना० पु० सहायक, संगी, गु० पक्ष समेत।

सपीतक० ना० पु० घीयातुरई।

सपुत्र० ना० पु० लड़के सहित।

सपुष्पा० ना० स्त्री० स्वर्णकेतकी।

सानना॰ स॰ क्रि॰ मिलना, मिलाना, गूंधना।
सानन्द॰ गु॰ आनन्द सहित।
सानधुमाना॰ स॰ क्रि॰ सैन से समझाना।
सानी॰ ना॰ स्त्री॰ भूसा खलीकी मिलौनी।
सानुकूल॰ गु॰ प्रसन्न, राजी, कृपालु।
सान्त्वन॰ ना॰ पु॰ मिलाप।
सान्निध्य॰ ना॰ पु॰ सामीप्य, समीपी।
सापन॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष जिससे बालकम क्रम से गिरजाते हैं।
सापराध॰ गु॰ जो दण्ड के योग्य कामकरे।
साबर॰ ना॰ पु॰ बारहसिंगा वा उसका चर्म,सिद्धमन्त्र, चोरोंका हथियार जिससे सेंध लगाते हैं, शिवकृत मन्त्रराज।
साबरमन्त्र॰ ना॰ पु॰ भाषा में मन्त्रविशेष।
साम॰ ना॰ पु॰ तीसरा वेद, जो मूसल वा लाठी या बेत आदि के अन्त में पीतल आदि लगाते हैं।
सामग्री॰ ना॰ स्त्री॰ वस्तु, सामान।
सामज॰ ना॰ पु॰ समय, काल।
सामध॰ ना॰ पु॰ समधौरा, समधियों का मिलना।
सामर॰ ना॰ पु॰ लवणविशेष।
सामर्थी॰ गु॰ बलवान्, शक्तिमान्।
सामर्थ्य॰ ना॰ स्त्री॰ सामर्थ, ताकत, शक्ति।
सामा॰ ना॰ स्त्री॰ नानाप्रकार का भोजन, सामग्री।
सामाजिक॰ ना॰ पु॰ सभाआदि के काम में जो चतुर व दिखवैया या सहायक।
सामान्य॰ गु॰ साधारण, जातिवाचक।
सामान्यतः॰ ना॰ स्त्री॰ सामान्यपन।
सामी॰ ना॰ पु॰ साम, सामने, सामवेदी।
सामीप्य॰ ना॰ पु॰ पास के योग्य, मुक्तिविशेष जिसमें इष्टदेव के पास बसता है।
सामुद्र॰ ना॰ पु॰ समुद्रलोन।
सामुद्रिक॰ ना॰ स्त्री॰ विद्याविशेष, भड्डरी विद्या जिससे हस्तादि रेखा विचारते हैं।
सामुहे॰ अव्य॰ सामने, समुहे।
साम्ना॰ ना॰ पु॰ सन्मुख।
साम्ने॰ अव्य॰ सन्मुख, आगे।
साम्हना॰ अव्य॰ सामना।
सायक॰ ना॰ पु॰ बाण, तीर।
सायंकाल॰ ना॰ पु॰ सन्ध्यासमय।
सायुज्य॰ ना॰ पु॰ मुक्तिविशेष जिसमें ईश्वर लीन होता है।
सार॰ ना॰ पु॰ स्वाद, लोहा, गूदा, हीर, मोल, सुर, बीर्य, धीरज, धर्म, वज्र, घर, व्रत, काठका सार।
सारक॰ ना॰ पु॰ बांस, मैनापक्षी।
सारंग॰ ना॰ पु॰ रागविशेष, मयूर, मेघ, सर्प, मोर का शब्द, मृग, सूर्य, घोड़ा, चन्द्रमा, हाथी, आकाश, पर्वत, सिंह, कुंज, पपीहा, मेढक, दीपक, ज्योति, कोयल, चामर, बाल, हंस, कुच, खंजन, कमल, कामदेव, धरती, तालाब, सुन्दर, पक्षी, पानी, विष्णु का धनुष, कपड़ा, रात्रि, स्त्री, भ्रमर, मधुमाखी, देशविशेष।
सारंगिया॰ ना॰ पु॰ सारंगी बजानेहारा।
सारंगी॰ ना॰ स्त्री॰ बाजाविशेष, किंगरी।
सारथी॰ ना॰ पु॰ रथवान्।
सारदा॰ ना॰ स्त्री॰ शारदा, सरस्वती, वाग्देवता।
सारना॰ स॰ क्रि॰ करना, निबाहना, निबेड़ना, सुधारना, पांसना, पूराकरना।
सारस॰ ना॰ पु॰ पक्षीविशेष, कमल।
सारसजात॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।
सारस्वत॰ ना॰ पु॰ देशविशेष, ब्राह्मण जातिविशेष।
सारा॰ गु॰ सम्पूर्ण, समस्त, साला।
सारार्थ॰ ना॰ पु॰ संक्षेप।
सारासार॰ गु॰ सत्यासत्य, सांचझूठ।
सारिका॰ ना॰ स्त्री॰ मैनापक्षी।
सारी॰ ना॰ स्त्री॰ मलाई, मैना, पक्षी, साड़ी,

सपूत० ना० पु० सुपूत।

सपूताई० } ना० स्त्री० सत्पुत्रता, सुपूती।
सपूती० }

सपेला० ना० पु० } सांपकाबच्चा, छोटा
सपोला० ना० पु० } सांप, जन्मता सांप
सपोलिया० ना० स्त्री० } का बच्चा।

सप्त० गु० सात ७।

सप्तईति० ना० स्त्री० सातईति अर्थात् अनावृष्टि १ अतिवृष्टि २ टीढ़ी ३ मूषक ४ शुक ५ स्वसैन्य ६ परसैन्य ७।

सप्तऋषि० ना० पु० सातऋषि अर्थात् कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वशिष्ठ ७।

सप्तजिह्वाग्नि० ना० पु० अग्निकी सातजिह्वा अर्थात् काली १ कराली २ जयंवती ३ रक्तवर्णिका ४ ज्वलनी ५ धूम्रपुष्पा ६ धूम्रशिखा ७।

सप्तति० गु० सत्तर ७०।

सप्तदश० गु० सत्तरह १७।

सप्तदेवपुरी० ना० स्त्री० सात देवपुरी अर्थात् विष्णुपुरी १ शिवपुरी २ ब्रह्मपुरी ३ अमरावती ४ अलकावती ५ वरुणावती ६ और यमपुरी ७।

सप्तद्वीप० ना० पु० सातद्वीप अर्थात् जम्बू १ प्लक्ष २ कुश ३ क्रौंच ४ शाक ५ शाल्मलि ६ पुष्कर ७।

सप्तपाताल० ना० पु० सात पाताल अर्थात् अतल, वितल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल, सुतल, ७।

सप्तपुरी० ना० स्त्री० अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, द्वारका ७।

सप्तम० गु० सातवां।

सप्तमी० ना० स्त्री० सतवींतिथि, अधिकरण।

सप्तम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें, सप्तमी का प्रत्यय है।

सप्तमुख्यअप्सरा० ना० स्त्री० घृताची १ मेनका २ रम्भा ३ उर्वसी ४ तिलोत्तमा ५ सुकेशी ६ मंजुघोषा ७।

सप्तमुख्यवायु० ना० पु० सातमुख्यपवन अर्थात् आवाह, प्रवाह, अनुवह, संवह, विवह, परावह, परिवाह ७।

सप्तयुद्ध० ना० पु० सात प्रकारका समर अर्थात् धनुष, चक्र, कुंत, खड्ग, गदा, छुरिका, मल्ल ७।

सप्तराज्यांग० ना० पु० राज्य के सात अंग अर्थात् स्वामी, मंत्री, देश, कोश, मित्र, गढ़, सैन्य, ७।

सप्तविंशति० गु० सत्ताईस २७।

सप्तविंशतितम० गु० सत्ताईसवां।

सप्तसिंधु० ना० पु० सात समुद्र अर्थात् लवणोद, रसोद, सुरानिधि, घृतनिधि, दधिनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि ७।

सप्तस्वर० ना० पु० सातस्वर अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, धैवत, निषाद, पंचम ७।

सप्तस्वर्ग० ना० पु० सातस्वर्ग अर्थात् भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक ७।

सप्ताश्व० ना० पु० सूर्य्य।

सप्ताह० ना० पु० अठवारा, हफ़्तह।

सप्ति० ना० पु० घोड़ा, यथा वाजिवाहार्व गंधर्व हय सैन्धव सप्तय इत्यमरः।

सफरी० ना० स्त्री० मत्स्य, मछली।

सब० गु० सर्व, सारा, ना० स्त्री० रात।

सबरस० ना० पु० जल, पानी।

सबल० गु० बलवान्, प्रौढ़, पहलवान।

सबलता० } ना० स्त्री० बल, प्रौढ़ता, पहलवानी।
सबलाई० }

सबेर० गु० समय से पहले, ठीक वा अच्छे समय।

सबेरा० ना० पु० भोर, प्रातःकाल, तड़का।

सबेरे० अव्य० तड़के, भोरहे।

जोरू की बहन।
सारू० ना० पु० पक्षीविशेष।
सारूप्य० ना० पु० इष्ट का रूप बनजाना, मुक्तिविशेष।
सार्थ० गु० जिसमें अर्थ पाया जावे, जो अर्थ समेतहो।
सार्थक० गु० सफल, अर्थवाला।
सार्वभौम० ना० पु० सर्वपृथ्वी का राजा, कुबेर का हस्तीविशेष।
साल० ना० पु० काष्ठविशेष, कांटा, छेद, साला, सियार।
सालतीफुल० ना० पु० जायफल।
सालन० ना० पु० तरकारी, छेदन।
सालनिर्यास० ना० पु० राल, गुग्गुल।
सालना० स० क्रि० छेदना, बेधना, अ० क्रि० दुःखना, पीड़ित होना।
सालसा० ना० पु० औषधविशेष।
साला० ना० पु० पत्नीका भाई, शाला, ना० स्त्री० पिप्पली।
सालिग्राम० ना० पु० विष्णुरूपी पाषाणविशेष।
साली० ना० स्त्री० बीबीकी बहन।
सालू० ना० पु० लालवर्ण वस्त्रविशेष।
सालूक० ना० पु० जायफल।
सालोक्य० ना० पु० मुक्तिविशेष, इष्टदेव के लोक में बास पाना।
सालोतरी० ना० पु० घोड़ों का वैद्य।
सावक० ना० पु० बालक, बच्चा।
सावकाश० } ना० पु० अवकाश, सुबीता,
सावकास० } घात, अन्तर, छुट्टी, फुरसत।
सावज० गु० बनैला, जंगलीजीव, मृग, ना० पु० अहेर।
सावधान० गु० चौकस, सुर्त्त, होशियार।
सावधानी० ना० स्त्री० चौकसाई, सुचेती।
सावन० ना० पु० श्रावण।
सावन्त० गु० शूर, योधा, वीर।
सावन्ती० ना० स्त्री० शूरापन, वीरता, बहादुरी।
सावयव० गु० सांग, अवयव सहित।
सावर० ना० पु० साबर।
सावर्णि० ना० पु० दूसरामनुविशेष।
सावित्री० ना० स्त्री० माता, महतारी।
सास० ना० स्त्री० पत्नी वा पतिकी माता।
सासन० ना० पु० शासना।
सासना० स० क्रि० ताड़ना, डाटना।
सासु० ना० स्त्री० सास।
साहु० ना० पु० बनिया, महाजन, साधु।
साहचर्य्य० ना० पु० संगति, साथ।
साहन० ना० स्त्री० साहकी स्त्री।
साहनी० ना० स्त्री० सेन, फौज।
साहस० ना० पु० बरबस, बलात्कार, धीरता, ढाढस, विनाविचार।
साहसी० गु० बरबसिया, निडर, वीर।
साहाय्य० ना० पु० मित्रता, प्रीति।
साहित्य० ना० पु० संगता, साथ।
साही० ना० पु० जन्तुविशेष जिसके समस्त शरीर में कांटा होते हैं।
साहु० } ना० पु० बड़ामहाजन।
साहुकार० }
साहुकारी० व्यापार, देनलेन, महाजनी।
साक्षात्० अव्य० सामने, प्रत्यक्ष से।
साक्षात्कार० ना० पु० प्रत्यक्षहोना।
साक्षी० ना० स्त्री० गवाही, साखी, ना० पु० गवाह।
सिम्बल० ना० पु० सेमरवृक्ष।
सिंचितिका० ना० स्त्री० सेव मेवा।
सिसुपा० ना० पु० शीशमवृक्ष।
सिंह० ना० पु० मृगराज, श्रेष्ठार्थ का सूचक, देवीका वाहन, पांचवीं राशि विशेष।
सिंहद्वार० ना० पु० जिसद्वारमें सिंहका आकारहो, फाटक।
सिंहनाद० ना० पु० रणके समय में वीरों का

सचेतर० गु० सतेज।
सभय० गु० भयसमेत, भयभीत।
सभन० ना० पु० जन्म, गु० विभव सुमेत।
सभा० ना० स्त्री० कचहरी, मण्डली।
सभासद० ना० पु० दरबारी, सभा में बैठनेहारा या विचारकरनेहारा।
सभीत० गु० डराभया, भययुत।
सभ्य० ना० पु० सभा के कार्य्य में जो सहायक है, गु० जो सभा के योग्य है।
सभ्रम० ना० पु० भूल, गु० भूल से भ्रम सहित।
सम० गु० तुल्य, सार्व, बराबर, व सना र्यागिर्इयंभ
समकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का वह भाग जो शीतकटिबन्ध और मध्यरेखा के बीच ४८६ अंश है।
समग्र० गु० समस्त, सारा।
समग्रता० ना० स्त्री० सम्पूर्णता।
समंगा० ना० स्त्री० लिरहटी।
समंगी० ना० स्त्री० मजीठ, लजारू।
समझ० ना० स्त्री० बूझ, ज्ञान, विचार।
समझना० अ० क्रि० बूझना, विचारना।
समझदार० गु० विचारवान, ध्यानी, ज्ञानी।
समझाना० स० क्रि० बुझाना, जताना, चताना।
समझाती० } ना० स्त्री० समझाने का दाम।
समझावा० }
समञ्जस० ना० पु० योग्यता, उचितता, गु० योग्य।
समता० ना० स्त्री० समभाव, एकता, बराबरी।
समदर्शी० गु० मध्यभावी, तुल्यद्रष्टा, सबको समजाने।
समद्विबाहु० गु० जिसकी दो भुजा तुल्यहों।
समधिन० ना० स्त्री० अपने पुत्र वा पुत्री की सास।
समधियाना० ना० पु० समधी का घर घराना।
समधी० ना० पु० अपने पुत्र वा पुत्रीका ससुर, गु० समबुद्धि।
समन्त० ना० पु० सेहुड़वृक्ष।
समन्वय० ना० पु० आपस में पदार्थों का मेल।
समन्वित० गु० आपस में मिलित, संयुक्त।
समभाव० ना० पु० समता, बराबरी।
समय० ना० पु० काल, जून, अवसर, वक्त, सावकाश, अच्छेदिन।
समर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, रण, कामदेव।
समररस० ना० पु० वीरत्व, बहादुरी।
समर्थ० गु० बलवान, योग्य, हिम्मतवर।
समर्थी० गु० सामर्थी, ताकतवर।
समर्पण० ना० पु० सौंपना, अर्पण, त्याग, दान
समर्पित० गु० सौंपागया, अर्पित, त्यागित।
समल० गु० पापी, मैला।
समवाय० ना० पु० भीड़, समूह, नैयायिकों में सम्बन्धविशेष।
समशील० गु० तुल्यभाव, समभाव, समता।
समसूत्र० गु० सीधाखत।
समसूत्रपात० ना० पु० सीधाखतका पड़ना वा डालना।
समस्त० गु० सकल, सारा, सब।
समस्या० ना० स्त्री० समासार्थ, श्लोक के पूर्णार्थ एकदेशका कहना।
समक्ष० गु० साक्षात, साम्हने।
समत्रिबाहु० गु० जिस त्रिभुज की तीनों भुजायें समान हों।
समा० ना० पु० समय, बहुतात, दिशा, मिलाप।
समाई० ना० स्त्री० सन्तोष, धैर्य्य, शक्ति।
समाकृत० ना० पु० पितामह।
समागत० ना० पु० संयोग, अवाई, पहुँच।
समागम० ना० पु० संयोग, मिलाप, अवाई।
समाचार० ना० पु० सन्देशा, वृत्तान्त, चर्चा।
समाचारपत्र० ना० पु० चिट्ठी, अखबार।

शब्द, सिंहका शब्द।
सिंहनी० ना० स्त्री० सिंहकी स्त्री।
सिंहपौर०
सिंहपौरि०
सिंहपौल० } ना० स्त्री० सिंहद्वार, ड्योढ़ी।
सिंहमुखी० ना० पु० वांस।
सिंहल० ना० पु० सिंहलद्वीप।
सिंहलक० ना० पु० पीतल।
सिंहलद्वीप० ना० पु० भरतखण्ड के दक्षिण में उपद्वीपविशेष।
सिंहासन० ना० पु० देवतों और राजाओं का आसन, पाट, श्रेष्ठासन, तख़्तशाही।
सिंहिका० ना० स्त्री० निशाचरीविशेष।
सिकटा० ना० पु० ठिकरा।
सिकता० ना० स्त्री० सिक्ता, बालू, रेत।
सिकरी०
सिकली० } ना० स्त्री० कुण्डली, सॅंकल।
सिख० ना० पु० शिष्य, नानकशाही, ना० स्त्री० सीख।
सिखनावट० ना० स्त्री० शिक्षा, सिखावट।
सिखर० ना० पु० छीका, शिखर।
सिखरन० ना० पु० दही और गुड़की मिलौनी।
सिखलाना० स० क्रि० पढ़ाना, दिखलाना, डाटना, ताड़नकरना।
सिखा० ना० स्त्री० चोटी।
सिखाना०
सिखवना० } स० क्रि० सिखावना।
सिखिकण्ठ० ना० पु० नीलाथोथा।
सिगरो० गु० सब, सगरा, समस्त।
सिंगरौर० ना० पु० शृङ्गवेरपुर।
सिंगा० ना० पु० तुरही।
सिंगार० ना० पु० शोभा, सजावट, आभरण, शृंगार।
सिंगारना० स० क्रि० सँवारना, शृंगार कराना।
सिंगारिया गु० देवता का शृंगारकरनेहारा।
सिंगौटी० ना० स्त्री० सींगसे बनाहुआ पैटना, बैलके सींगपर भूषणविशेष।
सिंघाड़ा० ना० पु० पौधा जो जल में होवाहै या उसीका फल, भूषणविशेष।
सिंघाण० ना० पु० नाकका मैल।
सिंघी० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
सिझाना० स० क्रि० पकाना।
सिड़० ना० स्त्री० बौराहट, बौड़ापन।
सिड़न० ना० स्त्री० बावली, बौड़ही।
सिड़पन० ना० पु० बौड़हापन।
सिड़ा०
सिड़ी० } गु० बावला, बौड़हा।
सित० गु० श्वेत, सफ़ेद, उजला।
सितकण्ठ० ना० पु० महादेवजी।
सितरी० ना० स्त्री० स्वेद, पसीना।
सिताम्भोज० ना० पु० सफ़ेदकमल, श्वेतकंज।
सिद्ध० ना० पु० देवताजातिविशेष जो इन्द्रलोक में बसते हैं, साधु, अर्थात् जो अष्टसिद्धि के घराने हैं गु० महात्मा, श्रेष्ठजन, कृतार्थ, पक्का, बना, लब्ध, पूर्ण, कामिल, कार्यी।
सिद्धरूप० ना० पु० प्रथमही से जिसका रूप बनाहै, जो दूसरे से नहीं बना।
सिद्धान्त० ना० पु० वादी प्रतिवादी से निर्णीत जो अर्थ, कौमुदीविशेष।
सिद्धान्तशिरोमणि० ना० स्त्री० ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
सिद्धान्ती० ना० पु० मीमांसाका मतानुयायी।
सिद्धि० ना० स्त्री० वाञ्छितार्थ की प्राप्ति, देवतों की पूजा वा तपस्या का फल, मन्त्रादि जपने से जो पराक्रम, सुर्त्ते, शुद्धता, अणिमादिक अष्ट, फल, कारित, करामात।
सिद्धिदा० ना० स्त्री० भगवती, गु० सिद्धिदाता।
सिद्धिदाता० ना० पु० श्रीगणेशजी, गु० सिद्धिदेनेहारा।
सिद्धिरूपी० गु० जो आपही सिद्धि होवे।

समाज० ना० पु० सामग्री, किचहरी, समूह, साथ, संक्षेप।

समाजी० ना० पु० नृत्यकोंके साथ जो बजानेहारे समाज के बैठनेहारे।

समादर० ना० पु० सम्मान।

समाधान० ना० पु० चुकौता, निपटारा, मिलाप, शांति, चैन।

समाधि० ना० स्त्री० परमात्माकी ओर एकाग्रचित्त बैठना, सुख, थिरता, योगीकी गुफा, स्थान जिसमें मृतकजनको गाड़ते हैं।

समान० गु० तुल्य, एकसा, मानयुत, ना० स्त्री० समता, ना० पु० प्राणवायुविशेष।

समानता० ना० स्त्री० समता।

समानवर्त्ती० ना० पु० धर्मराज, गु० एकरस।

समाना० अ० क्रि० अमाना, भविराजाना।

समानान्तर० ना० पु० तुल्यान्तर, ईक्वमांतो।

समापन० ना० पु० समाप्ति।

समाप्त० गु० जो हो चुका, जो पूराहुआ।

समालू० ना० पु० पौधाविशेष।

समावेश० ना० पु० प्रवेश, संग्रह।

समास० ना० पु० दो, तीनपदोंको एकपद करना, शब्दों की बनावट।

समासा० ना० स्त्री० सिरहटी।

समिटना० अ० क्रि० बटुरना, इकट्ठा होना।

समिध० ना० स्त्री० होमने के लिये लकड़ी इन्धन।

समीकरण० } ना० पु० तुल्य करनेवाला,
समीकार० } असवात।

समीचीन० ना० पु० सचाई, गु० सच्चा, ठीक, योग्य।

समीप० गु० निकट, पास।

समीपता० ना० स्त्री० निकटता।

समीपी० गु० निकटवासी, पासवाला, ना० स्त्री० समीपता।

समीरण० ना० पु० समीर।

समुचित० गु० यथायोग्य।

समुच्चय० ना० पु० समूह, संग्रह, वाक्यों का योग।

समुच्चयार्थक० गु० जिससेशब्दों वा वाक्योंका मिलाप होताहै।

समुत्पाटन० ना० पु० उखाड़न।

समुदय० ना० पु० समुदाय।

समुदाय० ना० पु० समूह, गिरोह, इकट्ठा।

समुद्र० ना० पु० सागर, निधि।

समुद्रफल० ना० पु० औषधिविशेष।

समुद्रफेन० ना० पु० समुद्रका फेना।

समुद्राता० ना० स्त्री० जवासा।

समुद्रान्त० अव्य० समुद्रतक।

समुद्रसोख० ना० पु० औषधिविशेष।

समुद्रीय० गु० जो समुद्र का हो।

समूचा० गु० पूरा, सम्पूर्ण।

समूढ़० ना० पु० समूह, गिरोह, भीड़ (प्रौढ़ रुद्रिको समूढ़ गढ गेह में गयो, शुक मंत्र शोधि शोधि हेम.को जहाँ भयो, इति रामचन्द्रिकायाम्।

समूल० गु० मूलसमेत, जड़समेत।

समूह० ना० पु० भीड़, ढेर, मण्डली, बहुतात।

समृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती।

समे० ना० पु० समय।

समेट० ना० स्त्री० संकोचन करनेके लिये औषधविशेष, बटोर, सकोड़।

समेटना० स० क्रि० बटोरना, सकोड़ना, इकट्ठा करना।

समेत० अव्य० सहित, साथ।

समोना० स० क्रि० गर्म पानी में ठंढा पानी मिलाना।

समौ० ना० पु० समय।

सम्पत्ति० } ना० स्त्री० धन, समृद्धि, ऐश्वर्य,
सम्पद्दि० }

सिधाना० अ० क्रि० दौड़ना, जाना, चला जाना।

सिधारना० } अ० क्रि० चलाजाना, उठजाना,
सिधानो० } स० क्रि० सुधारना, ठीक करना।

सिनक० ना० पु० रेंट, पोटा, नेटा।

सिनकना० स० क्रि० नाक भाड़ना।

सिन्दुक० ना० पु० संभालू पौधा।

सिन्दुवारक० ना० पु० संभालूपौधा।

सिन्दूरक० ना० पु० वृक्ष विशेष।

सिन्दूर० ना० पु० लालवर्ण चूर्णविशेष जो स्त्रियां मांगमें लगाती हैं।

सिन्धु० ना० पु० समुद्र, देश विशेष, नदी विशेष।

सिन्धुज० ना० पु० सैंधवलोन, १४ रत्न।

सिन्धुर० ना० पु० हाथी।

सिन्धुरगामी० गु० गजगामी।

सिपाह० ना० स्त्री० सेना, यह शब्द फ़ारसी का है।

सिपाहसालार० ना० पु० सेनापति, फ़ारसी शब्द।

सिपाही० ना० पु० पैदल, चपरासी, यह भी शब्द फ़ारसी का है।

सिम० ना० पु० मछली।

सिमट० ना० स्त्री० संकोच, सिकोर।

सिमटजाना० } अ० क्रि० सिकुरना, बटुरना।
सिमटना० }

सिमाना० ना० पु० सिवाना, धूरा।

सिम्बल० ना० पु० सेमलवृक्ष।

सिय० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।

सियनि० ना० स्त्री० सीवनि।

सियनिन्दक० ना० पु० रजक विशेष जो अयोध्यापुरी में बसता था और श्रीसीताजी को लाञ्छन लगाया था।

सियरा० गु० ठंढा, कच्चा।

सियरी० ना० स्त्री० ठंढी, कच्ची।

सिया० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।

सियार० } ना० पु० शृगाल, गीदड़।
सियाल० }

सिर० ना० पु० शिर मस्तक।

सिरकी० ना० पु० खट्टीवस्तु विशेष जो ... से बनती है।

सिरकी० ना० स्त्री० सरकण्डाविशेष, सेंठा ऊपरी भाग या उसीकी बनीवस्तु जो पा... रोकने के लिये होती है।

सिरखप० गु० मनचला।

सिरखपी० ना० स्त्री० जोखिम, साहस।

सिरजन० ना० पु० रचाव, उत्पत्ति, बनाव।

सिरजनहार० ना० पु० ईश्वर, रचनेहारा उपजानेहारा।

सिरजना० स० क्रि० रचना, उत्पन्न करना बनाना।

सिरजा० गु० बनाया हुआ, उपजाया गया।

सिरसींग० गु० गुप्तकरनेहारा, दगैल।

सिरहाना० ना० पु० तकिया, खाटका जिधर सिराहो।

सिरात० गु० ठंढा, बीता।

सिराना० स० क्रि० ठंढाना, बहाना, पटाना, व्यतीत करना।

सिरानी० गु० स्त्री० बीतगई, राटी भई।

सिरिस० ना० पु० वृक्षविशेष, शिरीष।

सिरोधी० ना० पु० कंठ, गला, गर्दन।

सिल० ना० पु० शिला।

सिलपट० गु० चौपट।

सिलपट्टा० ना० पु० सिलका पट्टा।

सिलवाना० स० क्रि० सिलाना।

सिला० ना० स्त्री० शिला, पाषाण विशेष जिस पर मसाला पीसते हैं।

सिलाई० ना० स्त्री० सिलाने का काम वा पैसा।

सिलाजीत० ना० पु० पत्थर, औषध विशेष।

सम्पन्न० गु० परिपूर्ण, जो पूरा होचुका, भाग्यवान्, भराहुआ।
सम्पर्क० ना० पु० सम्बन्ध, मिलाव, संयोग, मैथुन
सम्पात० ना० पु० सुआवट, गिरना, स्पर्श।
सम्पाति० ना० पु० गिद्धविशेष।
सम्पादक० ना० पु० सम्पादन करने हारा।
सम्पादन० ना० पु० प्राप्ति।
सम्पादित० गु० प्राप्त।
सम्पुट० ना० पु० डब्बा, जुड़ाव, बंधाव।
सम्पूरण० } सम्पूर्ण० } परिपूर्ण, सारा, समस्त।
सम्प्रति० अव्य० अभी।
सम्प्रदान० ना० पु० चतुर्थी, कारकविशेष जिसके लिये कर्त्ता क्रिया सिद्धकरे।
सम्प्रदाय० ना० पु० परम्परा का धर्म।
सम्फुल्ल० गु० फूला विकसा।
सम्बद्ध० गु० संयुक्त, जो बांधागया, जो घेरा गया।
सम्बन्ध० ना० पु० सम्पर्क, नाता, लगाव, तुक, इशारह, कारकविशेष, षष्ठी।
सम्बन्धी० गु० नातेदार, रिश्तेदार, ना० पु० गोभी, समधी।
सम्बर० ना० पु० दैत्यविशेष, सम्बल, पानीमैल।
सम्बरारि० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
सम्बल० ना० पु० जानना मार्ग का, दैत्यविशेष।
सम्बुक० } सम्बूक० } ना० पु० घोंघा, कौड़ी, शंख।
सम्बोधन० ना० पु० सन्मुख करने के लिये जो शब्द यथा हे, भो, धीरजकरना।
सम्भलना० अ० क्रि० थंभना, सुधरना, खड़ा होना।
सम्भव० ना० पु० योग्यता होनहार उद्भव, गु० होने के योग्य।
सम्भवा० ना० स्त्री० गोरोचन।
सम्भार० } सम्भाल० } ना० पु० थंभाव, सुधार, रक्षा।
सम्भालना० स० क्रि० थांभना, सुधारना, रक्षा करना।
सम्भावना० ना० स्त्री० होने की योग्यता, क्रिया के शक्त्यर्थ नियमका अभिप्राय, इच्छा।
सम्भावनीय० गु० होनहार।
सम्भावित० गु० बड़ामान्य।
सम्भाषण० ना० पु० बोलचाल, बातचीत।
सम्भूत० ना० पु० उत्पन्न, पैदा।
सम्भोग० ना० पु० सुख, हर्ष, स्त्री प्रसंग।
सम्भ्रम० ना० पु० आदर, सन्मान, उतावली, डर, डगडगाहट।
सम्मत० } सम्मति० } ना० स्त्री० इच्छा, स्वीकार, विचार, समानता, सलाह, राय।
सम्मीक० ना० पु० समर, युद्ध, रण।
सम्यक्० अव्य० सब, योग्यता से, ठीक रीतिसे, अच्छीतरह।
सयन० ना० पु० शयन, इशारह, संकेत।
सयान० ना० पु० चतुराई, प्रवीणता, छल।
सयाना० गु० चतुर, प्रवीण, छली, पक्का।
सर० ना० पु० ताल, कुण्ड, शर।
सरकण्डा० ना० पु० नरकटविशेष।
सरकना० अ० क्रि० हटना, भागना।
सरकाना० स० क्रि० खिसकाना, भगाना।
सरयू० ना० स्त्री० नदीविशेष।
सरट० ना० पु० गिरगिट, गिरगिटाना।
सरद० ना० पु० शरद ऋतु।
सरदः० ना० पु० फलविशेष।
सरन० ना० स्त्री० शरण।
सरना० अ० क्रि० बनना, चलना, निकलना, सड़ना, शरण।
सरनागत० ना० पु० शरणागत।

सिवाना० स० क्रि० सिलवाना, तगाना ।
सिलारस० ना० पु० शिलाजीत ।
सिली० ना० स्त्री० पथरी, शाण ।
सिलीमुख० ना० पु० बाण, भ्रमर ।
सिवाना० ना० पु० सीमा, डांड़ा, धूरा, हद ।
सिविका० ना० स्त्री० पालकी विशेष ।
सिष्ट० गु० बुद्धिमान्, अच्छा ।
सिसकना० अ० क्रि० बिसुरना ।
सिसकी० ना० स्त्री० कूक ।
सिस्न० ना० पु० लिंग, मदनांकुश ।
सिहरा० ना० पु० मौर ।
सिहराऊ० गु० थकाऊ, उचाट ।
सिहराना० स० क्रि० थकना, उचाट करना, सहलाना ।
सिहनो० अ० क्रि० कांपना ।
सिहाना० अ० क्रि० प्रसन्नहोना, खुशहोना ।
सींक० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसकी झाड़ बनती है ।
सींकर० ना० पु० सींकका फूल ।
सींका० ना० पु० घर, छींका ।
सींकिया० गु० डण्डीदार, धारीदार, लहरिया, डोरिया ।
सींग० ना० पु० शृङ्ग ।
सींगड़ा० ना० पु० बारूद रखने का सींग ।
सींगा० ना० पु० नरसिंगा ।
सींगिया० ना० पु० विष विशेष ।
सींगी० ना० स्त्री० छोटानरसिंगा, मछली विशेष, तोमड़ी ।
सींच० ना० स्त्री० पानी की चाह ।
सींचना० स० क्रि० सिंचना, पाटना, पानीदेना ।
सींचाई० ना० स्त्री० सींचने का पैसा वा काम ।
सींचीं० ना० स्त्री० सींचने का समय ।
सींव० ना० पु० सीमा, मर्य्यादा ।
सीकर० ना० पु० कन्दविशेष ।
सीख० ना० स्त्री० शिक्षा, पाठ, विद्या, ताड़ना, सिखाना ।
सीखना० स० क्रि० विद्याका उपार्जन करना, पाना ।
सींचना० स० क्रि० सींचना, पानीदेना ।
सीझ० ना० पु० पौधाविशेष ।
सीजना० अ० क्रि० रिसना, निकलना, उफना, उबलना ।
सीटी० ना० स्त्री० मुख से बजावट ।
सीठ० ना० स्त्री० फोग, खूद, छानस ।
सीठना० ना० पु० } विवाह में गाली समत गीत
सीठनी० ना० स्त्री० } स्त्रियां गाती हैं ।
सीठा० गु० नीरस, रसहीन, फीका, असार, रोगड़ा ।
सीठी० ना० स्त्री० सीठ, सींठी ।
सीढ़ी० ना० स्त्री० नसेनी, सोपान, आरोहण, जीना ।
सीत० ना० पु० शीत, ओस ।
सीतरस० ना० पु० मुंहपटका रोग ।
सीतलचीनी० ना० स्त्री० औषधविशेष ।
सीतलपाटी० ना० स्त्री० चटाईविशेष ।
सीतला० ना० स्त्री० माता, गोटी, चेचक ।
सीता० ना० स्त्री० निधि, क्षमा, गंगा, श्रीजानकी जी ।
सीताकुण्ड० ना० पु० मुंगेर के पास तीर्थ विशेष ।
सीतांग० ना० पु० शीतांग, लकुवा ।
सीताफल० ना० पु० आता, लौका, कद्दू ।
सीताश्रम० ना० पु० सीताका आश्रय ।
सीदना० अ० क्रि० दुःखी होना, दुःखपाना ।
सीधा० गु० सोझा, निश्छल, भोला, खरा, खुआ, ना० पु० भोजन की सामग्री ।
सीधाई० ना० स्त्री० सोझ, भोलापन, खराई, सधाई ।
सीना० स० क्रि० तगना, तागना, टांकना, तुरपना ।
सीप० ना० स्त्री० आंब विशेष जिसकी गुठली

सरणागतवत्सल० गु० शरणागतों पर जो दयाल अर्थात् ईश्वर।
सरपट० ना० पु० सरपट।
सरपत० ना० पु० पतलो, पतावर, सैंठा, करडा।
सरभ० ना० पु० बन्दर विशेष, अव्य० शीघ्रता।
सरल० गु० सीधा, साफा, साधारण, वासन्ती पौधा विशेष।
सरला० गु० सीधा, ऊंचा, दीर्घ।
सरलाशिता० ना० स्त्री० निसोत।
सरवरि० ना० स्त्री० बराबरी।
सरस० गु० श्रेष्ठ, अधिक, बहुत, रससमेत।
सरसई० ना० स्त्री० सरस्वती नदी।
सरसाई० ना० स्त्री० अधिकाई, बहुतात।
सरसाना० अ० क्रि० बढ़ना, अधिकहोना।
सरसी० ना० स्त्री० तालाव।
सरसों० ना० स्त्री० सर्षप, राई विशेष।
सरस्वती० ना० स्त्री० नदी विशेष, वाणी की देवता, और राग और विद्या की प्रतिपालक, संस्कृत भाषा की बनाने हारी।
सरा० ना० पु० शराव, चिता।
सराई० ना० स्त्री० छोटासरा।
सराप० ना० पु० शाप, श्राप।
सरापना० स० क्रि० शापदेना।
सरावक० ना० पु० जाति विशेष, जैनी।
सरावन० ना० पु० हेंगा, पटेला, जिसको फिराकर खेत के ढेले तोड़ते हैं।
सराह० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई, महिमा।
सराहना० स० क्रि० स्तुति करना, बड़ाईकरना।
सरिगम० ना० पु० गान विद्या में स्वर बताने के लिये पहिलापद।
सरिणी० ना० स्त्री० गन्धप्रसारन।
सरित० ना० स्त्री० नदी।
सरिता० ना० स्त्री० नदी।
सरित्पति० ना० पु० समुद्र।
सरिस० गु० बराबर, तुल्य।
सरी० ना० स्त्री० विनाफलका शर, सरकण्डा जिससे तीर बनाते हैं।
सरीखा० गु० सदृश, समान, तुल्य।
सरुज० गु० रोगी, मरीज।
सरुट० }
सरुष० } गु० क्रोधयुत, क्रोधसमेत।
सरूप० ना० पु० स्वरूप।
सरूप्य० ना० पु० सारूप्य।
सरेखा० ना० स्त्री० श्लेषा।
सरेश० ना० पु० काठ आदि जोड़ने के लिये लासा।
सरोज० ना० पु० कमल।
सरोता० ना० पु० सुपारी काटने का हथियार।
सरोवर० ना० पु० तालाव, तड़ाग।
सरोष० गु० क्रोधयुत, रोष सहित।
सरोही० ना० स्त्री० खड्ग विशेष।
सर्करा० ना० स्त्री० खांड, शकर, वालू, धूलि।
सर्ग० ना० पु० स्वभाव, मोक्ष, उत्पत्ति।
सर्ज्ज० }
सर्ज्जरस० } ना० पु० राल।
सर्ज्जिका० ना० स्त्री० सज्जी।
सर्प० ना० पु० सांप।
सर्पदंष्ट्रा० ना० स्त्री० मेढासिंगी।
सर्पपति० }
सर्पराज० } ना० पु० शिवजी, नागराज।
सर्पारि० ना० पु० न्योला, गरुड़, मयूर।
सर्व० गु० सब, समस्त ना० पु० वृक्ष विशेष।
सर्वकाल० ना० पु० नित्य, सदा, हमेशह।
सर्वगत० गु० सर्वत्र, व्याप्त, सबजगह मौजूद।
सर्वतोभद्र० ना० पु० नींबवृक्ष, मण्डल विशेष। चारों कोण का मन्दिर वा राजघर जिस में चार द्वार हों।
सर्वत्र० अव्य० सबठौर, सबजगह।
सर्वथा० अव्य० सब विधि, सब प्रकार से।

सीपी के समान होती है, सीपी।
सीपसुत॰ ना॰ पु॰ मोती।
सीपी॰ ना॰ स्त्री॰ जलजन्तुविशेष।
सीमती॰ } **सीमन्ती॰** } ना॰ स्त्री॰ स्त्री, बाला।
सीमा॰ ना॰ स्त्री॰ हद, डांड़ा, धूरा, मर्य्याद, सिवाना, अवधि।
सिय॰ } **सिया॰** } ना॰ स्त्री॰ श्रीजानकी जी।
सीर॰ ना॰ पु॰ हल, खेती, निजकी।
सीरपाणि॰ ना॰ पु॰ श्रीबलदेवजी।
सीरा॰ गु॰ शीतल, ना॰ पु॰ मोहनभोग, शीरा।
सील॰ ना॰ पु॰ शील।
सीला॰ गु॰ गीला, शीतल, ना॰ पु॰ अन्न का बीनना।
सीव॰ ना॰ पु॰ सींव, मर्य्याद, सीम।
सीवली॰ ना॰ पु॰ जातिविशेष।
सीस॰ ना॰ पु॰ शीर्ष, शिर, शिखा।
सीसक॰ } **सीसा॰** } ना॰ पु॰ धातुविशेष।
सीसों॰ ना॰ पु॰ शीशम वृक्षविशेष।
सु॰ अव्य॰ इसका प्रयोग जिस शब्द के प्रथम में हो उसके अर्थ में अधिकाई वा भलाई वा उत्तमता समझी जाती है यथा सुबुद्धि सुकर्म आदि, और से यथा जासु अर्थात् जिस से, सो।
सुंघाना॰ स॰ क्रि॰ महकाना।
सुंघावट॰ ना॰ पु॰ महक, गन्धि, बास।
सुअञ्जन॰ ना॰ पु॰ अच्छा अंजन, सिद्धान्त।
सुअर॰ ना॰ पु॰ शूकर।
सुआर॰ ना॰ पु॰ रसोइयां, बावर्ची, रोटी करनेहारा।
सुआसिन॰ ना॰ स्त्री॰ मान्य, नातेदारकी स्त्री।
सुकचाना॰ अ॰ क्रि॰ डरना, संकोचितहोना।
सुकटा॰ गु॰ सूखा, दुबला।
सुकटी॰ गु॰ स्त्री॰ दुर्बल, दुबली, सूखी।
सुकड़ना॰ अ॰ क्रि॰ सिकुड़ना, बटुरना, समिटना।
सुकण्टक॰ ना॰ पु॰ पिण्डखजूर।
सुकंठ॰ ना॰ पु॰ सुग्रीव, गु॰ अच्छागला।
सुकनाश॰ ना॰ पु॰ स्योनावृक्ष।
सुकर॰ गु॰ सहज, करने के योग्य।
सुकवार॰ गु॰ कोमल, निर्मल।
सुकसारण॰ ना॰ पु॰ रावण के दूत।
सुकाल॰ ना॰ पु॰ अच्छीऋतु, बहुतात, अच्छा समय ढेर।
सुकांटक॰ ना॰ पु॰ करेला तरकारी।
सुकुचना॰ अ॰ क्रि॰ सुकचाना।
सुकुमार॰ गु॰ सुकवार, नर्म्म, कमसिहनत, ना॰ पु॰ चम्पा, केला, गन्ना, बालक।
सुकृत॰ ना॰ पु॰ भलाई, पुण्य, कीर्ति, सवाब, गु॰ अच्छी रीति से किया गया, अच्छा काम।
सुकृती॰ गु॰ पुण्यवान, भाग्यवान, धर्मात्मा, दाता।
सुकेत॰ ना॰ पु॰ दक्षजातिका देवताविशेष।
सुकेतसुता॰ ना॰ स्त्री॰ ताड़का निशाचरी।
सुकेशी॰ ना॰ स्त्री॰ अप्सराविशेष।
सुख॰ ना॰ पु॰ चैन, कल, सन्तोष, आनन्द।
सुखचैन॰ ना॰ पु॰ विश्राम, सावकाश।
सुखतला॰ ना॰ पु॰ जूते में दूसरातला।
सुखद॰ गु॰ सुखदायक, अच्छा।
सुखदर्शन॰ ना॰ पु॰ पौधाविशेष जिसका रस कान में पीड़ा के समय डालते हैं।
सुखदाता॰ गु॰ सुख देनेहारा।
सुखदान॰ ना॰ पु॰ सुखका दान।
सुखदानी॰ } **सुखदायक॰** } गु॰ सुखका देनेहारा।
सुखदास॰ ना॰ पु॰ धानकी एक जाति।
सुखदेव॰ ना॰ पु॰ देवताका सुख।
सुखपाल॰ ना॰ पु॰ पालकी विशेष।
सुखपूर्वक॰ अव्य॰ सुख से।
सुखमा॰ ना॰ स्त्री॰ शोभा, कान्ति, चमक।

सर्वदा० अव्य० सदा, हमेशह, नित्य।
सर्वनाम० ना० पु० सर्व विश्वआदि पैंतीस शब्द, वह शब्द जो संज्ञाका आदेशहो।
सर्वनाश० ना० पु० सत्यानाश।
सर्वनाशक० गु० सबका नाश करनेहारा।
सर्वभक्षक० } ना० पु० सब कुछ खानेवाला
सर्वभक्षी० } सर्वभोगी, धर्महीन, भ्रष्ट।
सर्वभक्षा० ना० स्री० बकरी।
सर्वमंगला० ना० स्त्री० भवानी, पार्वती, दुर्गा।
सर्वमय० गु० जो सर्वत्रफैलगयाहो, सम्पूर्ण।
सर्वव्यापक० } गु० सर्वत्र पहुंचनेहारा।
सर्वव्यापी० }
सर्वस० }
सर्वसु० } ना० पु० सम्पूर्णद्रव्य, सर्वसम्पदा।
सर्वस्व० }
सर्वज्ञ० } ना० पु० श्रीविष्णुनारायण,
सर्वज्ञानी० } श्रीशिवजी, गु० सबका जानने हारा।
सर्वाङ्ग० ना० पु० सारा शरीर, मत विशेष, सब मतोंका सारार्थ धर्म।
सर्वाङ्गी० गु० सर्वांग का ज्ञाता या कारक।
सर्वाणी० ना० स्री० श्रीपार्वती।
सर्वाभीष्ट० ना० पु० सब मनोवृत्ति और सकल इच्छा।
सर्वोपरि० अव्य० सब के ऊपर।
सर्वोषध० ना० स्री० जटामासी, मुरा इत्यादि दश औषध।
सर्षप० ना० पु० सरसों।
सलकी० ना० स्री० कमलकी जड़।
सलज्ज० गु० लाजयुक्त, लज्जासहित।
सलना० ना० पु० मोती, बाहुबाहुकी छीमी, अ० क्रि० छिदना, गड़ना।
सलभ० ना० पु० पतंगा, टीड़ी, टिड्डी, शलभ।
सलसलाना० अ० क्रि० सरसराना।
सलाई० } ना० स्री० शलाका।
सलाका० }
सलिल० ना० पु० जल, पानी।
सलूनो० ना० स्री० सावन की पूनो जिस में राखी बांधते हैं।
सलूप० ना० पु० थोड़ासा।
सलूपी० ना० पु० बिल्व, बेल।
सलोन० गु० लोन सहित, कटीला, देशेखर विशेष, नमकीन।
सलोना० गु० खारा, सांवला, स्वादिष्ट।
सलोनी० गु० रुचक, स्वादिष्ट, सुन्दर।
सल्लकी० ना० स्री० पशु विशेष जिसके सारे शरीर में कांटे होते हैं, साही, सेही।
सलम० ना० पु० मोटा कपड़ा विशेष।
सल्लू० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा जिससे जूता आदि सीते हैं, सर्प विशेष।
सल्लो० गु० स्री० बोदली, स्री।
सवति० ना० स्री० एक मनुष्यकी दो बीबियों में से एक दूसरे की सवति कहाती है।
सवर० ना० पु० भील, कोल।
सवरस० ना० पु० जल, पानी।
सवरी० ना० स्री० भीलिनी विशेष जिस के फल रामचन्द्रने खाये थे।
सवर्ण० गु० एक जातिका, एकरंगका, सादृश्य, समानवर्ण।
सबल० गु० सबल।
सवा० गु० जिस गिनती के प्रथम में संयुक्त होवे उसमें चौथाईबढ़ावे यथा सवादो, २¼।
सवाई० ना० पु० जयपुरके राजाकी पदवी।
सवाचना० स० क्रि० जांचना, परखना।
सवाया० गु० एक और एककी चौथाई।
सवार० ना० पु० अश्ववार, घुड़चढ़ा।
सवारी० ना० स्री० चढ़ैती, वाहन।
सविकार० गु० जिसमें कुछ बदल हुई।
सविता० ना० पु० सूर्य।
सवीर्य० गु० बीज समेत।
सवैया० गु० सवाया, ना० पु० छन्द विशेष, बांट जो एकसेर और पावभर का होता है।

सुखलाना० स० क्रि० सुखाना, जलाना।
सुखवक्ता० गु० सुखदेखो कहनेहारा।
सुखाना० स० क्रि० सुखलाना।
सुखारी० गु० आनन्द, खुश, आनन्दित।
सुखाला० गु० सहज।
सुखासन० ना० पु० सुखपाल।
सुखित० गु० आनन्दित, चैन से सुखी।
सुखिया० } गु० आनन्दित, चैनी, खुशी,
सुखी० } सन्तोषी।
सुखेन० ना० पु० सुख से, वैद्यविशेष जो लंका में धन्वन्तरिका पूतथा।
सुखेनी० ना० स्त्री० काला निसोत और बड़ा करौंदा।
सुगज० ना० पु० वानर विशेष जो रामदल में था, गु० अच्छाहाथी।
सुगन्धक० ना० पु० पुहकरमूल।
सुगन्धबन्धु० ना० पु० होम, यज्ञ।
सुगन्धि० ना० स्त्री० भली बास महक, गु० महकीला।
सुगन्धिक० ना० पु० कालाजीरा।
सुगम० गु० जाने के योग्य, चढ़ने के योग्य, सहल, सहज, करने के योग्य, भला।
सुगरई० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
सुगाना० अ० क्रि० शककरना, चित्तदोड़ाना, स० क्रि० लगाना।
सुग्रीव० ना० पु० वानरोंका राजाविशेष, श्रीकृष्ण के रथका एकघोड़ा विशेष, गु० अच्छा कण्ठ।
सुघटित० गु० अच्छा बनायागया, पूराभया।
सुघड़० गु० सुडौल, सुशील, सुन्दर।
सुघड़ई० ना० स्त्री० सुशीलता, सुन्दरता।
सुघाट० ना० पु० भलाघाट, अच्छाडौल, सरूप।
सुच० गु० शुच, कंचा, निर्मल।
सुचक्ष० गु० साँची, सुचेता, चौकस।
सुचरित्रा० ना० स्त्री० पतिव्रता।
सुचित० } गु० चौकस, चिन्तारहित, धन्धे से
सुचिरा० } रहित, थिर, निर्नासटक।

सुचिन्तित० गु० अति विचार, अच्छा मसूवह।
सुचेत० गु० सुत्ती, चौकस, होशियार।
सुजन० गु० सज्जन, भला, आदरी, साधु।
सुजसी० गु० प्रतिष्ठित, कीर्तिमान्।
सुज्ञान० गु० प्रवीण, ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान्।
सुजाना० स० क्रि० फुलाना।
सुझाना० स० क्रि० दिखलाना, समझाना।
सुटकुन० ना० स्त्री० लठ, छड़ी।
सुठाम० गु० अच्छामकान।
सुठि० ना० स्त्री० सोंठि, अव्य० अति, निहायत, बहुत, अधिक।
सुड़की० ना० स्त्री० गुड्डी की डोरी, अचानक से ढीलना।
सुडप० ना० स्त्री० सुसकी, घोंट।
सुडपना० अ० क्रि० सुसकना, चाटना, चूसना।
सुड़ुकना० स० क्रि० सुटकना, लीलना।
सुडौल० }
सुढब० } गु० सुन्दर, सुधरा।
सुढाल० }
सुण्ड० ना० स्त्री० हाथी की सूंड़, सूंड़।
सुण्डी० ना० स्त्री० पिप्पली, पिपरी।
सुत० ना० पु० लड़का, बेटा।
सुतरा० ना० पु० कड़ा जो हाथ में पहनते हैं।
सुता० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।
सुतान० ना० पु० सुतका बहुवचन।
सुतार० ना० पु० बढ़ई, समय, घात, दाँव।
सुतारी० ना० स्त्री० सुआ, सूजा।
सुतीक्ष्ण० ना० पु० मुनिविशेष।
सुतुष्टि० ना० स्त्री० कला चन्द्रमाकी विशेष।
सुत्रामा० ना० पु० इन्द्र।
सुथन० ना० पु० तम्बान, पायजामा।
सुथनी० ना० स्त्री० कन्दविशेष।
सुथरा० गु० अच्छा, सुन्दर, मनुहा, ना० पु० नाबानानक का एक शिष्य।
सुथराई० ना० स्त्री० सुन्दरता, भलाई।
सुथरासाही० ना० पु० भिक्षुकविशेष।

सुयत्न० } नाο पुο अच्छी स्थान, खूबमकान।
सुथान० }

सुदती० } नाο स्त्रीο वह स्त्री जिसके दाँत
सुदन्ती० } अच्छे होवें, अच्छा हाथी।

सुदर्शन० नाο पुο श्री विष्णु के चक्र का नाम, वृक्षविशेष जिसको गुलाबजामुन कहते हैं, नाम एकचूर्ण का है, गुο दिलनौट।

सुदक्षिणा० नाο स्त्रीο राजादिलीपकी स्त्री का नाम, अच्छी अपूर्वदक्षिणा वा दान।

सुदामा० नाο पुο श्रीकृष्णचन्द्र का गुरुबन्धु।

सुदी० नाο स्त्रीο उजियाला पाख।

सुदुर्लभ० गुο अत्यन्त दुर्लभ।

सुदृश्य० गुο सुंदर, दिलनौट।

सुदृष्टि० नाο स्त्रीο अच्छीदृष्टि नाο पुο गिद्ध पक्षी, गुο विज्ञानी।

सुदेश० नाο पुο अच्छादेश, गुο श्रेष्ठ, सुन्दर, नेक।

सुध० नाο स्त्रीο स्मरण, चेत, सुधि, गुο शुद्ध।

सुधबुध० नाο स्त्रीο चेत, पहिचान, बूझ।

सुधरना० अο क्रिο बनना, संभलना, सजना।

सुधर्म० नाο पुο सत्यधर्म, अच्छाधर्म।

सुधर्मा० नाο स्त्रीο देवसभा, सुरसमाज।

सुधा० नाο स्त्रीο अमृत, जल।

सुधा० अव्यο समेत, सहित।

सुधांशु० }
सुधाकर० } नाο पुο चन्द्रमा।
सुधाधर० }

सुधाना० सο क्रिο चिताना, स्मरण देना।

सुधारना० सο क्रिο संवारना, बनाना, सैंतना।

सुधावास० नाο पुο चन्द्रमा, खीरफल।

सुधि० नाο स्त्रीο स्मरण, चेत, याद, खबर।

सुधी० गुο सुबुद्धि, पण्डित।

सुन० गुο शून्य।

सुनकातर० नाο पुο सर्पविशेष।

सुनघहरी० नाο स्त्रीο रोगविशेष।

सुनयना० गुο अच्छी आंखोंवाली नाο स्त्रीο श्रीजानकीजीकी माता।

सुनसर० नाο पुο भूषणविशेष।

सुनसान० गुο चुपचाप, उजाड़।

सुनहरा० गुο सुनहला, सोनेका।

सुनाना० सο क्रिο जताना, बतलाना, कहना, समझाना।

सुनाहट० नाο स्त्रीο सुनाहट, मौन।

सुनार० नाο पुο स्वर्णकार, सोनार।

सुनारिन्० नाο स्त्रीο सुनार की स्त्री।

सुनारी० नाο स्त्रीο सोनार का काम, रूपवती, गुο प्रवीण, चतुर।

सुनावनि० } नाο स्त्रीο विदेश में मरे का
सुनावनी० } समाचार।

सुनियास० नाο पुο निगनावृक्ष।

सुनीति० नाο स्त्रीο भली रीति, शिष्टाचार।

सुन्दर० गुο सुरूप, सुडौल, अच्छा, भला।

सुन्दरता० नाο स्त्रीο सुघराई, भलाई।

सुन्दरी० नाο स्त्रीο स्त्री, सुन्दर स्त्री, अच्छी।

सुन्ना० सο क्रिο कान धरना, श्रवण करना।

सुपच० गुο जो अच्छी विधि से पचजावे।

सुपट० नाο पुο अच्छा वस्त्र।

सुपंथ० नाο पुο अच्छामार्ग।

सुपर्व० नाο पुο गंगादि का नहान।

सुपक्ष० नाο पुο सखापक्ष, शुक्लपक्ष।

सुपक्षी० गुο अच्छा पक्ष करनेहारा, सतसहायक।

सुपात्र० गुο योग्य, भलामानस।

सुपारी० नाο स्त्रीο पूगीफल, डली।

सुपास० नाο पुο आराम, सुबीता, सुख।

सुपुत्र० } गुο योग्य पुत्र, भला पुत्र, पुत्र,
सुपूत० } आज्ञाकारी पुत्र।

सुप्त० नाο पुο निद्रा, गुο सूता, निद्रित।

सुप्तोत्थित० गुο नींद से भड़भड़ायकर उठा।

सुभमा० नाο स्त्रीο परमाक।

सुभलाप० नाο पुο सुवचन, अच्छीबातचीत।

जो कुछ दिखाई देता है।
स्वप्नकथा० ना० स्त्री० स्वप्नका वृत्तांत, संसार सुख।
स्वप्नफल० ना० पु० ताबीर, जवाब, स्वप्नकाधर्म या फल।
स्वप्नवल्कला० ना० स्त्री० तेजबल।
स्वप्रकाश० गु० जो आपही प्रकाश या प्रकाशित है।
स्वभाव० ना० पु० चरित्र, प्रकृति, आदत।
स्वयंसिद्ध० ना० स्त्री० सिद्धरूपी, जो आपही सिद्ध।
स्वयम्वर० ना० पु० सीका निज इच्छावत्वर करलेना, समाज विशेष जहां कन्या निजवर ढूंढती है।
स्वयम्भू० ना० पु० ब्रह्मा।
स्वर० ना० पु० शब्द, धुनि, श्वास और अकारादि १६ वर्ण।
स्वरपर्णिनी० ना० स्त्री० गोभी, पौधा।
स्वराह्वया० ना० स्त्री० अजमोद।
स्वरूप० ना० पु० अपनारूप, समानता, व्यक्ति।
स्वर्गपताली० ना० पु० भैंगा, देरा।
स्वर्गीय०
स्वर्ग्य० } गु० जो स्वर्ग का है।
स्वर्ण० ना० पु० सुवर्ण, कनक, सोना।
स्वर्णपर्णी० ना० स्त्री० किरवाली।
स्वर्णमुद्रा० ना० पु० अशरफी, मुहर।
स्वर्णवर्ण० ना० पु० गेरू।
स्वर्णवर्णा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
स्वर्णसौ०
स्वर्णस्थल्या० } ना० स्त्री० किरवाली।
स्वल्प० गु० अत्यन्त थोड़ा, थोड़ा, ना० पु० गीदड़।
स्वल्पकन्द० ना० पु० कसेरु।
स्वल्पाहार० ना० पु० थोड़ा आहार, कमखोरी।
स्ववर्ग० ना० पु० अपनावर्ग।
स्ववर्गीकृ० गु० अपनेवर्गका कथितस्थान।
स्ववर्ण० ना० पु० निजगोत्र, अपनावर्ण।
स्ववर्णी० गु० निजगोत्री, एक जातिका।
स्ववश० ना० पु० स्वाधीन, स्वतंत्र, निजवश।
स्वसेवक० ना० पु० अपना सेवक।
स्वसेव्य० गु० आत्मपूजक।
स्वस्ति० अव्य० मंगल, कल्याण, तथास्तु।
स्वस्तिवाचन० ना० पु० शास्त्रोक्त कर्मकेआदि में व्यवहार विशेष।
स्वस्वामिभाव० गु० स्वामी और उसकी वस्तु का सम्बन्ध।
स्वामि०
स्वामी० } ना० पु० स्वामी, मालिक।
स्वांग० ना० पु० भंडैती, तमाशा।
स्वांगी० ना० पु० स्वांग बनानेहारा।
स्वागत० ना० पु० कुशल, क्षेम, मिजाजपूछना,
स्वाति०
स्वाती० } ना० स्त्री० पन्द्रहवां नक्षत्र।
स्वाद० ना० पु० सवाद, रस, मजह, मधुकड़ी।
स्वादंष्ट्र० ना० पु० गोखुरू।
स्वादक०
स्वादिष्ट० } गु० जिस में स्वाद हो, मीठा स्वाद।
स्वादी० गु० स्वाद करनेहारा, जिसमें स्वादहो। ना० पु० अंगूर।
स्वादु० गु० मीठा स्वादिष्ट, स्वाद।
स्वादुकण्टक० ना० पु० गोखुरू।
स्वादुपुष्पिका० ना० स्त्री० दुधी पौधा।
स्वादुमा० ना० स्त्री० काकोली।
स्वाधिष्ठान० ना० पु० चक्र विशेष।
स्वाधीन० गु० स्वतन्त्र, निजवश, खुद मुख्तार।
स्वाधीनता०
स्वाधीनी० } ना० स्त्री० स्वतन्त्रता।
स्वाभाविक० गु० जो स्वभाव से है, प्रकृती जन्मी।
स्वामिकार्त्तिक० ना० पु० शिवजीके पुत्रविशेष।

सुफल० गु० जो अच्छाफल देता है, काम का उपार्जनेनी, पूरा, ना० पु० अच्छाफल, सिद्धि।
सुफला० ना० स्त्री० पिण्डखजूर।
सुबट० ना० पु० सड़क, अच्छामार्ग।
सुभग० गु० सुन्दर, अच्छा भाग्य।
सुभगा० ना० स्त्री० जिस स्त्री का पति बहुत प्रेमकरे, जो स्त्री बहुत पुत्र जन्मावे, सुहागिन।
सुभट०, सुभट्ट० ना० पु० योधा, वीर, बहादुर, बलवान्, शूर।
सुभागी० गु० भाग्यवान्, नेकनसीब।
सुभाग्य० ना० पु० अच्छाभाग, नेकबख्ती।
सुभीता० ना० पु० सुबीता, सावकाश।
सुभुज० ना० पु० सुवाहु, दैत्यविशेष।
सुमति० ना० स्त्री० भलामनसी, सत्त्वगुण, सुन्दर बुद्धि, ना० पु० बन्दीविशेष, राजा जनकका दिसौंधी।
सुमन० ना० पु० गेहूंअन्न, धतूरा, पुष्पविशेष गु० जिसका मन शुद्धहो, शीलवान्।
सुमनस० ना० पु० देवता, फूल, वसन्त।
सुमना० ना० स्त्री० मालती, मुदिता, स्त्री, रति, अनेकार्थे यथा (सुमना कहियें मालती सुमना मुदिता तीय)
सुमनासुत० ना० पु० फुलेल आदि उबटन।
सुमन्त० ना० पु० राजादशरथका मन्त्रीविशेष।
सुमन्त्र० ना० पु० अच्छामन्त्र, नेकसलाह, अच्छा मता।
सुमरना० स० क्रि० स्मरण करना, नामलेना।
सुमरन० ना० पु० स्मरण, चेत, सुधि, समझौती, सुमरनी।
सुमित्र० ना० पु० सूर्य, अच्छामित्र।
सुमित्रा० ना० स्त्री० लक्ष्मणजी की माता।
सुमिल० गु० चिकनी, चिकन।
सुमृति० ना० स्त्री० स्मृति।
सुमेरु० ना० पु० देवताओं के बसने का पर्वत विशेष ज्योतिष में उत्तर ध्रुव।

सुमेल० गु० योग्यमिलनसार, अच्छामेल।
सुयश०, सुयशः० ना० पु० सुख्याति, नेकनामी।
सुयोग० गु० अच्छा योग।
सुर० ना० पु० देवता, स्वर।
सुरआपगा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी, रामचन्द्रिकायां यथा (उपवीत उज्ज्वलशोभिजे उर देखियोवरवेखवे, सुरआपगातपसिंधु में जन श्वेत श्रीदरशेअवे)।
सुरऋषि० ना० पु० सुरर्षि, नारदजी।
सुरकना० स० क्रि० सुड़कना।
सुरकक० ना० पु० माणिक।
सुरगन्धज० ना० पु० पतंग वृक्ष।
सुरगन्धनी० ना० स्त्री० स्वर्णकेतकी।
सुरगुरु० ना० पु० बृहस्पति।
सुरंग० ना० पु० सेंध, छेद, ईंगुर, अच्छारंग।
सुरचाप० ना० पु० इन्द्रधनुष जो मेघकी बूंदों पर सूर्यकी किरणें पड़ने से प्रकटता है।
सुरत० ना० स्त्री० सुधि, स्मृति, मैथुन।
सुरता० गु० सुरतीला।
सुरती० ना० स्त्री० तमाकू खाने की।
सुरतीला० गु० विचारवान्, ध्यानी, चौकस।
सुरथ० ना० पु० राजाविशेष, अच्छारथ।
सुरद्रुम० ना० पु० देवदारु, कल्पवृक्ष।
सुरपति० ना० पु० इन्द्र।
सुरभि० ना० स्त्री० सुगंधि, महक, वसन्तऋतु, गाय, ना० पु० जायफल, मृग, बेल, केला।
सुरभोग० ना० पु० अमृत।
सुरमणि० ना० पु० चिंतामणि, इन्द्र।
सुरमा० ना० पु० अंजन, यहशब्दफ़ारसीका है।
सुरमुनि० ना० पु० नारदमुनि।
सुरमृत्तिका० ना० स्त्री० फटकरी।
सुरराज० ना० पु० इन्द्र।
सुररूख० ना० पु० मंदारवृक्ष, कल्पवृक्ष।
सुरर्षि० ना० पु० नारदजी।
सुरवीथी० ना० स्त्री० देवमार्ग।

स्वामित्व० ना० पु० अधिकार, प्रभुता, मालिकी।
स्वामी० ना० पु० प्रभु, राजा, मालिक, गुरुदेव, पति।
स्वाराम० ना० पु० निज, उपवन, अपनाबाग़।
स्वार्थ० ना० पु० सांसारिक काम, संसार की इच्छा, निज अर्थ या लाभ, आत्मपालन।
स्वार्थिक० गु० जो अपने को पूराकरे, काम का कृतार्थ।
स्वार्थी० गु० आत्मपालक, अपनामतलबी।
स्वास० } ना० स्त्री० श्वास।
स्वासा० }
स्वाहा० ना० स्त्री० अग्निदेवकी स्त्री, जोहवनादि में मन्त्र पूरे होने के पीछे बोलते हैं।
स्वीकार० } ना० पु० अंगीकार, कबूल, मंजूर।
स्वीकृत० }
स्वेच्छुक० गु० स्वाधीन, हठीला।
स्वेच्छा० ना० स्त्री० स्वाधीनता, हठ, निजेच्छा।
स्वेच्छाचारी० गु० स्वाधीनवर्त्ती, निजइच्छा समान कारक।
स्वेत० गु० सेत, सफ़ेद।
स्वेद० ना० पु० प्रस्वेद, पसीना, तप।
स्वेदज० ना० पु० जो पसीना से उपजै यथा जूआं, चीलइत्यादि।
स्वैरण० ना० गु० स्वाधीन, परदारिक।
स्वैरिणी० ना० स्त्री० कुलटा, छिनाल।
स्वैरी० गु० स्वाधीन, स्वैरिन, खुदमुख्तार।
स्वोपकारी० गु० निज उपकारी, स्वार्थी।

[ह]

हंकाना० स० क्रि० निकालना, हांकना, चलाना।
हंकार० ना० पु० हांक, पुकार, चिल्लाहट।
हंकारना० स० क्रि० हांकना, पुकारना, पाल भदाना।
हंकैल० गु० हांकनेहारा।
हंस० ना० पु० पक्षी विशेष, आत्मा, जीव, राजा, धर्म, घोड़ा, सूरज, परमहंस।
हंसक० ना० पु० बिछुआ, जो स्त्रियां पांव में पहनती हैं।
हंसध्वज० ना० पु० ब्रह्मा, राजा विशेष, गु० जिसकी ध्वजा में हंस बना हो।
हंसना० स० क्रि० हास्य करना, ठट्ठामारना।
हंसपद० ना० पु० हंसका चरण, चिह्न विशेष, जो लेखक लोग भूलके स्थान पर लगाते हैं।
हंसपदी० } ना० स्त्री० पौधा विशेष।
हंसपादी० }
हंसमुख० गु० आनन्दी, मगन, हंसोड़।
हंसा० ना० पु० हास्य।
हंसाई० ना० स्त्री० हँसी, ठठोली।
हंसाना० स० क्रि० हास्यकराना, रिझाना।
हंसिनी० ना० स्त्री० हंसकी स्त्री।
हंसिया० ना० पु० हंसुआ।
हंसी० ना० स्त्री० हास्य, ठठोली।
हंसूआ० ना० पु० अन्नादिकाटने का हथियार।
हंसेश० ना० पु० ब्रह्मा।
हंसोड़० गु० ठठोल, हँसमुख।
हंसोड़पन० ना० पु० ठठोली।
हकबकाना० अ० क्रि० घबड़ाना, व्याकुल होना।
हकला० गु० जो गले से अटकके बोले, जिसकी जीभ जल्दी न चले।
हकलाना० अ० क्रि० जीभ का हड़बड़ाना, बात का अटकना।
हकलाहा० गु० लड़बड़ाहा।
हकारना० स० क्रि० बैलादि का घुमाना।
हकायका० गु० घबड़ा, व्याकुल।
हगना० अ० क्रि० गुहकरना, जंगल फिरना झाड़े जाना।
हगनेंद्री० } ना० स्त्री० हगने की इन्द्रिय निशाष, गुदा, गांड़।
हगनौटी० }
हगभरना० अ० क्रि० गुहकरना, बिगाड़कर रहना।

सुरसर० ना० पु० मानसरोवर।
सुरसरि० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
सुरसरिता० }
सुरश्रेष्ठ० ना० पु० ब्रह्मा, इन्द्र।
सुरस० गु० सुस्वाद।
सुरसी० ना० स्त्री० तुलसी पौधा।
सुरसुराना० अ० क्रि० सरसराना, गुदगुदाना।
सुरसुराहट० ना० स्त्री० सरसराहट, गुदगुदी।
सुरसुरी० ना० स्त्री० गुदगुदी, चींटीविशेष।
सुरसेनप० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
सुरा० ना० स्त्री० मदिरा, दारू, शराब।
सुराई० ना० स्त्री० बहादुरी।
सुराह्व० ना० पु० देवदारु।
सुराह्वा० ना० स्त्री० क्षीरकाकोली।
सुरापान० ना० पु० मदिरा पीना।
सुरारि० ना० पु० दैत्य, राक्षस।
सुरालय० ना० पु० सुमेरु, स्वर्ग, देवालय, हरमंदर।
सुराष्ट्र० ना० पु० गुजरात के समीप देश विशेष।
सुरुकना० स० क्रि० सुड़कना।
सुरूप० गु० सुन्दर, दिलनीट, अच्छारूप।
सुरेन्द्र० ना० पु० सुरेश, त्रिमीकन्द, इन्द्र।
सुरेश० ना० पु० इन्द्र।
सुरैत० } ना० स्त्री० अविवाहिता, उढ़री,
सुरैतिन० } रखनी, घरबैठी, उदरी।
सुलगना० अ० क्रि० बरना, जलना, आंच उठना, धीरे धीरे जलना।
सुलगाना० स० क्रि० बारना, लूकालगाना, जलाना, परचाना।
सुलझना० अ० क्रि० खुलना, निबड़ना।
सुलझाना० स० क्रि० उधेड़ना, उकेलना, खोलना।
सुलभ० गु० सहजसे जो पायाजावे, साधारण।
सुलक्षण० ना० पु० शुभ के सूचक चिह्न, सुंदरता।

सुलाना० स० क्रि० शयन कराना, पौढ़ाना, बन्द करना।
सुलोक० ना० पु० नेकनामी, सुयश, अच्छा लोक, अच्छा मनुष्य।
सुलोचना० ना० स्त्री० चकोरपक्षी, मेघनाद की स्त्री, अच्छी आंखोंवाली।
सुलोमश० ना० स्त्री० काक जंघा बूटी।
सुवक्ता० गु० भला कहनेहारा, अच्छापाठक।
सुवचन० ना० पु० विशदवाणी, अच्छीवार्त्ता
सुवन० ना० पु० पुत्र, लड़का।
सुवर्चि० } ना० स्त्री० सज्जी लवण।
सुवर्चिका० }
सुवर्ण० ना० पु० कनक, सोना, सुजाति, सुरंग।
सुवर्णद्रुमा० ना० स्त्री० किरवाली।
सुवर्त्त० ना० पु० आकाश, नाममालायां (अम्बर पुष्कर कहतनभ अन्तरिक्ष घनवास, व्योम अनन्त विहायसी खं सुवर्त्त आकास)।
सुबल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक सखा।
सुवाना० स० क्रि० सुलाना।
सुवार० ना० पु० रसोइया, बावर्ची, रामायणे यथा (विविध भांति बैठी उपचनारा, लगे परोसन चतुर सुवारा)
सुवाहु० ना० पु० दैत्यविशेष।
सुविस्तरा० ना० स्त्री० गन्धप्रसारन।
सुवेल० ना० पु० समुद्रतट पर्वतविशेष।
सुवेला० ना० स्त्री० अच्छीसायत, अच्छाकाल।
सुवैया० ना० पु० सोनेहार।
सुशिक्षा० ना० स्त्री० भली शिक्षा, अच्छी सीख।
सुशिक्षित० गु० प्रवीण, अच्छी शिक्षापाये हुवे।
सुशील० गु० जिसका शील अच्छा है, सुस्वभाव, साधु, शिष्टाचारी।
सुशीलता० ना० स्त्री० शिष्टाचार, स्वभाव में नम्रता।
सुश्री० ना० स्त्री० शोभा।
सुश्रूषा० ना० स्त्री० सेवा, आदर, खिदमत।

हगाना० स० क्रि० बीटकराना, गुहकराना।
हगास० ना० स्त्री० हगने की इच्छा, यत्न।
हचकोला० ना० पु० धका, झोंक।
हट० ना० स्त्री० हठ।
हटकना० } अ० क्रि० अटकाना, रोकना, मने करना, रोकाना, मनेकराना।
हटकाना० }
हटना० अ० क्रि० अलगहोना, चलेजाना, टलना, पीछे या आगे को बढ़ना।
हटया० ना० पु० अन्नादि नापने के लिये हाटमें, बैठनेहारा।
हटयाई० ना० स्त्री० हाटका काम।
हटाना० स० क्रि० टालदेना, रोकदेना, सरकाना।
हटताल० ना० स्त्री० अन्धेर के कारण दूकानबन्द करना।
हटिया० } ना० स्त्री० हाट।
हट्ट० }
हट्टाकट्टा० गु० पोढ़ा, चर्बैला, अच्छा।
हठ० ना० पु० मगराई, रारि, मचलाई, अड़।
हठना० अ० क्रि० हठीला या मचला या टेढ़ाहोना, थिरकरना।
हठात्० अव्य० अकस्मात्।
हठी० } गु० हठ करनेहारा, मचला, झगरा।
हठीला० }
हड़० ना० स्त्री० फलविशेष, ना० पु० बाढ़।
हड़कन० ना० पु० पौधाविशेष।
हड़गीला० ना० पु० पक्षीविशेष।
हड़जोड़० ना० पु० पौधाविशेष।
हड़फूटन० ना० पु० हड्डी में पीड़ा।
हड़बड़ाना० अ० क्रि० घबराना, व्याकुलहोना, हलबलाना।
हड़बड़िया० गु० बिड़बिड़ा।
हड़बड़ी० ना० स्त्री० खलबली, हुलड़।
हड़हड़ाना० अ० क्रि० थर्थराना, कांपना, धड़धड़ाना, खड़खड़ाना।
हड़हड़ाहट० ना० स्त्री० कड़ाका, चटका।
हड़हड़ी० ना० स्त्री० टंकार।
हड्डा० ना० पु० बागवान् इत्यादि इस शब्द को कहकर चिड़िया उड़ाते हैं।
हड़ाना० स० क्रि० चिड़िया उड़ाना।
हड़ाहड़ी० ना० स्त्री० हड़हड़ी।
हड्डा० ना० पु० मोहाड़, बिर्नी, भौंरा।
हड्डी० ना० स्त्री० अस्थि, हाड़।
हड्डीला० गु० अस्थिवान्।
हण्डनी० ना० स्त्री० कुचलन या कुलटा स्त्री।
हण्डा० ना० पु० तांबे या पीतल या मिट्टी का बड़ाबर्तन।
हंडाना० स० क्रि० देश या नगरसे निकालदेना, मुंह कालाकरके गधेपर चढ़ाकर घुमाना।
हंडिया० } ना० स्त्री० हांडी।
हंडी० }
हत० अव्य० दूर, नाश।
हतन० ना० पु० मारण, वधन।
हतना० स० क्रि० वधकरना, मारडालना।
हतादर० ना० पु० सम्मानहीन, निरादर।
हती० अव्य० थी, रही, ना० स्त्री० मारीगई।
हत्थ० ना० पु० हाथ।
हत्था० ना० पु० हाथा।
हत्या० ना० स्त्री० वध, हिंसा, वधदोष।
हत्यारा० ना० पु० हिंसक, वधिक, वधदोषी।
हत्यारिन० } ना० स्त्री० हिंसक स्त्री।
हत्यारी० }
हथ० ना० पु० हाथ।
हथकड़ा० ना० पु० पकड़, हाथ से पकड़ने की वस्तु।
हथकड़ी० ना० स्त्री० हाथ में डालने की बेड़ी।
हथकंडा० } ना० पु० टेव, ढब, रैया।
हथखंडा० }
हथचपुआ० ना० पु० भांड़ा, बेरा।
हथछुट० } ना० पु० पीटनेहारा, लड़ाका।
हथछूट० }
हथनाल० ना० स्त्री० हाथी परकी तोपछोटी।

सुश्रेणी० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह।
सुषुप्ति० ना० स्त्री० सुखनींद, अवस्थाविशेष।
सुसकारना० अ० क्रि० फनफनाना।
सुसताना० अ० क्रि० विश्राम करना, श्वास लेना।
सुसमय० ना० पु० अच्छा समय, पढ़ती का समय।
सुसम्बद्ध० गु० जिसकी अच्छे प्रकार रचना की गई है।
सुसर० } ना० पु० ससुर।
सुसरा० }
सुसराल० ना० स्त्री० ससुराल।
सुस्थ० गु० अरोगी, भला, चंगा।
सुस्थिर० गु० निश्चल, अटल।
सुस्मृति० ना० स्त्री० चैतन्यता, अच्छीस्मृति।
सुस्तवा० ना० स्त्री० कलौंजी।
सुस्वाद० गु० सरस, रसीला।
सुहाग० ना० पु० सौभाग्य, भलाभाग्य, पतिका प्यार, स्त्री का भूषणविशेष, जो पति के जीवने का चिह्न, अहिवात।
सुहागन० ना० स्त्री० विवाहिता स्त्री, जिस स्त्री का पति जीता हो।
सुहागा० ना० पु० औषधिविशेष, जिससे सुवर्ण आदि गलता है।
सुहाता० गु० सोहता, चाहता, भला।
सुहाना० } गु० भावित, अच्छा, सोहना, चाहता, अ० क्रि० अच्छा लगना, रुचना, भावना।
सुहावना० }
सुहाल० ना० पु० } पक्वानविशेष।
सुहाली० ना० स्त्री० }
सुहोटी० ना० स्त्री० जो पटरी चौसट वा छज्जे के ऊपर लगाते हैं।
सुहृद० ना० पु० मित्र, प्रियतम।
सूअर० ना० पु० } शूकर, वराह।
सूअरी० ना० स्त्री० }
सूआ० ना० पु० तोता, सुआ।
सूई० ना० स्त्री० सूत्र सीवने की वस्तुविशेष।
सूंगरा० ना० पु० भैंसका बछड़ा, पड़वा।
सूंगा० ना० पु० टन्ना, टीटा।
सूंघ० ना० स्त्री० गन्ध, बास।
सूंघन० ना० स्त्री० सूंघने की वस्तु।
सूंघना० स० क्रि० बासलेना, गन्धिग्रहना।
सूंघनी० ना० स्त्री० नास, हुलास।
सूंट० ना० स्त्री० चुप्पी, मौन।
सूंड० ना० स्त्री० हाथी की नाक।
सूंडा० ना० पु० घुनविशेष, कीड़ा।
सूंडी० ना० स्त्री० कलार, कलवार।
सूंतना० } स० क्रि० काढ़ना, खैंचना, टहनी
सूंथना० } से पत्ती को निकालना वा भिन्नी करना।
सूंस० ना० पु० सूस।
सूकटा० गु० दुबला, निर्बल, सूखा।
सूकर० ना० पु० शूकर।
सूकघा० ना० पु० किसारी, शुक।
सूकवार० ना० पु० शुक्रवार।
सूका० ना० पु० } चौअन्नी।
सूकी० ना० स्त्री० }
सूक्ष्मपापस्य० ना० पु० जवाखार।
सूखछड़ी० ना० स्त्री० क्षयरोग, सूखीबड़ी।
सूखना० अ० क्रि० सूखा होना, गलना, सिकुड़ना, मुरझाना।
सूखा० गु० शुष्क, रसहीन।
सूग० ना० स्त्री० दुबिधा, चिन्ता, शक।
सूगा० ना० पु० तोता।
सूचक० गु० ज्ञापक, बोधक, शिक्षक, प्रकाशक।
सूचना० ना० स्त्री० जनावना।
सूचनिका० ना० स्त्री० बीनक, फेहरिस्त।
सूचिका० ना० स्त्री० केतकी।
सूचित० गु० बोधित, सूचना कियागया।
सूचिमुखी० ना० स्त्री० मादि दवा।
सूची० ना० स्त्री० सूई, दर्जी।
सूचीपत्र० ना० पु० पत्र जिसमें पुस्तक के अ-

हथनी० ना० स्त्री० हस्तिनी।
हथफेर० ना० पु० रुपया परखने में ठगविद्या, उधारलेना।
हथरस० ना०पु० } चूमाचाटी, मठोली।
हथरसी० स्त्री० }
हथरी० ना० स्त्री० रहटेका हथकड़ा।
हथल० } ना० पु० पीतलका हथकड़ा।
हथवास० }
हथा० ना० पु० चक्कीका हथकड़ा।
हथिया० ना० स्त्री० हस्त नक्षत्र, वर्षाकालका अन्त, हथकड़ा।
हथियाना० स० क्रि० पकड़ना, ग्रहणकरना।
हथियार० ना० पु० लोहसर, कलकांटा, अस्त्र।
हथी० ना० स्त्री० घोड़ेके मलने की वस्तु बालों की बनी।
हथेला० ना० पु० चोर।
हथेली० ना० स्त्री० हाथ के बीचका स्थान।
हथौटी० ना० स्त्री० मश्वत, विद्या, प्रवीणता।
हथौड़ी० ना० स्त्री० छोटा घन।
हदियाना० अ० क्रि० आगापीछा, छःपांचकरना, घबराना, स० क्रि० हुलसाना, फुसलाना, चौंप दिलाना, जांचना, बरबस कराना।
हदियाहट० ना० स्त्री० भोलापन, मुंहचोरी, घबराहट, बरबसाव, जचाव, चौंप।
हदियाहा० गु० भोला, मुंहचोर, सन्देही।
हनन० ना० पु० वध, हतन।
हनना० स० क्रि० वधकरना, मारडालना, मारना, जकड़ना।
हनो० गु० मारीगई, दवागई।
हनु० ना० पु० ठुड्डी, हनुमान्जी।
हनुमत्० } ना० पु० वायुपुत्र, रुद्रावतार,
हनुमन्त० } श्रीरामसेवक, महावीर।
हनुमान्० }
हन्तक० } ना० पु० वधकारी, मारनेहारा।
हन्ता० }
हन्ती० ना० स्त्री० नाशक या वधकारी स्त्री।

हप० ना० पु० झपटे मुंह में डाल के निगलना।
हपझप० गु० फुर्तीला, चर्फरा, अव्य० झटपट।
हफहफाना० अ० क्रि० हांफना।
हबड़ा० गु० फूहड़, हबिला।
हबिला० गु० जिसके आगे के दांतबड़े २ हों।
हमारा० } सर्व० उत्तम पुरुष बहुवाक्यसम्बन्ध
हमारो० } बोधक शब्द।
हमेव० ना० पु० अहंकार, अहंभाव।
हय० ना० पु० घोड़ा।
हयमेध० ना० पु० अश्वमेध।
हयशाला० ना० स्त्री० घुड़साल, तबेला।
हयहय० ना० पु० नागार्जुन।
हये० क्रि० नाशे, मारे, मिटाये।
हर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, हल, सीर, अव्य० यह जिस शब्दके अन्तमें हो उसका अर्थ हरण का माना जावे यथा, पापहर, तापहर।
हरगिरि० ना० पु० कैलास।
हरण० ना० पु० बरबस या चोरी से किसी की वस्तुका लेना, चोरी, लूट, नशावन, हरिण।
हरता० ना० पु० चोर, लुटेरा नाशक।
हरद० ना० पु० हल्दी।
हरदत्त० गु० जो शिवजी का दियाहुआ है।
हरना० स० क्रि० बरबस लेलेना, चोरी करना, लूटना, उठालेना, हरिण।
हरनौटा० ना० पु० हरिणका बच्चा।
हरफारेवड़ी० ना० पु० फलविशेष।
हरबराना० अ० क्रि० हड़बड़ाना, घबड़ाना।
हरसिंघार० } ना० पु० वृक्ष वा उसका फूल-
हरसिंगार० } विशेष, पौधा विशेष।
हरवीर्य० ना० पु० पारा।
हरहार० ना० पु० सर्प, शिवकी माला।
हरा० गु० वर्णविशेष, यथा घासकी सब्जी।
हराई० ना० स्त्री० हरियाली।
हराना० स० क्रि० जीतलेना, थकाना।

ध्याय वा प्रकरण लिखेजाते हैं।
सूच्याकार० ना० पु० सूई के डौल।
सूज० } ना० पु० फुलाव, शोथ।
सूजन० }
सूजना० अ० क्रि० फूलना।
सूजा० ना० पु० बर्मा, बेधी, सुतारी।
सूजी० ना० पु० सीनेहारा, दर्जी, दुरदुरा आटा, सूई।
सूझ० ना० स्त्री० दृष्टि।
सूझना० अ० क्रि० गोचरहोना, देखपड़ना।
सूत० ना० पु० धागा, तागा, रथवान्, भाट, बढ़ई, पौराणिक, व्यासजी का शिष्य जो नैमिषारण्य में शौनकादिकन को पुराण सुनाता था, पारा, व्यवहार, रीति, भीति।
सूतक० ना० पु० अशौच, अपवित्रता, जो प्रसव वा मृत्यु के दिन से दस दिनतक मानते हैं उसके दो नाम हैं वृद्धिसूतक, मृत्युसूतक।
सूतना० अ० क्रि० सोना, नींदलेना, सं० क्रि० ताकना, उपायकरना, सूतलगाना, ताड़ना।
सूतली० ना० स्त्री० डोरी, पतली रस्सी।
सूतिका० ना० स्त्री० जच्चा, प्रसूतिका, प्रसौती।
सूती० गु० जो सूत से बना, सूतिका सोतीहुई सोतीहुई।
सूतू० गु० नींद।
सूत्र० ना० पु० तागा संक्षेपसे अनेकार्थ का सूचक वा बोधक वचन।
सूत्रधार० ना० पु० नट, बाज़ीगर।
सूत्रनाभि० } ना० स्त्री० मकड़ी।
सूत्रा० }
सूथन० ना० पु० जांघिया, पायजामह।
सूथनी० ना० स्त्री० जांघिया, पायजामह, सुथनी।
सूध० } गु० सीधा, सूधा, साधारण, भोला, निष्कपट।
सूधा० }
सूधाई० ना० स्त्री० सीधाई, भोलापन।
सून० गु० शून्य।
सूना० गु० सूना, उजाड़, जहां कोई न हो।
सूनु० ना० पु० पुत्र, बेटा।
सूनो० गु० शून्य।
सूप० ना० पु० शूर्प, छाज।
सूपकार० ना० पु० रोटी करनेहारा, बावर्ची।
सूपावेना० ना० पु० पक्षीविशेष।
सूपारं० ना० पु० सुपारी।
सूपियारी० ना० स्त्री० सुपारी।
सूम० ना० पु० शूम, कृपण, कंजूस।
सूर० ना० पु० वीर, इगास, सूर्य्य, सूरदास, गु० अन्धा।
सूरज० ना० पु० सूर्य्य, सुग्रीव, रविकिरण, शनैश्चर, यमराज।
सूरजग्रहन० ना० पु० सूर्य्यग्रहण।
सूरजमुखी० ना० स्त्री० सूर्य्यमुखी।
सूरजवल्लभ० ना० पु० भंगरा पौधा।
सूरजिका० ना० स्त्री० राज्यालीन।
सूरण० ना० स्त्री० जमींकन्द।
सूरता० ना० स्त्री० वीरता, बहादुरी।
सूरदास० ना० पु० कविविशेष, सूरसागर के बनानेहारे।
सूरबीर० ना० पु० वीर, सावंत, रावत।
सूरमलार० ना० पु० रागिणीविशेष।
सूरमा० गु० वीर, सावन्त, मनचला।
सूरमापन० ना० पु० वीरता, सौवन्ती, बहादुरी।
सूरसुत० ना० पु० सुग्रीव, शनैश्चर, कर्ण, यमराज।
सूरा० ना० पु० सावन्त, बलवान्, चीर।
सूरी० ना० स्त्री० सरंडी, शली।
सूर्प० ना० पु० शर्प, सूप।
सूर्पनखा० ना० स्त्री० शूर्पनखा, रावण की बहन।
सूर्य० ना० पु० सुवर्णभानु, दिनमणि, रवि, सूरज।
सूर्यक० ना० पु० नीलदृप।

हरावल॰ ना॰ पु॰ दलके अगाड़ी चलनेवाला।
हरि॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, पानी, अग्नि, वायु, मार्ग, हाथी, पर्वत, सर्प, सिंह, इन्द्र, वानर, सूर्य्य, घन, आकाश, मनु, हरिण, पपीहा, कोयल, प्राण, मोती, भ्रमर, अमृत, चन्द्रमा, कमल, सुवर्ण, कामदेव, खंड, घोड़ा।
हरिजन॰ ना॰ पु॰ साधु, भक्त, सन्त।
हरित॰ गु॰ हरा, डहडहा, चौरायागया।
हरिताल॰ ना॰ पु॰ उपधातुविशेष।
हरितालिका॰ ना॰ स्त्री॰ भादों सुदी तीज का व्रत।
हरिद्रा॰ ना॰ स्त्री॰ हल्दी।
हरिद्वार॰ ना॰ पु॰ तीर्थविशेष।
हरिन्मणि॰ ना॰ पु॰ पन्ना।
हरिप्रिया॰ ना॰ स्त्री॰ लक्ष्मी, तुलसी।
हरिभक्त॰ ना॰ पु॰ विष्णुका उपासक, वैष्णव।
हरिभजन॰ ना॰ पु॰ भगवान् का भजन वा ध्यान करना।
हरिभद्रक॰ ना॰ पु॰ कूट।
हरियल॰ ना॰ पु॰ पक्षीविशेष, कपोतविशेष।
हरियाणा॰ ना॰ पु॰ दिल्ली से पश्चिम देशविशेष।
हरियान॰ ना॰ पु॰ गरुड़।
हरियाना॰ अ॰ क्रि॰ जमना, बढ़ना, डहडहा होना, शाखें निकलना।
हरियाला॰ गु॰ हरा, सब्जी।
हरियाली॰ ना॰ स्त्री॰ हराई।
हरिवालुक॰ ना॰ पु॰ एलुवा, मुसब्बर।
हरिवास॰ ना॰ पु॰ पीपलवृक्ष।
हरिवासर॰ ना॰ पु॰ एकादशी, जन्माष्टमी।
हरिश्चन्द्र॰ ना॰ पु॰ राजा विशेष जो अयोध्या में महादानी हुआ है।
हरीत॰ } ना॰ स्त्री॰ हर्र, हड़।
हरीतकी॰ }
हरीरा॰ } गु॰ हरा, भगोड़ा, ना॰ पु॰ भोजन
हरीला॰ } जो जचाको प्रथम खिलाते हैं।
हरीवा॰ ना॰ पु॰ तोताविशेष।
हरु॰ गु॰ हलका।
हरुये॰ अव्य॰ धीरे धीरे, हौले, ब्रजविलासे यथा, दोहा, लै पौढ़ाये सेजपर हरुये यशुमति माय, अति विरुझानो आज हरि यह कहि कहि पछिताय।
हरुव॰ गु॰ हलका, रामायणे यथा, निमंजहता लोगन पर डारी, होहु हरुव रघुपतिहि निहारी।
हरेरा॰ गु॰ हरा।
हरैटी॰ ना॰ स्त्री॰ छड़ी, बेत, हलचलाने का समय।
हर्ष॰ ना॰ पु॰ आनन्द, सुख, आह्लाद, खुशी।
हर्षण॰ ना॰ पु॰ योग, विशेष, सुखभाव।
हर्षना॰ अ॰ क्रि॰ फूलना, खिलना, आनन्द होना।
हर्षित॰ गु॰ आनन्दित, प्रसन्नचित, मग्न।
हल॰ ना॰ पु॰ लांगल, खेत जोतने का यन्त्र, अर्द्धाक्षर वा उसका चिह्न।
हलका॰ गु॰ फुलका, नीच, छिछोरा, ओछा, पोला, सस्ता, अगुरु।
हलकाई॰ ना॰ स्त्री॰ हलकापन, निर्मलता।
हलकाना॰ स॰ क्रि॰ सहायदेना, सहारा करना।
हलकोरना॰ स॰ क्रि॰ बटोरना, समेटना, हिलाना।
हलचल॰ ना॰ पु॰ हलबली, घबराहट, रौला, अंधेर।
हलदिया॰ ना॰ पु॰ विषविशेष, कम्वल रोग, गु॰ पीला।
हलधर॰ ना॰ पु॰ श्रीबलदेव, किसान।
हलन्त॰ गु॰ जिस शब्दके अन्तमें हल का चिह्न है।
हलरना॰ अ॰ क्रि॰ लोटपोट होना।
हलफल॰ ना॰ स्त्री॰ शिष्टाचार।
हलरा॰ ना॰ पु॰ तरंग, लहर, हिलकोर।

सूर्य्यकान्ति० ना० स्त्री० सूर्य्यमणि ।
सूर्य्यग्रहण० ना० पु० सूर्य्य का ग्रहण ।
सूर्य्यमणि० ना० स्त्री० मणिविशेष ।
सूर्य्यमुखी० ना० स्त्री० पुष्पविशेष ।
सूर्य्यप्रिय० ना० पु० तांबाधातु ।
सूर्य्यवंशी० ना० पु० सूर्य्य वंश का क्षत्री ।
सूर्य्यवल्लभ० ना० पु० भृंगराज, भंगरा पौधा ।
सूर्य्याख्य० ना० पु० सूर्य्यमणि ।
सूर्य्याह्वय० ना० पु० मदारवृक्ष ।
सूर्य्यास्त० ना० पु० सन्ध्या, सांझ, सूर्य्य का अस्त अर्थात् छुपना ।
सूर्य्येन्दुसंगमा० ना० पु० अमावस ।
सूर्य्योदय० ना० पु० सूर्य्य का उदय, तड़का, सवेरा ।
सूल० ना० पु० शूल, फुरफुरी, मालाकी सुनि, कांटा, अस्त्रविशेष ।
सूली० ना० पु० शूली, ना० स्त्री० फांसी ।
सूवा० ना० पु० तोता, मोटी सुई ।
सूस० } ना० पु० जल जन्तुविशेष ।
सूसमार० }
सूसी० ना० स्त्री० वस्त्रविशेष ।
सूहा० गु० लाल, अरुण, ना० पु० रागविशेष ।
सूक्ष्म० ना० पु० जो वस्तु अस्थूल अर्थात् हलकी पतली बारीक हो ।
सूक्ष्मता० ना० स्त्री० हलकापन, पतलाई, बारीकी ।
सूक्ष्मदर्शी० गु० चतुर, मर्ज्ञ, प्रवीण, ज्ञानी ।
सूक्ष्मपत्र० ना० पु० करौंदा ।
सृजना० स० क्रि० सिरजना ।
सृजित० गु० जो सिरजागया ।
सृष्टि० ना० स्त्री० उत्पत्ति, जगत, वृद्धि ।
सृष्टिकर्त्ता० ना० पु० ब्रह्मा, परमात्मा ।
से० अव्य० अपादान कारक या करण का बोधक चिह्न, साथ, संग ।
सेंक० ना० पु० सेंकने का काम, कतार ।
सेंकड़ा० गु० सौ, शत, १०० ।
सेंकना० स० क्रि० तताना, गर्माना ।
सेंगरी० ना० स्त्री० फली, छीमी ।
सेंठा० ना० पु० } सरकण्डा जिससे मोढ़ा
सेंठी० ना० स्त्री० } बनाते हैं, सरपत, पतली, मूंजका पौधा ।
सेंत० अव्य० विनामोल, मुफ्त, सेंतमेंत ।
सेंतना० स० क्रि० सुधारना, बनाना, स्वच्छ करना ।
सेंद० ना० पु० खीराविशेष ।
सेंदुर० ना० पु० ईंगुर ।
सेंध० ना० पु० चोरी करने के लिये चोरलोग जो भीत में छेद करते हैं सुरंग ।
सेंधना० स० क्रि० खोदना, ढाना ।
सेंधा० ना० पु० लवणविशेष जिसको लाहौरी लोन कहते हैं ।
सेंधिया० ना० पु० विष, जातिविशेष, चोर जो सेंध में पैठता है ।
सेंधी० ना० स्त्री० खजूरका रस, ताड़ीविशेष ।
सेंहुआं० ना० पु० दादविशेष, दिनाई ।
सेगुन० ना० पु० काष्ठविशेष जो पेगू देश से आता है ।
सेचन० ना० पु० छिड़काव ।
सेज० ना० स्त्री० शय्या, बिस्तर, पलंग, मंजा ।
सेजबन्द० ना० पु० सेजपर बिछौना बांधने के लिये डोरीविशेष ।
सेठ० ना० पु० बड़ा साहूकार ।
सेठन० ना० स्त्री० सेठकी स्त्री ।
सेत० ना० पु० पुल, सेतु, गु० श्वेत ।
सेतना० स० क्रि० जुगवना, सेंतना ।
सेतु० ना० पु० पुल, बांध, मर्य्यादा ।
सेतुबन्ध० ना० पु० तीर्थविशेष, पुल जो लंका और भरतखण्ड के मध्य समुद्र में हनुमान् आदि कपने बनाया था ।
सेदना० स० क्रि० सेंकना, तताना ।
सेन० ना० स्त्री० } कटक, फौज, नाम एक
सेना० ना० पु० } भक्त नाईका है ।

हलरावना० स० क्रि० बहलाना, खेलाना, हिलाना।
हलवर्ण० ना० पु० व्यंजन, स्वररहित अक्षर।
हलधाहा० ना० पु० जोतहा, किसान।
हलाहल० ना० पु० हलाहल।
हलहलाहट० ना० पु० ज्वर वा डरोकपकपी।
हलहलाना० अ० क्रि० ज्वरादि से कांपना, स० क्रि० हिलाना, कंपाना।
हलहलिया० ना० पु० विष।
हलहली० ना० स्त्री० रोग, व्याधि, जूड़ी।
हला० स्त्री० ना० मदिरा, शराब।
हलाई० ना० स्त्री० जोताई।
हलायुध० ना० पु० श्रीबलरामजी।
हलावाहु० ना० स्त्री० नदीविशेष।
हलाहल० ना० पु० महाविष।
हलिया० ना० पु० बैलोंका झुण्ड।
हलियाना० अ० क्रि० जीमतलाना।
हली० ना० पु० श्रीबलदेवजी, गु० किसान।
हलोरना० स० क्रि० बटोरना।
हल्लक० ना० पु० लालकमल, यथा सौगन्धिकन्तुकह्लारं हल्लकं रक्तसन्धिकम् इत्यमरः।
हल्ला० ना० पु० रौला, हुल्लड़, धावा, यह शब्द फ़ारसी का है।
हवन० ना० पु० होम, अग्नि प्रतिष्ठकरना।
हवि० ना० स्त्री० यज्ञविशेष, खीरयज्ञकी।
हविः० ना० पु० होमकी सामग्री।
हविपाठी० ना० पु० चीता।
हविष्य० ना० पु० घृत, घीसेमिलित भात।
हसुपा० ना० स्त्री० आहूमेर।
हव्य० ना० पु० देवताओं के हेतु भेंट, हवि।
हव्यवाहन० ना० पु० अग्नि।
हस्त० ना० पु० हाथ, तेरहवां नक्षत्र, सूंड़।
हस्तकरण० ना० पु० अरण्ड दोनों।
हस्ताक्षर० ना० पु० हाथका लिखा, दस्तखत।
हस्तियघोष० ना० स्त्री० बड़ीतुरई।
हस्तिदन्तक० ना० पु० मूली, मलीतरकारी।
हस्तिनापुर० ना० पु० प्राचीनदिल्ली, कौरवे की राजधानी।
हस्तिनी० ना० स्त्री० हथिनी, खीरा, स्त्रीविशेष।
हस्तिपाल० ना० पु० हाथीवान्, पीलवान्।
हस्तिमागधी० ना० स्त्री० गजपीपर।
हस्ती० ना० पु० हाथी।
हसली० ना० स्त्री० गले के पासकी एक हड्डी गले का हगनाविशेष।
हहरना० अ० क्रि० घबराना।
हहराना० अ० क्रि० पवन प्रचण्ड का शब्द।
हा० अव्य० दुःखका सूचकशब्द।
हाऊ० ना० पु० औरतें बालक के डराने को पश्चिममें बोलतीहैं, ब्रजविलासे यथा, कहत आज वनहाऊआयो।
हां० अव्य० स्वीकारका सूचकशब्द।
हांक० ना० स्त्री० पुकार, निकाल, टेर।
हांकना० स० क्रि० निकालना, पुकारना, चलाना।
हांकी० ना० स्त्री० पत्र जिसपर सेमई बनाते हैं।
हांगर० ना० पु० समुद्रकी मछलीविशेष।
हांडना० अ० क्रि० भटका फिरना।
हांड़ी० ना० स्त्री० मिट्टी का पात्रविशेष।
हांपना०, हांफना० } अ० क्रि० हफहफाना और हांफना।
हांस० ना० पु० हंस, हंसी।
हांसी० ना० स्त्री० हास्य।
हांही० अव्य० हांसही।
हाजाकिनी० ना० स्त्री० काकोली।
हाट० ना० स्त्री० दुकान, क्रयविक्रयका स्थान चौक, कटरा, पैंठ, सुवर्ण।
हाटक० ना० पु० सुवर्ण, कनक।
हाटू० ना० पु० जो हाट में क्रयविक्रय करे।
हाड़० ना० पु० हड्डी।
हात०, हाथ० } ना० पु० कर, हस्त, मापविशेष, वश।

सेनानी० } ना० पु० चमूपाल, दलपति,
सेनापति० } स्वामिकार्त्तिक।
सेम० ना० पु० फलविशेष।
सेम० ना० स्त्री० तरकारी विशेष का पौधा वा उसकी फली।
सेमर० ना० पु० सेमल वृक्ष विशेष वा उसकी रूई।
सेर० ना० पु० तौल विशेष १६ छटांककी।
सेराना० अ० क्रि० ठंडा होना, स० क्रि० ठंडाकरना, बहाना, भसाना।
सेल० ना० पु० बर्छा।
सेलखड़ी० ना० स्त्री० पर्वतकी मिट्टीविशेष।
सेला० ना० पु० वस्त्र विशेष, चाव विशेष।
सेलिया० ना० पु० मार्जार, सेलीवाला।
सेली० ना० स्त्री० बर्छी, रामायणे यथा (तुरत विर्भीषण पाछे मेली, सन्मुख राम सो सेली) सूतकी बनी माला जो उदासी पहनते हैं, जालमंडी।
सेव० ना० पु० पकवानविशेष, सेव ना० स्त्री० सेवा, सुश्रूषा।
सेवई० ना० स्त्री० खानेकी वस्तु विशेष।
सेवक० ना० पु० नौकर पुजारी, सेवाकरनेहारा, खिदमतगार।
सेवकाई० ना० स्त्री० नौकरी, पूजा, सेवा, टहल, खिदमतगारी।
सेवटि० ना० स्त्री० नदीका रेत, दलदल।
सेवड़ा० ना० पु० जैनमतका भिखारी।
सेवती० ना० स्त्री० पुष्प विशेष वा उसका पौधा।
सेवन० ना० पु० पालन, पोषण, सेवा करने।
सेवना० स० क्रि० नौकरी करनी, पालना, पक्षी का अंडेपर बैठना।
सेवा० ना० स्त्री० नौकरी, टहल, पूजा, खिदमतगारी।
सेव्यवीर० ना० पु० खसखस।
सेस० ना० पु० शेष।
सेसर० ना० पु० ताश में खेल विशेष।
सै० गु० सौ० ना० स्त्री० भागवानी, बरकत, लहर बहर।
सैकड़ा० गु० सौ, शत।
सैंगर० ना० स्त्री० शमीवृक्ष की फली, बबूल की फली।
सैंतालीस० गु० चालीस और सात ४७।
सैंतीस० गु० तीस और सात ३७।
सैंहिकेय० ना० पु० राहु, केतु।
सैन० ना० स्त्री० सेना, फ़ौज, मटकी, शयन, चिह्न, इशारह, नाम एक भक्तका।
सैनप० ना० पु० सेनानी, सेनापति, स्वामिकार्त्तिक।
सैना० ना० स्त्री० सेन, दल, फ़ौज।
सैनापति० } ना० पु० सेनापति, सिपहसालार।
सैनापाल० }
सैनासैनी० ना० स्त्री० परस्पर सैनकरना।
सैन्धव० ना० पु० सिन्धुदेश का घोड़ा वा लोन, घोड़ा।
सैन्य० ना० स्त्री० सेना, दल, कटक।
सैरभ० ना० पु० भैंसा।
सैसांझ० अव्य० सांझ के आरम्भ में।
सैहरन० ना० स्त्री० समाई।
सैहरनी० गु० सहवैया।
सो० सर्व० सम्बन्धवाचक, सर्वनाम।
सोअर० ना० पु० कोठरी जिसमें प्रसूती रहती है।
सोआ० ना० पु० पौधाविशेष।
सोई० सर्व० वह, आप।
सों० अव्य० सो।
सोंटा० ना० पु० गदका, मूसल, छोटीलाठी।
सोंठ० ना० स्त्री० सूखी अदरक।
सोंधना० स० क्रि० धोने के लिये गीली मिट्टी से कपड़ा मलना, भरना, लगाना।
सोंधा० ना० पु० बालों का मसाला, नई मृत्तिका पात्र भिगोने से जो गन्ध, सुगन्धित।
सोंधाहट० ना० स्त्री० सुगन्ध, सुवास।
सोंह० ना० स्त्री० क्रिया, शपथ।

हाथखींचना० अ० क्रि० अप्रसन्नता में मुंह फेरना वा छोड़देना।
हाथचाटना० स० क्रि० स्वादिष्ट भोजन को बहुत प्रसन्नतासे खाना।
हाथजोड़ना० स० क्रि० बिनती करना, घिघियाना, दोनों हाथ मिलाना।
हाथडालना० स० क्रि० किसी काम में घुसना वा पैठना, अपनाना।
हाथपसारना० स० क्रि० किसी से कुछ मांगना।
हाथफेरना० स० क्रि० प्यारकरना, कृपाकरना, फुसलाना।
हाथमलना० अ० क्रि० पश्चात्ताप करना, विलाप करना।
हाथमारना० स० क्रि० वचन देना, लूटना, लट्ठ से घायलकरना।
हाथा० ना० पु० हाथ बुंदिया बनाने का यन्त्र।
हाथी० ना० पु० गज, मतंग।
हाथीवान० ना० पु० फीलवान, महावत।
हान० } ना० स्त्री० टोटा, घटी, बिगाड़,
हानि० } अन्धेर।
हाय० } अव्य० दुःख वा शोक का सूचक
हायहाय० } शब्द, ना० स्त्री० सांस।
हायन० ना० पु० वर्ष।
हार० ना० पु० मुक्ता आदिकी माला, गजरा, बालोंका झुण्ड, चरी, चराऊ खेत, जंगल, अनय।
हारक० ना० पु० जिससे हरिये, हरनेहारा।
हारजीत० ना० पु० जूआ, द्यूत।
हारना० अ० क्रि० पराजित होना, अकृतार्थ होना, थकना, स० क्रि० हराना, हारजाना कुछ वस्तु।
हारमानना० स० क्रि० निराश होके छोड़ना, विवाद को छोड़ना।
हारा० अव्य० यहशब्द दूसरे शब्द के अन्त में आकर कर्त्ता को वा वालाका सूचक है।
हारीत० ना० पु० स्मृतिविशेष।
हारू० ना० पु० हरवैया।
हार्द० ना० पु० स्नेह, छोह, माया।
हार्य० गु० हरण करने के योग्य, ना० पु० बहेड़ा।
हाल० गु० उतावला, फुर्तीला।
हालना० अ० क्रि० हिलना।
हाला० ना० स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब।
हालाडोला० ना० पु० हिलाव, डगमगाव, भूचाल, भूकम्प।
हालि० ना० स्त्री० पतवार।
हाव० ना० पु० स्त्री लोगोंकी शृंगारविशेष, भावली।
हावभाव० ना० पु० आकर्ष, खिंचाव, आदरभाव, कटाक्ष, मान सन्मान, बनावट।
हास्य० ना० पु० आनन्दसमय, मुखकी एक अवस्था, हँसी, रसविशेष।
हाहा० अव्य० हायहाय, आर्त्तवाणी।
हाहाकार० ना० पु० युद्धमें जो शब्द, घबराहट, दुःखयुत, पुकार, शोर।
हाहाखाना० अ० क्रि० गिड़गिड़ाना, घिघियाना।
हि० अव्य० ही।
हिंडोला० ना० पु० पालन, झूला, गीतविशेष।
हिंसक० ना० पु० बधिक गु० जो हिंसाकरे घूना, अपकारी, दुर्जन, कठोर।
हिंसा० ना० स्त्री० हत्या, बध, बुराकरने की चिन्ता, अपकार, गाली, दुर्जनता, मार।
हिंस्र० गु० हिंसक।
हिक्का० ना० स्त्री० छींक, हिचकी।
हिङ्गु० ना० स्त्री० हींग।
हिचकना० अ० क्रि० हटना, दबना, आगापीछा करना।
हिचकाना० स० क्रि० धक्कादेना, रोकना, दबाना।
हिचकिचाना० अ० क्रि० सन्देह में होना, डगमगाना, हकलाना।

सोंहीं० अव्य० सामने, सम्मुख।

सोखना० स० क्रि० सींचना, चूसना, पीलेना।

सोच० ना० पु० ध्यान, बूझ, शोच।

सोचना० स० क्रि० ध्यानकरना, बूझना, शोचना।

सोज० ना० पु० सूजन।

सोझ० ना० स्त्री० सीधाई।

सोझा० गु० सीधा।

सोत० } ना० पु० भूर, कुण्ड, जलका निकास,
सोता० } छेद, धारा, झरना, समुद्रका खाल।

सोत्साह० गु० उत्साह समेत, आनन्दयुक्त।

सोथ० ना० स्त्री० सूज।

सोदर० ना० पु० सहोदर, सगाभाई।

सोदरा० ना० स्त्री० सगीबहन, रामचरित्रकार्या (सुधा सोदरा यदपि आप, सबहीते अतिकठिन प्रताप)।

सोध० ना० स्त्री० शोध, खोज।

सोधना० स० क्रि० शोधन करना, ऋण भरना, मिलना, निर्मल करना, शुद्ध करना।

सोन० ना० पु० शोण, सुवर्ण पुष्पविशेष।

सोनहरा } गु० सोने का, सोने का सा
सोनहला० } रंग।

सोना० ना० पु० स्वर्ण, कनक लिंग, अ० क्रि० नींदलेना, मरना।

सोनार० ना० पु० जातिविशेष, स्वर्णकार।

सोनिया० ना० पु० राख से सोना भिन्न करने हारा, न्यारिया, छोटालिंग बालक का।

सोपान० ना० पु० सीढ़ी, जीनह।

सोफालिका० ना० स्त्री० संभालूपौधा।

सोभना० अ० क्रि० सोहना, सजना।

सोभा० ना० स्त्री० शोभा।

सोम० ना० पु० चन्द्रमा।

सोमनाथ० ना० पु० महादेव जो गुजरातमें है।

सोमपादप० ना० पु० कायफल।

सोमरजत० ना० पु० लालचन्दन।

सोमराज० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।

सोमराजी० ना० स्त्री० बाकुची।

सोमवल्क० ना० पु० कायफल।

सोमवल्ली० ना० स्त्री० बाकुची।

सोमवार० ना० पु० चन्द्रवार, दूसरा दिन।

सोमवारी० ना० स्त्री० सोमवारकी अमावस।

सोमसीरा० ना० स्त्री० सोमवल्ली।

सोरठ० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।

सोरठा० ना० स्त्री० छन्दविशेष।

सोह० ना० स्त्री० शोभा।

सोहं० ना० पु० मन्त्रविशेष।

सोहन० गु० शोभादेनेहारा, प्यारा, चाहता, ना० पु० सज्जन, रेती, ना० स्त्री० मिठाई विशेष।

सोहना० अ० क्रि० सजना, शोभादेना।

सोहागा० ना० पु० सुहागा (

सोहिल० ना० पु० रागविशेष।

सोहीं० अव्य० सोहीं, सन्मुख।

सौ० गु० शत, १००।

सौं० ना० पु० शपथ, सौंह, सौगन्द, अव्य० से।

सौंकरी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द।

सौंचना० अ० क्रि० शंकाजाकर जल से गुदा धोना।

सौंप० ना० स्त्री० धरोहर, थाती, सुपुर्दगी।

सौंपना० स० क्रि० पहुंचाना, सुपुर्द करना, धरना, रखना।

सौंफ० ना० स्त्री० औषधिविशेष।

सौंरा० ना० पु० कालुस, काजल गु० सांवला।

सौंर० ना० पु० मछलीविशेष।

सौंरि० ना० स्त्री० वृद्धिसूतक।

सौंरी० ना० स्त्री० जच्चा, प्रसूती।

सौंह० ना० स्त्री० किरिया, शपथ, सौगन्द।

सौख्य० ना० पु० सुख, आराम।

सौगन्द० ना० स्त्री० शपथ, किरिया, सौंह, यह शब्द फ़ारसी का है भाषा में प्रचलित है।

हिचकिची॰ ना॰ स्त्री॰ द्विविधा, चिन्ता, शंका।
हिडम्ब॰ ना॰ पु॰ सिलहट से ठीक पूर्वदेश, राक्षसविशेष।
हित॰ ना॰ पु॰ प्रेम, मित्रता, माया, उपकार, अव्य॰ निमित्त, अर्थ, कारण, लिये, गु॰ उचित, योग्य, मित्र, मायावन्त।
हितकार॰ ना॰ पु॰ मित्र, उपकारी, सज्जन।
हितकारी॰ ना॰ पु॰ मित्र, उपकारी।
हितु॰ } ना॰ पु॰ मित्र, यार, सहायक।
हितू॰ }
हितैषी॰ ना॰ पु॰ प्रियकरने की इच्छा जिसके होते, हितकारी।
हितोपदेश॰ ना॰ पु॰ योग्य वा उचित उपदेश, नीतिका एक ग्रन्थविशेष।
हिनहिनाना॰ अ॰ क्रि॰ पुकारना घोड़ेका।
हिनौती॰ ना॰ स्त्री॰ विनती, आधीनता।
हिन्ताल॰ ना॰ पु॰ खजूरविशेष।
हिन्दी॰ ना॰ स्त्री॰ हिन्दुस्तान की बोली वा अक्षर।
हिन्दू॰ ना॰ पु॰ लोग जो वेदादि शास्त्रानुसार चलते हैं, चातुर्वर्ण्यलोग।
हिन्दूस्थान॰ ना॰ पु॰ देश विशेष जो उत्तर छः अंश से पैंतीस अक्षांशतक और पूर्व पश्चिम में ६७ अक्षांश से ९३ तक फैला है, भारतखण्ड।
हिम॰ ना॰ पु॰ पाला, शीत, तुषार, ऋतुविशेष।
हिमउपल॰ ना॰ पु॰ ओला, पत्थर, रामायणे यथा, जिमि हिम उपल कृषीदलि गरहीं, पर अकाज लगि तनु परिहरहीं।
हिमकर॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, कपूर।
हिमरोम॰ } ना॰ पु॰ चन्द्रमा, विधु, चांद।
हिमांशु॰ }
हिमाचल॰ } ना॰ पु॰ हिमालय पर्वत।
हिमांचल॰ }
हिमाह्वय॰ ना॰ पु॰ कपूर, कर्पूर, काफूर।
हिमालय॰ ना॰ पु॰ पर्वत विशेष, पालाकाधर।
हिमोपम॰ ना॰ पु॰ कपूर, कर्पूर।
हिमोपल॰ ना॰ पु॰ ओला, पाथर।
हिय॰ } ना॰ पु॰ हृदय।
हिया॰ }
हियाव॰ ना॰ पु॰ सूरमापन, वीरता, चाह।
हियो॰ } ना॰ पु॰ गाय भैंस बुलाने वा रोकने का शब्द, हृदय।
हियौ॰ }
हिरन्मय॰ } गु॰ जो सोने से बना, ना॰ पु॰ ब्रह्मा।
हिरण्यमय॰ }
हिरण्य॰ ना॰ पु॰ कनक, सुवर्ण, नवखण्डपृथ्वी में से एक का नाम।
हिरण्यवाह॰ ना॰ पु॰ सोनभद्र नदी।
हिरण्याक्ष॰ ना॰ पु॰ प्रह्लाद का चचा।
हिरद॰ ना॰ पु॰ हृदय।
हिरन॰ ना॰ पु॰ हरिण, मृग।
हिरनौटा॰ ना॰ पु॰ हरिणका बच्चा।
हिराना॰ स॰ क्रि॰ खोना, रखकर भूलजाना, अ॰ क्रि॰ खोजाना, गुमहोना।
हिर्की॰ ना॰ स्त्री॰ घाई, बावली।
हिलकना॰ अ॰ क्रि॰ ऐंठना, मड़ोड़ना।
हिलकोर॰ ना॰ स्त्री॰ हिलाव, लहराव, हिलोर।
हिलकोरना॰ स॰ क्रि॰ लहराना, हिलाना, अ॰ क्रि॰ हिलना, घबड़ाना।
हिलकोरा॰ ना॰ पु॰ लहर, तरङ्ग।
हिलगना॰ अ॰ क्रि॰ लटकना, उलझना, चिपकना, अटकना।
हिलगाना॰ स॰ क्रि॰ लटकाना, उलझाना, चिपटाना, अटकाना।
हिलना॰ अ॰ क्रि॰ डोलना, टलना।
हिलमिल॰ अव्य॰ मिलकर।
हिलमिलजाना॰ अ॰ क्रि॰ मिश्रित होना, मिलाजुला रहना।
हिलमोचिका॰ ना॰ पु॰ शाकविशेष।
हिलसा॰ ना॰ स्त्री॰ मछलीविशेष।

सौच० ना० पु० सौच, जो क्रिया करने से पवित्रहो।
सौचिती० ना० स्त्री० रक्षा, बचाव।
सौजन्य० ना० पु० सुजनता।
सौत० सौतन० सौति० सौतिन० } ना० स्त्री० एकमनुष्यकी दो स्त्रियां आपस में एक दूसरे की सौत कहलाती हैं।
सौतिया० ना० स्त्री० सौति।
सौतियादाह० ना० पु० सौति का दाह।
सौतेला० गु० जो सौतिका जाया है।
सौध० ना० पु० महल, ऊंचा मकान।
सौन्दर्य्य० ना० पु० सुन्दरता।
सौभाग्य० ना० पु० सुभाग, भाग्यमानी, सुहाग।
सौभाग्यवती० ना० स्त्री० सुहागिन।
सौमित्र० ना० पु० सुमित्रा सुत, लक्ष्मणजी।
सौम्य० ना० पु० बुधग्रह, बुधवार, चन्द्रपुत्र, गु० उजला, सुन्दर।
सौम्या० ना० स्त्री० शालपर्णी।
सौर० ना० पु० शनैश्चर, सूर्य सम्बन्धी; ना० स्त्री० मछली विशेष।
सौरभ० ना० पु० केसर, सुगन्ध, आम्रवृक्ष।
सौरमास० ना० पु० सूर्यका एक राशि में रहने का काल, एक संक्रान्ति से दूसरी तक।
सौरवर्ष० ना० पु० बारह संक्रान्तों का समय।
सौरि० ना० पु० शनैश्चर, संहिता विशेष।
सौरेय० सौरेयक० } ना० पु० पियाबांसा।
सौहार्द० ना० पु० मित्रत्व, मित्रता।
स्कन्द० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
स्कन्ध० ना० पु० कन्धा, काण्ड।
स्खलन० ना० पु० पतन।
स्तन० ना० पु० कुच, उरोज, थन।
स्तब्ध० गु० रुखा।
स्तम्भ० ना० पु० खम्भा, रुकाव, थंभाव।
स्तम्भन० ना० पु० रुकाव, थंभाव, रोक, टोक।
स्तम्भित० गु० जो रोका वा थांभागया।
स्तव० ना० पु० स्तुति, विनयकी पोथी।
स्तावक० ना० पु० स्तुति करनेहारा।
स्तुति० ना० स्त्री० सराह, बड़ाई, भजन, विनय।
स्तुतिपाठक० ना० पु० सूत, बन्दीजन।
स्तेन० ना० पु० चोर।
स्तेय० ना० पु० चोरी।
स्तोत्र० ना० पु० स्तव, स्तुति।
स्त्री० ना० स्त्री० नारी, लुगाई, औरत।
स्त्रैण० ना० स्त्री० के वश वा स्त्री के स्वभावनर।
स्थ० गु० थिर, ठहरा, कायम।
स्थगित० गु० थका, छपा।
स्थल० ना० पु० स्थान, भूमि, जगह, घर, भूमि जो सूखी है जिसपर मनुष्यादि बसते हैं।
स्थाणु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
स्थान० ना० पु० ठौर ठिकाना, घर, ग्राम।
स्थानापन्न० गु० जगहपर, उसकेपलटे, किसी के स्थानपर प्रतिष्ठित होना।
स्थानी० गु० घरवाला, मुकामी।
स्थापन० ना० पु० रखना, धरना, बैठाना।
स्थापना० ना० स्त्री० प्रतिष्ठा, स्थापनकरना।
स्थापित० गु० प्रतिष्ठित, रक्खागया, निर्णय, स्थिर, अचल, जो स्थापन कियागया।
स्थाली० ना० स्त्री० थाली, बटलोही।
स्थावर० गु० अचल यथा वृक्षादि, जड़।
स्थित० गु० ठहराहुआ।
स्थिति० ना० स्त्री० ठिकाव, ठहराव।
स्थिर० गु० अलोल, अचल, शान्त।
स्थिरता० ना० स्त्री० शान्ति, धीमापना।
स्थूल० गु० मोटा, भारी, बड़ा, कपास।
स्थूलदर्भ० ना० पु० मूंज, सेंठा, पतावर।
स्थूलफला० ना० स्त्री० सेमलवृक्ष।

हिला० गु० पाला, पोसवां।
हिलाना० स० क्रि० डोलाना, अपने वश में करना।
हिलोरना० अ० क्रि० लहराना।
हिलोरा० ना० पु० तरंग, लहर।
हिलोरामारना० अ० क्रि० लहर मारना।
हिश्त० अव्य० चुपचुप, दुत।
हिसका० ना० पु० उतराहट, अनुकार, रिस, फल।
हिसकाहिसकी० ना० स्त्री० परस्पर हिसका करना।
हिसाब० ना० पु० गणित, लेखा, यह शब्द अरबीका भाषा में अतिप्रचलित है।
ही० अव्य० निश्चय करनेका बोधक, ना० पु० हृदय।
हीं० अव्य० निश्चय करने का बोधक।
हींग० ना० स्त्री० औषधविशेष।
हींगहगना० अ० क्रि० इच्छारहित हगना और दुःख भोगना।
हींसना० अ० क्रि० हिनहिनाना।
हीक० ना० स्त्री० उबकाई, मतलाई, घृणा, अटकल, दुर्गन्धि।
हीजड़ा० ना० पु० हिजड़ा।
हीन० गु० रहित, विना, छोटा, नीच।
हीनजाति० ना० स्त्री० नीचजाति।
हीनता० ना० स्त्री० न्यूनता, घटी।
हीननिमेष० ना० पु० एकटक।
हीना० गु० नीचा, छोटा, नीच।
हीर० ना० पु० रांभा, शार, गूदा, गु० चोखा।
हीरक० ना० पु० हीरा।
हीरशुक्तिका० ना० स्त्री० काकोली।
हीरा० ना० पु० रत्नविशेष, कम्भारी।
हीरामन० ना० पु० तोताविशेष, छोयसर्पविशेष।
हीरावल० } ना० पु० कम्बल, जो योगी ओढ़ते हैं।
हीरावलि० }
हील० } ना० स्त्री० चहला, कीचड़।
हीला० }
हुंकार० } ना० पु० पुकार, डरवाने के लिये हूं शब्दका पुकारना।
हुंकारा० }
हुड़दंगा० गु० दंगैत।
हुड़दंगी० ना० स्त्री० दंगा दंगैत।
हुड़हुड़ाना० अ० क्रि० ठंकोरना।
हुड़हुड़ी० ना० स्त्री० ठंकोर।
हुडुक० ना० पु० बाजाविशेष।
हुंडयी० ना० स्त्री० हुंडी।
हुंडामाड़ा० ना० पु० किराया।
हुंडार० ना० पु० भेड़ियाविशेष।
हुंडावन० ना० पु० हुण्डीका बट्टा।
हुंडी० ना० स्त्री० जिसपत्र में परदेश से रुपया लिखआवे उसका नाम।
हुंडीवाल० ना० पु० साहूकार, जो हुण्डीलिखे।
हुत० गु० जो होम कियागया।
हुतना० स० क्रि० होमकरना, होममें जलाना।
हुतभुक्० } ना० पु० अग्नि।
हुताशन० }
हुति० अव्य० पलटे, बदले, ओरसे।
हुती० स्त्री० }
हुतो० पु० } क्रि० हुआ, अव्य० थी, था, रहे।
हुते० पु० }
हुमकना० अ० क्रि० कूदना, मारने के समय हुंकारना।
हुमे० क्रि० जलाये।
हुरगुंडा० ना० पु० तरकारीविशेष।
हुरमई० ना० स्त्री० नृत्यभेद।
हुरहुर० } ना० पु० पौधाविशेष।
हुरहुरा० }
हुरुकनी० ना० स्त्री० कंचनी, वेश्या।
हुरो० ना० पु० धूल, फटक, दिवेष।
हुर्सा० ना० पु० चन्दन घिसनेका पाषाणविशेष जो पाटासा होता है।
हुलकारना० स० क्रि० उभारना, हुलकाना, सताना।

स्थूलैला० ना० स्त्री० बड़ी इलायची ।
स्थैर्य्य० ना० पु० स्थिरता ।
स्थौल्य० ना० पु० मोटापा, मोटाई ।
स्नान० ना० पु० नहान ।
स्नानीय० ना० पु० जल जो नहाने के योग्य है ।
स्नुही० ना० पु० सेंहुड़ ।
स्नेह० ना० पु० प्रेम प्रीति, प्यार, तैल ।
स्नेहवृक्ष० ना० पु० देवदारु ।
स्पर्द्धा० ना० स्त्री० द्वेष, डाह, अन्यके अपमान करनेकी इच्छा ।
स्पर्श० ना० पु० छुवावट, छूने का काम ।
स्पर्शेन्द्रिय० ना० स्त्री० त्वचा, चर्म ।
स्पष्ट० ना० पु० खुला, सहज, ठीक, दुरुस्त ।
स्पष्टीकरणार्थ० अव्य० स्पष्ट करने के लिये ।
स्पृक्का० ना० स्त्री० शालपर्णी ।
स्पृश्य० गु० स्पर्श करने के योग्य ।
स्पृष्ट० गु० छुआगया ।
स्पृहा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह ।
स्फटक० } स्फटिक० } ना० पु० स्वच्छ पाषाणविशेष, बिल्लौर पत्थर, चन्द्रकान्तमणि, और कपूर ।
स्फटिकाक्षा० ना० स्त्री० फटकरी ।
स्फटिकोपल० ना० पु० चन्द्रकान्तमणि, बिल्लौर ।
स्फुट० गु० खिला, खुला, व्यक्त, प्रकट ।
स्फुरत्० अ० क्रि० प्रकाशित, शोभित, डोलत ।
स्फूर्त्ति ना० स्त्री० टीस धड़धड़ाहट, डोल, हिलाव ।
स्फोटक० ना० पु० फोड़ा ।
स्मय० ना० पु० अभिमान, अहङ्कार, गर्व ।
स्मर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कामदेव ।
स्मरण० ना० पु० सुधि, चेत, स्मृति, याद, ध्यान ।
स्मारक० गु० जो स्मरण करावै ।
स्मार्त्त० ना० पु० स्मृतिका ज्ञाता ।
स्मृति० ना० स्त्री० शास्त्र विशेष, स्मरण, चेत, याद ।
स्मृतीहिता० ना० स्त्री० शतावली ।
स्मृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, अधिक, चाहना ।
स्यन्दन० ना० पु० रथ, पानी, चित्ततरंग, वेंदूवृक्ष ।
स्यान० } स्यानपन० } ना० पु० चतुराई, चालाकी ।
स्याना० गु० चतुर, चालाक ।
स्यार० ना० पु० शृगाल, गीदड़ ।
स्योना० } स्योनाक० } ना० पु० वृक्षविशेष ।
स्निग्धच्छदा० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष ।
स्निग्धपर्णी० ना० स्त्री० मुररी ।
स्रुव० ना० पु० श्रुवा ।
स्रोत० ना० पु० सोत, सोता ।
स्रोतः० ना० पु० सोता ।
स्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी ।
स्व० सर्व० अपना, निजका बोधक, ना० पु० धन, आत्म ।
स्वः० ना० पु० स्वर्ग ।
स्वकीय० ना० पु० अपना, सगा ।
स्वकीया० ना० स्त्री० निजस्त्री, अपनी ।
स्वच्छ० गु० निर्मल, साफ, पवित्र ।
स्वच्छता० ना० स्त्री० निर्मलता, पवित्रता, सफाई ।
स्वच्छन्द० गु० अपनी इच्छा के अनुसार, स्वैरी, स्वाधीन, ना० पु० ईश्वर ।
स्वच्छन्दचारी० ना० पु० संन्यासी, भगवान् ।
स्वच्छफल० ना० पु० नारियल ।
स्वजन० ना० पु० अपनेलोग, नातेत ।
स्वजातीय० गु० एकवर्णका, निजगोत्री ।
स्वतः० अव्य० आपसे ।
स्वतन्त्र० गु० स्वाधीन, निजवश ।
स्वतन्त्रता० ना० स्त्री० स्वाधीनता ।
स्वधर्म० ना० पु० अपना धर्म ।
स्वप्न० ना० पु० निद्रावस्था, द्वितीयावस्था, नींदमें

हुलसना० अ० क्रि० आनन्दित होना, मुदित होना।
हुलसाना० स० क्रि० रिझाना, प्रसन्नकरना।
हुलास० ना० पु० सुंघनी, आनन्द, विलास।
हुल्लड़० ना० पु० रौला, बखेड़ा।
हूं० अव्य० हां, भी, हो।
हूंक० ना० स्त्री० शब्द विशेष।
हूंकरना० स० क्रि० क्रोध से या भय से वा झाड़ फूंक से हूं शब्द बोलना।
हूंठ० ना० पु० साढ़ेतीन ३॥।
हूंठा० ना० पु० साढ़ेतीन का पहाड़ा।
हूंहां० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना।
हूक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, झटक।
हूचना० स० क्रि० चूकना, भूलना।
हूठना० स० क्रि० धक्का देना।
हूड़० } ना० स्त्री० खेंचाखेंची।
हूड़ाहूड़ी० }
हूण० ना० पु० कठोर मनुष्य।
हून० ना० पु० मन्दराती, मुद्राविशेष।
हूल० ना० स्त्री० झोंक, खोंचा।
हूलना० स० क्रि० झोंकना, खोंसना।
हूहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, टीमटाम।
हृदय० ना० पु० वक्षःस्थल, छाती, अन्तःकरण, मन।
हृदयनिकेत० ना० पु० कामदेव।
हृषीक० ना० पु० इन्द्रियां।
हृषीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम।
हृष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न।
हे० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।
हेंगा० ना० पु० सरावन, पटेला, हेंगा।
हेठ० अव्य० नीचे स्त्री० कांच जो गुदा में निकलती है।
हेठा० गु० आलसी, नीच, डरपोकना।
हेठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई।
हेत० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन,
हेतु० } निमित्त, प्रीति, प्रेम।
हेति० अव्य० हा इति।
हेम० ना० पु० स्वर्ण, कंचन, सोना।
हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि।
हेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, जिसमें अगहन और पौषमास गिनाजाता है।
हेमपुष्पा० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष।
हेमपुष्पिका० }
हेमलता० ना० स्त्री० सोनजुही।
हेमवती० ना० स्त्री० हर्र, हड़।
हेमवता० ना० स्त्री० बच औषध।
हेमाचल० } ना० पु० सुमेरु पर्वत।
हेमाद्रि० }
हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, ढूंढना, खोदना, खदेड़ना।
हेरम्ब० ना० पु० श्रीगणेशजी।
हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगातेहैं।
हेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, टोकराभरगोबर।
हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धक्का, देना, हटाना।
हेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, प्रवाह, रेला, क्रीड़ा संग, सहज।
हेलमारना० स० क्रि० ढकेलना, ठेलना।
हैक० ना० पु० हय।
हैहैराज० ना० पु० हयहय, सहस्रबाहु।
हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न।
होआना० अ० क्रि० होकर आना।
होंकना० अ० क्रि० हांफना।
होंठ० ना० पु० ओष्ठ, लब।
होंठा० ना० स्त्री० लगाम, दहाना।
होके० अव्य० द्वारा, से।
होचुकना अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना० अ० क्रि० होना, पड़ना।
होठ० ना० पु० होंठ।
होड़० ना० स्त्री० प्रण, पचन, दांव, शर्त।
होड़ल० ना० पु० अभ्रक, अबरक।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं।
होत० ना० स्त्री० वश, शक्ति।
होतव० ना० पु० भदा, प्रारब्धी।
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार।
होता० ना० पु० होमकरनेहारा।
होते० अव्य० रहते, में।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन।
होत्री० गु० पूजक।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव।
होना० अ० क्रि० रहना, बनना, जो कुछहोगा।
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना।
होमना० स० क्रि० होमका यज्ञकरना, जलाना।
होला० ना० पु० नाचविशेष, बूट, भूनीफली।
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय।
होलिका० ना० स्त्री० होली।
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहार।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव।
हौआ० ना० पु० हाऊ, हौवा।
हौं० क्रि० हूं, सर्व० मैं, हम।
हौस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
हौका० ना० पु० लोभ, लालच, वायुसमेतझड़ी।
हौले० अव्य० धीमें धीरे।
हौलेहौले० अव्य० धीरेधीरे।
हौवा० ना० पु० भोकस, भुतना।
ह्रद० ना० पु० विनाखोदा, बड़ाजलाशय, तालाव, झील, अगाधता।
ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊख, गन्ना, गांडा।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, ह्या।
ह्रीण०
ह्रीत० } गु० लज्जित, शरमायाहुआ।
ह्वै० क्रि० होकर।
ह्वैहै० क्रि० होगा।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है।
क्षण० ना० पु० तीस कलाका एकक्षण होताहै, थोड़ीदेर, तिल।
क्षणक० ना० पु० पर्व, रात।
क्षणप्रति० अव्य० बारंबार।
क्षणरुचि० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
क्षणिक० गु० अस्थिर, सत्यानाशी।
क्षणैक० अव्य० थोड़ेकाल में।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोहू, रक्त।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी।
क्षत्र० ना० पु० मुकुट, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवंश।
क्षत्रक० ना० पु० भुइंफोड़ा, जिसे कुकुरमुत्ता कहते हैं।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति।
क्षत्रबन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचहो।
क्षत्रिय० ना० पु० द्वितीयवर्ण, खित्री।
क्षपा० ना० स्त्री० रात।
क्षपाकर०
क्षपानाथ० } ना० पु० चन्द्रमा।
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता।
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, अलसी, दया, धरती।

हुलसना० अ० क्रि० आनन्दित होना, मुदित होना।
हुलसाना० स० क्रि० रिझाना, प्रसन्नकरना।
हुलास० ना० पु० सुंघनी, आनन्द, विलास।
हुलड़० ना० पु० रौला, बखेड़ा।
हुं० अव्य० हां, भी, हो।
हुंक० ना० स्त्री० शब्द विशेष।
हुंकरना० स० क्रि० क्रोध से वा भय से या झाड़ फूंक से हुं शब्द बोलना।
हुंठ० ना० पु० साढ़ेतीन ३॥।
हुंठा० ना० पु० साढ़ेतीन का पहाड़ा।
हुंहां० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना।
हूक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, झटक।
हूचना० स० क्रि० चूकना, भूलना।
हूठना० स० क्रि० धक्का देना।
हूड़० } हूड़ाहूड़ी० } ना० स्त्री० खैंचाखैंची।
हूण० ना० पु० कठोर मनुष्य।
हून० ना० पु० मन्दरानी, मुद्राविशेष।
हूल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा।
हूलना० स० क्रि० भोंकना, खोंसना।
हूहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, टीमटाम।
हृदय० ना० पु० वक्षःस्थल, छाती, अन्तःकरण, मन।
हृदयनिकेत० ना० पु० कामदेव।
हृषीक० ना० पु० इन्द्रियां।
हृषीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम।
हृष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न।
हे० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।
हेंगा० ना० पु० सरावन, पटेला, हेंगा।
हेठ० अव्य० नीचे स्त्री० कांच जो गुदा में निकलती है।
हेठा० गु० आलसी, नीच, डरपोकना।
हेठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई।
हेत० } हेतु० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन, निमित्त, प्रीति, प्रेम।
हेति० अव्य० हा इति।
हेम० ना० पु० स्वर्ण, कंचन, सोना।
हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि।
हेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, जिसमें अगहन और पौषमास गिनाजाता है।
हेमपुष्पा० } हेमपुष्पिका० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष।
हेमलता० ना० स्त्री० सोनजुही।
हेमवती० ना० स्त्री० हर्र, हड़।
हेमवता० ना० स्त्री० बच औषध।
हेमाचल० } हेमाद्रि० } ना० पु० सुमेरु पर्वत।
हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, ढूंढ़ना, रगेदना, खदेड़ना।
हेरम्ब० ना० पु० श्रीगणेशजी।
हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगावैहैं।
हेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, टोकराभरगोबर।
हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धक्का देना, हटाना।
हेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, प्रवाह, रेला, क्रीड़ा संगा, सहज।
हेलमारना० स० क्रि० ढकेलना, ठेलना।
हैक० ना० पु० हय।
हैहैराज० ना० पु० हयहय, सहस्रबाहु।
हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न।
होआना० अ० क्रि० होकर आना।
होंकना० अ० क्रि० हांफना।
होठ० ना० पु० ओष्ठ, लब।
होंठा० ना० स्त्री० लगाम, दहाना।
होके० अव्य० द्वारा, से।
होचुकना अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना० अ० क्रि० होना, पड़ना।
होठ० ना० पु० होंठ।
होड़० ना० स्त्री० प्रण, पचन, दांव, शर्त।
होड़ल० ना० पु० अभ्रक, अबरक।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं।
होत० ना० स्त्री० यश, शक्ति।
होतब० ना० पु० यदा, आरब्धी।
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार।
होता० ना० पु० होमकरनेहारा।
होते० अव्य० रहते, में।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन।
होत्री० गु० पूजक।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव।
होना० अ० क्रि० रहना, बनना, जो कुछहोगा।
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना।
होमना० स० क्रि० होमका यज्ञकरना, जलाना।
होला० ना० पु० नावविशेष, बूट, मूंगीफली।
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय।
होलिका० ना० स्त्री० होली।
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहारे।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव।
हौआ० ना० पु० हाऊ, हौवा।
हौं० क्रि० हूं, सर्व० मैं, हम।
हौंस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
हौका० ना० पु० क्षोभ, लालच, वायुसमेतभड़ी।
हौले० अव्य० धीमें धीरे।
हौलेहौले० अव्य० धीरेधीरे।
हौवा० ना० पु० मोकस, भुतना।
ह्रद० ना० पु० विनाखोदा, बड़ाजलाशय, तालाब, झील, अगाधता।
ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊख, गन्ना, गांडा।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, हया।
ह्रीण०
ह्रीत० } गु० लज्जित, शरमायाहुआ।
ह्वै० क्रि० होकर।
ह्वैहै० क्रि० होगा।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है।
क्षण० ना० पु० तीस कलाका एकक्षण होताहै, थोड़ीदेर, तिल।
क्षणक० ना० पु० क्षण, राल।
क्षणप्रति० अव्य० बारंबार।
क्षणरुचि० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
क्षणिक० गु० अस्थिर, सत्यानाशी।
क्षणेक० अव्य० थोड़ेकाल में।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोहू, रक्त।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी।
क्षत्र० ना० पु० मुकुट, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवंश।
क्षत्रक० ना० पु० भुंईफोड़, जिसे कुकरमुत्ता कहते हैं।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति।
क्षत्रबन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचहो।
क्षत्रिय० ना० पु० द्वितीयवर्ण, खिरनी।
क्षपा० ना० स्त्री० रात।
क्षपाकर०
क्षपानाथ० } ना० पु० चन्द्रमा।
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता।
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, अलसी, दया, धरती।

क्षमापन० ०ना पु० क्षमा करनेका स्वभाव।
क्षमायोग्य० गु० जो क्षमा के योग्य होवे।
क्षमिय० क्रि० क्षमाकीजिये।
क्षमित० गु० क्षमा कियागया।
क्षय० ना० पु० क्षयरोग, विनाश, प्रलय।
क्षयमास० ना० पु० जिस चान्द्रमास में सूर्यको दो राशि में संचारहो।
क्षयरोग० ना० पु० सूखा, शोष, क्षयी।
क्षर० ना० पु० भारी, स्थूल।
क्षान्त० ना० पु० सन्तोषी, धैर्य्यवान्।
क्षान्ति० ना० स्त्री० सन्तोष, धीरज।
क्षार० ना० पु० खार, राख, भस्म, धूलि।
क्षारपत्र० ना० पु० बथुआ, भाजीविशेष।
क्षारश्रेष्ठ० ना० पु० ढांखवृक्ष।
क्षारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
क्षिणवर्त्त० ना० पु० मेढासिंगी।
क्षिति० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
क्षितिज० ना० पु० भौमासुर, मंगल।
क्षितिनाथ० } ना० पु० राजा, महीपति।
क्षितिपाल० }
क्षितिमण्डन० ना० पु० ब्रह्मा।
क्षितीश० ना० पु० राजा, महीश।
क्षिप्र० गु० शीघ्र, उतावल।
क्षीण० गु० दुबला, पतला, ना० पु० प्रमेहरोग।
क्षीर० ना० पु० दूध, खीर, पानी, खारीलोन।
क्षीरगन्धा० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
क्षीरद० ना० पु० मेघ, गाय।
क्षीरपत्रा० ना० स्त्री० जामन, फलेंद।
क्षीरवृक्ष० ना० पु० पीपलवृक्ष, गूलरवृक्ष।
क्षीरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी।
क्षीरिणी० ना० स्त्री० दुद्धी, बूटी।
क्षीरी० ना० पु० वंशरोचन, खिरनी, खीरा, धन।
क्षीरोद० ना० पु० समुद्रविशेष।
क्षुत्पिपास० ना० स्त्री० भूख, प्यास।
क्षुद्र० गु० छोटा, नीच, कमीना, ना० पु० नर्क छिकनी पौधा।
क्षुद्रजम्बू० ना० पु० जामन, फलेंद।
क्षुद्रतन्दुला० ना० स्त्री० विडंग।
क्षुद्रता० ना० स्त्री० नीचता, नीचपन।
क्षुद्रपनस० ना० पु० बड़हल।
क्षुद्रफला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, जामन।
क्षुद्रवर्षा० ना० स्त्री० लालपुनर्नवा, थोड़ी बरसात।
क्षुद्रा० } ना० स्त्री० छोटी कटाई।
क्षुद्री० }
क्षुधा० ना० स्त्री० भूख।
क्षुधार्त्त० } गु० भूखा, बहुत भूखा।
क्षुधावन्त० }
क्षुधित० गु० भूखा।
क्षुर० ना० पु० छुरा, उस्तरा, मूंज।
क्षुरक० ना० पु० गोखुरू, तिलकवृक्ष।
क्षुल्लक० ना० पु० कौड़ी।
क्षेत्र० ना० पु० भूमिपुण्य, खेत, तीर्थ शरीर।
क्षेत्रज० ना० पु० जो क्षेत्रमें उत्पन्नहो।
क्षेत्रज्ञ० ना० पु० आत्मा, जीव, गु० किसान मापक।
क्षेत्रफल० ना० पु० खेतका फल, अर्थात् बिगहटी।
क्षेत्रजीव० ना० पु० किसान, खेतीवाला।
क्षेम० ना० स्त्री० कुशल।
क्षेमकरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष।
क्षेमकुशल० ना० स्त्री० आरोग्य, भलाई, कल्याण, कुशलता, खैरआफियत।
क्षोणिज० ना० पु० क्षितिज, मङ्गलादि।
क्षोणिप० ना० पु० राजा, महीपति
क्षोणिदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
क्षोणी० ना० स्त्री० क्षिति, पृथ्वी, धरती।
क्षोभ० ना० पु० छोह, क्रोध, लंभाव, अथिर मन।
क्षौद्र० ना० पु० मधु, शहद।
क्षौर० ना० पु० मुण्डन, नाई का काम।
क्षौरक० ना० पु० छुरा वा नाई

क्ष्मा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि ।

क्ष्मापति० ना० पु० राजा, भूपाल ।

[ज्ञ]

ज्ञ०अव्य० शब्दान्तमें कर्त्ता या कारक का चिह्न, यथा, धर्मज्ञ, कृतज्ञ ।

ज्ञाता० गु० जाननेहारा, शास्त्रवक्ता ।

ज्ञाति० ना० स्त्री० पिता, असपिण्ड, वर्णजाति।

ज्ञान० ना० पु० समझ, बुद्धि, व्यक्त और धर्मकी बुद्धि जिसकरके आत्मा आवागमन से रहित होता है ।

ज्ञानतः० ना० पु० समझ, ठीकबुद्धि ।

ज्ञानवान्० } गु० बुद्धिमान्, पण्डित, समझदार ।
ज्ञानी० }

ज्ञापक० गु० जाननेहारा ।

ज्ञापन० ना० पु० जतावना ।

ज्ञेय० गु० जो जानने के योग्य ।

ज्ञेया० ना० स्त्री० मेदा ।

दो० । श्रीपरमात्मा जगतगुरु कृपासानिधिप्रभु एक । जासुदयापूरणभयो मङ्गलकोष विवेक १ ॥
विविधदेशभाषामिलित भाषाग्रन्थनिमादि । यथासंस्कृतफारसी आदिकपदअवगाहि २ ॥
अर्थलिखेनिजबुद्धिसम विपुलग्रन्थमतधारि । कोषकारकीमूढ़ता तजिबुधपदैंविचारि ३ ॥
शब्द समूह समुद्रवत नौका कोषप्रमान । पारजाहिंचढ़िबालबुधि बिनसन्देहसुजान ४ ॥
वर्षाऋतु गुरु रेवती भाद्रअसिततिथिचारि । महचषनवमहिसहितशुभसंवतविक्रमधारि ५ ॥
कोष भयो पूरण तबै पैतेपुर शुचि ठाम । कोषकार सानन्दलिख कोषसमङ्गलनाम ६ ॥
जोगुणग्राहक सुजनजन विद्याशील प्रवीन । ते लखि कोष सराहिहैं हँसिहैं बुद्धिमलीन ७ ॥

इति ॥